

श्री ।

अमरकोशः

श्रीमदमरसिंहविरचितः

श्रीपादकमलमनाम्नकागिगभिगिन
तापाटी कथा गच्छानुक्रमणिका च गमेन ।

भा.प. ५

पण्डित हरिप्रसाद भगीरथजी

इ गन

जोशुपाद पुण्डिराजात्मज विठली

शासिदारा शोधयित्वा

महाम्नायुगी

गणपतरुणाजीधमुद्रणालये

मुद्रयित्वा प्रकाशित

मवत् १९५३ साके १८१८

ए पुरावम्प तर्पेऽविकाराय यपकाशकेन स्वापचीरुवा ।

श्रीः ।

अमरकोषः ।

—~~~~—

प्रथमं काण्डम् ।

सुरनापकवन्दितं
धर्तारणकारणम् ॥

।। त्रहताधिमुपास्महे
दिदग्निदसंस्मृतिम् ॥ १ ॥

अमरसिंहजी नामलिगा-
समाप्तिकेलिये ग्रन्थके
।। अगणांकी शिक्षाकेअर्थ म-
हो ह ॥

।। तद्व्यासिन्धोरगाधस्यानघा
।। तेव्यतामक्षपो धीराः स
।। त्मय च ॥ १ ॥

।। नो अगाध अतिगभीर ज्ञान और
।। तिमके निर्मल गुण क्षान्त्या-
।। नाश होनेवाला परमेश्वर
।। और मोक्षकेलिये सेवित हो
।। इजी अपने इस

।। उपदेश करते हैं
।। जो परमेश्वर ज्ञान और द-
।। र निरुद्ध कोई पार नहीं
।। र निरुद्ध निर्मल क्षान्त्या-
।। उगरी तुम सेवा करो क्योंकि

उसकी सेवा सम्पदा और मोक्षके देनेवाली
है ॥ १ ॥

समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिस-
स्त्रुतैः ॥ संपूर्णमुच्यते वर्गेर्नामलिगा-
नुशासनम् ॥ २ ॥

अन्य शास्त्रोंको इकट्ठाकर संक्षिप्त अ-
र्थाव थोड़े विस्तार और बहुत अर्थवाले
प्रतिसंस्कृत अर्थाव पदपदकेप्रति प्रकृतिप्रत्य-
यके विचार कर किया है संस्कार जिनका
ऐसे वर्ग (सजातीय) समूहोंकर संपूर्ण
(सागोपाग) नाम (स्वर्गादिक) और लिंग
(स्त्रीपुनपुंसक) इनका सिद्धकरनेवाला शास्त्र
कहा जाता है ॥ २ ॥

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याद्य कुत्र-
चित् ॥ स्त्रीपुंनपुंसक शेष तद्विशेष-
विधेः क्वचित् ॥ ३ ॥

इस शास्त्रमें बहुधा रूपभेदकर स्त्रीपुनपु-
ंसक जानने चाहिये यथा—[नृक्षपी पद्मान्या
पद्मा] इत्यादिकमें स्त्रीलिंगके रूप र और
यथा—[विजयोऽजगध धनु] इत्यादिकमें वि-
नाक पुल्लिंगका रूप र और अजगध धनु मर

नपुंसक लिंगके रूप हैं और किसीएक स्थ-
लमें साहचर्यसे अर्थात् समीपवर्ती शब्दकी
समीपताकर लिंग जानना चाहिये यथा—
[अश्वयुगशिवनी] इसमें अश्विनी स्त्रीलिंगका
रूप है इसकी समीपतासे अश्वयुक्भी स्त्री-
लिंगका रूप जानना चाहिये और किसी-
एक स्थलमें तिस स्त्रीपुंनपुंसकके विशेष वि-
धिसँ स्त्रीपुंनपुंसकलिंग जानने चाहिये (भाव
यह है कि) कहीं कहीं लिंगकी विशेष उ-
क्तिसँ लिंग जानना चाहिये यथा [भेरीस्त्री
दुंदुभिः पुमान् । क्लीवे त्रिविष्टपम्] इत्यादिकमें
भिन्नभिन्न लिंग प्रकट कर दिखादिये हैं ॥३॥

भेदाख्यानाय न द्वन्दो नैकशेषो न
संकरः ॥ कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनु-
क्तानां क्रमादृते ॥ ४ ॥

इस ग्रन्थमें नहीं कहे हुये ऐसे भिन्न २
लिंगवाले नामोंका लिंगभेद जतानेकेलिये
द्वन्द्वसमास नहीं किया यथा [कुलिशं भिदुरं
पविः] इसका [कुलिशभिदुरपवयः] ऐसा नहीं
किया क्योंकि कुलिश और भिदुर नपुंसक-
लिंग हैं और पवि पुल्लिंग है और एकशेष
द्वन्द्वसमासभी नहीं किया यथा [नभः खं
श्रावणो नभाः] इसका [खश्रावणौ तु नभसी]
ऐसानहीं किया क्योंकि यह आपसमें पृथक्
पृथक् लिंगवाची हैं और क्रमके विना भिन्न
लिंगोंकी पदमें मिलावटभी नहीं की साहचर्य-
करके लिंगका निश्चय नहीं होता है. किन्तु
स्त्रीलिंग पुल्लिंग और नपुंसकलिंग क्रमसे पढा है
यथा [स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः] इसका [स्तुतिः

स्तोत्रं स्तवो नुतिः] ऐस
की क्योंकि स्तवके
गका निश्चय नहीं हो
सिद्ध होगयाहै तिन ।
स्थलमें द्वंदादिकसमा
याधराप्सरोयक्षरक्षोग
कमें भिन्न लिंगवाची
मास हुआ है क्योंकि
रस् शब्दका स्त्रीलिंग
[मातापितरौ] इसका [
वाचियोंका एकशेष द्वं
कि मातृशब्दकाभी लिंग
त्रिलिङ्ग्यां त्रिष्विति
रिति ॥ निषिद्धलिङ्गं
न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥

तीनों लिंगोंकेविषे
है (भाव यह है कि)
वाची है उसकेप्रति ।
है यथा [त्रिषु स्फुलिंगे
शब्द तीनों लिंगमें ह
अर्थात् स्त्रीपुल्लिंगकेविषे
हा है (भाव यह है कि
गवाची है उसके प्रति
है यथा [वन्हेर्द्वयोर्वा
शब्द स्त्रीपुल्लिंगमेंवर्त्ते है
पार्थवाची है (भाव य
लिंगका निषेध किया
नने चाहिये यथा [व्ये
यहां विमान शब्दमें स्त्र

सि विमानशब्द शेष पुनपुसकलिंगवाची
(तु) शब्द है अन्तमें जिसके और
शब्द है आदिमें जिसके ऐसा शब्द
नहीं होता है अर्थात् पूर्वके साथ
बद्ध होता है यथा [पुलोमजा शची-
नगरीत्वमरावती] यहाँ पर तुशब्दान्त-
नगरीशब्द है यह इन्द्राणीके साथ
बद्ध होना चाहिये और [नित्यानवर-
ाप्यथातिशयोभर.] यहाँपर अथ श-
ची अतिशय शब्द है यह पूर्वपद अ-
साथ नहीं सचबद्ध होना चाहिये किन्तु
इके साथ सचबद्ध होना चाहिये ॥ ५ ॥

अयं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशाल-
सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां
त्रिविष्टपम् ॥ ६ ॥

स्वर्गनाक त्रिदिव त्रिदशालय सुर-
दिव त्रिविष्टप यह नौ नाम स्व-
र्ग के हैं तिसमें स्वर्गशब्द अव्यय है
अप नीर दिव यह दोनों शब्द स्त्रीलि-
ङ्ग और त्रिविष्टप शब्द क्लीब (न-
लिङ्ग) में होता है इस ग्रन्थमें बहुधा
यह त्रिविष्टप है कारण कि त्रि-
विष्टप विभक्ति होई है ॥ ६ ॥

निर्जरा देवास्त्रिदश विबुधा.
सुपर्वाण सुमनसस्त्रिदिवेशा
॥ ७ ॥ आदितेय दिवि-
ता अदिति नन्दना ॥ आ-
मवोऽम्यमा अमर्त्या अम-
उत्तर

तान्धस* ॥ ८ ॥ बर्हिर्मुस्ताः क्रतुभुजो
गीर्वाणा दानवारयः ॥ वृन्दारका
दैवतानि पुंसि वा देवता स्त्रियाम् ॥ ९ ॥

अमर निर्जर देव त्रिदश विबुध सुर
सुपर्वाण सुमनस त्रिदिवेश दिवौकस् ॥ ७ ॥
आदितेय दिविष्टप् लेख अदिति नन्दन आ-
दित्य ऋभु अस्वम अमर्त्य अमृतान्धस् ॥ ८ ॥
बर्हिर्मुख क्रतुभुज गीर्वाण दानवारि वृन्दा-
रक दैवत देवता यह छद्मोक्त नामदेवता-
ओंके हैं तिसम देवतशब्द नपुसकलिंगवाची
है परन्तु विकल्पना कर पुलिङ्गमें भी होता है
और देवताशब्द स्त्रीलिङ्गमें होता है इन देव-
तावाची शब्दोंमें बहुवचन व्यक्तिस्वरूपकी
बाहुल्यतासे किया है ॥ ९ ॥

आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरा-
निताः ॥ महाराजिकसाध्याश्च रु-
द्राश्च गणदेवताः ॥ १० विद्याधरा-
ऽप्सरसोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः ॥ पि-
शाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽभी देव-
योनयः ॥ ११ ॥

आदित्य दिव्य वसु तुषित आभास्वर
अनित महाराजिक साध्य रुद्र यह देवता-

आप्तिया द्वात्रिंशत्प्रोक्ता विश्वेदेवा दश स्मृता ॥
उत्तरश्चाष्टमख्यानानां त्रिदशानुग्रितायना १
आभाम्यराश्चतुर्गणितानां पञ्चाष्टनरा ॥
महाराजिकानामानो द्वेने दिवाग्निगया ॥ २ ॥
साध्याद्वाग्नि विराजत रुद्रा अष्टादशस्मृताः ॥

१ आदित्य वारुण दिव्य दश गण आत्र तुषित
एतास आभास्वर गीर्वाणि अनित नन्दना म-

ओंके गण हैं ॥ १० ॥ विद्याधर अप्सरस्
यक्ष रक्षस् गन्धर्व किन्नर पिशाच गुह्यक
सिद्ध भूत यह देवताओंकी योनि हैं पिशा-
चादिक शब्दजातिवाची हैं इसकारण एक-
वचन है ॥ ११ ॥

असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः।
शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुर-
द्विषः ॥ १२ ॥

असुर दैत्य दैतेय दनुज इन्द्रारि दानव
शुक्रशिष्य दितिसुत पूर्वदेव सुरद्विष यह द-
श नाम दैत्योंके हैं ॥ १२ ॥

सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथा-
गतः ॥ समन्तभद्रो भगवान्मारजि-
ल्लोकजिज्जिनः ॥ १३ ॥ षडभिज्ञो
दशवलोऽद्वयवादी विनायकः ॥ मु-
नीन्द्रः श्रीधनः शास्ता मुनिः शाक्यमु-
निस्तु यः ॥ १४ ॥ स शाक्यसिंहः सर्वा-
र्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः ॥ गौतम-
शार्कवन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः ॥ १५ ॥

सर्वज्ञ सुगत बुद्ध धर्मराज तथागत स-

हाराजिक दोसौवीस साध्य वारह रुद्र ग्या-
रह हैं

१ विद्याधर जीमूतवाहनादिक। अप्सरस्देव-
ताओंकी स्त्री। यक्ष कुबेरादिक। रक्षस् मायावी लका-
दिवासी। गन्धर्व तुंगरुआदिक देवोंके गायक।
किन्नर अश्वमुख नरस्वरूप। पिशाच पिशिताश
भूतविशेष। गुह्यक मणिभद्रादिक। सिद्ध विश्वा-
वसुआदिक। भूत बालग्रहादिक अथवा रुद्रानुचर
यहां जातिमें एकवचन है १

सामन्तो को आशीन करने का विचार किया। महा...

मन्तभद्र भगवत् मारजित् लोकजिन्
॥ १३ ॥ षडभिज्ञ दशवल अद्वय
विनायक मुनीन्द्र श्रीधन शास्त्र म
बुद्धके नाम हैं जिनसे कि बौद्ध
भया है शाक्यमुनि शाक्यसिंह स
शौद्धोदनि गौतम अर्कवन्धु मा
यह सात नाम बौद्धमतके धारण
शाक्यमुनिके हैं ॥ १४ ॥ १५

ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी
महः ॥ हिरण्यगर्भो लोकेशः
भूश्चतुराननः ॥ १६ ॥ धा-
निर्दुहिणो विरिञ्चिः कम-
स्तटा प्रजापतिर्वेधा विधार-
द्विधिः ॥ १७ ॥

ब्रह्मन् आत्मभू सुरज्येष्ठ पर-
तामह हिरण्यगर्भ लोकेश स्वयंभू
॥ १६ ॥ धातृ अञ्जयोनि द्रुहि-
कमलासन सप्त प्रजापति वेधस्
श्वसृज् विधि यह बीस नाम ब्र

विष्णुर्नारायणः कृष्णो वि-
ष्टरश्रवाः ॥ दामोदरो ह-
शवो माधवः स्वभूः ॥
त्यारिः पुण्डरीकाक्षो गो-

नाभिजन्माण्डजः पूर्वोऽनिधनः द-
सदानन्दो रजोमूर्तिः सत्यको हंसव-
१ यह श्लोक और पुस्तकोंमें
भिजन्मन् अण्डज पूर्व अनिधन कमयो
न्द रजोमूर्ति सत्यक हंसवाहन य
बाजीके और विशेष हैं.

उध्वज ॥ पीताम्बरोऽच्युत शार्ङ्गि
विष्णुक्सेनो जनार्दन. ॥ १९ ॥ उ-
न्नेन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुज. ॥
अनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः
॥ २० ॥ देवकीनन्दनः शौरिः श्री-
पति. पुरुषोत्तम. ॥ वनमाली बलि-
ध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ॥ २१ ॥
विश्वम्भर. कैटभजिद्विभुः श्रीवत्सला-
लङ्घनः ॥ पुराणपुरुषो यज्ञपुरुषो न-
रका- ॥ २२ ॥ जलशायी वि-
सृष्टो मुकुन्दो मुरमर्दनः ॥ वसुदेवोऽ-
नङ्गो जनकः स एवानकदुन्दुभिः ॥ २३ ॥
अणु नारायण रुष्ण वैकुण्ठ विष्टरश्रवस्
र हपीकेश केशव माधव स्वभू ॥ १८ ॥
र पुण्डरीकाक्ष गोविन्द गरुडध्वज पी-
र अच्युत शार्ङ्गिन् विष्णुक्सेन जना-
॥ १९ ॥ उपेन्द्र इन्द्रावरज चक्रपाणि
ज पद्मनाभ मधुरिपु वासुदेव त्रिविक्रम
॥ २० ॥ देवकीनन्दन शौरि श्रीपति पुरु-
वनमालिन् बलिध्वसिन् कंसाराति
॥ २१ ॥ विश्वम्भर कैटभजिद्विभु
लङ्घन पुराणपुरुष यज्ञपुरुष नरका-
॥ २२ ॥ जलशायिन् विश्वरूप मुकुन्द
मर्दन यह छयालीसनाम विष्णुके है इन
गके पिता वसुदेव आनकदुन्दुभि है ॥ २३ ॥

लभद्र प्रलम्बन्नो बलदेवोऽच्युताग्र-
॥ रेवतीरमणो राम कामपालो
हृत्पायुध ॥ २४ ॥ नीलाम्बरो रौ-
हिण्यस्तालाङ्गो मुमली हली ॥ म-

कर्पणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो
बलः ॥ २५ ॥

बलभद्र प्रलम्बन्न बलदेव अच्युताग्रज
रेवतीरमण राम कामपाल हृत्पायुध ॥ २४ ॥
नीलाम्बरो रौहिणेय तालाङ्ग मुसलिन् हलिन्
सकर्पण सीरपाणि कालिदीभेदन बल यह
सत्तरह नाम बलदेवजीके है ॥ २५ ॥

मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनके-
तनः ॥ कदर्पो दर्पकोऽनङ्ग. का-
पञ्चशरः स्मरः ॥ २६ ॥ शम्बरारि
नसिजः कुसुमेपुरनन्यजः ॥ पुष्पधन्वा
रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः ॥ २७ ॥

मदन मन्मथ मार प्रद्युम्न मीनकेतन क-
दर्प दर्पक अनङ्ग काम पञ्चशर स्मर ॥ २६ ॥
शम्बरारि मनसिज कुसुमेपु अनन्यज पुष्पध-
न्वन् रतिपति मकरध्वज आत्मभू यह उ-
न्नीश नाम कामदेवके है ॥ २७ ॥

ब्रह्मसूक्तं प्यकेतुं स्यादनिरुद्ध उपाप-
ति. ॥ लक्ष्मी पद्मालया पद्मा तम-
ला श्रीर्हरिमिषा ॥ २८ ॥ इन्दिरा
लोकमाता मा क्षीरोदतनया रमा ॥
शङ्खो लक्ष्मीपते पाञ्चजन्यश्चक्र सु-
दर्शनम् ॥ २९ ॥ कौमोदकी गदा
सङ्को नन्दक कौस्तुभो मणि ॥

१ भार्गवी लोचनननी क्षीरमागकन्यका ॥

यह अर्ध शोक और पुस्तकमें विशेष है भा-
ग्वती लोचनननी क्षीरमागरकन्यका यह ल-
क्ष्मीके नाम विशेष है ॥ १ ॥

तिर्वलारातिः शचीपतिः ॥ जम्भभेदी
हरिहयः स्वाराण्णमुचिसूदनः ॥ ४६ ॥
संकन्दनो दुश्चयवनस्तुरापाण्मेघवाह-
नः ॥ आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभु-
क्षास्तस्य तु प्रिया ॥ ४७ ॥ पुलो-
मजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती ।
हय उच्चैःश्रवाः सूतो मातलिर्नन्द-
नं नेवेम् ॥ ४८ ॥

इन्द्र मरुत्वत् मघवन विडौजस् पाकशा-
सन वृद्धश्रवस् शुनासीर पुरुहूत पुरन्दर
॥ ४४ ॥ जिष्णु लेखर्षभ शक्र शतमन्यु
दिवस्पति सुत्रामन् गोत्रभिद् वज्रिन् वासव
वृत्रहन् वृषन् ॥ ४५ ॥ वास्तोष्पति सुर-
पति वलाराति शचीपति जम्भभेदिन् हरिहय
स्वाराट् नमुचिसूदन ॥ ४६ ॥ संकन्दन दुश्चय-
वन तुरापाट् मेघवाहन आखण्डल सहस्राक्ष
ऋभुक्षिन् यह पैतीश नाम इन्द्रके हैं तिस
इन्द्रकी प्रिया पुलोमजा शची इन्द्राणी सं-
ज्ञक है और नगरी अमरावती संज्ञक है
और हय (घोडा) उच्चैःश्रवस् संज्ञक है
और सूत (सारथि) मातलि संज्ञक है
और वन नन्दनसंज्ञक है ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

स्यात्प्रासादो वैजयन्तो जयन्तः पा-
कशासनिः ॥ ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरा-
वणाभ्रमुवल्लभाः ॥ ४९ ॥ ह्लादिनी व-
ज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः ॥
शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोलिरश-
निर्दयोः ॥ ५० ॥

और इन्द्रका प्रासाद (महल) वैजयन्त
संज्ञक है जयन्त पाकशासनि यह दौ नाम
इन्द्रके पुत्र जयन्तके हैं ऐरावत अभ्रमातङ्ग
ऐरावण अभ्रमुवल्लभ यह चार नाम ऐरावत
हाथीके हैं ॥ ४९ ॥ ह्लादिनी वज्र कुलिश
भिदुर पवि शतकोटि स्वरु शम्ब दम्भोलि
अशनि यह षट् नाम वज्रके हैं तिसमें ह्ला-
दिनी शब्द स्त्रीलिंग है और वज्रशब्द स्त्री-
लिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होता है और पवि
आदिक शब्द पुल्लिंगवाची हैं और अशनि
शब्द पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग दोनोंमें होता
है ॥ ५० ॥

व्योमयानं विमानोऽस्त्री नारदाद्याः
सुरर्षयः ॥ स्यात्सुधर्मा देवसभा पी-
यूषममृतं सुधा ॥ ५१ ॥ मन्दाकि-
नी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीर्घिका ॥
मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः
॥ ५२ ॥ पञ्चैते देवतरवो मन्दारः
पारिजातकः ॥ संतानः कल्पवृक्षश्च
पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ५३ ॥

व्योमयान विमान यह दौ नाम विमा-
नके हैं तिसमें विमानशब्द पुंनपुंसकलिंगमें
होता है नारदादिक सुरर्षि संज्ञक हैं अर्थात्
सुरर्षि यह एक नाम नारदादिकदेवर्षियोंका है
सुधर्मा देवसभा यह दौ नाम देवताओंकी
सभाके हैं पीयूष अमृत सुधा यह तीन नाम
अमृतके हैं ॥ ५१ ॥ मन्दाकिनी वियद्गङ्गा
स्वर्णदी सुरदीर्घिका यह चार नाम स्वर्गगं-

गाके है मेरु सुमेरु हेमाद्रि रत्नसानु सुरा-
लय यह पाँच नाम सुमेरु पर्वतके है ॥५२॥
यह पाच देवताओंके तरु (वृक्ष) है मन्दार
पारिजात सत्तान कल्पवृक्ष हरिचन्दन तिनमें
हरिचन्दन नपुसकीन्गवाची है और विक-
ल्पर पुलिगमेंभी होताहै ॥ ५३ ॥

सनत्कुमारो वैधात्रः स्वर्वेद्यावश्विनी-
सुतौ ॥ नासत्पावश्विनौ दस्तागश्वि-
नेयौ च तावुभौ ॥ ५४ ॥ स्त्रिया
बहुवचसंरसः स्वर्वेद्या उर्वशीमुस्ता ॥
हाहा हृहृश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौ-
कसाम् ॥ ५५ ॥

सनत्कुमार वैधान यह दो नाम सनका-
दिक मुनियोंके है स्वर्वेद्य अश्विनीकुमार ना-
सत्य अश्विन दस्त आश्विनेय यह छ नाम
अश्विनीकुमारके है यह अश्विनीकुमार दो हैं
इसकारण द्विवचन है ॥ ५४ ॥ अप्सरस्
स्वर्वेश्या यह दो नाम उर्वशी आदिक स्व-
र्गकी वेश्याओंके है तिसमें अप्सरसगन्द स्त्री
त्निमें होते है यह जानिवाची होनेमें बहु-
वचनात् है हाहा हृहृ इत्यादिक देवता-
आके गन्धर्व है अर्थात् गन्धर्वगन्द हाहा
हृहृ इत्यादिकोंका बोधक है ॥ ५५ ॥

अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धन-
जय ॥ रुषीटयोनिर्ज्वलनो जाये-
दास्तनूनपात् ॥ ५६ ॥ बर्हि शुष्मा

१ गृहाची भनका ग्या उर्गी न निरन्तरमा ॥
सूक्तो मधुघोषाशा कल्पने एवमो मुप ॥

रुष्णवर्मा शोचिष्केश उपर्वध ॥
आश्रयाशो बृहद्गानुः रुशानुः पाव-
कोऽनल ॥ ५७ ॥ रोहिताश्वो वा-
युसस्तः शिस्तावानाशुशुक्षणिः ॥ हि-
रण्यरेता हुतभृग्दहनो हव्यवाहनः
॥ ५८ ॥ सप्तार्चिर्दमुना. शुक्रश्चित्र-
भानुर्विभावसुः ॥ शुचिरपिप्तमी-
र्वस्तु वाडवो वडवानल ॥ ५९ ॥

अग्नि वैश्वानर वह्नि वीतिहोत्र धनजय
रुषीटयोनि ज्वलन जातवेदस् तनूनपाद् ॥५६॥
बर्हि शुष्मन् रुष्णवर्त्मन शोचिष्केश उपर्वध
आश्रयाश बृहद्गानु रुशानु पावक आत्
॥५७॥ रोहिताश वायुसस्त शिस्ताव आशु-
शुक्षणि हिरण्यरेतस् हुतभृग् दहन हव्यवाहन
॥ ५८ ॥ सप्तार्चिस् दमुनस् शुक्र चित्रभानु
विभावसु शुचि अपिप्त यह चौतीस नाम
अग्निके है और्व वाडव वडवानल यह तीन
वडवानलके नाम है ॥ ५९ ॥

वहेर्द्वयोज्यांटीटावर्हिर्हति. शिस्ता
त्रिपाम् ॥ निषु स्फुटिहोऽग्निपण
मताप संज्वर समी ॥ ६० ॥

१ उज्ज्वलाग्न्यान्निर्गतज्वाला भुनिर्धन्विभग्ननी ॥
क्षाम ग्ना च गाम्नु ग्ना घनदुष्ताग्नः ॥१॥

यह अग्नि औत्तुमर्ग्येय विनेय है उत्तरा
यह अग्नि गाय विनिर्गतज्वाला है निर्धन्वि
भग्ननी ग्ना गाय भग्ननी है अग्नि क्षाम
रत्नाय विनेय गाय है गाय यय गायगाय
यह गाय गाय गाय है

ज्वाल कील अर्चिसू हेति शिखा यह पांच नाम वह्नि (अग्नि) की शिखाके हैं तिसमें ज्वालकीलशब्द स्त्रीपुंलिंगमें होवै हैं और अर्चिशब्द स्त्रीनपुंसकलिंगमें होवै है और हेति शिखा दोनों स्त्रीलिंगमें होवै हैं स्फुलिंग अग्निकण यह दो अग्निके कणकाके नाम हैं और तीनों लिंगमें होवै हैं सन्ताप संज्वर यह दो अग्निके सन्ताप अर्थात् जलनेके नाम हैं और आपसमें समान हैं ॥ ६० ॥

धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराट्
कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमरा-
ड्यमः ॥ ६१ ॥ कालो दण्डधरः
श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः ॥ राक्षसः
कौणपः क्रव्यात्क्रव्यादोऽस्रप आश-
रः ॥ ६२ ॥ रात्रिचरो रात्रिचरः कर्बुरो
निकषात्मजः ॥ यातुधानः पुण्यजनो
नैर्ऋतो यातुरक्षसी ॥ ६३ ॥

धर्मराज पितृपति समवर्तिन् परेतराज्
कृतान्त यमुनाभ्रातृ शमन यमराज् यम
॥ ६१ ॥ काल दण्डधर श्राद्धदेव वैवस्वत
अन्तक यह चौदह नाम यमराजके हैं राक्षस
कौणप क्रव्याद् क्रव्याद अस्रप आशर ॥ ६२ ॥
रात्रिचर रात्रिचर कर्बुर निकषात्मज यातु-
धान पुण्यजन नैर्ऋत यातु रक्षस् यह पन्द-
रह नाम राक्षसोंके हैं तिनमें यातु रक्षस्
शब्द नपुंसकलिंगवाची हैं ॥ ६३ ॥

प्रचेता वरुणः पाशी यादसांपतिरप्प-
निः ॥ श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरि-
श्वा सदागतिः ॥ ६४ ॥ पृषदश्वो

गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः ॥
समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणाः ॥
॥ ६५ ॥ नभस्वद्वातपवनपवमानप्र-
भञ्जनाः ॥ प्रकम्पनो महावातो झ-
ञ्झावातः सवृटिकः ॥ ६६ ॥

प्रचेतस् वरुण पाशिन, यादसांपति अ-
प्पति यह पांच नाम वरुणके हैं श्वसन स्पर्-
शन वायु मातरिश्वन् सदागति ॥ ६४ ॥
पृषदश्व गन्धवह गन्धवाह अनिल आशुग
समीर मारुत मरुत् जगत्प्राण समीरणा ॥ ६५ ॥
नभस्वत् वात पवन पवमान प्रभञ्जन यह
वीश नाम पवनके हैं, प्रकम्पन महावात यह
दो नाम महापवन अर्थात् आंधीके हैं, और
महापवन वर्षासहित हो तौ झंझावात सं-
ज्ञिक है ॥ ६६ ॥

प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च
वायवः ॥ शरीरस्था इमे रंहस्तरसी
तु रयः रयदः ॥ ६७ ॥ जवोऽथ
शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ॥ सत्व-
रं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च ॥ ६८ ॥

प्राण अपान समान उदान व्यान यह
पांच शरीरमें स्थितभये वायु हैं अर्थात् यह
पांच नाम शरीरमें स्थितभये वायुके हैं
रंहस् तरस् रय स्यद् ॥ ६७ ॥ जव यह
पांच नाम वेगके हैं तिसमें रंहस् शब्द और
तरस् शब्द नपुंसकलिंगवाची हैं शीघ्र त्वरित

१ हृदिप्राणो गुदेपानः सग्रानोनाभियण्डले ॥

उदानः कंठदेशे स्यादुदानः सर्वशरीरगः ॥ १ ॥

लघु क्षिप्र अर द्रुत सत्वर चपल तूर्ण अ-
विलम्बित आशु यह ग्यारह नाम शीघ्र अ-
थवा जल्दीके है ॥ ६८ ॥

सततानारताश्रान्तसंतताविरतानिशम् ।
नित्यानवरताजस्रमप्यथातिशयो भ-
रः ॥ ६९ ॥ अतिवेलभृशान्यथाति-
मात्रोद्गाढनिर्भरम् ॥ तीव्रैकान्तनि-
तान्तानि गाढवाढदृढानि च ॥ ७० ॥

सतत अनारत अश्रान्त सतत अविरत
अनिश नित्य अनवरत अजस्र यह नौ नाम
नित्य अर्थात् लगातारके है अतिशय भर
॥ ६९ ॥ अतिवेल भृश अत्यर्थ अतिमात्र
उद्गाढ निर्भर तीव्र एका त निता त गाढ
वाढ दृढ यह चौदह नाम अतिशय अर्थात्
बहुधाके है ॥ ७० ॥

क्लीबे शीघ्राद्यसत्त्वे स्यात्त्रिष्वेषा स-
त्त्वगामि यत् ॥ कुबेरस्यम्बकसखो
यक्षराजगुह्यकेश्वरः ॥ ७१ ॥ मनु-
ष्यधर्मा वनदो राजराजो वनाधि-
पः ॥ किन्नरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो
नरवाहनः ॥ ७२ ॥ यक्षैकपित्रेल-
विलश्रीदपुण्यजनेश्वराः ॥ अस्योद्यान
चैत्ररथ पुनस्तु नलकूबरः ॥ ७३ ॥

शीघ्रादिक दृढपर्यं त शब्द असत्त्व अ-
र्थात् विशेष्यवृत्तित्वके न होनेपर क्लीब न-
पुसक लिंगमें होवे है भाव यह है कि जो
शीघ्रादिक शब्द विशेष्यवृत्ति न हो तो नपु-
सकलिंगमें होते हैं यथा [शीघ्र लुप्तवान्

भृश मूर्ख भृश याति] और इन शीघ्रा-
दिक शब्दोंके बीचमें जो शब्द सत्त्वगामि
अर्थात् विशेष्यवृत्ति है वह तीनों लिंगमें
होता है अर्थात् उस द्रव्यका जो लिंग है
वह शीघ्रादिक शब्दका होता है यथा [शीघ्रा
वेनु शीघ्रो वृष शीघ्र गमनम्] और अतिशय
तथा भर शब्दोंको विशेष्यवृत्ति नहीं है यह
नित्यही पुल्लिङ्गवाची है कुबेर त्र्यम्बकसख
यक्षराज गुह्यकेश्वर ॥ ७१ ॥ मनुष्यधर्मन्
धनद राजराज धनाधिप किन्नरेश वैश्रवण
पौलस्त्य नरवाहन ॥ ७२ ॥ यक्ष एकपिग
ऐलविल श्रीद पुण्यजनेश्वर यह सत्तरह
नाम कुबेरके है इन कुबेरका उद्यान बगीचा
चैत्ररथ सन्निक है और पुत्र नलकूबर स-
न्निक है ॥ ७३ ॥

कैलासः स्थानमलका पूर्वमानं तु
पुष्पकम् ॥ स्यात्किन्नरः किंपुरुषस्तु-
रंगवदनो मयुः ॥ ७४ ॥ निधिर्ना
शेवधिर्भेदा पद्मशङ्खादयो निधेः ॥

इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

और कुबेरका स्थान कैलास सन्निक है
और पुर अलका सन्निक है और विमान
पुष्पक सन्निक है किन्नर किंपुरुष तुरंगव-
दन मयु यह चार किन्नरमात्रके नाम हैं
॥ ७४ ॥ निधि शेवधि यह दो नाम नि-
धि खजानेके हैं निधि शेवधि यह दोनों

१ महापद्मश्च पद्मश्च सखो मकरकच्छपो ॥
युक्कुन्दकुन्दनीलाश्च पर्वश्च निधयो नमः ॥ २ ॥

शब्द नृ (पुंलिंग) हैं नृशब्दका दोनों शब्दोंमें
काकनेत्रवत् संबन्ध है और पद्म शंख आ-
दिक निधिके विशेष भेद हैं ॥

इति स्वर्गवर्गः

द्योदिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्क-
रमम्बरम् ॥ नभोऽन्तरिक्षं गगनम-
नन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥ विय-
द्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहाय-
सी ॥ विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युर-
पि स्यात्तदव्ययम् ॥ २ ॥

॥ इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥

द्यो दिव् अभ्र व्योमन् पुष्कर अम्बर नभस्
अन्तरिक्ष गगन अनन्त सुरवर्त्मन् ख वियत्
विष्णुपद आकाश विहायस् विहायस नाक
द्युस् यह उन्नीश नाम आकाशके हैं द्यो
और दिव् शब्द दोनों स्त्रीलिंगमें होते हैं
और आकाश विहायस् शब्द नपुंसकलिंग-
वाची हैं परन्तु विकल्पनाकर पुंलिंगमें होते
हैं और विहायस और नाक शब्द पुंलिंग-
में ही होते हैं द्युस् अव्यय है ॥ १ ॥ २ ॥

इति व्योमवर्गः ।

दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च
हरितश्च ताः ॥ प्राच्यवाचीप्रतीच्य-

१ तारापयोऽन्तरिक्षं च मेघाध्वाच्च महाविलम् ।
यह अर्द्धश्लोक और पुस्तकोमें विशेष है
तारापय अन्तरिक्ष मेघाध्वन् महाविल यह चार
नाम आकाशके और विशेष हैं ।

स्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः ॥ १ ॥ उत्तरा
दिगुदीची स्याद्विश्वं तु त्रिषु दिग्भवे ॥

दिश् ककुभ् काष्ठा आशा हरित यह
पाँच नाम दिशाओंके हैं, वहही दिशा पूर्व
दक्षिण पश्चिम क्रमकर प्राची अवाची प्र-
तीची संज्ञिक होवै हैं यथा पूर्वदिशाका
नाम प्राची है दक्षिणदिशाका नाम अवाची
है पश्चिमदिशाका नाम प्रतीची है और जो
उत्तरदिशा है वह उदीची संज्ञिक है ॥ १ ॥ दिश्य
यह एक नाम दिशाओंमें होनेवाले पदार्थमें
वर्तै है, यह तीनों लिङ्गोंमें होता है [यथा
दिशो हस्ती दिश्या हस्तिनी]

इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैऋतो वरुणो म-
रुत् ॥ २ ॥ कुबेर ईशः पतयः पू-
र्वादीनां दिशां क्रमात् ॥

१ अवाग्भवमवाचीनमुदीचीनमुदग्भवम् ॥ प्र-
त्यग्भवं प्रतीचीनं प्राचीनं प्राग्भवं त्रिषु ॥ १ ॥

यह श्लोक और पुस्तकोमें विशेष है अ-
वाग्भव अर्थात् दक्षिण दिशामें होनेवालेका नाम
अवाचीन संज्ञिक है उदग्भव अर्थात् उत्तरदिशा
में होनेवालेका नाम उदीचीन संज्ञिक है प्रत्यग्भव
अर्थात् पश्चिम दिशामें होनेवालेका नाम प्रती-
चीन संज्ञिक है प्राग्भव अर्थात् पूर्वदिशामें होने-
वालेका नाम प्राचीन संज्ञिक है यह अवाचीन
उदीचीन प्रतीचीन शब्द तीनों लिंगोंमें होवै हैं १
२ रविः शुक्रो महीमूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः ॥
बुधो बृहस्पतिश्चेति दिशां चैव तथा ग्रहाः १

२ यह श्लोक और पुस्तकोमें विशेष है रवि
(सूर्य) शुक्र महीमूनु (मंगल) स्वर्भानु (राहु) भा-
नुज (शनैश्चर) विधु (चंद्रमा) बुध बृहस्पति यह
क्रमसें पूर्वादिक दिशाओंके उसी प्रकार यह हैं ॥

इद्र वह्नि पितृपति नैर्ऋत वरुण मरुत ॥२॥
 कुबेर ईश यह पूर्वादिक दिशाओंके क्रमसे
 पति है यथा पूर्वका इद्र आग्नेयका वह्नि
 (अग्नि) दक्षिणका पितृपति (यम) नैर्ऋत्यका
 नैर्ऋत पश्चिमका वरुण वायव्यका मरुत उत्तर-
 का कुबेर ईशानका ईश (महादेव) है ॥

ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदो-
 जनः ॥ ३ ॥ पुष्पदन्तः सार्वभौमः
 सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥ करिण्योऽ-
 भ्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाः क्रमात् ॥
 ॥ ४ ॥ ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाद्र-
 ना चाजनावती ॥ क्लीबाव्ययं त्वप-
 दिशं दिशोर्मध्ये विदिक्खियाम् ॥५॥

ऐरावत पुण्डरीक वामन कुमुद अजन
 ॥ ३ ॥ पुष्पदन्त सार्वभौम सुप्रतीक यह
 क्रमसे पूर्वादिक दिशाओंके धारण करने-
 वाले गज (हाथी) हैं अश्रमु कपिला पिं-
 गला अनुपमा ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती अगना
 अजनावती यह क्रमसे दिग्गजोंकी करिणी
 (हथिनी) हैं अपदिश विदिश यह दो दि-
 शाओंके मध्यमें वर्तते हैं अर्थात् कोणके
 नाम है विसर्ग अपदिश शब्द नपुंसकलिंग-
 वाची है और अव्ययनी है और विदिश
 शब्द स्त्रीलिंगमें होते हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥

अभ्यन्तरं त्वन्नरात् चक्ररात् तु म-
 ण्डलम् ॥ अश्रं मेघो वारिवाह स्त-
 नपितृनुर्धदारव ॥ ६ ॥ धाराधरो
 जलधरस्तद्वित्यान्वागिदोऽम्बुभृत् ॥७॥

नजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः ॥७॥
 कादम्बिनी मेघमाला त्रिपु मेघभ-
 वेऽभ्रियम् ॥ स्तनितं गर्जितं मेघनि-
 र्घोपे रसितादि च ॥ ८ ॥

अभ्यन्तर अन्तराल यह दो बीचकी ज-
 गहके नाम हैं चक्रवाल मण्डल यह दो म-
 ण्डल अर्थात् घेरेके नाम हैं अम मेघ वारि-
 वाह स्तनपितृनु बलाहक ॥६॥ धाराधर जलधर
 तद्वित्वा वारिद अम्बुभृत् घन जीमूत मुदिर
 जलमुच् भूमयोनिय यह पदरह नाम मेघके
 हैं ॥७॥ कादम्बिनी मेघमाला यह दो नाम
 मेघसमूहके हैं अभ्रिय यह एक नाम मेघसे
 उत्पन्नभये पदार्थमें वर्तते हैं सो तीनो लिंगों
 होता है यथा [अभ्रिया आप अभ्रिय आ-
 सार अभ्रिय जलम्] स्तनित गर्जित रसित
 आदिशब्दोंसे ध्वनितादिक यह तीन नाम
 मेघके शब्दोंमें वर्तते हैं अर्थात् यह नाम ग-
 र्जनके हैं ॥ ८ ॥

राम्पाशतहृदाद्वादिर्नैरावतयः क्षणम-
 भा ॥ तद्वित्सौदामनीविद्युच्चलाच-
 पला अपि ॥ ९ ॥ स्फूर्जंभुवज्जनिर्घो-
 षो मेघज्योतिरिरिमदः ॥ इन्द्रापुधं
 शक्रधनुस्तदेव ऋजु रोहितम् ॥१०॥

शपा शतहृदा ह्यादिनी ऐरावती क्षणमभा
 तद्वित्सौदामनी विद्युच्चला चपला यह
 दश नाम विजुटीके हैं ॥९॥ स्फूर्जंभु वज्जनि-
 र्घोष यह दो नाम वज्रगुण अर्थात् विजु-
 टीकी गर्जनाके हैं मेघज्योतिरि इरिमद यह दो
 मेघज्योतिके नाम हैं इन्द्रापुध शक्रधनु

ऋजुरोहित यह तीन नाम वादलपर धनुषा-
कार पडेभये सूर्यके किरणोंके हैं ॥ १० ॥

वृष्टिर्वर्ष तद्विधातेऽवग्राहावग्रहौ स-
मौ ॥ धारासंपात आसारः शीक-
रोऽम्बुकणाः स्मृताः ॥ ११ ॥ व-
र्षोपलस्तु करका मेघच्छन्नेऽहि दुर्दि-
नम् ॥ अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्त-
धिपवारणम् ॥ १२ ॥ अपिधान-
तिरोधानपिधानाच्छादनानि च ॥

वृष्टि वर्ष यह दो नाम मेघवर्षनेके हैं अ-
वग्राह अवग्रह यह दो नाम तिन वर्षाके
रुक्नेमें वर्ते हैं अर्थात् अवर्षाके नाम हैं
आपसमें समान लिंगवाची हैं धारासंपात
आसार यह दो नाम मुशलधारवर्षाके हैं
शीकर यह एकनाम जलकणिकाओंका है
इतकों कुहराभी कहते हैं ॥ ११ ॥ वर्षोपल
करका यह दो नाम ओलोंके हैं दुर्दिन यह
एक नाम मेघसे ढकेभये दिनमें वर्ते है अ-
न्तर्धा व्यवधा अन्तर्द्धि अपवारण ॥ १२ ॥
अपिधान तिरोधान पिधान आच्छादन यह
आठ नाम ढाकनेके हैं तिसमें अन्तर्धा व्य-
वधा दो शब्द त्रोल्लिंगमें होवै हैं अन्तर्धि
शब्द पुल्लिंगमें होवै है ॥

हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदवा-
न्धवः ॥ १३ ॥ विधुः सुधांशुः शु-
भ्रांगुणेपथीशो निशापतिः ॥ अजो
जैवातुकः सोमो ग्लौर्मगाङ्कः कला-
निधिः ॥ १४ ॥ द्विजराजः शशधरो

नक्षत्रेशः क्षपाकरः ॥ कला तु षोडशो
भागो विम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ॥ १५ ॥

हिमांशु चंद्रमस् चंद्र इन्दु कुमुदवान्धव
॥ १३ ॥ विधु सुधांशु शुभ्रांशु ओषधी
निशापति अब्ज जैवातुक सोम ग्लौ मृगां
कलानिधि ॥ १४ ॥ द्विजराज शशधर न
क्षत्रेश क्षपाकर यह बीश नाम चंद्रमाके है
चंद्रमण्डलका जो सोलहका भाग है व
कला संज्ञिक है विम्ब मण्डल यह दो ना
विम्बके हैं तिसमें विम्बशब्द पुंनपुंसकलिंग
होवै है और मण्डल शब्द तीनों लिंग
होवै है ॥ १५ ॥

भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समं-
ऽशके ॥ चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना
प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥ १६ ॥ कलङ्काङ्-
कौ लाञ्छनं च चित्रं लक्ष्म च लक्षण-
म् ॥ सुषमा परमा शोभा शोभा का-
न्तिर्द्युतिश्छविः ॥ १७ ॥

भित्त शकल खण्ड अर्द्ध यह चार नाम
खण्ड अर्थात् टुकड़ेके हैं तिसमें भित्त नपुं
सकलिंग है और शकल और खण्डशब्दार्ध
नपुंसकलिंग हैं परन्तु विकल्पनाकर पुल्लि
में होवै हैं अर्द्ध शब्द पुल्लिंगमेंहो होता है
यथा [कम्बलस्यार्द्धः खण्डः] और अर्द्ध
शब्द वाच्यलिंगभी है यथा [अर्द्धां शाटी
अर्द्धः पटः अर्द्धं वस्त्रम्] और अर्द्ध यह एक
शब्द तुल्यभागमें वर्ते है और नपुंसकलिंग-
वाची है चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना यह तीन
नाम चंद्रमाकी प्रभा अर्थात् उजियारीके हैं

प्रसाद प्रसन्नता यह दो नाम निर्मलताके है
॥ १६ ॥ कलक अक लछन चिन्ह ल-
क्ष्मन् लक्षण यह छै नाम चिह्नेके है सु-
पमा यह एक नाम परमशोभाका है शोभा
कान्ति द्युति छवि यह चार नाम शोभा-
मात्रके है ॥ १७ ॥

अवश्यायस्तु नीहारस्तुपारस्तुहिनं हि-
मम् ॥ प्रालेयं मिहिका चाय हिमा-
नी हिमसंहतिः ॥ १८ ॥ शीतं गुणे
तद्वदर्थः सुपीमः शिशिरो जडः ॥
तुपारः शीतलः शीतो हिमः सत्तान्य-
लिङ्गकाः ॥ १९ ॥ ध्रुव औत्तानपादि-
स्यादगस्त्यः कुम्भसंभवः ॥ मैत्रावरु-
णिरस्यैव लोपामुद्रा सधर्मिणी ॥ २० ॥

अवश्याय नीहार तुपार तुहिन हिम प्रा-
लेय मिहिका यह सात नाम हिम अर्थात्
ठडकके है हिमानी हिमसंहति यह दो नाम
महाहिम अर्थात् बड़ी ठडकके है ॥ १८ ॥

नगुम्भ स्निग्वाची शीतशब्द गुणस्पर्शविशेष-
मेही होता है न कि गुणवानमें और सुपीम
शिशिर जड तुपार शीतल शीत हिम यह
सातों तद्वदर्थ अर्थात् शीत गुणवाले अत्यं-
युक्त है और अन्यलिङ्ग अर्थात् विगोच्य-
स्निग्वाची है ॥ १९ ॥ ध्रुव औत्तानपादि
यह दो नाम उत्तानपादके पुत्र ध्रुवके है
अगस्त्य कुम्भसंभव मैत्रावरुणि यह तीन
नाम अगस्त्यमुनिके हैं इन अगस्त्यमुनिकी
सधर्मिणी को लोपामुद्रा सनिक है ॥ २० ॥

नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु वा
स्त्रियाम् ॥ दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादि-
तारा अश्वयुगश्विनी ॥ २१ ॥ राधा
विशाखा पुण्ये तु सिध्यतिप्यौ श्रवि-
ष्ठया ॥ समा धनिष्ठा स्युः प्रोष्ठपदा
भाद्रपदाः स्त्रियः ॥ २२ ॥

नक्षत्र नक्ष भ तारा तारका उडु यह है
नाम नक्षत्रमात्रके है उडु शब्द नपुंसकलिङ्ग
है परंतु विकल्पनाकर पुल्लिङ्गमें होता है
अश्विनी इत्यादिक नक्षत्र दाक्षायणी स-
त्तिक है अश्वयुज् अश्विनी यह दो नाम
अश्विनी नक्षत्रके है ॥ २१ ॥ राधा वि-
शाखा यह दो नाम विशाखानक्षत्रके हैं
पुण्य सिव्य तिव्य यह तीन नाम पुण्य
नक्षत्रके है श्रविष्ठा करकेसमान धनिष्ठा
है अर्थात् श्रविष्ठा धनिष्ठा यह दो नाम
धनिष्ठानक्षत्रके है प्रोष्ठपदा भाद्रपदा यह
दो नाम पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदाओंके
है यह स्त्रीलिङ्ग है ॥ २२ ॥

मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहाय-
णी ॥ इत्यलास्तच्छिरोदेशे तारका
निवसन्ति याः ॥ २३ ॥ बृहस्पतिः
सुराचार्यो गीष्पतिर्धिपणो गुरुः ॥
जीव आदिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिख-
ण्डिजः ॥ २४ ॥

मृगशीर्षं मृगशिरस् आग्रहायणी यह
तीन नाम मृगशीर्ष नक्षत्रके है तिस मृग-
शीर्षके शिरोदेशमें जो पाच तारा निवास क-

रते हैं वह इत्वला संज्ञिक हैं ॥ २३ ॥ बृ-
हस्पति सुराचार्य गीष्पति धिषण गुरु जीव
आंगिरस वाचस्पति चित्रशिखण्डिज यह
नौ नाम बृहस्पतिजीके हैं ॥ २४ ॥

शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः
कविः ॥ अङ्गारकः कुजो भौमो लो-
हिताङ्गो महीसुतः ॥ २५ ॥ रौहि-
णेयो बुधः सौम्यः समौ सौरिशनै-
श्वरौ ॥ तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहि-
केयो विधुंतुदः ॥ २६ ॥

शुक्र दैत्यगुरु काव्य उशनस् भार्गव
कवि यह छै नाम शुक्रके हैं अंगारक कुज
भौम लोहिताङ्ग महीसुत यह पांच नाम मं-
गलके हैं ॥ २५ ॥ रौहिणेय बुध सौम्य
यह तीन नाम बुधके हैं सौरि शनैश्वर यह
दो नाम शनैश्वरके हैं आपसमें समान हैं
तम राहु स्वर्भानु सैंहिकेय विधुंतुद यह
पांच नाम राहुके हैं ॥ २६ ॥

सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखं-
ण्डिनः ॥ राशीनामुदयो लग्नं ते तु
मेपवृषादयः ॥ २७ ॥ सूरसूर्यार्यमा-
दित्यद्वादशात्मदिवाकराः ॥ भास्करा-
हस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः ॥ २८ ॥
भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णर-
श्मयः ॥ विकर्तनार्कमार्तण्डमिहिरारु-
णपूषणः ॥ २९ ॥ द्युमणिस्तरणिमित्र-

१ मरीचिचरंगिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः
क्रतुः ॥ वमिष्टश्चेति सप्तैते ज्ञेयाश्चित्रशिख
ण्डिनः १

श्चित्रभानुर्विरोचनः ॥ विभावसुर्ग्रहप-
तिस्त्रिषां पतिरहर्षतिः ॥ ३० ॥ भा-
नुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः १ ॥
माठरः पिङ्गलो दण्डश्चण्डांशोः पा-
रिपार्श्वकाः ॥ ३१ ॥

मरीचि अत्रि आदिक सप्तर्षि चित्रशि-
खण्डिन संज्ञिक हैं राशियोंका उदय लग्न सं-
ज्ञिक हैं वह लग्न मेष वृष आदिक हैं ॥ २७ ॥
सूर सूर्य अर्यमन् आदित्य द्वादशात्मन् दि-
वाकर भास्कर अहस्कर ब्रध्न प्रभाकर वि-
भाकर ॥ २८ ॥ भास्वत् विवस्वत् सप्ताश्व
हरिदश्व उष्णरश्मि विकर्त्तन अर्क मार्तण्ड
मिहिर अरुण पूषन् ॥ २९ ॥ द्युमणि तरणि
मित्र चित्रभानु विरोचन विभावसु ग्रहपति
त्रिषांपति अहर्षति ॥ ३० ॥ भानु हंस
सहस्रांशु तपन सवितृ रवि यह तैत्तिरीयनाम
सूर्यके हैं माठर पिङ्गल दण्ड यह एक एक
चण्डांशु (सूर्य) के पारिपार्श्वक अर्थात्
चारोंतरफके समीपवर्ती ग्रह हैं ॥ ३१ ॥

२ पद्माक्षस्तेजसांराशिश्छायानाथस्तमिस्रहा ॥
कर्मसाक्षी जगच्चक्षुर्लोकवन्धुस्त्रयीतनुः ॥ १ ॥
प्रद्योतनो दिनमणिः खद्योतो लोकबान्धवः ॥
इनो भगो धामनिधिश्चांशुमाल्यब्जिनीपतिः २
यह दो श्लोक और पुस्तकोंमें विशेष हैं
पद्माक्ष तेजसांराशि छायानाथ तमिस्रहर् कर्म-
साक्षिन् जगच्चक्षुस् लोकवन्धु त्रयीतनु ॥ १ ॥
प्रद्योतन दिनमणि खद्योत लोकबान्धव इन भा-
ग धामनिधि अंशुमालिन् अब्जिनीपति यह स-
त्तरह नाम सूर्यके विशेष हैं ॥ २ ॥

सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपिर्गरुडा-
ग्रजः ॥ परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यक-
मण्डले ॥ ३२ ॥ किरणोऽस्त्रमयूखांशुग-
भस्तिघृणिरश्मयः ॥ भानुः करो मरी-
चिः स्त्रीपुंसयोर्दीप्तिः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

सूरसूत अरुण अनूरु काश्यपि गरुडा-
ग्रज यह पाच नाम अरुण अर्थात् सूर्यके
सारथिके है परिवेष परिधि उपसूर्यक म-
ण्डल यह चार परिवेष अर्थात् सूर्यके चारों-
तरफ कभी दीखते भाये कुण्डलाकार तेज-
विशेषके नाम है परिवेषशब्दके साहचर्यसें
परिधिभी पुलिगमें जानना ॥ ३२ ॥ किरण
उत्त मयूख अशु गभस्ति घृणि रश्मि भानु
कर मरीचि दीप्ति यह ग्यारह नाम किर-
णोंके है तिसमें मरीचि शब्द स्त्री पुलिगमें
होता है और दीप्तिशब्द केवल स्त्रीलिगमें
ही होता है स्त्रिया इसशब्दका अवयव
उत्तरश्लोकमें भी काकाक्षिगोलकन्यायकरके
होता है ॥ ३३ ॥

स्युः प्रभारुग्रुचिस्त्रिभूभाभाऽविद्यु-
तिदीप्तयः ॥ रोचिः शोचिरुभे कृत्वे
प्रकाशो द्योत आतपः ॥ ३४ ॥
कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कटुष्ण
त्रिषु तद्वति ॥ तिग्मं तीक्ष्णं स्वरं त-
द्वन्मृगतृष्णा मरीचिका ॥ ३५ ॥

प्रभा रुच् रुचि त्रिषु भा भास् छवि
द्युति दीप्ति रोचिषु शोचिषु ये ग्यारह नाम प्र-
भामात्रके हैं तिसमें दीप्ति शब्दपर्यन्त स्त्रीलि-

गम होवे है रोचिषु शोचिषु यह दोनो शब्द
नपुसकलिगमें होवे है प्रकाश द्योत आतप
यह तीन नाम सूर्यकी प्रभा अर्थात् घामके
है ॥ ३४ ॥ कोष्ण कवोष्ण मन्दोष्ण कटु-
ष्ण यह चार नाम थोड़े गर्मके है यह धर्म-
मात्रमें रूपभेदकर नपुसकलिग है और त-
द्वान् अर्थात् धर्मवानके विषे तीनों लिंगके-
विषे होवे हैं तिग्म तीक्ष्ण स्वर यह तीन
नाम अतिगरमके है यह तद्वत् अर्थात् को-
ष्णशब्दकी समान है भाव यह है कि धर्ममें
नपुसकलिगवाची है और धर्मवानके विषे
तीनों लिंगमें होते हैं मृगतृष्णा मरीचिका
यह दो नाम लूणोंके है ॥ ३५ ॥

इति दिग्दर्शनम् ॥

कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयोऽप्यथ
पक्षतिः ॥ प्रतिपदे इमे स्त्रीत्वे तदा-
द्यास्तिथयो द्वयोः ॥ १ ॥ घन्त्रो
दिनाहनी वा तु क्लीवे दिवसवासरौ ॥
प्रत्यूपोऽहर्मुखं कल्पमुषः प्रत्युपसी अ-
पि ॥ २ ॥ प्रभातं च दिनान्ते तु सायं
संध्या पितृप्रसूः ॥ ग्राह्यापराह्णम-
ध्याह्नास्त्रिसंध्यमथ शर्वरी ॥ ३ ॥
निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा

१ व्युष्ट विभात द्वे क्लीवे पुत्ति भोमर्ग इत्यन्ते ॥
यह अर्थ ओर ओर पुस्तकोंमें विशेष है व्युष्ट
विभात गोसर्ग यह तीन नाम प्रभातकालके वि-
शेष है व्युष्ट विभात यह दो शब्द नपुसकलिगमें
होते हैं और गोसर्ग शब्द पुलिगमें कहा है ॥ १ ॥

क्षणदा क्षपा ॥ विभावरीतमस्वि-
न्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥

काल दिष्ट अनेहस् समय यह चार नाम समयके हैं पक्षति प्रतिपद् यह दो नाम परिवा तिथिके हैं यह शब्द स्त्रीलिंगमें होवै हैं वह परिवादिक दिन तिथि संज्ञिक हैं वह तिथि शब्द स्त्रीलिंगमें होता है ॥ १ ॥ घस्र दिन अहन् दिवस वासर यह पांच नाम दिनके हैं तिसमें दिवस और वासर नपुंसक तथा पुंलिंगमें होवै हैं प्रत्युष अहर्मुख कल्य उषस् प्रत्युषस् ॥ २ ॥ प्रभात यह छै नाम प्रभातकालके हैं प्रत्युष शब्द पुंलिंग तथा नपुंसक लिंगमें होता है सायम् संध्या पितृप्रसू यह दिनान्तमें वर्तै हैं अर्थात् दिनान्त सायम् सन्ध्या पितृप्रसू यह चार नाम सन्ध्यासमयके हैं. सायं शब्द अव्यय है और दिनान्त शब्द पुंलिंगमें होता है. प्राह् अपराह् मध्याह् यह तीनों मिलकर त्रिसन्ध्य संज्ञिक हैं. तिसमें पूर्वदिन प्राह् संज्ञिक है और परदिन अपराह् संज्ञिक है और दुपहर मध्याह् संज्ञिक है शर्वरी ॥ ३ ॥ निशा निशीथिनी रात्रि त्रियामा क्षणदा क्षपा विभावरी तमस्विनी रजनी यामिनी तमी यह वारह नाम रात्रिके हैं ॥ ४ ॥

तमिस्रा तामसी रात्रिज्योत्स्नी चन्द्रि-
कयान्विता ॥ आगामिवर्तमानाहर्गु-
क्तायां निशि पक्षिणी ॥ ५ ॥ ग-
णरात्रं निशा बह्वयः प्रदोषो रजनी-

मुखम् ॥ अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ द्वौ
यामप्रहरौ समौ ॥ ६ ॥

तमिस्रा यह एक नाम तामसी रात्रि अर्थात् अन्धियारीका है. ज्योत्स्नी यह एक नाम चंद्रिकायुक्त रात्रि अर्थात् उजियारी रात्रिका है. आनेवाले तथा वर्तमान दिनोंसे युक्त रात्रिमें पक्षिणी यह एक नाम वर्तै है ॥ ५ ॥ मिलकर बहुतसीं रात्रि गणरात्र संज्ञिक हैं प्रदोष रजनीमुख यह दो नाम रात्रिके पूर्वभागके हैं. अर्धरात्र निशीथ यह दो नाम आधीरातिके हैं. याम प्रहर यह दो नाम प्रहरके हैं. आपसमें समान लिंग हैं ॥ ६ ॥

सं पर्वसंधिः प्रतिपत्पञ्चदशोर्यदन्तर-
म् ॥ पक्षान्तौ पञ्चदशयौ द्वे पौर्णमा-
सी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥ कलाहीने
सानुमतिः पूर्णे राका निशाकरे ॥
अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्ये-
न्दुसंगमः ॥ ८ ॥

परिवा और पंचदशी अर्थात् अमावस्या पूर्णिमाका जो बीच है वह सन्धि पर्व संज्ञिक है. पक्षान्त पंचदशी यह दो नाम अमावसी तथा पौर्णमासीके हैं दो होनेसे द्विवचन है पौर्णमासी पूर्णिमा यह दो नाम पौर्णमासीके हैं ॥ ७ ॥ चंद्रमा कलाहीन होनेपर वह पौर्णमासी अनुमति संज्ञिक है और चंद्रमा पूर्ण होनेपर वह पौर्णमासी राका संज्ञिक है. अमावास्या अमावस्या दर्श सूर्येन्दुसंगम यह चार नाम अमावसीके हैं

दर्शं सूर्येन्दुसमं यह दानां शब्द पुलिङ्गमें होते हैं ॥ ८ ॥

सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली सा नष्टेन्दु-
कला कुहूः ॥ उपरागो ग्रहो राहु-
ग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च ॥ ९ ॥
सोपप्लवोपरकौ द्वावग्न्युत्पात उपा-
हितः । एकयोत्तया पुष्पवन्तौ दि-
वाकरनिशाकरौ ॥ १० ॥

सो अमावसी यदि दृष्टचद्र होवै तो सिनी-
वाली सन्निक है और यदि वहही अमाव-
सी नष्ट चद्रकला होवै तो कुहू सन्निक है
भाव यह है कि—जिस अमावसीमें चद्रमा
दीखता हो वह सिनीवाली सन्निक है और
जिस अमावसीमें चद्रमाको कला नष्ट होजा-
ये वह कुहू सन्निक है इन्दु चद्रमा पूषा सूर्य
पह दोनो राहुकरग्रस्त होनेपर उस ग्रह-
गके उपराग ग्रह यह दो नाम है अर्थात्
उपराग ग्रह यह दो नाम आसके हैं ॥ ९ ॥ सो-
प्लव उपरक्त यह दो नाम राहुकर ग्रसेभये
चद्रमा वा सूर्यके हे अग्न्युत्पात उपाहित
यह दो नाम धूमकेतु सन्निक उत्पातके हैं
एक उक्तिकर सूर्य चद्रमा दोनों पुष्पवन्त
सन्निक है अर्थात् पुष्पवन्त शब्द सूर्य तथा
चद्रमा दोनोंका बोधक है सूर्य चद्रमा दो
होनेसे पुष्पवन्त शब्द द्विवचनान्त है परन्तु
पुष्पवन्त शब्दमें एकवचन कहनेसे एक सूर्य
तथा एक चद्रमाका ग्रहण नहीं होगा किन्तु
दोनोंकाही एकसाथमें ग्रहण होगा ॥ १० ॥

अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा त्रिशत्तु
ताः कला ॥ तास्तु त्रिशत्क्षणस्ते तु
मुहूर्त्तो द्वादशास्त्रियाम् ॥ ११ ॥ ते तु
त्रिशदहोरात्रः पक्षस्ते दश पञ्च च ॥
पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ मासस्तु
वावुभौ ॥ १२ ॥ दौ द्वौ मार्गादिमासौ
स्थाद्वतुस्तैरयनं त्रिभिः ॥ अपने द्वे ग-
तिरुदग्दक्षिणाऽर्कस्य वत्सरः ॥ १३ ॥

निमेष यह एक नाम जितने देरमें ने-
त्रोंके पलक लगते हैं उसकालका है यह
निमेष अठारह मिलकर काष्ठा सन्निक है
और वह काष्ठा तीस मिलकर कला सन्निक
है और वह कला तीस मिलकर क्षण स-
न्निक है और वह क्षण बारह मिलकर मु-
हूर्त्त सन्निक है मुहूर्त्त शब्द पुनपुनकल्मिमें
होता है ॥ ११ ॥ वह मुहूर्त्त तीस मिल-
कर अहोरात्र सन्निक है और वह अहोरान
दश तथा पाच अर्थात् पंद्रह मिलकर पक्ष
सन्निक है वह पक्ष दो प्रकारका है शुक्ल
कृष्ण तिसमें मासका पूर्वपक्ष शुक्ल सन्निक
है और अपरपक्ष कृष्ण सन्निक है वह दो
पक्ष मिलकर मास सन्निक है ॥ १२ ॥ और
वहही दो दो मार्गादिकमास ऋतु सन्निक है
और उही तीन ऋतुओंकर अयन होता है
अर्थात् वह तीन ऋतु मिलकर अयन सन्निक
है और वह अयन दो प्रकारका है एक
सूर्यकी उत्तरागति दूसरी दक्षिणा गति अ-
र्थात् एकअयन उत्तरायण सन्निक है और

दूसरा अयन दक्षिणायन संज्ञिक है, वहही दो अयन मिलकर वत्सर अर्थात् वर्षसंज्ञिक है ॥ १३ ॥

अमरात्रिदिवे काले विषुवद्विषुवं च तत् ॥
मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च
सः ॥ १४ ॥ पौषे तैषसहस्यौ द्वौ
तथा माघेऽथ फाल्गुने ॥ स्यात्तपस्यः
फाल्गुनिकः स्याच्चैत्रं चैत्रिको मधुः १५

विषुवत् विषुव यह दो नाम समान रा-
त्रिकालमें वर्तते हैं अर्थात् जब रात्रिदिन
बराबर होते हैं उसकालके नाम हैं मार्गशीर्ष
सहस् मार्ग आग्रहायणिक यह चार नाम
अग्निके हैं ॥ १४ ॥ तैष सहस्य यह दो
पौषमें वर्तते हैं अर्थात् पौष तैष सहस्य यह-
तीन नाम पौषके हैं, तपस् माघ यह दो नाम
माघके हैं, फाल्गुन तपस्य फाल्गुनिक यह
तीन नाम फाल्गुनके हैं, चैत्र चैत्रिक मधु
यह तीन नाम चैत्रके हैं ॥ १५ ॥

वैशाखे माधवो राधो ज्येष्ठे शुक्रः
शुचिस्त्वयम् ॥ आपादे श्रावणे तु
स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः ॥ १६ ॥

१ पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र
सा ॥ नाम्ना स पौषो माघाद्याश्वैवमेकादशा-
परे ॥ १ ॥

यह श्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है पुष्यन-
श्वयुक्त पौर्णमासी पौषी संज्ञिक है वह पौषी-
पौर्णमासी जिस मासमें हो सो मास पौष संज्ञि-
क है इसीप्रकार औरभी माघादिक ग्यारह मास
जानने चाहिये ।

स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः स-
माः ॥ स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयु-
जोऽपि स्यात्तु कार्तिके ॥ १७ ॥
वाहुलोज्जौ कार्तिकिको हेमन्तः शि-
शिरोऽस्त्रियाम् ॥ वसन्ते पुष्पसमयः
सुरभिर्ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥ नि-
दाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्माणम-
स्तपः ॥ स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूस्त्रि
वर्षा अथ शरत्स्त्रियाम् ॥ १९ ॥

वैशाख माधव राध यह तीन नाम वै-
शाखके हैं ज्येष्ठ शुक्र यह दो नाम ज्येष्ठके
हैं, शुचि आपाद यह दो नाम आपादके हैं
श्रावण नभस् श्रावणिक यह तीन नाम
श्रावणके हैं ॥ १६ ॥ नभस्य प्रौष्ठपद भाद्र
भाद्रपद यह चार नाम भाद्रके हैं, आपसमें
समान लिंग हैं, आश्विन इष आश्वयुज यह
तीन नाम कार्तिके हैं, कार्तिक ॥ १७ ॥
वाहुल ऊर्ज कार्तिकिक यह चार नाम कार्ति-
कके हैं, हेमन्त यह एक हेमन्तऋतुका नाम
है, शिशिर यह एक शिशिरऋतुका नाम है,
शिशिरशब्द पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्गमें होता
है, वसन्त पुष्पसमय सुरभि यह तीन वसन्त-
ऋतुके नाम हैं, ग्रीष्म ऊष्मक ॥ १८ ॥
निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्माणम तप यह
सात नाम ग्रीष्म ऋतु अर्थात् गरमीके हैं, प्रावृष्
वर्षा यह दो नाम वर्षाऋतुके हैं तिसमें प्रा-
वृष् शब्द स्त्रीलिङ्गमें होता है और वर्षाशब्द
स्त्रीलिङ्गमें बहुवचनान्त होता है, शरद् यह

एक नाम शब्द ऋतुका है शब्द गन्ध स्त्री-
लिङ्गमें होता है ॥ १९ ॥

पडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः
क्रमात् ॥ संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हाय
नोऽस्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥ मासेन
स्यादहोरात्रः पैत्रो वर्षेण दैवतः ॥
दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः कल्पौ तु
तौ नृणाम् ॥ २१ ॥

यह हेमन्त आदिक छै ऋतु सन्निक है
वह ऋतुशब्द पुलिङ्गमें होता है सो हेमन्तादिक
ऋतु मार्गशीर्ष आदिकोके दो दो मासोंकर
क्रमसे होवे है सवत्सर वत्सर अब्द हायन
शब्द समा यह छै नाम वर्षके है तिसमें
हायनशब्दपर्यन्त पुलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्गमें
होवे है और समा शब्द स्त्रीलिङ्ग तथा
बहुवचनान्त है ॥ २० ॥ एकमासकरके पैत्र
अहोरात्र होवे है भाव यह है कि मनुष्योंके
एक महर्निकर पित्रोंका एक दिन तथा ए-

१ तात्पर्य यह है कि मनुष्योंके ३६० वर्ष मिलकर
देवताओंका एक वर्ष होता है और देवताओंके
१२००० हजार वर्ष मिलकर मनुष्योंके चारों
युग होते हैं उनमें मनुष्योंके ४३००००० वर्ष
पूरे होते हैं और देवताओंका एक युग पूरा होता
है फिर ऐसे देवताओंके दो हजार २००० युगोंकर
ब्रह्माजीका एकदिन और एकरात्रि होते हैं उन
में मनुष्योंके ८६४००००००० वर्ष पूरे होते हैं
तिसमें ४३००००००० मनुष्योंके त्रयोदश
का एक दिन होता है और ४३००००००० मनु-
ष्योंके षण्णवत्सरा एकरात्रि होवे है ।

करात्रि होवे है तिसमें कृष्णपक्षकी अष्टमीसे
शुक्ल अष्टमीतक पितरोंका दिन और शुक्ल-
अष्टमीसे कृष्णअष्टमीतक पितरोंको रात्रि
होवे है औ वर्षकरके दैवत अहोरात्र होवे
है भाव यह है कि मनुष्योंके एकवर्षकरके
देवताओंका दिन तथा एकरात्रि होवे है
तिसमें उत्तरायण दिन और दक्षिणायन
रात्रि है देवताओंके दो युग सहस्र मिलकर
ब्राह्म अहोरात्र होवे है अर्थात् देवताओंके
दोहजार युगोंकर ब्रह्माका एकदिन और ए-
करात्रि होवे है तिसमें देवताओंके एकहजार
युगमें ब्रह्माका दिन और एकहजार युगमें
देवताओंकी रात्रि होवे है वह दोनों ब्रह्मा-
जीके दिन तथा रात्रि मनुष्योंके कल्प अ-
र्थात् स्थिति प्रलयकाल सन्निक है ॥ २१ ॥

मन्वन्तर तु दिव्याना युगानामेकसप्त-
तिः ॥ संवर्तः प्रलय कल्पः क्षयः
कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥ अस्त्री
पङ्क पुमान्पाप्मा पाप किल्बिषक-
ल्मपम् ॥ कल्पं वृजिनैनोऽघमहो दु-
रितदुष्कृतम् ॥ २३ ॥

और इकत्तर देवताओंके युगोंका एक
मन्वन्तर होता है सबसे प्रलय काल क्षय
कल्पांत यह पाच नाम प्रत्येके है ॥ २२ ॥
एक पाप्मन् पाप किल्बिष कल्मष कल्प
वृजिन एनस् अघ अहस् दुरित दुष्कृत यह
चारनाम पापके हैं निम्मे एक पुलिङ्ग तथा
नपुंसकलिङ्गमें होता है पाप्मन् गन्ध पुलिङ्ग
है और शेष नपुंसक लिङ्ग है ॥ २३ ॥

स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं
वृषः ॥ मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमो-
दामोदसंमदाः ॥ २४ ॥ स्यादान-
न्दथुरानन्दः शर्मशातसुखानि च ॥
श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं
शुभम् ॥ २५ ॥ भावुकं भविकं भव्यं
कुशलं क्षेममस्त्रियाम् ॥ शस्तं चाथ
त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च २६

धर्म पुण्य श्रेयस् सुकृत वृष यह पांच
नाम धर्मके हैं तिसमें धर्मशब्द पुल्लिङ्ग तथा
नपुंसकलिङ्गमें होता है और वृष शब्द पुल्लि-
ङ्गमें होता है मुद् प्रीति प्रमद हर्ष प्रमोद
आमोद संमद ॥ २४ ॥ आनन्दथु आनन्द
शर्मन् शात सुख यह वारह नाम हर्षके हैं
प्रीतिशब्दके साहचर्यसे मुद् शब्दभी स्त्रीलिङ्ग
है. श्वःश्रेयस शिव भद्र कल्याण मंगल शुभ
॥ २५ ॥ भावुक भविक भव्य कुशल क्षेम
शस्त यह वारह नाम कल्याणमात्रके हैं.
तिसमें शस्त क्षेम शब्द पुल्लिङ्ग तथा नपुंस-
कलिङ्गमें होते हैं. पापशब्द पुण्यशब्द और
सुखादिक शस्तपर्यन्त शब्द द्रव्य अर्थात्
विशेष्यलिङ्ग होते हैं. यथा [पापा स्त्री पापः
पुमान् पापं कुलम्] इत्यादिक ॥ २६ ॥

मतलिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धत-
लज्जौ ॥ प्रशस्तवाचकान्यमून्ययः शु-
भावहो विधिः ॥ २७ ॥ दैवं दिष्टं
भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः ॥
हेतुर्ना कारणं बीजं निदानं त्वादि-
कारणम् ॥ २८ ॥

मतलिका मचर्चिका प्रकाण्ड उद्ध तलज
यह पांच शब्द शुभवाचक हैं यह पांचो
विशेष्यमें अन्य लिङ्गकर समानाधिकरणता
होनेपरभी अपने लिङ्गको नहीं त्यागते हैं.
यथा [प्रशस्तो ब्राह्मणः—ब्राह्मणमतलिका
प्रशस्ता गौ गोमचर्चिका प्रशस्तागौ गो प्रका-
ण्डं प्रशस्तो ब्राह्मणो—ब्राह्मणोद्धः प्रशस्ता कु-
मारी—कुमारी तलजः] जो शुभ प्राप्तकरने-
वाला भाग्य है वह अय संज्ञिक है ॥ २७ ॥
दैव दिष्ट भागधेय भाग्य नियति विधि यह
छै नाम पूर्वार्जित कर्मके हैं. तिसमें नियति-
शब्द स्त्रीलिङ्ग और विधि पुल्लिङ्ग है. हेतु कारण
बीज यह तीन नाम कारणमात्रके हैं तिसमें
हेतु शब्द पुल्लिङ्ग है और जो आदिकारण
है वह निदान संज्ञिक है अर्थात् निदान यह
एक नाम उपादानकारणका है जैसे घटका
मृत्तिका उपादानकारण है ॥ २८ ॥

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः
स्त्रियाम् ॥ विशेषः कालिकोऽवस्था
गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ २९ ॥ जनु-
र्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ॥
प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्युश-
रीरिणः ॥ ३० ॥ जातिर्जातं च
सामान्यं व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ॥
चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हन्मान-
सं मनः ॥ ३१ ॥

॥ इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

क्षेत्रज्ञ आत्मन् पुरुष यह तीन नाम श-
रीरके आधिदैव चैतन्यपुरुषके हैं. प्रधान

प्रकृति यह दो नाम प्रकृति अर्थात् सत्त्वादिक गुणोंकी समान अवस्थाके है तिसमें प्रकृतिशब्द स्त्रीलिंग है जो कालका किया भया देहादिक विशेष रूप है वह अवस्था है सत्त्वं रजस् तमस् यह एक एक गुण प्रकृतिके धर्म है ॥ २९ ॥ जनुप् जनन जन्मन् जनि उत्पत्ति उद्भव यह छै नाम जन्मके है तिसमें जनि तथा उत्पत्तिशब्द स्त्रीलिंग है प्राणिन् चेतन जमिन् जन्तु जन्तु शरीरिन् यह छै नाम प्राणीके है ॥ ३० ॥ जाति जात सामान्य यह तीन नाम ब्राह्मणतादिक जातिके है व्यक्ति पृथगात्मता यह दो नाम घटादिक स्वरूपके है चित्त चेतस् हृदय स्वान्त हृद् मानस मनस् यह सात नाम चित्तके है ॥ ३१ ॥

इतिकालवर्गः ।

बुद्धिर्मनीषा धिपणा धी प्रज्ञा शेमुषी मतिः ॥ प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संविप्र-
तिपञ्ज्ञसिचेतनाः ॥ १ ॥ धीधार-
णावती मेधा संकल्पः कर्म मानसम् ॥
चित्ताभोगो मनस्कारश्चर्चा संख्या
विचारणा ॥ २ ॥

१ अवधान समाधान प्रणिधान तथैव च ॥
यह अर्द्धश्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है
अवधान समाधान प्रणिधान यह तीन नाम स
माधानके है ।

२ विमर्शो भावना चैव वासना च निगद्यते ॥
यह अर्द्धश्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है विमर्श
भावना वासना यह तीन नाम वासना अर्थात्
पूर्व अनुभव कीमई स्मृतिके है ।

बुद्धि मनीषा विपणा धी प्रज्ञा शेमुषी
मति प्रेक्षा उपलब्धि चित् सविद् प्रतिपद्
ज्ञप्ति चेतना यह चौदह नाम बुद्धिके है
॥ १ ॥ जो धारणावाली बुद्धि है सो मेधा
सन्निक है जो मनकर सिद्ध किया कर्म है
वह संकल्प सन्निक है चित्ताभोग मनस्कार
यह दो नाम सुखादिकमें तत्परभये मनके है
चर्चा संख्या विचारणा यह तीन विचार
अर्थात् प्रमाणोंकर अर्थकी परीक्षा करनेके
नाम हैं ॥ २ ॥

अध्याहारस्तर्क ऊहो विचिकित्सा तु
संशयः ॥ संदेहद्वापरौ चाथ समौ
निर्णयनिश्चयौ ॥ ३ ॥ मिथ्यादृष्टि-
नास्तिकता व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ॥
समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ भ्रान्तिर्मि-
थ्यामतिभ्रमः ॥ ४ ॥

अध्याहार तर्क ऊह यह तीन नाम तर्कके
है विचिकित्सा संशय संदेह द्वापर यह चार
नाम संशयके है निर्णय निश्चय यह दो
नाम निश्चयके है आपसमें समान लिंग हैं
॥ ३ ॥ मिथ्यादृष्टि नास्तिकता यह दो
नाम नास्तिकता अर्थात् परलोकके अभाव-
कारक ज्ञानके है व्यापाद द्रोहचिन्तन यह
दोनाम परद्रोहके चिन्ता करनेके है सिद्धान्त
राद्धान्त यह दो नाम सिद्धान्तके हैं आपसमें
समान लिंग है भ्रान्ति मिथ्यामति भ्रम यह
तीन नाम भ्रान्ति अर्थात् अयथार्थज्ञानके
है यथा [स्थाणुमें पुरुषका ज्ञान होना यह
भ्रान्ति है यह स्थाणु है वा पुरुष है ऐसा

ज्ञान होना संशय है] स्थाणुमें स्थाणुका
ज्ञान होना यह निश्चय है ॥ ४ ॥

संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रवसंश्र-
वाः ॥ अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रव-
समाधयः ॥ ५ ॥ मोक्षे धीज्ञानम-
न्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ॥
मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसा-
मृतम् ॥ ६ ॥ मोक्षोऽपवर्गोऽथाज्ञा-
नमविद्याहंमतिः स्त्रियाम् ॥ रूपं शब्दो
गन्धरसरस्पर्शाश्च विषया अमी ॥ ७ ॥

संविद् आगू प्रतिज्ञान नियम आश्रव
संश्रव अङ्गीकार अभ्युपगम प्रतिश्रव समाधि
यह दश नाम अङ्गीकारके हैं जिसको यवन-
भाषामें कबूलियत कहते हैं संविद्शब्द
आगूशब्द स्त्रीलिंग हैं ॥ ५ ॥ मोक्षविषयमें
जो धी बुद्धि है वह ज्ञान है और मोक्षशास्त्रसे
भिन्न शास्त्र शिल्प चित्तादिकमें जो बुद्धि है
वह विज्ञान है. भाव यह है कि मोक्षके नि-
मित्त शास्त्र तथा चित्तादिकमें जो बुद्धि है
वह ज्ञान है और अन्यनिमित्त शास्त्र शिल्पा-
दिकमें जो बुद्धि है वह विज्ञान है. मुक्ति
कैवल्य निर्वाण श्रेयस् निःश्रेयस् अमृत
॥ ६ ॥ मोक्ष अपवर्ग यह आठ नाम मोक्ष-
के हैं अज्ञान अविद्या अहंमति यह तीन
नाम अज्ञानके हैं. रूप शब्द गंध रस स्पर्श
यह पांच विषय हैं ॥ ७ ॥

गोचरा इन्द्रियार्थाश्च हृषीकं विषयी-
न्द्रियम् ॥ कर्मेन्द्रियं तु पाचवादि

मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥ तुव-
रस्तु कषायोऽस्त्री मधुरो लवणः क-
टुः ॥ तिक्तोऽम्लश्च रसाः पुंसि तद्व-
त्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥

और यह ही पांचों गोचर इन्द्रियार्थ-
संज्ञिक हैं हृषीक विषयिन् इन्द्रिय यह तीन
नाम नेत्रादिक इन्द्रियोंके हैं पायु आदिक
कर्मेन्द्रिय संज्ञिक हैं और मनोनेत्रादिक धी-
न्द्रिय संज्ञिक हैं ॥ ८ ॥ तुवर कषाय यह
दो नाम हरि आदिक स्वादुके तुल्य रसके हैं.
मधुर यह एकनाम जलशर्करादिक स्वादुके
तुल्य रसका है. लवण यह एक नाम सैंध-
वआदिक स्वादुके तुल्य रसका है. कटु यह
एक नाम मिरच आदिक स्वादुके तुल्य रस-
का है तिक्त यह एक नाम निंबू आदिक
स्वादुके तुल्य रसका है अम्ल यह एक नाम
अमली आदिक स्वादुके तुल्य रसका है तु-
वर आदिक अम्लपर्यन्त रस संज्ञिक हैं यह
तुवर आदिक छै रसमानमें वर्त्तमान हों तो
पुंलिंगमें होते हैं और यदि तिस रसवाले
पदार्थोंमें वर्त्तमान हों तो तीनों लिंगमें होवे
हैं अर्थात् विशेष्यलिंग होते हैं ॥ ९ ॥

विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनो-
हरे ॥ आमोदः सोऽतिनिहारी वा-

१ पायूयस्थे पाणिपादौ वाक् चेतीन्द्रियसंग्रहः॥
उत्सर्गा नन्दनादानगत्यालापाश्च तत्क्रियाः॥१॥
मनः कर्णौ तथानेत्रं रसना च त्वचा सह ॥
नासिका चेति षट् तानि धीन्द्रियाणि प्रच-
क्षते ॥ - -

च्यलिङ्गत्वमागुणात् ॥ १० ॥ समा-
कर्षी तु निर्हारी सुरभिर्घ्राणतर्पणः ॥
इष्टगन्धः सुगन्धिः स्यादामोदी मुख-
वासनः ॥ ११ ॥

मर्दन करनेसे उठेभये ऐसे मनोहर गंधमें
परिमल शब्द वर्तै है अर्थात् परिमल यह
एक नाम मसलनेसे उत्पन्न भये मनुष्योंका
मन हरनेवाले गन्धका है जो अतिनिर्हारी
अर्थात् बहुतही दूर जानेवाला गन्ध है वह आ-
मोद सज्जिक है इससे परै गुण शुक्लादिकपर्यन्त
विशेष्यलिङ्गत्व हैं अर्थात् इससे परै शुक्लपर्यन्त
शब्द त्रिलिङ्गमें होते हैं ॥ १० ॥ समाक-
र्षिन् निर्हारिन् यह दो नाम दूर जानेवाले
गन्धयुक्त द्रव्यके है सुरभि घ्राणतर्पण इष्टगन्ध
सुगन्धि यह चार नाम सुगन्धयुक्तके है
आमोदिन् मुखवासन यह दो नाम मुखको
सुगन्धयुक्त करनेवाले ताबूलादिकके है ॥ ११ ॥

पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो विस्मं स्यादाम-
गन्धि यत् ॥ शुक्रशुभ्रशुचिश्चेतवि-
शदभ्येतपाण्डरा ॥ १२ ॥ अवदातः
सितो गौरो बलक्षो धवलोऽर्जुनः ॥
हरिणः पाण्डुर पाण्डुरीपत्पाण्डुस्तु
धूसर ॥ १३ ॥

पूतिगन्धि दुर्गन्ध यह दो नाम अनिष्ट-
गन्धयुक्त द्रव्यके हैं जो आमगन्धि अर्थात्
अपक्व मांसके गन्धकी समान गन्धवाला है
यह विस्म सज्जिक है शुक्र शुभ्र शुचि श्वेत
विशद श्वेत पाण्डुर ॥ १२ ॥ अवदात मि

गौर अवलक्ष धवल अर्जुन हरिण पाण्डुर
पाण्डु यह सोलह नाम श्वेतके है ईषत्पाण्डु
धूसर यह दो नाम धूसर थोड़े श्वेतके है १३

कृष्णे नीलासितश्यामकालश्यामल-
मेचकाः ॥ पीतो गौरो हरिद्राभः
पालाशो हरितो हरित् ॥ १४ ॥
लोहितो रोहितो रक्तः शोणः कोक-
नदच्छविः ॥ अव्यक्तरागस्त्वरुणः
श्वेतरक्तस्तु पाटल ॥ १५ ॥

कृष्ण नील असित श्याम काल श्यामल
मेचक यह सात नाम काले वर्णके है पीत
गौर हरिद्राभ यह तीन नाम पीन्के है पा-
लाश हरित हरित यह तीन नाम हरे वर्णके
हैं ॥ १४ ॥ लोहित रोहित रक्त यह तीन
नाम लालके है जो लालकमलकीसमान वर्ण
है वह शोणसज्जिक है और जो अव्यक्त राग
अर्थात् थोड़ासा लालवर्ण है वह अरुण
सज्जिक है और जो श्वेतयुक्त लालवर्ण है वह
पाटल सज्जिक है ॥ १५ ॥

श्यावः स्यात्कपिशो धुस्रधूमली कृ-
ष्णलोहिते ॥ कटार कपिल पिद्म-
पिशङ्गौ कटपिद्मली ॥ १६ ॥ चित्र
निर्मिरकल्माषशबलैताश्च कचुरे ॥
गुणे शुक्लादपः पृमि गुणिलिङ्गास्तु
तदति ॥ १७ ॥

॥ इति धीवर्ग ॥ ७ ॥

श्याव कपिश यह दो नाम थोड़े श्वेत
मिले भये थोड़े लालवर्णके है यह वर्ण क-

न्दरोंके देहपर बहुधा होता है धूम्र धूसर
कृष्णलोहित यह तीन नाम कालेमिले भये
लालवर्णके हैं कडार कपिल पिंग पिशंग कद्रु
पिंगल यह छै नाम पिंगलवर्णके हैं यह वर्ण
अत्यन्त गौर बालकके बालोंपर होता है ॥१६॥
चित्र किर्मरि कल्माष शवल एत कर्बुर यह
छै नाम चित्रविचित्र अर्थात् तरहतरहके
वर्णके हैं शुक्लादिक शब्द गुणमात्रमें वर्तमान
होंवें तौ पुंलिंगमें होते हैं परन्तु चित्रशब्द
रूपभेदसे नपुंसकलिंगवाची है और यदि
शुक्लादिकशब्द गुणिलिंग अर्थात् विशेष्य-
लिंग हों तौ गुणवान् विशेष्यमें होता है १७

इति धीवर्गः ।

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वा-
णी सरस्वती ॥ व्याहार उक्तिर्लपि-
तं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥ अ-
पभ्रंशोऽपशब्दः स्याच्छास्त्रे शब्दस्तु
वाचकः ॥ तिङ्मुखवन्तचयो वाक्यं
क्रिया वा कारकान्विता ॥ २ ॥

ब्राह्मी भारती भाषा गिर् वाच् वाणी
सरस्वती व्याहार उक्ति लपित भाषित वचन
वचम् यह तेरह नाम वचनके हैं तिसमें
सरस्वती शब्दपर्यन्त वचनके अधिष्ठातृक
देवताके हैं और व्याहारादिक अधिष्ठेयके
हैं ॥ १ ॥ जो अपशब्द अपभ्रष्टशब्द है वह
अपभ्रंश संज्ञिक है जो शास्त्रव्याकरणादिकमें
सिद्ध भया है वह शब्द संज्ञिक है जो तिङ्
और मुप् आदिक विभक्त्यन्तपदोंका समूह

है वह वाक्य संज्ञिक है अथवा कारक वि-
भक्तियुक्त जो क्रिया है वह वाक्यसंज्ञिक है
यथा [देवदत्त गामभिरक्ष शुक्लेन दण्डेन] ॥२॥

श्रुतिः स्त्री वेद आम्रायस्त्रयी धर्मस्तु
तद्विधिः ॥ स्त्रियामृक्सामयजुषी इति
वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥ शिक्षेत्यादि
श्रुतेरङ्गमाँकारप्रणवौ समौ ॥ इति-
हासः पुरावृत्तमुदात्ताद्यास्त्रयैः स्वराः ४

श्रुति वेद आम्राय त्रयी यह चार नाम
वेदके हैं तिसमें श्रुतिशब्द स्त्रीलिंग है तिस
वेदकी विधि यज्ञादिक धर्म संज्ञिक है ऋच्
सामन् यजुष् यह तीन वेद हैं ऋक्शब्द
स्त्रीलिंगमें होता है तीनों वेद मिलकर त्रयी-
संज्ञिक है ॥ ३ ॥ शिक्षा इत्यादिक वेदके
अंग हैं ओंकार प्रणव यह दो नाम ओंका-
रके हैं आपसमें समान वर्ण हैं इतिहास
पुरावृत्त यह दो नाम पूर्वचरित महाभारता-
दिकके हैं उदात्त आदिक तीन स्वर हैं ॥४॥

आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थ-
शास्त्रयोः ॥ आख्यायिकोपलब्धार्था
पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥ प्रबन्धक-
ल्पना कथा प्रवह्लिका प्रहेलिका ॥ स्मृ-
तिस्तु धर्मसंहिता समाहृतिस्तु संग्रहः ६

१ शिक्षा कल्पोव्याकरणं निरुक्तं ज्योतिषां ग-
तिः ॥ छन्दोविचित्तिरित्येष षडङ्गो वेद उच्यते १ ॥

२ उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च स्वरास्त्रयः ॥
चतुर्थं प्रचितो नोक्तो यतोऽसौ छान्दसः स्मृतः

३ सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ॥
वंश्यानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ १ ॥

आन्वीक्षिकी दण्डनीति यह दो नाम
तर्कविद्या और अर्थशास्त्रमें वर्ते हैं अर्थात्
आन्वीक्षिकी यह एक नाम गौतमादिककी
रचीभई तर्कविद्याका है और दण्डनीति यह
एक नाम बृहस्पत्यादिकके रचे भये अर्थ-
शास्त्रका है आख्यायिका उपलब्धार्था यह
दो नाम कहानीके हैं जो पाच लक्षणवाला
है वह पुराणसन्निक है ॥ ५ ॥ जो प्रबन्ध-
कल्पना अर्थात् वाक्यविस्तारकी रचना है
वह कथासन्निक है प्रवहिका प्रहेलिका यह
दो नाम प्रहेलिके हैं जो धर्मसहिता अर्थात्
धर्मके जाननेके लिये रची भई सहिता है
वह स्मृति सन्निक है समाहति समग्र यह दो
नाम समग्र अर्थात् इकठे करनेके हैं ॥ ६ ॥

समस्या तु समासार्था किवदन्ती ज-
नश्रुतिः ॥ वार्ता प्रवृत्तिवृत्तान्त उ-
दन्तः स्यादथाह्वयः ॥ ७ ॥ आख्या-
ते अभिधानं च नामधेयं च नाम
च ॥ हूतिराकारणाह्वानं संहृतिर्वहु-
भिः कृता ॥ ८ ॥

जो समासार्थ है वह समस्या है अर्थात्
यह कवियोंकी शक्ति जाननेकेलिये थोड़ी
पढीभईका नाम है किवदन्ती जनश्रुति यह
दो नाम लोकप्रवाद अर्थात् अफवाके है
वार्ता प्रवृत्ति वृत्तान्त उदन्त यह चारि नाम
वार्ताके हैं आह्वय ॥ ७ ॥ आरया आह
अभिमान नामधेय नामच यह छे नाम नाम-
के है हूति आकारणा आह्वान यह तीन

नाम पुकारनेके है बहुत मनुष्योंकर कीभई
पुकार सहृतिसन्निक है ॥ ८ ॥

विवादो व्यवहारः स्यादुपन्यासस्तु
वाङ्मुसम् ॥ उपोद्घात उदाहारः श-
पनं शपथः पुमान् ॥ ९ ॥ प्रश्नोऽनु-
योगः पृच्छा च प्रतिवाक्योत्तरे समे ॥
मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानमथ मि-
थ्याभिर्गसनम् ॥ १० ॥ अभिशापः
प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ॥
यशः कीर्तिः समज्ञा च स्तवः स्तोत्रं
स्तुतिर्नुतिः ॥ ११ ॥

विवाद व्यवहार यह दो नाम कृणादा-
नादिकके निमित्त विविधवाद अर्थात् हुज्ज-
तके है उपन्यास वाङ्मुख यह दो नाम
वाक्यके आरम्भके है उपोद्घात उदाहार यह
दो नाम उदाहरण अर्थात् मिसालके है शपन
शपथ यह दो नाम सौगन्दके है जिसकों कि
शम कहते है तिसमें शपथ शब्द पुलिग है
॥ ९ ॥ प्रश्न अनुयोग पृच्छा यह तीन नाम
प्रश्न अर्थात् पूछनेके हैं प्रतिवाक्य उत्तर
यह दो नाम उत्तर अर्थात् पूछनेपर जवाब
देनेके है मिथ्याभियोग अभिरयान यह दो
नाम सत्यके झूठ करनेके है मिथ्याभिगसन
॥ १० ॥ अभिशाप यह दो नाम झूठे दोष
लगानेके है अनुरागज अर्थात् प्रीतिसे उत्पन्न
भया शब्द प्रणादसन्निक है यशस् कीर्ति
समज्ञा यह तीन नाम कीर्तिके है स्तव स्तोत्र
स्तुति नुति यह चार नाम स्तुतिके है ॥ ११ ॥

आग्नेडितं दिस्त्रिरुक्तमुच्चैर्बुधं तु घोष-
णा ॥ काकुः स्त्रियां विकारो यः
शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥ १२ ॥ अव-
र्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत् ॥ उ-
पक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा
च गर्हणे ॥ १३ ॥

दो तीनवार कहा शब्द आग्नेडितसंज्ञिक
है उच्चैर्बुध घोषणा यह दो नाम ऊंचेश-
ब्दके हैं शोक भय कामादिककरके जो ध्व-
नि शब्दका विकार है वह काकु संज्ञिक है
॥ १२ ॥ अवर्ण आक्षेप निर्वाद परीवाद
अपवाद उपक्रोश जुगुप्सा कुत्सा निन्दा ग-
र्हण यह दश नाम निन्दाके हैं ॥ १३ ॥

पारुष्यमतिवादः स्याद्भर्त्सनं त्वपका-
रणीः ॥ यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र
स्यात्परिभाषणम् ॥ १४ ॥ तत्र त्वा-
क्षारणा यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्र-
ति ॥ स्यादाभाषणमालापः प्रलापो-
ऽनर्थकं वचः ॥ १५ ॥

पारुष्य अतिवाद यह दो नाम बुरेबोलने
के हैं अपकारयुक्तवाणी भर्त्सनसंज्ञिक है
अर्थात् भर्त्सन यह एक नाम फटकार देनेका
है जो निन्दासहित उपालम्भ अर्थात् क्रोध-
पूर्वक दोषका सिद्ध करना है वह परिभाषण-
संज्ञिक है यह खिजानेका नाम है उपालम्भ
दोषप्रकारका है गुणोंकी प्रकटतापूर्वक तथा
निन्दापूर्वक—यथा [तुझ महाकुलीनको यह
क्या उचित है?—तुझ बन्धकीपुत्रकों यह उ-

चितही है] ॥ १४ ॥ मैथुनकेप्रति परस्त्री-
पुरुषके संयोगनिमित्तकरके जो आक्रोश गा-
ली है तिसमें आक्षारणा यह एक शब्द
होता है आभाषण आलाप यह दो नाम
आपसमें संबोधनपूर्वक भाषणके हैं जो वे
अर्थवचन हैं वह प्रलापसंज्ञिक हैं यह व-
कवादका नाम है ॥ १५ ॥

अनुलापो मुहुर्भाषा विलापः परिदेव-
नम् ॥ विप्रलापो विरोधोक्तिः संला-
पो भाषणं मिथः ॥ १६ ॥ सुप्रला-
पः सुवचनमपलापस्तु निह्वः ॥ सं-
देशवाग्वाचिकं स्यादाग्नेदास्तु त्रिषू-
त्तरे ॥ १७ ॥

अनुलाप मुहुर्भाषा यह दो नाम बहुत
भाषणके हैं विलाप परिदेवन यह दो नाम
विलापके हैं विप्रलाप विरोधोक्ति यह दो
नाम आपसमें विरुद्धभाषणके हैं जो आ-
पसमें उक्तिप्रत्युक्तिपूर्वक भाषण है वह सं-
लापसंज्ञिक है ॥ १६ ॥ सुप्रलाप सुवचन
यह दो नाम सुन्दरभाषणके हैं अपलाप
निह्व यह दो नाम छिपे भये वाक्यके हैं

१ चोद्यमाक्षेपाभियोगौ शापाक्रोशौ दुरेष-
णा ॥ अस्त्री चाटु चटु श्लाघा प्रेम्णा मिथ्या-
विकथनम् ॥ १ ॥

यह श्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है चोद्य
आक्षेप अभियोग यह तीन नाम अजुत प्रश्नके
हैं शाप आक्रोश दुरेषण यह तीन नाम गालीके
हैं चाटु चटु श्लाघा यह तीन नाम प्रेमकरके झूठ
बोलनेके हैं तिसमें चाटु चटु शब्द पुनपुनक-
लिग हैं ।

सदेशवाच् वाचिक यह दो नाम दूतके क-
हनेके हैं इससे उत्तर वाग्भेद रुशत्यादिक
सम्यगन्त शब्द तीनों लिंगमें होवे हैं ॥१७॥

रुशती वागकल्याणी स्यात्कल्या तु
शुभात्मिका ॥ अत्यर्थमधुरं सान्त्वं
संगतं हृदयंगमम् ॥१८॥ निष्ठुरं परुषं
ग्राम्यमश्लीलं सूनुतं प्रिये ॥ सत्येऽथ
संकुलक्लिष्टे परस्परपराहते ॥ १९ ॥

जो अकल्याण वाणी है वह रुशतीस-
ज्ञिक है और जो शुभरूप वाणी है वह
कल्यासज्ञिक है जो अतिही मधुरवाक्य है
वह सान्त्व सज्ञिक है संगत हृदयगम यह दो
नाम सवद्धवचनके हैं ॥१८॥ निष्ठुर परुष यह
दो नाम कर्कश वचनके हैं ग्राम्य अश्लील
यह दो नाम शिथिलवचनके हैं जो प्यारा
और साचा वचन है उसमें सूनुत शब्द
होता है संकुल क्लिष्ट यह दो नाम परस्प-
रपराहत अर्थात् असम्भववचनमें वर्तते हैं १९

लुप्तवर्णपदं ग्रस्तं निरस्तं त्वरितोदि-
तम् ॥ अम्बूलुतं सनिष्ठीवमवद्धं
स्पादनर्थकम् ॥ २० ॥ अनक्षरम-
वाच्यं स्पादाहतं मूपार्थकम् ॥

२ सोल्लुण्ठन तु सोत्प्रास भणित रतिकूजि-
तम् ॥ आय हय मनोहारि विस्पष्ट प्रकटो-
दितम् ॥ २० ॥

यह श्लोक औरपुस्तकोमें विशेष है सोल्लुण्ठन
सोत्प्रास यह दो नाम हास्यसहित वचनके हैं भ-
णित रतिकूजित यह दो नाम रतिसमयके श-
ब्दके हैं आय हय मनोहारि विस्पष्ट प्रकटोदित
यह पांच नाम स्पष्टवचनके हैं ।

अथ स्मिष्टमविस्पष्टं वितथं त्वनृतं
वचः ॥ २१ ॥

जो लुप्तवर्णपद है अर्थात् जिसका
कोई वर्ण वा पद लोप होगया है वह ग्रस्त-
वचन है जो शीघ्र कहागया है वह निरस्त-
वचन है जो थूकसहित वचन है वह अ-
म्बूलुत है जो अर्थशून्य वचन है वह अवद्ध
है ॥ २० ॥ अनक्षर अवाच्य यह दो नाम
नहीं कहने योग्य वचनके हैं जो झूठ अ-
र्थवाला वचन है वह आहत सज्ञिक है
स्मिष्ट अविस्पष्ट यह दो नाम अप्रकट वच-
नके हैं यह उस वचनका नाम है जिसमें
साफ २ अक्षर नहीं निकलते हैं जो झूठ
वचन है वह वितथ सज्ञिक है ॥ २१ ॥

सत्यं तथ्यमृतं सम्पगमूनि त्रिषु तद्व-
ति ॥ शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वा-
नरवस्वनाः ॥ २२ ॥ स्नाननि-
र्घोपनिर्हादनादनिस्वाननिस्वनाः ॥
आरवारावसंरावविरावा अथ मर्मर,
॥ २३ ॥ स्वनिते वस्त्रपर्णानां भूष-
णानां तु शिञ्जितम् ॥ निक्राणो नि-
कणः क्राण. कणः कणनमित्यपि
॥ २४ ॥ वीणायाः कणिते प्रादेः
प्रकाणप्रकणादय. ॥ कोटाहल. क-
लकलस्तिरश्वा वाशितं रुतम् ॥ स्त्री

प्रतिश्रुतिप्रतिध्वाने गीतं गानमिमे
समे ॥ २५ ॥

इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

सत्य तथ्य कृत सम्यक् यह चार नाम
सत्यके हैं यह सत्यादिक शब्द विशेष्य-
लिंग होनेपर तीनोंलिंगमें होते हैं यथा
[सत्या वाक् सत्यः शब्दः सत्यं वचनम्] श-
ब्द निनाद निनद ध्वनि ध्वान रव स्वन
॥ २२ ॥ स्वान निर्वोष निह्रादि नाद निस्वान
निस्वन आरव आराव संराव विराव यह
सतरह नाम शब्दमात्रके हैं, मर्म ॥ २३ ॥
यह एक नाम कपडों तथा पत्रोंके शब्दमें
वर्तते हैं और भूषणोंके शब्दमें शिञ्जित शब्द
होता है, निक्काण निक्काण क्काण क्काण क्काण
॥ २४ ॥ यह पांच नाम वीणाके शब्दमें
वर्तते हैं, प्रादिक उपसर्गसे जो प्रक्काण प्रक्क-
ण आदिक हैं सोभी वीणाके शब्दमें हेवे
हैं, कोलाहल कलकल यह दो नाम बहुतां-
कर किये भये स्पष्टशब्द अर्थात् कोलाह-
लका नाम है, जो पक्षियोंका शब्द है वह
वासित संज्ञिक है प्रतिश्रुत् प्रतिध्वान प्रति-
शब्दके नाम हैं, गीत गान यह दो नाम
गावनेके हैं आपसमें समान लिंग हैं ॥ २५ ॥

इति शब्दादिवर्गः ।

निषादर्पभगान्धारपङ्जमध्यमधैवताः
पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः
स्वराः ॥ १ ॥ काकली तु कले सूक्ष्मे

ध्वनौ तु मधुरास्फुटे ॥ कलो मन्द्रस्तु
गम्भीरे तारोऽत्युच्चैस्त्रयस्त्रिपु ॥ २ ॥

निषाद ऋषम गांधार पङ्ज मध्यम धैवत
पंचम यह सात स्वर तन्त्रीतार तथा कंठसे
उत्पन्न होते हैं ॥ १ ॥ काकली यह एक
शब्द सूक्ष्म स्वरमें होता है, स्त्रीलिंगवाची है
मधुर तथा प्रकट शब्दमें कल शब्द वर्तते हैं और
ऊंची ध्वनिमें तार शब्द वर्तते हैं यह तीनों
कल मंद्र तारशब्द तीनों लिंगमें होते हैं ॥ २ ॥

समन्वितलयस्त्वेकतालो वीणा तु व-
ल्लकी ॥ विपञ्ची सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः
परिवादिनी ॥ ३ ॥ तत् वीणादिकं
वाद्यमानन्दं मुरजादिकम् ॥ वंशादि-
कं तु सुषिरं कांस्यतालादिकं वनम् ४

जो समन्वितलय है अर्थात् जिसमें गान
तथा बाजेकी लय बराबर है वह एकताल
है वीणा वल्लकी विपञ्ची यह तीन नाम वी-
णाके हैं, जो वीणा सात तारोंसे युक्त है वह
परिवादिनी संज्ञिक है ॥ ३ ॥ और जो
वीणादिक बाजा अर्थात् वीणा सितार सा-
रंगी आदिक बाजा हैं वह तत् संज्ञिक हैं
और जो मृदंगादिक बाजा अर्थात् मृदंग
ढोल पखवाज आदिक बाजा हैं वह आनन्द

शृणामुरसि मध्यस्थो द्वाविंशतिविधो ध्वनिः ॥
समन्द्रः कण्ठमध्यस्थस्तारः शिरसि गीयते ॥

यह श्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है बाईश
प्रकारका शब्द मनुष्योंके पेटके बीचमें स्थित है
जो कंठके मध्यमें स्थित है वह मद्र है और शि-
रके विषे तार संज्ञिक स्वर गाया जाता है ।

सन्निक है और जो वश्यादिक बाजा अर्थात् वासुरी बेन आदिक बाजा है वह सुपिर सन्निक है और जो कास्यतालादिक अर्थात् मजीर घटाआदिक बाजा है घन सन्निक है ४

चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यना-
मकम् ॥ मृदङ्गा मुरजा भेदास्त्वङ्ग्या-
लिङ्गचोर्ध्वकास्त्रयः ॥ ५ ॥ स्पाद्य-
शः पटहो ढक्का भेरी स्त्री दुन्दुभिः
पुमान् ॥ आनकः पटहोऽस्त्री स्पा-
त्कोणो वीणादि वादनम् ॥ ६ ॥

यह चारोंप्रकारका बाजा वादित्र आतो-
द्यनामक हे मृदङ्ग मुरज यह दो नाम मृदङ्गके
है अक्षय आलिंग्य ऊर्ध्वक यह तीन मृदङ्गके
भेद है ॥ ५ ॥ यशः पटह ढक्का यह दो नाम
ढोलके है भेरी दुदुभि यह दो नाम नगारा
तथा तुरङ्गके है आनक पटह यह दो नाम
बड़े नगारेके है जिसकरके वीणादिक बाजे
बजाये जाते है वह कोण सन्निक है ॥ ६ ॥

वीणादण्डः प्रवालः स्पात्ककुभस्तु प्र-
सेवकः ॥ कोलम्बकस्तु कायोऽस्था
उपानाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥ वाद्य-
प्रभेदा इमरुमडुडिण्डिमझर्रा ॥ म-
र्दलः पणवोऽन्ये च नर्तकीलासिके
समे ॥ ८ ॥

वीणाका दण्ड प्रवाल सन्निक है ककुभ
प्रसेवक यह दो नाम वीणाकी तूतीके है
इस वीणाका काया तंत्रीवर्जित दण्डादिकों-
का समूह कोलवक सन्निक है वीणाका नि-

ब बन् उपनाह सन्निक है अर्थात् जहाँ वी-
णाके अन्तमें तार बधते है उस निब बन्का
नाम उपनाह है ॥ ७ ॥ इमरु मडु डिडिम
झर्रा यह बाजेके भेद है जो मर्दल अर्थात्
मृदङ्गमदृश बाजेका भेद है वह पणवस-
न्निक है अन्य औरभी हुडुक गोमुख आ-
दिक भेद है नर्तकी लासिका यह दो नाम
नाचनेवालीके है आपसमें समान है ॥ ८ ॥

विलम्बितं द्रुतं मध्य तत्त्वमोघो घनं
क्रमात् ॥ तालः कालक्रियामानं ल-
यः साम्यमथास्त्रियाम् ॥ ९ ॥ ता-
ण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च न-
र्तने ॥ तौर्यन्निकं नृत्यगीतं वाद्यं ना-
ट्यमिदं त्रयम् ॥ १० ॥

हाथपाँवोंकर जो विलम्बित नृत्यादिक
है अर्थात् हातपाँवोंके चलानेकर बहुत देरमें
होनेवाला नृत्यादिक है वह तत्व सन्निक है
और जो द्रुत शीघ्र होनेवाला नृत्यादिक है
वह ओघ सन्निक है और जो मध्यम है
अर्थात् न तो देरमें हो न शीघ्र हो ऐसा
नृत्यादिक घन सन्निक है यह क्रमसे जान-
ने जो काल और क्रियाका मान अर्थात्
नियम कारण है वह ताल है गान तथा
राजेकर तथा पाँवोंके उठानेकर काल तथा
क्रियाकी समता है वह त्य है यह शब्द
पुनर्पुनःकालिगमें होता है ॥ ९ ॥ ताण्डव
नटन नाट्य लास्य नृत्य नर्तन यह छे नाम
नाचके है नाच गाना बजाना यह ती

मिलकर जो नाँच है वह तौर्यत्रिक संज्ञिक है ॥ १० ॥

भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्चेति नर्तकः ॥
स्त्रीवेषधारी पुरुषो नाट्योक्तौ ग-
णिकाज्जुका ॥ ११ ॥ भगिनीपति-
रावुक्तो भावो विद्वानथावुकः ॥ ज-
नको युवराजस्तु कुमारो भर्तृदा-
रकः ॥ १२ ॥

जो स्त्रीवेष धारणकरनेवाला और नाँच-
नेवाला पुरुष है वह भ्रुकुंस भ्रुकुंस भ्रुकुंससं-
ज्ञिक है जो गणिका नाँचनेवाली वेश्या है
वह अज्जुकासंज्ञिक है यह अज्जुकादिक
संज्ञा नाट्यकी उक्तिमेंही होवे हैं नाँचसे
भिन्न प्रयोग नहीं होता है ॥ ११ ॥ जो
वहिनका पति है वह आवुत्तसंज्ञिक है जो
विद्वान् है वह भावसंज्ञिक है जो पिता है वह
आवुकसंज्ञिक है जो युवराज है अर्थात् राज-
पुत्र है वह कुमार भर्तृदारकसंज्ञिक है ॥ १२ ॥

राजा भट्टारको देवस्तत्सुता भर्तृदा-
रिका ॥ देवी कृताभिषेकायामित-
रास्तु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥ अब्रह्मण्यम-
वध्योक्तौ राजश्यालस्तु राष्ट्रियः ॥
अम्वा माताऽथ वाला स्यादासूरा-
र्यस्तु मारिषः ॥ १४ ॥

जो राजा है वह भट्टारक देव संज्ञिक
है तिस राजाकी पुत्री भर्तृदारिकासंज्ञिक
है कृताभिषेक रानीकेविषे देवी शब्द वर्त्तै है
अर्थात् यह एक नाम जिस रानीका अभि-

षेक हुआ हो उसका नाम है और अन्य
रानियोंमें भट्टिनी शब्द वर्त्तै है अर्थात् यह
एक नाम सामान्य रानियोंका है ॥ १३ ॥
अवध्य नहीं मारनेयोग्य ब्राह्मणादिकोंके
दोषकी उक्तिप्रकरणमें अब्रह्मण्य शब्द वर्त्तै
है जो राजाका शाला है वह राष्ट्रिय संज्ञिक
है अम्वा मातृ यह दो नाम माताके हैं यह
अम्वादिक शब्द नाट्योक्तिसे अन्यत्रभी
होते हैं परन्तु विशेषकर यहाँ नाट्योक्तिमें
हि इन शब्दोंका अधिकार है वाला वासू
यह दो नाम कुमारीके हैं आर्य मारिष यह
दो नाम आर्यके हैं ॥ १४ ॥

अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा निष्ठानिर्व-
हणे समे ॥ हण्डे हजे हल्लाहाने नी-
चां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥ अ-
ङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो व्यञ्जकाभिनयौ स-
मौ ॥ निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रि-
ष्वाङ्गिकसात्त्विके ॥ १६ ॥

हंडे यह एक शब्द नीचसखीके बुला-
नेमें होता है हंजे यह एक शब्द चेटी स-
खीके बुलानेमें होता है हला यह एक शब्द
सामान्य सखीके बुलानेमें होता है ॥ १५ ॥
अंगहार अंगविक्षेप यह नाँचविशेषके नाम
हैं व्यञ्जक अभिनय यह दो नाम हस्तादिक
करके मनमें स्थितभये अर्थके प्रकाशकर
देनेके हैं आपसमें समान हैं अंग तथा सत्व
अन्तः करणकरके सिद्ध भये कर्ममें आंगिक
सात्त्विक यह दो शब्द वर्त्तै हैं अर्थात् आं-

गिक यह एक नाम भी आदिकके चलाने-
का है और सात्विक यह एक नाम अन्त-
करणवृत्तिकी बाहिर प्रकटता होनेका है १६

शृङ्गारवीरकरुणाञ्जुतहास्यभयानकाः ॥
बीभत्सरौद्रौ च रसाः शृङ्गारः शु-
चिरुज्ज्वलः ॥ १७ ॥ उत्साहवर्धनो
वीरः कारुण्यं करुणा घृणा ॥ कृपा
दयाऽनुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽप्यथो
हसः ॥ १८ ॥ हासो हास्यं च बी-
भत्सं विवृतं त्रिष्विदं द्वयम् ॥ वि-
स्मयोऽञ्जुतमाश्चर्यं चित्रमप्यथ भैर-
वम् ॥ १९ ॥ दारुणं भीषणं भीष्मं
घोरं भीमं भयानकम् ॥ भयंकर प्र-
तिभयं रौद्रं तूष्णममी त्रिषु ॥ २० ॥

शृङ्गार वीर करुणा अञ्जुत हास्य भया-
नक बीभत्स रौद्र यह आठ रस है शृङ्गार
शुचि उज्ज्वल यह तीन नाम शृङ्गारके है
॥ १७ ॥ उत्साहवर्धन वीर यह दो
नाम वीर रसके है कारुण्य करुणा घृणा
कृपा दया अनुकम्पा अनुक्रोश यह सात
नाम करुणारसके है हस ॥ १८ ॥ हास
हास्य यह तीन नाम हास्यरसके है बीभत्स
विवृत यह दो बीभत्सरसके नाम है और
तीनों लिंगमें होते है विस्मय अञ्जुत आश्च-
र्य चित्र यह चार नाम अञ्जुत रसके है
भैरव ॥ १९ ॥ दारुण भीषण भीष्म घोर
भीम भयानक भयंकर प्रतिभय यह नौ
नाम भयानक रसके हैं रौद्र उग्र यह दो नाम

रौद्र रसके है यह अञ्जुत आदिक उग्रा त
चौदह शब्द तीनों लिंगमें होते है ॥ २० ॥

चतुर्दश दरस्त्रासो भीतिर्भीः साध्वसं
भयम् ॥ विकारो मानसो भावोऽनु-
भावो भावबोधकः ॥ २१ ॥ गर्वो-
ऽभिमानोऽहंकारो मानश्चित्तसमुज्ज-
तिः ॥ अनादरः परिभवः परीभाव-
स्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥ रीढावमा-
ननावज्ञावहेलनमसूक्ष्णम् ॥ मन्दाक्षं
हीन्रपा व्रीडा लज्जा साऽपन्नपा-
ऽन्यतः ॥ २३ ॥

दर त्रास भीति भी साध्वस भय यह
छै नाम डरके हैं जो मनसबन्धी विकार है
वह भाव है और जो भावबोधक अर्थात्
चित्तविकारके प्रकाश करनेवाला है वह
अनुभाव सन्निक है ॥ २१ ॥ गर्व अभिमान
अहंकार यह तीन नाम गर्वके है जो चि-
त्तकी समुज्जती अर्थात् दूसरेसे बड़प्पन वि-
चारनेकर उन्नति है वह मान है अनादर
परिभव परीभाव विरस्क्रिया ॥ २२ ॥
रीढा अवमानना अवज्ञा अवहेलन असूक्ष्ण
यह नौ नाम अनादरके है मन्दाक्ष ही नपा
व्रीडा लज्जा यह पाच नाम लज्जाके है लज्जा
दूसरेसे होती है वह अपन्नपा सन्निक है २३

१ दपोऽवलेपोऽवष्टम्भश्चित्तोद्रेक स्मयो मद ॥

यह अर्द्ध श्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है दर्प
अजलेप अजटभ चित्तोद्रेक स्मय मद यह छे
नाम मदके है ।

क्षान्तिस्तितिक्षाऽभिध्या तु परस्य
विषये स्पृहा ॥ अक्षान्तिरीर्ष्याऽसूया
तु दोषारोपो गुणेष्वपि ॥ २४ ॥
वैरं विरोधो विद्वेषो मन्युशोकौ तु
शुक् स्त्रियाम् ॥ पश्चात्तापोऽनुताप-
श्च विप्रतीसार इत्यपि ॥ २५ ॥

क्षान्ति तितिक्षा यह दो नाम क्षमाके
हैं जो पर दूसरेके विषय धनादिकमें कांक्षा
है वह अभिध्या है अक्षान्ति ईर्ष्या यह दो
नाम पराई उन्नतिके न सहनेके हैं गुणोंमें
दोषका आरोपण करना असूया है ॥ २४ ॥
वैर विरोध विद्वेष यह तीन नाम वैरके हैं
मन्यु शोक शुक् यह तीन नाम शोकके हैं
तिसमें शुक्शब्द स्त्रीलिंगमें होता है पश्चात्ताप
अनुताप विप्रतीसार यह तीन नाम पछि-
तानेके हैं ॥ २५ ॥

कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघा रुद्रक्रुधौ
स्त्रियौ ॥ शुचौ तु चरिते शीलमुन्मा-
दश्चित्तविभ्रमः ॥ २६ ॥ प्रेमा ना
प्रियता हार्द प्रेम स्नेहोऽथ दोहदम् ॥
इच्छा काङ्क्षा स्पृहेहा तृद्वाञ्छा लि-
प्ता मनोरथः ॥ २७ ॥ कामोऽभि-
लाषस्तर्षश्च सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः
उपाधिर्ना धर्मचिन्ता पुंस्याधिर्मान-
सी व्यथा ॥ २८ ॥

कोप क्रोध अमर्ष रोष प्रतिघा रुद्र क्रुध
यह सात नाम क्रोधके हैं रुद्र क्रुध यह
दोनों स्त्रीलिंग हैं शुद्ध आचरणमें शील श-

ब्द वर्त्तै है उन्माद चित्तविभ्रम यह दो नाम
उन्माद अर्थात् चित्त ठिकाने न रहनेके हैं
॥ २६ ॥ प्रेमन् प्रियता हार्द प्रेमन् स्नेह
यह नाम प्रेमके हैं तिसमें प्रेमन् शब्द
पुल्लिंग है और नपुंसक लिंगभी होता है-
इस कारण दो बार कहा है. दोहद
इच्छा कांक्षा स्पृहा ईहा तृप् वांछा लिप्ता
मनोरथ ॥ २७ ॥ काम अभिलाष तर्ष यह
वारह नाम इच्छाके हैं. जो अत्यन्त इच्छा
है वह लालसा संज्ञिक है. यह लालसा शब्द
स्त्रीलिंगमें होता है. उपाधि धर्मचिन्ता यह
दो नाम धर्मकी चिन्ताके हैं तिसमें उपाधि-
शब्द पुल्लिंग है आधि मानसीव्यथा यह दो
नाम मनकी पीडाके हैं ॥ २८ ॥

स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानमुत्कण्ठो-
त्कलिके समे ॥ उत्साहोऽध्यवसायः
स्यात्स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९ ॥
कपटोऽस्त्री व्याजदम्भोपधयश्छद्मकै-
तवे ॥ कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यं प्रमा-
दोऽनवधानता ॥ ३० ॥

चिन्ता स्मृति आध्यान यह तीन नाम
चिन्ताके हैं उत्कंठा उत्कलिका यह दो नाम
उत्कंठाके हैं आपसमें समान हैं. उत्साह अ-
ध्यवसाय यह दो नाम उत्साहके हैं जो
उत्साह अतिशक्तियुक्त है वह वीर्य संज्ञिक
है ॥ २९ ॥ कपट व्याज दंभ उपाधि छ-
द्मन कैतव कुसृति निकृति शाठ्य यह नौ
नाम कपटके हैं तिसमें कपटशब्द स्त्रीलिंग-

वर्जित पुनपुसकलिंगमे होता है प्रमाद अन-
वधानता यह दो प्रमादके नाम है ॥ ३० ॥

कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहल-
म् ॥ स्त्रीणां विलासविव्वोकविभ्रमा
ललितं तथा ॥ ३१ ॥ हेला लीलेत्यमी
हावाः क्रियाः शृङ्गारभावजाः ॥ द्र-
वकेलिपरीहासाः क्रीडा लीला च
नर्म च ॥ ३२ ॥

कौतूहल कौतुक कुतुक कुतूहल यह
चार नाम कौतूहलके है विलास विव्वोक
विभ्रम ललित ॥ ३१ ॥ हेला लीला यह
स्त्रियोंके शृङ्गारभावसे उत्पन्नभई क्रिया हाव
सज्जिक है द्रव केलि परीहास क्रीडा लीला
नर्मच यह छै नाम क्रीडा मात्र अर्थात् खे-
लके है ॥ ३२ ॥

व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च क्रीडा खे-
ला च कूर्दनम् ॥ धर्मो निदाघः स्वे-
दः स्यात्प्रलयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥
अवहित्थाकारगुप्तिः समौ संवेगसं-
भ्रमौ ॥ स्यादाच्छुरितकं हासं सो-
त्प्रासं स मनाक् स्मितम् ॥ ३४ ॥

व्याज अपदेश लक्ष्य यह तीन नाम
स्वरूपके ढकनेके है इसको बहानाभी कहते
है क्रीडा खेला कूर्दन यह तीन नाम बाल-
कोंके खेलके है धर्म निदाघ स्वेद यह तीन
नाम पसीनाके है प्रत्यय नष्टचेष्टता यह दो
नाम मूच्छाके है ॥ ३३ ॥ अवहित्था आ-
कारगुप्ति यह दो नाम शोकादिककरके उ-

त्पन्न भई मुखगलानिके है सवेग सभ्रम यह
दो नाम सभ्रम अर्थात् हर्षादिककरके क-
र्मोंमें शीघ्रता होनेके है आपसमें समान है
सोत्प्रास अधिकतासहित जो हास है वह
आच्छुरित सज्जिक है और जो थोडा हास
है वह स्मित सज्जिक है यह मुसकुरानेका
नाम है ॥ ३४ ॥

मध्यमः स्याद्विहसित रोमाञ्चो रो-
महर्षणम् ॥ क्रन्दितं रुदितं क्रुष्ट जृ-
म्भस्तु त्रिषु जुम्भणम् ॥ ३५ ॥ वि-
प्रलम्भो विसंवादो रिक्कणं स्खलनं
समे ॥ स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वमः
संवेश इत्यपि ॥ ३६ ॥

और जो हास मध्यम अर्थात् न बहुत
न थोडा वह विहसित है रोमाच रोमहर्षण
यह दो नाम रोम खड़े होनेके हैं, क्रन्दित
रुदित क्रुष्ट यह तीन नाम रोनेके है जृम्भ
जृम्भण यह दो नाम जँभाईके हैं तिसमें जु-
म्भश्च तीनो लिंगमें होता है ॥ ३५ ॥
विप्रलम्भ विसंवाद यह दो नाम ठगईयुक्त
भाषण अथवा अगीऊतके असिद्धकरनेके
है इसको यवनभाषामें येमुरव्वतीभी कहते
हैं रिक्कण स्खलन यह दो नाम धर्मादिकसें
चलायमान होनेके है आपसमें समान है
निद्रा शयन स्वाप स्वम संवेश यह पाच
नाम निद्राके हैं ॥ ३६ ॥

तन्द्री प्रमीला भ्रुटिभ्रुटिभ्रुटिः
स्त्रियाम् ॥ अट्टटि स्यादसौम्येऽक्षिण

संसिद्धिप्रकृती त्रिवे ॥ ३७ ॥ स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चाथ वेपथुः॥
कम्पोऽथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३८ ॥

॥ इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

तंद्री प्रमीला यह दो नाम निद्राके आदि अन्तमें होनेवाले आलसके हैं इसको सुमारोभी कहते हैं, भ्रुकुटि भ्रुकुटि भ्रुकुटि यह तीन नाम भौं टेढ़ीकरनेके हैं यह तीनों शब्द स्त्रीलिंगमें होते हैं असौम्य नेत्र अर्थात् क्रोधयुक्त नेत्रमें अदृष्टि शब्द वर्त्तै है इसको क्रूर दृष्टिभी कहते हैं संसिद्धि प्रकृति॥३७॥ स्वरूप स्वभाव निसर्ग यह पांच नाम स्वभावके हैं वेपथु कंप यह दो नाम कांपनेके हैं क्षण उद्धर्ष मह उद्धव उत्सव यह पांच नाम उत्सवके हैं ॥ ३८ ॥

इति नाट्यवर्गः ।

अधोभुवनपातालं बलिसद्वन् रसातलम् ॥ नागलोकोऽथ कुहरं सुषिरं विवरं विलम् ॥ १ ॥ छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा सुषिः ॥
गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे सरन्ध्रे सुषिरं त्रिषु ॥ २ ॥

अधोभुवन पाताल बलिसद्वन् रसातल नागलोक यह पांच नाम पातालके हैं कुहर सुषिर विवर विल ॥ १ ॥ छिद्र निर्व्यथन रोक रन्ध्र श्वभ्र वपा सुषि यह ग्यारह नाम छिद्रभाजके हैं पृथिवीकेविषे जो छिद्र है

उसमें गर्त अवट यह दो शब्द वर्त्तै हैं छिद्रसहित जो वस्तु है उसमें सुषिर शब्द वर्त्तै है सुषिर शब्द तीनों लिंगमें होता है ॥२॥

अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ॥ ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं क्षीणेऽवतमसं तमः ॥ ३ ॥ विष्वक् संतमसं नागाः काद्रवेयास्तदीश्वरः॥
शेषोऽनन्तो वासुकिस्तु सर्पराजोऽथ गोनसे ॥ ४ ॥ तिलित्सः स्यादजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ॥ अलगर्दो जलव्यालः समौ राजिलडुण्डुभौ ॥ ५ ॥

अन्धकार ध्वान्त तमिस्र तिमिर तमस यह पांच नाम अन्धकारके हैं बड़ेगाढे अन्धकारमें अन्धतमस शब्द वर्त्तै है और क्षीण अन्धकारमें अवतमस शब्द वर्त्तै है और विष्वक् तमः अर्थात् चारोंतरफसे वर्त्तमान अन्धकार सन्तमस संज्ञिक है, नाग काद्रवेय यह दो नाम नागोंके हैं तिन नागोंके स्वामी शेष अनन्त संज्ञिक हैं वासुकि सर्पराज यह दो नाम नागराजके हैं गोनस ॥ ३ ॥ ४ ॥ तिलित्स यह दो नाम विशेष साँपके हैं शयु वाहस यह दो अजगरसर्पमें वर्त्तै हैं अर्थात् अजगर शयु वाहस यह तीन नाम अजगरके साँपके हैं, अलगर्द जलव्याल यह दो नाम जलसर्पके हैं आपसमें समान हैं, राजिल डुण्डुभ यह दो नाम निर्विष दो मुखवाले साँपके हैं ॥ ५ ॥

मातुधानो मातुलाहिर्निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ॥ सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजं-

गोऽहिर्भुजगमः ॥ ६ ॥ आशीविपो
विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः ॥
कुण्डली गूढपाच्चक्षुःश्रवाः काकोदरः
फणी ॥ ७ ॥ दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो
दन्दशूको विलेशयः ॥ उरगः पन्न-
गो भोगी जिल्लगः पवनाशनः ॥ ८ ॥

मालुधान मातुलाहि यह दो नाम खट्वा-
कार चित्रसर्पके है निर्मुक्त मुक्तकचुक यह
दो नाम त्यागीभई केचुरीमाले सर्पके है सर्प
पृदाकु भुजग भुजग अहि भुजगम ॥ ६ ॥
आशीविष विषधर चक्रिन् व्याल सरीसृप
कुण्डलिन् गूढपाद् चक्षुःश्रवस् काकोदर फ-
णिन् ॥ ७ ॥ दर्वीकर दीर्घपृष्ठ ददशूक वि-
लेशय उरग पन्नग भोगिन् जिल्लग पवना-
शन यह पञ्चीश नाम सर्पके है ॥ ८ ॥

त्रिण्वाहेयं विपास्थ्यादि स्फटाया तु
फणा द्वयोः ॥ समौ कश्चुकनिर्मोकौ
क्ष्वेडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥ पुंसि
कृत्रि च काकोलकालकूटहलाहलाः ॥
सोराट्टिक. शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः म-

१ लेलिहानो द्विस्तनो गोकर्ण कश्चुकी त-
था ॥ कुम्भीनस्त फणधरो हस्तिभागधरमनया
॥ १ ॥ अटे शरीर भोग स्थानाशीरप्यदिद-
ट्टिका ॥

यह डेट शंक और पुस्तकोंमें विशेष है ले-
लिहान द्विस्तन गोकर्ण कश्चुकिन् कुम्भीनस्त फ-
णधर हस्ति भोगधर यह आठ नाम सर्पके विशेष
॥ १ ॥ सर्परा शरीर भोग सन्निक है आनो
अद्विष्टा यह दो नाम सर्पकी टाटने हैं ।

दीपनः ॥ १० ॥ दारदो वत्सनाभश्च
विषभेदा अमी नवः ॥ विषवैद्यो जाङ्गु-
लिको व्यालाग्राह्यहितिण्डिकः ॥ ११ ॥

॥ इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥

जो सर्पके विष और अस्थ्यादिक है
वह आहेय सन्निक है आहेय शब्द तीनों
लिंगमें होता है. स्फटा फणा यह दो नाम
सर्पके फणाके है यह दोनों शब्द स्त्री तथा
पुलिंगमें होते हैं कचुक निर्मोक यह दो नाम
सर्पकी केचुरीके है आपसमें समान लिंग है
क्ष्वेड गरल विष यह तीन नाम विषके है
तथा विषशब्द पुलिंग तथा नपुंसकलिंगमें
होवे है ॥ ९ ॥ काकोल कालकूट हलाहल
सोराट्टिक शौक्लिकेय ब्रह्मपुत्र मदीपन ॥ १० ॥
दारद वत्सनाभ यह नौ विषके भेद है वि-
समें काकोल कालकूट हलाहल यह तीनों
पुलिंग तथा नपुंसकलिंगमें होते हैं विषवैद्य
जाङ्गुलिक यह दो नाम विषके दूरकरनेवाले
वैद्यके है वायगी शब्दकरके भी विख्यात है
व्यालग्राह्य अहितुडिक यह दो नाम उपेके
पकडनेवालेके है ॥ ११ ॥

इति पातालभोगिवर्गः ।

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गन्ति-
न्निषाम् ॥ तज्जेनास्तपनापीचिमहा-
रौरवरीरवा ॥ १ ॥ मंघातं या
त्सुप्र चेपाया मत्स्यास्तु नारका ॥
मेवा वैतरणी मिन्धुः स्यादलक्ष्मीन्तु
निर्झन्ति ॥ २ ॥ विटिराजं पारणा

तु यातना तीव्रवेदना ॥ पीडा बाधा
व्यथा दुःखमामनस्यं प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥
स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां भे-
द्यगामि यत् ॥

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

नारक नरक निरय दुर्गति यह चार
नाम नरकके हैं तिसमें दुर्गतिशब्द स्त्रीलिंगमें
होता है. तिस नरकके भेद तपन अवीचि
महारौरव रौरव ॥ १ ॥ संघात कालसूत्र
इत्यादिक हैं नरकके विषे होनेवाले प्राणी
प्रेत संज्ञिक हैं नरककी नदी वैतरिणी सं-
ज्ञिक है नरककी अशोभा निर्ऋति संज्ञिक
है ॥ २ ॥ विष्टि आजू यह दो नाम नर-
कमें हठसं डारनेके हैं. कारणा यातना ती-
व्रवेदना यह तीन नाम नरककी पीडाके हैं
पीडा बाधा व्यथा दुःख आमनस्य प्रसूतिज
॥ ३ ॥ कष्ट कृच्छ्र आभील यह नौ नाम
दुःखके हैं तिसमें पीडा आदिक चार मन-
पीडाके नाम हैं. आमनस्य प्रसूतिज यह वै-
मनस्यके नाम हैं और कष्ट आदिक तीन
शरीरपीडाके हैं इनके मध्यमें जो दुःखादिक
भेद्यगामि अर्थात् विशेष्यगामि हैं वह तीनों
लिंगमें होते हैं ॥

इति नरकवर्गः ।

समुद्रोऽन्धिरकूपारः पारावारः सरि-
त्पतिः ॥ उदन्वानुदधिः सिन्धुः सर-
स्वान्तागरोऽर्णवः ॥ १ ॥ रत्नाकरो
जलनिधिर्यादः पतिरपांपतिः ॥ तस्य
प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे ॥ २ ॥

समुद्र अन्धि अकूपार पारावार सरि-
त्पति उदन्वत् उदधि सिन्धु सरस्वत् सागर
अर्णव ॥ १ ॥ रत्नाकर जलनिधि यादः-
पति अपांपति यह पन्दरह नाम समुद्रके हैं
तिस समुद्रके भेद क्षीरोद लवणोद तथा-
औरभी हैं ॥ २ ॥

आपः स्त्री भूम्नि वार्वारि सलिलं क-
मलं जलम् ॥ पयः कीलालममृतं
जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥ कवन्ध-
मुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् ॥
अम्भोऽर्णस्तोयपानीयक्षीरक्षीराम्बु-
शम्बरम् ॥ ४ ॥ मेघपुष्पं वनरस
स्त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् ॥ भङ्गस्तरङ्ग
ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचिरथोर्मिषु ॥ ५ ॥

अप् वार वारि सलिल कमल जल प-
यस् कीलाल अमृत जीवन भुवन वन ॥ ३ ॥
कवन्ध उदक पाथस् पुष्कर सर्वतोमुख अ-
म्भस् अर्णस् तोय पानीय नीर क्षीर अम्बु
शंबर ॥ ४ ॥ मेघपुष्प वनरस यह सत्ता-
ईश नाम जलके हैं तिसमें अप्शब्द स्त्री-
लिंग तथा बहुवचनमें होता है और वार
शब्द पूर्वोत्तरके साहचर्यसे स्त्री तथा नपुं-
सकलिंगमें होता है आप्य अम्मय यह दो
जलविकारके नाम हैं तीनों लिंगमें होते हैं
भंग तरंग ऊर्मि वीचि यह चार नाम ज-
लकी लहरिके हैं तिसमें वीचि शब्द स्त्री-
लिंगमें होता है और ऊर्मि विकल्पकर स्त्री-
लिंगमें होता है ॥ ५ ॥

महत्सूलोलकलोलौ स्यादावर्तोऽम्भ-
सां भ्रमः ॥ पृषन्ति विन्दुपृषताः
पुमांसो विप्रुपः स्त्रियाम् ॥ ६ ॥
चक्राणि पुटभेदाः स्पृर्भमाश्च जल-
निर्गमाः ॥ कूलं रोधश्च तीरं च प्र-
तीरं च तटं त्रिषु ॥ ७ ॥

बड़ी लहरमें उल्लोल कल्लोल शब्द वर्त्तते हैं जो जलका मण्डलाकार होकर भ्रमण है वह आवर्त सञ्ज्ञिक है यह भेवरका नाम है पृषत् विन्दु पृषत विप्रुप् यह चार नाम जलके विन्दुओंके हैं तिसमें पृषत् शब्द नपुंसकलिङ्ग है और विन्दु पृषत पुलिङ्ग है और विप्रुप् स्त्रीलिङ्गमें होता है ॥ ६ ॥ चक्र पुटभेद भ्रम जलनिर्गम यह चार नाम चक्राकारकरके जलोंका नीचे जानेके हैं परन्तु तिसमें चक्र आदिक दो नाम चक्राकारकरके जलोंके नीचे जानेके हैं और भ्रम आदिक दो नाम नद्यादिकमें नीचेके जलोंको ऊपर निकलनेके हैं कूल रोधस् तीर प्रतीर तट यह पाच नाम तीर अर्थात् किनारेके हैं तिसमें तट शब्द तीनों लिङ्गमें होता है ॥ ७ ॥

पारावारे परार्वाची तीरे पात्र तदन्तरम् ॥ द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्तर्वारिणस्तटम् ॥ ८ ॥ त्रयोपस्थितं तत्पुलिङ्गं सैकतं सिकतामपम् ॥ निपदरस्तु जम्वालं पद्मोऽस्त्री शादक-
र्दमो ॥ ९ ॥

पर (परलोतरफवाची) अर्वाक् (उरलोतरफवाची) किनारेमें क्रममे पार आवार शब्द

वर्त्तते है अर्थात् पार परलेकिनारेको कहते है आवार उरले किनारेको कहते है तिन पार तथा उरलीपारकी बीच पात्र सञ्ज्ञिक है जलके बीचमें जो किनारा है वह द्वीप अन्तरीप सञ्ज्ञिक है द्वीप अन्तरीप शब्द स्त्रीलिङ्गवर्जित पुनपुसकलिङ्गमें होते है ॥ ८ ॥ जो जलसे उठा भया स्थल है वह पुलिङ्ग सञ्ज्ञिक है सैकत सिकतामप यह दो नाम बहुतसी वालूसे युक्त स्थानके हैं निपदर जवाल पद्म शाद कर्दम यह पाच नाम कीचके हैं तिसमें पद्मशब्द स्त्रीलिङ्गवर्जित पुनपुसकलिङ्गमें होता है ॥ ९ ॥

जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ॥ नाव्यं त्रिलिङ्गं नौताप्ये स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥ १० ॥ उडुपं तु पुत्रः कोलः स्त्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः ॥ आतरस्तरपण्य स्यादद्गोणी काष्ठाऽम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥

जलोच्छ्वास परीवाह यह दो नाम बहुतेभये जलके निकसनेके मार्गोंके हैं इनको वाहाभी कहते हैं कूपका विदारका यह दो नाम सूखेभये नद्यादिकमें जलकेवास्ते खोदेभये खड्डोंके हैं नावकरके तरेनेयोग्य जलादिकमें नाव्य शब्द वर्त्तते है यह शब्द तीनों लिङ्गवाची है नौ तरणि तदि यह तीन नाम नावके हैं यह तीनों शब्द स्त्रीलिङ्गमें होते हैं ॥ १० ॥ उडुप पुत्र कोल यह तीन नाम छोटी नावके हैं जो स्वत ही जलका निकलना है यह मोतस् सञ्ज्ञिक है इसको

सोतभी कहते हैं आतर तरण्य यह दो नाम नद्यादिकके तरनेमें देनेयोग्य मूल्यके हैं इसकों उतराईभी कहते हैं जो काष्ठकी बनी भई जलके बहानेवाली है वह द्रोणी संज्ञिक है इसको डोंगीभी कहते हैं ॥ ११ ॥

सांयात्रिकः पोतवणिकर्णधारस्तु ना-
विकः ॥ नियामकाः पोतवाहाः कू-
पको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥ नौकाद-
ण्डः क्षेपणी स्यादरित्रं केनिपातकः॥
अभिः स्त्री काष्ठकुदालः सेकपात्रं तु
सेचनम् ॥ १३ ॥

सांयात्रिक पोतवणिज् यह दो नाम ना-
वमें वणिजी करनेवालेके हैं. कर्णधार ना-
विक यह दो नाम पतवार पकडकर उतार-
नेवाले मझाहाओंके हैं नियामक पोतवाह यह
दो नाम नावके बीचमें खड़े भये काष्ठके
अगारी स्थित होकरके दुष्ट जलजन्तुओंके
रोकने तथा मारनेवाले मल्लाहोंके हैं कूपक
गुणवृक्षक यह दो नाम बीचके खंवके हैं
जिसमें नावके रोकने तथा चलानेकी रस्सी
बँधी रहती है ॥ १२ ॥ नौकादण्ड क्षेपणी
यह दो नाम नावके बहानेवाले दण्डके हैं
इसकों बल्हीभी कहते हैं. अरित्र केनिपातक
यह दो नाम पतवारके हैं. अभि काष्ठकुदाल
यह दो नाम नावआदिकके मलके दूर क-
रनेके लिये जो काष्ठकुदाल है उसके हैं ति-
समें अभिशब्द स्त्रीलिंग है सेकपात्र सेचन
यह दो नाम चमडा आदिकके नैभये ज-

लके निकालनेवाले पात्रके हैं इसकों डोल-
चीभी कहते हैं ॥ १३ ॥

क्लीवेऽर्धनावं नावोऽर्धेऽतीतनौकेऽतिनु
त्रिपु ॥ त्रिज्वागाधात्मसन्नोऽच्छः
कलुषोऽनच्छ आविलः ॥ १४ ॥ निम्न
गभीरं गम्भीरमुत्तानं तद्विपर्यये ॥ अ-
गाधमतलस्पर्शं कैवर्त्तं दाशधीवरो १५ ॥

नावके आधेभागमें अर्द्धनाव शब्द वर्त्त
है यह अर्द्धनाव शब्द नपुंसकलिंगमें होता
है अतीतनौक अर्थात् नावकों उलंघन क-
रके वर्त्तमान भये मनुष्यादिकमें अतिनु
शब्द वर्त्त है यह तीनों लिंगमें होता है इ-
ससे परे अगाधपर्यन्त शब्द तीनों लिंगमें
होवे हैं प्रसन्न अच्छ यह दो निर्मलके नाम
हैं कलुष अनच्छ आविल यह तीन नाम
मलयुक्तके हैं ॥ १४ ॥ निम्न गभीर गम्भीर
यह तीन नाम गहरेके हैं तिस गहरेसे वि-
पर्ययमें उत्तान शब्द वर्त्त है इसकों उथला
कहते हैं. अगाध अतलस्पर्श यह दो नाम
अतिगहरेके हैं कैवर्त्त दास धीवर यह तीन
नाम धीवरके हैं जिसकों कहार कहते हैं १५

आनायः पुंसि जालं स्याच्छणसूत्रं
पवित्रकम् ॥ मत्स्याधानी कुवेणी
स्याद्वडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६ ॥
पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसा-
रिणोऽण्डजः॥ विसारः शकुली चाथ
गडकः शकुलाभकः ॥ १७ ॥

आनाय जाल यह दो नाम जालके है तिसमें आनाय शब्द पुलिगमें होता है शणसूत्र पवित्र यह दो नाम शणसूत्र जालके है इसकों सुतरीभी कहते है. मत्स्याधानी कुवेणी यह दो नाम मछलियोंके ब बन करनेकी कण्डियोंके है बडिश मत्स्यवेधन यह दो नाम मछलीके वेधनेवाले काटेके है ॥ १६ ॥ पृथुरोमन् झप मत्स्य मोन वैसारिण अण्डज विसार शकुलिन् यह आठ नाम मछलियोंके है गडक शकुलार्भक यह दो नाम गलफटी मछलीके है ॥ १७ ॥

सहस्रदंष्ट्रः पाठीन उलूपी शिशुकः समौ ॥ नलमीनश्चिलिचिमः मोठी तु शफरी द्वयोः ॥ १८ ॥ क्षुद्राण्ड-मत्स्यसंघातः पोताधानमथो झपाः ॥ रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥ तिमिगिलादयश्चाथ यादासि जलजन्तवः ॥ तज्जेदाः शिशुमारोद्रशङ्खो मकरादयः ॥ २० ॥

सहस्रदंष्ट्र पाठीन यह दो नाम बहुतसी हाठोंवाली मछलीके है उलूपिन् शिशुक यह दो नाम शिशुमारके आकार मछली विशेषके है आपसमें समान है. नलमीन चिलिचिम यह दो नाम जलके तृण चरनेवाली मछलीविशेषके है मोठी शफरी यह दो नाम उजली मछलीविशेषके है इसको सहरीभी कहते है मोठी तथा शफरी शब्द दोनों स्त्रीलिंग तथा पुलिगमें होते है ॥ १८ ॥ क्षुद्राण्ड मछलियोंका समूह पोताधान सत्तिक

है यह छोटी छोटी बहुतसी मछलियोंका नाम है झप यह एक नाम मत्स्य विशेषका है रोहित यह एक नाम रोही मछलीका है मद्गुर यह एक नाम माँगरा मछलीका है राजीव यह एक नाम रायामछलीका है शकुल यह एक नाम सौर मछलीका है तिमि ॥ १९ ॥ तिमिगल आदि-शब्दसे औरभी मन्द्यावर्त्तादिकभेद है यादसु जलजन्तु यह दो नाम जलचरमात्र जीवके है तिन जलचारियोंके भेद शिशुमार उद्र-शकु मकर आदिक है ॥ २० ॥

स्यात्कुलीरः कर्कटकः कूर्मे कमठक-च्छपौ ॥ ग्राहोऽवहारो नक्रस्तु कुम्भीरोऽथ महीलता ॥ २१ ॥ गण्डूपदः किंचुलको निहाका गोविका समे ॥ रक्तपा तु जलौकापा स्त्रिया भूम्नि जलौकसः ॥ २२ ॥

कुलीर कर्कट यह दो नाम कर्कटके है जिसकों कैकडाभी कहते है. कूर्म कमठ कच्छप यह तीन नाम कच्छपके है ग्राह अवहार यह दो नाम ग्राहके है इसकों घडियालभी कहते है नक्र कुभीर यह दो नाम ग्राहविशेष अर्थात् नाकेके है महीलता ॥ २१ ॥ गण्डूपद किंचुलक यह तीन नाम जलचर-विशेषके हैं जिमकों कैचुआभी कहते है निहाका गोविका यह दो नाम जल्मोहके है रक्तपा जलौका जलौकसु यह तीन जलो-काके है इमकों जाकभी कहते है. तिसमें

जलौकस् शब्द स्त्रीलिंग तथा बहुवचनमें होता है ॥ २२ ॥

मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः शङ्खः
स्यात्कम्बुरस्त्रियौ ॥ क्षुद्रशङ्खाः श-
ङ्खनखाः शम्बूका जलशुक्तयः
॥ २३ ॥ भेके मण्डूकवर्षाभूशालू-
रप्लवदर्दुराः ॥ शिली गण्डूपदी भेकी
वर्षाभ्वी कमठी दुलिः ॥ २४ ॥

मुक्तास्फोट शुक्ति यह दो नाम शुक्तिके हैं जिसकों शिप्पीभी कहते हैं. तिसमें शुक्तिशब्द स्त्रीलिंगमें होता है. शंख कम्बु यह दो नाम शंखके हैं शंख कम्बुशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होते हैं. क्षुद्रशंख शंखनख यह दो नाम छोटे छोटे शंखोंके हैं शंबूका जलशुक्ति यह दो नाम छोटीछोटी शुक्ति अर्थात् शिप्पियोंके हैं ॥ २३ ॥ भेक मण्डूक वर्षाभू शालूर प्लव दर्दुर यह छै नाम मेंडूकके हैं शिली गण्डूपदी यह दो नाम छोटी गण्डूपदजातिके हैं भेकी वर्षाभ्वी यह दो नाम छोटीछोटी मेंडूकजातिके हैं कमठी दुली यह दो नाम कच्छपीके हैं ॥ २४ ॥

मदुरस्य प्रिया शृङ्गी दुर्नामा दीर्घ-
कोशिका ॥ जलाशयो जलाधार-
स्तत्रागाधजलो हृदः ॥ २५ ॥ आ-
हावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये ॥
पुंस्येवाऽन्धुः प्रहिः कूप उदपानं तु
पुंसि वा ॥ २६ ॥

मदुरकी प्रिया स्त्री शृङ्गी संज्ञिक है दुर्नामन् दीर्घकोशिका यह दो नाम जोंककी-समान जलचर विशेषके हैं. जलाशय जलाधार यह दो नाम तलाव आदिक जलस्थानके हैं और गहरे जलवाला जलस्थान हृद संज्ञिक है ॥ २५ ॥ आहाव निपान यह दो नाम कूपके समीप गऊआदिकोंके पीने-केवास्ते शिला ईंट आदिकोंके रचभये जलस्थानके हैं. अन्धु प्रहि कूप उदपान यह चार नाम कूपके हैं तिसमें अन्धु प्रहि कूप शब्द पुल्लिंगमें होते हैं और उदपान विकल्पकर पुल्लिंगमें होता है ॥ २६ ॥

नेमिस्त्रिकास्य वीनाहो मुखवन्धनम-
स्य यत् ॥ पुष्करिण्यां तु खातं
स्यादखातं देवखातकम् ॥ २७ ॥
पद्माकरस्तडागोऽस्त्री कासारः सरसी
सरः ॥ वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरो
वापी तु दीर्घिका ॥ २८ ॥

इस कूपकी नेमि अर्थात् रस्सी आदि-कोंके रखनेके लिये जो लकड़ीका यंत्र है वह त्रिका संज्ञिक है. इसकों चौखटाभी कहते हैं और जो इस कूपका मुखवन्धन है अर्थात् कूपका पत्थर शिला आदिकोंकर मुखवन्धन है वह वीनाह संज्ञिक है. पुष्करिणी खात यह दो नाम पुष्करिणी (तलाविनी)के हैं. अखात देवखातक यह दो नाम विना खोदेभये देवसरोवरके हैं ॥ २७ ॥ पद्माकर तडाग कासार सरसी सरस् यह

पाच नाम तलावके है विसमें पद्याकर तडाग यह दो नाम जिसमें गहरा जल और कमल फूले होते है उस तालावके है और कासार आदिक तीन खोदे भये तलावके है तडाग-शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुसकालिगमे होता है वेशन्त पत्वल अल्पसरस् यह तीन नाम छोटे तालावके है बापो दीर्घिका यह दो नाम बाण्डीके है ॥ २८ ॥

खेयं तु परिखाधारस्त्वम्भसा यत्र धारणम् ॥ स्यादालवालमावालमा-
बापोऽथ नदी सरित् ॥ २९ ॥ तर-
ङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्लादिनी धुनी ॥ स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती
निम्नगापगा ॥ ३० ॥

खेय परिखा यह दो नाम किलाके बाहिर चारोतरफ खुदेभये खन्दकके है जिसमें क्षेत्र आदिकोंके सीचनेकेलिये जलों-की स्थिति है वह आधार सन्निक हे आल-वाल आवाल आबाप यह तीन नाम वृक्षा-दिकोंके जडमे चारोंतरफ जल रखनेकेलिये जो खन्दक हे उसके है नदी सरित् ॥ २९ ॥ तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्लादिनी धुनी स्रोतस्विनी द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगा आपगा यह बारह नाम नदीके है ॥ ३० ॥

गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्न-
गा ॥ भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता
भीष्मसूरपि ॥ ३१ ॥ कालिन्दी

१ कूलरूपा निर्गङ्गी रोधोवक्रा सरस्वती ॥

ये चार नदीके ओरभी नाम है

सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ॥ रेवा
तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ३२

गंगा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा
भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोतस् भीष्मसू यह
आठ नाम गंगाजीके है ॥ ३१ ॥ कालिन्दी
सूर्यतनया यमुना शमनस्वसू यह चार नाम
यमुनाजीके है रेवा नर्मदा सोमोद्भवा मेक-
लकन्यका यह चार नाम नर्मदा नदीके है ३२

करतोया सदानीरा बाहुदा सैतवा-
हिनी ॥ शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्याद्विपा-
शा तु विपाद् स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥ शोणो
हिरण्यवाहः स्यात्कुल्याऽल्पा कृत्रि-
मा सरित् ॥ शरावती वेन्नवती चन्द्र-
भागा सरस्वती ॥ ३४ ॥ कावेरी
सरितोऽन्याश्च संभेदः सिन्धुसंगमः ॥
द्वपो प्रणाली पयसः पद्म्या त्रिपु-
तूत्तरी ॥ ३५ ॥

करतोया सदानीरा यह दो नाम गौरीके
विवाहमें क यादानके जलसे उत्पन्न भई
नदीके हैं बाहुदा सैतवाहिनी यह दो नाम
बाहुदा नदीके है शतद्रु शुतुद्रि यह दो नाम
शतद्रु नदीके है विपाशा विपाशू यह दो
नाम विपाशा नदीके है यह दोनों शब्द
स्त्रीलिंगमें होवे है ॥ ३३ ॥ शोण हिरण्य-
वाह यह दो नाम नदविशेषके है इसको
शोन नदीभी कहते है जो छोटी कीर्भई
नदी है वह कुल्या सन्निक हे इसको नहरभी
कहते हैं शरावती वेन्नवती चद्रभागा सरस्वती
॥ ३४ ॥ कावेरी यह नदिविशेष है औरभी

कौशिकी गण्डकी आदिक हैं. संभेद सिन्धु-
संगम यह दो नाम नदियोंके मिलनेकी
जगहके हैं. जलके निकलनेके मार्गमें प्रणाली
शब्द होता है इसको नालीभी कहते हैं. यह
शब्द स्त्री तथा पुंलिंगमें होता है पुंलिंगमें
प्रणाल रूप होता है. इससे उत्तर अर्थात्
अगारीके दोनों दाविक तथा सारवशब्द
तीनों लिंगमें होते हैं ॥ ३५ ॥

देविकायां सरयवां च भवे दाविकसा-
रवौ ॥ सौगन्धिकं तु कहलारं हलकं
रक्तसंध्यकम् ॥ ३६ ॥ स्यादुत्पलं
कुवलयमथ नीलाम्बुजन्म च ॥ इन्दीवरं
च नीलेऽस्मिन्सिते कुमुदकैरवे ॥ ३७ ॥

देवताओंकी नदीकेविषैं उत्पन्न भये
पदार्थमें दाविक शब्द वर्त्तै है और सरयून-
दीकेविषैं उत्पन्न भये पदार्थमें सारव शब्द
वर्त्तै है. सौगन्धिक कहलार यह दो नाम
संध्यासमय खिलनेवाले शुक्लकमलके हैं
हलक रक्तसंध्यक यह दो नाम संध्यासमय
खिलनेवाले लालकमलके हैं ॥ ३६ ॥ उत्पल
कुवलय यह दो नाम कुमुदके हैं इसको
फफुलाभी कहते हैं और इस नील कुमुदमें
नीलाम्बुजन्मन् इन्दीवर यह दो शब्द वर्त्तै हैं
और इस श्वेतकुमुदमें कुमुद कैरव यह दो
शब्द वर्त्तै हैं ॥ ३७ ॥

शालूकमेवां कन्दः स्याद्वारिपणीं तु
कुम्भिका ॥ जलनीली तु शेवालं
शैवलोऽथ कुमुदती ॥ ३८ ॥ कुमु-

दिन्यां नलिन्यां तु विसिनीपद्मिनी-
मुखाः ॥ वा पुंसि पद्मं नलिनमरवि-
न्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥ सहस्रपत्रं
कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ॥ पङ्केरुहं
तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥
विसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि
च ॥ पुण्डरीकं सिताम्भोजमथ रक्त-
सरोरुहे ॥ ४१ ॥ रक्तोत्पलं कोक-
नदं नालो नालमथास्त्रियाम् ॥
मृणालं विसमञ्जादिकदम्बे खण्डम-
स्त्रियाम् ॥ ४२ ॥ करहाटः शिफा-
कन्दः किंजल्कः केसरोऽस्त्रियाम् ॥
संवर्तिका नवदलं बीजकोशो वरा-
टकः ॥ ४३ ॥

॥ इति वारिवर्गः ॥

इन कमलोंका कन्द शालूक संज्ञिक है
इसको मकरन्दभी कहते हैं. वारिपणीं कुम्भि-
का यह दो नाम जलकुम्भीके हैं. जलनीली
शेवाल शैवल यह तीन नाम शिवारके हैं
कुमुदती ॥ ३८ ॥ कुमुदिनी यह दो नाम
कुमुदिनीके हैं. नलिनी विसिनी पद्मिनी
आदिक नाम कमलिनीके हैं. पद्म नलिन अर-
विन्द महोत्पल ॥ ३९ ॥ सहस्रपत्र कमल
शतपत्र कुशेशय पङ्केरुह तामरस सारस
सरसीरुह ॥ ४० ॥ विसप्रसून राजीव
पुष्कर अम्भोरुह यह सोलह नाम कमलके
हैं. यह कमलवाची सोलह शब्द विकल्प
पुंलिंगमें होते हैं. पुण्डरीक सिताम्भोज यह

दो नाम श्वेतकमलके है रक्तसरोरुह ॥४१॥
 रक्तोत्पल कोकनद यह तीन नाम लालकम-
 लके है। नाल नाल यह दो नाम कमलादि-
 कोंकी दण्डीके है नाल शब्द पुलिग तथा
 पुनपुसकलिग होनेसे दोवार कहागया है
 मृणाल विस यह दो नाम मृणालके है
 इसकों भसाडाभी कहते है यह दोनो शब्द
 स्त्रीलिङ्गवर्जित पुनपुसकलिगमें होते है कम-
 लादिकोंके समूहमें खण्ड शब्द वर्तै है यह
 शब्द स्त्रीलिङ्गवर्जित पुनपुसकलिगमें होता है
 ॥ ४२ ॥ करहाट शिफाकन्द यह दो नाम
 कमलकी जड़के है यह दोनों पुनपुसकलिगमें
 होते है सवर्तिका नवदल यह दो नाम
 कमलादिकोंके नवीन पत्तोंके है बीजकोश
 वराटक यह दो नाम कमलगद्दाके है ॥४३॥

इतिवारिवर्ग ।

उक्तं स्वर्ग्योमदिकालिधीशब्दादि स-
 नाट्यकम् ॥ पातालभोगि नरकं
 वारि चैषां च संगतम् ॥ १ ॥ इत्य-
 मरसिंहलतौ नामलिङ्गानुशासने ॥
 स्वरादिकाण्डः प्रथमः साह एव
 समर्थितः ॥ २ ॥

इत्यमरसिंहलतौ नामलिङ्गानु-
 शासने प्रथमकाण्डः
 समाप्तः ॥

मुक्त अमरसिंहने स्व (स्वर्गवर्ग) व्योम-
 वर्ग दिग्वर्ग कालवर्ग धीवर्ग शब्दादिवर्ग
 और नाट्यवर्गसहित पातालभोगिवर्ग और न-

रकवर्ग और वारिवर्ग कहा और इन स्वर्गा
 दिक्वर्गके संगत अर्थात् सबन्धसे प्राप्तभये
 देव असुर मेघादिक सोभो कहे ॥ १ ॥ इस-
 प्रकार अमरसिंहजीकी छति नाम और लिं-
 गोंके शास्त्रमें प्रथम स्वरादिक शब्दोंका
 काण्ड सागोपाग कहा है ॥ २ ॥

इतिश्रीमदमरसिंहलतौ श्रीपाठकम-
 गलसेनात्मजकाशिरामविरचितभाषा-
 टीकाया प्रथम स्वरादिकाण्डः
 समाप्तः ॥

द्वितीयं काण्डम् ।

वर्गाः पृथ्वीपुरक्षमाभूदनौपधिमुगादि-
 भिः ॥ नृबल्लक्षत्रविदशूद्रैः साधो-
 पाद्वैरिहोदिताः ॥ १ ॥

इस कहेजानेवाले काण्डमें अग मृच्छात्वा-
 नगरादिक और उपाग मृत्स्नावेशादिकोंसहित
 पृथिवी, पुर, शैल, वनौपधि, सिंह तथा नर,
 बल, क्षत्र वैश्यशब्दोंकर वर्ग कहे है ॥ १ ॥

भूर्भूमिरचलाऽनन्ता रसा विश्वंभरा
 स्थिरा ॥ धरा धरिणी धरणिः क्षो-
 णिज्या काश्यपी क्षितिः ॥ २ ॥
 सर्वसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुं-
 धरा ॥ गोत्रा कुं पृथिवी पृथ्वी
 क्षमाऽवनिर्मेदिनी मही ॥ ३ ॥

भू भूमि अचला अनन्ता रसा विश्वंभरा
स्थिरा धरा धरित्री धरणि क्षोणि ज्या
काश्यपि क्षिति ॥ २ ॥ सर्वसहा वसुमती
वसुधा उर्वी वसुन्धरा गोत्रा कु पृथिवी पृथ्वी
क्षमा अवनि मेदिनी मही यह सत्ताईश नाम
पृथिवीके हैं ॥ ३ ॥

मृन्मृत्तिका प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ना
च मृत्तिका ॥ उर्वरा सर्वसस्याढ्या
स्यादूषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥ ऊष-
वानूपरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ स्थलं
स्थली ॥ समानौ मरुधन्वानौ द्वे
खिलाग्रहते समे ॥ ५ ॥

मृद् मृत्तिका यह दो नाम मिट्टीके हैं
और जो कि उत्तम मिट्टी है वह मृत्सा
मृत्स्ना संज्ञिक है. और जो कि मिट्टी सर्व
अन्नादिकोंसे युक्त होवे है वह उर्वरा संज्ञिक
है. ऊष क्षारमृत्तिका यह दो नाम लौनी
मिट्टीके हैं ॥ ४ ॥ ऊषवत् ऊपर यह दो
नाम लौनीमिट्टीसे युक्त हुए पृथिवी देशा-
दिकोंके हैं यह दोनों अन्यलिङ्ग अर्थात् विशेष-
ण्यलिङ्ग होवे हैं. भाव यह है कि जो लिङ्ग-
विशेष्यमें होता है वहही लिङ्ग इन दोनों
शब्दोंमें होता है. स्थल स्थली यह दो नाम
विनावनाये हुए स्थानके हैं मरु धन्वन यह

क्षमा ॥ भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागरा-
म्बरा ॥ १ ॥

त्रिपुला गह्वरी धात्री गो इला कुंभिनी क्षमा
भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा यह ग्यारह
नाम पृथिवीके और पुस्तकोंमें विशेष हैं ।

दो नाम मरुदेश अर्थात् निर्जलदेशके हैं
और आपसमें दोनों समानलिङ्ग अर्थात्
पुंलिङ्ग हैं. खिल अप्रहत यह दो नाम विना
जोतेहुए क्षेत्रादिके हैं. इसकों जंगलभी
कहते हैं यह दोनों आपसमें समान हैं और
तीनों लिङ्गमें होवें हैं ॥ ५ ॥

त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं
जगत् ॥ लोकोऽयं भारतं वर्षं शरा-
वत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६ ॥ देशः
प्राग्दक्षिणः प्राच्य उदीच्यः पश्चि-
मोत्तरः ॥ प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः
स्यान्मध्यदेशस्तु मध्यमः ॥ ७ ॥

जगती लोक विष्टप भुवन जगत् यह
पांच नाम जगत्के हैं. और यह जो जंबुद्वीप-
वर्ती लोक हैं वह भारतसंज्ञिक वर्ष है और
शरावतीकी अवधिसे जो कि पूर्वदक्षिण
देश वह प्राच्य संज्ञिक है—और शरावती-
की अवधिसे पश्चिमसहित उत्तर देश है वह
उदीच्य संज्ञिक है. प्रत्यन्त म्लेच्छदेश
यह दो नाम म्लेच्छदेशके हैं. मध्यदेश म-
ध्यम यह दो नाम मध्यदेशके हैं ॥ ६ ॥

आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहि-
मालयोः ॥ नीवृज्जनपदो देशविषयौ
तूपवर्तनम् ॥ ८ ॥ त्रिष्वगोष्ठान्-
डप्राये नङ्गान्द्रुल इत्यपि ॥ कुमु-
दान्कुमुदप्राये वेतस्वान्वहुवेतसे ॥ ९ ॥

जो कि विन्ध्यपर्वत और हिमाचलपर्वतका
बीच है वह आर्यावर्त पुण्यभूमि संज्ञिक है.

नीवृत् जनपद यह दो नाम मनुष्योंकर वसे हुए देशके है देश विषय उपवर्त्तन यह देशमात्रके नाम है ॥ ८ ॥ गोष्ठशब्दपर्यं त जो कि शब्द कहेजावेंगे वह तीनो लिगमें हावेंगे नड्वत् नड्वल यह दो नाम बहुतसे तरसरवाले देशमें वर्त्ते है और कुमुद्वत् यह एक नाम बहुतसे फफुलावाले देशमें वर्त्ते है वेतस्वत् यह एक नाम बहुतसे वेतोंवाले देशमें वर्त्ते है ॥ ९ ॥

शाद्वलः शादहरिते सजम्बाले तु पङ्क्तिः ॥ जलप्रायमनूर्प स्यात्पुसि कच्छ-
स्तथाविधः ॥ १० ॥ स्त्री शर्करा शर्करि-
लः शार्करः शर्करावति ॥ देश एवा-
दिमावेवमुन्नेयाः सिकतावति ॥ ११ ॥

शाद्वल यह एक नाम घाससें हरित हुए देशमें वर्त्ते है अर्थात् हरीघासवाले देशका नाम है और पकिल यह एक नाम कीचसें-युक्त हुए देशमें वर्त्ते है जलप्राय अनूप यह दो नाम बहुतसे जलवाले देशके है और तिसीप्रकारका कच्छ यह एक नाम नद्यादिकोंके समीपवर्त्ती देशका है यह शब्द पुलिग-हीमें होता है न कि तीनो लिगोंमें ॥ १० ॥ शर्करा शर्करिल यह दोनाम वाल्युक्तदेशके हैं तिसमें शर्कराशब्द स्त्रीलिग है और शार्कर शर्करावत् यह दो नाम वाल्युक्त देशादिकके है आदिमें वर्त्तमान हुए शर्करा और शर्करिलशब्द देशमेंही वर्त्ते है और इसीप्रकार सिकतावत् शब्दके विषे सिद्धि करने योग्य है जैसे कि

सिकता सिकतिल यह दो नाम सिकतायुक्त देशके है और सैकव सिकतावत् यह दो नाम वालुकायुक्त देशादिकके है तिसमें सिकताशब्द नित्यही बहुवचनान्त औ स्त्रीलिग है और यहां कोई आचार्य शर्करा और सिकता शब्द दोनोंको बहुवचनान्त कहते है ॥ ११ ॥

देशो नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसंपन्नब्रीहिपालितः ॥ स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥ १२ ॥ सुराजि देशे राजन्वान्स्यात्ततोऽन्यत्र राजवान् ॥ गोष्ठं गोस्थानकं तत्तु गोष्ठीनं भूतपूर्वकम् ॥ १३ ॥

नदीके जल और वर्षाके जलसे सिद्ध हुए धान्योंकर पालाहुआ देश यथाक्रम नदीमातृक देवमातृक सन्निक है भाव यह है कि जो देशकी नदीके जलसे सिद्ध हुए धान्योंकर पाला जावै वह नदीमातृक सन्निक है और जो कि देश वर्षाके जलसे सिद्ध हुए धान्योंकर पाला जावै वह देवमातृक सन्निक है ॥ १२ ॥ राजन्वत् यह एक नाम सुन्दर धर्मशील राजावाले देशमें वर्त्ते है और तिससें अन्यत्र अर्थात् केवल राजावाले देशमें राजवत् यह एक नाम वर्त्ते है गोष्ठ गोस्थानक यह दो नाम गौओंके स्थानके हैं और वहही गौओंका स्थान जो पहिले होचुका हो तो गोष्ठीन सन्निक है अर्थात् गोष्ठीन यह एक नाम गौओंके पहिले स्थानके है ॥ १३ ॥

पर्यन्तभू. परिसर. सेतुराली खिया पुमान् ॥ वामदूरश्च नाकुश्च वल्मीक-

पुनपुंसकम् ॥ १४ ॥ अयनं वर्त्म
मार्गाध्वपन्थानः पदवी सृतिः ॥
सरणिः पद्धतिः पद्या वर्तन्येकप-
दीति च ॥ १५ ॥

पर्यन्तभू परिसर यह दो नाम नदीपर्वता-
दिकोंकी समीप पृथिवीके हैं। स्त्रीलिंगवाची
आलिशब्दमें पुल्लिंगवाची सेतुशब्द वर्तते हैं
अर्थात् सेतु आलि यह दो नाम पुलके हैं
तिसमें सेतु पुल्लिंग और आलि स्त्रीलिंग है
वामलूर नाकु वल्मीक यह तीननाम वल्मी-
कके हैं इसको बाँवीभी कतेहैं। तिसमें वल्मीक
शब्द पुल्लिंग तथा नपुंसकलिंगवाची है
॥ १४ ॥ अयन वर्त्मन् मार्ग अध्वन् पथिन्
पदवी सृति सरणि पद्धति पद्या वर्तनी एकपदी
यह बारह नाम मार्गके हैं ॥ १५ ॥

अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चि-
तेऽध्वनि ॥ व्यध्वो दुरध्वो विपथः
कदध्वा कापथः समीः ॥ १६ ॥ अप-
न्थास्त्वपथं तुल्ये शृङ्गाटकचतुष्पथे ॥
प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा कान्तारं वर्त्म
दुर्गमम् ॥ १७ ॥

अतिपथिन् सुपथिन् सत्पथ यह तीन नाम
पूजितमार्गमें वर्तते हैं अर्थात् यह तीन नाम
सुन्दरमार्गके हैं। व्यध्व दुरध्व विपथ कदध्वन्
कापथ यह पांच नाम खोटे मार्गके हैं और
आपसमें समान लिंग हैं ॥ १६ ॥ अपथिन्
अपथ यह दो नाम अमार्गके हैं। शृङ्गाटक
चतुष्पथ यह दो नाम चह्नाटेके हैं आप-
समें समान लिंग हैं। और जो कि दूरतक

स्थित और शून्य अर्थात् छायाजलादिकोंसे
वर्जित मार्ग है वह प्रान्तर संज्ञिक है और जो
दुर्गम अर्थात् चोर कंटक आदिक उपद्रवोंसे
युक्त मार्ग है वह कान्तार संज्ञिक है ॥ १७ ॥

गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगं नल्वः किष्कु-
चतुःशतम् ॥ घण्टापथः संसरणं त-
त्पुरस्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥

इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

दो कोश गव्यूति संज्ञिक है अर्थात् ग-
व्यूति यह एक नाम दोकोशका है और
स्त्रीलिंगवाची है। और चारसौ हाथ स्थानको
नल्व कहते हैं अर्थात् नल्व यह एक नाम
चारसौ हाथ लम्बे स्थानका है। घंटापथ-
संसरण यह दो नाम राजमार्गके हैं और-
वहही राजमार्ग नगरका होवै तो उपनिष्कर
संज्ञिक है अर्थात् उपनिष्कर यह एक नाम
नगरके राजमार्गके है ॥ १८ ॥

इति भूमिवर्गः ।

पूः स्त्री पुरीनगर्यौ वा पत्तनं पुटभे-
देनम् ॥ स्थानीयं निगमोऽन्यत्तु य-

१ द्यावापृथिव्यौ रोदसी द्यावाभूमी च रो-
दसी ॥ दिवस्पृथिव्यौ गङ्गा तु रुमा स्यालव-
णाकरः ॥ १ ॥

द्यावापृथिवी रोदसी द्यावाभूमि रोदसी दिव-
स्पृथिवी यह पांच नाम आकाशपृथिवीके हैं
और द्विवचनान्त हैं गङ्गा रुमा लवणाकर यह
तीन नाम क्षारसमुद्रके हैं तिसमें गङ्गा रुमा
स्त्रीलिंग हैं ।

मूलनगरात्पुरम् ॥ १ ॥ तच्छास्त्रा-
नगरं वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ॥
आपणस्तु निपद्यायां विपणिः प-
ण्यवीथिका ॥ २ ॥

पुर पुरी नगरी पत्तन पुटभेदन स्थानीय
निगम यह सात नाम नगरके है तिसमें पुर शब्द
स्त्रीलिंग है और पुरी नगरी शब्द विकल्प
करके स्त्रीलिंग है अर्थात् पुरी नगरी शब्द
स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग है और शेष सब
नपुंसकलिंग है और जो मूल नगर राजवा-
नीसे अय नगर है वह शास्त्रानगर सन्निक
है ओर जो वेश्याजनोका निवेशस्थान है
वह वेश सन्निक है आपणशब्द निपद्या
अर्थात् हाटमें बँस है भाव यह है कि
आपण निपद्या यह दो नाम बाजारके है
विपणि पण्यवीथिका यह दो नाम दुका-
नके है ॥ १ ॥ २ ॥

रथ्या प्रतोली विशिस्ता स्पाद्यपो
वप्रमस्त्रियाम् ॥ प्राकारो वरणः साठ
प्राचीनं प्रान्ततो वृत्तिः ॥ ३ ॥
भित्तिः स्त्री कुडचमेडुकं यदन्तर्न्य-
स्तकीकसम् ॥ गृहं गेहोदवमितं वेश्म
सन्न निवेतनम् ॥ ४ ॥ निशान्तपस्त्य-
सदनं भवनभागारमन्दिरम् ॥ गृहाः पुमि
च भूख्येव निकाय्यनित्यालया ॥ ५ ॥

रथ्या प्रतोली विशिस्ता यह तीन नाम
ग्रामके बीचके मार्गके है इसका गलीभी
कहते है चय वप्र यह दो नाम बाईस उ-

ठाई हुई मिट्टीके ढेरके है इसको मँदाभी
कहते हैं प्राकार वरण साठ यह तीन नाम
लकड़ी काटे आदिकोंसे बनायेहुए घेरेके हैं
इसको वारीभी कहते है और नगरादिकोंके
आसपास बाग काँटे आदिकोंका घेरा है
वह प्राचीन सन्निक है ॥ ३ ॥ भित्ति कुडच
यह दो नाम भित्तिके है तिसमें भित्तिशब्द
स्त्रीलिंग है यदि जिस भित्तिकेविषे बीचमें
दृढताकेवास्ते हाडआदिक मजबूज द्रव्य पडा
हो तो वह एडुक सन्निक है गृह गेह उदव-
सित वेश्म सन्न निवेतन ॥ ४ ॥ निशा-
न्त पस्त्य सदन भवन आगार मन्दिर गृह
निकाय्य नित्य आलय यह सोलह नाम
घरके है तिसमें तेरहवाँ गृह शब्द बहुवचन
तथा पुल्लिंगमें होता है ॥ ५ ॥

वासः कुटी द्वयोः शाला संभा संज-
वनं त्विदम् ॥ चतुःशालं मुनीनां तु
पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ॥ ६ ॥ चैत्य-
मायतन तुल्ये वाजिशाला तु मन्दुरा ॥
आवेशनं शिल्पिशाला प्रपा पानी-
यशालिका ॥ ७ ॥

वास कुटी शाला संभा यह चार नाम
संभा घरके है तिसमें कुटीशब्द स्त्रीपुल्लिंगमें
होता है सनवन चतुःशाल यह दो नाम
आपणमें समुत्त हुई चार शालाओंके नाम
है इसको चौकभी कहते है पर्णशाला उटज
यह दो नाम मुनियोंके घरके है निगम
उटजगार स्त्रीलिंगवाचन पुनपुनकल्लिंगमें

होता है ॥ ६ ॥ चैत्य आयतन यह दो नाम यज्ञस्थानके हैं आपसमें तुल्य लिंग हैं वाजिशाला मंदुरा यह दो नाम घुडशालके हैं आवेशन शिल्पिशाला यह दो नाम सुनार-आदिक शिल्पिजनोंके घरके हैं। प्रपा पानी-यशालिका यह दो नाम जलस्थान अर्थात् प्याऊके हैं ॥ ७ ॥

मठशुभ्रादिनिलयो गङ्गा तु मदिरा-
गृहम् ॥ गर्भागारं वासगृहमरिष्टं
सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥ वातायनं गवा-
क्षोऽथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ॥ हर्म्या-
दि धनिनां वासः प्रासादो देवभू-
भुजाम् ॥ ९ ॥

और शिष्य सन्यासी आदिकोंका घर मठ संज्ञिक है। गंगा मदिरागृह यह दो नाम मदिराघरके हैं जहाँकि शराब रहती है गर्भागार वासगृह यह दो नाम घरके मध्य-भागके हैं इसको माजघरभी कहते हैं अरिष्ट सूतिकागृह यह दो नाम सूतिकाके घरके हैं इसको सौरिघरभी कहते हैं ॥ ८ ॥ वातायन गवाक्ष यह दो नाम झरोखोंके हैं। मण्डप जनाश्रय यह दो नाम मण्डपके हैं तिसमें

१ कुडिमोऽस्त्री निवद्धा भूश्चन्द्रशाला शि-
रोगृहम् ॥ १ ॥

पत्थर आदिकोंसे बँधी हुई पृथिवी कुडिम संज्ञिक है इसीको फरसवन्दीभी कहते हैं कु-
डिमशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगमे होता है चन्द्रशाला शिरोगृह यह दो नाम घरके ऊपर बनये हुए घरके हैं इसको उपरमाढीभी कहते हैं ।

मण्डपशब्द पुनपुंसकलिंगवार्ची है धनवानों-
का घर हर्म्य आदिक संज्ञिक है। आदि-
शब्दसे स्वस्तिक अट्टालिकादिक जाननें।
और देवता तथा राजाओंका घर प्रासाद
संज्ञिक है ॥ ९ ॥

सौधोऽस्त्री राजसदनमुपकार्योपका-
रिका ॥ स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्धा-
वर्तादयोऽपि च ॥ १० ॥ विच्छन्दकः
प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसद्मनाम् ॥
स्यगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरो-
धनम् ॥ ११ ॥ शुद्धान्तश्चावरोधश्च
स्यादट्टः क्षौममस्त्रियाम् ॥ प्रघाणप्र-
वणालिन्दा वहिर्द्वारप्रकोष्ठके ॥ १२ ॥

सौध राजसदन उपकार्य उपकारिका यह
चार नाम राजमन्दिरके हैं इनको महलभी
कहते हैं और राजाओंके घरोंके भेद स्व-
स्तिक तथा सर्वतोभद्र तथा नन्धावर्त्त आ-
दिक तथा विच्छन्दक हैं। राजाओंकी स्त्रि-
योंका घर अन्तःपुर अवरोधन शुद्धान्त
अवरोध संज्ञिक है। अट्ट क्षौम यह दो नाम
अटारीके हैं तिसमें क्षौमशब्द पुनपुंसकलिं-
गमें होता है। प्रघाण प्रवण अलिन्द यह तीन
नाम जो कि बाहिर दरवाजेसे प्रकोष्ठक होता
है उसमें वृत्त हैं इसको ओटाभी कहते हैं और
कोई चौखट कहते हैं ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

गृहावग्रहणी देहल्यङ्गणं चत्वरजिरे ॥
अधस्ताद्धारुणि शिला नासा दास्त-
परि स्थितम् ॥ १३ ॥ प्रच्छुब्जमन्त-

द्वारं स्यात्पक्षद्वारं तु पक्षकम् ॥ बली
कनीध्रे पटलमान्तेऽथ पटलं छदिः ॥ १४ ॥

गृहावग्रहणी देहली यह दो नाम देह-
लीके है अगण चत्वर अजिर यह तीन नाम
आँगनके हैं शिला यह एक नाम दरवाजेके
स्तम्भके नीचें स्थित हुए काष्ठका है नासा
यह एक नाम दरवाजेके स्तम्भके ऊपर
स्थित हुए काष्ठका है इसको मस्तकपट्टी
सरदलभी कहते हैं ॥ १३ ॥ पञ्चदश अन्त-
द्वार यह दो नाम विडकीके है पक्षद्वार
पक्षक यह दो नाम दरवाजेके पासके दर-
वाजेके हैं बलीक नीध्र यह दो नाम छप्पर-
के अतमें वर्त्ते है इसको औलाती तथा
छज्जाभी कहते हैं पटल छदि यह दो नाम
छप्परके है ॥ १४ ॥

गोपानसी तु बलभीछादने वक्रदारु-
णि ॥ कपोतपालिकायां तु विटकं
पुनपुंसकम् ॥ १५ ॥ स्त्री द्वाद्वारं
मतीहारः स्याद्विद्विस्तु वेदिका ॥
तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं पुरद्वारं तु
गोपुरम् ॥ १६ ॥

गोपानसी बलभी यह दो नाम छप्पर-
केविषे जोकि तिरछी लकड़ी होवे है उसमें
वर्त्ते हैं इनको कडी वासाभी कहते हैं विटक
शब्द कपोतपालिकामें वर्त्ते है भाव यह है
कि कपोतपालिका विटक यह दो नाम
काष्ठआदिकोंके बनाये हुए पक्षियोंके घरके
हैं तिसमें विटकशब्द पुनपुंसकलिंगमें होता

है ॥ १५ ॥ द्वार द्वार मतीहार यह तीन
नाम दरवाजेके है तिसमें द्वारशब्द स्त्रीलिंगमें
होता है विवर्दि वेदिका यह दो नाम वेदीके
है तोरण बहिर्द्वार यह दो नाम दरवाजेके
बहिरभागके हैं तिसमें तोरणशब्द पुनपुंसक-
लिंगवाची है इसको घरका फाटकभी कहते
हैं पुरद्वार गोपुर यह दो नाम नगरके दर-
वाजेके है ॥ १६ ॥

कूटं पुद्गारि यद्धस्तिनस्तस्मिन्नथ
त्रिषु ॥ कपाटमररं तुल्ये तद्विष्क-
म्भोऽर्गलं न ना ॥ १७ ॥ आरो-
हण स्यात्सोपानं निश्रेणिस्त्वविरो-
हिणी ॥ समार्जनी शोधनी स्यात्सं-
करोऽवकरस्तथा ॥ १८ ॥

पुरके दरवाजेकेविषे सुखपूर्वक उतरनेके-
वास्ते कमसे नीचा जोकि मिट्टीका ढेर किया
जावे है उसमें हस्तिनख शब्द वर्त्ते है
कपाट अरर यह दो नाम किवाड़के है वह
दोनोंशब्द आपसमें समान है और तीनों
लिंगमें होवै है और जो कियाडोंके रोक-
नेवाला मूसल है वह अर्गल सन्निक है
अर्गलशब्द पुलिग नहीं है किन्तु स्त्रीपुंस-
कलिंग है ॥ १७ ॥ आरोहण सोपान यह
दो नाम सीढियोंके है निश्रेणि अविरौहिणी
काष्ठकी बनाईहुई सोडीके है इसको निसैनी
कहते हैं समार्जनी शोधनी यह दो नाम
बुहारीके है सकर अवकर यह दो नाम
बुहारीके फेंकेहुए तृणादिकमें वर्त्ते है इसको
कूडा ककट कहते हैं ॥ १८ ॥

क्षिते मुखं निःसरणं संनिवेशो निक-
र्षणः ॥ समौ संवसथग्रामौ वेश्मभू-
र्वास्तुरस्त्रियाम् ॥ १९ ॥ ग्रामान्त-
मुपशल्यं स्यात्सीमसीमे स्त्रियामुभे ॥
घोष आभीरपल्ली स्यात्पक्कणः शव-
रालयः ॥ २० ॥

॥ इति पुरवर्गः ॥ १ ॥

मुख निस्सरण यह दो नाम गृहादिकका
मुखभूत द्वारप्रदेशका है. इसको निकासकी
जगह कहते हैं. सन्निवेश निकर्षण यह दो
नाम अच्छीतरह बनेहुए वासस्थानके हैं
संवसथ यह दो नाम ग्रामके हैं. वेश्मभू वास्तु
यह दो नाम घरोंकी रचनासेयुक्त हुई पृथिवी-
के हैं. तिसमें वास्तुशब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता
है ॥ १९ ॥ ग्रामके समीपमें उपशल्य शब्द वचै
है इसको पड़ोशभी कहते हैं सीमन् सीमा
यह दो नाम सीमा ग्रामादिककी मर्यादाके हैं
यह दोनों शब्द स्त्रीलिंगमें होते हैं घोष
आभीरपल्ली यह दो नाम ग्वालोंके ग्रामके
हैं पक्कण शवरालय यह दो नाम भीलोंके
ग्रामके हैं ॥ २० ॥

इति पुरवर्गः ।

महीध्रे शिखरि क्षमाभृदहार्यधरपर्व-
ताः ॥ अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैल-
शिलोच्चयाः ॥ १ ॥ लोकालोकश्च-
क्रवालस्त्रिकूटस्त्रिककुत्समौ ॥ अस्तस्तु
चरमः क्षमाभृदुदयः पूर्वपर्वतः ॥ २ ॥

महीध्र शिखरिन् क्षमाभृत् अहार्य धर
पर्वत अद्रि गोत्र गिरि ग्रावन् अचल शैल

शिलोच्चय यह तेरह नाम पर्वत अर्थात् पहाड़के
हैं ॥ १ ॥ लोकालोक चक्रवाल यह दो
नाम सात द्वीपवाली पृथिवीके परकोटरूप
पर्वतके हैं. त्रिकूट त्रिकुट यह दो नाम
त्रिकुटपर्वतके हैं आपसमें समानलिंग हैं
अस्त चरमक्षमाभृत् यह दो नाम अस्ताचलके
हैं. उदय पूर्वपर्वत यह दो नाम उदयाचल
पर्वतके हैं ॥ २ ॥

हिमवान्निषधो विन्ध्यो माल्यवान्पा-
रियात्रकः ॥ गन्धमादनमन्ये च
हेमकूटादयो नगाः ॥ ३ ॥ पाषाण-
प्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शिला दृषत् ॥
कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं प्रपातस्त्वत-
दो भृगुः ॥ ४ ॥

हिमवत् निषध विन्ध्य माल्यवत् पारि-
यात्रिक गंधमादन यह सात तथा अन्य
हेमकूट आदिक विशेष पर्वत हैं ॥ ३ ॥
पाषाण प्रस्तर ग्रावन् उपल अश्मन् शिला
दृशद् यह सात नाम पत्थरके हैं तिसमें
शिला और दृषद् स्त्रीलिंग हैं और शेष
पुलिंग हैं. कूट शिखर शृंग यह तीन नाम
पर्वतकी चोटीके हैं यह तीनों पुंनपुंसकलिंग
वाची हैं प्रपात अतट भृगु यह तीन नाम
पर्वतसे गिरनेके स्थानके हैं ॥ ४ ॥

कटकोऽस्त्री नितम्बोऽद्रेः स्तुः प्रस्थः
सानुरस्त्रियाम् ॥ उत्सः प्रस्त्रवर्णं वा-
रिप्रवाहो निर्झरो झरः ॥ ५ ॥ दरी
तु कंदरो वा स्त्री देवस्नातविले गुहा ॥

गह्वरं गण्डशैलास्तु च्युताः स्थूलो-
पला गिरेः^१ ॥ ६ ॥

और पर्वतका जो नितम्ब मध्यभाग है वह कटक सन्निक है कटकशब्द पुनपुसक लिगवाची है स्तु प्रस्थ सानु यह तीन नाम जो कि समभूभागपर्वतका एकदेश है उसमें वर्त्तै है तीनों पुनपुसकलिगमें होवै है उत्त प्रस्रवण यह दो नाम जहाँकि गिरकर पानी बहुतसा होजाता है उस स्थानके है वारि-प्रवाह निर्झर झर यह तीन नाम पर्वतके जलके झिरनेके है कोई एक आचार्य उत्त प्रस्रवण शब्दकोभी इन्हीशब्दोंमें सामिल करते है ॥ ५ ॥ दरी कन्दर यह दो नाम पर्वतके घरकीसमान बनायेहुए छिद्रके है इसको कन्दरा कहते है और कन्दरशब्द विकल्पकर स्त्रीलिगभी है और देवताओंकर खोदे हुए छिद्रमें गुहा गह्वर शब्द वर्त्तै है पर्वतके सकाशसे गिरेहुए जो स्थूल पत्थर है वह गण्डशैल सन्निक हैं ॥ ६ ॥

खनिः स्त्रियामाकर स्यात्पादा प्र-
त्यन्तपर्वताः ॥ उपत्यकाद्रेरासन्ना
भूमिरूर्ध्वमधित्यका ॥ ७ ॥ धातु-
र्मेन शिलाघट्टैर्गैरिकं तु विशेषतः ॥

१ दन्तकाम्नु उन्निस्तिर्यङ्प्रदेशाब्धिर्गता गिरे ॥

२ पर्वतके निरुपेक्षदेशों यात्रि निकलेहुए प्रत्यग दन्तका सन्निक है यह अर्धश्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है ।

निकुञ्जकुञ्जौ वा कृबि लतादिपिहि-
तोदरे ॥ ८ ॥

॥ इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

खनि आकर यह दो नाम खानके हैं तिसमें खनिशब्द स्त्रीलिगमें होता है इसको रत्नादिकोंकी उत्पत्तिस्थान कहते है पाद प्रत्यन्तपर्वत यह दो नाम पर्वतके समीपमें स्थितहुए छोटे पर्वतोंके है पर्वतके नीचे जो भूमि स्थित है वह उपत्यका सन्निक है और पर्वतके ऊपर जो भूमि स्थित है वह अधित्यका सन्निक है ॥ ७ ॥ और पर्वतका जो मन.शिला,हरताल,स्रवर्ण,ताँबा,चादी,गेरू, अंजन, कासी, सीसा, लोहा, हिग, गन्धक, अभ्रक आदिक वस्तु है वह धातु सन्निक है और गेरू विशेषकर धातु सन्निक है निकुज कुज यह दो नाम लताआदिकसे ढकेहुए मध्यस्थानके है इसको कुजभी कहते है निकुज कुज शब्द विकल्पकरके नपुसकलि-गमें होवे है ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः ।

अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वन-
म् ॥ महारण्यमरण्यानी गृहारामा-
स्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥ आरामः स्या-
द्रूपवनं लज्जिम वनमेव यत् ॥ अमा-
त्यगणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका ॥ २ ॥

अटवी अरण्य विपिन गहन कानन वन यह छै नाम वनके है महारण्य अरण्यानी यह दो नाम बड़ेभारी वनके है गृहाराम

निष्कट यह दो नाम घरके समीप लगाये हुए बागोंके हैं ॥ १ ॥ और जो कि बना-या हुआ वन है वह आराम उपवनसंज्ञिक है. राजमंत्री और वेश्याओंके जो कि घरमें बाग है उसमें वृक्षवाटिका शब्द वर्तते हैं ॥ २ ॥

पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम् ॥ स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुरोचितम् ॥ ३ ॥ वीथ्यालिरावलिः पङ्क्तिः श्रेणी लेखास्तु राजयः ॥ वन्या वनसमूहे स्यादङ्कुरोऽभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥

और जो कि राजाका साधारण वन है वह आक्रीड उद्यान संज्ञिक है तिसमें आक्रीडशब्द पुल्लिङ्ग है और यहही उद्यान रानियोंकी क्रीडामें जो उचित हो तौ प्रमद-वन संज्ञिक है ॥ ३ ॥ वीथी आलि आवलि पंक्ति श्रेणी यह पांच नाम पंक्तिके हैं लेखा राजि यह दो नाम रेखाओंके हैं वनोंके समूहमें वन्या शब्द वर्तते हैं. नवीन उगे हुए वृक्षादिकमें अंकुर शब्द वर्तते हैं ॥ ४ ॥

वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादप-स्तरुः ॥ अनोकहः कुटः शालः पलाशी द्रुमागमाः ॥ ५ ॥ वानस्पत्यः फलैः पुष्पात्तरपुष्पादनस्पतिः ॥ ओषध्यः फलपाकान्ताः स्युरवन्ध्यः फलेग्रहिः ६

वृक्ष महीरुह शाखिन् विटपिन् पादप तरु अनोकह कुट शाल पलाशिन् द्रु द्रुम अगम यह तेरह नाम वृक्षके हैं ॥ ५ ॥ फूलसें

उत्पन्न हुए फलोंकर उपलक्षित जो वृक्ष है वह वानस्पत्य संज्ञिक है और विनाफलसें उत्पन्न हुए फलोंकर उपलक्षित जो वृक्ष है वह वनस्पति संज्ञिक है. और फलका पा-कही है अन्त जिनका ऐसे वृक्ष औषधि संज्ञिक हैं अवध्य फलेग्रहि यह दो नाम कालके अनुकूल फलके धारण करनेवाले वृक्षोंके हैं ॥ ६ ॥

वन्ध्योफलोऽवकेशी च फलवान्फ-लिनः फली ॥ प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लव्या-कोशविकचस्फुटाः ॥ ७ ॥ फुल्लश्चैते विकसिते स्युरवन्ध्यादयस्त्रिषु ॥ स्थाणु र्वा ना ध्रुवः शङ्कुर्हस्वशाखा-शिफः क्षुपः ॥ ८ ॥

वन्ध्य अफल अवकेशिन् यह तीन नाम ऋतुकेविषै फलवर्जित वृक्षके हैं फलवत् फलिन फलिन् यह तीन नाम सफलवृक्षके हैं. प्रफुल्ल उत्फुल्ल संफुल्ल व्याकोश विकच स्फुट ॥ ७ ॥ फुल्ल यह विकसित अर्थात् फूले हुए वृक्षमें वर्तते हैं अवन्ध्यादिक विक-सितपर्यन्त शब्द तीनों लिंगमें होते हैं स्थाणु ध्रुव शंकु यह तीन नाम जिस वृक्षका कि शाखा पल्लवादिक समूह कटगया हो उसके हैं तिसमें स्थाणुशब्द पुल्लिङ्ग विकल्पकरके होता है और छोटी है शाखा और जड़ जिसकी ऐसा वृक्ष क्षुप संज्ञिक है ॥ ८ ॥

अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मौ वल्ली तु व्रत-तिर्लता ॥ लता प्रतानिनी वीरुद्रु-

लिन्नुल्लय इत्यपि ॥ ९ ॥ नगाद्या-
रोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः॥
अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः स्यान्मूला-
च्छास्त्रावधिस्तरो ॥ १० ॥

नही विद्यमान है प्रकाण्ड अर्थात् जडसे लेकर शाखापर्यन्त भाग जिसमें ऐसे वृक्षों में स्तम्भ गुल्म शब्द वर्तते हैं वही प्रतीति लता यह तीन नाम बेलिके हैं और जो शाखा-दिकोंकर फैली हुई लता है वह वीरुध् गुल्मिनी उपल सज्जिक है ॥ ९ ॥ वृक्षादि-कोंकी उंचाईमें उच्छ्राय उत्सेध उच्छ्रय यह तीन नाम वर्तते हैं और जो कि वृक्षकी जडसे लेकर शाखातक अवधि है वह प्रकाण्ड स्कन्ध सज्जिक है जिसमें प्रकाण्डशब्द स्त्री-लिंगवर्जित पुनपुसकलिंगवाची है ॥ १० ॥

समे शाखातले स्कन्धशाखाशाखे शि-
फाजटे ॥ शाखाशिफावरोहः स्या-
न्मूलाद्याय गता लता ॥ ११ ॥
शिरोऽग्रं शिखरं वा ना मूलं वृक्षो-
ऽग्निनामकः ॥ सारो मज्जा नरि त्वक्
स्त्री वल्कं वल्कलमस्त्रियाम् ॥ १२ ॥

शाखा लता यह दो नाम शाखाके हैं आपसमें समानलिंग है स्कन्ध शाखा शाखा यह दो नाम स्कन्धसे प्रथम उत्पन्न हुई शाखाके हैं शिफा जटा यह दो नाम वृक्षकी जडके हैं शाखाकी जड अवरोह सज्जिक है और वृक्षकी जडसे लेकर अग्रपर्यन्त गई-हुई शाखाभी अवरोह सज्जिक है ॥ ११ ॥

और वृक्षके शिखर जो अग्रभाग है वह शिखर सज्जिक है शिखरशब्द विकल्पकरके पुलिंग है मूल वृक्ष अधिनामक यह तीन नाम वृक्षादिकोंकी जडमात्रके हैं सार मज्जा यह दो नाम वृक्षके तत्वके हैं यह दोनों शब्द पुलिंगमें होते हैं मज्जाशब्द स्त्रीलिंगभी है त्वक् वल्क वल्कल यह तीन नाम वल्कल (छाल)के हैं जिसमें त्वक् शब्द स्त्रीलिंग है और शेष दोनों पुनपुसकलिंगमें होते हैं ॥ १२ ॥

काष्ठं दार्विन्धनं त्वेध इधममेधः स-
मिस्त्रियाम् ॥ निष्कुहः कोटरं वा
ना वल्लरिर्मजरि स्त्रियौ ॥ १३ ॥
पत्रं पलाशं उदनं दलं पर्णं छदः पु-
मान् ॥ पल्लवोऽस्त्री किसलय विस्तारो
विटपोऽस्त्रियाम् ॥ १४ ॥

काष्ठ दारु यह दो नाम काष्ठमात्रके हैं इन्धन एध इध्म एधस् समिधू यह पाच नाम सूखे वृणकाष्ठादिकके हैं जिसमें आ-दिके तीन अग्निके जलानेवाले वृण काष्ठा-दिकके नाम हैं इसको ईंधनभी कहते हैं और अन्तके दो यज्ञादिकमें होमीहुई समि-धादिकके हैं इसमें समिधू शब्द स्त्रीलिंगमें होता है निष्कुह कोटर यह दो नाम वृक्षके छिद्रके हैं इसको खखोडर कहते हैं जिसमें कोटरशब्द विकल्पकरके पुलिंग है वल्लरि मजरि यह दो नाम मजरीके हैं और स्त्री-लिंगवाची है ॥ १३ ॥ पत्र पलाश उदन दल पर्ण छद यह छै नाम पत्रके हैं जिसमें छदशब्द पुलिंग है पल्लव किसलय यह दो

पारिभद्र निम्बतरु मंदार पारिजातक यह चार नाम निम्बवृक्षके हैं इसकों कडूनिम्ब कहते हैं. तिनिश स्यन्दन नेमी रथद्रु अति-मुक्तक ॥ २६ ॥ वंजुल चित्ररुत यह सात नाम तिनिश वृक्षके हैं इसकों तिवसभी कहते हैं. पीतन कपीतन आम्रातक यह तीन नाम आम्रातकके हैं इसकों अंवाडाभी कहते हैं. मधूक गुडपुष्प मधुद्रुम ॥ २७ ॥ वान-प्रस्थ मधुष्ठील यह पांच नाम महुआके हैं और जो कि महुआ जलसे उत्पन्न हो तौ उसमें मधूलक शब्द वर्त्ते है. पीलु गुडफल स्रंसिन् यह तीन नाम पीलुवृक्षके हैं इसकों पिलुआ कहते हैं और जो कि पीलुपर्वतपर उत्पन्न हो तौ उसमें ॥ २८ ॥ अक्षोट कंद-राल यह दो नाम वर्त्ते हैं अर्थात् यह दो नाम पर्वतपीलुके हैं अंकोट निकोचक यह दो नाम चिलगोजाके हैं इसकों किसीदेशमें पिस्ते कहते हैं. पलाश किंशुक पर्ण वातपोथ यह चार नाम ढाकवृक्षके हैं. वेतस ॥ २९ ॥ रथ आभ्रपुष्प विदुल शीत वानीर वंजुल यह सात नाम वेतके हैं परिव्याध विदुल नादेयी अम्बुवेतस यह चार नाम जलवेतके हैं तिसमें नादेयीशब्द स्त्रीलिंग है ॥ ३० ॥

सोभाञ्जन शिशु तीक्ष्णगन्धकाक्षीव-मोचकाः ॥ रक्तोऽसौ मधुशिशुः स्या-दरिष्टः फेनिलः समौ ॥ ३१ ॥ वि-ल्वे शाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफला-वपि ॥ पुक्षो जटी पर्कटी स्यान्व्य-ग्रोधो बहुपादः ॥ ३२ ॥

सोभाञ्जन शिशु तीक्ष्णगन्धक अक्षीव मोचक यह पांच नाम सहजनेके हैं इसकों किसीदेशमें शंगूल (शेवगा-शेगट) भी कहते हैं. और यह सहजना यदि लाल होवै तौ मधुशिशु संज्ञिक है. अरिष्ट फेनिल यह दो नाम रीठेके हैं और आपसमें समान लिंग हैं ॥ ३१ ॥ विल्व शाण्डिल्य शैलूष मालूर श्रीफल यह पांच नाम बेलके हैं. पुक्ष जटी पर्कटी यह तीन नाम पाखरके हैं. न्य-ग्रोध बहुपाद् वट यह तीन नाम वटके हैं इसकों वडका वृक्ष कहते हैं ॥ ३२ ॥

गालवः शावरो लोध्रस्तिरीटस्तिल्व-मार्जनौ ॥ आम्रश्रूतो रसालोऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ॥ ३३ ॥ कु-म्भोलूखलकं क्लीवे कौशिको गुग्गुलुः पुरः ॥ शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्वा-लो बहुवारकः ॥ ३४ ॥

गालव शावर लोध्र तिरीट तिल्व मार्जन यह छै नाम लोध्रके हैं. कोईएक आचार्य यहाँ ऐसा कहते हैं कि आदिके दो नाम श्वेतलोध्रके हैं शेष नाम लाललोध्रके हैं. आम्र चूत रसाल यह तीन नाम आम्रके हैं. यदि यह आम्र अतिसुगन्धित हो तौ सहकार संज्ञिक है ॥ ३३ ॥ कुम्भ उलूखलक कौशिक गुग्गुलु पुर यह पांच नाम गुग्गुलुके हैं तिसमें कुम्भ और उलूखलशब्द नपुंस-कलिंगमें होवै हैं. शेलु श्लेष्मातक शीत उद्वाल बहुवारक यह पांचनाम लभेरेके हैं इसकों किसी देशमें (शेलट-भोंकरी) कहते हैं ॥ ३४ ॥

राजादनं मियालः स्यात्सन्धकटुर्धनुः
पटः ॥ गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी
मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥ श्रीपर्णी भ-
द्रपर्णी च काश्मर्यश्चाप्यथ द्वयोः ॥
कर्कन्धूवदरी कोलिः कोलं कुवलफे-
निले ॥ ३६ ॥ सौवीरं वदर घो-
ण्टाऽप्यथ स्यात्स्वादुकण्टकः ॥ वि-
ककतः सुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्र-
पादपि ॥ ३७ ॥

राजादन मियाल सन्धकटु धनु पट यह
चार नाम चिरोंजीके है इसकों चार कहते
है गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णि-
का ॥ ३५ ॥ श्रीपर्णी भद्रपर्णी काश्मर्य
यह सात नाम खभारीके है इसकों शिवणीभी
कहते है कर्कन्धू वदरी कोलि यह तीन
नाम बेरके है तिसमें कर्क धूशब्द दोनों
स्त्रीपुलिंगमें होता है कोल कुवल फेनिल
॥ ३६ ॥ सौवीर वदर घोंटा यह छे नाम
बेरके फलके है स्वादुकटक पिककत सुवा-
वृक्ष ग्रन्थिल व्याघ्रपाद यह पाच नाम हिस
वृक्षके है इसकों बेहलोभी कहते है ॥ ३७ ॥

पेरावतो नागरहो नादेयी भूमिज-
म्बुका ॥ तिन्दुक्कः स्फूर्जकः काल-
स्कन्धश्च शितिसारके ॥ ३८ ॥ का-
केन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काक-
पीलुके ॥ गोलीढो झाटलो घण्टापा-
टलिमोंसमुष्ककौ ॥ ३९ ॥

पेरावत नागरग नादेयी भूमिजबुका यह

चार नाम नारगीके है तिन्दुक स्फूर्जक
कालस्कन्ध शितिसारक यह चार नाम तेंदु-
आके है इसकों तेंदू (टेंभुरणी) कहते है
॥ ३८ ॥ काकेन्दु कुलक काकतिन्दुक का-
कपीलुक यह चार नाम कडुए तेंदुएके है
इसकों कुचला तथा काजराभी कहते है,
गोलीढ झाटल घटापाटलि मोक्ष मुष्कक यह
पाच नाम काली पाठरिके है इसकों मोखा-
भी कहते है कोई आचार्य घटा पाटलि यह
दो नाम गिनते है ॥ ३९ ॥

तिलकः क्षुरकः श्रीमान्समौ पिचल-
झावुकौ ॥ श्रीपर्णिका कुमुदिका
कुम्भी कैटर्यकदफलौ ॥ ४० ॥ क-
मुकः पट्टिकारव्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्र-
सादनः ॥ नूदस्तु पूषः क्रमुको ब्रह्म-
ण्यो ब्रह्मदारु च ॥ ४१ ॥ तूल
च नीपप्रियककदम्बास्तु हरिप्रियः ॥
वीरवृक्षोऽरुणकरोऽग्निमुखी भल्लातकी
त्रिपु ॥ ४२ ॥

तिलक क्षुरक श्रीमत् यह तीन नाम
तिलक वृक्षके ह पिचल झावुक यह दो नाम
झाऊके है आपसमें समान है श्रीपर्णिका
कुमुदिका कुम्भी कैटर्य कदफल यह पाच
नाम काँयफलके है इसकों कुमलभी कहते
है ॥ ४० ॥ क्रमुक पट्टिका पट्टिन् लाक्षाप्र-
सादन यह चार नाम लाल्लोवके हे इनमें
पट्टिन्शब्द ईकारात्तवाची स्त्रीलिंगभी हाता
है नूद पूष क्रमुक ब्रह्मण्य ब्रह्मदारु ॥ ४१ ॥

तूल यह छै नाम तूल वृक्षके हैं इसकों पारसापिपलभी कहते हैं. नीप प्रियक कदंब हरिप्रिय यह चार नाम कदम्बके हैं. वीरवृक्ष अरुष्कर अग्निमुखी भल्लातकी यह चार नाम भिजावाके हैं. तिसमें अग्निमुखी भल्लातकी शब्द तीनों लिंगमें होते हैं ॥ ४२ ॥

गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसुपार्श्व-
काः ॥ प्लक्षश्च तित्तिडी चित्राऽ-
म्लिकाऽथो पीतसारके ॥ ४३ ॥ सर्ज-
कामनबन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः ॥
साले तु सर्जकार्श्याश्वकर्णकाः सस्य-
संवरः ॥ ४४ ॥

गर्दभांड कन्दराल कपीतन सुपार्श्वक प्लक्ष यह पांच नाम बड़ी हरके हैं इसकों लाखीपिपरीभी कहते हैं. तित्तिडी चित्रा अम्लिका यह तीन नाम अमिलीके हैं. पीतसारक ॥ ४३ ॥ सर्जक असन बंधूकपुष्प प्रियक जीवक यह छै नाम विजयसारके हैं इसकों असणाभी कहते हैं. साल सर्ज कार्श्य अश्वकर्णक सस्यसंवर यह पांच नाम शालवृक्षके हैं इसकों सालईभी कहते हैं ॥ ४४ ॥

नदीसर्जो वीरतरुनिन्द्रद्रुः ककुभोऽ-
र्जुनः ॥ राजादनः फलाध्यक्षः क्षी-
रिकायामथ द्वयो. ॥ ४५ ॥ इङ्गुदी
तापसतरुर्भूर्जं चर्मिमृदुत्वचौ ॥ पि-
च्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शा-
ल्मलिर्द्वयोः ॥ ४६ ॥

नदीमर्ज वीरतरु इन्द्रद्रु ककुभ अर्जुन

यह पांच नाम अर्जुनवृक्षके हैं. राजादन फलाध्यक्ष क्षीरिका यह तीन नाम खिरनीके हैं ॥ ४५ ॥ इङ्गुदी तापसतरु यह दो नाम गोंदीके हैं तिसमें इङ्गुदीशब्द दोनो स्त्रीपुं-लिंगमें होता है. भूर्ज चर्मिन् मृदुत्वच् यह तीन नाम भोजवृक्षके हैं पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायु शाल्मलि यह पांच नाम सेमरके हैं इसकों सांवरीभी कहते हैं. तिसमें शाल्मलिशब्द दोनो स्त्रीपुंलिंगमें होता है ४६

पिच्छा तु शाल्मलीवेष्टे रोचनः कूट-
शाल्मलिः ॥ चिरविल्वो नक्तमालः
करजश्च करञ्जके ॥ ४७ ॥ प्रकीर्यः
पूतिकरजः पूतिकः कलिमारकः ॥
करञ्जभेदाः षड्ग्रन्थो मर्कट्यङ्गा-
रवल्लरी ॥ ४८ ॥

और सेमरके गोंदमें पिच्छा शब्द वर्त्ते है. रोचन कूटशाल्मलि यह दो नाम काले सेमरके हैं. चिरविल्व नक्तमाल-करज करंजक यह चार नाम कंजाके हैं ॥ ४७ ॥ प्रकीर्य पूतिकरज पूतिक कलिमारक यह चार नाम कांटेदार कंजाके हैं षड्ग्रन्थ मर्कटी वल्लरी यह तीन कंजाके भेद हैं ॥ ४८ ॥

रोही रोहितकः ग्रीहशत्रुर्दाडिमपुष्प-
कः ॥ गायत्री वालतनयः खदिरो
दन्तधावनः ॥ ४९ ॥ अरिमेदो वि-
दुखदिरे कदरः खदिरे सिते ॥ सो-
मवल्कोप्यथ व्याघ्रपुच्छगन्धर्बहस्त-
कौ ॥ ५० ॥ एरण्ड उरुवूकश्च

रुचकश्चित्रकश्च सः ॥ चञ्चुः पञ्चाङ्-
गुलो मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः ॥ ५१ ॥

रोहिन् रोहितक ह्रीहशत्रु दाडिम पुष्पक
यह चार नाम लाल कजाके है इसकों
रकरोहिडाभी कहते है गायत्री बालतनय
खदिर दन्तधावन यह चार नाम कथावृ-
क्षके हैं ॥ ४९ ॥ अरिमेद विट्खदिर यह
दो नाम दुर्गंध कथाके है श्वेतसारवाले
कथाके वृक्षमें कदर सोमवल्क यह दो नाम
वर्त्ते है व्याघ्रपुच्छ गन्धर्वहस्तक ॥ ५० ॥
एरण्ड उरुबूक रुचक चित्रक चचु पचागुल
मह वर्धमान व्यडम्बक यह ग्यारह नाम
एरण्डवृक्षके है ॥ ५१ ॥

अल्पा शमी शमीरः स्याच्छमी स-
क्तफला शिवा ॥ पिण्डीतको मरुव-
कः श्वसनः करहाटकः ॥ ५२ ॥
शल्यश्च मदन शक्रपादपः पारिभद्र-
कः ॥ भद्रदारु द्रुकिलिमं पीतदारु
च दारु च ॥ ५३ ॥ पूतिकाष्ठ च
सप्त स्पुंद्रवदारुण्यथ द्वयोः ॥ पाटलिः
पाटलाऽमोघा काचस्थाली फलेरुहा
॥ ५४ ॥ रुष्णवृन्ता कुबेराक्षी
श्यामा तु महिलाह्वया ॥ तता गो-
पन्दिनी गुन्द्रा प्रियगु फलिनी फली
॥ ५५ ॥ निप्यक्मेना गन्धफली
भारम्भा प्रियक्श्च सा ॥ मण्डूवप-
णपञ्चोर्णमटकट्टुट्टुट्टवाः ॥ ५६ ॥
स्योनाक शुक्लनामक्षोर्णपुनः पुटन-

टाः ॥ शोणकश्चारलौ तिप्यफला-
त्वामलकी त्रिपु ॥ ५७ ॥ अमृता
च वयस्था च त्रिलिङ्गस्तु विभीत-
कः ॥ नाक्षस्तुपः कर्पफलो भूतावा-
सः कलिद्रुमः ॥ ५८ ॥

और जो कि छोटी शमी होवे है वह
शमीर सक्षि है शमी सक्तफला शिवा यह
तीन नाम शमीवृक्षके है पिण्डीतक मरुवक
श्वसन करहाटक ॥ ५२ ॥ शल्य मदन यह
छै नाम मैनफलके है इसकों गोलाभी कहते
है शक्रपादप पारिभद्रक भद्रदारु द्रुकिलिम
पीतदारु दारु ॥ ५३ ॥ पूतिकाष्ठ यह
सात नाम देवदारुवृक्षके विषै वर्त्ते है पाटलि
पाटला अमोघा काचस्थली फलेरुहा ॥ ५४ ॥
रुष्णवृन्ता कुबेराक्षी यह सात नाम पाटरिके
है तिसमें पाटलिशब्द दोनों स्त्रीपुलिङ्गमें
होता है श्यामा महिलाह्वया तता गोव-
पन्दिनी गुन्द्रा प्रियगु फलिनी फली ॥ ५५ ॥ निप्य-
क्मेना गन्धफली कारभा प्रियक यह बारह
नाम प्रियगु वृक्षके है इसकों बाघाटीभी
कहते है तिसमें प्रियकशब्द पुलिङ्ग है मण्डू-
कपर्ण पञ्चोर्ण मट कटुग टुटुक ॥ ५६ ॥
स्योनाक शुक्लनाम कक्ष दोषवृत्त फटनट
शोणक अरट्ट यह चारठ नाम अमृ-
वृक्षके है इसकों दण्डिकाभी कहते है और
कोइ टेंडुभी करते है निप्यफला आमरुकी
॥ ५७ ॥ अट्टा वयस्था यह तार नाम
आंवलेके है निहने आमरुक शुक्ल तीनों

लिंगमें होता है. विभीतक अक्ष तुष कर्षफल भूतावास कलिद्रुम यह छै नाम बहेड़ेके हैं तिसमें विभीतकशब्द त्रिलिंग है और अक्षादिक पुंलिंग हैं ॥ ५८ ॥

अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनाऽमृता ॥ हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ५९ ॥ पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं चाथ द्रुमोत्पलः ॥ कर्णिकारः परिव्याधो लकुचो लिक्कुचो डहुः ॥ ६० ॥

अभया अव्यथा पथ्या कायस्था पूतना अमृता हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा यह ग्यारह नाम हरके हैं ॥ ५९ ॥ पीतद्रु सरल पूतिकाष्ठ यह तीन नाम सरलवृक्षके हैं इसकों देवदारभी कहते हैं. द्रुमोत्पल कर्णिकार परिव्याध यह तीन नाम कर्णिकार वृक्षके हैं इसकों पांगाराभी कहते हैं. लकुच लिक्कुच डहु यह तीन नाम बडहलके हैं इसकों ओंट कहते हैं ॥ ६० ॥

पनसः कण्टकिफलो निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः ॥ काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलयूर्जवनेफला ॥ ६१ ॥ अरिष्टः सर्वतोभद्रहिङ्गुनिर्यासमालकाः ॥ पिचुमन्दश्च निम्बेऽथ पिच्छिलाऽगुरुशिशपा ॥ ६२ ॥ कपिला भस्मगर्भा सा शिरीषस्तु कपीतनः ॥ भण्डिलोऽप्यथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः ॥ ६३ ॥

पनस कंटकिफल यह दो नाम कटहलके हैं. निचुल हिज्जल अंबुज यह तीन नाम इजरके हैं यह भी जलवैतका भेद है. काकोदुम्बरिका फल्गु मलयूर्जवनेफला यह चार नाम कटूमरिके हैं इसकों बोखाडा तथा खर्वतभी कहते हैं ॥ ६१ ॥ अरिष्ट सर्वतोभद्र हिङ्गुनिर्यास मालक पिचुमन्द निम्ब यह छै नाम नीबूके वृक्षके हैं. पिच्छिला अगुरु शिशपा ॥ ६२ ॥ कपिला भस्मगर्भा यह चार नाम कालीसीसोंके हैं यहाँपर कोई आचार्य ऐसा कहते हैं कि पिच्छिला अगुरु शिशपा यह तीन नाम सीसोंके हैं और तिसमें अगुरु नपुंसक है. कपिला अर्थात् काले फूलवाले सीसोंके हैं वह भस्मगर्भा संज्ञिक है. शिरीष कपीतन भण्डिल यह तीन नाम शिरसके हैं. चाम्पेय चंपक हेमपुष्पक यह तीन नाम चमेलीके हैं इसकों कुडचांपा तथा सोनाचापाभी कहते हैं ॥ ६३ ॥

एतस्य कलिका गन्धफली स्यादथ केसरे ॥ बकुलो वञ्जुलोऽशोके समौ करकदाडिमौ ॥ ६४ ॥ चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः ॥ जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥

इस चमेलीकी कली गंधफली संज्ञिक है. केसर बकुल यह दो नाम मोरश्रीके हैं. वंजुल अशोक यह दो नाम अशोकवृक्षके हैं. करक दाडिम यह दो नाम अनारके हैं इसकों दालिबभी कहते हैं. आपसमें समान

लिंग है ॥ ६४ ॥ चापेय केसर नागकेसर का-
चनाह्वय यह चार नाम नागकेसरके है इसको
नागचापाभी कहते है जया जयन्ती तर्कारी
नादेयी वैजयंतिका यह पाच नाम खास-
वृक्षके है इसकों टाहाकल तथा थोर ऐर-
णभी किसी२ देशमें बोलते है ॥ ६५ ॥

श्रीपर्णमग्निमन्थः स्पात्कणिका ग-
णिकारिका ॥ जयोऽथ कुटजः शक्रो
वत्सको गिरिमल्लिका ॥ ६६ ॥ एतस्मैव
कलिनेन्द्रयवभद्रयव फले ॥ कृष्णपा-
कफलाविग्रसुपेणाः करमर्दके ॥ ६७ ॥

श्रीपर्ण अग्निमथ कणिका गणिकारिका
जय यह पाच नाम अरणीवृक्षके है इसकों
गखेलभी कहते है कुटज शक्र वत्सक गि-
रिमल्लिका यह चार नाम कुडावृक्षके है
॥ ६६ ॥ और इस कुडावृक्षके फलमें
कलिंग इद्रयव भद्रयव यह तीन नाम बर्ते
हैं कृष्णपाकफल अविग्र सुपेण करमर्दक
यह चार नाम करोंदेके है ॥ ६७ ॥

कालस्कन्धस्तमालः स्पात्तापिच्छो-
ऽप्यथ सिन्दुके ॥ सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ
निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि ॥ ६८ ॥ वेणी
गरा गरी देवताडो जीमूत इत्यपि ॥
श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी तुणशून्यं तु
मल्लिका ॥ ६९ ॥ भूपदी शीतभी-
रुथ सैवास्फोटा वनोद्भवा ॥ शेफा-
लिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका
य सा ॥ ७० ॥

कालस्कन्ध तमाल तापिच्छ यह तीन
नाम तमालवृक्षके है सिन्दुक सिन्दुवार इद्र-
सुरस निर्गुंडी इन्द्राणिका यह पाच नाम
निर्गुण्डीके है इसकों सिमाल कहते है और
सिन्धुआरीभी कहते है ॥ ६८ ॥ वेणी
गरा गरी देवताड जीमूत यह पाच नाम
देवताडवृक्षके है श्रीहस्तिनी भूरुण्डी यह दो
नाम हाथी शुण्डाके हैं इसकों सिरिहस्तिनी
भी कहते है तुणशून्य मल्लिका ॥ ६९ ॥
भूपदी शीतभीरु यह चार नाम मल्लिकाके
है इसकों मोगरीभी कहते है और जो कि
मल्लिका वनमें उत्पन्न होवै है वह आस्फो-
टा सन्निक है इसकों रानमोगरी कहते है
शेफालिका सुवहा निर्गुंडी नीलिका यह चार
नाम काले फूलवाली निर्गुण्डीके है ॥ ७० ॥

सिताऽसौ श्वेतसुरसा भूतवेश्यथ मा-
गधी ॥ गणिका यूथिकाऽम्बुष्ठा सा
पीता हेमपुष्पिका ॥ ७१ ॥ अति-
मुक्तः पुण्ड्रकः स्पादासन्ती माधवी
ल्ता ॥ सुभना मालती जातिः सप्त-
ला नवमालिका ॥ ७२ ॥

और यह निर्गुंडी यदि श्वेतफूलवाली
हो तो श्वेतसुरसा भूतवेशी सन्निक है इस-
का कातरी निगुडभी कहते हैं मागधी
गणिका यूथिका अम्बुष्ठा यह चार नाम
यूथिकाके है इसकों जुई कहते है और वह
ही यूथिका पीछे फूलवाली हो तो हेमपु-
ष्पिका सन्निक है ॥ ७१ ॥ अनिमृक

पुण्ड्रक वासन्ती माधवी लता यह पांच नाम माधवीलताके हैं इसकों कुसरी तथा कस्तुर मोगरा तथा मधुमाधवीभी कहते हैं. सुमना मालती जाति यह तीन नाम जातीके हैं इसकों जाई (चमेली) मोटी श्वेतवर्णजाई पीतवर्ण जाईभी कहते हैं. सप्तला नवमालिका यह दो नाम नवमालिकाके हैं इसकों नेवाली थोरमोगरा बटमोगरा वेलमोगराभी कहते हैं ७२

माध्यं कुन्दं रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः ॥ सहा कुमारी तरणिरम्लानस्तु महासहा ॥ ७३ ॥ तत्र शोणे कुरवकस्तत्र पीते कुरण्टकः ॥ नीली झिण्टी द्वयोर्वाणा दासी चार्तगलश्च सा ॥ ७४ ॥

माध्य कुन्द यह दो नाम कुंदवृक्षके हैं रक्तक बंधूक बंधुजीवक यह तीन नाम दुपहरियाके हैं. सहा कुमारी तरणि यह तीन नाम कुमारीके हैं इसकों घीगुवार तथा सेवतीगुलाबभी कहते हैं. अम्लान महासहा यह दो नाम कांटेदार सेवतीके हैं इसकों आवोलीभी कहते हैं ॥ ७३ ॥ और तिस लाल अम्लानमें कुरवक शब्द वर्त्तै है और तिस पीले अम्लानमें कुरंटक शब्द वर्त्तै है और जो कि नीलवर्ण झिंटी है वह वाणा दासी आर्तगल संज्ञिक है तिसमें वाणा शब्द दोनों स्त्री तथा पुलिंगमें होता है ॥ ७४ ॥

सैरेयकस्तु झिण्टी स्यात्तस्मिन्कुरवकोऽरुणे ॥ पीता कुरण्टको झिण्टी

तस्मिन्सहचरी द्वयोः ॥ ७५ ॥ ओण्डपुष्पं जपापुष्पं वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ॥ प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः ॥ ७६ ॥ करवीरे करीरे तु ककरग्रन्थिलावुभौ ॥ उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तूरः कनकाह्वयः ॥ ७७ ॥ मातुलो ऽदनश्चास्य फले मातुलपुत्रकः ॥ फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलुङ्गके ॥ ७८ ॥

सैरेयक झिंटी यह दो नाम पिया वांसके हैं इसकों कोरांटीभी कहते हैं और तिस लालसैरेयकमें कुरवक शब्द वर्त्तै है. और जो कि पीतवर्ण झिंटी है वह कुरंटक संज्ञिक है और उसी कुरंटकमें सहचरी शब्द वर्त्तै है अर्थात् कुरंटक सहचरी यह दो नाम पीले फूलवाले पियावांसके हैं सहचरीशब्द दोनों स्त्री तथा पुलिंगमें होता है ॥ ७५ ॥ ओण्डपुष्प जपापुष्प यह दो नाम जपापुष्पके हैं इसकों जास्वन्दभी कहते हैं. और जो कि तिलका फूल है वह वज्रपुष्प संज्ञिक है प्रतिहास शतप्रास चण्डात हयमारक ॥ ७६ ॥ करवीर यह पांच नाम कण्हेरके हैं. करीर ककर ग्रन्थिल यह तीन नाम करील वृक्षके हैं इसकों कारवी (नेवती) भी बोलले हैं उन्मत्त कितव धूर्त धत्तूर कनकाह्वय ॥ ७७ ॥

मातुल मदन यह सात नाम धतूरेके है इस-
के फलमें मातुलपुत्रक शब्द वर्ते है फलपूर
बीजपूर रुचक मातुलुगक यह चार नाम
विजोरानीबूके है इसकों महालुगभी क-
हते है ॥ ७८ ॥

समीरणो मरुवकः प्रस्थपुष्पः फणि-
ज्जकः ॥ जम्बीरोऽप्यथ पर्णासि क-
ठिञ्जरकुठेरकौ ॥ ७९ ॥ सितेऽर्जकोऽ
त्र पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः ॥
अर्काह्वयसुकाऽऽस्फोटगणरूपविकीर-
णाः ॥ ८० ॥ मन्दारश्चार्कपर्णोऽत्र
शुक्लेऽलकप्रतापसौ ॥ शिवमली पा-
शुपत एकाष्ठीलो बुको वसुः ॥ ८१ ॥

समीरण मरुवक प्रस्थपुष्प फणिज्जक
जम्बीर यह पाच नाम दौना (मरुआ)के है
इसकों किसी देशमें जम्बीरभी कहते हैं
पर्णासि कठिञ्जर कुठेरक यह तीन नाम पर्णा-
सिके है इसकों आजवला बावरीभी कहते
है ॥ ७९ ॥ और इस श्वेतपर्णासिमें अर्जक
शब्द वर्ते है पाठिन् चित्रक वह्निसंज्ञिक
यह तीन नाम चीतेके है अर्काह्वय वसुक
आस्फोट गणरूप विकीरण ॥ ८० ॥
मन्दार अर्कपर्ण यह सात नाम आकके है
और यह आक यदि श्वेत होवे तो उसमें
अलकं प्रतापस शब्द वर्ते हैं शिवमली
पाशुपत एकाष्ठील बुक वसु यह पाच नाम
गुमाके है इसकों रुईमन्दार तथा थोर बकु-
लीभी कहते है ॥ ८१ ॥

वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिके-
त्यपि ॥ वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची
तन्त्रिकाऽमृता ॥ ८२ ॥ जीवन्तिका
सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि ॥
मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी
स्तवा ॥ ८३ ॥ मधूलिका मधुश्रेणी
गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ॥ पाठाऽम्बुष्ठा
विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा
॥ ८४ ॥ एकाष्ठीला पापचेली प्राची-
ना वनतिकिका ॥ कटुः कटभराऽ-
शोकरोहिणी कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥

वदा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिका यह
चार नाम वृक्षके ऊपर उत्पन्न हुई लतावि-
शेषके है इसकों अमरवेलि (वेदागुली वाड-
गुल)भी कहते है वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची
तन्त्रिका अमृता ॥ ८२ ॥ जीवन्तिका सोम-
वल्ली विशल्या मधुपर्णी यह नौ नाम गिलो-
यके हैं इसको गुलवेलभी कहते है मूर्वा
देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्तवा ॥ ८३ ॥
मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्णी यह
दश नाम मूर्वाके है इसकों मूर तथा मोर-
वेलभी कहते है पाठा अम्बुष्ठा विद्धकर्णी
स्थापनी श्रेयसी रसा ॥ ८४ ॥ एकाष्ठीला
पापचेली प्राचीना वनतिकिका यह दश
नाम पाठाके है इसकों पाडली (पहाडमूल)-
भी कहते है कटु कटभरा अशोकरोहिणी
कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥

मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्राङ्गी श-
कुलादनी ॥ आत्मगुप्ताऽजहाऽव्यण्डा
कण्डुरा प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥ ऋ-
ष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुश्च
मर्कटि ॥ चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी
द्रवन्ती शम्बरी वृषा ॥ ८७ ॥ प्र-
त्यक्ष्रेणी सुतश्रेणी रण्डा मूषिकप-
र्ण्यपि ॥ अपामार्गः शैखरिको धा-
मार्गवमयूरकौ ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्षपर्णी
केशपर्णी किणिही खरमञ्जरी ॥ ह-
ञ्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्म-
णयष्टिका ॥ ८९ ॥

मत्स्यपित्ता कृष्णाभेदी चक्राङ्गी शकुला-
दनी यह आठ नाम केदारकुटकीके हैं. आत्म-
गुप्ता अजहा अव्यण्डा कंडुरा प्रावृषायणी
॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बि कपिकच्छु
मर्कटी यह नौ नाम मर्कटीके हैं इसको कौंची
(कुवली। कुहीरि) भी कहते हैं. इसके छूनेसे
खुजलो उठती है. चित्रा उपचित्रा न्यग्रोधी
द्रवन्ती शम्बरी वृषा ॥ ८७ ॥ प्रत्यक्ष्रेणी
सुतश्रेणी रंडा मूषिकपर्णी यह दशनाम
मूषिकपर्णीके हैं इसको मूसरी (उन्दीरका-
नी) भी कहते हैं. अपामार्ग शैखरिक धामा-
र्गव मयूरक ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्षपर्णी केशपर्णी
किणिही खरमंजरी यह आठ नाम चिर-
चिटांक हैं इसको आवाडाभी किसी देशोंमें
कहते हैं. हांजिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्रा-
ह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥

अङ्गारवल्ली बालेयशाकवर्वरवर्धकाः॥
मञ्जिष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा का-
लमेपिका ॥ ९० ॥ मण्डूकपर्णी भण्डीरी
भण्डी योजनवल्ल्यपि ॥ यासो
यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाश-
कः ॥ ९१ ॥ रोदनी कच्छुराऽनन्ता
समुद्रान्ता दुरालभा ॥ पृश्निपर्णी पृथ-
क्पर्णी चित्रपर्ण्यङ्घ्रिपर्णिका ॥ ९२ ॥
क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशिर्धाव-
निर्गुहा ॥ निदिग्धिका स्पृशी व्या-
धि बृहती कण्टकारिका ॥ ९३ ॥

अंगारवल्ली बालेयशाक वर्वर वर्धक यह
नौ नाम भांगराके हैं इसको भारंगभी क-
हते हैं. मंजिष्ठा विकसा जिङ्गी समंगा काल-
मेपिका ॥ ९० ॥ मंडूकपर्णी भंडोरी भंडी
योजनवल्ली यह नौ नाम जमीठके हैं. यास य
वास दुस्पर्श धन्वयास कुनाशक ॥ ९१ ॥ रोदनी
कच्छुरा अनन्ता समुद्रांता दुरालभा यह दश
नाम जवासाके हैं इसको धमासाभी कहते
हैं. पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्णी अंघ्रिव-
ल्लिका ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी
कलशी धावनी गुहा यह नौ नाम सिंहपु-
च्छीके हैं इसको डवला (पिठवण) भी कहते
हैं. निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कंटका-
रिका ॥ ९३ ॥

प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रि-
केत्यपि ॥ नीली काला क्लीतकिका
ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥

रञ्जनी श्रीफली तुत्था द्रोणीदोला
च नीलिनी ॥ अवल्गुज सोमराजी
सुवलिः सोमवल्लिका ॥ ९५ ॥ का-
लमेपी कृष्णफला बाकुची पूतिफ-
ल्पि ॥ कृष्णोपकुल्या वैदेही मा-
गधी चपला कणा ॥ ९६ ॥ उपणा
पिप्पली शौण्डी कोलाऽथ करिपि-
प्पली ॥ कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी
वशिरः पुमान् ॥ ९७ ॥

प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुस्पर्शा राष्ट्रिका
यह दश नाम भटकटाईके है इसकों रिग-
जीभी कहते है नीली काला क्लीतकिका
ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥ रजनी श्रीफली
तुत्था द्रोणी दोला नीलिनी यह ग्यारह नाम
नीलीके है यह वस्त्रोंकी रँगत करनेवाली काले
वर्णकी होती है अवल्गुज सोमराजी सुवलि
सोमवल्लिका ॥ ९५ ॥ कालमेपी कृष्णफला
बाकुची पूतिफली यह आठ नाम बाकुचीके
हैं इसकों बाकुची चावचीभी कहते है कृष्णा
उपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा ॥ ९६ ॥
उपणा पिप्पली शौण्डी कोला यह दश नाम
पीपरिके है करिपिप्पली कपिवल्ली कोलवल्ली
श्रेयसी वशिर यह पाच नाम बड़ीपीपरिके
है तिसमें वशिरशब्द पुलिग है ॥ ९७ ॥

चव्यं तु चविका काकचिश्चा गुञ्जा
तु कृष्णला ॥ पलंकपा त्विक्षुगन्धा
श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ॥ ९८ ॥
गोकण्टको गोकुरको वनशूङ्गाट

इत्यपि ॥ विश्वा विषा प्रतिविषातिऽ
विषोपविषारुणा ॥ ९९ ॥ शृङ्गी
महौपधं चाथ क्षीरावी दुग्धिका स-
मे ॥ शतमूली बहुसुताऽभीरुरिन्दी-
वरी वरी ॥ १०० ॥ ऋष्यभोक्ताऽ
भीरुपञ्चीनारायण्यः शतावरी ॥ अहे-
रुथ पीतद्रुकालीयकहरिद्रवः १०१
दावी पचपचा दारुहरिद्रा पर्जनी-
त्यपि ॥ वचोग्रगन्धा पङ्गन्था गो-
लोमी शतपर्विका ॥ १०२ ॥

चव्य चविका यह दो नाम चव्यके है.
काकचिचा गुजा कृष्णला यह तीन नाम
गुजाके है इसकों घुघुचीभी कहते है पल-
कपा इक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकटक ॥ ९८ ॥
गोकटक गोकुरक वनशृङ्गाट यह सात नाम
गोखरूके है इसकों सराटाभी कहते है
विश्वा विषा प्रतिविषा अतिविषा उपविषा
अरुणा ॥ ९९ ॥ शृङ्गी महौपध यह आठ
नाम अवीसके है इसकों अतिवित्तभी कहते
है क्षीरावी दुग्धिका यह दो नाम दुग्धीके
है आपसमें सपान लिग है शतमूली
बहुसुता अभीरु इदीवरी वरी ॥ १०० ॥ ऋष्य-
भोका अभीरुपञ्ची नारायणी शतावरी अहेरु
यह दश स्त्रीलिगवाचीनाम शतावरीके है पी-
तद्रु कालीयक हरिद्रव ॥ १०१ ॥ दावी पचपचा
दारुहरिद्रा पर्जनी यह सात नाम दारुहलदीके
है. वचा उग्रगन्धा पङ्गन्था गोलोमी शतप-
र्विका यह पाच नाम वचके है इसकों
वेखडभी कहते है ॥ १०२ ॥

शुक्ला हैमवती वैद्यमातृसिंह्यौ तु वा-
शिका ॥ वृषोऽटरूपः सिंहास्यो वा-
सको वाजिदन्तकः ॥ १०३ ॥
आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णुक्रा-
न्ताऽपराजिता ॥ इक्षुगन्धा तु का-
ण्डेक्षुकोकिलाक्षेक्षुरक्षुराः ॥ १०४ ॥

और जो कि श्वेतवच है वह हैमवती
संज्ञिक है वैद्यमातृ सिंही वाशिका वृष अ-
टरूप सिंहास्य वासक वाजिदन्तक यह आठ
नाम अडूसाके हैं ॥ १०३ ॥ आस्फोटा
गिरिकर्णी विष्णुक्रान्ता अपराजिता यह चार
नाम विष्णुक्रान्ताके हैं इक्षुगन्धा काण्डेक्षु
कोकिलाक्ष इक्षुर क्षुर यह पांच नाम ताल-
मखानेके हैं इसको कोलिसुन्दाभी कहते
हैं ॥ १०४ ॥

शालयः स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरि-
का मिसिः ॥ मिश्रेयाप्यथ सीहुण्डो
वज्रः स्नुह् स्त्री स्नुही गुडा ॥ १०५ ॥
समन्तदुग्धाऽथो वेल्लममोवा चित्रत-
ण्डुला ॥ तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं
पुनपुंसकम् ॥ १०६ ॥

शालेय शीतशिव छत्रा मधुरिका मिसि
मिश्रेया यह छै नाम सौंफके हैं इसकों
वडिशेषभी कहते हैं सीहुण्ड वज्र स्नुह् स्नुही
गुडा ॥ १०५ ॥ समन्तदुग्धा यह छै नाम
सेहडके हैं, तिसमें स्नुह् शब्द हकारान्त तथा
स्त्रीलिंगवाची है. वेल्ल अमोवा चित्रतण्डुला
तण्डुल कृमिघ्न विडंग यह छै नाम वायविडंगके
हैं विडंगशब्द पुनपुंसकलिंगवाची है ॥ १०६ ॥

बला वाट्यालका घण्टारवा तु श-
णपुष्पिका ॥ मृद्धीका गोस्तनी द्रा-
क्षा स्वाद्वी मधुरसेति च ॥ १०७ ॥
सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता
त्रिवृत् ॥ त्रिभण्डी रोचनी श्यामा-
पालिन्धौ तु सुपेणिका ॥ १०८ ॥
काला मसूरविदलार्धचन्द्रा काल-
मेपिका ॥ मधुकं क्लीतकं यष्टिमधुकं
मधुयष्टिका ॥ १०९ ॥

बला वाट्यालका यह दो नाम खरहटी
हैं इसकों तुयकडो (चिकणा) भी कहते हैं
घण्टारवा शणपुष्पिका यह दो नाम सन
हैं इसकों लघुताग घागरीभी कहते हैं. मृद्ध
का गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसा य
पाँच नाम दाखके हैं ॥ १०७ ॥ सर्वानुभू
सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् त्रिभंडी रोच
यह सात नाम निशोतके हैं. श्यामा पालिन्
सुपेणिका ॥ १०८ ॥ काला मसूर विदल
अर्धचंद्रा कालमेपिका यह सात नाम का
निशोतके हैं मधुक क्लीतक यष्टिमधुक मधु
यष्टिका यह चार नाम मुलहठीके हैं इसकें
ज्येष्ठमधभी कहते हैं ॥ १०९ ॥

विदारी क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा क्रोष्टी तु
या सिता ॥ अन्या क्षीरविदारी
स्यान्महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ ११० ॥
लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकु-
लादनी ॥ खराश्वा कारवी दीप्यो
मयूरो लोचमस्तकः ॥ १११ ॥ गो-

पी श्यामा शारिवा स्यादनन्तोत्पल-
शारिवा ॥ योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ
वृद्धेरप्पाह्वया इमे ॥ ११२ ॥

विदारी क्षीरशुक्ला इक्षुगन्धा कोष्ठी यह
चार नाम काले गगाफलके है और जो
कि अन्यविदारी हे वह क्षीरविदारी महा-
श्वेता ऋक्षगन्धिका सत्तिक है यह तीन
नाम श्वेतगगाफलके है ॥ ११० ॥ लगली
शारदी तोयपिप्ली शकुलादनी यह चार
नाम जलपीपरिके है इसकों मोगुडभी कहते
हैं खराश्वा कारवी दीप्य मयूर लोचमस्त्वक
यह पाच नाम अजमोदके है इसकों मोर-
शेंडाभी कहते है ॥ १११ ॥ गोपी श्यामा
शारिवा अनन्ता उत्पलशारिवा यह पाच
नाम श्यामलताके है इसकों उपरसालभी
कहते है योग्य ऋद्धि सिद्धि लक्ष्मी यह
चार नाम ऋद्धिनाम औषधिके है इसकों
केवडी तथा मुरुडशेंगभी कहते है यह चारों
वृद्धि औषधिके है ॥ ११२ ॥

कदली वारणबुसा रम्भा मोचाशुम-
त्फला ॥ काष्ठीला मुद्गपर्णी तु का-
कमुद्रा सहेत्यपि ॥ ११३ ॥ वार्ता-
की हिङ्गुली सिही भट्टाकी दुष्प्रध-
र्पिणी ॥ नाकुली सुरसा रास्ता सु-
गन्धा गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥
नकुलेष्टा भुजंगाक्षी छत्राकी सुवहा
च सा ॥ विदारिगन्धाशुमती साल-
पर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥ ११५ ॥

कदली वारणबुसा रम्भा मोचा अशु-
मत्फला काष्ठीला यह छै नाम केलाके है
मुद्गपर्णी काकमुद्रा सहा यह तीन नाम
वनमूगके है इसकों काकमूग तथा रानमूगभी
कहते है ॥ ११३ ॥ वार्ताकी हिङ्गुली
सिही भट्टाकी दुष्प्रधर्पिणी यह पाच नाम
बेंगनके है इसकों रानवागी (डोरली) भी
कहते है नाकुली सुरसा रास्ता सुग वा ग-
धनाकुली ॥ ११४ ॥ नकुलेष्टा भुजंगाक्षी
छत्राकी सुवहा यह नौ नाम सनायके है
इसकों मुगसी (मुगसबेल) भी कहते है
विदारिगन्धा अशुमती सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा
यह पाच नाम सालपर्णीके है इसकों डाव
(डवल-सालवण) कहते है ॥ ११५ ॥

तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बद-
रेति च ॥ भारद्वाजी तु सा वन्पा
शूङ्गी तु ऋषभो वृषः ॥ ११६ ॥
गाङ्गेरुकी नागवला झपा ह्रस्वगवे-
धुका ॥ धामार्गवो घोषकः स्यान्म-
हाजाली स पीतकः ॥ ११७ ॥

तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बदरा यह
चार नाम कपासके है और जो कि कपास
वनमें उत्पन्न होवे वह भारद्वाजी सत्तिक है
शृगिन् क्रयभ वृष यह तीन नाम काँकडा-
शृगीके है इसकों बैलघाटीभी कहते है
॥ ११६ ॥ गाङ्गेरुकी नागवला झपा ह्रस्वगवे
धुका यह चार नाम कगीके है इसकों ह्रस्व-
चिकणाभी कहते है धामार्गव घोषक यह

दो नाम घोषवल्लीके हैं इसकों श्वेततुरई (वोंसाली-दोडकी) कहते हैं. और यदि जो घोषक पीले फूलवाला हो तो वह महा-जाली संज्ञिक है ॥ ११७ ॥

ज्यौत्स्ली पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका ॥ स्याल्लाङ्गलिक्यग्रिशि-
खा काकाङ्गी काकनासिका ॥ ११८ ॥
गोधापदी तु सुवहा मुसली तालमू-
लिका ॥ अजशृङ्गी विषाणी स्या-
द्गोजिह्वादार्विके समे ॥ ११९ ॥

ज्यौत्स्ली पटोलिका जाली यह तीन नाम चचेडाके हैं इसकों पडवलीभी कहते हैं नादेयी भूमिजम्बुका यह दो नाम भूमिजामु-
नके हैं इसकों भूइजांभलीभी कहते हैं. लांग-
लिकी अग्रिशिखा यह दो नाम कलहारीवृ-
क्षके हैं इसकों वागचवकाभी कहते हैं
काकाङ्गी काकनासिका यह दो नाम काक-
जंघाके हैं इसकों कावलीभी कहते हैं
॥ ११८ ॥ गोधापदी सुवहा यह दो नाम
हंसपदीके हैं इसकों रक्तलाजालं कहते हैं.
मुसली तालमूलिका यह दो नाम मुसलकंदके
हैं अजशृङ्गी विषाणी यह दो नाम मेढाशृङ्गी
औषधिके हैं. गोजिह्वा दार्विका यह दो नाम
गोभीके हैं इसकों दवली (पाथरी)भी
कहते हैं ॥ ११९ ॥

ताम्बूलवल्ली ताम्बूलि नागवल्ली च यथ
द्विजा ॥ हरेणु रेणुका कौन्ती क-
पिला भस्मगन्धिनी ॥ १२० ॥ ए-

लावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुक-
म् ॥ वालुकं चाथ पालङ्क्यां मुकुन्दः
कुन्दकुन्दुरु ॥ १२१ ॥

तांबूलवल्ली तांबूली नागवल्ली यह तीन
नाम पानकी वेलिके हैं. द्विजा हरेणु रेणुका
कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी यह छे नाम
गगनधूरिके हैं इसकों रेणुकबीजभी कहते
हैं ॥ १२० ॥ एलावालुक ऐलेय सुगन्धि
हरिवालुक वालुक ये पांच नाम एलुआके हैं
इसकों कांकडी तथा वालुकभी कहते हैं.
पालंकी मुकुन्द कुन्दु कुन्दरु यह चार नाम
पालखशाकके हैं इसकों पोईशाकभी कहते
हैं ॥ १२१ ॥

वालं ह्रीवेरवर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बु-
नाम च ॥ कालानुसार्यवृद्धाशमपुष्प-
शीतशिवानि तु ॥ १२२ ॥ शैलेयं
तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा ॥
गन्धिनी गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी
रसा ॥ १२३ ॥ भहेरुणा कुन्दुरुकी
सल्लकी ह्लादिनीति च ॥ अग्निज्वा-
लासुभिक्षे तु धातकी धातुपुष्पिका १२४

वाल ह्रीवेर वर्हिष्ठ उदीच्य केशाम्बुना-
मन् यह पांच नाम नेत्रवालाके हैं कालानु-
सार्य वृद्ध अशमपुष्प शीतशिव ॥ १२२ ॥
शैलेय यह पांच नाम शिलाजीतके हैं ताल-
पर्णी दैत्या गंधकुटी मुरा गन्धिनी यह पांच
नाम तालीसपत्रके हैं इसकों मोरमांशीभी
कहते हैं. गजभक्ष्या सुवहा सुरभी रसा

॥ १२३ ॥ महेश्वरा कुदुरुकी सलकी
दनी यह आठ नाम सालमिश्रीके है
को सालईभी कहते है अग्निज्वाला
भक्षा धातकी धातुपुष्पिका यह चार नाम
कीके है इसको धायफूल (धायटो)भी
हते है ॥ १२४ ॥

पृथ्वीका चन्द्रवालैला निष्कुटिबहु-
शस्थ सा ॥ सूक्ष्मोपकुचिका तुत्था
कोरग्री त्रिपुटा व्रुटिः ॥ १२५ ॥
प्राधिः कुष्ठं पारिभाष्यं वाप्यं पा-
कलमुत्पलम् ॥ शङ्खिनी चोरपुष्पी
स्यात्केशिन्यथ वितुन्नकः ॥ १२६ ॥
तटामलाज्जटा ताली शिवा तामल-
कीति च ॥ प्रपौण्डरीकं पौण्डर्यमथ
तुन्नः कुवेरकः ॥ १२७ ॥ कुणिः
कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षोऽथ रा-
क्षसी ॥ चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पन्नग-
णहासका ॥ १२८ ॥

पृथ्वीका चन्द्रवाला एला निष्कुटि बहुला
ह पाच नाम बड़ी इलायचीके है और
दि जो इलायची सूक्ष्म हो अर्थात् छोटी
। तौ यह उपकुचिका तुत्था कोरगी त्रिपुटा
टि सज्जिक है अर्थात् यह पाच नाम छोटी
लायचीके है ॥ १२५ ॥ व्याधि कुछ
। रिभाष्य वाप्य पाकल उत्पल यह छै नाम
टके हैं शङ्खिनी चोरपुष्पी केशिनी यह
। न नाम चोरवल्लीके है इसको शखाहुली
। खवेलभी कहते है वितुन्नक ॥ १२६ ॥
। टामला अज्जटा ताली शिवा तामलकी यह

छै नाम तामलकीके है प्रपौण्डरीक पौंडर्य
यह दो नाम पौंडर्यके हैं इसका पत्र शालपर्णीकी
समान होता है तुन्न कुवेरक ॥ १२७ ॥ कुणि
कच्छ कातलक नदिवृक्ष यह छै नाम तून-
वृक्षके है इसको नादखलीभी कहते है इसका
पत्र पीपलके पत्रकी समान होता है राक्षसी
चण्डा धनहरी क्षेम दुष्पन्न गणहासक यह
छै नाम राक्षसीवृक्षके है इसको चोरओवा
(किरमाठीओवा । गठोना । गादीवनमूल) भी
कहते है और इसको गणभी कहते है १२८

व्याडायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रका-
रकम् ॥ सुपिरा विद्रुमलता कपोता-
द्विर्नटी नली ॥ १२९ ॥ धमन्य-
ञ्जनकेशी च हनुर्हृद्विलासिनी ॥
शुक्तिः शङ्खः खुरः कोलदलं नख-
मथाढकी ॥ १३० ॥ काक्षी मृत्ता
तुवरिका मृत्तालकसुराट्टजे ॥ कुटन्तं
दाशपुरं वानेयं परिपेलवम् ॥ १३१ ॥
ध्रुवगोपुरगोनर्दकैर्वीर्यमस्तकानि च ॥
अन्धियर्णं शुक्रं बर्हपुष्पं स्थानेय-
कुकरे ॥ १३२ ॥

व्याडायुध व्याघ्रनख करज चक्रकारक
यह चार नाम व्याघ्रनख नाम गधद्रव्यका
है इसको लघुनखला (वाघनख)भी कहते है
सुपिरा विद्रुमलता कपोताघ्रि नटी नली
॥ १२९ ॥ धमनी अजनकेशी यह सात
नाम नलीनाम गधद्रव्यके है इसको पमा-
रभी कहते है हनु हृद्विलासिनी शुक्ति शंख
खुर कोलदल नख यह सात नाम नखनाम

गंधद्रव्यके हैं इसको ककूदन तथा नखलाभी कहते हैं. तिसमें हनुशब्द उकारान्त तथा स्त्रीलिंग है इसका पत्र बेरके पत्तेकी समान होता है. आठकी ॥ १३० ॥ काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृत्तालक सुराष्ट्रज यह छै नाम अरहरके हैं इसको तूरभी कहते हैं. कुटन्त दाशपुर वानेय परिपेलव ॥ १३१ ॥ प्लव गोपुर गोनर्द कैवर्त्ती मुस्तक यह आठ नाम मोथाके हैं इसको केवडी (जलमुस्ता क्षुद्र-मोथा) भी कहते हैं. ग्रन्थिपर्णा शुक वर्हपु-ष्प स्थौण्य कुक्कुर यह पांच नाम कुकुरोंधाके हैं इसको गंठीवन (भेटोरा) भी कहते हैं १३२

मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः ॥ समुद्रान्ता वधूः कोटि-वर्षालङ्कोपिकेत्यपि ॥ १३३ ॥ त-पस्विनी जटामांसी जटिला लोमशा मिशी ॥ त्वक्पत्रमुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ॥ १३४ ॥

मरुन्माला पिशुना स्पृक्का देवी लता लघु समुद्रान्ता वधू कोटिवर्षा लङ्कोपिका यह दश नाम मरुन्मालाके हैं इसको पिंडरकशाकभी कहते हैं ॥ १३३ ॥ तपस्विनी जटामांसी जटिला लोमशा मिशी यह पांच नाम जटामांसीके हैं. त्वक्पत्र उत्कट भृङ्ग त्वच चोच वराङ्गक यह छै नाम तजके हैं इसको दालचिनीभी कहते हैं ॥ १३४ ॥

कर्चूरको द्राविडकः काल्पको वेधमुख्यकः ॥ औषध्यो जातिमात्रे स्यु-

रजातौ सर्वमौषधम् ॥ १३५ ॥ शाकाख्यं पत्रपुष्पादि तण्डुलीयोऽल्पमारिषः ॥ विशल्याग्निशिखानन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका ॥ १३६ ॥

कर्चूरक द्राविडक काल्पक वेधमुख्यक यह चार नाम कचूरके हैं. फलपाकही है अन्त जिनका ऐसे व्रीहि यव गोधूमादिकोंकी जातिमात्रमें ही औषधिशब्दका प्रयोग होता है यहाँ औषधिशब्दमें बहुवचन बहुत्वके कहनेकी इच्छासे है किन्तु नित्य औषधिशब्द बहुवचनान्त नहीं होता है और यदि औषधिशब्द रोग हरनेमात्रही प्रतीत होवे और अन्य न हो तो औषधिशब्दका प्रयोग होता है केवल औषधिही औषधशब्दवाच्य नहीं है किन्तु अजातिमें रोग हरनेसे वीसहित त्रिफला आदिक सबही औषध हैं ॥ १३५ ॥ और जो फूलपुष्पादिक हैं वह शाक संज्ञिक हैं आदिशब्दसे मूलादिकभी शाकसंज्ञिक हैं तण्डुलीय अल्पमारिष यह दो नाम चौराई शाकके हैं इसको तांदली (तांदुलजा) भी कहते हैं विशल्या अग्निशिखा अनन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका यह पांच नाम अग्निशिखाके हैं इसको हालाँ (कललावी) भी कहते हैं ॥ १३६ ॥

स्यादक्षगन्धा छगलान्ध्यावेगी वृद्ध-दारकः ॥ जुङ्गो ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी

मूलपत्रकरीरायफलकाण्डाधिरूढकम् ॥ त्वक्पुष्पं कवचं चैव शाकं दशविधं स्मृतम् ।

वयस्था सोमवल्लरी ॥ १३७ ॥ पटु-
पर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ॥
हयपुच्छी तु काम्बोजी मापपर्णी
महासहा ॥ १३८ ॥

अक्षगंधा छगलाजी आवेगी-वृद्धदारक
जुग यह पाच नाम वृद्धदारकके हैं इसको
विधारा (जीर्णफजी) भी कहते हैं ब्राह्मी
मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी यह चार नाम
सोमलताके है इसके पत्ते शुक्लपक्षमें उगते है
और कृष्णपक्षमें गिर जाते है ॥ १३७ ॥
पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती यह
चार नाम स्वर्णक्षीरीके है इसको मकोय
(पिसोला) भी कहते है हयपुच्छी काम्बोजी
मापपर्णी महासहा यह चार नाम मापपर्णी
के हैं इसको मूँगमैथी (रानउडीद) भी
कहते है ॥ १३८ ॥

तुण्डिकेरी रक्तफला विम्बिका पी-
लुपपर्णपि ॥ बर्बरा कवरी तुङ्गी खर-
पुष्पाञ्जगन्धिका ॥ १३९ ॥ ए-
लापर्णी तु सुवहा रास्ना युकरसा
च सा ॥ चाङ्गेरी चुक्रिका दन्त-
शठाम्बष्ठाम्ललोणिका ॥ १४० ॥

तुण्डिकेरी रक्तफला विम्बिका पीलुपर्णी
यह चार नाम कुँडुलके है इसको तोंडलीभी
कहते है बर्बरा कवरी तुङ्गी खरपुष्पा अज-
गन्धिका यह पाच नाम वैवई शाकके है
इसको बर्बरी (तिलवणी कानफोडी) भी
कहते हैं ॥ १३९ ॥ एलापर्णी सुवहा रास्ना

युकरसा यह चार नाम एलापर्णीके है इस-
को रायसेन (कोलिदण) भी कहते हैं
चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठा अबष्ठा अल्मलो-
णिका यह पाच नाम चूकके है ॥ १४० ॥

सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्य-
पि ॥ नमस्कारी गण्डकारी समङ्गा
खदिरेत्यपि ॥ १४१ ॥ जीवन्ती
जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा ॥
कूर्चशीर्षो मधुरकः शृङ्गाह्रस्वाङ्ग-
जीवकाः ॥ १४२ ॥

सहस्रवेधिन चुक्र अल्मवेतस शतवेधिन
यह चार नाम अल्मवेतके है नमस्कारी
गण्डकारी समगा खदिरा यह चार नाम गुलखे-
राके है इसको लज्जालुभी कहते है ॥ १४१ ॥
जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा
यह चार नाम रत्नज्योतिके है इसको हर-
णवेल (हरणदोडी) भी कहते है कूर्चशीर्ष
मधुरक शृङ्गा ह्रस्वाङ्ग जीवक यह पाच नाम
जीराके हैं ॥ १४२ ॥

किरातविक्रो भूनिम्बोऽनार्यविक्रोऽ-
थ सप्तला ॥ विमला शातला भूरि-
फेना चर्मकपेत्यपि ॥ १४३ ॥ वा-
यसोली स्वादुरसा वयस्थाऽथ मकु-
लकः ॥ निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्-
श्रेण्युदुम्बरपण्यपि ॥ १४४ ॥

किरातविक्र भूनिम्ब अनार्यविक्र यह तीन
नाम चिरैताके है इसको किराईतभी कहते
हैं सप्तला विमला शातला भूरिफेना चर्मकपा

यह पांच नाम सोयाशाकके हैं इसकों शिकेकाईभी कहते हैं ॥ १४३ ॥ वायसोली स्वादुरसा वयस्था यह तीन नाम काकोलीके हैं इसकों लहान कावलीभी कहते हैं. मकूलक निकुम्भ दन्तिका प्रत्यक्षेत्रणी उदुम्बरणी यह पांच नाम दाँतीके हैं इसका बीज जेपाल बोलाजाता है ॥ १४४ ॥

अजमोदा तुग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ॥ मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे ॥ १४५ ॥ अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ॥ काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यपि ॥ १४६ ॥

अजमोदा उग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका यह चार नाम अजवायनके हैं कोई आचार्य दोनों अजवायनोंके दोदो नाम कहते हैं. पुष्कर काश्मीर पद्मपत्र यह तीन नाम पुष्करनाम औषधिकी जड़में वर्त्ते हैं अर्थात् यह तीन नाम पुहकरमूलके हैं ॥ १४५ ॥ अव्यथा अतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी यह पांच नाम पद्माकके हैं इसकों स्थलकमलिनीभी कहते हैं यह उत्तरदेशमें प्रसिद्ध है कांपिल्य कर्कश चंद्र रक्तांग रोचनी यह पांच नाम कवोलाके हैं ॥ १४६ ॥

प्रपुन्नाडस्वेडगजो दद्रुन्नश्चक्रमर्दकः ॥

पद्माट उरणाख्यश्च पलाण्डुस्तु सुकन्दकः ॥ १४७ ॥ लतार्कदुर्द्रुमौ तत्र

हरितेऽथ महौषधम् ॥ लशुनं गृन्ज-
नारिष्टमहाकन्दरसोनकाः ॥ १४८ ॥

प्रपुन्नाड एडगज दद्रुन्न चक्रमर्दक पद्माट उरणाख्य यह छै नाम पमारवृक्षके हैं इसकों टाकलाभी कहते हैं. पलांडु सुकन्दक ये दो नाम प्याजके हैं इसकों कांदाभी कहते हैं ॥ १४७ ॥ और यदि जो पलांडु हरा होवे तौ उसमें लतार्क दुर्द्रुम यह दो नाम वर्त्ते हैं अर्थात् यह दो नाम हरेप्याजके हैं. महौषध लशुन गृन्जन अरिष्ट महाकन्द रसोनक यह छै नाम लहसनके हैं ॥ १४८ ॥

पुनर्नवा तु शोथघ्नी वितुन्नं सुनिषण्णकम् ॥ स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिता शणपर्ण्यपि ॥ १४९ ॥ पारावताङ्घ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ॥ वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती बलभद्रिका ॥ १५० ॥

पुनर्नवा शोथघ्नी यह दो नाम पुनर्नवाके हैं इसकों घेटुलीभी कहते हैं. वितुन्न सुनिषण्णक यह दो नाम विसखपराके हैं इसकों सुपुन और कुरडुभी कहते हैं. वातक शीतल अपराजिता शणपर्णी यह चार नाम पटसनके हैं इसकों गोकर्णीभी कहते हैं ॥ १४९ ॥ पारावताङ्घ्रि कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता यह पांच नाम मालकाङ्गुनीके हैं यह सब स्त्रीलिंग हैं. वार्षिक त्रायमाणा त्रायन्ती बलभद्रिका यह चार नाम त्रायमाणके हैं ॥ १५० ॥

विष्वक्सेनप्रिया गृष्टिवाराही बदरे-
त्पपि ॥ मार्कवो भृङ्गराजः स्यात्का
कमाची तु वायसी ॥ १५१ ॥

विश्वक्सेनप्रिया गृष्टि वाराही बदरा
यह चार नाम चितार्कन्दके है मार्कव भृ-
गराज यह दो नाम भागराके हैं इसकों
माकाभी कहते है काकमाची वायसी यह
दो नाम काकजघाके हैं इसकों कावलीभी
कहते है ॥ १५१ ॥

शतपुष्पा सितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधु-
रा मितिः ॥ अवाक्पुष्पी कारवी च
सरणा तु प्रसारिणी ॥ १५२ ॥
तस्या कटभरा राजवला भद्रवलेत्य-
पि ॥ जनी जतूका रजनी जतुलच्च-
क्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥ संस्पर्शाऽथ
शटी गन्धमूली पद्मग्रन्थिकेत्यपि ॥
कर्चुरोऽपि पलाशोऽथ कारवेष्ठः क-
ठिलकः ॥ १५४ ॥ सुपवी चाथ
कुलकं पटोलस्तिककः पटु. ॥ कू-
प्माण्डकस्तु कर्कारुरुर्वारुः कर्कटी
स्त्रिपौ ॥ १५५ ॥

शतपुष्पा सितच्छत्रा अतिच्छत्रा मधुरा
मिति अवाक्पुष्पी कारवी यह सात नाम
सौके हैं सरणा प्रसारिणी ॥ १५२ ॥ कटभरा
राजवला भद्रवला यह पाच नाम आकाग-
थिके है इसकों चादवेष्ठभी कहते है जनी
जतूका रजनी जतुलच्च क्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥
संस्पर्शा यह छे नाम चादवके है शटी

गधमूली पद्मग्रन्थिका कर्चुर पलाश यह पाच
नाम अम्बियाहलदीके हैं इसकों कापूरका-
चरीभी कहते हैं कारवेष्ठ कठिलक ॥ १५४ ॥
सुपवी यह तीन नाम कारवेष्ठके है इसकों
करेलाभी कहते है कुलक पटोल तिकक
पटु यह चार नाम पटोलके है इसकों पद-
वलीभी कहते है कूप्माण्ड कर्कारु यह दो
नाम कूप्माण्डके है इसकों कोहलाभी कहते
है उर्वारु कर्कटी यह दो नाम काकडीके हैं
दोनों शब्द स्त्रीलिंगवाची है ॥ १५५ ॥

इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात्तुम्बपलाशुरूभे
समे ॥ चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा वि-
शाला त्विन्द्रवारुणी ॥ १५६ ॥
अशोभिः सूरणः कन्दो गण्डीरस्तु
समष्टिठा ॥ कलम्बुपोदिका स्त्री तु
मूलकं हितमोचिका ॥ १५७ ॥

इक्ष्वाकु कटुतुम्बी यह दो नाम करुई
तोंवीके हैं इसकों कडुभोपलाभी कहते हैं
तुनी अलाबू यह दो नाम लौकीके हैं इसकों
काटाभोपलाभी कहते हैं यह दोनों समान
हैं चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा यह तीन नाम
गोडुम्बाके है इसकों फूट तथा कपडभी
कहते हैं विशाला इन्द्रवारुणी यह दो नाम
इद्रायनके हैं ॥ १५६ ॥ अशोभिः सूरण
कद यह तीन नाम जिमीकन्दके हैं गडीर
समष्टिठा यह दो नाम गडीरनाम शाकभेदके
है इसकों गहरदवीभी कहते हैं. कलम्बी
यह एक नाम कलबीना है उपोदिसा यह

एक नाम पोथोनाका है इसको थोरमयाल (पोईमाण्डवीवेल) कहते हैं. यह दोनों शब्द स्त्रीलिंगवाची हैं मूलक यह एक नाम मूलीका है. हिलमोचिका यह एक नाम हिलसाका है इसको हलहंचीभी कहते हैं ॥ १५७ ॥

वास्तुकं शाकभेदाः स्युर्दूर्वा तु शतपर्विका ॥ सहस्रवीर्या भार्गव्यो रुहाऽनन्ताऽथ सा सिता ॥ १५८ ॥ गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली शकुलाक्षका ॥ कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमस्त्रियाम् ॥ १५९ ॥

वास्तुक यह एक नाम बथुआका है यह कलंव्यादिक शाकभेद हैं. दूर्वा शतपर्विका सहस्रवीर्या भार्गवी रुहा अनन्ता यह छै नाम दूबके हैं जो कि श्वेतदूब है वह ॥ १५८ ॥ गोलोमी शतवीर्या गंडाली शकुलाक्षकासंज्ञिक है. कुरुविंद मेघनामन् मुस्ता मुस्तक यह पांच नाम मुस्ताके हैं इसको मोथाभी कहते हैं तिसमें मुस्तकशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होता है ॥ १५९ ॥

स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा चूडाला चक्रलोच्चटा ॥ वंशे त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ॥ १६० ॥ शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ॥ वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः ॥ १६१ ॥ ग्रन्थिर्ना पर्वपरुपी गुन्द्रस्तेजनकः शरः ॥ नडस्तु धमनः

पोटगलोऽथो काशमस्त्रियाम् ॥ १६२ ॥ इक्षुगन्धा पोटगलः पुंसि भूम्नि तु वल्वजाः ॥ रसाल इक्षुस्तद्भेदाः पुण्ड्रकान्तारकादयः ॥ १६३ ॥

भद्रमुस्तक गुन्द्रा यह दो नाम नागरमोथाके हैं चूडाला चक्रला उच्चटा यह तीन नाम उच्चटामूलके हैं इसको फुरडीभी कहते हैं. वंश त्वक्सार कर्मार त्वचिसार तृणध्वज ॥ १६० ॥ शतपर्वन् यवफल वेणु मस्कर तेजन यह दश नाम वांसके हैं जो कि वांस कीटकादिकोंके कियेहुए छिद्रमें प्राप्त हो पवनकर ताडेहुए शब्दकरते हैं वह कीचक संज्ञिक हैं ॥ १६१ ॥ ग्रंथि पर्वन् परुप् यह तीन नाम वांस आदिकोंकी गांठके हैं तिसमें ग्रंथिशब्द पुल्लिंग है गुन्द्र तेजनक शर यह तीन नाम शरकंडाके हैं. नड धमन पोटगल यह तीन नाम नडके हैं इसको देवनलभी कहते हैं. काश इक्षुगन्धा पोटगल यह तीन नाम काशके हैं तिसमें काशशब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता है. वल्वज शब्द बहुवचन तथा पुल्लिंगमें होता है इसको मोल (लह्वाले-लवा) भी कहते हैं. रसाल इक्षु यह दो नाम ईखके हैं उस ईखके भेद पुंन कान्तारक आदिक हैं ॥ १६२ ॥ १६३ ॥

स्याद्दीरणं वीरतरं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ॥ अभयं नलदं सेव्यममृ-

१ इक्षुः कर्कटको वंशः कान्तारोवेणुनिःसृतः ॥ इक्षुरन्यः पौंड्रकश्च रसालः सुकुमारकः ॥ १ ॥

१ मेघनामन् यहशब्दमेघपर्याय नामक है ।

णालं जलाशयम् ॥ १६४ ॥ लामञ्जकं
लघुलयमवदाहेष्टकापथे ॥ नडादपस्तृ-
णं गर्मुच्छयामाकप्रमुखा अपि ॥ १६५ ॥

वीरण वीरतर यह दो नाम गाडरनाम
तृणभेदके है कालावालाभी इसको कहते हैं
और इस वीरणकी जड़मे उशीर अभय न-
लद सेव्य घृणाल जलाशय ॥ १६४ ॥
लामञ्जक लघुलय अवदाह इष्टकापथ यह
दशनाम वर्त्ते है तिसमें उशीरशब्द स्त्रीलिंग-
वर्जित पुनपुसकलिंगमें होता है यह नड
आदिकशब्द तृणजातीय हैं और गर्मुत्
श्यामाक आदिक शब्दभी तृणजातीय हैं
यहाँ प्रमुखशब्दसे नीवारादिकभी तृणजा-
तीय है ॥ १६५ ॥

अस्त्री कुशं कुथो दर्भः पवित्रमथ
कत्तूणम् ॥ पौरसौगन्धिकध्यामदेव-
जग्धकरौहिपम् ॥ १६६ ॥ छत्रा-
तिच्छत्रपालन्नौ मालातृणकभूस्तृणे ॥
शष्पं बालतृणं घासो यवसं तृणमर्जु-
नम् ॥ १६७ ॥

कुश कुथ दर्भ पवित्र यह चार नाम
कुशके है तिसमें कुशशब्द पुनपुसकलिंग-
वाची है कत्तूण पौर सौगन्धिक ध्याम देव-
जग्धकरौहिप यह छै नाम सुगन्धिक तृ-
णके है इसको गजाण (रोहिसगवत) भी
कहते हैं ॥ १६६ ॥ छत्रा अतिछत्र पा-
लन्न मालातृणक भूस्तृण यह पाच नाम
वचकीतुल्य जलतृणभेदके हैं तिसमें आदिके

तीन नाम शेतगवतके है अन्तके दो माला-
कारतृणके हैं शष्प बालतृण यह दो नाम
कोमलतृणके हैं घास यवस यह दो नाम
घासके है तृण अर्जुन यह दो नाम तृण-
मात्रके है ॥ १६७ ॥

तृणानां संहतिस्तृण्या नड्या तु नड-
संहतिः ॥ तृणराजाह्वयस्तालो ना-
लिकेरस्तु लाङ्गली ॥ १६८ ॥ घो-
ण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः स्वपु-
रोऽस्प तु ॥ फलमुद्गेगमेते च हिता-
लसहितास्त्रयः ॥ १६९ ॥ खर्जूरः
केतकी वाली खर्जूरी च तृणद्रुमाः ॥

इति वनौषधिवर्गः ॥ ४ ॥

तृणोंका जो समूह है वह तृण्या सं-
ज्ञिक है और नडोंका जो समूह है वह
नड्या सज्ञिक है तृणराज ताल यह दो नाम
तालवृक्षके हैं तृणराजाह्वयशब्द तृणराजना-
मक है नालिकेर लागली यह दो नाम ना-
रियलके हैं लागलीशब्द इज्जन्तवाची पुलि-
गभी होता है ॥ १६८ ॥ घोंटा पूग क्र-
मुक गुवाक स्वपूर यह पाच नाम सुपारीवृ-
क्षके हैं इस सुपारीवृक्षका फल उद्गेग स-
ज्ञिक है हिताल वृक्षसहित यह तीनों ताल-
वृक्ष और नारियलका वृक्ष और सुपारीका
वृक्ष ॥ १६९ ॥ तथा खर्जूर और केतकी
और ताली और खर्जूरी वृक्ष यह आठे तृ-
णद्रुम सज्ञिक हैं खर्जूर खजूरको कहते हैं
औरकेतकी केथको कहते हैं और ताली-

वृक्ष तालवृक्षका भेद है. और खर्जूरी खजू-
रवृक्षका भेद है. ॥

इति वनौषधिवर्गः

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः के-
सरी हरिः १ ॥ शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे
तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ १ ॥ वराहः
सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री किरिः
किटिः ॥ दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा
क्रोडो भूदार इत्यपि ॥ २ ॥

सिंह मृगेन्द्र पञ्चास्य हर्यक्ष केसरिन्
हरि यह छै नाम सिंहके हैं. शार्दूल द्वीपिन्
व्याघ्र यह तीन नाम व्याघ्रके हैं. तरक्षु मृ-
गादन यह दो नाम कुत्तेके आकारवाले क-
ष्णुरेखाओंसें चित्रित हुए मृगविशेषके हैं
इसको चीता (तरस) भी कहते हैं ॥ १ ॥
वराह सूकर घृष्टि कोल पोत्रिन् किरि किटि
दंष्ट्रिन् घोणिन् स्तब्धरोमन् क्रोड भूदार यह
बारह नाम सूकरके हैं. साहचर्यसें घृष्टिशब्द
पुल्लिग जानने योग्य है ॥ २ ॥

कपिपुवंगपुवगशाखामृगवलीमुखाः ॥
मर्कटो वानरः कीशो वनौका अथ
भल्लुके ॥ ३ ॥ ऋक्षाऽच्छभल्लभ-
ल्लुका गण्डके खड्गखड्गिनौ ॥

१ कण्ठीरवो मृगरिपुर्मृगदृष्टिर्मृगाशनः ॥
पुण्डरीकः पञ्चनखचित्रकायमृगद्विषः ॥ १ ॥

कठीरव मृगरिपु मृगदृष्टि मृगाशन पुण्डरीक
पञ्चनख चित्रकाय मृगद्विष यह आठ नाम और
पुस्तकोंमें विशेष हैं.

लुलायो महिषो वाहद्विषत्कासरसै-
रिभाः ॥ ४ ॥

कपि पुवंग पुवग शाखामृग वलीमुख मर्कट
वानर कीश वनौकस् यह नौ नाम वन्दरके
हैं. भल्लुक ॥ ३ ॥ ऋक्ष अच्छभल्ल भल्लुका
यह चार नाम रीछके हैं. गंडक खड्ग ख-
ड्गिन् यह तीन नाम गंडाके हैं. लुलाय म-
हिष वाहद्विषत् कासर सैरिम् यह पांच नाम
भैंसाके हैं ॥ ४ ॥

स्त्रियां शिवा भूरिमायगोमायुमृगधू-
तकाः ॥ शृगालवश्चक्रोष्टुफेरुफेर-
वजम्बुकाः ॥ ५ ॥ ओतुर्विडालो मार्ज-
रो वृषदंशक आखुभुक् ॥ त्रयो गौधे-
रगौधारगौधेया गोधिकात्मजे ॥ ६ ॥

शिवा भूरिमाय गोमायु मृगधूतक शृ-
गार वंचक क्रोष्टु फेरु फेरव जंबुक यह दश
नाम श्यारके हैं तिसमें शिवाशब्द स्त्रीलिङ्ग
है ॥ ५ ॥ ओतु विडाल मार्जार वृषदंशव
आखुभुज् यह पांच नाम बिलावके हैं. गौ-
धेर गौधार गौधेय यह तीन नाम गोधिका
की सन्तानमें वर्ते हैं अर्थात् यह तीन नाम
गोहके बच्चेके हैं ॥ ६ ॥

श्ववित्तु शल्यस्तर्होन्नि शलली शल-
लं शलम् ॥ वातप्रमीर्वातमृगः क्रोक-
स्वीहामृगो वृकः ॥ ७ ॥ मृगे कु-
रङ्गवातायुहरिणाजिनयोनयः ॥ ऐणे-
यमेण्याश्चर्माद्यमेणस्यैणमुभे त्रिषु ॥ ८ ॥

श्वाविधु शल्य यह दो नाम सेहीके है इसकों सालईभी कहते है और उससेही जीवके रोमोंमें शलली शलल शल यह तीन नाम हैं है तिसमें शलली शब्द स्त्रीलिंग है वातप्रमी वातमृग यह दो नाम वातमृगके है इसकों वाघलभी कहते है वातप्रमी शब्द ईकारान्त और पुलिंग है कोक ईहामृग वृक यह तीन नाम भेडियाके है ॥ ७ ॥ मृग कुरग वातायु हरिण अजिनयोनि यह पाच नाम हरिणके है एणीनाम हरिणीका जो चर्म मासादिक है वह ऐणेय सज्जिक है और एणनाम हरिणका जो चर्ममासादिक है एण सज्जिक है यह दोनों ऐणेय तथा एण शब्द तीनों लिंगमें होते है ॥ ८ ॥

कदली कन्दली चीनश्चमूरुप्रियकाव-
पि ॥ समूरुश्चेति हरिणा अमी अ-
जिनयोनयः ॥ ९ ॥ कृष्णसाररु-
न्यङ्गरङ्कुशम्बररौहिपाः ॥ गोकर्ण-
पृषतैणशर्परोहिताश्चमरो मृगाः ॥ १० ॥

कदलिन् कदलिन् चीन चमूरु प्रियक
समूरु यह छै प्रकारके हरिण और वक्ष्यमाण
कृष्णसारादिक अजिनयोनि सज्जिक है कारण
कि यह चर्मकेविषैही उपयुक्त है ॥ ९ ॥
कृष्णसार रु रु न्यकु रकु शबर रौहिप गो-
कर्ण पृषत एण कश्य रोहित चमर यह
चारह मृगके भेद हैं ॥ १० ॥

गन्धर्वः शरभो रामः सृमरोगवय
शशः ॥ इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवा-

द्याः पशुजातयः' ॥ ११ ॥ उन्दुरु-
मूपकोऽप्याखुर्गिरिका बालमूपिका ॥
सरटः कृकलासः स्यान्मुसली गृहगो-
धिका ॥ १२ ॥

गधर्व शरभ राम सृमर गवय शश
यहभी छै मृगभेद है इत्यादिक अर्थात् ग-
न्धर्वादिक शब्द आदि शब्दसें नहीं कहेहुये
वनपोतादिकशब्द और मृगेन्द्रादिक चमरप-
र्यन्त शब्द और अन्यवर्गमें कहेजावेंगे ऐसे
गवादिक गोहस्त्यश्वादिक शब्द पशुजाति
सज्जिक है ॥ ११ ॥ उन्दुरु मूपक आखु
यह तीन नाम मूपकके है. गिरिका बालमू-
पिका यह दो नाम छोटी मूपकजातिके है.
सरट कृकलास यह दो नाम गिर्गटके हैं
मुसली गृहगोधिका यह दो नाम गृहगोधाके
है इसकों छिपकेलीभी कहते है ॥ १२ ॥

लूता स्त्री तन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः
समाः ॥ नीलद्रुस्तु कृमिः कर्णजलौ-
काः शतपद्युमे ॥ १३ ॥ वृश्चिकः
शूककोटः स्यादलिट्टणौ तु वृश्चिके ॥
पारावतः कलरवः कपोतोऽथ शशा-
दनः ॥ १४ ॥ पत्री श्येन उलूकस्तु

१अधोगन्ता तु खनको वृष पुध्वज उन्दुर ॥
अधोगतृ खनक वृक पुध्वज उन्दुर यह पाच
नाम मूपकके और पुस्तकोंमें विशेष है सवमि-
लकर आठ नाम मूपकके है ।

वायसारतिपेचकौ' ॥ व्याघ्राटः स्या-
भ्ररद्वाजः खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ १५ ॥

लूता तन्तुवाय ऊर्णनाभ मर्कटक यह
चार नाम मकरीके हैं तिसमें लूताशब्द स्त्री-
लिंग है और शेष समानलिंग हैं नीलंगु
कृमि यह दो नाम छोटे छोटे कीडामात्रके
हैं कर्णजलौकस् शतपदी यह दो नाम का-
नसलाईके हैं इसकों कानखजूराभी कहते हैं
यह दोनों शब्द स्त्रीलिंगवाची हैं ॥ १३ ॥
वृश्चिक शूकक्रीट यह दो नाम केंचुआके हैं
इसकों कसरभी कहते हैं यह उर्णादिककों
खाता है. अलि द्रुण वृश्चिक यह तीन नाम
विच्छूके हैं. पारावत कलरव कपोत यह तीन
नाम कबूतरके हैं शशादन ॥ १४ ॥ पत्रिन्
श्येन यह तीन नाम वाजपक्षीके हैं. उलूक
वायसाराति पेचक यह तीन नाम उल्लूपक्षीके
हैं व्याघ्राट भ्ररद्वाज यह दो नाम भ्ररद्वाज
पक्षीके हैं इसकों कुकुडकोंवा (कुंभारकोंवा)
भी कहते हैं खंजरीट खंजन यह दो नाम
ममोलापक्षीके हैं इसकों ताजवाभी कहते
हैं ॥ १५ ॥

लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्यादथ चापः कि-
कीदिविः ॥ कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा अ-
थ स्याच्छतपत्रकः ॥ १६ ॥ दार्वा-
घाटोऽथ सारङ्गस्तोककश्चातकः स-

माः ॥ कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्च-
रणायुधः ॥ १७ ॥

लोहपृष्ठ कंक यह दो नाम सेतचीलके
हैं. चाप किकीदिवि यह दो नाम नीलकंठके
हैं. कलिङ्ग भृङ्ग धूम्याट यह तीन नाम खु-
टकवटैया पक्षीके हैं इसको फेंचुहार (म-
स्तकचूड) भी कहते हैं. शतपत्रक ॥ १६ ॥
दार्वाघाट यह दो नाम कठफोराजीवके हैं
इसकों वटफोरा सुतारपक्षीभी कहते हैं. सा-
रंग तोकक चातक यह तीन नाम चातकके
हैं इसकों पपीहा कहते हैं. यह तीनों शब्द
समान लिंगवाची हैं कृकवाकु ताम्रचूड कुक्कुट
चरणायुध यह चार नाम मुरगेके हैं ॥ १७ ॥

चटकः कलविङ्कः स्यात्तस्य स्त्री च-
टका तयोः ॥ पुमपत्ये चाटकैरस्य-
पत्ये चटकैव सा ॥ १८ ॥ कर्करेटुः
करेटुः स्यात्कृकणककरौ समौ ॥
वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिक इ-
त्यपि ॥ १९ ॥

चटक कलविङ्क यह दो नाम चिडाके
हैं इसकों चिमणीभी कहते हैं उस चिडाकी
स्त्री चटका संज्ञिक है तिन दोनों चटक और
चटकाकी पुरुषरूप सन्तानमें चाटकैर शब्द
होता है और स्त्रीरूपसन्तानमें चटका शब्द
वर्त्तै है ॥ १८ ॥ कर्करेटु करेटु यह दो
नाम करकेटाके हैं इसकों कंकरेटभी कहते
हैं. कृकण ककर यह दो नाम कंकरपक्षीके
हैं आपसमें यह दोनोंशब्द समान हैं. वन-

१ दिवान्धः कौशिको घूको दिवाभीतो
निशाटनः ॥

दिवान्ध कौशिक घूक दिवाभीत निशाटन यह
पांच नाम और पुस्तकमें उल्लूके विशेष हैं ॥

प्रिय परभूत कोकिल पिक यह चार नाम
कोकिलके हैं ॥ १९ ॥

काके तु करटारिष्टबलिपुष्टसल्लभ-
जाः ॥ ध्वाक्ष्मात्मघोषपरभृदलिभु-
ग्वापसा अपि ॥ २० ॥ द्रोणका-
कस्तु काकोलो दात्पूहः कालकण्ट-
कः ॥ आतापिचिछौ दाक्षाय्यगृध्रौ
कीरशुकौ समौ ॥ २१ ॥

काक करट अरिष्ट बलिपुष्ट सल्लभज
ध्वाक्ष आत्मघोष परभृद बलिभुज वायस
यह दश नाम काकके हैं ॥ २० ॥ द्रोण-
काक काकोल यह दो काकके भेद हैं. दा-
त्पूह कालकटक यह दो नाम जलकाकके
हैं इसको डाहद तथा अयकाकभी कहते
हैं. आतापिचि यह दो नाम चीलके
हैं. दाक्षाय्य गृध्र यह दो नाम गीघके हैं
कीर शुक यह दो नाम शुआके हैं यह
दोना शब्द आपसमें समान हैं ॥ २१ ॥

क्रुद्धकौशोऽथ वकः कहुः पुष्कराह-
स्तु सारसः ॥ कोकश्चक्रश्चक्राको
रथाद्वाहपनामकः ॥ २२ ॥ वाद-
म्बः कलहसः स्वादुत्कोशकुरुरौ म-
मौ ॥ हसास्तु श्वेतगरुवश्चक्राद्गा
मानसीकसः ॥ २३ ॥

१ म एव च चिन्तोमि चिह्नदृष्टिश्च मीढुक्ति ॥
२ रिज्यामि एकदृष्टि मौक्तो यत् सीना नाग
और पुनरसमें पाएके पिनेपर ॥

२ पुष्कराह यत् ता पक्षपादपक्षरुहे

क्रुच् कौच यह दो नाम टैकपक्षीके हैं
इसको कुरकुचाभी कहते हैं वक कहु यह
दो नाम बगुलाके हैं पुष्कराह सारस यह
दो नाम सारसके हैं कोक चक्र चक्रवाक
रथाग यह चार नाम चक्रवाके हैं रथागा-
ह्यनामक इस शब्दका अर्थ इसप्रकार है
कि रथागनाम चक्रके जो नाम है वह ही
नाम होवे जिसके सो रथागाह्यनामक है
॥ २२ ॥ कादव कलहस यह दो नाम
बतकके हैं उत्कोश कुरुर यह दो नाम कु-
रुरीके हैं यह शब्द आपसमें समानलिंग है
हस श्वेतगरुव चक्राग मानसीकस् यह चार
नाम हसके हैं यहाँ बहुत्वविषयमें बहुवच-
न है ॥ २३ ॥

राजहंसास्तु ते चञ्चुरणैर्लोहितैः
सिताः ॥ मलिनैर्मल्लिकाक्षस्ते धा-
तुराट्टाः सितेतरैः ॥ २४ ॥ शरा-
रिराटिराटिश्च बलाका विसफण्डि-
का ॥ हंसस्य पोषिद्धटा सारमस्य
नु लक्ष्मणा ॥ २५ ॥

और जो कि हंस नाम शरीरकर श्वेत
और टाट चोंच तथा चरणोंकर युक्त हों तो
वह राजहंससत्तिक हैं और जो कि हंस
शरीरकर श्वेत और मलिनचोंच चरणोंमें
युक्त हो वह मल्लिकाक्षगणिक हैं और नी-
कि हंस शरीरकर श्वेत और टाटे मोटे
चरणोंसे युक्त हों वह धातुराट्टगणिक हैं
॥ २४ ॥ शरारि आदि आदि मल्लिकाक्षोंमें

होता है ॥ ३७ ॥ पोत पाक अर्भक डिंभ पृथुक
शावक शिशु यह सात नाम वच्चेके हैं। स्त्रीपुंस
मिथुन द्वंद्व यह तीन नाम स्त्रीपुरुषरूप
जोडेके हैं तिसमें स्त्रीपुंस शब्द द्विवचन त-
था पुल्लिङ्ग है और शेष नपुंसक लिङ्ग हैं युग्म
युगुल युग यह तीन जोडेके हैं कोई आ-
चार्य द्वंद्वशब्दकाभी युग्मके साथ अन्वय
करते हैं ॥ ३८ ॥

समूहनिवहव्यूहसंदोहविसरव्रजाः ॥

स्तोमौघनिकरव्रातवारसंघातसंचयाः

॥ ३९ ॥ समुदायः समुदयः समवा-
यश्च यो गणः ॥ स्त्रियां तु संहतिर्वृ-
न्दं निकुरम्बं कदम्बकम् ॥ ४० ॥

समूह निवह व्यूह संदोह विसर व्रज
स्तोम ओघ निकर व्रात वार संघात संचय
॥ ३९ ॥ समुदाय समुदय समवाय चय
गण संहति वृन्द निकुरम्ब कदम्बक यह
बाईस नाम समूहके हैं तिसमें संहति शब्द
स्त्रीलिङ्गमें होता है ॥ ४० ॥

वृन्दभेदाः समैवर्गः सङ्घसार्थौ तु
जन्तुभिः ॥ सजातीयैः कुलं यूथं ति-
रश्चां पुनपुंसकम् ॥ ४१ ॥ पशूनां
समजोऽन्येषां समाजोऽथ सधर्मिणा-
म् ॥ स्यान्निकायः पुञ्जराशी तूत्क-
रः कूटमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥ कापोत-
शौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्वर्णे ॥
गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्छेकास्ते गृह्य-
काश्च ते ॥ ४३ ॥

॥ इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

और समूहके भेद विशेष हैं सम अ-
र्थात् सजातीय प्राणी वा अप्राणियोंका स-
मूह है वह वर्ग संज्ञिक है। यथा मनुष्यवर्गः
शैलवर्गः और सजातीय और विजातीय
जन्तुओंका समूह है वह संघ सार्थ संज्ञिक
है। यथा पशुसंघ वणिक्सार्थ और सजातीय
जन्तुओंका जो समूह है वह कुल संज्ञिक
है। यथा विप्रकुल और सजातीय तिर्यक्जा-
तीका जो समूह है वह यूथ संज्ञिक है
यूथशब्द पुनपुंसकलिङ्ग है यथा मृगयूथ
॥ ४१ ॥ और पशुओंका समूह समज
संज्ञिक है और अन्य अर्थात् पशुओंसे
भिन्नोंका समूह समाज संज्ञिक है। यथा
श्रोत्रियसमाज और एक धर्मवालोंका जो
समूह है वह निकाय संज्ञिक है यथा श्रो-
त्रियनिकायः पुंज राशि उत्कर कूट यह
चार नाम धान्यादिकोंके ढेरके हैं तिसमें
कूटशब्द पुनपुंसकलिङ्गमें होता है ॥ ४२ ॥
कापोत शौक मायूर तैत्तिर इत्यादिक शब्द
तिन कपोतादिकोंके समूहमें वर्तते हैं यथा
कपोतोंका समूह कापोत संज्ञिक है शुकोंका
समूह शोक संज्ञिक है। और मोरोंका समूह
मायूर संज्ञिक है। और तीतरोंका समूह तैत्तिर
संज्ञिक है आदिशब्दसें काकादिक जानने
योग्य हैं। जो पक्षी मृग वरमें आमुक्त हैं
अर्थात् खेलनेकेवास्ते पींजराआदिकमें स्था-
पित किये हैं वह छेक गृह्यक संज्ञिक हैं ॥ ४३ ॥

इति सिंहादिवर्गः ।

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मान-
वा नराः ॥ स्युः पुमांसः पञ्चजनाः
पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥ स्त्री यो-
पिदवला योषा नारी सीमन्तिनी व-
धूः ॥ प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता
महिला तथा ॥ २ ॥

मनुष्य मानुष मर्त्य मनुज मानव नर
।स पचजन पुरुष पूरुष नृ यह ग्यारह नाम
मनुष्यके है तिसमें पुस् आदिक पाच नाम
मनुष्यके है तिसमें पुस् आदिक पाच नाम
बहुधाकरके पुरुषजातिमेही प्रयुक्त होते है
। १ ॥ स्त्री योपि अवला योषा नारी
सीमन्तिनी वधू प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता
महिला यह ग्यारह नाम स्त्रीके है ॥ २ ॥

विशेषास्त्वद्भना भीरुः कामिनी वा-
मलोचना ॥ प्रमदा मानिनी कान्ता
ललना च नितम्बिनी ॥ ३ ॥ सु-
न्दरी रमणी रामा कोपना सैव भा-
मिनी ॥ वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा
वरवर्णिनी ॥ ४ ॥

स्त्रियोंके भेद विशेष है अगना यह एक
नाम उत्तम अगोवाली स्त्रीका है भीरु यह
एक भयशील डरपोसी स्त्रीका है कामिनी यह
एक नाम कामयुक्त स्त्रीका है वामलोचना

१ यहां वरवर्णिनी स्त्रीका लक्षण रुद्रकोशमें
लिखा है शीते सुखोष्णसर्वांगी श्रीष्मे या सुख
शीतला ॥ भर्तृभक्ता च या नारी विज्ञेया वर-
वर्णिनी ॥ १ ॥

यह एक नाम सुन्दरनेत्रवाली स्त्रीका है प्र-
मदा यह एक नाम अत्यन्त कामवेगवाली
स्त्रीका है मानिनी यह एक नाम स्नेहपूर्वक
क्रोधवाली स्त्रीका है कान्ता यह एक नाम
मनोहर स्त्रीका है ललना यह एक नाम
लाडयुक्त स्त्रीका है नितम्बिनी यह एक नाम
सुन्दर कमरवाली स्त्रीका है ॥ ३ ॥ सुन्दरी
यह एक नाम सुन्दरअगोवाली स्त्रीका है
रमणी यह एक नाम रमणकरानेवाली स्त्रीका
है रामा यह एक नाम रमणकरनेवाली स्त्रीका
है कोपना भामिनी यह दो नाम क्रोधवाली
स्त्रीके है वरारोहा मत्तकाशिनी उत्तमा वर-
वर्णिनी यह चार नाम अत्यन्त गुणवाली
स्त्रीके है ॥ ४ ॥

कृताभिषेका महिषी भोगिन्योऽन्या
नृपस्त्रियः ॥ पत्नी पाणिगृहीती च
द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ५ ॥ भार्या
जायाथ पुंभूम्नि दाराः स्यात् कुटु-
म्बिनी ॥ पुरंध्री सुचरित्रा तु सती
साध्वी पतिव्रता ॥ ६ ॥

जिस राजाकी स्त्रीका अभिषेक किया
गया हो वह महिषी सज्जिक है और अन्य-
(विना अभिषेकवाली राजस्त्रियों) भोगिनी
सज्जिक है पत्नी पाणिगृहीती द्वितीया सहधर्मि-
णी ॥ ५ ॥ भार्या जाया दार यह सात नाम
विवाहित स्त्रीके है तिसमें दार शब्द पुलिंग
और बहुवचनमें होता है कुटुम्बिनी पुरंध्री
यह दो नाम पतिपुत्रादिकवाली स्त्रीके है

सुचरित्रा सती साध्वी पतिव्रता यह चार नाम पतिव्रता स्त्रीके हैं ॥ ६ ॥

कृतसापत्निकाध्यूढाधिविन्नाथ स्वयंवरा ॥ पतिंवरा च वर्याथ कुलस्त्री कुलपालिका ॥ ७ ॥ कन्या कुमारी गौरी तु नम्रिकाऽनागतार्त्तवा ॥ स्यान्मध्यमा दृष्टरजास्तरुणी युवतिः समे ॥ ८ ॥

कृतसापत्निका अध्यूढा अधिविन्ना यह तीन नाम बहुतसे कियेहुए विवाहवाले पुरुषकी पहिली विवाहिता स्त्रीके नाम हैं. स्वयंवरा पतिंवरा वर्या यह तीन नाम अपनी इच्छाहीसे पतिके वरनेमें उद्युक्त हुई स्त्रीके हैं कुलस्त्री कुलपालिका यह दो नाम कुलवती स्त्रीके हैं ॥ ७ ॥ कन्या कुमारी यह दो नाम पहिली अवस्थामें वर्त्तमान हुई स्त्रीके हैं गौरी नम्रिका अनागतार्त्तवा यह तीन नाम नहींदीखे हुए रजवाली स्त्रीके हैं. गध्यमा दृष्टरजस् यह दो नाम प्रथम प्राप्तहुए रजवाली स्त्रीके हैं. तरुणी युवति यह दो नाम मध्यम अवस्थामें प्राप्त हुईस्त्रीके हैं. आपसमें समानलिङ्ग हैं ॥ ८ ॥

समाः सुपाजनीवध्वश्चिरिण्टी तु सुवासिनी ॥ इच्छावती कामुका स्याद्वृषस्यन्ती तु कामुकी ॥ ९ ॥ कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साऽभिसारिका ॥ पुंश्चली धर्षिणी वन्धसती कुलदेवरी ॥ १० ॥

स्वैरिणी पांसुला च स्यादशिश्वी शिशिशुना विना ॥ अवीरा निष्पत्तिस्तुता विश्वस्ताविधवे समे ॥ ११ ॥

सुपा जनी वधू यह तीन नाम पुत्रादिकोंकी स्त्रियोंके हैं कोई आचार्य वधू यह एक नाम नवीन विवाहितस्त्रीका कहते हैं चिरिंटी सुवासिनी यह दो नाम कुछ प्राप्तहुए यौवनवाली विवाहितस्त्रीका है. इच्छावती कामुका यह दो मैथुन धनादिकोंके चाहनेवाली स्त्रीका है. वृषस्यन्ती कामुकी यह दो नाम मैथुनकेही चाहनेवाली स्त्रीका है ॥ ९ ॥ और जो कि कान्तके चाहनेवाली स्त्री भर्त्ताके संकेतस्थानको जाती है वह अभिसारिका संज्ञिक है. पुंश्चली धर्षिणी बंधकी असती कुलटा इतरी ॥ १० ॥ स्वैरिणी पांसुला यह आठ नाम व्यभिचारिणीके हैं और जो विना बालकके वर्त्तमान है वह अशिश्वी संज्ञिक है और जो कि विनापति पुत्रवाली है वह अवीरा संज्ञिक है विश्वस्ता विधवा यह दो नाम रण्डास्त्रीके हैं यह शब्द दोनों समान हैं ॥ ११ ॥

आलिः सखी वयस्याऽथ पतिवन्ती सभर्तृका ॥ वृद्धा पलिकी प्राज्ञी तु प्रज्ञाप्रज्ञा तु धीमती ॥ १२ ॥ शूद्रा शूद्रस्य भार्या स्याच्छूद्रा तज्जातिरेव च ॥ आभीरी तु महाशूद्रा जातिपुंयोगयोः समा ॥ १३ ॥

आलि सखी वयस्या यह तीन नाम सखीके हैं. पतिवन्ती सभर्तृका यह दो नाम

जो मतेहुए भर्त्तारवाली स्त्रीके है वृद्धा पलिकी यह दो नाम बूढ़ी स्त्रीके है प्राज्ञी प्रज्ञा यह दो नाम सच अच्छी तरहसे जाननेवाली स्त्रीका है प्राज्ञा धीमती यह दो नाम बुद्धिमती स्त्रीके है । और जो कि शूद्रकी स्त्री हैं वह विजातीयभी हो परंतु तबभी शूद्रा सन्निक है और जो कि शूद्रजाति होकर अन्यकी स्त्रीभी हो वह शूद्रा सन्निक है आभीरी महाशूद्रा यह दो नाम म्वालिनीके हैं यह महाशूद्रा-शब्द जाति और पुयोगमें समान है अर्थात् यह महाशूद्राशब्द जाति तथा पुयोगमें डी-पूतययान्त होता है यथा [महाशूद्रस्य जातिः महाशूद्रा] और [महाशूद्रस्य स्त्री महाशूद्रा] इसीप्रकार आभीरीशब्द जानना चाहिये

अयोध्या स्वयमर्या स्यात्क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ॥ उपाध्यायाप्युपाध्यायी स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥ १४ ॥
आचार्यानी तु पुयोगे स्यादर्या क्षत्रियी तथा ॥ उपाध्यायान्पुपाध्यायी गेटा स्त्रीपुसलक्षणा ॥ १५ ॥

अपाणा अर्या यह दो नाम वैश्यजातिमें उत्पन्न हुई स्त्रीके नाम हैं अर्थात् यह दो नाम उमके हैं जो कि स्वयं तो वैश्यजाति हो और स्त्री जिगज्जिगीकी हो क्षत्रिया क्षत्रियाणी यह दो नाम उमके हैं जो स्वयं तो क्षत्रिय जाति हो और स्त्री गित

कसीकी हो उपाध्याया उपाध्यायी यह दो नाम पढानेवाली स्त्रीके हैं और जो कि स्वतःही मंत्रव्याख्या करनेवाली स्त्री है वह आचार्या सन्निक है ॥ १४ ॥ और पुयोगमें आचार्यानी शब्द होता है यथा [आचार्यस्य स्त्री आचार्यानी] और तिसीप्रकार अर्या तथा क्षत्रियी शब्द होते हैं यथा [अर्यस्य स्त्री अर्या] सन्निक है और [क्षत्रियस्य स्त्री क्षत्रियी] सन्निक है उपाध्यायानी उपाध्यायी यह दो नाम पढानेवाली स्त्रीके हैं और जो कि स्त्री स्त्रीपुरुष दोनोंके लक्षण कुछ स्मश्रुरूपसे युक्त है वह पोटा सन्निक है ॥ १५ ॥

वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसुः ॥ जातापत्या मजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १६ ॥ स्त्री नग्निका कोटवी स्याद्वृत्तीसंचारिके समे ॥ कात्यायन्यर्धवृद्धा या कापायवसनाऽधवा ॥ १७ ॥

वीरपत्नी वीरभार्या यह दो नाम शून्वीरकी स्त्रीके हैं वीरमाता वीरसु यह दो नाम गुरवीरकी माताके हैं जातापत्या मजाता प्रसूता प्रसूतिका यह चार नाम प्रसूतास्त्रीके हैं ॥ १६ ॥ और जो कि नगी स्त्री है वह कोटवी नग्निका है दूती संचारिका यह दो नाम दूतिका है और जो कि स्त्री आधी बूढ़ी तथा कापायवस और अधवा है वह कात्यायनी सन्निक है ॥ १७ ॥

सैरन्ध्री परवेशमस्था स्ववशा शिल्प-
कारिका ॥ असिक्री स्यादवृद्धा या
प्रेष्याऽन्तःपुरचारिणी ॥ १८ ॥
वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवाऽ-
थ सा जनैः ॥ सत्कृता वारमुख्या
स्यात्कुट्टनी शम्भली समे ॥ १९ ॥

और जो कि दूसरेके घरमें रहनेवाली
स्वतंत्र होकर केशप्रसाधनादिक कारीगरी
करती है वह सैरन्ध्री संज्ञिक है और जो
कि अवृद्ध स्त्री सेवक होकर अन्तःपुर(राज-
महल)में रहती है वह असिक्री संज्ञिक है
॥ १८ ॥ वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवा
यह चार नाम वेश्याके हैं और जो कि
वेश्या गुणवती होनेसे मनुष्योंने सत्कार की
है वह वारमुख्या संज्ञिक है. कुट्टनी शम्भली
यह दो नाम उसके हैं जो कि पुरुषके साथ
पराई स्त्रियों जोड़ती है यह दोनों शब्द आ-
पसमें समान हैं ॥ १९ ॥

विप्रश्रिका त्वीक्षणिका दैवज्ञाऽथ र-
जस्वला ॥ स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी म-
लिनी पुष्पवत्यपि ॥ २० ॥ ऋतुम-
त्यप्युदक्यापिस्याद्रजःपुष्पमार्तवम् ॥
श्रद्धालुर्दोहदवती निष्कला विगता-
र्तवा ॥ २१ ॥

१ कात्यायनने सैरन्ध्रीका लक्षण कहा है—
चतुःषष्टिकलाभिज्ञा शीलरूपादिसेविनी ।
प्रसाधनोपचारज्ञा सैरन्ध्री परिकीर्त्तिता ॥१॥

विप्रश्रिका ईक्षणिका दैवज्ञा यह तीन नाम
शुभ अशुभ लक्षणा कहनेवाली स्त्रियोंके हैं
रजस्वला स्त्री धर्मिणी अवि आत्रेयी म-
लिनी पुष्पवती ॥ २० ॥ ऋतुमती उद-
क्या यह आठ नाम रजोवती स्त्रियोंके हैं र-
जसू पुष्प आर्तव यह तीन नाम स्त्रियोंके र-
जके हैं श्रद्धालु दोहदवती यह दो नाम
गर्भके वशसे अन्नादिक विशेषकी अभिला-
षा करनेवाली स्त्रियोंके हैं निष्कला विगतार्तवा
यह दो नाम हीनरजवाली स्त्रियोंके हैं ॥ २१ ॥

आपन्नसत्त्वा स्यादुर्विण्देन्तर्वती च
गर्भिणी ॥ गणिकादेस्तु गाणिक्यं
गार्भिणं यौवतं गणे पु-
नर्भूदिधिषूरूढा द्विस्तस्या दिधिषुः प-
तिः ॥ स तु द्विजोऽग्रेदिधिषः सैव
यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३ ॥

आपन्नसत्त्वा गुर्विणी अन्तर्वती गर्भिणी
यह चार नाम गर्भिणी स्त्रियोंके हैं. गणिका-
दिकोंके गणोंमें गाणिक्य गार्भिण यौवत
शब्द वर्तते हैं जैसे गणिकाओंका समूह गा-
णिक्य संज्ञिक है गर्भिणियोंका समूह गार्भिण
संज्ञिक है युवतियोंका समूह यौवत संज्ञिक
है ॥ २२ ॥ और जो कि स्त्री दो बार व-
रीगई है वह पुनर्भू दिधिषू संज्ञिक है और
उस दो बार वरीहुईका पति दिधिषु संज्ञिक
है और वह दोवार वरी हुई जिसकी कुटु-
म्बिनी अर्थात् पुत्रादिक पोष्यवर्गवाली है
वह द्विज अग्रेदिधिषू संज्ञिक है यहाँ द्विज
शब्दसे तीनों वर्णोंका ग्रहण है ॥ २३ ॥

कानीनः कन्यकाजातः सुतोऽथ सु-
भगासुतः ॥ सौभागिनेयः स्यात्पार-
स्त्रैणेयस्तु परस्त्रियाः ॥ २४ ॥ पैतृ-
ष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्त्रीयश्च पितृष्व-
सुः ॥ सुतो मातृष्वसुश्चैवं वैमात्रेयो
विमातृजः ॥ २५ ॥

जो कन्यका अर्थात् विना विवाहित
स्त्रीसे उत्पन्न हुआ है वह कानीन सन्निक
है जैसे कर्ण व्यास आदिक. सुभगासुत
सौभागिनेय यह दो नाम सुभगापुत्रके है
और परस्त्रीका पुत्र है वह पारस्त्रैणेय स-
न्निक है ॥ २४ ॥ और जो पितृष्वसु अ-
र्थात् पिताकी वहनिका जो पुत्र है वह
पैतृष्वसेय पैतृष्वस्त्रीय सन्निक है और इसी-
प्रकार मातृष्वसु अर्थात् माताकी वहनिका
पुत्र मातृष्वसेय मातृष्वस्त्रीय सन्निक है. वै-
मात्रेय विमातृज यह दो नाम सौतेले भाई-
के है ॥ २५ ॥

अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चास-
तीसुतः ॥ कौलटेरः कौलटेयो भिक्षु-
की तु सती यदि ॥ २६ ॥ तदा
कौलटिनेयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चा-
त्मजः ॥ आत्मजस्तनयः सन्नु. सुतः
पुत्र स्त्रिया त्वमी ॥ २७ ॥ आहु-
र्द्वितरं सर्वेऽपत्यं तोकं तपो. समे ॥
स्यजाते त्वोरसोरस्पौ तातस्तु जनक.
पिता ॥ २८ ॥

बाधकिनेय बन्धुल असतीसुत कौलटेर

कौलटेय यह पाच नाम व्यभिचारिणीके पु-
त्रके है और जो कि पतिव्रता भिक्षा माँग-
नेवाली हो तौ उसका पुत्र कौलटिनेय
कौलटेय सन्निक है. भाव यह है कि जो कि
घरांकेपति भिक्षाकेलिये जाती है न कि
जारकेलिये उस कुलटाका पुत्र कौलटिनेय
सन्निक है और अन्यका कौलटेर सन्निक
है यह भेद हैं (कुल जनपदे गृहे इतिविश्व)
आत्मज तनय सन्नु सुत पुत्र यह पाच नाम
पुत्रके है यह आत्मज आदिकशब्द स्त्रीलगेके
विषे वर्त्तमान होकर सब दुहितृ अर्थात्पुत्रीको
कहते है. यथा आत्मजा तनया सन्नु सुता पुत्री
दुहितृ यह छे नाम पुत्रीके हैं और तिन
दोनों पुत्र तथा पुत्रीमें अपत्य तोक शब्द
वर्त्ते है यह दोनों शब्द समान है औरस्य
उरस्य यह दो नाम विवाहितसवर्ण स्त्रीके-
विषे अपने सकाशसे उत्पन्नहुए पुत्रमें वर्त्ते
है तात जनक पितृ यह तीन नाम पिताके
है ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

जनपित्री प्रसूमाता जननी भगिनी
स्वसा ॥ ननान्दा तु स्वसा पत्यु-
र्नपुत्री पौत्री सुतात्मजा ॥ २९ ॥
भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातर. स्युः प-
रस्परम् ॥ भ्राजावती भ्रातृजाया मा-
तुलानी तु मातुली ॥ ३० ॥

जनपित्री प्रसू मातृ जननी यह चार
नाम माताके है भगिनी स्वस्र यह दो नाम
बहिनिके है और जो पतिकी वहनि है यह
ननाद सन्निक है और जो कि पुत्रको या

पुत्रीकी पुत्री है वह नपुत्री पौत्री संज्ञिक है ॥ २९ ॥ और भ्रातृवर्गकी जो भार्या हैं वह परस्पर यातृ संज्ञिक हैं. प्रजावती भ्रातृजाया यह दो नाम भाईकी स्त्रीके हैं. मातुलानी मातुली यह दो नाम मामाकी स्त्रीके हैं ॥ ३० ॥

पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः श्वशुरस्तु
पिता तयोः ॥ पितुर्भ्राता पितृव्यः
स्यान्मातुर्भ्राता तु मातुलः ॥ ३१ ॥
श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः स्वामिनो
देवृदेवरौ ॥ स्वस्त्रीयो भागिनेयः
स्याज्जामाता द्रुहितुः पतिः ॥ ३२ ॥

पति अथवा पत्नीकी जो माता है वह श्वश्रू संज्ञिक है. और उन दोनोंका पिता श्वशुर संज्ञिक है. पिताका भाई पितृव्य संज्ञिक है. और माताका भाई मातुल संज्ञिक है ॥ ३१ ॥ और पत्नी अर्थात् अपनी विवाहितस्त्रीके जो भाई हैं. वह श्याल संज्ञिक हैं. और पतिके छोटे भाईमें देवृ देवर शब्द वर्ते हैं. स्वस्त्रीय भागिनेय यह दो नाम वहनिके पुत्रके हैं. पुत्रीका जो पति है वह जामातृ संज्ञिक है ॥ ३२ ॥

पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपिता-
महः ॥ मातुर्मातामहाद्येवं सपिण्डा-
स्तु सनाभयः ॥ ३३ ॥ समानोदर्यसो-
दर्यसगर्भसहजाः समाः ॥ सगोत्रवा-
न्धवज्ञातिवन्धुस्वस्वजनाः समाः ॥ ३४ ॥

पितामह पितृपितृ यह दो नाम पिताके पिताके हैं इसको दादाभी कहते हैं. और

उस दादाका पिता प्रपितामह संज्ञिक है. और इसीप्रकार माताके पिता दादा मातामह प्रमातामह संज्ञिक हैं जैसे माताके पिता मातामह यह एक नाम नानाका है. और नानाके पिता प्रमातामह संज्ञिक हैं. सपिण्ड सनाभि यह दो नाम सातपुरुषोंकी अवधिपर्यन्त जातियोंमें वर्ते हैं ॥ ३३ ॥ समानोदर्य सोदर्य सगर्भ सहज यह चार नाम सगे भाईके हैं. सगोत्र बान्धव ज्ञाति बंधु स्वस्वजन यह छे नाम सगोत्रके हैं ॥ ३४ ॥

ज्ञातेयं बन्धुता तेषां क्रमाद्भावसमू-
हयोः ॥ धवः प्रियः पतिर्भर्ता जार-
स्तूपपतिः समौ ॥ ३५ ॥ अमृते
जारजः कुण्डो मृते भर्तरि गोलकः ॥
भ्रात्रीयो भ्रातृजो भ्रातृभगिन्यौ
भ्रातराबुभौ ॥ ३६ ॥

तिनके भाव और समूहमें क्रमसे ज्ञातेय बंधुता शब्द होवे हैं जैसे ज्ञातियोंका भाव ज्ञातेय संज्ञिक है. और बन्धुओंका समूह बन्धुता संज्ञिक है. धव प्रिय पति भर्तृ यह चार नाम पतिके हैं. जार उपपति यह दो नाम मुख्य पतिसे अन्यभर्ताके नाम हैं यह दोनों शब्द समान हैं ॥ ३५ ॥ पतिके मरनेपर जो कि पुत्र जारसे उत्पन्न हुआ है वह कुंड संज्ञिक है. और पतिके मरनेपर जो जारसे उत्पन्न हुआ है वह गोलक संज्ञिक है. भ्रात्रीय भ्रातृज यह दो नाम भाईके पुत्रके हैं भ्राता और बहनि यह दोनों भ्रातरौ सं-

क्तिक हैं यहाँ भाई वहनि दोनोंका ग्रहण
होनेसें द्विवचन है ॥ ३६ ॥

मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्र-
सूजनयितारौ ॥ श्वश्रूश्चशुरौ श्वशु-
रौ पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ॥ ३७ ॥
दंपती जंपती जायापती भार्यापती
च तौ ॥ गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्वं
च कल्लोऽस्त्रियाम् ॥ ३८ ॥

मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजन-
यितारौ यह चार नाम द्विवचनान्तमाताके
साथ कहेहुए पितामें वर्त्ते है अर्थात् यह चार
नाम मातापिता दोनोंके हैं श्वश्रूश्चशुरौ
श्वशुरौ यह दो नाम द्विवचनान्त शाशशुश-
रदोनोंके हैं पुत्र और दुहितृ (पुत्री) यह दोनों
एक उक्तिमें पुत्रौ सक्ति है ॥ ३७ ॥ द-
म्पती जंपती जायापती भार्यापती यह चार
नाम एक उक्तिमें पतिपत्नीके है यह शब्द
द्विवचनात् पुल्लिङ्गमें होते हैं, गर्भाशय जरायु
उल्व यह तीन नाम उस चर्मके है जिसक-
रके लिपटाहुआ गर्भ कुक्षिमें रहता है कल्ल
यह एक नाम वीर्य और रुधिरके इक्के हो-
नेका है यह पुनपुनः पुल्लिङ्गमें होता है ॥ ३८ ॥

सृतिमासो वैजननो गर्भा भ्रूण इमौ
मर्मा ॥ तृतीयामरुति पण्ड ह्येव
पण्डो नपुसके ॥ ३९ ॥ शिशुत्वं
शैशवं बाल्यं तारुण्यं यौवनं नमे ॥
स्यात्स्थविरश्च वृद्धश्च वृद्धसङ्घोऽपि
पार्थक्यम् ॥ ४० ॥

सृतिमास वैजनन यह दो नाम प्रसव-
मासके हैं गर्भा भ्रूण यह दो नाम गर्भके है यह
दोनों शब्द समान है तृतीयामरुति पण्ड क्लृप्त
पण्ड नपुसक यह पांच नाम नपुसकके है इ-
सकों ही जरा कहते है ॥ ३९ ॥ शिशुत्व
शैशवं बाल्यं यह तीन नाम बाल्यपनके हैं
तारुण्यं यौवनं यह दो नाम तरुणताके हैं
यह दोनोंशब्द आपसमें समान है स्थाविर
वृद्धत्व वार्द्धक्यं यह तीन नाम वृद्धताके है
तिसमें वार्द्धक्यं शब्द वृद्धोंके समूहमेंभी
होता है ॥ ४० ॥

पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ वि-
क्षसा जरा ॥ स्यादुत्तानशया हि-
म्भा स्तनपा च स्तनधयी ॥ ४१ ॥
वाटस्तु स्यान्माणवको वयस्थस्तरु-
णो पुत्रा ॥ प्रवयाः स्थविरो वृद्धो
जीनो जीर्णो जरन्नपि ॥ ४२ ॥

वाल्लोका वृद्धपणामे जो शौक्ल्य (पादुरता)
का नाम पलित है विन्मसा जरा यह दो नाम
वृद्धताका है उत्तानशया हिम्भा स्तनपा स्तनध-
यी यह चार नाम वृद्ध होनेवाले वृद्धोंके है यह
शब्द तीनों लिङ्गमें कहे जायेंगे यहाँ जो स्त्रीत्व-
करके निर्देश है वह स्त्रीचर्म रूपभेदके दिशा-
नेकेवास्ते है और हिम्भाशय तिलादिज्वरगमं
कहाभी है परन्तु यहाँ स्त्रीलिङ्गने निर्दिष्ट ताव-
त्तत्त्व दिशानेक्याम्ने किन्तु कहा है ॥ ४१ ॥
वाट माणवक यह दो नाम वाटरके है व-
यस्य तन्मय युवक यह तीन नाम जराके है
प्रवयस् स्थविर वृद्ध जीन जीर्ण जरा यह
छ नाम वृद्धोंके है ॥ ४२ ॥

वर्षीयान्दशमी ज्यायान्पूर्वजस्त्वग्रि-
योऽग्रजः ॥ जघन्यजे स्युः कनिष्ठ-
यवीयोवरजानुजाः ॥ ४३ ॥ अमां-
सो दुर्वलश्छातो बलवान्मांसलोऽस-
लः ॥ तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कु-
क्षिः पिचण्डिलः ॥ ४४ ॥

वर्षीयस् दशमिन् ज्यायस् यह तीन नाम
अतिबूढके हैं पूर्वज अग्रिय अग्रज यह तीन
नाम बड़े भाईके हैं. जघन्यज कनिष्ठ यवीयस्
अवरज अनुज यह पांच नाम छोटे भाईके
हैं ॥ ४३ ॥ अमांस दुर्वल छात यह तीन
नाम निर्बलके हैं. बलवत् मांसल अंसल यह
तीन नाम बलवानके हैं तुन्दिल तुन्दिभ तुन्दिन्
बृहत्कुक्षि पिचण्डिल यह पांच नाम बड़े पे-
टवालेके हैं ॥ ४४ ॥

अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो नतनासि-
के ॥ केशवः केशिकः केशी बलिनो
बलिभः समौ ॥ ४५ ॥ विकलाङ्ग-
स्त्वपोगण्डः खर्वो ह्रस्वश्च वामनः ॥
खरणाः स्यात्खरणसो विग्रस्तु गत-
नासिकः ॥ ४६ ॥

अवटीट अवनाट अवभ्रट नतनासिक
यह चार नाम चपटी नाकवालेके हैं केशव
केशिक केशिन् यह तीन नाम सुन्दर केश-
वालेके हैं. बलिन बलिभ यह दो नाम उसके
हैं जिसका कि चर्म बुढापेसें ढीला होजाता
है यह दोनों शब्द समान हैं ॥ ४५ ॥ वि-
कलाङ्ग अपोगण्ड यह दो नाम स्वभावसें

न्यून अङ्गवालेके हैं. खर्व ह्रस्व वामन यह
तीन नाम ठिगनेके हैं खरणस् खरणस यह
दो नाम तीखीनाकवालेके हैं. विग्र गतनासिक
यह दो नाम नकटेके हैं ॥ ४६ ॥

खुरणाः स्यात्खुरणसः प्रजुः प्रगतजा-
नुकः ॥ ऊर्ध्वजुर्ऊर्ध्वजानुः स्यात्संजुः
संहतजानुकः ॥ ४७ ॥ स्यादेडे व-
धिरः कुब्जे गडुलः कुकरे कुणिः ॥
पृश्निरल्पतनौ श्रोणः पङ्क्तौ मुण्डस्तु
मुण्डिते ॥ ४८ ॥

खुरणस् खुरणस यह दो नाम विकटना-
सिकावालेके हैं. प्रजु प्रगतजानुक यह दो नाम
उसके हैं जिसकि घोंटुओंमें बड़ा फासला
हो. ऊर्ध्वजु ऊर्ध्वजानु यह दो नाम उसके हैं
जिसके कि स्थित होनेपर घोंटू ऊँचे होजावै
संजु संहतजानुक यह दो नाम मिलेहुए घु-
टनेवालेके हैं ॥ ४७ ॥ एड वधिर श्रवणो-
न्द्रियसें वर्जितहुये पुरुषके हैं इसको बहिराभी
कहते हैं कुब्ज गडुल यह दो नाम कूबडेके
हैं. कुकर कुणि यह दो नाम रोगादिकसें दूषित
हाथवालेके हैं इसको लुंजा कहते हैं पृश्नि
अल्पतनु यह दो नाम छोटे अङ्गवालेके हैं
श्रोण पङ्गु यह दो नाम पङ्गुलेके हैं. मुंड मुं-
डित यह दो नाम मुंडितके हैं ॥ ४८ ॥

बलिरः केकरे खोडे खञ्जस्त्रिपु जरा-
वराः ॥ जडुलः कालकः पिपुस्तिल-
कस्तिलकालकः ॥ ४९ ॥ अनाम-
यं स्यादारोग्यं चिकित्सा रुक्प्रति-

क्रिया ॥ भेषजौषधभैषज्यान्पगदो
जायुरित्यपि ॥ ५० ॥

वलिर केकर यह दो नाम नेत्रहीन अ-
र्थात् काणाके है खोह खज यह दो नाम
लिंगेके है, जराशब्दसें पीछें उत्तानशयादिक
खजपर्यन्त शब्द तीनों लिंगमें होते हैं जड़ल
कालक पिष्ठ यह तीन नाम देहमें उत्पन्न
हुए लक्षणवर्णचि हके हैं इसकों लसाभी क-
हते हैं तिलक तिलकालक यह दो नाम उ-
त्पत्ते हैं जो कि स्वरूप और वर्णसें काले
तिलकीसमान देहमें उत्पन्न हुआ चिन्ह है
इसकों तिल कहते हैं ॥ ४९ ॥ अनामय
आरोग्य यह दो नाम नीरोगके है चिकित्सा
रूपप्रतिक्रिया यह दो नाम रोगके दूर कर-
नेके है भेषज औषध भैषज्य अगद जायु
यह पाच नाम औषधके है इसकों दवा कहते
हैं अगदके साहचर्यसें जायुशब्दभी पुलिग
है ॥ ५० ॥

स्त्री रुग्णजा चोपतापरोगव्याधिगदा-
मयाः ॥ क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च
प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ ५१ ॥ स्त्री
क्षुत् क्षतं क्षवः पुंसि कासस्तु क्षवथुः
पुमान् ॥ शोफस्तु श्वयथुः शोथः
पादस्फोटो विपादिका ॥ ५२ ॥

रुग् रुजा उपताप रोग व्याधि गद आ-
मय यह सात नाम रोगमात्रके है क्षय शोष
यक्ष्मन् यह तीन नाम क्षयरोगके है प्रतिश्याय
पीनस यह दो नाम पीनसरोगके हैं ॥ ५१ ॥

क्षुत् क्षुत् क्षव यह तीन नाम छीकके है
कास क्षवथु यह दो नाम खासीके है यह
दोनों शब्द पुलिग है शोक श्वयथु शोथ
यह तीन नाम सूजनके है पादस्फोट विपा-
दिका यह दो नाम विवार्दिके है ॥ ५२ ॥

किलाससिध्मे कच्छां तु पामपामा
विचर्चिका ॥ कण्डूः खर्जुश्च कण्डू-
या विस्फोटः पिटकः स्त्रियाम् ॥ ५३ ॥
व्रणोऽस्त्रियामीर्मरुः क्लीबे नाडीव्र-
णः पुमान् ॥ कोठो मण्डलकं कुष्ठ-
श्वित्रे दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥

किलास सिध्म यह दो नाम सीयरोगके
है कच्छा पामन् पामा विचर्चिका यह चार
नाम खाजके है यह चारो स्त्रीलिगवाची श-
ब्द है कडू खर्जू कडूया यह तीन नाम खु-
जलीके है यह तीनों स्त्रीलिगवाची शब्द
है विस्फोट पिटक यह दो नाम फोडेके है
यह दोनों शब्द स्त्रीलिगमेंभी होते हैं ॥ ५३ ॥
व्रण ईर्म अरुपू यह तीन नाम घावके है तिसमें
व्रणशब्द स्त्रीलिगवर्जित पुनपुसकलिगमें होता
है और शेष नपुसकलिगमेंही होतेहैं और जो
कि घाव सदा गलित रहता है वह नाडीव्रण स-
न्निक है यह शब्द पुलिग है कोठ मण्डलक कुष्ठ
श्वित्त यह चार नाम कुष्ठरोगके है दुर्नामक
अर्शस् यह दो नाम ववासीरोगके हैं ॥ ५४ ॥

आनाहस्तु विचन्धः स्यादग्रहणीरूक्
प्रवाहिका ॥ भच्छर्दिका वमिश्च स्त्री
पुमास्तु वमथु समाः ॥ ५५ ॥ व्या

विभेदा विद्रधिः स्त्री ज्वरमेहभगंद-
राः^१ ॥ अश्मरी मूत्ररुच्छं स्यात्पूर्वं
शुक्रावधेस्त्रिषु ॥ ५६ ॥

आनाह निबंध यह दो नाम उस रोगके हैं जिससे कि मल मूत्र रुकजाता है इसको मलवद्धरोग कहते हैं. ग्रहणीरुज् प्रवाहिका यह दो नाम संग्रहणीरोगके हैं प्रच्छर्दिका वमि वमथु यह तीन नाम वयनरोगके हैं इसको उलटीभी कहते हैं. तिसमें आदिके दोनों शब्द स्त्रीलिंग हैं और वमथु पुल्लिंग है यह तीनों समानार्थवाचक हैं ॥ ५५ ॥ और रोगके भेद हैं विद्रधि यह एक नाम स्त्रीलिंग उदरादिकेविषै गंडभेदका और आदिशब्दसे कपालकर्ण प्रमेह आदिका जाननेयोग्य हैं. ज्वर मेह भगंदर यहभी व्याधिभेद हैं. अश्मरी मूत्ररुच्छ यह दो नाम मूत्ररुच्छके हैं यहाँसे लेकर शुक्रशब्दकी अवधिसँ पूर्व मूर्च्छितशब्दपर्यन्त जो शब्द हैं वह तीनों लिंगमें होते हैं ॥ ५६ ॥

रोगहार्यगंदकारो भिषग्वैद्यौ चिकि-
त्सके ॥ वार्तो निरामयः कल्य उल्ला-
घो निर्गतो गदात् ॥ ५७ ॥ ग्लान-
ग्लान् आमयादी विकृतो व्याधि-
तोऽपटुः ॥ आतुरोऽभ्यमितोऽभ्या-
न्तः समौ पामनकच्छुरौ ॥ ५८ ॥

१ श्लोपटं पादवल्मीकं केशघ्नस्त्रिन्द्रलुप्तकः ।

श्लोपट पादवल्मीक यह दो नाम श्लोपटरोगके हैं इसको वादली कहते हैं केशघ्न इन्द्रलुप्तक यह दो नाम मस्तिककेशरोगके हैं

रोगहारिन् अगदकार भिषज् वैद्य चि-
कित्सक यह पांच नाम वैद्यके हैं. वार्त नि-
रामय कल्य यह तीन नाम रोगवर्जितके हैं और जो कि रोगसे छूट गया है. वह उल्लाघ संज्ञिक है ॥ ५७ ॥ ग्लान ग्लान् यह दो नाम रोगादिकके वशसे हर्षवर्जितके हैं आमयाविन् विकृत व्याधित अपटु आतुर अभ्यमित अभ्यान्त यह सात नाम रोगीके हैं यामन कच्छुर यह दो नाम खाजयुक्तके हैं ॥ ५८ ॥

दद्रुणो दद्रुरोगी स्यादर्शोरोगयुतोऽ-
र्शसः ॥ वादकी वातरोगी स्यात्सा-
तिसारोऽतिसारकी ॥ ५९ ॥ स्युः
क्लिन्नाक्षे चुलचिलपिल्लाः क्लिन्नेऽक्षिण
चाप्यमी ॥ उन्मत्त उन्मादवति श्ले-
ष्मलः श्लेष्मणः कफौ ॥ ६० ॥

दद्रुण दद्रुरोगिन् यह दो नाम दादवालेके हैं और जो कि ववासीरके रोगसे युक्त है वह अर्शस् संज्ञिक है. वातकिन् वातरोगिन् यह दो नाम वातरोगवालेके हैं. सातिसार अ-
तिसारकिन् यह दो नाम अतीसाररोगवालेके हैं ॥ ५९ ॥ क्लिनाक्ष चुल चिल पिल्ल यह चार नाम क्लेदयुक्त नेत्रवालेके इसको चुंधार्थ कहते हैं और यह तीनों शब्द चुलआदिव क्लेदयुक्त नेत्रमेंभी वर्त्ते हैं उन्मत्त उन्मादवति यह दो नाम उन्मादवालेके हैं श्लेष्मल श्ले-
ष्मण कफिन् यह तीन कफयुक्तके हैं ॥ ६० ॥

न्युब्जो भुम्ने रुजा वृद्धनाभौ नुन्दिल-
नुन्दिभौ ॥ किलासी सिध्मलोऽन्धोऽ-

हृद्मूर्छांते भूतमूर्छितौ ॥ ६१ ॥

शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रिया-
णि च ॥ मायुः पित्तं कफः श्लेष्मा
स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा ॥ ६२ ॥

जो रोगसे भुम अर्थात् टेढा होजाता है वह न्युब्ज सक्षिक है भाव यह है कि जिसकी रोगसे टेढी पीठ और मुख नीचा हो जाता है उसको न्युब्ज कहते हैं वृद्धनाभि तुन्दिल तुन्दिभ यह तीन नाम उसके हैं जिसकी कि वातादिकसे ऊँची दूडी होजाती है किलासिन् सिध्मल यह दो नाम सीपिरोग-वालेके हैं अध अट्टशू यह दो नाम अधेके हैं मूर्च्छित यह तीन नाम मूर्च्छितके हैं ॥ ६१ ॥ शुक्र तेजस् रेतस् बीज वीर्य इन्द्रिय यह छे नाम बीरजके हैं मायु पित्त यह दो नाम पित्तके हैं कफ श्लेष्मन् यह दो नाम कफके हैं त्वच् असृग्धरा यह दो नाम चर्मके हैं यह दोनों शब्द स्त्रीलिङ्गमें होते हैं ॥ ६२ ॥

पिशितं तरसं मासं पल्लं कृष्णमा-
मिषम् ॥ उत्तमं शुष्कमासं स्यात्तद-
ल्लूरं त्रिलिङ्गकम् ॥ ६३ ॥ रुधिर-
सृग्लोहितास्त्रकक्षतजशोणितम् ॥
वृकाग्रमासं हृदयं हन्मेदस्तु वषा
वसा ॥ ६४ ॥

पिशित तरस मास पल्ल जय आमिष यह छे नाम मासके हैं उत्तम शुष्कमास वल्गु यह तीन नाम शके मासके हैं तिसमें वल्गु शब्द बीने लिङ्गवाची है ॥ ६३ ॥

रुधिर असृज् लोहित अस रक्त क्षतज शो-
णित यह सात नाम रुधिरके हैं वृका अ-
ग्रमास यह दो नाम हृदयके अन्तर्गत कम-
लाकार मासभेदके हैं इसको कलेजाभी क-
हते हैं हृदय हृद् यह दो नाम हृदयारज्य-
विभ्रदेशके हैं मेदस् वषा वसा यह तीन नाम चर्माके हैं ॥ ६४ ॥

पश्चाद्भीवाशिरा मन्या नाडी तु धम-
नि शिरा ॥ तिलकं क्लोम मस्तिष्कं
गोर्दं किट्टं मलोऽस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥
अन्नं पुरीतत् गुल्मस्तु घ्रीहा पुंस्पथ
धस्तसा ॥ स्नायुः स्त्रिया कालस्रण्ड-
यट्ती तु समे इमे ॥ ६६ ॥

और जो कि पिछारीकी गलेकी नस है वह मन्या सक्षिक है नाडी धमनि शिरा यह तीन नाम नाडीके हैं तिलक क्लोम यह दो नाम मासपिण्डविशेषके हैं इसको पुष्पुस कहते हैं मस्तिष्क गोर्दं यह दो नाम मस्तिकसंज्ञित घृताकारस्तेहके हैं इसको गोद कहते हैं किट्ट मल यह दो नाम कर्णादिकमें स्थित हुए मैलेके हैं तिसमें मलगन्द स्त्रीलिङ्गवर्तित पुनपुसकलिङ्गमें होता है ॥ ६५ ॥ अन्न पुरीतत् यह दो नाम अन्ने हैं इसको आ-तभी कहते हैं गुन्म शीतल यह दो नाम बाँटकोसमें स्थित हुए मासपिण्डविशेषके हैं तिसमें घोरनगन्द पुलिङ्गमें होता है कोर्दं घ्रीहागन्द टाचनभी कहते हैं वस्तसा नायु यह दो नाम अगमत्यमांकी सधियार्थि न-

न्धनरूपनाडीके हैं यह दोनों शब्द स्त्रीलिंगमें होते हैं कालखण्ड यकृत् यह दो नाम दहनीकोखमें स्थितहुए मांसपिण्डके हैं यह दोनों समानलिंग हैं ॥ ६६ ॥

सृणिका स्यन्दिनी लाला दूषिका नेत्रयोर्मलम् ॥ मूत्रं प्रस्राव उच्चारवस्करौ शमलं शकृत् ॥ ६७ ॥ पुरीषं गूथवर्चस्कमस्त्री विष्ठाविशौ स्त्रियौ ॥ स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री कीकसं कुल्यमस्थि च ॥ ६८ ॥

सृणिका स्यन्दिनी लाला यह तीन नाम लारके हैं और जो कि नेत्रोंका मल है वह दूषिका संज्ञिक है इसको कीचडभी कहते हैं मूत्र प्रस्राव यह दो नाम मूत्रके हैं उच्चार अवस्कर शमल शकृत् ॥ ६७ ॥ पुरीष गूथ वर्चस्क विष्ठा विशू यह नौ नाम विष्ठाके हैं तिसमें गूथ वर्चस्क यह दो शब्द पुंनपुंसकलिंग हैं. विष्ठा विशू यह दोनों शब्द स्त्रीलिंग हैं. कर्पर कपाल यह दो नाम कपालके हैं तिसमें कपालशब्द पुंनपुंसकलिंगवाची है. कीकस कुल्य अस्थि यह तीन नाम हड्डिके हैं ॥ ६८ ॥

स्याच्छरीरास्थि कंकालः पृष्ठास्थि तु कशेरुका ॥ शिरोऽस्थनि करोटिः स्त्री पार्श्वास्थनि तु पर्शुका ॥ ६९ ॥

१नासामलं तु सिंघाणं पिंज्रुवं कर्णयोर्मलम् ॥
जो कि नाकका मैल है वह सिंघाण संज्ञिक है और जो कि कानोंका मैल है वह पिंज्रुप संज्ञिक है यह अर्धश्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है

अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनोऽथ कलेवरम् ॥ गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ॥ ७० ॥ कायो देहः क्लीवपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः ॥ पादाग्रं प्रपदं पादः पदङ्घ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम् ॥ ७१ ॥

और जो कि समस्त शरीरके हड्डोंका पींजरा है वह कंकाल संज्ञिक है और पीठके हड्डोंमें कशेरुका शब्द वर्त्तै हैं और शिरके हाडमें करोटि शब्द वर्त्तै है यह शब्द स्त्रीलिंग है बगलके हड्डोंमें पर्शुका शब्द वर्त्तै है ॥ ६९ ॥ अंग प्रतीक अवयव अपघन यह चार नाम शरीरके अंगके हैं कलेवर गात्र वपुष् संहनन शरीर वर्ष्म विग्रह ॥ ७० ॥ काय देह मूर्ति तनु तनू यह बारह नाम शरीरके हैं तिसमें देहशब्द नपुंसक तथा पुंलिंग दोनोंमें होता है और मूर्ति आदिक तीनों स्त्रीलिंगकेविषे होते हैं. पादाग्र प्रपद यह दो नाम पाँवके अगाडोंके हैं. पाद पद् अङ्घ्रि चरण यह चार नाम पाँवके हैं तिसमें चरणशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होता है ॥ ७१ ॥

तद्ग्रन्थी घुटिके गुल्फौ पुमान्पार्णिस्तयोरधः ॥ जङ्घा तु प्रसृता जानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् ॥ ७२ ॥ सक्थि क्लीवे पुमानूरुस्तत्संधिः पुंसि वङ्क्षणः ॥ गुदं त्वपानं पायुर्ना वरितर्नाभिरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥

और उन पाँवोंकी जो आसपासकी गॉठें हैं वह घुटिक गुल्फ सज्जिक है यहाँ गॉठोंको होहोनेसें दिवचन है और उन पाँवोंका जो नोचेका प्रदेश है, वह पार्णि-
सज्जिक है यह शब्द पुलिग है जघा प्रसृता यह दो नाम जाँघके हैं। जानु उरुपर्वन् अ-
ष्टौवत् यह तीन नाम जानुके हैं तिसमें अ-
ष्टौवत्शब्द पुनपुसक स्त्रिगमें होता है ॥७२॥
सक्थि ऊरु यह दो नाम जानुके ऊपरके भागके हैं तिसमें सक्थि नपुसकालिगमें होता है और ऊरु पुलिग है और उस ऊरुकी सन्धि वक्षणसज्जिक है यह शब्द पुलिगमें होता है गुद अपान पायु यह तीन नाम विष्टाके त्रिकुलनेके द्वारेके हैं तिसमें पायुशब्द पुलिग है और नाभिसें नोचेका भाग है वह वस्तिराज्जिक है यह शब्द स्त्रीपुंलिङ्ग दोनोंमें होता है ॥ ७३ ॥

कटो ना श्रोणिफलक कटिः श्रोणिः कमुन्नती ॥ पश्चानितम्बः स्त्रीक-
ट्याः ह्रीने तु जघन पुरः ॥ ७४ ॥
कृपवौ तु नितम्बस्थौ द्वपहीने कुकु-
न्दरे ॥ त्रिपा म्त्रिचौ कटिमोथायु-
पस्थौ वक्ष्यमाणयोः ॥ ७५ ॥

और जो कमरका फलक है, यह कटि-
उत्तरक है या श्रोणि पुलिग है कटि श्रोणि
तदुपगो यह तीन नाम कमरके हैं और
नोचो वक्षज्जिक जो विष्टाप्राम है या
नितम्बसज्जिक है और नोचो नोचि
॥ ७४ ॥

जो अगला भाग है वह जघनसज्जिक है
॥ ७४ ॥ और जो कि गट्टे नितम्बमें स्थित
है वह कुकुन्दरसज्जिक है कुकुन्दर शब्द
स्त्रीपुंलिङ्ग दोनोंमें वर्जित है इसमें दिवचन दो
होनेसें अनित्य है स्फिक् कटिमोथ यह दो नाम
कमरमें स्थितद्वय मासपिण्डोंके हैं तिसमें
स्फिक्शब्द स्त्रीलिङ्गमें होता है महा दिवचन
दो होनेसें हैं अगारी कहे जाँयगे जो भग
और शिश्र उनमें उपस्थशब्द वर्त्ते है ॥७५॥

भग योनिर्दयोः शिश्रो मेढ्रो मेहनशो-
फसी ॥ मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः पृष्ठवं-
शाधरे त्रिकम् ॥ ७६ ॥ पिचण्डकुक्षी
जठरोदरं तुन्दं स्तनौ कुचौ ॥ यूचुकं
तु कुचायं स्पान ना फोड भुजा-
न्तरम् ॥ ७७ ॥ उरो वत्सं च व-
त्तश्च पृष्ठं तु यग्म तनोः ॥ स्कन्धो
भुजशिरोऽसोऽस्त्री मंथी तस्यैव ज-
नुणी ॥ ७८ ॥

भग योनि यह दो नाम भगके हैं नि-
समें योनि शब्द दोनों स्त्रीपुंलिङ्गमें होता है।
मिश्र मेढ्र मेहन मेहन यह चार नाम शि-
श्रके हैं मुष्क अण्डकोश वृषण यह तीन
नाम अण्डकोशके हैं पीठके पादके माता-
रमें विस शब्द वर्त्ते है, अथवा यह पृष्ठ
नाम पीठके पादोंके नोचके भागमें है ॥७६॥
पिचण्ड कुक्षि जठर उदर तुन्द यह पाँच नाम
पेठके हैं यज्ञ कुक्षि भो नाव वत्सो है
कुक्षि उदर यह दो नाम उदरके हैं यज्ञ-
॥ ७७ ॥

कुक्षि उदर यह दो नाम उदरके हैं यज्ञ-
॥ ७८ ॥

गके हैं क्रोड भुजांतर ॥ ७७ ॥ उरस्वत्स
वक्षस् यह पांच नाम छातीके हैं. तिसमें
क्रोड शब्द पुल्लिंग नहीं है, किन्तु स्त्रीपुंस-
कलिंग है जो कि शरीरका पिछिला भाग
है वह पृष्ठसंज्ञिक है. स्कन्ध भुजशिरस् अंस
यह तीन नाम कन्धाके हैं. तिसमें अंसशब्द
पुंनपुंसकलिंगवाची है. उस कन्धेकी जो सन्धि
है वह जत्रुसंज्ञिक है ॥ ७८ ॥

बाहुमूले उभे कक्षौ पार्श्वमस्त्री तयो-
रधः ॥ मध्यमं चावलग्नं च मध्यो-
ऽस्त्री द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥ भु-
जबाहू प्रवेष्टो दोः स्यात्कफोणिस्तु
कूर्परः ॥ अस्यापरि प्रगण्डः स्या-
त्प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥ ८० ॥

बाहुमूल कक्ष यह दो नाम कांखोंके हैं.
यह दोनों शब्द एकार्थवाचक है. उन का-
खोंके नीचेका भाग पार्श्वसंज्ञिक है. यह
शब्द पुंनपुंसकलिंग है. मध्यम अवलग्न मध्य
यह तीन नाम शरीरके मध्यभागके हैं. ति-
समें मध्यशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंग
है. पिछारीके जो दो भुजा तथा बाहुशब्द हैं
वह दोनों स्त्रीपुल्लिंगमें होते हैं ॥ ७९ ॥
भुज बाहु प्रवेष्ट दोष यह चार नाम भुजाके
हैं. कफोणि कूर्पर यह दो नाम कुहनीके हैं.
इसके ऊपरका भाग प्रगण्डसंज्ञिक है और
उसके नीचेका भाग प्रकोष्ठसंज्ञिक है ॥ ८० ॥

मणिवन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो
वहिः ॥ पञ्चशास्त्रः शयः पाणिस्त-

र्जनी स्यात्प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥ अ-
ङ्गुल्यः करशास्त्राः स्युः पुंस्यङ्गुष्ठः म-
देशिनी ॥ मध्यमाऽनामिका चापि
कनिष्ठा चेति ताः क्रमात् ॥ ८२ ॥

मणिवन्धसे लेकर अर्थात् कलाईसे लेकर
कनगुलीपर्यन्त जो हाथका स्थूल बाहिरक
भाग है, वह करभसंज्ञिक है. पंचशास्त्र शर-
पाणि यह तीन नाम हाथके हैं. तर्जनी
प्रदेशिनी यह दो नाम अंगूठेकी पासके
अंगुलीके हैं ॥ ८१ ॥ अंगुली करशास्त्र
यह दो नाम अंगुलीमात्रके हैं अंगुष्ठ प्रदेशिनं
मध्यमा अनामिका कनिष्ठा यह पांच ना-
एक २ अंगूठेसे लेकर कनगुलीतकके हैं ॥ ८२ ॥

पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरो-
ऽस्त्रियाम् ॥ प्रादेशतालगोकर्णास्त-
र्जन्यादियुते तते ॥ ८३ ॥ अङ्गुष्ठे
सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलः ॥
पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृता-
ङ्गुलौ ॥ ८४ ॥

पुनर्भव कररुह नख नखर यह चार
नाम नखके हैं. इसकों नौ तथा नाखूनभी
कहते हैं. तिसमें नखशब्द पुंनपुंसक है और
नखरशब्दभी स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें
होता है. तर्जनी आदिक तीन अंगुलि-
हित फेलेहुए अंगूठेमें क्रमसे प्रादेश ताल
गोकर्ण शब्द वर्ते हैं. जैसे तर्जनीसहित जो
फेला हुआ अंगूठा है वह प्रादेशसंज्ञिक है
और मध्यमासहित जो फेला हुआ अंगूठा

है वह तालसन्निक है और अनामिकासहित जो फैला हुआ अगुठा है वह गोकर्णसन्निक है ॥ ८३ ॥ और कनगुलीसहित जो फैला हुआ अगुष्ठ है वह वितस्तिद्वादशगुलसन्निक है साहचर्यसे वितस्तिशब्द पुलिग जानना और फैली हुई अगुलियोंवाले हाथमें चपेट प्रतल प्रहस्त शब्द वर्ते है ॥ ८४ ॥

द्वौ संहतौ संहतलप्रतलौ वामदक्षिणौ ॥ पाणिर्निकुब्जः प्रसृतिस्तौ युतावज्जलिः पुमान् ॥ ८५ ॥ प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो मुष्ट्या तु वद्धया ॥ सरन्निः स्पादरन्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना ॥ ८६ ॥

बायें दायें दोनों फैलेहुए हाथ मिलकर सहतलसन्निक है और समस्तकूबड़ा किया हुआ हाथ प्रसृतिसन्निक है इसको खोंचभी कहते हैं दो प्रसृति मिलकर अजलिसन्निक है यह शब्द पुलिग है ॥ ८५ ॥ फैला है कर जिसमें ऐसे प्रकोष्ठ अर्थात् कौनीसे नीचेके भागमें हस्त शब्द वर्ते है और वहही हस्त बधीहुई मुष्टीसे उपलक्षित हो तौ सरन्नि सन्निक है और नहीं है कनगुली जिसकेविषे ऐसी मुष्टीसे उपलक्षित हस्त सरन्नि सन्निक है मुष्ट्या तथा मुष्टिना इन प्रयोगोंकर मुष्टिशब्द स्त्रीपुलिगवाची जाना चाहिये ॥ ८६ ॥

व्यामो बाह्यो सकरयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम् ॥ ऊर्ध्वविस्तृतदोष्पाणि-

नृमाणे पौरुषं त्रिषु ॥ ८७ ॥ कण्ठो गलोऽथ ग्रीवायां शिरोधिः कंधरेत्यपि ॥ कम्बुग्रीवा त्रिरेखा साऽवदुर्धाटा लुकाटिका ॥ ८८ ॥

तिरछी फैली हुई हाथसहित बाहुओंका जो अन्तर है वह व्याम सन्निक है ऊपरको फैले है भुजा और हाथ जिसके ऐसे पुरुषका जो मान अर्थात् प्रमाण है उसमें पौरुष शब्द वर्ते है यह शब्द तीनों लिगमें होता है ॥ ८७ ॥ कठ गल यह दो नाम कठके है यह ग्रीवाके अग्रभागमें वर्ते है ग्रीवा शिरोधि कवरा यह तीन नाम गुदीके है और जो कि ग्रीवा तीन रेखाओंसे युक्त है वह कबुग्रीवा है अवटु घाटा लुकाटिका यह तीन नाम ग्रीवा और शिरकी संधिके पिछले भागके है ॥ ८८ ॥

वक्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् ॥ कृत्रि घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका ॥ ८९ ॥ ओष्ठाधरा तु रदनच्छदौ दशनवाससी ॥ अधस्ताच्चिपुक् गण्डी कपोलौ तत्परा हनु ॥ ९० ॥

वक्र आस्य वदन तुंड आनन लपन मुख यह सात नाम मुखके है घ्राण गन्धवहा घोणा नासा नासिका यह पाँच नाम नाकके है तिसमें घ्राणशब्द नपुंसकलिगमें होता है ॥ ८९ ॥ ओष्ठ अधर रदनच्छद दशन वासस् यह चार नाम होठके नीचेके भागमें

चिवुक शब्द वर्त्तते है. गण्ड कपोल यह दो नाम गालके हैं और उन गालोंसे परें चिवुकके नीचेका भाग हनुसंज्ञिक है. यह शब्द स्त्रीलिंग है परन्तु पुंलिंगमें भी होता है ॥ ९० ॥

रदना दशना दन्ता रदास्तालु तु काकुदम् ॥ रसज्ञा रसना जिह्वा प्रान्ता-
वोष्ठस्य सृक्किणी ॥ ९१ ॥ ललाट-
मलिकं गोधिरुध्वं दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रि-
यौ ॥ कूर्चमस्त्रौ भ्रुवोर्मध्यं तारका-
क्षः कनीनिका ॥ ९२ ॥

रदन दशन दंत रद यह चार नाम दाँतोंके हैं. तालु काकुद यह दो नाम तालुके हैं. रसज्ञा रसना जिह्वा यह तीन नाम जीभके हैं और होठके जो बायें दायें अन्तके भाग हैं वह सृक्किणी संज्ञिक है. यह नपुंसकलिंगवाचक सृक्किन् शब्दभी होता है ॥ ९१ ॥ ललाट अलिक गोधि यह तीन नाम भालके हैं. इसको माथा कहते हैं. तिसमें गोधिशब्द पुंलिंगमें होता है. और जो कि नेत्रोंसे ऊपरके भाग हैं वह भ्रूसंज्ञिक है. यह भ्रू दो होनेसे द्विवचनान्त है. यह शब्द स्त्रीलिंग है. और जो कि नाकके ऊपर भौंओंका मध्यभाग है वह कूर्चसंज्ञिक है. यह स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगवाची है और जो नेत्रकी कनीनिका अर्थात् नेत्रके बीचमें लुण्णमंडल है वह तारकासंज्ञिक है ॥ ९२ ॥

लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी ॥

दृग्दृष्टौ चासु नेत्राम्बु रोदनं चास-

मश्रु च ॥ ९३ ॥ अपाङ्गौ नेत्रयो-
रन्तौ कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ॥ कर्णश-
ब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं
श्रवः ॥ ९४ ॥

लोचन नयन नयन नेत्र ईक्षण चक्षुः
अक्षि दृश् दृष्टि यह आठ नाम नेत्रके हैं.
असु नेत्राम्बु रोदन असु अश्रु यह पाँच
नाम नेत्रके जलके हैं. इसको आसु कहते
हैं ॥ ९३ ॥ और जो कि नेत्रोंके अन्त हैं
वह अपाङ्गसंज्ञिक है. अपाङ्गकरके देखनेमें
कटाक्ष शब्द वर्त्तते है. कर्ण शब्दग्रह श्रोत्र
श्रुति श्रवण श्रवस् यह छै नाम कानके हैं.
तिसमें श्रुतिशब्द स्त्रीलिंग है ॥ ९४ ॥

उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्ध्ना ना मस्त-
कोऽस्त्रियाम् ॥ चिकुरः कुन्तलो वा-
लः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥
तद्वन्दे कैशिकं कैश्यमलकाश्चूर्णकु-
न्तलाः ॥ ते ललाटे भ्रमरकाः का-
कपक्षः शिखण्डकः ॥ ९६ ॥

उत्तमाङ्ग शिरस् शीर्ष मूर्ध्न मस्तक यह
पाँच नाम शिरके हैं. तिसमें मूर्ध्नशब्द पुं-
लिंग और मस्तकशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंन-
पुंसकलिंगमें होता है. चिकुर कुन्तल वाल
कच केश शिरोरुह यह छै नाम केशके
हैं ॥ ९५ ॥ और उनके शोंके समूहमें कै-
शिक कैश्य शब्द वर्त्तते हैं. अलक चूर्णकुन्तल
यह दो नाम टेढ़े केशोंके हैं और जो कि
अलक ललाटपर लम्बगान हैं वह भ्रमरक

सज्ञिक है काकपक्ष शिखण्डक यह दो नाम
वालशिखाके है ॥ ९६ ॥

कवरी केशवेशोऽथ वन्मिच्छः संयताः
कचाः ॥ शिखा चूडा केशपाशी ब्र-
तिनस्तु सटा जटा ॥ ९७ ॥ वेणिः
प्रवेणी शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे ॥
पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचा-
त्परे ॥ ९८ ॥ तनूरुहं रोम लोम तद्बुद्धौ
श्मश्रु पुंमुखे ॥ आकल्पवेपौ नेपथ्यं
प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ ९९ ॥

कवरी केशवेश यह दो नाम केशध-
नकी रचनाके है मोती रस्ती आदिकोंसे
बधे हुए केश धमिलसज्ञिक है शिखा चूडा
केशपाशी यह तीन नाम चौटीके है सटा
जटा यह दो नाम ब्रतवालेकी चौटीके हैं
॥ ९७ ॥ वेणि प्रवेणी यह दो नाम
सर्पाकार रचितकेशवेशके है शीर्षण्य शिरस्य
यह दो नाम निर्मल केशमें वर्त्ते है कचप-
र्यायसे पैर पाश पक्ष हस्त यह तीनों शब्द
कलापार्थ अर्थात् केशसमूहवाची है जैसे
कचपाश केशपाश केशपक्ष कुतलहस्ता ॥ ९८ ॥
तनूरुह रोमन् लोमन् यह तीन नाम रोमके
है पुस्तके मुखपर उन रोमांकी वृद्धि होतेमते
श्मश्रु शब्द वर्त्ते है इसको डाढी कहते है
आकल्प वेप नेपथ्य प्रतिकर्मन् प्रसाधन यह
पाँच नाम अलङ्कृतकी शोभाके है ॥ ९९ ॥

दशैते त्रिष्वलङ्कर्ताऽलङ्कारिष्णुश्च म-
ण्डितः ॥ प्रसाधितोऽलङ्कृतश्च भूषि-

तश्च परिष्कृतः ॥ १०० ॥ विभ्राद्
भ्राजिष्णुरोचिष्णू भूषणं स्यादलङ्कि-
क्रिया ॥ अलङ्कारस्त्वाभरणं परि-
ष्कारो विभूषणम् ॥ १०१ ॥ मण्डनं
चाथ मुकुटं किरीटं पुनपुंसकम् ॥
चूडामणिः शिरोरत्नं तरलो हारम-
ध्यगः ॥ १०२ ॥

जो कि अगरारी कहे जायेंगे यह दश शब्द
तीनों लिंगमें होते है अलङ्कर्तु अलङ्करीष्णु
यह दो नाम अलङ्कार करनेवालेके है मण्डित
प्रसाधित अलङ्कृत भूषित परिष्कृत यह पाँच
नाम अलङ्कार कियेहुएके है ॥ १०० ॥ विभ्राज्
भ्राजिष्णु रोचिष्णु यह तीन नाम अतिशय-
करके शोभायमानके है भूषण अलङ्क्रिया
यह दो नाम भूषणक्रियाके है अलङ्कार
आभरण परिष्कार विभूषण ॥ १०१ ॥
मण्डन यह पाच नाम अलङ्कार गहनेके है
मुकुट किरीट यह दो नाम मुकुटके है ति-
समें किरीटशब्द पुनपुंसक दोनों लिंगवाची
है चूडामणि शिरोरत्न यह दो नाम शिरो-
मणिके है हारके मध्यमें स्थितहुआ मणि
तरलसंज्ञिक है इसको पदक कहते है ॥ १०२ ॥

वालपाश्या पारितय्या पत्रपाश्या ल-
लाटिका ॥ कर्णिका तालपत्र स्या-
त्कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥ १०३ ॥
त्रैवेपक कण्ठभूषा लम्बनं स्याल्ल-
न्तिका ॥ स्वर्णैः प्रालम्बिकाऽथोर-
सूनिका मौक्तिकैः कृता ॥ १०४ ॥

वालपाश्या पारितथ्या यह दो नाम सी-
मन्तभूषणके हैं पत्रपाश्या ललाटिका यह दो
नाम ललाटभूषणके हैं. इसकों वन्दीवेना आ-
दिक कहते हैं. कर्णिका तालपत्र यह दो
नाम कर्णभूषणके हैं. इसकों कर्णफूल कहते
हैं. कुंडल कर्णवेष्टन यह दो नाम कुंडलके
हैं ॥ १०३ ॥ ग्रैवेयक कंठभूषा यह दो
नाम गुदीके गहनेके हैं. लंबन ललंतिका यह
दो नाम नाभीपर्यन्त लंबी कंठीके हैं. और
जो कि नाभिपर्यन्त लंबी कंठी सुवर्णोंसे
बनी हो तौ वह प्रालम्बिका संज्ञिक है और
यदि मोतियोंसे बनी हो तौ उरःसूत्रिका
संज्ञिक है ॥ १०४ ॥

हारो मुक्तावली देवच्छन्दोऽसौ शत-
यटिका ॥ हारभेदा यष्टिभेदाद्गुच्छ-
गुच्छार्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥ अर्ध-
हारो माणवक एकावल्लयेकयटिका ॥
सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौ-
क्तिकैः ॥ १०६ ॥ आवापकः पा-
रिहार्यः कटको वलयोऽस्त्रियाम् ॥ केयू-
रमङ्गदं तुल्ये अङ्गुलीयकमूर्मिका १०७ ॥

हार मुक्तावली यह दो नाम मुक्ताहारके
हैं. और यदि यह मुक्तावली सौ लडवाली
होवे तौ देवच्छदसंज्ञिक है. लडोंके भेदसें
हारभेद हैं. जैसे गुच्छ यह एक नाम बत्तीस
लडवाले हारका है. गुच्छार्ध यह एक नाम
चौबीस लडवाले हारका है. गोस्तन यह एक
नाम चार लडवाले हारका है ॥ १०५ ॥

अर्धहार यह एक नाम बारह लडवाले हा-
रका है. माणव यह एक नाम बीस लडवाले
हारका है. एकावली यह एक नाम एक ल-
डवाले हारका है और जो कि एकावली
सत्ताईश मोतियोंसे बनाई हुई है वह नक्षत्र-
माला संज्ञिक है ॥ १०६ ॥ आवापक
पारिहार्य कटक वलय यह चार नाम क-
टाईके गहनेके हैं. इसकों पौंचीभी कहते हैं.
तिसमें वलयशब्द पुनपुंसकलिंगमें होता है.
केयूर अंगद यह दो नाम बाजूबन्दोंके हैं.
यह समानलिंग हैं. अङ्गुलीयक ऊर्मिका यह
दो नाम अङ्गुलीके आभरणके हैं इसकों
अङ्गुठीभी कहते हैं ॥ १०७ ॥

साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा स्यात्कङ्कणं कर-
भूषणम् ॥ स्त्रीकट्यां मेखला काञ्ची
सप्तकी रशना तथा ॥ १०८ ॥ क्लीबे
सारसनं चाथ पुंस्कट्यां शृङ्खलं
त्रिषु ॥ पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो
नूपुरोऽस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥ हंसकः
पादकटकः किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका ॥
त्वक्फलकमिरोमाणि वस्त्रयोनिर्दश
त्रिषु ॥ ११० ॥

और जो कि अङ्गुठी रामनामादिक अ-
क्षरोंसहित है, वह अङ्गुलिमुद्रा संज्ञिक है.
कंकण करभूषण यह दो नाम कंकणके हैं.
स्त्रीकी कमरके आभूषणमें मेखला कांची

१ एकयटिर्भवेत्कांची मेखला त्वष्टयटिका ॥
रसना षोडश ज्ञेया कलापः पञ्चविंशकः ॥ १ ॥

सप्तकी रशना ॥ १०८ ॥ सारसन यह पाँच नाम वर्ते है तिसमें सारसन शब्द नपुसक-
लिगमें होवे है और पुरुषकी कमरके आ-
भूषणमें श्रुखल शब्द वर्ते है यह शब्द तीनों
लिगमें होता है पादागद तुलाकोटि मजीर
नूपुर ॥ १०९ ॥ हसक पादकटक यह छै
नाम नूपुरके हैं इसकों पाँयजेव (बिछुआ,
पैजनी) भी कहते है तिसमें नूपुरशब्द
पुनपुसकलिगमें होता है किकिणी क्षुद्रघटिका
यह दो नाम धुगुरुओंके है त्वच् फल रुमि
रोमन यह चार नाम वस्त्रकी योनि अर्थात्
कारणके है वस्त्रके कारणकों चार प्रकारका
होनेसे वस्त्रभी चार प्रकारका होता है क्षौ-
मादि इस शब्दके बिना वाल्क आदिक
निष्प्रवाण्यन्त दश शब्द तीनों लिगमें हो-
ते है ॥ ११० ॥

वाल्कं क्षौमादि फालं तु कार्पासं
वादरं च तत् ॥ कौशेयं रुमिको-
शोत्थं राङ्गवं मृगरोमजम् ॥ १११ ॥
अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवा-
म्बरम् ॥ तत्स्याद्द्वमनीयं पद्मौतयो-
र्वस्त्रयोर्युगम् ॥ ११२ ॥

जो क्षौमादिक वस्त्र है वह वाल्कस-
ज्ञिक है भाव यह है क्षुमा अतसीका बना-
हुआ वस्त्र आदिशब्दसे सन आदिकका ब-
नाहुआ वस्त्र वाल्कसज्ञिक है फाल कार्पास
वादर यह तीन नाम कपासके बनेहुए वस्त्रके
है रुमियोंकी गुदासे निकले हुए कुङ्मला-

कार कोशकर उत्पन्न कियाहुआ वस्त्र कौ-
शेय सज्ञिक है और मृगरोमसे उत्पन्न हुआ
वस्त्र राकव सज्ञिक है यहाँ मृगशब्दकरके
पशुमात्र जानलैना ॥ १११ ॥ अनाहत
निष्प्रवाणि तन्त्रक नवाबर यह चार नाम
नूतनवस्त्रके है इसकों कोरावस्त्र कहते हैं
और जो धूएहुए वस्त्रोका जोड़ा है वह उ-
द्मनीय सज्ञिक है ॥ ११२ ॥

पत्रोर्णं धौतकौशेयं बहुमूल्यं महाध-
नम् ॥ क्षौमं दुकूलं स्याद्दे तु निवीतं
प्रावृतं त्रिपु ॥ ११३ ॥ स्त्रिया व-
हुत्वे वस्त्रस्य दशाः स्युर्वस्त्रयोद्वयोः ॥
दैर्घ्यमायाम आनाहः परिणाहो वि-
शालता ॥ ११४ ॥

और जो धोयाहुआ रेशमवस्त्र है वह
पत्रोर्ण सज्ञिक है और जो कि बहुतसे मो-
लका वस्त्रादिक है वह महाधन सज्ञिक है
यह शब्द तीनों लिगमें होता है क्षौम दुकूल
यह दो नाम पाटाम्बरके हैं निवीत प्रावृत
यह दो नाम प्रावृतवस्त्रके हैं इसकों गोद
मगजीभी कहते है यह शब्द तीनों लिगमें
होते है ॥ ११३ ॥ और वस्त्रके दोनों
वस्त्र अर्थात् अन्तभाग छोरोंमें दशा शब्द
वृत्ते है यह शब्द स्त्रीलिङ्ग और बहुवचनमें
होता है, दैर्घ्य आयाम आरोह यह तीन
नाम वस्त्रादिककी टेपाईके है परिणाह वि-

१ तिसमें च शब्दसे तन्त्ररुभी तीनों लिगमें
होता है

शालता यह दो नाम वस्त्रादिककी चाँडाईके हैं ॥ ११४ ॥

पटच्चरं जीर्णवस्त्रं समौ नक्तककर्पटौ ॥
वस्त्रमाच्छादनं वामश्रैलं वसनमंशु-
कम् ॥ ११५ ॥ सुचेलकः पटोऽस्त्री
स्याद्वराशिः स्थूलशाटकः ॥ निचोलः
प्रच्छदपटः समौ रत्नककम्बलौ ११६ ॥

पटच्चर जीर्णवस्त्र यह दो नाम पुर्गने वस्त्रके हैं. नक्तक कर्पट यह दो नाम पुराने कपड़ेके टुकड़के हैं. यह शब्द दोनों आपसमें समान हैं. वस्त्र आच्छादन वामस् चैत्र दसन अंशुक यह छे नाम वस्त्रके हैं ॥ ११५ ॥ सुचेलक पट यह दो नाम सुन्दरवस्त्रके हैं. जिसमें पटशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिङ्गवाचक है. वराशि स्थूलशाटक यह दो नाम मोटे वस्त्रके हैं. निचोल प्रच्छदपट यह दो नाम उस वस्त्रके हैं. जिसकरके कि वीणा डोलिकादिक ढके जाते हैं. रत्नक कंबल यह दो नाम कंबलके हैं. आपसमें समान लिंग है ॥ ११६ ॥

अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोऽंशु-
के ॥ द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ
वृहत्तिका तथा ॥ ११७ ॥ संव्या-
जमुत्तरीयं च चोलः कूर्पासकोऽस्त्रि-
याम् ॥ नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमा-
निलनिवारणे ॥ ११८ ॥

अन्तरीय उपसंव्यान परिधान अधोऽंशुक यह चार नाम अधोवस्त्रके हैं. प्रावार उत्तरा-

संग वृहत्तिका ॥ ११७ ॥ संव्यान उत्तरीय यह पाँच नाम उस वस्त्रके हैं, जो कि क-
न्धापर रक्ता जाता है. इनको वृहत्तिका भी क-
हते हैं. जिसमें प्रावार उत्तगमंग यह दो
समानलिंग हैं चोल कूर्पासक यह दो नाम
स्त्रियोंके कुर्याँके ढकनेवाले वस्त्रके हैं. इसको
चालीभी कहते हैं. जिसमें कूर्पासक शब्द
स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिङ्गमें होता है. जाड़ा
और पवनका निवारण होता है जिसमें
ऐसे ढकनेवाले वस्त्रमें नीशार शब्द वर्ते है
इसको रजई (लिटाप दुन्नाई) भी कहते हैं

अधोऽंशुकं वररज्जीणां स्यात्चण्डातक-
मस्त्रियाम् ॥ स्यात्त्रिज्वाग्रपदीनं त-
त्प्राप्तोत्प्राप्तपदं हि यत् ॥ ११९ ॥
अस्त्री वितानमुल्लोचो दूष्याद्यं वस्त्र-
वेश्मनि ॥ प्रतिसीरा जवनिका स्या-
त्तिरस्करिणी च सा ॥ १२० ॥

और जो कि उत्तम स्त्रियोंका अधोऽंशुक वस्त्र है अर्थात् उत्तम स्त्रियोंके आधे ऊपर जो वस्त्र स्थित है, वह चंडातकसंज्ञिक है. इसको परकर (लहंगा) भी कहते हैं. जि-
समें चण्डातक पुंनपुंसकलिङ्गमें होता है और जो कि वस्त्रादिक पादाग्रपर्यन्त प्राप्त होता है वह आप्रपदीनसंज्ञिक है. यह तीनों लिंगमें होता है. इसको नीचा लहंगा कहते हैं ॥ ११९ ॥ वितान उल्लोच यह दो नाम वाम आदि-
कोंके दूर करनेकेलिये उपर बांधे हुए वस्त्रके हैं इसको चंदोवा तथा चांदनीभी कहते हैं।

तिसमें वितानशब्द पुनपुसकलिंग है दूष्य
आदिक वस्त्रके घरमे वर्त्ते है इसको डेरा (रा-
हुटी-तबू)भी कहते है प्रतिसीरा जवनिका
तिरस्करिणी यह तीन नाम जवनिकोके है
इसको पडदा (कनात)भी कहते है ॥ १२० ॥

परिकर्माङ्गसंस्कारः स्यान्मार्ष्टिमा-
र्जना मृजा ॥ उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे
आप्लाव आप्लवः ॥ १२१ ॥ स्नानं
चर्चा तु चार्चिक्यं स्थासकोऽथ प्र-
बोधनम् ॥ अनुबोधः पत्रलेखा पत्रा-
ङ्गुलिरिमे समे ॥ १२२ ॥

परिकर्मन् अंगसंस्कार यह दो नाम कु-
कुमादिककर शरीरके संस्कारमात्रके है मार्ष्टि
मार्जना मृजा यह तीन नाम मोक्षणादिककर
देहके निर्मल करनेके है इसको पौछनाभी
कहते है उद्वर्तन उत्सादन यह दो नाम
पिष्टादिककर शरीर मलके दूर करनेके है
यह दोनों समान है आप्लाव आप्लव ॥ १२१ ॥
स्नान यह तीन नाम स्नानके है चर्चा चा-
र्चिक्य स्थासक यह तीन नाम चन्दनादिक-
कर शरीरके विलेपविशेषके है प्रबोधन अ-
नुबोध यह दो नाम गतगन्धका फिर गन्ध-
प्रकट करनेके है जैसे कस्तूरी आदिकका
पत्रादिकसे गन्ध प्रकट होता है पत्रलेखा प-
त्राङ्गुलि यह दो नाम कस्तूरी केशरादिककर
कपोल आदि अंगोंकेविषे रचीहुई पत्रवल्लीके
है यह कलिंगादिक देशोंमें प्रसिद्ध है यह
दोनों समान लिंग है ॥ १२२ ॥

तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेष-
कम् ॥ द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रि-
यामथ कुङ्कुमम् ॥ १२३ ॥ का-
श्मीरजन्माग्निशिखं वरं बाह्लीकपी-
तने ॥ रक्तसंकोचपिशुनं धीरं लो
हितचन्दनम् ॥ १२४ ॥

तमालपत्र तिलक चित्रक विशेषक यह
चार नाम ललाटपर कस्तूरी आदिककर व-
नायेहुए तिलकके है तिसमें दूसरा शब्द ति-
लक और चौथा शब्द विशेषक यह स्त्री-
लिंगमें नहीं होते है, किन्तु पुनपुसकलिंगमें
होते है कुकुम् ॥ १२३ ॥ काश्मीरजन्मन्
अग्निशिख वर बाह्लीक पीतन रक्त संकोच
पिशुन धीर लोहितचन्दन यह ग्यारह नाम
कुकुमके है ॥ १२४ ॥

लाक्षा राक्षा जतु कृषि वावोऽलक्तो
द्रुमामयः ॥ लवङ्गं देवकुसुमं श्री-
संज्ञमथ जायकम् ॥ १२५ ॥ का-
लीयकं च कालानुसार्यं चाथ समा-
र्थकम् ॥ वशकागुरुराजार्हलोहं हृमि-
जजोङ्गकम् ॥ १२६ ॥ कालागु-
र्वगुरु स्यात्तन्मङ्गल्या मल्लिगन्धि
यत् ॥ यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वर-
सावपि ॥ १२७ ॥ बहुरूपोऽप्यथ
वृक्षधूपहृन्मिधूपकौ ॥ तुरुष्कः पि-
ण्डक् सिल्लो यावनोऽप्यथ पायसः
॥ १२८ ॥ श्रीवासो वृक्षधूपोऽपि

१ श्रीसज यह लक्ष्मीपर्यायिनामक है

श्रीवेष्टसरलद्रवौ ॥ मृगनाभिर्मृगमदः
कस्तूरी चाथ कोलकम् ॥ १२९ ॥
कंकोलकं कोशफलमथ कर्पूरमस्त्रि-
याम् ॥ वनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताश्रो
हिमवालुका ॥ १३० ॥

लाक्षा राक्षा जतु याव अलक दुपामय
यह छे नाम लाखके हैं. लवंग देवकुसुम
श्रीसंज्ञ यह तीन नाम लौंगके हैं जायक
॥ १२५ ॥ कालीयक कालानुसार्य यह
तीन नाम पीतचन्दनके हैं. वंशिक अगुरु
राजार्ह लोह रुमिज जोंगक ॥ १२६ ॥
कालागुरु यह सात नाम अगरके हैं. जो
कि अगरमल्लिगन्धि है वह मंगल्या संज्ञिक
है. यक्षधूप सर्जरस राल सर्वरस ॥ १२७ ॥
बहुरूप यह पांच नाम रालके हैं. वृक्षधूप
कृन्निमधूपक यह दो नाम अनेक पदार्थोंकी
वनाई हुई धूपके हैं. तुरुष्क पिण्डक सिल्ल
यावन यह चार नाम लोहवानके हैं. पायस
॥ १२८ ॥ श्रीवास वृक्षधूप श्रीवेष्ट सरल-
द्रव यह पांच नाम देवदारुधूपके हैं. मृग-
नाभि मृगमद कस्तूरी यह तीन नाम कस्तू-
रीके हैं. कोलक ॥ १२९ ॥ कंकोल को-
शफल यह तीन नाम कंकोलके हैं. कर्पूर
वनसार चंद्रसंज्ञ सिताश्र हिमवालुका यह
पांच नाम कर्पूरके हैं तिसमें कर्पूरशब्द पुन-
पुंसकलिंगमें होता है ॥ १३० ॥

गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनो-
ऽस्त्रियाम् ॥ तैलपणिकगोशीर्षं हरि-

१ चंद्रसंज्ञ चंद्रपर्यायनामक है

चन्दनमस्त्रियाम् ॥ १३१ ॥ तिलपणीं
तु पद्माङ्गं रञ्जनं रक्तचन्दनम् ॥
कुचन्दनं चाथ जानीकोशजानीफले
समे ॥ १३२ ॥

गंधसार मलयज भद्रश्री चन्दन य
चार नाम चन्दनके हैं तिसमें चन्दन पुनपुं-
सकलिंगमें होता है. तैलपणिक यह एक
नाम उज्जल और शीतलचन्दनका है. गोशीर्ष
यह एक नाम कमलकीसमान गंधवाले च-
न्दनका है. हरिचन्दन यह एक नाम कृपि-
लवर्णचन्दनका है यह शब्द पुनपुंसकलिंगमें
होता है ॥ १३१ ॥ तिलपणीं पद्माङ्ग रञ्जन
रक्तचन्दन कुचन्दन यह पांच नाम लालच-
न्दनके हैं. जानीकोश जातीफल यह दो
नाम जायफलके हैं यह शब्द समानलिंग
हैं ॥ १३२ ॥

कर्पूरागरुकस्तूरीकङ्कोलेर्यक्षकर्दमः ॥
गात्रानुलेपनी वर्तिर्वर्णकं स्याद्विलेप-
नम् ॥ १३३ ॥ चूर्णानि वासयोगाः स्यु-
र्भावितं वासितं त्रिषु ॥ संस्कारो गन्ध-
माल्याधैर्यः स्यात्तदधिवासनम् १३४

कर्पूर अगर कस्तूरी कंकोल इन्हींके
समभाग करके इकठा कियाहुआ लेपविशेष
यक्षकर्दम संज्ञिक है. गात्रानुलेपनी वर्ति वर्णक
विलेपन यह चार नाम शरीरके अनुलेप योग्य
पीपेहुये तथा बिसेहुये सुगन्धित द्रव्यके हैं
इसको विलेपन कहते हैं. कोई उबटन बोलते
हैं ॥ १३३ ॥ चूर्ण वासयोग यह दो नाम

पटवासादि चूर्णमात्रके है भावित वासित
यह दो नाम गधद्रव्यसे सुगन्धितहुए वस्तुके
है यह शब्द तीनों लिंगमें होते है गध मा-
ला धूपादिकोंकर जो सस्कार है वह अधि-
वासन सञ्ज्ञिक है ॥ १३४ ॥

माल्यं मालास्रजौ मूर्ध्नि केशमध्ये तु
गर्भकः ॥ मन्त्रष्टकं शिखातन्त्रि पुरो
न्यस्तं ललामकम् ॥ १३५ ॥ माल-
न्त्रमृजुलन्त्रि स्वात्कण्ठादिकक्षिक तु
तत् ॥ यन्तिर्यक् क्षितमुरसि शिखा-
स्वापीडशेखरौ ॥ १३६ ॥

माल्य माला स्रज यह तीन नाम मा-
लाके है मस्तिकपर केशके मध्यमें धारण
की हुईमाला गर्भक सञ्ज्ञिक है और जो कि
माला शिखाकेविषै लम्बमान है वह मन्त्रष्टक
सञ्ज्ञिक है और जो कि माला अगारी ल-
लाटपर्यन्त धारण की हुई है वह ललामक
सञ्ज्ञिक है ॥ १३५ ॥ और जो कि माला
कठसे सीधी लम्बमान है वह मालन्त्र स-
ञ्ज्ञिक है और जो कि माला छातीपर तिर-
छोपड़ी हुई है वह वैकक्षिक सञ्ज्ञिक है
आपीड शेखर यह दो नाम शिखाकेविषै
धारण की हुई मालामात्रके है ॥ १३६ ॥

रचना स्वात्परिस्पन्द आभोग. परि-
पूर्णता ॥ उपधानं नृपवर्ह. शय्याया
शयनीयवत् ॥ १३७ ॥ शयनं म-
थपयंदूपल्पङ्का. सट्टया समा. ॥ मे-
न्दुय वन्दुयो दीप प्रदीप. पीठ-
गासनम् ॥ १३८ ॥

रचना परिस्पन्द यह दो नाम माला-
आदिककी रचना है आभोग परिपूर्णता यह
दो नाम समस्त उपचारवाली परिपूर्णताके है
उपधान उपवर्ह यह दो नाम तकियाके है,
शय्या शयनीय ॥ १३७ ॥ शयन यह
तीन नाम शय्याके हैं मथ पर्यंक पल्पक
खट्वा यह चार नाम खाटके है इसको पल-
गभी कहते है मेन्दुक कन्दुक यह दो नाम
गंदेके है दीप प्रदीप यह दो नाम दीपके है,
पीठ आसन यह दो नाम आसनके है ॥ १३८ ॥

समुद्रक. संपुटक. प्रतिग्राह. पतद्ग्रहः ॥
प्रसाधनी कङ्कतिका पिष्टातः पटवा-
सक. ॥ १३९ ॥ दर्पणे मुकुरादर्शा
व्यजनं ताटवृन्तकम् ॥

इति मनुष्यवर्ग. ॥ ६ ॥

समुद्रक सपुटक यह दो नाम सपुटके है
इसको डव्याभी कहते है प्रतिग्राह पतद्ग्रह
यह दो नाम पतद्ग्रहके है इसको पीकदानभी
कहते हैं प्रसाधनी ककतिका यह दो नाम
कवीरके है पिष्टात पटवासक यह दो नाम
बकुचेके है इसको बुकाभी कहते है ॥ १३९ ॥
दर्पण मुकुर आदर्श यह तीन नाम दर्पणके
है व्यजना ताटवृन्तक यह दो नाम वीजनके
है इतिमनुष्यवर्गः

सततिर्गान्जननकृतान्यभिजानन्यया ॥
वशोऽन्यवाय मतानो यणां स्पत्रा-
ल्लणादय. ॥ १ ॥ निमदाग्रिपदि-
श्ट्राश्रातृयणमिति स्मृतम् ॥ राज-

बीजी राजवंशयो वीज्यस्तु कुलमं-
भवः ॥ २ ॥

सन्तति गोत्र जनन कुल अभिजन अ-
न्वय वंश अन्ववाय सन्तान यह नवनाम
वंशके हैं तिसमें सन्ततिशब्द स्त्रीलिंगवाचक
है और ब्राह्मणादिक वर्ण संज्ञिक हैं ॥ १ ॥
विप्र क्षत्रिय विशू शूद्र यह चारो वर्ण चा-
तुर्वर्ण्य संज्ञिक कहे हैं. राजबीजिन् राजवंश्य
यह दो नाम राजवंशमें उत्पन्न हुऐके हैं
वीज्य कुलसंभव यह दो नाम कुलमात्रमें
उत्पन्न हुऐके हैं ॥ २ ॥

महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः॥
ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्च-
तुष्टये ॥ ३ ॥ आश्रमोऽस्त्री विजा-
त्यग्रजन्मभूदेववाडवाः ॥ विप्रश्च ब्रा-
ह्मणोऽसौ पट्कर्म यागादिभिर्वृतः ॥ ४ ॥

महाकुल कुलीन आर्य सभ्य सज्जन
साधु यह छै नाम सज्जनके हैं. ब्रह्मचारिन्
यह एक नाम कर्म मन वाणीसँ सब अव-
स्थामें सदैव मैथुनके त्यागनेवालेका है. गृ-
हिन् यह एक नाम घरमें रहकर स्त्रीपुत्रा-
दिकोंका संग्रह रखनेवालेका है. वानप्रस्थ
यह एक नाम वनमें रहकर तपस्या करने-
वालेका है. भिक्षु यह एक नाम उसका है
जो कि समस्तकों त्यागि ज्ञानात्माकर ब्र-
ह्मोपासक है. इन चारोंमें आश्रम शब्द वर्तै

१ इज्याध्ययनदानानि याजनाध्यापने तथा ॥
प्रतिगृह्य तैर्युक्तः पट्कर्म विप्रउच्यते ॥ १ ॥

है. यह शब्द पुनपुनकनिगवाचक है. द्विजानि
अग्रजन्मन भूदेव वाडव विप्र ब्राह्मण यह
छै नाम ब्राह्मणमात्रके हैं. और जो कि ब्रा-
ह्मण यज्ञादिकोंसँ युक्त है वह पट्कर्मन
संज्ञिक है ॥ ३ ॥ ४ ॥

विद्वान् विपश्चिदोपज्ञः सन्सुधीः को-
विदो बृधः ॥ धीरो मनीषी ज्ञः
प्राज्ञः संख्यावान्पण्डितः कविः ॥ ५ ॥
धीमान्सूरिः कृती कटिलब्धवर्णो वि-
चक्षणः ॥ दूरदर्शी दीर्घदर्शी श्रोत्रिप-
च्छान्दसौ समौ ॥ ६ ॥

विद्वत् विपश्चिद् दांपज्ञ सत् सुधी कोविद
बृध धीर मनीषिन् ज्ञ प्राज्ञ संख्यावत् पण्डित

१ मीमांसको जैमिनीये वेदान्ती ब्रह्मवादिनि ॥
वैशेषिके म्यादौलूक्यः सौगतः शून्यवादिनि १
नैयायिकस्त्वक्षपादः स्यात्स्याद्वादिक् आर्हकः ॥
चार्वाकलौकायतिकौ सत्काये सांख्यकापिलौ २

१ मीमांसक जैमिनीय यह दो नाम मीमां-
साशास्त्रके जाननेवालेके हैं. वेदान्तिन् ब्रह्मवादिन्
यह दो नाम वेदान्तशास्त्रके जाननेवालेके हैं
वैशेषिक औलूक्य यह दो नाम द्रव्यगुणकर्मसा-
मान्यविशेषसमवायअभाव इन सात पदार्थोंके
कहनेवालेके हैं. सौगत शून्य है. ऐसा जाननेवाले नास्तिकके
हैं ॥ १ ॥ नैयायिक अक्षपाद यह दो नाम
न्यायशास्त्रके जाननेवालेके हैं. वादिक आर्हक
यह दो नाम मोक्ष है वा नहीं है इसप्रकार कह-
नेवालेके हैं. चार्वाक लौकायनिक यह दो नाम
देहात्मवादी बौद्ध मतवालेके हैं. सांख्य कापिल
यह दो नाम सांख्यशास्त्रके जाननेवालेके हैं ॥ २ ॥

कवि॥५॥वीमव सूरि कृतिन् कृष्टि लब्धवर्णं
विचक्षण दूरदर्शिन दीर्घदर्शिन यह चाईश
नाम पण्डितके है श्रोत्रिय छान्दस यह दो
नाम वेदपाठिके है यह शब्द आपसमें स-
मान है ॥ ६ ॥

उपाध्यायोऽध्यापकोऽथ स्यान्निपे-
कादिकृद्गुरुः ॥ मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य
आदेष्टा त्वधरे ब्रती ॥ ७ ॥ यष्टा
च यजमानश्च स सोमवति दीक्षितः ॥
इज्याशीलो यायजूको यज्वा तु वि-
धिनेष्टवान् ॥ ८ ॥

उपाध्याय अध्यापक यह दो नाम वे-
दादिकके पढानेवालेके है निपेक (गर्भावान)
आदिशब्दसे पुसवनादिक इत कर्मके कर-
नेवाला जो पित्रादिक है वह गुरु सन्निक
है मन्त्र वेद तिसकी व्याख्या करनेवाला
आचार्य सन्निक है और जो कि यज्ञके निवे
कृतियजोको आज्ञा करता है वह ब्रती ॥ ७ ॥
यष्ट यजमान सन्निक है और जो कि यजमान
सोमवाले यज्ञमें ऋत्विजोंको आज्ञा करे वह
दीक्षित सन्निक है इज्याशील यायजूक यह
दो नाम यजनशीलके है और जो कि वि-
धिसें यज्ञकर्ता है वह यज्वा सन्निक है ॥ ८ ॥

स गीष्पतीट्या स्थपति सोमपीथी
तु सोमपाः ॥ सर्ववेदा स येनेष्टो

यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥ अनू-
चानः प्रवचने साङ्गोऽधीती गुरोस्तु
यः ॥ लब्धानुज्ञः समावृत्तः सुत्वा
त्वन्निषवे कृते ॥ १० ॥

और जो कि बृहस्पतिकी इष्टिकरके यज्ञ
करता है वह स्थपति सन्निक है सोमपी-
थिन् सोमपा यह दो नाम सोमयाजीके है
और जिसने सर्वस्वदक्षिण यज्ञ यजन किया
है वह सर्ववेदस् सन्निक है ॥ ९ ॥ और
जो कि शिक्षादिक अगोंसहित प्रवचन वेदमें
अध्ययन करनेवाला है वह अनुचान स-
न्निक है और जिस अनुचानने गुरुके स-
काशसे गृहस्थादिक अन्यआश्रमकी प्रा-
प्तिकेलिये आज्ञा पाई है वह समावृत्त स-
न्निक है अभिषव स्नान करनेपर यज्ञादिक
करनेवाला सुत्वन सन्निक है ॥ १० ॥

छात्रान्तेवासिनौ शिष्ये शैक्षाः प्राथ-
मकल्पिकाः ॥ एकब्रह्मजताचारा
मिथः सव्रह्मचारिण ॥ ११ ॥ स-
तीर्थ्यांस्त्वेकगुरवश्चित्तवानग्निमग्निचि-
त् ॥ पारम्पर्योपदेशे स्यादेतिह्यमि-
तिहाव्ययम् ॥ १२ ॥

छात्र अन्तेवासिन् शिष्य यह तीन नाम
शिष्यके हैं शैक्ष प्राथमकल्पिक यह दो
नाम आरम्भ किया है अध्ययनजिन्होंने वेमे
चटुओंके नाम हैं एकही ब्रह्मजत आचार है
जिनका ऐत एकशास्त्रास्याध्यायी ब्रह्मचारी
परस्पर सव्रतचाग्नि सन्निक है ॥ ११ ॥

एकही है गुरु जिनका ऐसे ब्रह्मचारी परस्पर सतीर्थ्य संज्ञिक हैं. और जो कि अग्निकों संचय करता है वह अग्निचिह्न संज्ञिक है पारंपर्य अर्थात् लोकपरंपराकर जो उपदेश है उसमें ऐतिह्य इतिह्य यह दो शब्द वर्तते हैं इसमें इतिह्यशब्द अव्ययसंज्ञिक है ॥ १२ ॥

उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्याज्ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः ॥ यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मुखः क्रतुः ॥ १३ ॥ पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः ॥ एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ १४ ॥

और जो कि प्रथम ज्ञान है वह उपज्ञा संज्ञिक है और जानकरके जो आरम्भ है वह उपक्रम संज्ञिक है. जैसे ग्रन्थका उपक्रम अर्थात् ज्ञानपूर्वक आरम्भ है. यज्ञ सव अध्वर याग सप्ततन्तु मुख क्रतु यह सात नाम यज्ञके हैं ॥ १३ ॥ पाठ होम अतिथियोंकी सेवा तर्पण बलि यह ब्रह्मयज्ञादिनामक पांचो महायज्ञ संज्ञिक हैं. तिसमें पाठ अर्थात् विधिपूर्वक वेदादिकका पठन है वह ब्रह्मयज्ञ है. और होम अर्थात् वैश्वदेव होम है वह देवयज्ञ है. और अतिथियोंकी सपर्या अर्थात् घरआये हुआका अन्नादिकसे तोपण है वह मनुष्ययज्ञ है. तर्पण अर्थात् पित्रोंकी अन्नोदकसे वृत्ति करना है वह

पितृयज्ञ है. और बलि अर्थात् बलिहरण है वह भूतयज्ञ है ॥ १४ ॥

समज्या परिषद्गोष्ठी सभासमितिसंसदः ॥ आस्थानी क्लीवमास्थानं स्त्री नपुंसकयोः सदः ॥ १५ ॥ प्राग्वंशः प्राग्वविर्गेहात्सदस्या विविदर्शिनः ॥ सभासदः सभास्ताराः सभ्याः सामाजिकाश्च ते ॥ १६ ॥

समज्या परिषद् गोष्ठी सभा समिति संसद् आस्थानी आस्थान सदस् यह नौ नाम सभाके हैं तिसमें आस्थानशब्द नपुंसकलिंग है और सदस् स्त्री तथा नपुंसक दोनों लिंगमें होता है ॥ १५ ॥ हविर्गेह अर्थात् यज्ञके घृतके घरसे जो पूर्वदेशमें सदस्यादिकोंका घर है वह प्राग्वंश संज्ञिक है कोई यज्ञशालाके पूर्वपश्चिम खम्बोंपर रक्खेहुए दीर्घकाष्ठकों कहते हैं. और जो यज्ञकर्ममें विधि अर्थात् वेदोक्तक्रियाकलापकों देखते हैं वह सदस्य संज्ञिक हैं सभासद् सभास्तार सभ्य सामाजिक यह चार नाम सभासदोंके हैं ॥ १६ ॥

अध्वर्यूज्ञातृहोतारो यजुःसामर्ग्विदः क्रमात् ॥ आग्नीध्राद्या धनैर्वार्याः क्रत्विजो याजकाश्च ते ॥ १७ ॥ वेदिः परिष्कृता भूमिः समे स्थण्डिलचत्वरे ॥ चपालो यूपकटकः कुम्वा सुगहना वृत्तिः ॥ १८ ॥

१ अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् ॥
२ गोमार्देवो बलिर्भूतिर्नृयज्ञोऽग्निर्ध्रिपूजनम् ॥ १ ॥

यजुर्वेद सामवेद ऋग्वेदके जाननेवाले ऋत्विज क्रमसे अध्वर्यु उद्गातृ होतृ सञ्ज्ञिक है जैसे यजुर्वेदका जाननेवाला ऋत्विज अध्वर्यु, सामवेदके जाननेवाला ऋत्विज उद्गातृ, ऋग्वेदका जाननेवाला ऋत्विज होतृसञ्ज्ञिक है और जो कि यजमानने आग्नीध्र ब्रह्मोद्गातृ होत्रध्वर्यादिक सोलह धनोकरके वरण किये है वह ऋत्विज याजक सञ्ज्ञिक है ॥ १७ ॥ और जो कि पृथिवी यज्ञकेवास्ते अलकृत की है वह वेदि सञ्ज्ञिक है स्थण्डिल च त्वर यह यज्ञकेवास्ते सस्कार कियेहुये पृथिवीके भागके नाम है यह आपसमें समान लिंग है और जो कि यूपकटक है अर्थात् यज्ञके खम्बके शिरपर जो कि वलयाकार काष्ठविकार है वह चपाल सञ्ज्ञिक है और जो यज्ञकी पृथिवीपर अत्यजादिकोंका दर्शन निवारण करनेकेलिये अतिघनी दुप्रवेशवारि है वह कुबा सञ्ज्ञिक है इसको टट्टीभी कहते हैं ॥ १८ ॥

यूपाग्रं तर्भं निर्मन्थ्यदारुणि त्वरणिर्द्वयोः ॥ दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः ॥ १९ ॥ अग्नित्रयमिदं त्रेता प्रणीतः संस्कृतोऽनलः ॥ समूह्यः परिचाय्योपचाय्यावग्नौ प्रयोगिणः २०

यूपाग्र तर्भन् यह दो नाम यज्ञके खम्बके अग्रभागके है अग्निकी सिद्धिकेवास्ते मथनेयोग्य जो काष्ठ है उसमें अरणि शब्द वर्त्त है यह शब्द दोनों स्त्रीपुलिङ्गमे होता है

दक्षिणाग्नि गार्हपत्य आहवनीय यह तीन अग्निविशेष है ॥ १९ ॥ यह तीनों अग्नि मिलकर त्रेता सञ्ज्ञिक है और जो कि अग्नि यत्रादिकसे सस्कार किया है वह प्रणीत सञ्ज्ञिक है. अग्निकेविषे प्रयोग विद्यमान है जिनका ऐसे वह समूह्य परिचाय्य उपचाय्य सञ्ज्ञिक है अर्थात् यह तीन अग्निके धारणार्थ स्थलविशेषमें प्रयुक्त होते हैं ॥ २० ॥

यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते ॥ तस्मिन्नानाय्योऽथाग्रायी स्वाहा च हुतभुक्प्रिया ॥ २१ ॥ ऋक् सामिधेनी धाय्या च या स्यादग्नि-समिन्धने ॥ गायत्रीममुखं छन्दो हव्यपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥

और जो गार्हपत्यसे लेकर दक्षिणाग्नि प्रवेश की जावे है वह आनाय्य सञ्ज्ञिक है अग्रायी स्वाहा हुतभुक्प्रिया यह तीन नाम अग्निकी प्रियाके है यह स्वाहाशब्द द्रव्यवाची होनेसे अव्यय नहीं है ॥ २१ ॥ अग्निसमिधनमें अर्थात् समिधाओंके फैकनेकर अग्निके पजरनेमें जो ऋचा प्रयुक्त होवे है वह सामिधेनी धाय्या सञ्ज्ञिक है गायत्री उष्णिक् आदिक छन्दस् सञ्ज्ञिक है हव्यपाकमें चरु शब्द वर्त्त है अर्थात् अग्निमुखमें हवन कियेहुए अन्नको चरु कहते हैं यह शब्द पुल्लिङ्ग है ॥ २२ ॥

आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्यादधिपोगव* ॥ धवित्र व्यजनं तद्यद्र-

चितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥ पृषदाज्यं
सदध्याजे परमान्नं तु पायसम् ॥
हव्यकव्ये दैवपित्र्ये अन्ने पात्रं सु-
वादिकम् ॥ २४ ॥

पकेहुए गरम दूधमें दधिके योगसे जो
विकार हो जाता है वह आमिक्षा संज्ञिक
है और मृगचर्मकर रचित जो व्यंजन है
वह धवित्र संज्ञिक है ॥ २३ ॥ दधिसहित
घृतमें पृषदाज्य शब्द वर्त्तते हैं. परमान्न पा-
यस यह दो नाम क्षीरान्नके है. इसको खी-
रभी कहते हैं. दैव पित्र्य अन्नमें अर्थात् दे-
वपितृसंबन्धि अन्नमें क्रमसे हव्य कव्य शब्द
वर्त्तते हैं भाव यह है कि देवोंकेलिये अ-
ग्निमुखद्वारा दियाहुआ अन्न हव्य संज्ञिक
है और पित्रोंकेलिये विप्रमुखद्वारा दियाहुआ
अन्न कव्य संज्ञिक है. सुवचमसादिक पात्र
संज्ञिक हैं ॥ २४ ॥

ध्रुवोपभृज्जुहूर्ना तु सुवो भेदाः सुचः
स्त्रियः ॥ उपाकृतः पशुरसौ योऽभि-
मन्व्य ऋतौ हतः ॥ २५ ॥ परम्प-
राकं शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम् ॥
वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता
हते ॥ २६ ॥

ध्रुवा उपभृत् जुहू यह तीन स्त्रीलिंग
शब्द सुचके भेद हैं. सुव यह एक नाम सु-
वाका है यह शब्द पुल्लिंग है. किन्तु कोशा-
न्तरमें स्त्रीलिंगभी दीखता है. जो पशुयज्ञके
विषे अभिमन्त्रितकरके वध है वह उपाकृत

संज्ञिक है ॥ २५ ॥ परंपराक शमन प्रोक्षण
यह तीन नाम वधार्थक अर्थात् यज्ञसंबन्धी
पशुके वधवाची हैं. प्रमीत उपसंपन्न प्रोक्षित
यह तीन नाम यज्ञकेवास्ते मारेहुए पशुमा-
त्रमें वर्त्तते हैं. यह शब्दवाच्यलिंग हैं अर्थात्
विशेष्यलिंगवाचक हैं ॥ २६ ॥

सान्नाय्यं हविरग्नौ तु हुतं त्रिषु वष-
ट्कृतम् ॥ दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञे त-
त्कर्माहं तु यज्ञियम् ॥ २७ ॥ त्रि-
ष्वथ ऋतुकर्मैष्टं पूर्तं स्वातादि कर्म
यत् ॥ अमृतं विधसो यज्ञशेषभोज-
नशेषयोः ॥ २८ ॥

जो हवि विशेष है वह सान्नाय्य सं-
ज्ञिक है और जो कि अग्निके विषे हवन
किया है वह वषट्कृत संज्ञिक है यह शब्द
तीनों लिंगमें होता है. और जो यज्ञकेविषे
दीक्षान्त अर्थात् दीक्षाके समाप्त करनेवाला
इष्टिपूर्वक स्नान विशेष है वह अवभृत् सं-
ज्ञिक है. जो उस यज्ञकर्मके योग्य वस्तु है
वह यज्ञिय संज्ञिक है. यह शब्द तीनों लिं-
गमें होता है ॥ २७ ॥ जो कि यज्ञकर्म है
वह इष्ट संज्ञिक है. और जो स्वातादि अ-

१ एकाग्रिकर्महवनं त्रेतायां यच्च हूयते ॥
अन्तर्वेद्यां च यद्दानमिष्टं तदभिधीयते ॥ १ ॥
२ पुष्करिण्यः सभावापी देवतायतनानि च ॥
आरामश्च विशेषेण पूर्तं कर्म विनिर्दिशेत् ॥ २ ॥
३ विघसाशी भवेन्नित्यं नित्यं चामृतभोजनः ॥
विघसोभुक्तशेषं स्यादग्निशेषमथामृतम् ॥ १ ॥

यथा वापीकूपादिक कर्म है वह पूर्ण सन्निक है यज्ञशेष और भोजनशेषमें क्रमसे अमृत विघस शब्द वर्त्ते है भाव यह है कि यज्ञके बचेहुए पुरोडाशादिकका नाम अमृत है और देवपित्रादिकोंके भोजनसे बचेहुएका नाम विघस है ॥ २८ ॥

त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जने ॥
विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपाद-
नम् ॥ २९ ॥ प्रादेशनं निर्वपणमप-
वर्जनमंहतिः ॥ मृतार्थं तदहे दानं
त्रिषु स्यादौर्ध्वदैहिकम् ॥ ३० ॥

त्याग विहापित दान उत्सर्जन विसर्जन
विश्राणन वितरण स्पर्शन प्रतिपादन ॥ २९ ॥
प्रादेशन निर्वपण अपवर्जन अहति यह ते-
रह नाम दानके कहते है तिसमें अहति
स्त्रीलिङ्ग है मृतककेवास्ते उस मृतकके नि-
यत दिनमें अर्थात् मरणदिनसे लेकर दश-
दिनपर्यन्त जो पिण्डादिकदान है वह औ-
र्ध्वदैहिक सन्निक है यह शब्द तीनों लिङ्गमें
होता है ॥ ३० ॥

पितृदानं निवापः स्याच्छ्राद्धं तत्कर्म
शास्त्रतः ॥ अन्वाहार्यं मासिकोऽ-
शोऽष्टमोऽह्नः कर्तव्योऽस्त्रियाम् ॥ ३१ ॥
पर्येषणा परीष्टिश्राद्धन्वेपणा च गवे
पणा ॥ सनिस्त्वध्येपणा याश्चाऽ-
भिशस्तिर्याचनाऽर्थना ॥ ३२ ॥

१ दिवसस्याष्टमे भागे मन्दीभवति भास्करे ॥
सकल कुतपोज्ञेय पितृणादत्तमक्षयमिति ॥ २ ॥

पितृदान निवाप यह दो नाम पित्रोंके उद्दे-
शकरके जो दान है उसके है. और शास्त्रसे जो
पितृसबन्धी कर्म है वह श्राद्ध सन्निक है और
मासिक श्राद्ध अर्थात् अमावास्याके श्राद्धमें
अ वाहार्य शब्द वर्त्ते है दिनका जो अष्टम अश
है वह कुतप सन्निक है यह शब्द पुनपुसकलि-
गमें होता है ॥ ३१ ॥ पर्येषणा परीष्टि
यह दो नाम श्राद्धमें ब्राह्मणोंकी भक्तिपूर्वक
सेवाके है अवेपणा गवेपणा यह दो नाम
धर्मादिकके ढूँढनेके है सनि अध्येपणा यह
दो नाम गुरु आदिकों किसी अर्थमें प्रा-
र्थनाकर नियुक्त करनेके है याज्ञा अभि-
शस्ति याचना अर्थना यह चार नाम या-
चनाके है ॥ ३२ ॥

पद् तु त्रिष्वर्घ्यमर्घार्थं पाद्यं पादाय
वारिणि ॥ क्रमादातिथ्यातिथेये अ-
तिथ्यर्थेऽत्र साधुनि ॥ ३३ ॥ स्यु-
रावेशिक आगन्तुरतिथिर्ना गृहाग-
ते ॥ प्राधूर्णिकः प्राधुणकश्चाभ्युत्थानं
तु गौरवम् ॥ ३४ ॥

अगारी कहेहुए अर्घ्य पाद्य आतिथ्य
आतिथेय आवेशिक आगतु यह छै शब्द
तीनों लिङ्गमें होते है अर्घार्थ अर्थात् पूजो-
पचारके अर्थ जो जल है उसमें अर्घ्य शब्द
वर्त्ते है और पादके अर्थ जो जल है उसमें
पाद्य शब्द वर्त्ते है और क्रमसे आतिथ्य

१ दूराच्चोपगत आन्त वैश्वदेवउपस्थितम् ॥
अतिथिं त विज्ञानीयान्नातिथि पूर्वमागत १

आतिथेय यह दो शब्द अतिथिके अर्थ जो कर्म है उसमें और अतिथिके विषे जो साधु है उसमें वर्तते है. भाव यह है कि आतिथ्य यह एक नाम अतिथिके अर्थ जो कर्म है उसका है. आतिथेय यह एक नाम अतिथिके विषे जो साधु है उसका है ॥ ३३ ॥ आवेशिक आगन्तु अतिथि गृहागत यह चार नाम अतिथिके हैं तिसमें अतिथिशब्द पुल्लिङ्ग है. प्राघूर्णिक प्राघुणक यह दो नाम अङ्ग्यागतके हैं. अङ्ग्युत्थान गौरव यह दो नाम उठनेपूर्वक सत्कारके हैं ॥ ३४ ॥

पूजा नमस्याऽपचितिः सपर्यार्चाहणाः समाः ॥ वरिवस्या तु शुश्रूषा परिचर्या-
प्युपासना ॥ ३५ ॥ ब्रज्याऽटाट्या पर्य-
टनं चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः ॥ उपस्पर्श-
स्त्वाचमनमथ मौनमभाषणम् ॥ ३६ ॥

पूजा नमस्या अपचिति सपर्या अर्चा अर्हणा यह छै नाम पूजाके हैं वरिवस्या शुश्रूषा परिचर्या उपासना यह चार नाम

१ प्राचेतसश्चादिकविः स्यान्मैत्रावरुणिश्च सः ॥
वाल्मीकश्चाथ गाधेयो विश्वामित्रश्च कौशिकः
व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवतीसुतः ॥

प्राचेतस आदिकवि मैत्रावरुणि वाल्मीक यह चार नाम वाल्मीकमुनिके हैं. गाधेय विश्वामित्र कौशिक यह तीन नाम विश्वामित्रमुनिके हैं १ व्यास द्वैपायन पाराशर्य सत्यवतीसुत यह चार नाम व्यासमुनिके हैं यह डेढश्लोक और पुनःक्रमे विशेष है

उपासनाके हैं ॥ ३५ ॥ ब्रज्या अटा अट्या पर्यटन यह चार नाम भ्रमण करनेके हैं. ईर्यापथ अर्थात् ध्यानमौनादिक योगमार्गमें जो स्थिति है वह चर्या संज्ञिक है. उपस्पर्श आचमन यह दो नाम आचमनके हैं मौन अभाषण यह दो नाम मौनके हैं ॥ ३६ ॥

आनुपूर्वी स्त्रियां वाऽवृत्परिपाटी अनुक्रमः ॥ पर्यायश्चातिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्ययः ॥ ३७ ॥ नियमो व्रतमस्त्री तच्चोपवासादि पुण्यकम् ॥ औपवस्तं तूपवासो विवेकः पृथगात्मता ॥ ३८ ॥

आनुपूर्वी आवृत् परिपाटी अनुक्रम पर्याय यह पांच नाम परिपाटीके हैं तिसमें आनुपूर्वी शब्द स्त्रीलिङ्गके विषे विकल्पकरके होता है अर्थात् स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनोंमें होता है. अतिपात पर्यय उपात्यय यह तीन नाम अतिक्रमके हैं ॥ ३७ ॥ नियम व्रत यह दो नाम व्रतमात्रके हैं तिसमें व्रत पुंनपुंसकलिङ्ग है. वह व्रत जो कि उपवास चांद्रायणादिकपुण्य है वह जानना. अथवा जो कि उपवासरुच्छ्रचांद्रायण प्राप्ति जापत्य नक्तभोजनादिक व्रत है वह पुण्य संज्ञिक है. औपवस्त उपवास यह दो नाम उपवासके हैं और जो कि पृथक् स्वरूपता है वह विवेक है जैसे चैतन्य जडका विवेक ॥ ३८ ॥

स्याद्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनक्षिरथा-
जलिः ॥ पाठे ब्रह्माजलिः पाठे विप्रुपो
ब्रह्मविन्दवः ॥ ३९ ॥ ध्यानयोगा-
सने ब्रह्मासनं कल्पे विधिक्रमौ ॥

मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पोऽनुकल्पस्तु
ततोऽधमः ॥ ४० ॥

वृत्त सदाचारपालन अध्ययन वेदाभ्यास
इन दोनोंकी ऋद्धि अर्थात् सम्पत्ति ब्रह्मवर्चस्
सन्निक है और जो कि वेदके पाठमें अजलि
है वह ब्रह्माजलि सन्निक है भाव यह है
कि यह एक नाम उसका जो कि अध्यय-
नके आदिमें हाथोंकी प्रणवोच्चारपूर्वक अ-
जलि की जाती है वेदके पाठमें जो कि मुखसें
जलनिन्दु निकलते है वह ब्रह्मविन्दु सन्निक है
॥ ३९ ॥ ध्यान और योगके आसनमें ब्रह्मासन
शब्द वर्त्तै है कल्प विधि क्रम यह तीन नाम
विधि अर्थात् नियोगशास्त्रके है जो आद्यविधि
है वह मुख्य सन्निक है जैसें व्रीहियोंकरके
यजन करै और जो उसमुख्यसें अवम अ-
र्थात् गौण है वह अनुकल्प सन्निक है जैसें
व्रीहियोंके न होनेपर नीवारोंकर ही यजन
करै ॥ ४० ॥

संस्कारपूर्व ग्रहणं स्पादुपाकरणं श्रु-
तेः ॥ समे तु पादग्रहणमभिवादन-
मित्युभे ॥ ४१ ॥ भिक्षुः परिब्राह्म
कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ॥ तप-
स्वी तापस पारिकाङ्क्षी वाचंयमो
मुनि ॥ ४२ ॥

संस्कारपूर्वक जो श्रुतिका ग्रहण है वह
उपाकरण सन्निक है पादग्रहण अभिवादन
यह दो नाम नामगोत्रके कथनपूर्वक नम-
स्कार विशेषके है यह दोनों शब्द समान-
लिङ्ग है ॥ ४१ ॥ भिक्षु परिब्राह्म कर्मदिन
पाराशरिन् मस्करिन् यह पाच नाम सन्न्या-
सीके है तपस्विन् तापस पारिकाक्षिन् यह
तीन नाम तपोयुक्तके है वाचंयम मुनि यह
दो नाम वाणीके रोकनेवालेके है ॥ ४२ ॥

तपःक्लेशसहो दान्तो वर्णिनो ब्रह्म-
चारिणः ॥ ऋषयः सत्यवचसः स्ना-
तकस्वाप्नुतो ब्रवी ॥ ४३ ॥ ये नि-
र्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते ॥
यः स्थण्डिले ब्रतवशाच्छेते स्थण्डि-
लशाग्यसौ ॥ ४४ ॥ स्थाण्डिलश्चाथ
विरजस्तमसः स्युर्दयातिगाः ॥ प-
वित्रः प्रयतः पूतः पासण्डाः सर्वलि-
ङ्गिनः ॥ ४५ ॥

और जो कि तपके क्लेशके सहनेवाला
है वह दान्त सन्निक है वर्णिन् ब्रह्मचारिन्
यह दो नाम ब्रह्मचारिके है ऋषि सत्यवचस्
यह दो नाम ऋषिमात्रके है और जो कि ब्रवी
आप्नुत है अर्थात् जिस वेदव्रतवालेनें समा-
वचन कर्म किया है वह स्नातक सन्निक
है ॥ ४३ ॥ जीता है इन्द्रियोका समूह
जिन्होंनें ऐसे जो पुरुष है वह यतिन् यति
सन्निक है जो नियमके वशसें स्थण्डिल अ-
र्थात् भूमिविशेषपर गया करता है वह

स्थंडिलशायिन् ॥ ४४ ॥ स्थांडिल संज्ञिक है. विरजस्तमस् द्वायातिग यह दो नाम सत्वगुणवाले व्यासादिकोंके हैं. पवित्र प्रयत पूत यह तीन नाम पवित्रके हैं. पाखण्ड सर्वलिङ्गिन् यह दो नाम बौद्धक्षपणाकादिक दुःशास्त्रवर्तियोंके हैं ॥ ४५ ॥

पालाशो दण्ड आषाढो व्रते राम्भस्तु वैणवः ॥ अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी व्रतिनामासनं वृषी ॥ ४६ ॥ अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री भैक्षं भिक्षाकदम्बकम् ॥ स्वाध्यायः स्याज्जपः सुत्या-भिषवः सवनं च सा ॥ ४७ ॥

व्रतकेविषैं ब्रह्मचारीका जो पलाशसंबन्धी अर्थात् ढाकका दण्ड है वह आषाढ संज्ञिक है. और वैणुसंबन्धी अर्थात् वांसका जो दण्ड है वह रांभ संज्ञिक है. कमंडलु कुंडी यह दो नाम व्रतवालोंके जलपात्रका है तिसमें कमंडलुशब्द पुंनपुंसकलिङ्ग है. और जो कि व्रतधारियोंका आसन है वह वृषी संज्ञिक है ॥ ४६ ॥ अजिन् चर्मन् कृत्ति यह तीन नाम मृगादिकके चर्मके हैं तिसमें कृत्तिशब्द स्त्रीलिङ्ग है. और जो कि भिक्षाओंका समूह है वह भैक्ष संज्ञिक है. स्वाध्याय जप यह दो नाम वेदाभ्यासके हैं. सुत्या अभिषव सवन यह तीन नाम सोमाभिषवके हैं ॥ ४७ ॥

सर्वेनसागपध्वंसि जप्यं त्रिष्वधमर्षणम् ॥ दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ

पक्षान्तयोः पृथक् ॥ ४८ ॥ शरीर-साधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः ॥ नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागन्तुसाधनम् ॥ ४९ ॥

समस्त पापोंके नाश करनेवाला जो वर्षा है वह अधमर्षण संज्ञिक है यह शब्द तीन लिङ्गमें होता है. दोनों पक्षान्त अर्थात् अमावास्या पौर्णमासीके विषैं जो पृथक् २ यज्ञ रचेगये हैं वह क्रमसे दर्श पौर्णमास संज्ञिक हैं. भाव यह है कि अमावास्याके दिन जो यज्ञ रचागया है वह दर्श और पौर्णमासीके दिन जो यज्ञ रचागया है वह पौर्णमास है ॥ ४८ ॥ शरीरमात्रकरकेही साधनकी अपेक्षा है जिसकी ऐसा जो नित्यकर्म है अर्थात् शरीरमात्र कर साधनेयोग्य जो नित्यकर्म है वह यम संज्ञिक है. आगन्तुसाधन अर्थात् बाह्यसाधन है जिसमें ऐसा जो नित्यकर्म है वह नियम संज्ञिक है. भाव यह है कि मृत्तिका जलादिकसे साधने योग्य नित्यही कियाहुआ जो कर्म है वह नियम संज्ञिक है ॥ ४९ ॥

उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोच्यते दक्षिणे करे ॥ प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ॥ ५० ॥ अङ्गुल्यग्रे तीर्थे

१ क्षौरं तु भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु ॥

क्षौर भद्राकरण मुंडन वपन यह चार नाम मुण्डनके हैं. यह शब्द तीनों लिङ्गमें होते हैं. यह अर्द्धश्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है ॥ १॥

दैवं स्वल्पाङ्गुल्योर्मूले कायम् ॥ म-
ध्येऽङ्गुष्ठाङ्गुल्योः पित्र्यं मूले त्व-
ङ्गुष्ठस्य ब्राह्मम् ॥ ५१ ॥

दक्षिणहाथपर वारण कियेसतै जो
ब्रह्मसूत्र है वह उपवीत सन्निक है और
अय अर्थात् वामहाथपर धारण कियेसतै
जो ब्रह्मसूत्र है वह प्राचीनावीत सन्निक है
और जो कि ब्रह्मसूत्र अर्थात् जनेऊ कठमें
लगा होकर पडा है वह निवीत सन्निक है
॥ ५० ॥ अगुलियोंके अग्रभागमें जो तीर्थ
है वह दैव सन्निक है और स्वल्पागुलि अ-
र्थात् अनामिका और कनिष्ठिका इन दोनों
छोटी अगुलियोंकी जड़में जो तीर्थ है वह
काय सन्निक है और अगुष्ठागुलि अर्थात्
अंगूठा और तर्जनीके मध्यभागमें जो तीर्थ
है वह पित्र्य सन्निक है और अगूठके जड़में
जो तीर्थ है वह ब्राह्म सन्निक है ॥ ५१ ॥

स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमि-
त्यपि ॥ देवभूपादिकं तद्वत्कृच्छ्रं सां-
त्तपनादिकम् ॥ ५२ ॥ संन्यासव-
त्यनशने पुमान्प्रायोऽथ वीरहा ॥
नटाग्निः कुहना लोभान्मिथ्येर्यापथ-
कल्पना ॥ ५३ ॥

ब्रह्मभूय ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्य यह तीन
नाम ब्रह्मभावके हैं तिसीप्रकार देवभूय आ-
दिक है अर्थात् देवभूय देवत्व देवसायुज्य

१ गोमूत्र गोमय क्षीर दधि सर्पि कुशोदकम् ॥
एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्र सान्तपन स्मृतम् ॥

यह तीन नाम देवभावके हैं सातपन आ-
दिक कृच्छ्र सन्निक है आदिशब्दसें प्राजा-
पत्यादिक जाननें ॥ ५२ ॥ स यासपूर्वक
भोजनके त्यागनेमें प्राय शब्द वर्त्ते है यह
शब्द पुलिग है वीरहन् नटाग्नि यह दो नाम
नाश कियेहुए अग्निवालेके हैं और जो लो-
भ यानी दूसरेके धनादिके अभिलाषसें मि-
थ्याही ईर्यापथकल्पना अर्थात् कपटकरके
ध्यानमौनादिक सपादन है वह कुहना स-
न्निक है ॥ ५३ ॥

ब्रात्यः संस्कारहीनः स्यादस्वाध्यायो
निरारुतिः ॥ धर्मध्वजी लिङ्गवृत्ति-
रवकीर्णी क्षतव्रतः ॥ ५४ ॥ सुते
यस्मिन्स्तमेति सुते यस्मिन्नुदेति च ॥
अंशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ च य-
थाक्रमम् ॥ ५५ ॥

जो संस्कार हीन अर्थात् संस्कारोपन-
यनकर उपनयनके कहे हुए गौण कालसें
पीछे वर्जित है वह ब्रात्य सन्निक है और
जो अस्वाध्याय अर्थात् अपनी शास्त्राके
अध्ययनसें शून्य है वह निरारुति सन्निक
है धर्मध्वजिन् लिङ्गवृत्ति यह दो नाम जी-
विकाकेवास्ते जटादिक वारण करनेवालेके
हैं अवकीर्णिन् क्षतव्रत यह दो नाम नाश
कियेहुए ब्रह्मचर्यवालेके हैं ॥ ५४ ॥ जिसके
सोतेसतै अशुमान सूर्य अस्त होवें और
जिसके सोतेसतै उदय होवै वह यथाक्रम
अभिनिर्मुक्त अभ्युदित सन्निक है भाव यह

है कि जिसके सोतेसमय सूर्य अस्तहोते हैं वह अभिनिर्मुक्त संज्ञिक है और जिसके सोतेपर सूर्य उदय हों वह अभ्युदित संज्ञिक है ॥ ५५ ॥

परिवेत्ताऽनुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ॥ परिवित्तिस्तु तज्ज्यायान् विवाहोपयमौ समौ ॥ ५६ ॥ तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ॥ व्यवयो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ॥ ५७ ॥ त्रिवर्गो धर्मकामार्थैश्चतुर्वर्गः समोक्षकैः ॥ सवलैस्तैश्चतुर्भद्रं जन्याः स्निग्धा वरस्य ये ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

ज्येष्ठभाई अनूढ अर्थात् अविवाहित रहनेपर स्त्रीके ग्रहणसे छोटाभाई परिवेत्तु संज्ञिक है भाव यह है कि जबतककि बड़े भाईका विवाह न हुआ हो तबतक छोटा भाई अपना विवाह करलेवे तो वह छोटा भाई परिवेत्तु संज्ञिक है. और उसका बड़ा भाई परिवित्ति संज्ञिक है. विवाह उपयम ॥ ५६ ॥ परिणय उद्वाह उपयाम पाणिपीडन यह छै नाम विवाहके हैं. व्यवय ग्राम्यधर्म मैथुन निधुवन रत यह पांच नाम मैथुनके हैं ॥ ५७ ॥ धर्म वेदविहितयज्ञादिक, काम यथाविधि स्त्रीसेवन, अर्थ (धन) इन तीनोंकरके जो कहाजाता है वह त्रिवर्ग संज्ञिक है. और मोक्षसहित धर्म काम अर्थ इनकरके जो कहाजाता है वह चतुर्वर्ग सं-

ज्ञिक है. और इन चारों सबलोंकर जो कहाजाता है वह चतुर्भद्र संज्ञिक है. और जो वर जमाईके स्निग्ध अर्थात् तुल्य अवस्थावाले हैं वह जन्य संज्ञिक हैं ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥

मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् ॥ राजा राट् पार्थिवक्षमाभृन्नृपभूपमहीक्षितः ॥ १ ॥ राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः ॥ चक्रवर्ती सार्वभौमो नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

मूर्धाभिषिक्त राजन्य बाहुज क्षत्रिय विराज् यह पांच नाम क्षत्रियके हैं. राजन् राजा पार्थिव क्षमाभृत् नृप भूप महीक्षित यह सात नाम राजाके हैं ॥ १ ॥ और जो कि राजा प्रणताशेषसामन्त है अर्थात् जिसराजाको समस्त देशान्तरीके राजा नम्र होते हैं वह अधीश्वर संज्ञिक है. चक्रवर्त्तिन् सार्वभौम यह दो नाम समुद्रपर्यन्त पृथिवीके स्वामीके हैं. और उसचक्रवर्तीसे जो कि अन्य राजा है वह मण्डलेश्वर संज्ञिक है ॥ २ ॥

येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः ॥ शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्राडथ राजकम् ॥ ३ ॥ राजन्यकं च नृपतिक्षत्रियाणां गणे क्रमात् ॥ मन्त्री धीसचिवोऽभात्योऽन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥

जिसने राजसूय यज्ञ करके यजन किया है और जो बारह मडलका स्वामी है और जो अपनी आज्ञासे राजाओंको शिक्षा करता है वह सम्राज् सन्निक है राजक ॥३॥ राजन्यक यह शब्द क्रमसे नृपति और क्षत्रियोंके समूहमें वर्तते हैं अर्थात् राजक यह एक राजाओंके समूहका है राजन्यक यह एक नाम क्षत्रियोंके समूहका है मन्त्रिन् धी-सचिव अमात्य यह तीन नाम बुद्धिके सहायिकके हैं और जो कि उस धीसचिवसे अन्य कर्मोपयुक्त सचिव है वह कर्मसचिव सन्निक है ॥ ४ ॥

महामात्राः प्रधानानि पुरोधास्तु पुरोहितः ॥ द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राङ्मुखाकाक्षदर्शकौ ॥ ५ ॥ प्रतीहारो द्वारपालद्वारस्थद्वारस्थितदर्शकाः ॥ रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थोऽथाध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥ ६ ॥

महामात्र प्रधान यह दो नाम मुख्य राजाओंके सहायिकोंके हैं इसको प्रधान कहते हैं पुरोधस् पुरोहित यह दो नाम पुरोहितके हैं व्यवहारोंके ऋणादिकविषयमें वादी प्रतिवादीकर स्वेहुए विवादोंके द्रष्टा अर्थात् निर्णय करनेवालेमें प्राङ्मुखाक अक्षदर्शक यह दो शब्द हैं उसको न्यायाधीशभी कहते हैं ॥ ५ ॥ प्रतीहार द्वारपाल द्वा स्थ

द्वा स्थित दर्शक यह पाच नाम द्वारपालके हैं रक्षिवर्ग अनीकस्थ यह दो नाम राजाओंके रक्षा करनेवाले गणके हैं अध्यक्ष अधिकृत यह दो नाम अधिकारीके हैं यह शब्द दोनों समानार्थ हैं ॥ ६ ॥

स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे गोपो ग्रामेषु भूरिषु ॥ भौरिकः कनकाध्यक्षो रूपाध्यक्षस्तु नैष्किकः ॥ ७ ॥ अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्पादन्तर्वेशिको जनः ॥ सौविदहः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते ॥ ८ ॥

जो एक ग्रामकेविषे अधिकृत अर्थात् अधिकारी है वह स्थायुक सन्निक है और जो बहुतसे ग्रामोंके विषे अधिकारी है वह गोप सन्निक है. भौरिक कनकाध्यक्ष यह दो नाम सुवर्णके अधिकारीके हैं रूपाध्यक्ष नैष्किक यह दो नाम चादीके अधिकारीके हैं ॥ ७ ॥ और जो कि जन रनवासमें अधिकारी है वह अन्तर्वेशिक सन्निक है सौविदह कञ्चुकिन स्थापत्य सौविद यह चार नाम उनके हैं जो कि पुरुष राजाओंकी स्त्रियोंके घरपर वेंत लेकर पहरपर खड़े रहते हैं ॥ ८ ॥

पण्डो वर्षवरस्तुल्यो सेवकार्यनुजीविनः ॥ विषयानन्तरो राजा शत्रुर्मित्रमतः परम् ॥ ९ ॥ उदासीनः परतरः पार्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ॥ रिपौ वैरिसपत्नारिदिपेद्वेषणद्वहदः ॥ १० ॥

१ प्राङ्मुखाकका लक्षण अन्यप्रयसे लिखते हैं विवादानुगत पृष्ठा पूर्ववाक्य प्रयत्नत ॥ विचारयति येनासौ प्राङ्मुखाकस्तत स्मृत ॥१॥

द्विद्विपक्षाहितामित्रदस्युशान्नवशान्नवः॥
अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपन्थि-
नः ॥ ११ ॥

षण्ठ वर्षवर यह दो नाम रनवासमें रह-
नेवाले नपुंसकमात्रके हैं यह शब्द समानार्थ
हैं. सेवक अर्थिन् अनुजीविन् यह तीन नाम
सेवकके हैं. विषयानन्तर जो राजा है अर्थात्
अपने देशसे मिलाहुआ जो राजा है वह
शत्रु संज्ञिक है. और इस शत्रुसेपरै जों राजा
है वह मित्र संज्ञिक है. अर्थात् अन्यराजासें
अलदहा जो राजा है वह मित्र संज्ञिक है
॥ ९ ॥ और शत्रुमित्र इन दोनोंसें परै जो
राजा है वह उदासीन संज्ञिक है. और पि-
छारी देशमें वर्तमान जो राजा है वह पा-
रिणग्राह संज्ञिक है. भाव यह है कि शत्रुके
जीतनेके लिये राजाको अगारी चलेजानेपर
पीछें जो उसके देशकी ग्रहण करनेकी
इच्छा करता है वह पारिणग्राह संज्ञिक है.
रिपु वैरिन् सपत्न अरि द्विषत् द्वेषण दुर्हृद
॥ १० ॥ द्विष् विपक्ष अहित अमित्र दस्यु
शान्नव शत्रु अभिघातिन् पर अराति प्रत्य-
र्थिन् परिपन्थिन् यह उन्नीश वैरीके हैं ॥ ११ ॥

वयस्यः स्निग्धः सवया अथ मित्रं
सखा सुहृत् ॥ सख्यं सातपदीनं स्या-
दनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥ यथा-
हर्वर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः ॥
चारश्च गूढपुरुषश्चातप्रत्ययितौ समौ १३

वयस्य स्निग्ध सवयस् यह तीन नाम

तुल्य अवस्थावाले प्रियके हैं. मित्र सखि
सुहृद् यह तीन नाम मित्रके हैं सख्य सा-
तपदीन यह दो नाम मित्रताके हैं अनुरोध
अनुवर्तन यह दो नाम अनुकूलताके हैं
॥ १२ ॥ यथार्हवर्ण प्रणिधि अपसर्प चर
स्पश चार गूढपुरुष यह सात नाम गुप्तवात
कहनेवाले हलकारेके हैं. आत प्रत्ययित यह
दो नाम विश्वासीके हैं ॥ १३ ॥

सांवत्सरो ज्योतिषिको दैवज्ञगणका-
वपि ॥ स्युर्मौहूर्तिकमौहूर्तज्ञानिका-
तान्तिका अपि ॥ १४ ॥ तात्रिको
ज्ञातसिद्धान्तः सत्री गृहपतिः समौ ॥
लिपिकरोऽक्षरचणोऽक्षरचञ्चुश्च ले-
खके ॥ १५ ॥

सांवत्सर ज्योतिषिक दैवज्ञ गणक मौहू-
र्तिक मौहूर्त ज्ञानिन् कार्तान्तिक यद् आठ
नाम ज्योतिषशास्त्रके जाननेवालेके हैं इसको
जोशी कहते हैं ॥ १४ ॥ तांत्रिक ज्ञातसि-
द्धान्त यह दो नाम शास्त्रके जाननेवालेके
हैं. सत्री गृहपति यह दो नाम सदैव अ-
न्नादिक दान करनेवालेके हैं यह शब्द स-
मानार्थ हैं. लिपिकर अक्षरचण अक्षरचंचु
लेखक यह चार नाम लेखके हैं ॥ १५ ॥

लिखिताक्षरविन्यासे लिपिलिखिरुभे
स्त्रियौ ॥ स्यात्संदेशहरो दूतो दूत्यं
तद्भावकर्मणी ॥ १६ ॥ अध्वनी-
नोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इ-
त्यपि ॥ स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराट्-

दुर्गबलानि च ॥ १७ ॥ राज्याङ्-
गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि
च ॥ सधिर्ना विग्रहो यानमासनं
द्वैधमाश्रयः ॥ १८ ॥

लिखित अक्षरसंस्थान लिपि लिबि यह
चार नाम लिखेहुए अक्षरेके है तिसमें लिपि
और लिबि यह दो स्त्रीलिंग है सदेशहर दूत
यह दो नाम सदेशा देनेवाले दूतके है और
उस दूतके भाव और कर्ममें दूत शब्द
होता है ॥ १६ ॥ अध्वनीन अध्वग अ-
ध्वन्य पाथ पथिक यह पाच नाम राहगी-
रके है इसको रास्तागीरभी कहते हैं स्वामी
राजा अमात्य (मंत्री) सुहृद् (मित्र)
कोश (धनगृह) राष्ट्र (देशवर्ती पृथिवी)
दुर्ग (किला) बल (सेना) यह सात
॥ १७ ॥ राज्याग प्रकृतिशब्दवाच्य हैं,
और पुरवासियोंकी पक्तिभी प्रकृति सन्निक
है सन्धि यह एक नाम सुवर्णादिककर वै-
रीकी प्रीति सिद्ध करनेका है यह शब्द
पुल्लिंग है विग्रह यह एक नाम शत्रुके मङ्ग-
लमें दाह लूट खसोटकर धनके ग्रहण कर-
नेका है यान यह एक नाम वैरीकेपति जीत
चाहनेवालेके गमन करनेका है आसन यह
एक नाम शक्तिके प्रतिबन्ध होनेपर कालके
उलघन करनेकेलिये दुर्गादिक रचकर स्थित
रहनेका है द्वैध यह एक नाम बलीकेसाथ
सलाह और निर्वर्तीके साथ विग्रह करनेका
है आश्रय यह एक नाम शत्रुकरके पीडित

हुएको बली राजादिकका आश्रय करनेका
है ॥ १८ ॥

पद्गुणाः शक्तयस्तिष्ठः प्रभावोत्सा-
हमन्त्रजाः ॥ क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च
त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् ॥ १९ ॥ स
प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोशदण्ड-
जम् ॥ साम्प्रदाने भेददण्डावित्युपा-
पचनुष्टयम् ॥ २० ॥

सधि विग्रह यान आसन द्वैध आश्रय
यह छै गुण सन्निक हैं प्रभावोत्साहमन्त्रसें
उत्पन्न हुई तीन शक्ति है भाव यह है जो की
कोशदण्डसें उत्पन्न हुआ तेज है वह प्रभा-
वशक्ति है और जो कि विक्रमादिककर उ-
न्नति है वह उत्साहशक्ति है और जो कि
सन्धिविग्रहादिकोंकी मन्त्रकरके यथावत् स्थि-
ति है वह मन्त्रशक्ति है क्षय अष्टवर्गका घ-
टना स्थान अष्टवर्गका समान रहना वृद्धि
अष्टवर्गका बढ़ना यह तीनों नीतिशास्त्र
जाननेवालोंके मध्यमें त्रिवर्ग सन्निक है ॥ १९ ॥
कोशधनका समूह दण्ड अर्थात् दम या
सेना इनसें उत्पन्न हुआ जो तेज है वह

१ सामलक्षण और ग्रन्थसे लिखते है-

परस्पररोपकाराणा दर्शन गुणकीर्तनम् ॥ स-
न्धम्य समाख्यानमापत्त्या सम्प्रादानम् ॥
वात्ता पेशल्या साधु तजालमिति चार्पणम् १

२ अष्टवर्गका लक्षण अग्रयसें लिखते हैं-
एषिर्वणिकूपथोर्गुं सेतु कुत्ररन्धनम् ॥ ख-
निर्वल रूपादान गुन्याना च निवेशनमिति २

प्रताप प्रभाव संज्ञिक है। सामन् यह एक नाम प्रियवचनादिककर सलाह करनेका है। दान यह एक नाम धनादिकके अर्पण करनेका है। भेद यह एक नाम मिलेहुए शत्रुओंको भेदनकरके अपने आधीन करनेका है। दण्ड यह एक नाम दण्ड देनेका है। यह चारों उपाय चतुष्टय संज्ञिक है ॥ २० ॥

साहसं तु दमो दण्डः साम सान्त्व-
मथो समौ ॥ भेदोपजापावुपधा ध-
र्माधैर्यत्परीक्षणम् ॥ २१ ॥ पञ्च त्रि-
ष्वपडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः ॥
विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाकास्तथा
रहः ॥ २२ ॥ रहश्चोपांशु चालिङ्गे
रहस्यं तद्भवे त्रिषु ॥ समौ विश्वम्भ-
विश्वासौ भेषो भ्रंशो यथोचितात् ॥ २३ ॥

साहस दम दण्ड यह तीन नाम दण्डके हैं। सामन् सान्त्व यह दो नाम सलूखके हैं। भेद उपजाप यह दोनों समानलिंग नाम मिलेहुओंको अलहदा करनेके है। इसको फि-
तूरभी कहते हैं। धर्मादिककर जो परीक्षा करना है वह उपधा संज्ञिक है। भाव यह है कि धर्म अर्थ काम तथा भयकरके जो मंत्री आदिकोंकी इच्छा जाननी है उसको उपधा कहते हैं ॥ २१ ॥ और जो कि तृतीयादि जनोंकरके अप्रत्यक्ष है वह अपडक्षीण संज्ञिक है। भाव यह है कि जो कि सलाह आदिक दो करके की जावै है और उसको तृतीयादिक मनुष्य नहीं जा-

नते हैं वह अपडक्षीण संज्ञिक हैं। अपडक्षीण-
आदिक निःशलाकान्त पांचशब्द तीनों लिंगों होतेहैं। विविक्त विजन छन्न निःशलाक रहस्य ॥ २२ ॥ रह उपांशु यह सात नाम निर्जनदेशवे हैं इसको एकान्त जगहभी कहते हैं। तिम रहस्यशब्द नपुंसक है। और रह और उपांशु शब्द अलिंग अर्थात् अव्यय हैं। और जे उस रह एकान्तमें वार्त्तादिक हो उसमें रहस्य शब्द वर्ते हैं। यह शब्द तीनों लिंगों होता है। विश्वम्भ विश्वास यह दो नाम विश्वासके हैं यह आपसमें समान लिंग हैं यथोचित स्वरूपसे जो भ्रंश है अर्थात् पतन है वह भेष संज्ञिक है ॥ २३ ॥

अभेषन्यायकल्पास्तु देशरूपं समञ्ज-
सम् ॥ युक्तमौपयिकं लक्ष्यं भजमा-
नाभिनीतवत् ॥ २४ ॥ न्याय्यं च
त्रिषु पदं संप्रधारणा तु समर्थनम् ॥
अववादरतु निर्देशो निदेशः शासनं
च सः ॥ २५ ॥ शिष्टिश्चाज्ञा च
संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ॥
आगोऽपराधो मन्तुश्च समे तूद्दान-
वन्धने ॥ २६ ॥

अभेष न्याय कल्प देशरूप समंजस यह पांच नाम नीतिके हैं। युक्त औपयिक लक्ष्य भजमान अभिनीत ॥ २४ ॥ न्याय्य यह छै नीतिसंयुक्त हुए द्रव्यादिकके हैं। यहाँ वद शब्द युक्तादिकोंका पर्यायत्व प्रकाश करनेकेवास्ते है। यह छैओ शब्द तीनों लि-

गमें होते है सप्रधारणा समर्थन यह दो नाम युक्त प्रयुक्तकी परीक्षाके है अववाद निर्देश निदेश शासन ॥२५॥ शिष्टि आज्ञा यह छे नाम आज्ञाके है सस्था मर्यादा धारणा स्थिति यह चार नाम मर्यादाके है आगस् अपराध मन्तु यह तीन नाम अपराधके है उद्दान बचन यह दोनों समानलिंग नाम बचनके है ॥ २६ ॥

द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो भागधेयः
करो बलिः ॥ घट्टादिदेयं शुल्को
ऽस्त्री प्राभूतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥
उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा ॥
यौतकादि तु यद्देयं सुदायो हरणं
च तत् ॥ २८ ॥

जो द्विगुना दण्ड है वह द्विपाद्य सन्निक है भागधेय कर बलि यह तीन नाम कर्षकआदिकोंसे राजाओंकर ग्रहण करनेयोग्य भागके है इसकों कर कहते है घट्ट नदीतीरादिकस्थान आदिशब्दसे गुल्म प्रतोल्यादिक इनकेविषे जो देनेयोग्य राजग्राह्यभाग है वह शुल्क सन्निक है इसकों महशूल कहते है प्राभूत प्रदेशन ॥ २७ ॥ उपायन उपग्राह्य उपहार उपदा यह छे नाम राजा गुरु आदिकोंके दर्शनादिकमें अर्पण की हुए वस्तुके हैं इसकों भेंट (नजराना) भी कहते है तिसमें उपदा शब्द स्त्रीलिंग है जो देय धनादिक यौतकादिक है अर्थात् जो वन यौतक वरकयाको विवाहादिक कालमें दे-

नेयोग्य है आदिशब्दसे जो भाइयोंके देनेयोग्य है वह सुदाय हरण सन्निक है भाव यह है कि यह दो नाम कन्यादानके समय वा व्रतभिक्षादिककेविषे दियेहुए द्रव्यके है ॥

तत्कालस्तु तदात्वं स्यादुत्तरः काल
आयतिः ॥ सादृष्टिकं फलं सद्य उ-
दकं फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥ अदृष्टं
बह्नितोयादिदृष्टं स्वपरचक्रजम् ॥ मही-
भुजामहिभयं स्वपक्षप्रभवं भयम् ॥ ३० ॥

तत्काल तदात्वं यह दो नाम वर्त्तमानकालके है और जो कि उत्तर अर्थात् आनेवाला काल है वह आयति सन्निक है जो तत्कालही फल है वह सादृष्टिक सन्निक है और जो उत्तर अर्थात् होनेवाला फल है वह उदक सन्निक है ॥ २९ ॥ बह्नि (अग्न्युत्पात) तोय (अतिवृष्ट्यादिक) इनका कियाहुआ जो भय है वह अदृष्ट सन्निक है अपने वा दूसरेके देशमें उत्पन्न हुआ जो चोरादिकभय है वह दृष्ट सन्निक है महोभुज राजाओंको अपने सहायोंसे उठाहुआ जो भय है वह अहिभय सन्निक है ॥ ३० ॥

प्रक्रिया त्वधिकारः स्याच्चाभरं तु प्र-
कीर्णकम् ॥ नृपासनं यत्तद्भद्रासनं
सिंहासनं तु तत् ॥ ३१ ॥ हैमं छत्रं
त्वातपत्रं राज्ञस्तु नृपलक्ष्म तत् ॥
भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो भृङ्गारः वन-
कालुका ॥ ३२ ॥

प्रक्रिया अधिकार यह दो नाम व्यवस्थाके स्थापनके हैं। चामर यर्कोणक यह दो नाम चौरके हैं। नृपासन भद्रासन यह दो नाम मणिआदिकसे बनायेहुए राजाके आसनके हैं। और जो कि यदि नृपासन सुवर्णसे बना है तो वह सिंहासन संज्ञिक है छत्र आतपत्र यह दो नाम छत्रके हैं। और यदि राजाका छत्र हो तो वह नृपलक्ष्मन् संज्ञिक है। भद्रकुंभ पूर्णकुंभ यह दो नाम पूर्णकलशके हैं। भृंगार कनकालुका यह दो नाम सुवर्णके बनायेहुये पात्रके हैं ३१ ३२

निवेशः शिविरं षण्ढे सज्जनं तूपरक्षणम् ॥ हस्त्यश्वरथपादार्तं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम् ॥ ३३ ॥ दन्ती दन्तावलौ हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः ॥ मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३४ ॥ इभः स्तम्बेरमः पद्मी यूथनाथस्तु यूथपः ॥ मदोत्कटो मदकलः कलभः करिशावकः ॥ ३५ ॥

निवेश शिविर यह दो नाम सेनाके वासस्थानके हैं। सज्जन उपरक्षण यह दो नाम सेनाकी रक्षाकेलिये नियुक्त किया हुआ प्रहरिकादिक चिन्हके हैं इसको पहरा तथा गस्तभी कहते हैं। यह दोनों नपुंसकलिंग हैं। हाथी घोड़ा रथ पैदल यह चार सेनांग हैं ॥ ३३ ॥ दन्तिन् दन्तावल हस्तिन् द्विरद अनेकप द्विप मतंगज गज नाग कुंजर वारण करिन् ॥ ३४ ॥ इभ स्तम्बे-

रम पद्मिन् यह पन्दरह नाम हाथीके हैं। यूथनाथ यूथप यह दो नाम यूथमें मुख्य हाथीके हैं। मदोत्कट मदकल यह दो नाम मदसे उन्मत्त हुए हाथीके हैं। कलभ करिशावक यह दो नाम हाथीके बच्चेके हैं ॥ ३५ ॥

प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः समाबुद्धान्तनिर्मदौ ॥ हास्तिकं गजता वृन्दे करिणी धेनुका वशा ॥ ३६ ॥ गण्डः कटो मदो दानं वमथुः करशीकरः ॥ कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसस्तयोर्मध्ये विदुः पुमान् ॥ ३७ ॥

प्रभिन्न गर्जित मत्त यह तीन नाम उस हाथीके हैं जिसके कि मद चिचाता हो। उद्धान्त निर्मद यह दो नाम दूर हुए मदवाले हाथीके हैं। हास्तिक गजता यह दो नाम हाथियोंके समूहमें वर्त्ते हैं। करिणी धेनुका वशा यह तीन नाम हथिनीके हैं ॥ ३६ ॥ हाथीका कपोल अर्थात् गाल कट संज्ञिक है। मद दान यह दो नाम मदोदकके हैं। वमथु करशीकर यह दो नाम हाथीकी शूंडसे निकलेहुए जलकणके हैं। हाथीके शिरके पिण्ड कुम्भ संज्ञिक है यह शब्द दो होनेसे द्विवचनान्त है। उन कुम्भोंके बीचमें जो आकाशस्थान है वह विदु संज्ञिक है यह शब्द पुल्लिंग है ॥ ३७ ॥

अवग्रहो ललाटं स्यादीषिका त्वक्षिकूटकम् ॥ अपाङ्गदेशो निर्याणं कर्णमूलं तु चूलिका ॥ ३८ ॥ अधः

कुम्भस्य बाहिर्त्थं प्रतिमानमधोऽस्य
यत् ॥ आसनं स्कन्धदेशः स्यात्प-
द्मकं बिन्दुजालकम् ॥ ३९ ॥

हाथीका जो ललाट (माथा) है वह
अवग्रह सन्तिक है ईषिका अक्षिकूटक यह
दो नाम हाथीके नेत्रगोलकके है और जो
हाथीका अपागदेश अर्थात् नेत्रका अन्त-
भाग है वह निर्याण सन्तिक है और जो
कि हाथीकी कानकी जड़ है वह चूलिका
सन्तिक है ॥ ३८ ॥ और कुम्भका नीचेका
भाग बाहिर्त्थ सन्तिक है और इस बाहि-
र्त्थका जो नीचेका भाग है वह प्रतिमान
सन्तिक है और हाथीका स्कन्धदेश आसन
सन्तिक है और जो कि हाथीके देहपर बि-
न्दुसमूह है वह पद्मक सन्तिक है ॥ ३९ ॥

पार्श्वभागः पक्षभागो दन्तभागस्तु
योऽग्रतः ॥ द्वौ पूर्वपश्चाज्जङ्घादि-
देशौ गान्धावरे क्रमात् ॥ ४० ॥ तोत्रं
वैगुणकमालानं बन्धस्तम्भेऽथ शृङ्गला ॥
अन्दुको निगडोऽस्त्री स्यादङ्कुशो-
ऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥ ४१ ॥

और जो कि हाथीके आसपासका भाग
है वह पक्षभागसन्तिक है और जो कि
हाथीका अग्रभाग है वह दन्तभागसन्तिक
है और जो कि हाथीके अगारी और पि-
छारीके जघादिक देश है वह दोनों क्रमसे
गात्र अवर सन्तिक हैं भाव यह है कि जो
कि हाथीका अगारीका जघादिक देश है

वह गात्रसन्तिक है और जो कि पिछारीका
जघादिक देश है वह अवर सन्तिक है ॥ ४० ॥
तोत्र वेणुक यह दो नाम हाथीके हाँकनेके
चाबुकके है हाथीके बाधनेके आधाररूप
स्वम्भमें आलान शब्द वर्त्ते है शृखला
अदुक निगड यह तीन नाम हाथीके पों-
वमें बाधनेकी शाखरके है इसको बड़ोभी
कहते है तिसमें निगडशब्द स्त्रीलिंगवर्जित
पुनपुसकलिंग है अकुश सृणि यह दो नाम
अकुशके है तिसमें अकुश पुनपुसकलिंग
है और सृणि स्त्रीलिंग है ॥ ४१ ॥

दूष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात्कल्पना
सज्जना समे ॥ प्रवेण्यास्तरणं वर्णः
परिस्तोमः कुथो द्वयोः ॥ ४२ ॥
वीतं त्वसारं हस्यध्वं वारी तु गज-
बन्धनी ॥ घोटके वीतितुरगतुरंगाम्बु-
रंगमाः ॥ ४३ ॥ वाजिवाहार्बगन्धर्व-
हयसैन्धवसप्तयः ॥ आजामेयाः कुली-
नाः स्पर्विनीवाः साधुवाहिनः ॥ ४४ ॥

दूष्या कक्ष्या वरत्रा यह तीन नाम हा-
थीके मध्यभागमें बाधनेकी चामकी रस्सीके
हैं कल्पना सज्जना यह दो नाम नायकके
चढ़ानेकेवास्ते हाथीके सजावनेके है यह दो
नों शब्द समानलिंग है प्रवेणी आस्तरण
वर्ण परिस्तोम कुथ यह पाच नाम हाथीकी
पृष्ठवर्ती बिछौनाके है इसको हाथीकी झू-
लभी कहते है तिसमें कुथशब्द स्त्रीपुल्लिंग
दोनोंमें होता है ॥ ४२ ॥ और जो कि

हस्त्यश्व असार है अर्थात् जो कि हाथीया घोडा युद्धके योग्य नहीं है वह वीत संज्ञिक है. और जो कि गजबन्धनी अर्थात् हाथीके बांधनेकी जगह है वह वारी संज्ञिक है. इसकों हाथीखानाभी कहते हैं. चोटक वीति तुरग तुरंग अश्व तुरंगम ॥ ४३ ॥ वाजिन् वाह अर्वन् गंधर्व हय सैन्धव सप्ति यह ते-रह नाम घोडेके हैं. और जो कि घोडा कुलीन अर्थात् उत्तमजातिसे उत्पन्न हुए हैं वह आजानेय संज्ञिक हैं. और जो कि घोडा साधुवाही अर्थात् सुन्दर चलते हैं वह विनीत संज्ञिक हैं ॥ ४४ ॥

वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाह्लिका हयाः ॥ ययुरश्वोऽश्वमेधीयो जवनस्तु जवाधिकः ॥ ४५ ॥ पृष्ठयः स्थौरी सितः कर्को रथ्यो वोढा रथस्य यः ॥ बालः किशोरो वास्यश्वा वडवा वाडवं गणे ॥ ४६ ॥

वनायुज पारसीक काम्बोज बाह्लिक यह चार घोडाओंके भेद हैं और जो कि घोडा अश्वमेध यज्ञकेवास्ते योग्य है वह ययु संज्ञिक है. और जो कि घोडा वेगकरके अधिक है वह जवन संज्ञिक है ॥ ४५ ॥ पृष्ठय स्थौरिन् यह दो नाम जलादिक बोलके वहनेवाले घोडेके हैं. और जो कि शुक्ल घोडा है वह कर्क संज्ञिक है. और जो कि घोडा रथके वहनेवाला है वह रथ्य संज्ञिक है. और घोडेका जो बाल है वह किशोर

संज्ञिक है इसकों वछैडा कहते हैं. वामी अश्वा वडवा यह तीन नाम घोडीके हैं और घोडियोंके समूहमें वाडव शब्द वर्त्त है ॥ ४६ ॥

त्रिज्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ॥ कश्यं तु मध्यमश्वानां हेषा ह्येषा च निःस्वनः ॥ ४७ ॥ निगालस्तु गलोदेशो वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत् ॥ आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥ ४८ ॥

और जो कि मार्ग घोडेकर एक दिन में प्राप्त होवे है वह आश्वीन संज्ञिक है यह शब्द तीनों लिंगमें होता है. जो कि घोडाओंका मध्यभाग है वह कश्य संज्ञिक है. घोडाओंका शब्द हेषा हेषा संज्ञिक है इसकों हींसनभी कहते हैं ॥ ४७ ॥ और जो कि घोडेका गलोदेश है अर्थात् गले और हंसलीकी संधि है वह निगाल संज्ञिक है. घोडाओंके समूहमें आश्वीय आश्व शब्द वर्त्त हैं. यहाँ वदप्रत्ययकरके आदेश दोनों शब्दोंकी तुल्यता जतानेके लिये है. आस्कन्दित यह एक नाम घोडेकी उस चालका है जिसमें कि वेगसे आर्त्तहुआ घोडा न सुनता है न देखता है इसकों भरपला (भरधांव चाल) कहते हैं. धौरितक यह एक नाम चतुरतायुक्त सरलगतिका है. इसकों तुरकी गामचालभी कहते हैं. रेचित यह एक नाम मध्यमवेगकरके चक्रकी समान भ्रमनेका है इसकों दुरकी चाल कहते हैं.

वर्णित यह एक नाम अग्रशरीरकों समु-
ल्लासकरकेँ खोटे स्थलादिकमें मुखकों स-
मेटकर चलनेका है इसकों बाजीचाल क-
हते है पुन यह एक नाम अगले पिछले
भागकों उठाकर क्रमसेँ आरोपण करनेका
है इसकों चौक चाल कहते हैं ॥ ४८ ॥

गतयोऽमूः पञ्च धारा घोणा तु प्रो-
थमस्त्रियाम् ॥ कविका तु खलीनोऽ-
स्त्री शफं क्लीवे खुरः पुमान् ॥ ४९ ॥
पुच्छोऽस्त्री लूमलाङ्गूले बालहस्तश्च
बालधिः ॥ त्रिपूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते
मुहुर्भुवि ॥ ५० ॥

यह पाचोगति बारा सत्तिक है और
घोडेकी घोणा नाक प्रोथ सत्तिक है यह
शब्द पुनपुसकलिंगमें होता है कविका ख-
लीन यह दो नाम लगामके है तिसमें ख-
लीन शब्द पुनपुसकलिंग है शफ खुर यह
दो नाम घोडेकी टापके है इसकों सुभ क-
हते है तिसमें शफशब्द नपुसकलिंगमें होता
है और खुरशब्द पुल्लिंग है ॥ ४९ ॥ पुच्छ
लूम लागूल यह तीन नाम घोडेकी पूछके हैं
तिसमें पूछशब्द पुनपुसकलिंग है बालहस्त
बालधि यह दो नाम केशममूहयुक्त पूछके
अग्रभागके हैं उपावृत्त लुठित यह दो नाम
श्रमके दूर करनेकेलिये चार २ पृथिवीपर
आसपासके भागोंकर छोटे टुप्प घोडेमें बर्ते है
यह दोनों शब्द तीनों लिंगमें होते हैं ॥ ५० ॥

पाने चक्रिणि युद्धार्थं शताङ्गं स्प-
न्दनो रथः ॥ असौ पुष्परथश्चक्र-

यानं ॥ समराय यत् ॥ ५१ ॥ क-
र्णिरथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम् ॥
क्लीवेऽनशकटोऽस्त्री स्याद्वघ्री कम्ब
लिवाहकम् ॥ ५२ ॥

युद्धही है अर्थ प्रयोजन जिसका ऐसे
चक्रयुक्तयानमें शतांग स्पन्दन रथ यह तीन
नाम बर्ते है अर्थात् यह तीन नाम युद्धके
रथके है और जो कि चक्रयुक्त यान युद्धके
वास्ते नहीं होता है वह पुण्यरथ सत्तिक है
अर्थात् यह एक नाम क्रीडारथका है ॥ ५१ ॥
कर्णिरथ प्रवहण डयन यह तीन नाम ऊप-
रवस्त्रादिकसेँ ढकेलियेके घैठनेके रथविशे-
पके हैं यह तीनों समानार्थ है अनसूशकट
यह दो नाम गाडाके है तिसमें अनसूशब्द
नपुसकलिंगमें होता है और शकट पुनपुस-
कलिंग है और जो शकट कबलिवाहक है
अर्थात् घैलोंकर बहनेयोग्य है वह वघ्री स-
त्तिक है इसकों गाटी कहते हैं ॥ ५२ ॥

शिविका याप्यपानं स्याद्वोला मेड्-
खादिका स्त्रियाम् ॥ उभौ तु द्वैपयै-
याग्रौ द्वीपिचमांवृते रथे ॥ ५३ ॥
पाण्डुकम्बलसवीतं स्पन्दनः पाण्डु-
कम्बली ॥ रथे काम्बलवास्त्राद्याः
कम्बलादिभिरावृते ॥ ५४ ॥

शिविका याप्ययान यह दो नाम पाट-
लीक है गेठा पेत्ता यह दो नाम हिंदोलके
है कोई इसको दोलीभी कहते हैं आदिरा-
वृत्ते शयन सदा वासादिकभी दोटा सत्तिक है

यह दोनों शब्द स्त्रीलिङ्गमें होते हैं। व्याघ्रके चर्मसें मढेहुए रथमें द्वैप वैयाघ्र यह दोनों शब्द वर्त्ते हैं ॥ ५३ ॥ श्वेत पीले कंवलसें मढाहुआ रथ पाण्डुकंवलिन संज्ञिक है। कंवल्लदिक अर्थात् कंवल वस्त्र रेशमआदिसें मढेहुए रथमें कांवल वास्त्र आदिशब्दसें दौकूल आदिकशब्द वर्त्ते हैं भाव यह है कि जो कि कम्बलसें रथ मढा हो वह कांवल संज्ञिक है और जो कि वस्त्रसें रथ मढा हो वह वास्त्र संज्ञिक है। और जो दुकूलसें रथ मढा हो वह दौकूल संज्ञिक है ॥ ५४ ॥

त्रिषु द्वैपादयो रथ्या रथकट्या रथ-
त्रजे ॥ धूः स्त्री क्लीवे यानमुखं स्या-
द्दथाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥ चक्रं र-
थाङ्गं तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः
पुमान् ॥ पिण्डिका नाभिरक्षाग्रकी-
लके तु द्वयोरणिः ॥ ५६ ॥

यह द्वैप वैयाघ्रादिक शब्द तीनों लिङ्गमें होते हैं रथ्या रथकट्या यह दो नाम रथके समूहमें वर्त्ते हैं। धूर् यानमुख यह दो नाम रथादिकके अग्रभागके हैं इसको धुर कहते हैं तिसमें धूर् शब्द स्त्रीलिङ्ग और यानमुख नपुंसकलिङ्गमें वर्त्ते है। रथांग अपस्कर यह दो नाम रथके अंगमात्रके हैं ॥ ५५ ॥ चक्र रथांग यह नाम पहियेके हैं। तिस चक्रके अन्तमें अर्थात् पृथिवीके स्पर्श करनेवाले भागमें नेमि प्रधि शब्द वर्त्ते हैं। तिसमें नेमि स्त्रीलिङ्ग और प्रधि पुल्लिङ्ग है। पिण्डिका ना-

भि यह दो नाम पहियेके मण्डलाकार मध्यभागका नाम है। अक्ष नाम धुराके अग्रभागमें पहियेके धारण करनेकेवास्ते जो कील आरोपण कीजाती है उसमें अरणि शब्द वर्त्ते है। यह शब्द दोनों स्त्रीपुल्लिङ्गमें होता है ॥ ५६ ॥

रथगुप्तिर्वरूथो ना कूवरस्तु युगंधरः ॥
अनुकर्पो दार्वधःस्थं प्रासङ्गो ना
युगाद्युगः ॥ ५७ ॥ सर्वं स्याद्वाहनं
यानं युग्यं पत्रं च धोरणम् ॥ परम्प-
रावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ ५८ ॥

रथगुप्ति वरूथ यह दो नाम शस्त्रादि-
कोंकी रक्षाकेलिये रथका जो लोहादिमय
परदा कियाजाता है उसके हैं तिसमें वरूथ
पुल्लिङ्ग है। कूवर युगंधर यह दो नाम जिसमें
कि रथके बोडे बाँधे जाते हैं उस काष्ठके
हैं। और जो कि काष्ठ रथके नीचे स्थित है
वह अनुकर्ष संज्ञिक है। युगात् अर्थात् युग-
कर चलनेवाला जो रथाश्वादिक तिसका
जो युग जुआ है वह प्रासंग संज्ञिक है
यह शब्द पुल्लिङ्ग है ॥ ५७ ॥ समस्त हाथी
घोडा आदिक वाहन यान युग्य पत्र धोरण
संज्ञिक हैं। और जो कि परंपरा वाहन है
अर्थात् जो कि पालकी आदिक वाहन परं-
पराकर नरादिकोंकर वहाजाता है वह वै-
नीतक संज्ञिक है यह शब्द पुंनपुंसकलिङ्गमें
होता है ॥ ५८ ॥

आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा
निपादिनः ॥ नियन्ता प्राजिता य-
न्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः ॥ ५९ ॥
सव्येष्टदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटु-
म्बिनः ॥ रथिनः स्पन्दनारोहा अ-
श्वारोहास्तु सादिनः ॥ ६० ॥

आधोरण हस्तिपक हस्त्यारोह निपा-
दिन् यह चार नाम हाथीमानके है नियन्त
प्राजित यत् सूत क्षत्त सारथि ॥ ५९ ॥
सव्येष्ट दक्षिणस्थ यह आठ नाम रथकुटुम्बों
अर्थात् रथके होंकनेवालेके है रथिन् स्प-
न्दनारोह यह दो नाम रथपर चढ़कर रड-
नेवालेके हैं अश्वारोह सादिन् यह दो नाम
घोड़ेके सवारके है ॥ ६० ॥

भटा योधाश्च योद्धारः सेनारक्षास्तु
सैनिकाः ॥ सेनाया समवेता ये सै-
न्यास्ते सैनिकाश्च ते ॥ ६१ ॥ ब-
लिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सह-
स्रिणः ॥ परिधिस्थः परिचरः सेना-
नीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२ ॥

भट योध योद्ध यह तीन नाम युद्ध
करनेवालेके है सेनारक्ष सैनिक यह दो नाम
सेनाके रक्षा करनेवाले पहरेदारोंके हैं और
जो सेनाकेविषै समवेत अर्थात् इकठे रहते
हैं वह सै य सैनिक सन्निक है ॥ ६१ ॥
और जो सहस्र करके बली है अर्थात् जि-
नकी सेनामें हजार जोया रहते है वह सा-
हस्र सहसिन् सन्निक है परिधिस्थ परिचर

यह दो नाम उसके है जो कि सेनापतिके
चारोंतरफ विचरता रहता है सेनानी वाहि-
नीपति यह दो नाम सेनापतिके है ॥ ६२ ॥

कञ्चुको वारवाणोऽस्त्री यत्तु मध्ये
सकञ्चुकाः ॥ वभ्रान्त तत्सारसनम-
विकाङ्गोऽथ शीर्षकम् ॥ ६३ ॥
शीर्षण्यं च शिरस्त्रेऽथ तनुत्रं वर्म
दंशनम् ॥ उरच्छुदः कङ्कटको जगरः
कवचोऽस्त्रियाम् ॥ ६४ ॥

कचुक वारवाण यह दो नाम सन्नाह
चोलकादिकके है तिसमें वारवाणशब्द पुन-
पुमकलिग है और सकचुकपुरुष मध्यभागमें
दृढताकेवास्ते कचुकके ऊपर जो बाँधते है
वह सारसन अधिकाग सन्निक है इसको
कमरपट्टी कहते है शीर्षक ॥ ६३ ॥ शी-
र्षण्य शिरस्त्र यह तीन नाम टोपके है तनुत्र
वर्मन् दशन उरच्छुद ककटक जगर कवच
यह सात नाम कवचके है इसको वकवतर
कहते है तिसमें कवचशब्द पुनपुसकलिगमें
होता है ॥ ६४ ॥

आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिन-
द्धवत् ॥ संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो
व्यूढकङ्कटः ॥ ६५ ॥ त्रिप्यामुक्ता-
दयो वर्मभृता कावचिक गणे ॥ प-
दातिपत्तिपदगपादानिकपदाजय ॥
॥ ६६ ॥ पद्मश्च पद्मिन्श्चाऽथ पा-
दाव पत्तिसहति ॥ शस्त्राजीवे का-
ण्डपृष्ठापुधीपापुविकाः समा ॥ ६७ ॥

आमुक्त प्रतिमुक्त पिनद्ध अपिनद्ध यह चार नाम उसके हैं जो कि कंचुकादिकों पहरेहुका है। सन्नद्ध वर्मित सज्ज दंशित व्यूढकंकट यह पांच नाम उसके हैं जो कि कवचकों धारण कियेहुए है ॥ ६५ ॥ यह आमुक्त आदिक शब्द तीनों लिंगों होते हैं जैसे [आमुक्ता शाटी-आमुक्तः कंचुकः-आमुक्तं वस्त्रम्-] इसीप्रकार सन्नद्धा आदिक जाननें। कवचधारियोंके समूहमें कावचिक शब्द होता है। पदाति पत्ति पदग पादातिक पदाजि ॥ ६६ ॥ पद्म पदिक यह सात नाम पैदलके हैं। पैदलोंका समूह पादात संज्ञिक है। शस्त्राजीव कांडपृष्ठ आयुधीय आयुधिक यह चार नाम शस्त्रसें जीविका करनेवालेके हैं यह शब्द आपसमें समान हैं ॥ ६७

कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः कृतपुङ्खवत् ॥ अपराद्धपृषत्कोऽसौ लक्ष्याद्यश्रुतसायकः ॥ ६८ ॥ धन्वी धनुष्मान्धानुष्को निषङ्गयस्त्री धनुर्वरः ॥ स्यात्काण्डवांस्तु काण्डोरः शाक्तीकः शक्तिहेतिकः ॥ ६९ ॥

कृतहस्त सुप्रयोगविशिख कृतपुंख यह तीन नाम बाणके फैकनेमें चतुर पुरुषके हैं इसको तीरन्दाज कहते हैं। और जो कि लक्ष्यसें भ्रष्टबाणवाला है अर्थात् जिसका बाण निशानेपर नहीं लगता है वह अपराद्धपृषत्क संज्ञिक है ॥ ६८ ॥ धन्विन् धनुष्मत् धानुष्क निर्धागन् अस्त्रिन् धनुर्धर यह छै

नाम धनुषधारीके हैं। काण्डवत् काण्डीर यह दो नाम बाणधारीके हैं। शाक्तीक शक्तिहेतिक यह दो नाम वरछी धारण करनेवालेके हैं ॥ ६९

याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपश्वधहेतिकौ ॥ नैस्त्रिंशिकोऽसिहेतिः स्यात्समौ प्रासिककौन्तिकौ ॥ ७० ॥ चर्मि फलकपाणिः स्यात्पताकी वैजयन्तिकः ॥ अनुपुवः सहायश्चाऽनुचरोऽभिचरः समाः ॥ ७१ ॥

यष्टि (लाठी) और पश्वध (फरसा) हैं शस्त्र जिनके ऐसे जो लोग हैं वह याष्टीक पारश्वधिक संज्ञिक हैं अर्थात् याष्टीके यह एक नाम लाठी धारण करनेवालेका है पारश्वधिक यह एक नाम फरसा धारण करनेवालेका है। और जो कि तलवार शस्त्रवाला है वह निस्त्रिंशिक संज्ञिक है। प्रासिक यह एक नाम सांग धारण करनेवालेका है कौन्तिक यह एक नाम भाला धारण करनेवालेका है यह दोनों शब्द समानलिंग हैं ॥ ७० ॥ चर्मिन् फलकपाणि यह दो नाम ढालके धारण करनेवालेके हैं। पताकिन् वैजयन्तिक यह दो नाम पताकाके धारण करनेवालेके हैं। अनुपुव सहाय अनुचर अभिचर यह चार नाम सहायके हैं यह शब्द समानार्थ हैं ॥ ७१ ॥

पुरोगाग्रेसरप्रष्टाग्रतःसरपुरःसराः ॥

पुरोगमः पुरोगामी मन्दगामी तु मन्थरः ॥ ७२ ॥ जङ्घालोऽतिजव-

स्तुल्यौ जङ्घाकरिकजाङ्घिकौ ॥
तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो
जवः ॥ ७३ ॥

पुरोग अग्रेसर प्रष्ट अग्रतः सर पुर सर
पुरोगम पुरोगामिन् यह सात नाम अगारी चल-
नेवालेके है मन्दगामिन् मथर यह दो नाम धीर
२ चलनेवालेके है ॥ ७२ ॥ जघाल अतिजव यह
दो नाम अत्यन्तचलनेवालेके है जघाकरिक
जाधिक यह दो नाम उसके है जो कि जघाके
चलसे जीविका करता है इसको हलकाराभी
कहते है यह शब्द समानालिग है तरस्विन्
त्वरित वेगिन् प्रजविन् जवन जव यह छै
नाम जलदी चलनेवालेके है ॥ ७३ ॥

जप्यो यः शक्यते जेतु जेयो जेत-
व्यमात्रके ॥ जैत्रस्तु जेता यो गच्छ-
त्यल विद्विपतः प्रति ॥ ७४ ॥ सो-
ऽभ्यमित्रोऽभ्यमित्रोऽभ्यमित्रोऽभ्यमित्रो-
ण इत्यपि ॥ ऊजस्वलः स्याद्ऊजस्वी
य ऊजातिशयान्वितः ॥ ७५ ॥

जो कि जीतनेको समर्थ होवै वह जय्य
सक्षिक हे जैसे रामकर रावण जय्य है
जेय यह एक नाम जेत यमात्रमें वत्ते है
अर्थात् यह एक नाम जीतनेयोग्यका है
जैसे मन जेय है न कि जय्य जेत जेत
यह दो नाम जीतनेवालेके है और जो कि
शत्रुओंके प्रति अल अर्थात् सामर्थ्यकरके
लड़नेका समुख जाता ह ॥ ७४ ॥ वह
अभ्यमित्र अभ्यमित्रो अभ्यमित्रोण स-
क्षिक हे और जो कि ऊर्जपराक्रमके अति-

शयकरके युक्त है वह ऊर्जस्वल ऊर्जस्विन्
सक्षिक है ॥ ७५ ॥

स्यादुरस्वानुरसिलो रथिनो रथिको
रथी ॥ कामंगाम्यनुकामीनो ह्यत्य-
न्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७६ ॥ शूरो
वीरश्च विक्रान्तो जेता जिष्णुश्च जि-
त्वरः ॥ सायुगीनो रणे साधुः शस्त्रा-
जीवादयस्त्रिषु ॥ ७७ ॥

उरस्वत् उरसिल यह दो नाम बड़ी
छातीवालेके है रथिन रथिक रथिन् यह
तीन नाम रथके स्वामीके है और जो कि
कामगामी है अर्थात् जो कि इच्छानुकूल
गमन करता है वह अनुकामीन सक्षिक है
और जो बहुधा गमनशील है वह अत्यतीन
सक्षिक है ॥ ७६ ॥ शूर वीर विक्रान्त यह
तीन नाम शूरेके है जेत जिष्णु जित्वर यह
तीन नाम जयशीलके हैं जो कि रणमें साधु
अर्थात् सग्रममें कुशल है वह सायुगीन स-
क्षिक है यह शस्त्राजीव आदिक सायुगी-
नात् शब्द तीनों लिंगमें होते हैं ॥ ७७ ॥

ध्वजिनी बाहिनी सेना पृतनाऽनी-
किनी चमूः ॥ वस्तुथिनी वलं सैन्यं
चक्रं चानीकमस्त्रियाम् ॥ ७८ ॥
व्यूहस्तु वलविन्यासो भेदा दर्पणादयो

१ व्यूहका लक्षण और ग्रन्थमें लिखत है
मुखे रथा रथा पृष्ठे तत्पृष्ठे च पतातय ॥
पार्श्वयोश्च गणा कार्या व्यूहोप पश्चिमीति १
२ कामन्दकने दण्डादिलक्षण कता है
निर्गमृत्तिम्बु दग्ध्याद्रोगोऽन्यामृत्तिरेव च ॥
मदल सप्तोवृत्ति पृथग्मृत्तिरसदत ॥ २ ॥

युधि ॥ प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतना अनीकिनी चमू वरूथिनी बल सैन्य चक्र अनीक यह ग्यारह नाम सेनाके हैं। इसमें अनीक-शब्द पुनपुंसकलिंग दोनोंमें होता है ॥ ७८ ॥ जो बलविन्यास अर्थात् जो सेनाकी रचना विशेषकरके स्थिति है वह व्यूह संज्ञिक है। युद्धमें व्यूहके दण्ड आदिकभेद विशेष हैं सेनाकी जो दण्डकीसमान तिरछी स्थिति है वह दण्ड है आदिशब्दसे भोगमंडलादिक जानने। प्रत्यासार व्यूहपार्ष्णि यह दो नाम व्यूहके पिछलेभागके हैं। सैन्यपृष्ठ प्रतिग्रह यह दो नाम सेनाके पिछलेभागके हैं ॥ ७९ ॥

एकेभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्चपदा-
तिका ॥ पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्र-
मादाख्या यथोत्तरम् ॥ ८० ॥ से-
नामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना
चमूः ॥ अनोकिनी दशानीकिन्यङ्-
क्षौहिण्यथ संपदि ॥ ८१ ॥ संपत्तिः

१ अक्षौहिणीका लक्षणभी और ग्रन्थसे लिखते हैं—

अक्षौहिण्यामित्यधिकैः सप्तत्याह्यष्टभिः शतैः ॥
संयुक्तानि सहस्राणि गजानामेकविंशतिः २१
८७०। एवमेवरथानान्तु संख्यानं कीर्तितं तुधैः
२१८७० पञ्चषष्टिसहस्राणि षट्शतानि दशैव
तु ॥ संख्यातास्तुरगास्तज्जैर्विना रथतुरंगमैः
८५६१०। नृणां शतसहस्राणि सहस्राणि
तथा नव ॥ शतानि त्रीणि चान्यानि पञ्चा-
शच्च पदातयः ॥ १०९३५०॥

श्रीश्च लक्ष्मीश्च विपत्त्यां विपदापदौ ॥
आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रमथास्त्रि-
यो ॥ ८२ ॥ धनुश्चापौ धन्वशरा-
सनकोदण्डकार्मुकम् ॥ इष्वासोऽप्यथ
कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥ ८३ ॥

जिसमें एक हाथी एक रथ तीन घोड़ा पांच पैदल हैं वह सेना पत्ति संज्ञिक है। स-मस्त तिगुने पत्तिसेनाके अंग गजादिकोंकर यथोत्तर क्रमसे सेनामुखादिक नाम होवे हैं ॥ ८० ॥ जैसे तीन पत्तियोंका सेनामुख और तीन सेनामुखोंका गुल्म और तीन गुल्मोंका गण और तीन गणोंकी वाहिनी और तीन वाहिनियोंकी पृतना और तीन पृतनाओंकी चमू और तीन चमूओंकी अनीकिनी और तीन अनीकिनियोंकी दशानीकिनी और तीन दशानीकिनियोंकी अक्षौहिणी होवै है। संपद् ॥ ८१ ॥ संपत्ति श्री लक्ष्म यह चार नाम संपदाके हैं। विपत्ति विपदापद् यह तीन नाम आपदाके हैं। आयुध प्रहरण शस्त्र अस्त्र यह चार नाम शस्त्रमात्रके हैं। धनुष चाप धन्वन् शरासन कोदण्ड कार्मुक इष्वास यह सात नाम धनुषके हैं। जिसमें धनुष और चाप शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंग हैं। कर्णका धनुष कालपृष्ठ संज्ञिक है ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुन-
पुंसकौ ॥ कोटिरस्याटनी गोधे तले
ज्याघातवारणे ॥ ८४ ॥ लस्तकस्तु

धनुर्मध्यं मौर्वी ज्या शिजिनी गुणः॥
स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादि स्था-
नपञ्चकम् ॥ ८५ ॥

गाडीव गाडिव यह दो नाम कपिध्वज
(अर्जुन)के धनुषके है यह दोनों शब्द पुनपु-
सकलिंग है, कोटि अटनी यह दो नाम इस
धनुषके प्रातभागमें वर्ते है अर्थात् यह नाम
धनुषके आसपासके किनारेके है गोधा तल
यह दो नाम प्रत्यचाके प्रहारके निवारणके-
विषे वर्ते है इन श-दोंमें व्यक्तिद्वयसे द्वि-
चन है ॥ ८४ ॥ और जो कि धनुषका
मध्यभाग है वह लस्तक सन्निक है मौर्वी
ज्या शिजिनी गुण यह चार नाम धनुषकी
प्रत्यचाके है इसको चिह्नाभी कहते है प्र-
त्यालीढ आलीढ आदिशब्दसे सप्तपदवैशाख
मडल यह पाच धनुषधारियोंकी स्थितिके
भेद है जैसें वाईजघाके फैलानेपूर्वक दहनी
जघाके समेटनेकर जो स्थिति है वह प्र-
त्यालीढ है और दक्षिणजघाके फैलानेपूर्वक
वाईजघाके समेटनेकर जो स्थिति है वह
आलीढसन्निक है और पाँवोंकी तुल्यताकर
जो स्थिति है वह सप्तपदसन्निक है और
विलौदभरके अन्तरकर जो पाँवोंकी स्थिति
है वह वैशाखसन्निक है और मण्डलाकार
जो दोनों पाँवोंका धारण करना है वह म-
डल सन्निक है ॥ ८५ ॥

लक्षं लक्ष्य शरव्य य शराभ्यास उ-
पासनम् ॥ पृषत्कबाणविशिस्ता अ-

जिह्मगखगाशुगाः ॥ ८६ ॥ कल-
म्बमार्गणशराः पञ्चो रोप इषुर्दयोः ॥
प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः पक्षो वाज-
स्त्रिषूत्तरे ॥ ८७ ॥

लक्ष लक्ष्य शरव्य यह तीन नाम नि-
शानके है शराभ्यास उपासन यह दो नाम
बाणके फेकनेके अभ्यासके है पृषत्क बाण
विशिख अजिह्मग खग आशुग ॥ ८६ ॥
कल्ब मार्गण शर पञ्चिन् रोप इषु यह बा-
रह नाम बाणके है तिसमें इषुशब्द स्त्रीपुलिंग
दोनोंमें होता है प्रक्ष्वेडन नाराच यह दो
नाम लोहमयबाणके है पक्ष वाज यह दो
नाम बाणके ककादिकपक्षके है यहाँसे उ-
त्तरवाची निरस्त आदिक लिप्तकात शब्द
तीनों लिंगमें होते है ॥ ८७ ॥

निरस्तः प्रहिते बाणे विपाक्ते दिग्ध-
लिप्तकौ ॥ तूणोपासङ्गतूणीरनिप-
ङ्गा इषुर्धिर्दयोः ॥ ८८ ॥ तूण्या
खड्गे तु निस्त्रिशचन्द्रहासातिरिष्ट-
यः ॥ कौक्षेयको मण्डलाग्रः करवालः
रूपाणवत् ॥ ८९ ॥

फेंकेहुए बाणमें निरस्त शब्द वर्ते है
विपाक दिग्ध लिप्तक यह तीन नाम विपसें
सनेहुए बाणमें वर्ते है तूण उपासग तूणीर
निपग इषुर्वि ॥ ८८ ॥ तूणी यह छै नाम
तरकसके है विसमें इषुधिशब्द स्त्रीपुलिंग
दोनोंमें होता है खड्ग निस्त्रिश चन्द्रहास अ-
सि रिष्टि कौक्षेयक मडलाग्र करवाल रूपाण
यह नौ नाम तत्त्वारके हैं ॥ ८९ ॥

त्सरुः खड्गादिमुष्टौ स्यान्मेखला त-
न्निबन्धनम् ॥ फलकोऽस्त्री फलं चर्म
संग्राहो मुष्टिरस्य यः ॥ ९० ॥ द्रु-
घणो मुद्गरघनौ स्यादीली करवालि-
का ॥ भिन्दिपालः सृगस्तुल्यौ प-
रिघः परिघातनः ॥ ९१ ॥

त्सरु यह एक नाम तलवार कटार खं-
जीर छुरी आदिकोंकी मूठमें बर्ते हैं. और
जो कि उस तलवारका निबन्धन है वह
मेखला संज्ञिक हैं. इसकरके प्रहार करतेहुए
हाथसे तलवार नहीं निकलसकी है. कोई
इसको डालीभी कहते हैं. फलक फल चर्मन्
यह तीन नाम ढालके हैं तिसमें फलकशब्द
स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंग है. और जो कि
इस ढालकी मुष्टि अर्थात् पकड़नेकी जगह
है वह संग्राह संज्ञिक है ॥ ९० ॥ द्रुघण
मुद्गर घन यह तीन नाम मुद्गरके हैं. ईली
करवालिका यह दो नाम छोटा तलवारकी
समान एक धारवाले शस्त्रके हैं. इसको खां-
डा कहते हैं. भिन्दिपाल सृग यह दो नाम
पत्थरोंके फेंकनेमें साधनरूप रस्सीके बनेहुए
यंत्रविशेषके हैं इसको गोफण कहते हैं.
यह दोनों शब्द समान हैं. परिघ परिघातन
यह दो नाम लोहसे बंधीहुई हाथकी बराबर
लाठीके हैं ॥ ९१ ॥

द्वयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च पर-
श्वधः ॥ स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च
छुरिका चासिधेनुका ॥ ९२ ॥ वा
पुंसि शल्यं शङ्कुर्ना शर्वला तोमरो-

ऽस्त्रियाम् ॥ प्रासस्तु कुन्तः कोणस्तु
स्त्रियः पाल्यश्रिकोटयः ॥ ९३ ॥

कुठार स्वधिति परशु परश्वध यह चार
नाम कुठारके हैं इसको फरसा कहते हैं.
तिसमें कुठारशब्द पुंनपुंसकलिंग दोनोंमें होता
है. शस्त्री असिपुत्री छुरिका असिधेनुका यह
चार नाम छुरीके हैं ॥ ९२ ॥ शल्य शंकु
यह दो नाम वाणाग्र शस्त्रविशेषके हैं इसको
फल कहते हैं. तिसमें शल्यशब्द विकल्पसे
पुंलिंगमें होता है. और शंकुशब्द पुंलिंग है
सर्वला तोमर यह दो नाम गुर्जेके हैं तिसमें
तोमरशब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता है. प्रास
कुन्त यह दो नाम भालाके हैं इसको सां-
गभी कहते हैं. कोण पालि अश्रि कोटि या
चार नाम तलवार आदिकशस्त्रोंके अन्तभा-
गके हैं इसको नोंकभी कहते हैं तिसमें पा-
लिआदिक शब्द स्त्रीलिंग हैं ॥ ९३ ॥

सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थ-
कः ॥ लोहाभिसारोऽस्त्रभृतां राज्ञां
नीराजनाविधिः ॥ ९४ ॥ यत्सेन-
याभिगमनमरौ तदभिषेजनम् ॥ यात्रा-
व्रज्याऽभिनिर्माणं प्रस्थानं गमनं
गमः ॥ ९५ ॥

सर्वाभिसार सर्वौघ सर्वसन्नहन यह तीनों
नाम चतुरंगसेनाके इकट्ठे करनेके हैं इसको
जमावभी कहते हैं. सर्वसन्नहनार्थक इसके
पदका यह अर्थ है कि सर्वसन्नहनही है
अर्थ. अर्थात् सबका इकट्ठा करना ही अर्थ
जिसका सो सर्वसन्नहनार्थक है. नामसंख्यामें

सर्वसन्नहन शब्द होता है यह शब्द नपुस-
कलिंग है अस्त्रधारी राजाओंकी महानवमी
दशमीकेविषे नीराजनके समयमें शस्त्रसमर्प-
णरूप जो विवि है वह लोहाभिसार सन्निक
है ॥ ९४ ॥ अरिनाम शत्रुके समीप जो
सेना सहित गमन है वह अभिषेणन सन्निक
है यात्रा व्रज्या अभिनिर्वाण प्रस्थान गमन
गम यह छै नाम यात्राके है ॥ ९५ ॥

स्पादासारः प्रसरणं प्रचक्रं चलिता-
र्थकम् ॥ अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे
यानमभिक्रमः ॥ ९६ ॥ वैतालिका
बोधकराश्चाक्रिका घाण्टिकाऽर्थ-
काः ॥ स्युर्मागधास्तु मगधा वन्दिनः
स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥

आसार प्रसरण यह दो नाम सेनाके
विस्तारके है प्रचक्र चलित यह दो नाम
चलीहुई सेनाके है सग्राममें अहित वैरियोंके
प्रति अभीत निडर शूरका जो गमन है वह
अभिक्रम सन्निक है ॥ ९६ ॥ वैतालिक
बोधकर यह दो नाम उनके है जो कि प्रा-
त काल राजाओंको स्तुतिके पाठकरके ज-
गाते है चाक्रिक घाटिक यह दो नाम उ-
नके है जो कि जगानेके समय घटाके प्र-
सारकर राजाओंकी प्रशंसा करते है मागध
मगध यह दो नाम उनके हैं जो कि रा-
जाके अगारी वशकी स्तुति करते है वन्दिन
स्तुतिपाठक यह दो नाम राजादिकोंकी स्तु-
तिके पाठ करनेवालोंके है इनका प्राटभी

कहते है कोई इन मागधादिक चारोंको ए-
कार्थ कहते है ॥ ९७ ॥

संशसकास्तु समयात्सङ्ग्रामादनिर्वर्ति-
नः ॥ रेणुर्द्वयोः स्त्रियाम् धूलिः पासु-
र्ना न द्वयो रजः ॥ ९८ ॥ चूर्णे
क्षोदः समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले ॥
पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वजम-
स्त्रियाम् ॥ ९९ ॥

और जो कि शपथकर सग्राममें नहीं
निवृत्त होते है वह संशसक सन्निक है भाव
यह है कि जो कि प्रतिज्ञाकर बिनाजीते
सग्राममें नहीं लौटते है वह संशसक हैं रेणु
धूलि पासु रजस् यह चार नाम धूलिके है
तिसमें रेणु स्त्रीपुलिंग दोनोंमें होता है और
धूलिशब्द स्त्रीलिंगमें होता है और पासुशब्द
पुलिंग है और रजस्शब्द स्त्रीपुलिंग दोनोंमें
नहीं होता है किन्तु नपुसकलिंगमें होता है
॥ ९८ ॥ चूर्ण क्षोद यह दो नाम पिसोहुई
धूलिके हैं समुत्पिञ्ज पिञ्जल यह दो नाम
अत्यन्त आकुल हुई सेनाआदिकमें वर्त्ते हैं
पताका वैजयन्ती केतन ध्वज यह चार नाम
पताकाके हैं तिसमें ध्वजशब्द स्त्रीलिंगवर्जित
पुनपुसकलिंगमें होता है ॥ ९९ ॥

सा वीराशमनं युद्धभूमिर्पांसिभय-
प्रदा ॥ अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहंपूर्वि-
का स्त्रियाम् ॥ १०० ॥ आरोपुरु-
षिका दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि ॥
अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परयो

भवत्यहंकारः ॥ १०१ ॥ द्रविणं
तरः सहोवलशौर्याणि स्थाम शुष्मं
च ॥ शक्तिः पराक्रमः प्राणो विक्र-
मस्त्वतिशक्तिता ॥ १०२ ॥

और जो कि अनिभय देनेवाली युद्ध-
भूमि है वह वीराशंसन संज्ञिक है. अहंपूर्व
अहंपूर्व अर्थात् मैं अगारी होता हूं २ इत्यादि
आग्रहपूर्वक जो युद्ध है वह अहंपूर्विका संज्ञिक
है यह शब्द स्त्रीलिंगमें होता है ॥ १०० ॥
और गर्वसें जो कि आत्माकेविषे संभावना
है अर्थात् सामर्थ्यका प्रकट करना है वह
आहोपुरुषिका है भाव यह है कि मैंहीं पु-
रुष हूं ऐसे अहंकारवाला जो है वह अहो-
पुरुष है और उसका जो भाव है वह आ-
होपुरुषिका संज्ञिक है. मैं समर्थ हूं इत्यादिक
जो परस्पर अहंकार होता है वह अहमह-
मिका संज्ञिक है ॥ १०१ ॥ द्रविण तरस्
सहस् बल शौर्यं स्थामन् शुष्म शक्ति परा-
क्रम प्राण यह दश नाम पराक्रमके हैं. वि-
क्रम अतिशक्तिता यह दो नाम अतिपराक्र-
मके हैं ॥ १०२ ॥

वीरपाणं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा
रणे ॥ युद्धमायोधनं जन्यं प्रधानं प्र-
विदारणम् ॥ १०३ ॥ मृधमास्क-
न्दनं संख्यं समीकं सांपरायिकम् ॥
अस्त्रियां समरानीकरणाः कलहवि-
ग्रहौ ॥ १०४ ॥ संप्रहाराभिसंपात-
कलिसंस्फोटसंयुगाः ॥ अभ्यामर्दस-

माघातसङ्ग्रामाभ्यागमाहवाः ॥ १०५ ॥
समुदायः स्त्रियः संयत्समित्याजिस-
मिद्युधः ॥ नियुद्धं बाहुयुद्धेऽथ तुमुलं
रणसंकुले ॥ १०६ ॥

रण निवृत्त होनेपर श्रमकी शान्तिके-
लिये अथवा होनेवाले रणकेविषे उत्साहकी
वृद्धिकेलिये जो वीरोंका मदिराका पान है
वह चीरपाण संज्ञिक है. युद्ध आयोधन जन्य
प्रधान प्रविदारण ॥ १०३ ॥ मृध आस्क-
न्दन संख्य समीक सांपरायिक समर अ-
नीक रण कलह विग्रह ॥ १०४ ॥ संप्रहार
अभिसंपात कलि संस्फोट संयुग अभ्यामर्द
समाघात संग्राम अभ्यागम आहवा ॥ १०५ ॥
समुदाय संयत् समिति आजि समित् युद्ध
यह इकतीस नाम युद्धके हैं. तिसमें समर
आदिक तीन नाम पुनपुंसकलिंगमें होते हैं.
और संयत् आदिक पांचो शब्द स्त्रीलिंग हैं
नियुद्ध बाहुयुद्ध यह दो नाम बाहुयुद्धके हैं
तुमुल यह एक नाम रणके संकुलमें वर्त्ते है.
अर्थात् यह एक नाम संग्रामकी परस्पर सं-
बाधाका है ॥ १०६ ॥

क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्यात्करिणां व-
टना घटा ॥ क्रन्दनं योधसंरावो वृ-
हितं करिगर्जितम् ॥ १०७ ॥ वि-
स्फारो धनुषः स्वानः पटहाडम्बरो
समौ ॥ प्रसर्भं तु बलात्कारो हठो-
ऽथ स्खलितं छलम् ॥ १०८ ॥

क्षेडा सिंहनाद यह दो नाम वीरोके सिंहनादके समान नादविशेषके हैं। और जो कि हाथियोंकी युद्धमें घटना है अर्थात् स-घटन है वह घटा और जो कि जोधाओका झालीपूर्वक जो शब्द है वह क्रदन सन्निक है और जो कि हाथियोंकी गर्जना है वह बृहित सन्निक है ॥ १०७ ॥ और जो कि धनुषका शब्द है वह विस्फार सन्निक है पटह आडवर यह दोनो समानलिगवाचो नाम सग्रामकी ध्वनिके हैं प्रसन्न बलात्कार हट यह तीन नाम हटके हैं स्खलित छल यह दो नाम युद्धमर्यादासे चलनेके हैं इस-कों धोखाभी कहते हैं ॥ १०८ ॥

अजन्म क्लीबमुत्पात उपसर्गः सप्त त्र-यम् ॥ मूर्च्छा तु कश्मलं मोहोऽप्यव-मर्दस्तु पीडनम् ॥ १०९ ॥ अभ्यव-स्कन्दनं त्वभ्यासादनं विजयो जयः ॥ वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा ॥ ११० ॥ प्रद्रावोद्द्रावसंद्राव-संदावा विद्रवो द्रवः ॥ अपक्रमोऽ-पयानं चरणे भङ्गाः पराजयः ॥ १११ ॥

अजन्म उत्पात उपसर्ग यह तीन नाम शुभाशुभ जतानेवाले उत्पातके हैं विसर्ग अज यशब्द नपुंसकलिग है यह तीनों शब्द समानार्थ हैं मूर्च्छा कश्मल मोह यह तीन नाम मूर्च्छाके हैं अवमर्द पीडन यह दो नाम सस्यादिकोंसे युक्त हुए देशकों पीडित करनेके हैं ॥ १०९ ॥ अभ्यवस्कन्दन अ-

भ्यासादन यह दो नाम छलसें दबानेके हैं। इसको छायाभी कहते हैं। विजय जय यह दो नाम शत्रुकों हराकर पायेहुए उत्कर्षके हैं इसको जीत कहते हैं वैरशुद्धि प्रतीकार वै-रनिर्यातन यह तीन नाम वैर मिटानेके हैं ॥ ११० ॥ प्रद्राव उद्द्राव सद्राव सदाव विद्रव द्रव अपक्रम अपयान यह आठ नाम भागनेके हैं और जो कि सग्रामकेविषैं भग है, वह पराजय सन्निक है ॥ १११ ॥

पराजितपराभूतौ त्रिषु नष्टतिरोहि-तौ ॥ प्रमापणं निर्वहणं निकारणं विशारणम् ॥ ११२ ॥ प्रवासनं प-रासनं निपूदनं निहिंसनम् ॥ निर्वा-सनं संज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ॥ ११३ ॥ निस्तर्हणं निहननं क्ष-णनं परिवर्जनम् ॥ निर्वापणं विश-सनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११४ ॥ उद्दासनप्रमथनक्रथनोज्ञासनानि च ॥ आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथवधा अपि ॥ ११५ ॥

पराजित पराभूत यह दो नाम जीते हुए के हैं निलीन तिरोहित यह दो नाम छिपे हु-एके हैं यह पराजित आदिक चारोंशब्द तीनों लिगमें होते हैं, क्योंकि त्रिषु यह पद काकनेत्रकीसमान दोनोंमें युक्त होता है। प्र-मापण निर्वहण निकारण विशारण ॥ ११२ ॥ प्रवासन परासन निपूदन निहिंसन निर्वासन संज्ञपन निर्ग्रन्थन अपासन ॥ ११३ ॥

निस्तरुण निहनन क्षणन परिवर्जन निर्वापण
विशसन मारण प्रतिघातन ॥ ११४ ॥ उ-
द्वासन प्रमथन क्रथन उज्जासन आलम्भ
पिंज विशर घात उन्माथ वध यह तीश नाम
मारनेके हैं ॥ ११५ ॥

स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्र-
लयोऽत्ययः ॥ अन्तो नाशो द्वयोर्मृ-
त्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम् ॥ ११६ ॥
परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः ॥
मृतप्रमीतौ त्रिण्वेते चिता चित्या
चितिः स्त्रियाम् ॥ ११७ ॥

पञ्चता कालधर्म दिष्टान्त प्रलय अत्यय
अन्त नाश मृत्यु मरण निधन यह दश नाम
मरणके हैं। तिसमें मृत्युशब्द स्त्रीपुंलिंग दो-
नोंमें वर्त्तै है, और निधनशब्द स्त्रीलिंगवर्जित
पुंनपुंसकलिंगमें होता है ॥ ११६ ॥ परासु
प्राप्तपञ्चत्व परेत प्रेतसंस्थित मृत प्रमीत यह
सात नाम मरेहुएके हैं, यह परासु आदिक
शब्द तीनों लिंगमें होते हैं। चिता चित्या
चिति यह तीन नाम चिताके हैं। यह शब्द
स्त्रीलिंगमें होते हैं ॥ ११७ ॥

कवन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेव-
रम् ॥ श्मशानं स्यात्पितृवनं कुणपः
शवमस्त्रियाम् ॥ ११८ ॥ प्रग्रहोप-
ग्रहौ बन्धां कारा स्याद्बन्धनालये ॥
पुंसि भूमन्यसवः प्राणाश्चैवं जीवोऽ-
सुधारणम् ॥ ११९ ॥ आयुर्जीवि-
तकालो ना जीवातुर्जीवनौषधम् ॥

॥ इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

जो कि अपमूर्ध अर्थात् मस्तकहीन
नर्त्तनक्रियायुक्त शरीर है, वह कवन्ध संज्ञिक
है। इसको धड कहते हैं। यह शब्द पुंनपुंस-
कलिंग है। श्मशान पितृवन यह दो नाम प्रे-
तभूमिके हैं। इसको मरेघट कहते हैं। कुणप
शव यह दो नाम निर्जीव शरीरके हैं। इसको
मुर्दा कहते हैं। तिसमें शवशब्द पुंनपुंसक लिं-
गकेविषे होता है ॥ ११८ ॥ प्रग्रह उपग्रह
बन्दी यह तीन नाम चोरादिकोंके बन्धनके
हैं। इसको कैदभी कहते हैं। बन्धनके घरके-
विषे कारा शब्द वर्त्तै है, इसको कैदखाना
कहते हैं। असु प्राण यह दो नाम प्राणोंके
हैं। यह दोनों शब्द पुंलिंग और बहुवचनमें
होते हैं। जीव असुधारण यह दो नाम प्राण-
धारण करनेके है ॥ ११९ ॥ जीवनेसे यु-
जो काल है, वह आयुस् संज्ञिक है। और जो
जीवनका औषध अर्थात् रखनेका उपाय है,
वह जीवातु संज्ञिक है। यह शब्द पुंलिंग है

॥ इति क्षत्रियवर्गः ॥

ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमि-
स्पृशो विशः ॥ आजीवो जीविका
वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने ॥ १ ॥ स्त्रियां
कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृ-
त्तयः ॥ सेवा श्ववृत्तिरनृतं कृषिरु-
च्छशिलं त्वृतम् ॥ २ ॥

ऊरव्य ऊरुज अर्य वैश्य भूमिस्पृश विश
यह छै नाम वैश्यके हैं। आजीव जीविका
वार्ता वृत्ति वर्त्तन जीवन यह छै नाम जी-

विकामात्रके है ॥ १ ॥ रुपि खेतीका जो-
तना खोदना आदिक, पाशुपाल्य गोरक्षणा-
दिक, वाणिज्य वेचना खरीदना आदिक, यह
तीन वृत्ति अर्थात् वैश्योंकी जीविकाके भेद
हैं इनमें रुपिशब्द स्त्रीलिङ्गमें होता है, और
जो कि सेवा है, अर्थात् पराये चित्तका अ-
नुवर्त्तन हे, वह श्ववृत्ति है, और जो कि रु-
पिनाम कर्षणवृत्ति है, वह अनृत सन्निक है
बाजार आदिकोंमें गिरेहुए कर्णोंका एक २
कर ग्रहण करना उछ सन्निक है और खेत
आदिकोंमें स्वामीकर त्यागेहुए कर्णोंका ग्रहण
करना शिल सन्निक है यह दोनों उछ, और
शिलवृत्ति ऋत सन्निक है ॥ २ ॥

दे याचितायाचितयोर्थयासंख्यं मृता-
मृते ॥ सत्यानुतं वणिग्भावः स्याद्वणं
पर्युदञ्चनम् ॥ ३ ॥ उद्धारोऽर्थप्रयो-
गस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका ॥ या-
च्त्रयातं याचितकं निमयादापमित्य-
कम् ॥ ४ ॥

और याचित अयाचित अन्नादिकोंके
विषे यथासंख्य ऋत अमृत यह दो शब्द
होते हैं भाव यह है कि, प्रतिदिन तडुला-
दिककी जो याचा है, वह ऋत सन्निक है,
और जो कि अजगरकी वृत्तिकी समान
याचाके बिना अन्नादिक प्राप्त होता है, वह
अमृत सन्निक है, और जो कि वणिग्भाव
अर्थात् वाणिज्य क्रयविक्रयादिक है, वह
सत्यानृत सन्निक है ऋण पर्युदचन ॥ ३ ॥

उद्धार यह तीन नाम ऋणके है प्रयोग कु-
सीद वृद्धिजीविका यह तीन नाम उसके हैं
जो कि ऋणसम्बन्धी कालांतर द्रव्यकरके
जीविका है, इसको व्याज (सूद) भी कहते
हैं और जो कि याच्त्रा अर्थात् माँगनेकरके
मिले, वह याचितक सन्निक है. और जो कि
निमय अर्थात् लैनेदेनेसे मिलता है, वह आ-
पमित्यक सन्निक है ॥ ४ ॥

उत्तमर्णाधमर्णा द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ
क्रमात् ॥ कुसीदिको वार्धुषिको वृ-
द्ध्याजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥ क्षेत्रा-
जीव. कर्षकश्च रुपकश्च रुपीवः ॥
क्षेत्रं ब्रैहेयशालेयं ब्रीहिशाल्युद्भवो-
चितम् ॥ ६ ॥

उत्तमर्ण अधमर्ण यह दो नाम क्रमसे
प्रयोक्ता और ग्राहकोंके है, अर्थात् ऋणके
देनेलेनेवालोंके है. भाव यह है, जो कि प्र-
योक्ता ऋणका देनेवाला है, वह उत्तमर्ण
सन्निक है और जो कि ग्राहक ऋण-
का लेनेवाला है, वह अधमर्ण सन्निक है
इसको कर्जदार कहते हैं कुसीदिक वार्धु-
षिक वृद्ध्याजीव वार्धुषि यह चार नाम उसके
हैं, जो कि ऋणको देकर उसकी वृद्धिसे जी-
विका करता है ॥ ५ ॥ क्षेत्राजीव कर्षक
रुषिक रुपीवः यह चार नाम खेती कर-
नेवालेके है जो कि खेत ब्रीहि और शा-
लिकी उत्पत्तिमें उचित है, वह ब्रैहेय शालेय
सन्निक है. भाव यह है, कि जिस खेतमें कि

व्रीहि उत्पन्न होते हैं, वह व्रीहेय है, और जिसमें कि शालि उत्पन्न होते हैं वह शालेय है ॥ ६ ॥

यव्यं यवक्यं षष्ठिक्यं यवादिभवनं हि यत् ॥ तिल्यं तैलीनवन्मापोमाणु-भङ्गाद्विरूपता ॥ ७ ॥ मौद्गीनकौ-द्रवीणादिशेषधान्योद्भवक्षमम् ॥ वी-जाकृतं तूतकृष्टे सीत्यं कृष्टं च हल्य-वत् ॥ ८ ॥

और जो कि खेत यवादिकोंका भवन अर्थात् यवादिकोंकी उत्पत्तिमें उचित है, वह यव्यादिक है. जैसे यव्य यह एक नाम यवोंकी उत्पत्तिवाले खेतका है. यवक्य यह एक नाम छोटे यवोंकी उत्पत्तिवाले खेतका है. षष्ठिक्य यह एक नाम षाटीकी उत्पत्ति-वाले खेतका है. तिल्य तैलीनकी समान भा-पादिकोंको क्षेत्रविषयमें द्विरूपभाव होता है, जैसे तिल्य तैलीन यह दो नाम तिलोंकी उत्पत्तिवाले खेतके हैं. माष्य माषीन यह दो नाम उड़दकी उत्पत्तिवाले खेतके हैं. उम्य औमीन यह दो नाम अलसीकी उत्पत्तिवाले खेतके हैं. अणव्य आणवीन यह दो नाम छोटे नाजवाले खेतके हैं. भंग्य भांगीन यह दो नाम भांगवाले खेतके हैं ॥ ७ ॥ और

१ शाकक्षेत्रादिके शाकशाकटं शाकशाकिनम् ।

शाकके क्षेत्रादिकमें शाकशाकट शाक-शाकिन यह दो नाम वर्तते हैं. यह अर्द्धश्लोक और पुस्तकमें विशेष है

जो कि खेत शेष अर्थात् कहेहुए व्रीहि आदिकोंसे अन्य मुद्ग आदिकधान्योंकी उत्पत्तिमें योग्य हो, वह मौद्गीन कौद्रवीणादिक संज्ञिक है. जैसे मौद्गीन यह एक नाम मू-गकी उत्पत्तिवाले खेतका है. कौद्रवीण यह एक नाम कोदोंकी उत्पत्तिवाले खेतका है. आदिशब्दसे चाणकीन जौधमीन कालायीन कौलत्थीन प्रैयंगवीन आदिक शब्द इसी-प्रकार जानने. और जो कि खेत उत्तकृष्ट है अर्थात् आदिमें बोया और पीछें जोता है, वह बीजाकृत संज्ञिक है. सीत्य कृष्ट हल्य यह तीन नाम जुतेहुए खेतके हैं ॥ ८ ॥

त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रि-सोत्यमपि तस्मिन् ॥ द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥ द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकि-कादयः ॥ स्वारीवापस्तु स्वारीक उ-त्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥

त्रिगुणाकृत तृतीयाकृत त्रिहल्य त्रिसीत्य यह चार नाम तीनवार जुतेहुए खेतके हैं. और इसीप्रकार द्विगुणाकृत क्षेत्रमें पूर्वके समस्त शब्द जोड़ने चाहिये जैसे द्विगुणाकृत द्वितीयाकृत द्विहल्य द्विसीत्य यह चार नाम

१ द्रोणादिकका लक्षण अन्यग्रंथसे लिखते हैं-
पलं प्रकुंचकं मुष्टिः कुडवस्तच्चतुष्टयम् ॥ च-
त्वारः कुडवाः प्रस्थश्चतुष्प्रस्थं तथाढकम् ॥
अष्टाढको भवेद्द्रोणो द्विद्रोणः शूर्प उच्यते ॥ सा-
र्धशूर्पो भवेत्स्वारी द्विशूर्पाद्रोण्युदाहता । तमेव
भारं जानीयाद्वाहो भारचतुष्टयम् ॥

दोवार जुतेहुए खेतके है और इसी दोवार जुतेखेतमें शवाकृत शब्दभी वर्त्ते है अर्थात् शवाकृतशब्दको मिलाकर यह पाच नाम एकार्थवाचक हैं ॥ ९ ॥ द्रोणाढकादिपरि मितधा-यके वापादिक अर्थात् खेतआदिकमें द्रोणाढकादिक शब्द होते हैं जैसे द्रोणमात्र बोया जाय जिस खेतमें वह द्रौणिक आ-ढक मात्र बोयाजाय अन्न जिस खेतमें वह आढकिक सन्निक है आदिशब्दसे प्रास्थ-विक कौडविक आदिक शब्द जानने वायादि इस शब्दके आदिशब्दसे पचादिक शब्द जानने जैसे द्रोणमात्र अन्नादिक पकाया जाय जिस कड़ाहमें वह द्रौणिक सन्निक है इसीप्रकार औरभी जानने और जो कि खेत खारीवाप है वह खारीक सन्निक है भाव यह है कि खारीमात्र अन्न बोया जिस खेतमें वह खारीक सन्निक है उत्तमर्ण आ-दिक खारीकान्तशब्द तीनों लिंगमें होते हैं १०

पुनपुंसकयोर्वमः केदारः क्षेत्रमस्य तु ॥
कैदारकं स्यात्कैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं
गणे ॥ ११ ॥ लोटानि छेष्टवः पुंसि
कोटिशो लोटभेदन ॥ प्राजनं वोदन
वोत्रं सनित्रमवदारणे ॥ १२ ॥

वम केदार क्षेत्र यह तीन नाम खेतके हैं विसमें वमशब्द पुनपुंसकलिंगमें होता है इसक्षेत्रके समूहमें कैदारक कैदार्य क्षेत्र कै-दारिक यह चार चार नाम वर्त्ते हैं ॥ ११ ॥ लोट लेटु यह दो नाम मिट्टीके टुकड़ेके है

इसको डेला कहते हैं विसमें लेटुशब्द पुलि-गमें होता है कोटिश लोटभेदन यह दो नाम डेलेके फोडनेवाली मुगरी वा पटेलेके हैं प्रा-जन वोदन तोत्र यह तीन नाम बैल्लेके हों-कनेके पैनेके हैं सनित्र अवदारण यह दो नाम कसीके हैं ॥ १२ ॥

दात्रं लवित्रमावन्धो योत्रं योक्रमयो
फलम् ॥ निरीशं कुटकं फालः छप-
को लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥ गो-
दारणं च सीरोऽथ शम्या स्त्री युग-
कीलकः ॥ ईषा लाङ्गलदण्डः स्या-
त्सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥

दात्र लवित्र यह दो नाम दाँतीके है इसको हँसियाभी कहते हैं आवन्ध योत्र योक्र यह तीन नाम जोतेकी रस्तीके हैं फल निरीश कुटक फाल छपक यह पाच नाम उसके है, जो कि काष्ठ हटके नीचे रहता है, और जिसका अग्रभाग लोहेसे बधा रहता है कोई आचार्य ऐसा कहते है आदिके तीन नाम उसके हैं, जिस काष्ठमें कि फाल बधा रहता है, अर्थात् जिसको कि पनिहारी कहते है और उसके दो नाम फालके हैं लागल हल ॥ १३ ॥ गोदारण सीर यह चार नाम हटके है शम्या युगकीलक यह दो नाम हटके शेटके है विसमें शम्याशब्द सीलिंग है और जो कि हटका दह है, वह ईषा सन्निक है इसको हरस कहते हैं कोई इलाही कहते हैं और जो कि हलपद्धति

अर्थात् हलकी रची हुई रेखा है. वह सीता संज्ञिक है. इसको कुंडभी कहते हैं ॥ १४ ॥

पुंसि मेधिः खले दारु न्यस्तं यत्प-
शुबन्धने ॥ आशुव्रीहिः पाटलः स्या-
च्छितशूकयवौ समौ ॥ १५ ॥ तो-
क्मस्तु तत्र हरिते कलायस्तु सतीन-
कः ॥ हरेणुरेणुकौ चास्मिन्कोरदूषस्तु
कोद्रवः ॥ १६ ॥

और जो कि पशुओंके बन्धन निमित्त काष्ठ गाढा जाता है वह मेधि खलेदारु सं-
ज्ञिक है. इसको मेढभी कहते हैं. तिसमें मेधि
शब्द पुल्लिङ्गमें होता है. आशु व्रीहि पाटल
यह तीन नाम धानके हैं. शित शूकयव
यह दो नाम जौओंके हैं. यह दोनों शब्द
समानलिङ्ग हैं ॥ १५ ॥ और यदि जो कि
जौ हरितवर्ण हो तो उसमें तोक्म शब्द वर्त्त
है. कलाय सतीनक हरेणु रेणुक यह चार
नाम मटरके हैं. कोरदूष कोद्रव यह दो
नाम कौड़ोंके हैं ॥ १६ ॥

मङ्गल्यको मसूरोऽथ मकुष्ठकमयु-
ष्ठकौ ॥ वनमुद्गे सर्पपे तु द्वौ तन्तुभ-
कदम्बकौ ॥ १७ ॥ सिद्धार्थस्त्वेष
धवलौ गोधूमः सुमनः समौ ॥ स्या-
द्यावकस्तु कुल्माषश्चणको हरिम-
न्यकः ॥ १८ ॥

मङ्गल्यक मसूर यह दो नाम मसूरके हैं.
मकुष्ठक मयुष्ठक वनमुद्ग यह तीन नाम व-
नमेंके हैं. सर्पप तन्तुभ कदम्बक यह तीन

नाम सरसोंके हैं ॥ १७ ॥ और जो कि सरसों
उज्जल है, वह सिद्धार्थ संज्ञिक है. गोधूम सु-
मन यह दो नाम गेहूँके हैं. यह शब्द समानार्थ
हैं. यावक कुल्माष यह दो नाम कुल्माषके
हैं. इसको कुरथीभी कहते हैं. चणक हरि-
मन्थक यह दो नाम चनाके हैं ॥ १८ ॥

द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च
निष्फले ॥ क्षवः क्षुताभिजननो
राजिका कृष्णिकाऽऽसुरी ॥ १९ ॥
स्त्रियौ कङ्गुप्रियङ्गू द्वे अतसी स्या-
दुमा क्षुमा ॥ मातुलानी तु भङ्गायां
व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २० ॥

तिलपेज तिलपिंज यह दो नाम निष्फल
तिलमें वर्त्तें हैं. क्षव क्षुताभिजनन राजिका
कृष्णिका आसुरी यह पांच नाम राईके हैं
॥ १९ ॥ कङ्गु प्रियङ्गु यह दो नाम कङ्गु-
नीके हैं. यह दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं. अतसी
उमा क्षुमा यह तीन नाम अलसीके हैं. मा-
तुलानी भंगा यह दो नाम भांगके हैं. और
व्रीहिभेद अणु है. इसको सावाँभी कहते हैं.
यह शब्द पुल्लिङ्ग है ॥ २० ॥

किंशारुः सस्यशूकं स्यात्कणिशं स-
स्यमञ्जरी ॥ धान्यं व्रीहिः स्तम्ब-
करिः स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः ॥ २१ ॥
नाडी नालं च क्राण्डोऽस्य पलालो-
ऽस्त्री स निष्फलः ॥ कडङ्गारो वुसं
क्रीवे धान्यत्वचि तुषः पुमान् ॥ २२ ॥

सस्य धान्यका जो शूक सूक्ष्म सूईकी-

समान अग्रभाग है, वह किशार सन्निक है इसको धान्यका तीकुर कहते हैं. और जो कि सस्य (धान्य) की मजरी है, वह कणिश सन्निक है, इसको वालि कहते हैं धान्य व्रीहि स्तम्बकरि यह तीन नाम धान्यवादि क अन्नमात्रके हैं और जो तृण यवादिकोंका गुच्छा है वह स्तम्ब सन्निक है ॥ २१ ॥ और जो इस गुच्छाका काड है, वह नाडीनाल सन्निक है इसको नरई कहते हैं और जो कि काड निष्फल है, अर्थात् फलग्रहण करनेसे निष्फल होगया है, वह पलाल सन्निक है इसको प्यारभी कहते हैं यह शब्द पुनपुसकलिग है कडगर बुस यह दो नाम भूसेके हैं और धान्यकी त्वचामें पुलिगवाची तुष शब्द बर्ते हैं इसको भूसी कहते हैं ॥ २२ ॥

शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे शमी शिम्वा त्रिपुत्तरे ॥ ऋद्धमावसितं धान्यं पूतं तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥ मापादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः ॥ शालयः कलमाद्याश्च पटिकाद्याश्च पुंस्पर्मी ॥ २४ ॥

श्लक्ष्ण बारीक तीक्ष्ण पैना ऐसा जो यवादि कका अग्रभाग है, उसमें शूक शब्द होता है इसको तीकुर कहते हैं यह शब्द पुनपुसकलिग है शमी शिम्वा यह दो नाम कलीके हैं यहाँमें उत्तर अर्थात् अगागीके शब्द तीनों लिगमें होते हैं ऋद्ध आवसित

यह दो नाम उस धान्यके हैं, जो कि तृणोंको दूरिकरके इकट्ठा किया है, पूत बहुलीकृत यह दो नाम शूष आदिकसे शोधहुए धान्यके हैं ॥ २३ ॥ शमीधान्य अर्थात् फलीके धान्यमें माप आदिक होते हैं शूक धान्य अर्थात् तीकुरवाले धान्यमें यव आदिक होते हैं कलम आदिक तथा पटिक आदिक शालि सन्निक हैं अर्थात् यह धान्योंके भेद हैं यह माप यव शालि कलम पटिकादिक पुलिगमें होते हैं ॥ २४ ॥

तृणधान्यानि नीवाराः स्त्री गवेधुर्गवेधुका अयोयं मुसलोऽस्त्री स्पादुद्वस्त्रमुलूखलम् ॥ २५ ॥ परस्फोटनं शर्पमस्त्री चालनी तितलः पुमान् ॥ स्पृतमसेवी कण्डोलपिटौ कटकिटिजकौ ॥ २६ ॥

नीवार यह मुनियोंका अन्नभेद है बहुवचनसे श्यामकादिक ग्रहण कियेजाते हैं यह तृणवाय सन्निक है गवेधु गवेधुका यह दो नामभी मुनियोंके अन्नविशेषके हैं. इसको चैनाभी कहते हैं यह दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं अयोयं मुसल यह दो नाम मुसलके हैं तिसमें मुसल शब्द स्त्रीलिङ्गसे वर्जित है अयोयं मुसल यह दो नाम मुसलके हैं तिसमें मुसल शब्द स्त्रीलिङ्गसे वर्जित है अर्थात् पुनपुसकलिग है उद्वस्त्र उलूखल या दो नाम ओखलीके हैं ॥ २५ ॥ परस्फोटन गुं पर दो नाम शूके हैं तिसमें गुंशब्द स्त्री-

लिंगवर्जित है. चालनी तितउ यह दो नाम चालनीके हैं. तिसमें तितउशब्द पुंलिंग है. स्यूत प्रसेव यह दो नाम थैलीके हैं. कंडोल पिट यह दो नाम वांशके पत्ता आदिकोंसे बनाये हुए बर्तनके हैं. इसकों छपरा कहते हैं. कट किलिंजक यह दो नाम वंशादिकके विकारके हैं. इसकों वोरा कहते हैं ॥ ३६ ॥

समानौ रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे ॥ पौरोगवस्तदध्यक्षः सूपकारास्तु बल्लवाः ॥ २७ ॥ आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः ॥ आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार इमे त्रिषु ॥ २८ ॥

यह पूर्वोक्त समानलिंग हैं. रसवती पाकस्थान महानस यह तीन नाम रसोईके घरके हैं. और जो कि उस रसोईके स्थानका अध्यक्ष (मालिक) है, वह पौरोगव संज्ञिक है. सूपकार बल्लव ॥ २७ ॥ आरालिक आन्धसिक सूदा औदनिक गुण यह सात नाम रसोई बनानेवालेके हैं. आपूपिक कान्दविक भक्ष्यकार यह तीन नाम भक्ष्यकार पुआ-आदि पकवानोंके बनानेवालेके हैं. इसकों हलवाईभी कहते हैं. यह पौरोगव आदिक तीनों लिंगमें होते हैं ॥ २८ ॥

अश्वन्तमुद्धानमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका ॥ अङ्गारधानिकाऽङ्गारशक-
द्व्यपि हसन्त्यपि ॥ २९ ॥ हसन्त्य-
प्यथ न स्त्री स्यादङ्गारोऽलातमुल्मु-

कम् ॥ क्लीवेऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो ना क-
न्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ३० ॥

अश्वन्त उद्धान अधिश्रयणी चुल्लि अ-
न्तिका यह पांच नाम चूल्हेके हैं, अंगारधा-
निका अंगारशकटी हसन्ती ॥ २९ ॥ ह-
सनी यह चार नाम अंगोठीके हैं. अंगार
अलात उल्मुक यह दो नाम ऊकेके हैं. ति-
समें अंगारशब्द स्त्रीलिंग नहीं है, किन्तु पुं-
नपुंसकलिंग है. अम्बरीष भ्राष्ट्र यह दो नाम
चना आदिक अन्नोंके भूजनेके पात्रके हैं.
तिसमें अम्बरीषशब्द नपुंसकलिंगमें होता है.
कन्दु स्वेदनी यह दो नाम भट्टी वा भाडके
हैं तिसमें स्त्रीलिंग कन्दुशब्द विकल्पकरके
पुंलिंग है. और स्वेदनीशब्द नित्यही स्त्री-
लिंगमें होता है ॥ ३० ॥

अलिञ्जरः स्यान्मणिकः कर्कर्यालुर्ग-
लन्तिका ॥ पिठरः स्थाल्युखा कुण्डं-
कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥ घटः
कुटनिपावस्त्री शरावो वर्धमानकाः ॥
ऋजीषं पिष्टपचनं कंसोऽस्त्री पानभा-
जनम् ॥ ३२ ॥

अलंजर मणिक यह दो नाम बड़े घड़ेके
हैं इसकों मटका कहते हैं. कर्करी आलु ग-
लन्तिका यह तीन नाम चाँवलआदिके धो-
वनेके उपयोगी पात्रके हैं इसकों नाद क-
हते हैं. पिठर स्थाली उखा कुंड यह चार
नाम थाली वावटलोईके हैं. कलश घट कुट-
निप यह चार नाम कलशके हैं तिसमें क-

लशशब्द तीनों लिगमें होता है और घट-
शब्द स्त्रीपुलिग दोनोंमें होता है शराव व-
र्द्धमानक यह दो नाम सरवाके है यह दो-
नों शब्द स्त्रीलिगवर्जित पुनपुसकलिग है
कजीप पिष्टपचन यह दो नाम पीसेहुए
अन्नादिकके पाकके उपयोगीपात्रके है इस-
कों तवा कढ़ाई भी कहते है कस पानभा-
जन यह दो नाम दूध आदिके पीनेके पा-
त्रके है तिसमें कसशब्द पुनपुसकलिग है
॥ ३१ ॥ ३२ ॥

कुतूः रुते स्नेहपात्रं सैवाल्पा कुतुपः
पुमान् ॥ सर्वमावपनं भाण्डं पात्रा-
मत्रं च भाजनम् ॥ ३३ ॥ दर्वि
कम्बि खजाका च स्यात्तर्दूरुह-
स्तकः ॥ अस्त्री शाकं हरितकं शि-
शुरस्य तु नालिका ॥ ३४ ॥

और जो कि रुति अर्थात् चर्मका
स्नेहपात्र तैलादिकका आवारपात्र है वह
कुतू सन्निक है इसकों कुप्या बोलते है और
जो कि छोटा कुप्या है वह कुतुप सन्निक
है यह शब्द पुलिग है समस्त कहेहुए स्यू-
तादिक पात्र आवपन भांड पात्र अमत्र
भाजन सन्निक है ॥ ३३ ॥ दर्वि कचि ख-
जाका यह तीन नाम करछीके हैं तर्दू दा-
रुहस्तक यह दो करछीके भेद है तिसमें
तर्दू शब्द पुलिगमें होता है शाक हरितक
शिशु यह तीन नाम शाकके है तिसमें शा-

क पुनपुसकलिग है और जो कि इस शा-
ककी नालिका दडी है ॥ ३४ ॥

कलम्बश्च कडम्बश्च वेसवार उपस्क-
रः ॥ तित्तिडीकं च चुकं च वृक्षा-
म्लमथ वेहजम् ॥ ३५ ॥ मरीचं
कोलकं छण्णमूपणं धर्मपत्तनम् ॥
जीरको जरणोऽजाजी कणा छण्णे
तु जीरके ॥ ३६ ॥ सुपवी कारवी
पृथ्वी पृथुः कालोपकुचिका ॥ आ-
र्द्रकं शृङ्गवेरं स्यादथ छात्रा वितुज्ज-
कम् ॥ ३७ ॥ कुस्तुम्बुरु च धा-
न्याकमथ शुण्ठी महौषधम् ॥ स्त्री-
नपुंसकपोर्विष्व नागरं विश्वभेषजम् ३८

वह कलब कडब सन्निक है वेसवार उ-
पस्कर यह दो नाम शाकादिकके सत्कार-
केलिये बनायेहुए हलदी सरसों मिरच आ-
दिकके चूर्णके है इसकों मसाला कहते है
तित्तिडीक चुक वृक्षाम्ल यह तीन नाम चु-
कके है वेहज ॥ ३५ ॥ मरीच कोलक
छण्ण ऊपण धर्मपत्तन यह छै नाम मिर-
चके है जीरक जरण अजाजी कणा यह
चार नाम जीरेके है और काल्जेरिमें ॥ ३६ ॥
सुपवी कारवी पृथ्वी पृथु काला उप-
कुचिका यह छै नाम होते है अर्थात् यह

१ वेसवारका लक्षण आत्रेयसहितामें लिखा है
चित्रक पिप्पलीमूल पिप्पली चयनागरम् ।
धान्याक रत्ननीभेततडुलाश्च समाशका ।
वेसवारइतिव्याप्त शाकादिपु नियोजयेदिति १

छै नाम काले जीरेके हैं. आर्द्रक शृंगवेर यह दो नाम अदरखके हैं. छत्रा वितुन्नक ॥ ३७ ॥ कुस्तुम्बुरु धान्याक यह चार नाम धनियोंके हैं. शूठी महौषध विश्व नागर विश्वभेषज यह पांच नाम सौंठिके हैं तिसमें विश्वशब्द स्त्रीनपुंसकलिङ्गमें होता हैं ॥ ३८ ॥

आरनालकसौवीरकुलमाषाभिषुतानि च ॥ अवन्तिसोमधान्याम्लकुङ्जलानि च काङ्जिके ॥ ३९ ॥ सहस्रवेधि जतुकं बाल्हीकं हिङ्गु रामठम् ॥ तत्पत्री कारवी पृथ्वी वाष्पिका कवरी पृथुः ॥ ४० ॥

आरनालक सौवीर कुलमाषाभिषुत अवन्ति-सोम धान्याम्ल कुंजल कांजिक यह सात नाम कांजीके हैं ॥ ३९ ॥ सहस्रवेधिन जतुका बाल्हीक हिङ्गु रामठ यह पांच नाम हींगके हैं और जो कि उस हींगकी पत्री है वह कारवी पृथ्वी वाष्पिका कवरी पृथु संज्ञिक है ॥ ४० ॥

निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी ॥ सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वशिरं च तत् ॥ ४१ ॥ सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणिमन्थं च सिन्धुजे ॥ रौमकं वसुकं पाक्यं विडं च कृतके द्वयम् ॥ ४२ ॥

निशा कांचनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी यह पांच नाम हलदीके हैं. जो कि लवण

(सामुद्र है) समुद्रसें उत्पन्न हुआ है वह अक्षीव वशिर संज्ञिक है ॥ ४१ ॥ सैन्धव शीतशिव माणिमन्थ सिन्धुज यह चार नाम सौधेनानके हैं तिसमें सैन्धव शब्द पुंनपुंसकलिङ्ग है. रौमक वसुक यह दो नाम सांभरनानके हैं. पाक्य विड यह दो नाम बनाये हुए नौनमें वर्ते हैं. यह नौन खारी मिट्टी पकाकर बनाया जाता है ॥ ४२ ॥

सौवर्चलेऽक्षरुचके तिलकं तन्न मेचके ॥ मत्स्यण्डी फाणितं खण्डविकारः शर्करा सिता ॥ ४३ ॥ कूर्चिका क्षीरविकृतिः स्याद्रसाला तु मार्जिता ॥ स्यात्तेमनं तु निष्ठानं त्रिलिङ्गा वासितावधेः ॥ ४४ ॥

सौवर्चल अक्ष रुचक यह तीन नाम मधुरलवणके हैं. इसकों संचलखारभी कहते हैं. और यदि सौवर्चल काला होवे तो उसमें तिलक शब्द वर्ते हैं. मत्स्यण्डी फाणित यह दो नाम रावके हैं. खंडविकार शर्करा सिता यह तीन नाम खाँडके हैं कोई मत्स्यण्डी आदिक पांच नाम खाँडके कहते हैं ॥ ४३ ॥ दधि आदिक कर जो दूधका विकार है वह कूर्चिका संज्ञिक है. रसाला मार्जिता यह दो नाम दही मधु खाँड मिर्च अदरख आदिसें बनाईहुई चटनीके हैं

१ कूर्चिकाका लक्षण और ग्रंथसें लिखते हैं. दन्नासह पयः पक्वं यत्तत्स्यादधिकूर्चिका । तत्रेण पक्वं यत्क्षीर सा भवेत् तत्रकूर्चिका ॥१॥

तेमन निष्ठान यह दो नाम कठीके है
वासितावधि अर्थात् वासितशब्दकी अव-
धिसँ इधरके शब्द तीनों लिंगमें होतेहैं ॥४४॥

शूलाकृतं भट्टिन्नं स्याच्छूल्यमुख्यं तु
पैठरम् ॥ प्रणीतमुपसंपन्नं प्रयस्तं
स्यात्सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥ स्यात्पि-
च्छिलं तु विजिलं समृष्टं शोधितं स-
मे ॥ चिकणं ममृणं स्निग्धं तुल्ये भा-
वितवासिते ॥ ४६ ॥

शूलाकृत भट्टिन्न शूल्य यह तीन नाम
शूलसँ सस्कार कियेहुए मासादिकपदार्थके
है उख्य पैठर यह दो नाम वटलोईमें पके-
हुए अन्नादिकके हैं प्रणीत उपसपन्न यह
दो नाम रसादिकसँ युक्तहुए व्यजनादिकके
है प्रयस्त सुसंस्कृत यह दो नाम प्रयत्नसँ
सिद्ध कियेहुए घृत पक्कादिकके हैं ॥ ४५ ॥
पिच्छिल विजिल यह दो नाम मडयुक्त
दध्यादिकके है समृष्ट शोधित यह दो नाम
केश कीडाओंको दूरकरके गोवेहुए अन्ना-
दिकके है चिकण ममृण स्निग्ध यह दो
नाम चिकनेपदार्थके है भावित वासित यह
दो नाम पुष्पादिक द्रव्योंकर सुगन्धितहुए
अन्नादिकके है ॥ ४६ ॥

आपकं पौलिर्भ्यूपो लाजाः पुभून्नि
चाक्षताः ॥ पृथुकं स्याच्चिपिटको
धाना भ्रष्टये स्त्रिय ॥ ४७ ॥ पू-
पोऽपूपः पिटक स्यात्करम्भो दधि-

सक्तवः ॥ भिस्ता स्त्री भक्तमन्धोऽ-
न्मोदनोऽस्त्री स दीदिविः ॥ ४८ ॥

आपक पौलि अभ्यूप यह तीन नाम
आधे भूनेहुए यवादिकोंके है अथवा घी
आदिकसँ भूनेहुए यवादिकके है लाज यह
एक नाम स्त्रीलौका है यह शब्द पुलिग
और बहुवचनमें होता है अक्षत यह एक
नाम भूनेहुए चाँवल्लौका है और अखट
चावल्लोंकोभी अक्षता कहते है यह शब्द-
भी पुलिग और बहुवचनमें होता है पृथुक
चिपिटक यह दो नाम भिगोकर भूनेहुए
धानके चाँवल्लके है धाना यह एक नाम
भूनेहुए यवमें बर्त्ते है इसको बोरी कहते
हैं यह शब्द नित्यही बहुवचन और स्त्री-
लिग है ॥ ४७ ॥ पूष अपूप पिष्टक यह
तीन नाम चाँवल्लके चूनेके बनाये हुए भक्ष्य
भेदके है इसको पुआ तथा बडाभी कहते
है और जो कि दधियुक्त सत्तु है वह
करभ सन्निक हैं भिःसा भक्त अधस्त अन्न
ओदन दीदिवि यह छै नाम अन्नके है
विसमें भि सा स्त्रीलिग है और ओदन पुनपुं-
सकालिग है और दीदिवि पुलिग है ॥ ४८ ॥

भिस्ता दग्धिका सर्वरसाग्रे मण्ड-
मस्त्रियाम् ॥ मासराचामनिस्तावा म-
ण्डे भक्तममुद्रवे ॥ ४९ ॥ यवागु-
रुणिणा श्राणा पिष्टेपो तरला च-

सा ॥ गव्यं त्रिषु गवां सर्वं गोविद्
गोमयमस्त्रियाम् ॥ ५० ॥

भिःसटा दग्धिका यह दो नाम जले-
हुए अन्नके हैं. समस्त रसोंके अग्रभागमें
मंड शब्द वर्त्तै है इसको मॉडभी कहते हैं.
यह शब्द पुंनपुंसकलिङ्गमें होता है और
भातसे उत्पन्न हुएमॉडमें मासर आचाम
निस्राव शब्द वर्त्तै हैं ॥ ४९ ॥ यवागू
उष्णिका श्राणा विलेपी तरला यह पांच
नाम द्रवनेवाले अन्नके हैं इसको लपसी
कहते हैं. गौओंका सब दूध दही आदिक
गव्य संज्ञिक है यह शब्द तीनों लिङ्गमें
होता है. गोविष् गोमय यह दो नाम गोव-
रके हैं तिसमें गोविष्शब्द स्त्रीलिङ्ग है और
गोमय पुंनपुंसकलिङ्गमें होता है ॥ ५० ॥

तत्तु शुष्कं करीषोऽस्त्री दुग्धं क्षीरं
पयः समम् ॥ पयस्यमाज्यदध्यादिद्र-
प्सं दधि घनेतरत् ॥ ५१ ॥ घृतमा-
ज्यं हविः सर्पिर्नवनीतं नवोदघृतम् ॥
तत्तु हैयंगवीनं यत् ह्योगोदोहोद्भव
घृतम् ॥ ५२ ॥

और जो कि शूकाहुआ है वह करीष
संज्ञिक है यह शब्द पुंनपुंसकलिङ्ग है. दुग्ध
पयस् क्षीर यह तीन नाम दूधके हैं यह
तीनोंशब्द समानार्थ हैं और जो कि दूध-
का विकार घृत दधि आदिक है वह

१ मत्तणाभ्यश्चने तैलं कृसरस्तु तिलौदनम् ।

पयस्य संज्ञिक है. जो कि दधि घनसेतर
है अर्थात् पतला है वह द्रप्स संज्ञिक है
॥ ५१ ॥ घृत आज्य हविष् सर्पिष् यह
चार नाम घृतके हैं नवनीत नवोद्भूत यह
दो नाम नौनीवृतके हैं इसको माखन कहते
हैं. और ह्योगोदोहोद्भव अर्थात् पृथ्वीदिनके
दूधसे है उत्पत्ति जिसकी ऐसा जो घृत है
वह हैयंगवीन संज्ञिक है भाव यह है कि
एकरात्रि वसेहुए दधिसे निकलेहुए घृतका
यह नाम है ॥ ५२ ॥

दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि गोरसः ॥
तक्रं ह्युदश्विन्मथितं पादाम्बुधर्मांभु
निर्जलम् ॥ ५३ ॥ मण्डं दधिभवं
मस्तु पीयूषोऽभिनवं पयः ॥ अश-
नाया बुभुक्षा क्षुद्यास्स्तु कवलः पु-
मान् ॥ ५४ ॥

दण्डाहत कालशेय अरिष्ट गोरस यह
चार नाम दंडसे मँथेहुए गोरसमात्रके हैं.
तक्र उदश्वित् मथित यह तीन नाम क्रमसें
पादाम्बु तथा अर्धाम्बु तथा निर्जल गोरसके
हैं भाव यह है कि पादाम्बु चौथाई जल-
वाला दण्डसे मथा हुआ गोरस है वह तक्र
संज्ञिक है. और जो कि (अर्धाम्बु) आधे ज-
लवाला गोरस है वह उदश्वित् संज्ञिक है
और जो कि निर्जल अर्थात् जलवर्जित
दधि मंथनमात्रसें मथा है वह मथित संज्ञिक
है ॥ ५३ ॥ और जो कि दहीसें उत्पन्न
हुआ मॉड है वह मस्तु संज्ञिक है अर्थात्

यह एक नाम वस्त्रसे निकलेहुए अधिक जलका है और जो कि नवीन दूध है अर्थात् नवीन व्यानीहुई गौके सात दिनतकका दूध है वह पीयूष सन्निक है अशनाया पुभुक्षा क्षुध यह तीन नाम क्षुवाके है आस कवल यह दो नाम आसके है यह दोनों शब्द पुलिग है ॥ ५४ ॥

सपीतिः स्त्री तुल्यपान सग्विः स्त्री सहभोजनम् ॥ उदन्या तु पिपासा तृट् तर्पणं जग्विस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥ जेमन लेह आहारो निघासो न्याद इत्यपि ॥ सौहित्यं तर्पणं तृप्तिं फेला भुक्तसमुज्झितम् ॥ ५६ ॥

सपीति तुल्यपान यह दो नाम साथमें पान करनेके है तिसमें सपीति स्त्रीलिङ्ग है सग्वि सहभोजन यह दो नाम साथ जैव नेके हैं तिसमें सग्विशब्द स्त्रीलिङ्ग है उदन्या पिपासा तृट् तर्पण यह चार नाम व्यासके हैं जग्वि भोजन ॥ ५५ ॥ जेमन लेह आहार निघास न्याद यह पाँच जैवनेके हैं सौहित्य तर्पण तृप्ति यह तीन नाम तृप्तिके हैं और जो कि भुक्तसमुज्झित अर्थात् पहिँटें तो जो जैवलिया है पीछें त्याग दिया है वह फेला सन्निक है ॥ ५६ ॥

काम प्रकाम पर्याप्त निकाम इष्ट यथेच्छितम् ॥ गोपे गोपालगोसरयगो-धुगाभीगवत्परा ॥ ५७ ॥ गोमहि-प्पादिक पादवन्धन दो गवीश्वरे ॥

गोमान्गोमी गोकुलं तु गोधनं स्या-
द्रवा व्रजे ॥ ५८ ॥

काम प्रकाम पर्याप्त निकाम इष्ट यथेच्छित यह छै नाम यथेच्छितके है यह शब्द क्रियाविशेषणभी होते हैं गोप गोपाल गोसरय गोदुह आभीर वल्लय यह छै नाम गोपालके है इसको ग्वालियाभी कहते हैं ॥ ५७ ॥ और जो कि गोमहिप्पादिक है अर्थात् गो भेंस गधा बकरी आदिक चौपाये है वह पादवन्धन सन्निक है और जो कि गवीश्वर गौओंका स्वामी है उसमें गोमत् गोमिन यह दो शब्द वर्तते हैं गोकुल गोधन यह दो नाम गौओंके समूहमें होते हैं ॥ ५८ ॥

त्रिष्वशितं गवीनं तद्वाधो यत्राशि-
ता पुरा ॥ उक्षा भद्रो वलीवर्द
रूपभो वृषभो वृष ॥ ५९ ॥ अ-
नन्दासौरभेयो गौरुक्षणा सहतिरोक्ष-
कम् ॥ गव्या गोत्रा गवा वत्सधे-
न्योर्वात्मरुधेनुये ॥ ६० ॥

जहाँकि पहिँटें गौण चुगाई हो यह रथान आगित गवीन सन्निक है यह शब्द तीनों लिङ्गमें होता है उक्षा भद्र वलीवर्द रूपभ वृषभ वृष ॥ ५९ ॥ अनन्दा गौरभेय गो यह तीन नाम बेंनेके हैं और जो कि उक्षा नाम बेंनेका समूह है वह आतक उतिक है और जो कि गोओंका समूह है वह गव्या गोत्रा है और जो कि वत्स (बच्चा)

और धेनुओंका समूह वह क्रमसे वात्सक धेनुक संज्ञिक है अर्थात् वात्सक यह एक नाम वच्छाओंके समूहका है. धेनुक यह एक नाम धेनुओंके समूहका है ॥ ६० ॥

वृषो महान्महोक्षः स्याद्वृद्धोक्षस्तु जरद्ववः ॥ उत्पन्न उक्षा जातोक्षः सद्यो जातस्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥ शकटकरिस्तु वत्सः स्याद्वत्सवत्सतरो समौ ॥ आर्षभ्यः पण्डतायोग्यः पण्डो गोपतिरिदृचरः ॥ ६२ ॥

और जो कि महान् वृष है यानी बड़ा बैल है वह महोक्ष संज्ञिक है. वृद्धोक्ष जरद्वव यह दो नाम बूढ़े बैलके हैं और जो कि उक्ष (बैल) उत्पन्न है अर्थात् बैलके भावकों प्राप्तहुआ है वह जातोक्ष संज्ञिक है इसको कलोरवैल कहते हैं. और जो कि बैल तत्कालही हुआ है वह तर्णक संज्ञिक है ॥ ६१ ॥ शकटकरि वत्स यह दो नाम बछड़ेके हैं. द्रम्य वत्सतर यह दोनों समानार्थ नाम चढ़तीहुई जवानीवाले बछड़ेके हैं और जो कि पंडतायोग्य बैल है वह आर्षभ्य संज्ञिक है. पंड गोपति इदृचर यह तीन नाम स्वेच्छाचारी बैलके हैं ॥ ६२ ॥

स्कन्धदेशे त्वस्य वहः सास्त्रा तु गलकम्बलः ॥ स्यान्नस्तितस्तु नस्योतः प्रष्ठवाद् युगपार्श्वगः ॥ ६३ ॥ युगादीनां तु वोढारो युग्यप्रासङ्ग्य-शाकटाः ॥ खनति तेन तद्वोढाऽस्पेदं हालिकसैरिकौ ॥ ६४ ॥

और इस बैलके स्कन्धदेशमें वह शब्द होता है अर्थात् यह एक नाम बैलके कंधेका है. सास्त्रा गलकम्बल यह दो नाम बैलके गलेके लटकेहुय चर्मके हैं. नस्तित नस्योत यह दो नाम बैलकी रस्तीकरके पोहीहुई नाकके हैं. प्रष्ठवाद् युगपार्श्वग यह दो नाम शान्त करनेकेलिये बाहनकेमार्थमें कंधेपर बंधहुए काष्ठवाले बैलके हैं ॥ ६३ ॥ युगादिकोंके वहनेवाले बैल युग्य प्रानंग्य शाकट संज्ञिक हैं. जैसे युगनाम जुआका वहनेवाला बैल युग्य संज्ञिक है. प्रानंगनाम उसका है जो कि वच्छाओंके फिगनेके समय कंधेपर काष्ठ रखनाजाना है इसके वहनेवाला बैल प्रासंग्य संज्ञिक है. और शकटनाम गाढीका वहनेवाला बैल शाकट संज्ञिक है. और जो कि उसकरके खोदे वा उसको वहे वा उसका होवे तो वह हालिक सैरिक है. जैसे हलकरके खोदे वा उस हलकों वहे वा उसहलका संबन्धी जो बैल हो वह हालिक जानना. इसप्रकार सैरिकशब्दकी व्युत्पत्ति है सीरशब्द हलका पर्याय है ॥ ६४ ॥

धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरंधराः ॥ उभावेकधुरीणैकधुरावेकधुरावहे ६५ ॥ स तु सर्वधुरीणः स्याद्यो वै सर्वधुरावहः ॥ माहेयो सौरभेयी गौरुस्त्रा माता च शृङ्गिणी ॥ ६६ ॥ अर्जुन्यरूपा रोहिणी स्यादुत्तमा गोष

नैचिकी ॥ वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः
शबलीधवलादयः ॥ ६७ ॥

ध्रुवह ध्रुप धौरेय धुरीण सधुरधर यह पाच नाम धुर धारण करनेवाले बैलके है एकधुरीण एकधुर एकधुरावह यह तीन नाम एकधुर बहनेवाले बैलके है ॥ ६५ ॥ और जो कि सब धुरकों बहता है वह सर्वधुरीण सज्ञिक है माहेयो सौरभेयो गो उक्षा मातृ शृगिणी ॥ ६६ ॥ अर्जुनी अघ्न्या रोहिणी यह नौ नाम गौके है और जो कि गौ गौओंमें उत्तम है वह नैचिकी सज्ञिक है वर्णादि अर्थात् वर्ण अग प्रमाण आदिकोंके भेदसे शबली धवला आदिक गौओंके नाम है जैसे वर्णभेदसे शबली यह एक नाम चित्रवर्णवाली गौका है धवला यह एक नाम शुक्लवर्णवाली गौका है और अगभेदसे लम्बकर्णी वक्रशृंगी आदिक गौओंके नाम जानने और प्रमाणभेदसे दीर्घा खर्वा वामनी आदिक गौओंके नाम जानने ॥ ६७ ॥

द्विहायनी द्विवर्षा गौरेकाब्दा त्वेक हायनी ॥ चतुरब्दा चतुर्हायण्येवं व्यब्दा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥ वशा वन्ध्याऽवतोका तु स्ववद्गर्भाऽथ संधिनी ॥ आक्रान्ता वृषभेणाथ वेहद्गर्भोपघातिनी ॥ ६९ ॥

अवस्थाभेदसे गौओंके नाम भेद कहते हैं जो कि गौ दोवर्षकी है वह द्विहायनी सज्ञिक है और जो कि गौ एकवर्षकी है

वह एकहायनी सज्ञिक है और जो कि गौ चारवर्षकी है वह चतुर्हायणी सज्ञिक है और जो कि गौ तीनवर्षकी है वह त्रिहायणी सज्ञिक है ॥ ६८ ॥ वशा वन्ध्या यह दो नाम वास्त गौके है अवतोका स्ववद्गर्भा यह दो नाम अकस्मात् गिरेहुए गर्भवती गौके है और जो कि मैथुनकेवास्ते बैलने दबाई है वह संधिनी सज्ञिक है बैलकेसमीप जानेसे गर्भके घाव करनेवाली गौ वेहद् सज्ञिक है ॥ ६९ ॥

काल्योपसर्पा प्रजने प्रष्ठौही बालगर्भिणी ॥ स्यादचण्डी तु सुकरा बहुसूतिः परेष्टका ॥ ७० ॥ चिरसूता वृष्कपिणी धेनुः स्यान्ववसूतिका ॥ सुवता सुखसंदोहा पीनोद्गी पीवरस्वनी ॥ ७१ ॥

और जो कि प्रजन अर्थात् गर्भके ग्रहणमें प्राप्तकाल है वह गौ उपसर्पा सज्ञिक है यह एक नाम उचितसमयपर गर्भग्रहण करनेवाली गौका है और जो कि गौ बाला तथा गर्भवती है वह प्रष्ठौही सज्ञिक है यह नाम प्रथम गाभन गायका है अचण्डी सुकरा यह दो नाम सीधी गौके हैं बहुसूति परेष्टका यह दो नाम बहुत व्यानेवाली गौके है ॥ ७० ॥ चिरसूता वृष्कपिणी यह दो नाम बहुतकाटमें व्यानेवाली गौके है धेनु नवसूतिका यह दो नाम नवीन व्यानीहुई गौके हैं सुवता सुखसंदोहा यह दो नाम

दुहनेमें सुशीला गौके हैं. पीनोद्री पीवरस्तनी
यह दो नाम मोठे २ थनोंवाली गौके हैं ७१

द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा धेनुष्या बन्धके
स्थिता ॥ समांसमीना सा यैव प्र-
तिवर्षं प्रसूयते ॥ ७२ ॥ ऊधस्तु
क्रीवमापीनं समौ शिवककीलकौ ॥
न पुंसि दाम संदानं पशुरज्जुस्तु दा-
मनी ॥ ७३ ॥

द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा यह दो नाम द्रो-
णभर दूध देनेवाली गौके हैं. और जो कि
साहूकारके घर करजकी शुद्धिपर्यन्त बंधक
अर्थात् धरोहर या गहनेमें रखीहुई गौ धे-
नुष्या संज्ञिक है. और जो कि प्रत्येकवर्ष
व्याती है वह समांसमीना संज्ञिक है ॥ ७२ ॥
ऊधस् आपीन यह दो नाम गौके थनके
हैं यह दोनोंशब्द नपुंसकलिंग हैं. शिवक
कीलक यह दो नाम गौओंके बांधनेकेवास्ते
गाढहुए काष्ठके हैं इसकों खूटा कहते हैं
यह दोनों शब्द समानलिंग हैं. दामन् संदान
यह दो नाम बाँधनेकी रस्सीके हैं तिसमें
दामन्शब्द पुल्लिंगमें नहीं होता किन्तु नपुं-
सक और स्त्रीलिंगमें होता है. पशुरज्जु दामनी
यह दो नाम उस रस्सीके जिस बहुतसी
गाँठेंवाली एकहीमें बहुतसे बैल बाँधेजाते
हैं ॥ ७३ ॥

वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थद-
ण्डके ॥ कुठरो दण्डविष्कम्भो म-
न्थनी गर्गरी समे ॥ ७४ ॥ उष्ट्रे

क्रमेलकमयमहाङ्गाः कम्भाः शिथुः ॥
कम्भाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पा-
दबन्धनैः ॥ ७५ ॥

वैशाख मन्थ मन्थान मन्थन् मन्थदंडक यह
पांच नाम द्रविके मथनेके दण्डके हैं इसकों
रई कहते हैं. कुठर दण्डविष्कम्भ यह दो नाम
उस खंवेके हैं जिनमें कि मथनेका दण्ड
बंधा रहता है. मन्थनी गर्गरी यह दो नाम
दधि मथनेके पात्रके हैं यह दोनों शब्द
समानार्थ हैं ॥ ७४ ॥ उष्ट्र क्रमेलक मय
महाङ्ग यह चार नाम ऊंटके हैं और ऊंटका
बच्चा करम संज्ञिक है और लकड़ीके बने-
हुए पादबंधनोंसे युक्त हुए करम ऊंटकेवच्चे
शृङ्खलक संज्ञिक हैं ॥ ७५ ॥

अजा छागी शुभच्छागवस्तच्छगल-
का अजे ॥ मेहोरभोरणोर्णायुमेष
वृष्णय एडके ॥ ७६ ॥ उष्ट्रोश्चा-
जवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम् ॥
चक्रीवन्तस्तु बालेया रासभा गर्दभाः
खराः ॥ ७७ ॥

अजा छागी यह दो नाम छेरीके हैं.
शुभ छाग वस्त छगलक अज यह पांच
नाम बकरेके हैं इसकों बोकडभी कहते हैं.
मेह्र उरभ्र उरण ऊर्णायु मेष वृष्णि एडक
यह सात नाम मेंढेके हैं ॥ ७६ ॥ उष्ट्र
उरभ्र अज इन्होंके समूहमें क्रमसे औष्ट्रक
औरभ्रक आजक शब्द वर्ते हैं. जैसें उष्ट्र
नाम ऊंटोंका समूह औष्ट्रक संज्ञिक है. उर-

अनाम मेंढोंका समूह और भ्रक सन्निक है और अजनाम बकरोका समूह आजक सन्निक है चक्रीवद बालेय रासभ गर्दभ खर यह पाच नाम गधाके है ॥ ७७ ॥

वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ॥ पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च सः ॥ ७८ ॥ विक्रेता स्याद्विक्रयिकः कायिकक्रयिकौ समौ ॥ वाणिज्यं तु वणिज्या स्यान्मूल्यं वस्तोऽप्यवक्रयः ॥ ७९ ॥

वैदेहक सार्थवाह नैगम वाणिज वणिज् पण्याजीव आपणिक क्रयविक्रयिक यह आठ नाम बेचने खरीदनेसे वर्त्तमान हुए पुरुषोंके है इसकों वणियाँ कहते है ॥ ७८ ॥ विक्रेत विक्रयिक यह दो नाम वस्तुके बेचनेवालेके है कायिक क्रयिक यह दो नाम वस्तुके खरीदनेवालेके है यह दोनों शब्द समान है वाणिज्य वणिज्या यह दो नाम वणिजोंके है मूल्य वस्त अवक्रय यह तीन नाम बेचनेयोग्य वस्तुके मूल्यके है इसकों मोल कहते है ॥ ७९ ॥

नीवी परिपणो मूलधनं लाभोऽधिकं फलम् ॥ परिदानं परीवर्तो नैमेय-
निमयावपि ॥ ८० ॥ पुमानुपनिधि-
न्यासं प्रतिदानं तदर्पणम् ॥ व्रये प्र-
नार्तिनं प्रथ्यं व्रेयं त्रेतव्यमात्रवे ८१ ॥

नीवी परिपण मूलधन या तीन नाम उसके है, जो कि क्रयविक्रयादिक व्यवहारमें

मूल धन है और जो कि फल मूल धनसे कालांतरमें सिद्ध हुआ है, वह लाभ है इसकों नफा कहते हैं. परिदान परीवर्त नैमेय नियम यह चार नाम लैनदेनके हैं ॥ ८० ॥ उपनिधि न्यास यह दो नाम धरोहरके हैं यह दोनों शब्द पुलिग है और जो कि रखनेवालेके टिये उस धरोहरका अर्पण करना है वह प्रतिदान सन्निक है खरीदनेके विषयमें ग्राहक ग्रहण करे इसबुद्धिकर बाजारमें फैलाया हुआ वस्तु क्रय्य सन्निक है और खरीदनेयोग्यमात्र वस्तुमें क्रय शब्द होता है भाव यह है कि, खरीदनेयोग्य वस्तु कहींभी वर्त्तमान हो वह क्रय सन्निक है ८१

विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं कव्याद-
यस्त्रिषु ॥ कृत्रिमे सत्पापनं सत्यंकार
सत्पाकृतिः स्त्रियाम् ॥ ८२ ॥ निपणो
विक्रयः संख्याः संख्येये ह्यादश त्रि-
षु ॥ विंशत्पाद्याः सदैकत्वे सर्वाः स-
रूपेयसरूपयोः ॥ ८३ ॥

विक्रेय पणितव्य पण्य यह तीन नाम बेचनेयोग्य वस्तुके है कव्यादिकशब्द तीनो टिगमें होते हैं सत्पापन सत्यकार सत्पाकृति यह तीन नाम उसके है, जो कि भेन अवग्यही इतमें तरीग है इत्यादिक सत्य करना है जिसमें सत्पापन नपुनकटिगमें होता है और सत्पाकृतिशब्द स्त्रीटिगमें होता है ॥ ८० ॥ निपण विक्रय या दो नाम बेचनेके है दशशब्दसे लेकर पादिर अटा

दशान्तशब्द संख्येय अर्थात् संख्यासंबन्धी विशेष्यकेविषे वर्तमान हुए तीनों लिंगमें होते हैं. जैसे [एका शाटी-एकः पटः-एकं वस्त्रम्-दश स्त्रियः-दश पुरुषाः-दश कुलानि-] इसीप्रकार अष्टादशपर्यन्त जानने. हिशब्दसे इनशब्दोंकी संख्येयमेंही वृत्ति है. न कि संख्यामें. विंशत्यादिक अर्थात् बीस-से लेकर परार्द्धपर्यन्त समस्त संख्यावाचीशब्द सदाही एकवचनमें वर्तमानहुए संख्येय संख्यासंबन्धी विशेष्य और संख्याके विषे वर्तते हैं. संख्येयकेविषे जैसे [एकोनविंशतिः पटाः-विंशत्यापुरुषैः कृतम्-सन्ति शतं गावः] और संख्याके विषे जैसे- [पटानां विंशतिः-गवां शतम्] ॥ ८३ ॥

संख्यार्थे द्विवचने स्तस्तासु चानवतेः स्त्रियः ॥ पङ्क्तेः शतसहस्रादि क्रमादशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥ यौतवं द्रुवयं पाय्यमिति मानार्थकं त्रयम् ॥ मानं तुलाङ्गुलिप्रस्थैर्गुञ्जाः पञ्चाद्यमाषकः ॥ ८५ ॥

और संख्यार्थमें द्विवचन बहुवचनभी होतेहैं. भाव यह है कि संख्यांतरके अर्थमें

१ एकदशशतसहस्रायुतलक्षप्रयुतकोटयः क्रमशः ॥ अर्बुदमब्जखर्वनिखर्वमहापद्मशंकव-
स्तस्मात् ॥ १ ॥ जलधिश्चात्यं मध्यं परार्धमिति दशगुणोत्तराः संज्ञाः ॥ संख्यायाः स्थानानां व्यवहारार्थं कृताः पूर्वैरिति ॥ २ ॥ ऊर्ध्वमानं किलोन्मानं परिमाणन्तु सर्वतः । आयामस्तु प्रमाणं स्यात्संख्या भिन्ना तु सर्वत इति ॥ २ ॥

वर्तमान हुई विंशत्यादिक संख्यासे द्विवचन बहुवचनभी होतेहैं. जैसे- [द्वे विंशती-गवां शतानि-तिस्रो विंशतयः] तिनविंशत्यादिकोंके विषे वर्तमान हुए नवतिपर्यन्त शब्द स्त्री-लिंग हैं. पंक्ति नाम दशसंख्यासे लेकर दशगुना है अधिकजिसमें ऐसी संख्या शतसहस्रादिक संज्ञिक है. जैसे दशगुनी पंक्ति अर्थात् दशसंख्या शत संज्ञिक है. और दशगुना शत सहस्र संज्ञिक है. इसीप्रकार अयुतादिक जानने ॥ ८४ ॥ यौतव द्रुवय पाय्य यह तीन नाम मानार्थक अर्थात् परिमाणवाचक हैं. इसको तोल (माप) कहतेहैं. वह मान तुला अंगुलि प्रस्थ भेदोंकर तीन प्रकारका होता है. अर्थात् तुलामान अंगुलिमान प्रस्थमान संज्ञिक है. इसका उन्मानप्रमाण परिमाण शब्दोंकर क्रमसे व्यवहार होता है पांच गुंजा यानी घुंघुची रत्ती आद्यमाषक संज्ञिक हैं ॥ ८५ ॥

ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री पलं कर्षचतुष्टयम् ॥ सुवर्णविस्तौ हेम्नोऽक्षे कुरुविस्तस्तु तत्पले ॥ ८६ ॥ तुला स्त्रियां पलशतं भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः ॥ आचितो दश भाराः स्युः शाकटो भार आचितः ॥ ८७ ॥

और वह सोलह माप अक्ष कर्ष संज्ञिक है इसको तौला कहते हैं. तिसमें कर्षशब्द पुनपुंसकलिंग है और चारकर्ष पल संज्ञिक है. हेम सुवर्णके अक्षमें सुवर्ण विस्त यह

दो नाम वर्ते है अर्थात् अशरीरत्ती तुलेहुए सुवर्णके यह दो नाम हैं और उस सुवर्णके पलमें कुरुविस्त शब्द वर्ते है यह एक नाम ३६० रत्तीभर तुलेहुए सुवर्णका है ॥८६॥ और सौ पल तुला सन्निक हैं यह शब्द स्त्रीलिंगमें होता है और बीश तुला भार सन्निक है और दशभार आचित सन्निक है और जो कि भार शाकट अर्थात् गाढीकर बहनेकों समर्थ है वहभी आचित सन्निक है ॥ ८७ ॥

कार्पापणः कार्पिक. स्यात्कार्पिके ताम्रिके पण ॥ अस्त्रियामाढक-द्रोणौ स्वारी वाहो निकुञ्चक. ॥८८॥ कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक् ॥ पादस्तुरीयो भागः स्यादंशभागो नु वण्टके ॥ ८९ ॥

१ इन प्रस्थादिकोंका लक्षण ओर मयसे लिखते है—

पल प्रकुचरु मुष्टि कुडयस्तुपुष्टम् ।
चत्वार कुडवा प्रस्थश्चतुप्रस्थ तथाढकम् ।
अष्टाढको भवेद्द्रोणो द्विद्रोण द्रूप उच्यते । सा-
र्धद्रूपो भवेत्पानी द्विद्रुपा द्रोणपुत्राहता । तमेव-
भार जानीपाद्वाहो भारचतुष्टयम् । ओरभी लक्षण
लिखते है—अष्टमुष्टिभवेत्किचिर्किचिर्दिष्टो नु पु-
ष्कलम् । पुष्कलानि तु चत्वारि आढक परिकी-
र्तित ॥ चतुराढको भवेद्द्रोण इत्येव मानस्य-
णम् १ अन्य ७ णोंक भेदमें त्रयाभी अ-
ष्टा ७ १ जैम मगधेयमें—द्रोणस्तुरीयाः पल-
शोडशान्न स्यात्पादका द्रोणात्तथाभाग स्या-
दिम ।

कार्पापण कार्पिक यह दो नाम रुपयाके है और ताम्रिक ताम्रसबन्धी कार्पिक कर्प-प्रमाणमें पण शब्द वर्ते है इसकों पैसा कहते है यह तुलामान कहा और अगुलि-मान हस्तादिक नृवर्गमें कह आये अब प्रस्थमान कहते है आढक द्रोण स्वारी वाह निकुञ्च कुडव प्रस्थ इत्यादिक शब्द परिमाणार्थवाचक पृथक् पृथक् है तिसमें आढक यह एक नाम चारशेरका है द्रोण यह एक नाम चार आढकोंका है स्वारी यह एक नाम तीनद्रोणोंका है वाह यह एक नाम चारभारोंका है निकुञ्चक यह एक नाम चार तोलाओंका है इसकों छटांक कहते हैं कुडव यह एक नाम पावशेरका है प्रस्थ यह एक नाम शेरभरका है तिसमें आढक और द्रोणशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुन-पुस्तकलिंगमें होते हैं और जो कि रुपया आदिकका चौथाई भाग है, वह पाद सन्निक है इसकों पावली कहते हैं अश भाग वटक यह तीन नाम भागमात्रके है इसकों घोट कहते हैं ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

द्रव्य मितं स्वापतेयं रिक्त्यमृक्थ धन-
वसु ॥ हिरण्य द्रविणं पुनमर्थैरि-
भवा अपि ॥ ९० ॥ स्यात्कोपश्च
हिरण्यं च हेमरूप्ये वृतावृते ॥ ता-
न्या यदन्यत्तत्पुष्प रूप्य तदुपमा-
हत्तम् ॥ ९१ ॥

द्रव्य मित स्वापतेय रिक्त्य मृक्थ धन-
वसु हिरण्य द्रविण पुन अर्थै रिभवा

यह तेरह नाम धनके हैं ॥ ९० ॥ और कृताकृत हेमरूप्यमें, अर्थात् बने अनवने सोनेचांदीमें कोश हिरण्यशब्द वर्त्ते हैं. और उन सोनेचांदीसें जो कि अन्य ताँवा आदिक है, वह कुप्य संज्ञिक है और यदि वह दोनों सोने चांदी आहत अर्थात् गढे हुये हों, तौ रूप्य संज्ञिक हैं ॥ ९१ ॥

गारुत्मतं मरकतमश्वगर्भो हरिन्मणिः ॥ शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागोऽथ मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥ मुक्ताऽथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुंनपुंसकम् ॥ रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च ॥ ९३ ॥

गारुत्मत मरकत अश्वगर्भ हरिन्मणि यह चार नाम मरकत मणिके हैं. शोणरत्न लोहितक पद्मराग यह तीन नाम माणिकके हैं. मौक्तिक ॥ ९२ ॥ मुक्ता यह दो नाम मोतियोंके हैं. विद्रुम प्रवाल यह दो नाम मूंगाओंके हैं. तिसमें विद्रुमशब्द पुंलिंगमें होता है और प्रवाल पुंनपुंसकलिंग है. रत्न मणि यह दो नाम पत्थरकी जाति मरकतादिक और मुक्तादिकोंके विषेभी वर्त्ते हैं तिसमें मणिशब्द दोनों स्त्रीपुंलिंगमें होता है ॥ ९३ ॥

१ रत्नका लक्षण और ग्रथसें लिखतेहैं—
कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् ॥
एतानि पञ्च रत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुरिति १
सुवर्णं रजनं मुक्तासजावर्त्तं प्रवालकम् ।
रत्नपञ्चकमाख्यातं शेषं वस्तु प्रचक्षते ॥ २ ॥

स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ॥ तपनीयं शातकुम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम् ॥ ९४ ॥ चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने ॥ रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् ९५ ॥

स्वर्ण सुवर्ण कनक हिरण्य हेम हाटक तपनीय शातकुम्भ गांगेय भर्म कर्बुर ॥ ९४ ॥ चामीकर जातरूप महारजत काञ्चन रुक्म कार्तस्वर जाम्बूनद अष्टापद यह उन्नीश नाम सोनेके हैं. तिसमें अष्टापद शब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता है ॥ ९५ ॥

अलंकारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनकमित्यदः ॥ दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि ॥ ९६ ॥ रीतिः स्त्रिया-मारकूटो न स्त्रियामथ ताम्रकम् ॥ शुल्बं म्लेच्छमुखं द्व्यष्टवरिष्ठोदुम्बराणि च ॥ ९७ ॥

और जो कि अलंकाररूप सुवर्ण है, वह शृङ्गीकनक संज्ञिक है. दुर्वर्ण रजत रूप्य खर्जूर श्वेत यह पांच नाम चाँदीके हैं ॥ ९६ ॥ रीति आरकूट यह दो नाम पीतलके हैं. तिसमें रीतिशब्द स्त्रीलिंगमें होता है और आरकूट स्त्रीलिंगमें नहीं होता किन्तु, पुंनपुंसकलिंगमें होता है. ताम्रक शुल्ब म्लेच्छमुख द्व्यष्ट वरिष्ठ उदुम्बर यह छे नाम ताँबेके हैं ॥ ९७ ॥

लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ॥ अश्वसारोऽथ मण्डूरं

शिङ्घाणमपि तन्मले ॥ ९८ ॥ सर्व
च तैजसं लोहं विकारस्त्वयसः कुशी॥
क्षारः काचोऽथ चपलो रसः सूतश्च
पारदे ॥ ९९ ॥

लोह शस्त्रक तीक्ष्ण पिङ्ग कालायस अ-
यस् अश्वसार यह सात नाम लोहके है.
तिसमें लोहशब्द पुनपुसकलिंग है और उस
लोहके मैलमें मद्धुर शिघाण शब्द वर्त्त है
॥ ९८ ॥ सबही तैजस सुवर्ण रजतादिक
लोह सन्निक है और लोहका विकार कुशी
सन्निक है क्षार काच यह दो नाम काचके
हैं चपल रस सूत पारद यह चार नाम पा-
रेके है ॥ ९९ ॥

गवलं माहिपं शृङ्गमभ्रकं गिरिजा-
मले ॥ स्रोतोऽजनं तु सौवीरं कापो-
ताजनयामुने ॥ १०० ॥ तुत्थाजनं
शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ॥ कर्परी
दार्विका काथोद्भवं तुत्थं रसाजनम्
॥ १०१ ॥ रसगर्भं ताक्ष्यशैलं गन्धा-
शमनि तु गन्धकः ॥ सौगन्धिकश्च चक्षु-
ष्याकुलाल्यौ तु कुलत्थिका ॥ १०२ ॥

और जो कि माहिप शृङ्ग भ्रंसका सिंग
है, वह गवलसन्निक है अभ्रक गिरिजामल
यह दो नाम अभ्रकके हैं स्रोतोऽजन सौवीर
कापोताजन यामुन यह चार नाम नौवी-
राजनके हैं इसको सुरमा कहते हैं ॥ १०० ॥

१ सुवर्ण रजत ताम्र रीति कास्य तथा त्रपु॥
सोस कालायस चैवमष्टौ लोहानि चक्षते॥१॥

तुत्थाजन शिखिग्रीव वितुन्नक मयूरक क-
र्परी यह पाच नाम तुत्थाजनके हैं इसको
तूविया (मोरचूद) भी कहते हैं यह नेत्रोंके
रोगकों दूर करता है और जो कि तुत्थ
तुत्थाजन दार्विका काथोद्भव अर्थात् हल्-
दीके काथमें समभाग बकरीके दूधसें स-
स्कार किया है, वह रसाजन ॥ १०१ ॥
रसगर्भं ताक्ष्यशैल सन्निक है, इसको रसोत
कहते हैं गन्धाशमन् गन्धक सौगन्धिक यह
तीन नाम गन्धिकके हैं चक्षुष्या कुलाली
कुलत्थिका यह तीन नाम नीले सुरमेके
हैं ॥ १०२ ॥

रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पौष्पकं कुसुमा-
जनम् ॥ पिजरं पीतलं तालमालं च
हरितालके ॥ १०३ ॥ गैरेयमथ्यं
गिरिजमशमजं च शिलाजतु ॥ बोलग-
न्धरसमाणपिण्डगोपरसाः समाः १०४

रीतिपुष्प पुष्पकेतु पुष्पक कुसुमाजन यह
चार नाम तपाईहुई पीतलसें उत्पन्न हुए
अजनके हैं, इसको फूलाभी कहते हैं पिजर
पीतल ताल आल हरितालक यह पाच नाम
हरितालके हैं ॥ १०३ ॥ गैरेय अथ्यं
गिरिज अशमज शिलाजतु यह पाच नाम
शिलाजीतके हैं बोल गन्धरस माण गोपरस
यह पाच नाम गोपरसके हैं, यह शब्द स-
मानालिग है ॥ १०४ ॥

डिण्डीरोऽन्धिकफः केनः सिन्दूरं ता-
गसभवम् ॥ नागसीसकपोगेद्वया-

णि त्रपु पिच्चटम् ॥ १०५ ॥ रङ्ग-
वङ्गे अथ पिचुस्तूलोऽथ कमलोत्तरम्
॥ स्यात्कुसुम्भं वह्निशिखं महारजन-
मित्यपि ॥ १०६ ॥

डिंडीर अन्धिकफ फेन यह तीन नाम
समुद्रफेनके हैं. सिंदूर नागसंभव यह दो नाम
सिन्दूरके हैं. नाग सीसक योगेष्ट वप्र यह
चार नाम सीसेके हैं. त्रपु पिच्चट ॥ १०५ ॥
रंग वंग यह चार नाम रँगके हैं. पिचु तुल
यह दो नाम रुईकपासके हैं. कमलोत्तर कु-
सुंभ वह्निशिख महारजन यह चार नाम
कसुमेके हैं ॥ १०६ ॥

मेषकम्बल ऊर्णायुः शशोर्णं शशलो-
मनि ॥ मधु क्षौद्रं माक्षिकादि मधू-
च्छिष्टं तु सिक्थकम् ॥ १०७ ॥
मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्रा नाग-
जिह्विका ॥ नैपाली कुनटी गोला
यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥ पा-
क्योऽथ स्वर्जिकाक्षारः कापोतः सु-
खवर्चकः ॥ सौवर्चलं स्याद्रुचकं त्व-
क्क्षीरी वंशरोचना ॥ १०९ ॥

मेषकम्बल ऊर्णायु यह दो नाम कम्बलके हैं.
शशोर्णं शशलोमन् यह दो नाम खरगोसके
रोमके हैं. मधु क्षौद्र माक्षिक यह तीन नाम
मधुके हैं, इसको सहत कहते हैं. आदि श-
ब्दसे भ्रामर पौत्रक आदिक जाननें. मधू-
च्छिष्ट सिक्थक यह दो नाम मौमके हैं
॥ १०७ ॥ मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्रा

नागजिह्विका यह चार नाम मैनशिलके हैं.
नैपाली कुनटी गोला यह तीन नाम नेपा-
लदेशकी मैनशिलके हैं. यवक्षार यवाग्रज
॥ १०८ ॥ पाक्य यह तीन नाम जलेहुए
जौंओंके अंकुरोंसे उत्पन्न हुए क्षारभेदके हैं
इसको जवाखार कहते हैं. सर्जिकाक्षार का-
पोत सुखवर्चक यह तीन नाम सज्जखारके
हैं. सौवर्चल रुचक यह दो नाम संचलखारके
हैं. यह पहलें कहदियाथा परन्तु क्षारकेप्रसं-
गसे फिर कहागया है. त्वक्क्षीरी वंशलो-
चना यह दो नाम वॉशसे उत्पन्न हुए औ-
षधिविशेषके हैं. इसको वंशलोचन कहते
हैं ॥ १०९ ॥

शिशुजं श्वेतमरिचं मोरटं मूलमैक्षव-
म् ॥ ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर
इत्यपि ॥ ११० ॥ गोलोमी भूतके-
शो ना पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ॥ त्रि-
कटु व्यूषणं व्योषं त्रिफला तु फल-
त्रिकम् ॥ १११ ॥

॥ इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

शिशुज श्वेतमरिच यह दो नाम सहज-
नेके बीजके हैं. और जो कि इक्षुसंवन्धी मूल
अर्थात् ऊखकी जड़ है, वह मोरट संज्ञिक
है. ग्रन्थिक पिप्पलीमूल चटिकाशिरस् यह
तीन नाम पीपरामूलके हैं ॥ ११० ॥ गो-
लोमी भूतकेश यह दो नाम जटामांसीके हैं.
पत्रांग रक्तचन्दन यह दो नाम रक्तचन्दन-
सदृश रक्तसार पतंगवृक्षके हैं त्रिकटु व्यूषणा

व्योप यह तीन नाम इकट्ठी कीहुई सौंठि
पिपरि मिरचोंके है त्रिफला फलत्रिक यह
दो नाम इकट्ठे किये हुए हरि आवला बहेढोंके
हैं ॥ १११ ॥

॥ इति वैश्यवर्गः ॥

शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्य-
जाः ॥ आ चण्डालान्तु संकीर्णा अ-
म्बष्ठकरणादयः ॥ १ ॥ शूद्राविशो-
स्तु करणोऽम्बष्ठो वैश्यादिजन्मनोः ॥
शूद्राक्षत्रिययोक्तयो मागधः क्षत्रि-
याविशोः ॥ २ ॥

शूद्र अवरवर्ण वृषल जघन्यज यह चार
नाम शूद्रके है चाडालशब्द पर्यन्त अवध-
फरणादिक सकीर्ण सन्निक है आदिशब्दसे
उग्रादिकभी सकीर्ण जानने ॥ १ ॥ शूद्रा
शूद्रजाति स्त्री विश्व (वैश्य) इन दोनोंसे
उत्पन्न हुआ पुत्र करण सन्निक है इसकी
लेखनवृत्ति है वेश्या (वैश्यजाति स्त्री) द्विजन्मा
(ब्राह्मण) से उत्पन्न हुआ पुत्र अवध स-
न्निक है इसकी चिकित्सावृत्ति है और शूद्र
जाति स्त्री और क्षत्रियसे उत्पन्न हुआ पुत्र
उग्र सन्निक है इसकी गन्धवृत्ति है और
क्षत्रियजाति स्त्री और वैश्यसे उत्पन्न हुआ
पुत्र मागध संन्निक है इसकी राजादिकोंकी
स्तुति पाठादिक वृत्ति है ॥ २ ॥

माहिष्योऽप्यक्षत्रिययोः क्षत्ताऽप्यशूद्र-
योः सुतः ॥ ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सु-
तस्तस्यां वैदेहको विश ॥ ३ ॥ २-

थकारस्तु माहिष्यात्करण्या यस्य
संभवः ॥ स्याच्चण्डालस्तु जनितो
ब्राह्मण्यां वृषलेन यः ॥ ४ ॥

अर्या वैश्यजाति स्त्री और क्षत्रियसे उ-
त्पन्न हुआ पुत्र माहिष्य सन्निक है इसकी
ज्योतिष शकुनशास्त्र स्वरशास्त्र जीविका
है और वैश्यजाति स्त्री और शूद्रसे उत्पन्न
हुआ पुत्र क्षत्र सन्निक है इसकी वृत्ति मृ-
गयादिक है और ब्राह्मणीकेविषै क्षत्रियसे
उत्पन्नहुआ पुत्र सूत सन्निक है इसकी जी-
विका हाथियोंके बचन तथा घोडाओंके
फिरानेसे होतीहै और उसी ब्राह्मणीकेविषै
वैश्यसे उत्पन्नहुआ पुत्र वैदेहक सन्निक है
इसकी जीविका चौसठि कलाओंके कर्मके
शित्तानेसे होतीहै ॥ ३ ॥ करणी अर्थात्
शूद्रजाति स्त्री और वैश्यसे उत्पन्नहुई स्त्री-
केविषै माहिष्य अर्थात् वैश्यजाति स्त्री और
क्षत्रियसे उत्पन्नहुए पुरुषसे जिसका जन्म
हुआहै वह रथकार सन्निक है इसकीवृत्ति
रथकर्म इन्वनादिकोंसे होतीहै और जो कि
ब्राह्मणीकेविषै शूद्रसे उत्पन्नहुआ है वह
चाडाल सन्निक है इसकी वृत्ति मृतकके
वस्त्रादिक तथा निन्दित मासोंकर होतीहै ॥ ४ ॥

कारु शिल्पी संहतैस्तेर्दयो श्रेणिः
सजातिभिः ॥ कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठो
माटाकारस्तु मालिकः ॥ ५ ॥ कु-

१ तक्षा च तनुगपश्च नापिनोऽग्नकम्नथा ॥
पचमश्चर्मकारश्च कारव शिल्पिनो मता ॥ १ ॥

म्भकारः कुलालः स्यात्पलगण्डस्तु
लेपकः ॥ तन्तुवायः कुविन्दः स्या-
तुन्नवायस्तु सौचिकः ॥ ६ ॥

कारु शिल्पिन् यह दो नाम चित्रकारा-
दिके हैं. और उन्ही इकठेहुए सजातिशि-
ल्पियोंकर श्रेणि शब्द होता है अर्थात् यह
एक नाम सजातीय शिल्पियोंके समूहका
है. यह शब्द दोनों स्त्रीपुंलिंगमें होता है. कुलक
कुलश्रेष्ठिन् यह दो नाम शिल्पियोंके कुलके
प्रधानके हैं. मालाकार मालिक यह दो नाम
मालीके हैं ॥ ५ ॥ कुंभकार कुलाल यह
दो नाम कुंभारके हैं. पलगंड लेपक यह दो
नाम गृहादिकोंकेविषै लेप करनेवालेके हैं
इसकों राज कहते हैं. तन्तुवाय कुविन्द यह
दो नाम कपड़ोंके बनानेवालेके हैं इसकों
जुल्हाया तथा कोरी कहते हैं. तुन्नवाय सौ-
चिक यह दो नाम वस्त्रोंके सीनेवालेके हैं
इसकों दरजी कहते हैं ॥ ६ ॥

रङ्गाजीवश्चित्रकरः शस्त्रमार्जोऽसि-
धावकः ॥ पादूकचर्मकारः स्या-
द्योकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥
नाडिंधमः स्वर्णकारः कलादो रुक्म-
कारकः ॥ स्याच्छाडिस्विकः काम्ब-
विकः शौल्विकस्ताम्रकुट्टकः ॥ ८ ॥

रंगाजीव चित्रकर यह दो नाम वस्त्रा-
दिकोंके रंगनेवालेके हैं इसकों रंगसाज तथा
रंगरेजभी कहते हैं. शस्त्रमार्जक असिधावक
यह दो नाम शस्त्रके पैरानेवालेके हैं इसकों

शिकलीगर कहते हैं. पादूक चर्मकार यह दो
नाम चँभारके हैं. व्योकार लोहकारक यह दो
नाम लुहारके हैं ॥ ७ ॥ नाडिंधम स्वर्णकार
कलाद रुक्मकारक यह चार नाम सुनारके
हैं. शांखिक कांठविक यह दो नाम मनि-
हारके हैं. शौल्विक ताम्रकुट्टक यह दो नाम
कांसी ताँबेके वर्त्तन बनानेवालेके हैं इसकों
ठठरा कहते हैं ॥ ८ ॥

तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारस्तु का-
ष्ठतद् ॥ ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौ-
टतक्षोऽनधीनकः ॥ ९ ॥ क्षुरी मुण्डी-
दिवाकीर्तिनापितान्तावसायिनः ॥
निर्णेजकः स्याद्रजकः शौण्डिको
मण्डहारकः ॥ १० ॥

तक्षन् वर्द्धकि त्वष्टृ रथकार काष्ठतक्ष
यह पांच नाम बढईमात्रके हैं जो कि बढई
ग्रामके आधीन होता है वह ग्रामतक्ष संज्ञिक
है और जो कि बढई अनधीनक अर्थात्
अपने आधीन है वह कौटतक्ष संज्ञिक है
॥ ९ ॥ क्षुरिन् मुंडिन् दिवाकीर्ति नापित
अंतावसायिन् यह पांच नाम नाईके हैं. नि-
र्णेजक रजक यह दो नाम वस्त्रोंके धौने-
वालेके हैं इसकों धोबी कहते हैं शौण्डिक
मण्डहारक यह दो नाम मदिरासें जीविका
करनेवालेके हैं इसकों कलाल कहते हैं ॥ १० ॥

जावालः स्यादजाजीवो देवाजीवस्तु
देवलः ॥ स्यान्माया शाम्बरी मा-
याकारस्तु प्रातिहारिकः ॥ ११ ॥

शैलालिनस्तु शैलूपा जायाजीवाः वृ-
शाश्विनः ॥ भरता इत्यपि नटाश्वा-
रणास्तु कुशीलवाः ॥ १२ ॥

जायाल अजाजीव यह दो नाम वक्-
रियोंके पालनेवालेके है इसकों गहरिया क-
हतेहैं देवाजीव देवल यह दो नाम देवसेवास
जीविका करनेवालेके है इसकों पुजारी तथा
पडाभी कहतेहैं माया शावरी यह दो नाम
इद्रजालके है मायाकार प्रतिहारक यह दो
नाम इद्रजालीके हैं इसको वाजीगरभी क-
हतेहैं ॥ ११ ॥ शैलालिन शैलूपा जायाजीव
वृशाश्विन भरत नट यह छै नाम नटवाके
हैं चारण कुशीलव यह दो नाम कथक
नटविशेषोंके है ॥ १२ ॥

मार्दङ्गिका मौरजिकाः पाणिवादा-
स्तु पाणिघाः ॥ वेणुध्माः स्यर्वण-
विका वीणावादास्तु वैणिकाः ॥ १३ ॥
जीवान्तकः शाकुनिको द्वौ वागुरि-
कजालिकौ ॥ वैतंसिकः कौटिकश्च
मासिकश्च सम त्रयम् ॥ १४ ॥

मार्दङ्गिक मौरजिक यह दो नाम मृदग
बजानेवालेके है इसकों मृदगी पखवाजीभी
कहतेहैं पाणिवाद पाणिघ यह दो नाम ता-
लीबजानेवालेके है वेणुध्मा वेणविक यह दो
नाम बांसुरी बजानेवालेके है तिसमें वेणुध्मा
शब्द आकारान्त पुल्लिङ्ग है वीणावाद वै-
णिक यह दो नाम वीणा बजानेवालेके हैं
॥ १३ ॥ जीवान्तक शाकुनिक यह दो नाम

पक्षियोंके मारनेवालेके है इसकों चिडीमार
कहतेहैं वागुरिक जालिक यह दो नाम
जालकरके मृगादिकोंके बांधनेवालेके है वै-
तंसिक कौटिक मासिक यह तीन नाम
मास बेचकर जीविका करनेवालेके है इस-
कों कसाई कहतेहैं यह तीनों शब्द शब्द
समानार्थ है ॥ १४ ॥

भृतको भृतिभुक् कर्मकरा वैतनिको-
ऽपि सः ॥ वार्तावहो वैवधिको भा-
रवाहस्तु भारिकः ॥ १५ ॥ विवर्णः
पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः ॥
निहीनोऽपसदो जाल्मः क्षुल्लकश्चेत-
रश्च सः ॥ १६ ॥

भृतक भृतिभुज् कर्मकर वैतनिक यह
चार नाम मजूरीसे जीविका करनेवालेके है
इसकों चारुर तथा मजूर कहते हैं वार्ता-
वह वैवधिक यह दो नाम सदेश लेज ने-
वालेके है भारवाह भारिक यह दो नाम
बोझ ले जानेवालेके है ॥ १५ ॥ विवर्ण
पामर नीच प्राकृत पृथक्जन निहीन अप-
सद जाल्म क्षुल्लक इतर यह दश नाम नी-
चेके है ॥ १६ ॥

भृत्ये दासेरदासेपदास्तगोप्यकचेटका*
॥ निपोज्यक्किंकरमैप्यभजिप्यपरि-
चारका* ॥ १७ ॥ पराचितपरिस्क-
न्दपरजातपरैधिता ॥ मन्दस्तुन्द-
परिमृज धालस्य शीतकोऽस्तसोऽनु-
ष्ण ॥ १८ ॥

भृत्य दासेर दासेय दास गोप्यक चेटक
नियोज्य किंकर प्रैष्य भुजिष्य परिचारक
यह ग्यारह नाम दासके हैं ॥ १७ ॥ प-
राचित परिस्कन्द परजात परैधित यह चार
नाम दूसरोंकर बढायेहुए पुरुषके हैं. मंद तु-
न्दपरिमृज आलस्य शीतक अलस अनुष्ण
यह छै नाम आलसीके हैं ॥ १८ ॥

दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूत्थान उ-
ष्णश्च ॥ चण्डालप्लवमातङ्गदिवाकी-
र्तिजनंगमाः ॥ १९ ॥ निषादश्वप-
चावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः ॥ भे-
दाः किरातशबरपुलिन्दा म्लेच्छ-
जातयः ॥ २० ॥

दक्ष चतुर पेशल पटु सूत्थान उष्ण यह
छै नाम चतुरके हैं. चंडाल प्लव मातंग दि-
वाकीर्ति जनंगम ॥ १९ ॥ निषाद श्वपच
अंतेवासिन चण्डाल पुक्कस यह दश नाम
चण्डालके हैं, किरात शबर पुलिन्द यह तीन
नाम म्लेच्छजाती चण्डालोंके भेद हैं ॥ २० ॥

व्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्लुब्धको-
ऽपि सः ॥ कौलेयकः सारमेयः कु-
क्कुरो मृगदंशकः ॥ २१ ॥ शुनको
भपकः श्वा स्यादलर्कस्तु स योगितः
॥ श्वा विश्वकद्रुमृगयाकुशलः सर-
मा शुनी ॥ २२ ॥

व्याध मृगवधाजीव मृगयु लुब्धक यह
चार नाम व्याधके हैं. कौलेयक सारमेय
कुक्कुर मृगदंशक ॥ २१ ॥ शुनक भपक

श्वन् यह सान नाम कुत्तेके हैं. और जो
कि योगित अर्थात् प्रयोगकरके उन्मत्तताको
प्राप्तहुआ है वह कुत्ता अलर्क संज्ञिक है
और जो कि कुत्ता मृगयाकुशल अर्थात्
अहेरमें चतुर हैं वह विश्वकद्रु संज्ञिक है
इसको शिकारीकुत्ता कहते हैं. सरमा शुनी
यह दो नाम कुत्तियाके हैं ॥ २२ ॥

विट्चरः सूकरो ग्राम्यो वर्करस्तरुणः
पशुः ॥ आच्छोदनं मृगव्यं स्यादा-
खेटो मृगया स्त्रियाम् ॥ २३ ॥ दक्षि-
णार्लुब्धयोगादक्षिणेर्मा कुरङ्गकः ॥
चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करभोष-
काः ॥ २४ ॥ प्रतिरोधिपरास्कन्दि-
पाटच्चरमलिम्लुचाः ॥ चौरिका स्तै-
न्यचौर्ये च स्तेयं लोप्त्रं तु तद्धने ॥ २५ ॥

और जो कि ग्रामसंवन्धी सूकर है वह
विट्चर संज्ञिक है. और जो कि तरुण पशु
है वह वर्कर संज्ञिक है. आच्छोदन मृगव्य
आखेट मृगया यह चार नाम शिकारके है
तिसमें मृगयाशब्द स्त्रीलिंगमें होताहै ॥ २३ ॥
लुब्धयोग अर्थात् व्याधके त्वन्धसें दहन
वगलमें है अरुवाव जिसके ऐसा हरिण द
क्षिणोर्मन् संज्ञिक है. चौर ऐकागारिक स्ते-
नदस्यु तस्कर भोषक ॥ २४ ॥ प्रतिरोधि
परास्कन्दि पाटच्चर मलिम्लुच यह दश नाम
चोरके हैं. चौरिका स्तेन्य चौर्य स्तेय यह
चार नाम चोरीके हैं और उस चोरीके ध-
नमें लोप्त्र शब्द वर्त्ते है ॥ २५ ॥

वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणा-
म् ॥ उन्माथः कूटपन्त्रं स्याद्वागुरा
मृगबन्धनी ॥ २६ ॥ शुल्वं वराटकं
स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु घटी गुणः ॥ उद्वा-
टनं घटीपन्त्रं सलिलोद्वाहनं प्रहेः ॥ २७ ॥

मृगपक्षियोंके बंधनेके निमित्त जो उ-
पकरण फासजाल आदिक हे वह वीतस
सक्षिक है उन्माथ कूटयत्र यह दो नाम
उसके है जो कि मृगपक्षियोंके बंधनेके
निमित्त छलसे रक्खेहुए यत्रके है इसको
फदाभी कहते है वागुरा मृगबन्धनी यह
दो नाम मृगोंके फासनेकी रस्सी विशेषके
है इसको जालभी कहते है ॥ २६ ॥ शु-
ल्व वराटक रज्जु घटी गुण यह पाच नाम
रस्सीके है तिसमें रज्जु शब्द स्त्रीलिङ्ग है
और घटी शब्द तीनों लिङ्गमें होता है प्र-
हिनाम कूपसे जल उसारा जाता है जिस
रस्सीकर वह उद्वाटन घटीयत्र सक्षिक है
इसको पनभस्त्रभी कहते है ॥ २७ ॥

पुंति वेमा वायदण्डः सूत्राणि नरि
तन्तव ॥ वाणिर्वृतिः स्त्रियौ तुल्ये
पुंस्तु लेप्पादिकर्मणि ॥ २८ ॥ पा-
श्चात्तिका पुत्रिका स्यादस्त्रदन्तादिभि
रुता ॥ जतुत्रपुत्रिकारे तु जातुप
त्रापुर्ण त्रिषु ॥ २९ ॥

धमन् वायदट यह दो नाम वन्ध वुन-

१ मृग २ वागुरा ३ मृग बन्धनी ४ उन्माथ ५ कूटपन्त्र ६ सलिलोद्वाहन ७ प्रहेः ८ रज्जु ९ घटी १० गुण ११ उद्वाटन १२ घटीपन्त्र १३ सक्षिक १४ मृगपक्षियोंके बंधनेके निमित्त १५ फासजाल १६ आदिक १७ हे १८ वह १९ वीतस २० सक्षिक २१ है २२ उन्माथ २३ कूटपन्त्र २४ स्याद्वागुरा २५ मृगबन्धनी २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

नेके दडके है सूत्र ततु यह दो नाम सू-
तके है तिसमें त तु शब्द पुलिगमें होता है
वाणि व्यूति यह दो नाम वुननेके है यह
दोनो शब्द तुल्यार्थ और स्त्रीलिङ्ग है और
लेप्पादिक कर्मकेविषे पुस्त शब्द वर्त्ते है
अर्थात् यह एक नाम मिट्टी काठ लोह आ-
दिककी बनाईहुई पुतलीका है ॥ २८ ॥
और जो कि वस्त्रदन्तादिकोंकर बनाईहुई
पुत्रिका अर्थात् पुतली है वह पाचात्तिका
सक्षिक है जतु (लाख) त्रपु (राग) इन
दोनोंके विकारमें जातुप त्रापुप शब्द होते है
भाव यह है कि जातुप यह एक नाम ला-
खके विकारका है त्रापुप यह एक नाम रा-
गके विकारका है यह दोनों शब्द तीनों
लिङ्गमें होते है ॥ २९ ॥

पिटकः पेटकः पेटा मञ्जूपाऽथ विह-
ङ्गिका ॥ भारयटिस्तदालम्नि शिष्य
काचोऽथ पादुका ॥ ३० ॥ पाद-
रूपानस्त्री सेवानुपदीना पदायता ॥
नक्षी वर्धी वरत्रा स्यादश्वादेस्ताडनी
कशा ॥ ३१ ॥

पिटक पेटक पेटा मञ्जूपा यह चार नाम
पिटारी वा मिन्दूके है विहङ्गिका भारयटि
यह दो नाम छौना आदिक टांगनेकी ल-
कड़ीके है इमको खुटी कहते है और उग
खुटीपर लना तेसर खडारहता है वह गिरय
काच सक्षिक है इमको छौका कहते है पा-
दुका ॥ ३० ॥ पाद उपानह यह ती

नाम जूताओंके हैं यह तीनों शब्द स्त्रीलिंग हैं और जो कि जूता पाँवकीसमान विस्तृत है वह अनुपदीना संज्ञिक है इसको मोजा कहते हैं. नग्री वर्धी वरजा यह तीन नाम चामकी रस्सीके हैं. और अश्व (घोडा) आदिकोंके ताडनेवाली रस्सी कशा संज्ञिक है इसको कुरा कहते हैं ॥ ३१ ॥

चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा च-
ण्डालवल्लकी ॥ नाराची स्यादेप-
णिका शाणस्तु निकषः कषः ॥ ३२ ॥
ब्रश्चनः पत्रपरशुरीषिका तूलिका स-
मे ॥ तैजसावर्तनी मूषा भस्त्रा चर्म-
प्रसेविका ॥ ३३ ॥

चांडालिका कंडोलवीणा चंडालवल्लकी यह तीन नाम नीच जातिकी वीणाके हैं नाराची एपणिका यह दो नाम सुनारके कांटेके हैं. शाण निकष कष यह तीन नाम कसोटीके हैं इसपर बिसकर सोना परखा जाता है ॥ ३२ ॥ ब्रश्चन पत्रपरशु यह दो नाम सुवर्णादिक काटनेके फरसेके हैं इसको रेतीभी कहते हैं. ईपिका तूलिका यह दो नाम शलाका भेदके हैं इसको सलाई कहते हैं. तैजसावर्तनी मूषा यह दो नाम सुवर्णादिक तवानेके पात्रके हैं इसको घरिया कहते हैं. भस्त्रा चर्मप्रसेविका यह दो नाम अग्नि जलानेके वास्ते बनाईहुई धौंकनीके हैं ॥ ३३ ॥

आस्फोटनी वेधनिका छपाणी कर्तरी
मे ॥ वृक्षादनी वृक्षभेदी टङ्कः पा-

पाणदारणः ॥ ३४ ॥ ऋकचोऽस्त्री
करपत्रमारा चर्मप्रभेदिका ॥ सूर्मि
स्थूणाऽयःप्रतिमा शिल्पं कर्म कला-
दिकम् ॥ ३५ ॥

आस्फोटनी वेधनिका यह दो नाम म-
णिआदिक वेधनेके उपयोगी शस्त्रभेदके हैं
इसको वर्मा कहते हैं. छपाणी कर्तरी यह
दो नाम उसके जिसकरके कि सुवर्णपात्रा-
दिक कट जाते हैं इसको कतरनी कहते हैं
यह दोनों शब्द समानार्थ हैं. वृक्षादनी वृक्ष-
भेदी यह दो नाम वृक्षके काटनेके शस्त्रभे-
दके हैं इसको वसूलाभी कहते हैं. टंक पा-
णदारण यह दो नाम पत्थरके फोडने-
वाले घनभेदके हैं इसको टांकी कहते हैं
॥ ३४ ॥ ऋकच करपत्र यह दो नाम
काष्ठादिक चीरनेवाले शस्त्रके हैं इसको
आरा कहते हैं. तिसमें ऋकच पुंनपुंसकलिंग
है. आरा चर्मप्रभेदिका यह दो नाम चर्मके
खंडन करनेवाले शस्त्रके हैं इसको आर
कहते हैं. सूर्मि स्थूणा अयःप्रतिमा यह ती-
नाम लोहेकी प्रतिमाके हैं जो कला गी
नृत्यादिक और आदिशब्दसे जो रथकारा
दिक कर्म है वह शिल्प संज्ञिक हैं ॥ ३५ ॥

प्रतिमानं प्रतिविम्बं प्रतिमा प्रतिया-
तना प्रतिच्छाया ॥ प्रतिकृतिरर्चा
पुंसि प्रतिनिधिरुपमोपमानं स्यात् ॥
॥ ३६ ॥ वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः
सदृक्षः सदृशः सदृक् ॥ साधारणः
समानश्च स्युरुत्तरपदे त्वभी ॥ ३७ ॥

प्रतिमान प्रतिनिम्ब प्रतिमा प्रतियातना
प्रतिच्छाया प्रतिकृति अर्चा प्रतिनिवि यह
आठ नाम प्रतिमाके है तिसमें प्रतिनिवि
शब्द पुलिगमें होता है उपमा उपमान यह
दो नाम उपमाके है ॥ ३६ ॥ सम तुल्य
सदृश सदृश सदृश् साधारण समान यह
सात नाम सदृशके है यह सातों शब्द
वाच्यलिग अर्थात् विशेष्यलिग है और जो
कि उत्तरपद अर्थात् अग्रपदमें स्थित है
निभसकाशादिक वहभी वाच्यलिग है ॥ ३७ ॥

निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमाद-
यः ॥ कर्मण्या तु विधाभृत्याभूतयो भ्रमं
वेतनम् ॥ ३८ ॥ भरण्यं भरणं मू-
ल्य निर्वेशः पण इत्यपि ॥ सुरा ह-
लिप्रिया हाला परिसुदरुणात्मजा ॥
॥ ३९ ॥ गन्धोत्तमाप्रसन्नेराकाद-
म्बर्यः परिसुता ॥ मदिरा कश्यमद्ये
घ्राण्यवदंशस्तु भक्षणम् ॥ ४० ॥

निभ सकाश नीकाश प्रतीकाश उपमा
इत्यादिक नामभी सदृशके है आदिशब्दसें
भूतस्त्व कल्पादिकभी नामसदृशार्थ जाननें
कर्मण्या विधाभृत्या भूति भ्रमन् वेतन
॥ ३८ ॥ भरण्य भरण मूल्य निर्वेश पण
यह ग्यारह नाम मजुरीके है सुरा हलिप्रिया
हाला परिसुत वरुणात्मजा ॥ ३९ ॥ गन्धो-
त्तमा प्रसन्ना इरा कादवरी परिसुता मदिरा
कश्य मद्य यह तेरह नाम मदिराके है और
जो कि व्यजन मदिरा पीनेकी रुचि बढ़ा-

नेके अर्थ भक्षण किया जाता है वह अव-
दश सन्निक है ॥ ४० ॥

शुण्ढापानं मदस्थानं मधुवारा मधु-
क्रमाः ॥ मध्वासवो माधवको मधु-
माध्वीकमदयोः ॥ ४१ ॥ मैरेयमा-
सवः सीधुर्मदको जगलः समौ ॥
संवानं स्यादभिषवः किण्वं पुंसि तु
नग्रहः ॥ ४२ ॥

शुडापान मदस्थान यह दो नाम मदिराके घरके है मधुवार मधुक्रम यह दो नाम मदिरा पीनेके समयके है मध्वासव माधवक मधु माध्वीक यह चार नाम महुआके फूलोंसे उत्पन्न हुई मदिराके है तिसमें मधु और माध्वीक शब्द दोनों स्त्रीपुलिगमें नहीं होते, कि तु पुनपुसकलिगमें होते है ॥ ४१ ॥ मैरेय आसव सीधु यह तीन नाम ऊख शाक आदिकसें उत्पन्न कीहुई मदिरा विशेषके है मेदक जगल यह दोनों समानार्थ नाम सुराकल्क अर्थात् मदिराके बचेहुए भागके है सधान अभिषव यह दो नाम मदिरा बनानेके है किण्व नग्रह यह दो नाम तहुलादिक द्रव्यकर बनाईहुई मदिराके बीजके है तिसमें नग्रह शब्द पुलिगमें होता है ॥ ४२ ॥

कारोत्तरः सुरामण्ड आपानं पान-
गोष्ठिका ॥ चपकोऽस्त्री पानपात्रं
सरकोऽप्यनुतर्पणम् ॥ ४३ ॥ धूर्ताक्षदे-

वीकितवोऽक्षधूर्तो घृतकृतसमाः॥स्युर्लघ्न-
काः प्रतिभूवः सभिका घृतकारकाः४४

और जो कि मदिराका माँड है, वह का-
रोत्तर संज्ञिक है. आपान पानगोष्ठिका यह
दो नाम मदिरा पीनेकी सभाके हैं. चषक
पानपात्र यह दो नाम मदिरा पीनेके पात्रके
हैं, तिसमें चषक स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंग
है. सरक अनुतर्षण यह दो नाम मदिरा
पीनेके हैं ॥ ४३ ॥ धूर्त्त अक्षदेविन् कितव
अक्षधूर्त्त घृतकृत् यह पांच नाम जुए खेल-
नेवालेके हैं. यह शब्द सब समानार्थ हैं.
लग्नक प्रतिभू यह दो नाम उसके हैं, जो
कि ऋणादिककेविषैं जामिन होता है. स-
भिका घृतकारक यह दो नाम जुआ खि-
लानेवालेके हैं ॥ ४४ ॥

घृतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्य-
पि ॥ पणोऽक्षेषु ग्लहोऽक्षास्तु देव-
नाः पाशकाश्च ते ॥ ४५ ॥ परिणा-
यस्तु शारीणां समन्तान्वयनेऽस्त्रि-
याम् ॥ अष्टापदं शारिफलं प्राणिघृतं
समाह्वयः ॥ ४६ ॥ उक्ता भूरिप्रयो-
गत्वादेकस्मिन्येऽन्न यौगिकाः ॥
तान्दुर्म्यादन्यतो वृत्तावृत्त्या लिङ्गान्त-
रेऽपि ने ॥ ४७ ॥

इति शूद्रवर्गः ॥ १० ॥

घृत अक्षवती कैतव पण यह चार नाम
उक्ताके हैं. तिसमें घृत शब्द स्त्रीलिंगवर्जित
पुंनपुंसकलिंगमें होता है. अक्ष (फांसों) के

विषैं जो कि संकेत है, वह पण ग्लह संज्ञिक
है. इसकों वाजी तथा दाव कहते हैं. अक्ष
देवन पाशक यह तीन नाम फांसोंके हैं
॥ ४५ ॥ और शारि नाम नदीके चारों-
तरफ लेजानेमें परिणाय शब्द वर्त्ते है. अ-
र्थात् यह एक नाम नदीके इधर उधर च-
लानेका है. यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुं-
सकलिंगमें होता है. अष्टापद शारिफल यह
दो नाम चौपडके हैं. और जो कि प्राणिघृत
अर्थात् प्राणिनाम मेंढा मुरगा आदिकोंका
घृत नाम युद्धरूप जुआ है, वह समाह्वय
संज्ञिक है ॥ ४६ ॥ इस शूद्र वर्गमें जो
यौगिक कुम्भकार मालाकार आदिकशब्द
काव्यपुराणादिकमें पुंलिंगके विषैं ही बहुत
प्रयोग होनेसें एकही लिंगमें कहेहैं, ते अ-
न्यतः अर्थात् और जगह स्त्रीलिंगादियुक्त
विशेष्यवृत्ति होतसैं तादुर्म्य अर्थात्
तिस विशेष्य धर्मवाले होनेसें स्त्रीलिंगादि-
ककेविषैं जानने. भाव यह है कि, इस शूद्र-
वर्गमें जो कि यौगिक कुम्भकार मालाका-
रादिकशब्द एकही पुंलिंगमें दिखाये हैं, वह यदि
विशेष्यवृत्ति होवैं, तो विशेष्यलिंग जानने.
और अपिशब्दसें रूढशब्द करण कुलादि-
कभी जातिवचनसें पुंलिंग और स्त्रीलिंगके

१ जिसके अंगोंकरके समर्थहुआ अर्थ जा-
नाजाता है वह यौगिक है.

१ जिसकी अंगशक्तिकी अपेक्षा न करके
समूहशक्तिमात्रसें अर्थ जानाजाताहै वह रूढ है

विषे वर्त्ततेहै यौगिकोके लिगातरप्रयोग यह है, जैसे [कुम्भकारी स्त्रीकुम्भकार कुलम्] और रुढशब्दोंके लिगातर प्रयोग यह है जैसे [करणी स्त्री-कुलाली स्त्री]ऐसे जानने ॥४७॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने॥
द्वितीयकाण्डो भूम्यादिः साङ्ग एव
समर्थितः ॥ १ ॥ इत्यमरसिंहकृतौ
नामलिङ्गानुशासने द्वितीयं काण्डं

॥ समाप्तम् ॥

इसप्रकार श्रीअमरसिंहकी कृत्यनाम और लिङ्गोंके अनुशासन जतानेवाले ग्रथमें भूम्यादिक शब्दोंका काण्डसमूह सांग (अ-गोपागसहित) कहाहै ॥ १ ॥ श्रीमदमर-सिंहकृतौ श्रीपाठकमंगलसेनात्मजकाशिराम-विरचितभाषाटीकाया द्वितीयोभूम्यादिकाण्डः समाप्त ॥ २ ॥

तृतीयकाण्डम् ।

विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैर-
पि ॥ लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये
वर्गसश्रयाः ॥ १ ॥

इसके अनंतर तृतीयकाण्ड मारम्भ किया जाताहै-इस सामान्य साधारणका-ण्डमें विशेष्यनिघ्न अर्थात् पूर्व कहे हुए स्त्रीदारादिरूपविशेष्यके आधीन है लि-गवचन जिनके ऐसे जो सुख्यादिक शब्द,

तथा सकीर्ण परस्पर विजातीय कर्मपाराय-णादिक जो शब्द, तथा नानार्थ अर्थात् अनेकार्थोंमें वर्त्तमान नाकलोकादिक जो शब्द, तथा अव्यय आडादिक जो शब्द, लिगादिसंग्रह अर्थात् [स्त्रियामीदूद्विरामैकाच्] इत्यादिक जो शब्द आदिशब्दसे लकाशे-फालिका जो शब्द ति-होंकरके पूर्वकहेहुए स्वर्गादिक वर्ग है आश्रय जिनके ऐसे ति-न्ही २ विशेष्यनिघ्नादिक नामवाले वर्ग कहे जावेंगे भाव यह है कि इस साधारण तृ-तीयकाण्डमें विशेष्यनिघ्न तथा सकीर्ण तथा अव्यय तथा लिगादिसंग्रह इन शब्दोंकरके वर्ग कहे जावेंगे परंतु वह वर्ग स्वतंत्र नहीं है, किन्तु वर्गसश्रय अर्थात् पूर्वकहेहुए स्व-र्गादिक वर्गोंके सबधी है ॥ १ ॥

स्त्रीदाराद्यैर्विशेष्य यादृशैः प्रस्तुत
पदैः ॥ गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा
स्युस्तस्य भेदका. ॥ २ ॥ सुकृती
पुण्यवान् धन्यो महेच्छस्तु महाशयः॥
हृदयालुः सुहृदयो महोत्साहो म-
होद्यमः ॥ ३ ॥

इस शास्त्रकेविषे रूपादिकभेदकरके ब-हुवा लिगनिर्णय है तिसीप्रकार इस विगे-प्यनिघ्नवर्गमेंभी होताहै क्या ऐसा भ्रम दूर करनेके लिये व्यापकलक्षण कहतेहै-जैसे स्त्रीदारादिक पदोंकर जो विशेष्य स्त्रीदारा-दिरूप जिसप्रकार प्रस्तुत अर्थात् सगतहो तिसीप्रकार गुणद्रव्यक्रियायुक्त शब्द उस वि-

शेष्यके भेदक अर्थात् विशेषण होतेहैं. भाव यह है कि जैसे विशेष्यशब्दके लिंगवचन हो, तैसेही विशेषणशब्दके लिंगवचन होतेहैं. जैसे [सुकृतिनी स्त्री—सुकृतिनो दाराः—सुकृति कुलम्] यह गुणयुक्तका उदाहरणहै—[दण्डिनी स्त्री—दण्डिनोदाराः—दण्डि कुलम्] यह द्रव्ययुक्तका उदाहरण है [पाचिका स्त्री—पाचका दाराः—पाचकं कुलम्] ॥ २ ॥ सुकृतिन् पुण्यवत् धन्य यह तीन नाम भाग्यसंपन्नके हैं. महेच्छ महाशय यह दो नाम उदारचित्तवाले दयायुक्तके हैं. हृदयालु सुहृदय यह दो नाम शुभचित्तवालेके हैं. महोत्साह महोद्यम यह दो नाम बड़े उद्यमवालेके हैं ॥ ३ ॥

प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः ॥ वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि ॥ ४ ॥ पूज्यः प्रतीक्ष्यः सांशयिकः संशयापन्नमानसः ॥ दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि ॥ ५ ॥

प्रवीण निपुण अभिज्ञ विज्ञ निष्णात शिक्षित वैज्ञानिक कृतमुख कृतिन् कुशल यह दश नाम प्रवीण अर्थात् ज्ञाताके हैं ॥ ४ ॥ पूज्य प्रतीक्ष्य यह दो नाम पूजने योग्यके हैं. सांशयिक संशयापन्नमानस यह दो नाम संदेहयुक्त चित्तवालेके हैं. दक्षिणीय दक्षिणार्ह दक्षिण्य यह तीन नाम दक्षिणाके योग्यके हैं ॥ ५ ॥

स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा बहुप्रदे ॥ जैवातृकः स्यादायुष्मानन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥ ६ ॥ परीक्षकः कारणिको वरदस्तु समर्थकः ॥ हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना हृष्टमानसः ॥ ७ ॥

वदान्य स्थूललक्ष्य दानशौण्ड बहुप्रद यह चार नाम उसके हैं, जो कि दान देनेमें शूर होताहै. जैवातृक आयुष्मत् यह दो नाम बड़ी अवस्थावालेके हैं. अन्तर्वाणि शास्त्रवित् यह दो नाम शास्त्रके जाननेवालेके हैं ॥ ६ ॥ परीक्षक कारणिक यह दो नाम प्रमाणोंकर अर्थके निश्चय करनेवालेके हैं. इसको पारखी कहते हैं वरद समर्थक यह दो नाम वर देनेवालेके हैं. हर्षमाण विकुर्वाण प्रमनस् हृष्टमानस यह चार नाम प्रसन्नचित्तवालेके हैं ॥ ७ ॥

दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मनाः ॥ दक्षिणे सरलोदारौ सुकलोदातृभोक्तरि ॥ ८ ॥ तत्परे प्रसितासक्ताविटार्थोद्युक्त उत्सुकः ॥ प्रनीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञादविश्रुताः ॥ ९ ॥

दुर्मनस् विमनस् अन्तर्मनस् यह तीन नाम व्याकुलचित्तवालेके हैं. उत्क उन्मनस् यह दो नाम उत्कंठितके हैं. दक्षिण सरल उदार यह तीन नाम उदारके हैं. और जो देनेवाला है और वहही भोगनेवाला है उसमें सुकल शब्द वर्त्त है. अर्थात् यह एक

नाम दाताभोक्ताका है ॥ ८ ॥ तत्पर प्रसित
आसक्त यह तीन नाम तात्पर्ययुक्तके है। इ-
ष्टार्थोद्युक्त उत्सुक यह दो नाम चोहेहुए
अर्थमें उद्योग करनेवालेके है प्रतीत प्रथित
ख्यात वित्त विज्ञात विश्रुत यह छै नाम
प्रसिद्ध अर्थात् विख्यातके है ॥ ९ ॥

गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणाहवलक्ष-
णौ ॥ इक्ष्य आढ्यो वनी स्वामी
त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥ १० ॥ अ-
धिभूनायको नेता प्रभुः परिवृढोऽ-
धिपः ॥ अधिकार्द्धिः समृद्धः स्या-
त्कुटुम्बव्यापृतस्तु यः ॥ ११ ॥
स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पु-
मानयम् ॥ वराङ्गरूपोपेतो यः सिंह-
संहननो हि सः ॥ १२ ॥

और जो कि गुणशौर्यादिकोंकर वि-
ख्यात है उसमें कृतलक्षण आहवलक्षण यह
दो नाम वर्त्ते है इक्ष्य आढ्य वनी यह
तीन नाम वनवालेके है स्वामिन् ईश्वर पति
ईशित ॥ १० ॥ अधिभू नायक नेतृ प्रभु
परिवृढ अधिप यह दश नाम स्वामीके है
इसकों गालिक कहेवैहै। अधिकार्द्धि समृद्ध
यह दो नाम सुसंपन्न अर्थात् भरेपूरेके है
कुटुम्बव्यापृत ॥ ११ ॥ अभ्यागारिक उ-
पाधि यह तीन नाम कुटुम्बपोषणादिक व्या-
पारयुक्तके है तिसमें यह उपाधिगण्ड नि-
त्यही पुलिग है और जो उत्तम अग और
रूपसे युक्त है वह सिंहसंहनन सन्निकहे ॥ १२ ॥

निर्वार्यः कार्यकर्ता यः संपन्नः सर्व-
सपदा ॥ अवाचि मूकोऽथ मनोज-
वसः पितृसन्निभः ॥ १३ ॥ सत्कृ-
त्यालंकृतां कन्यां यो ददाति स
कूकुदः ॥ लक्ष्मीर्वाल्लक्ष्मणः श्रीलः
श्रीमान् स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १४ ॥

और जो सत्वसपदा अर्थात् दुःखमें नहीं
चलायमान होनेवाले मनरूप संपत्तिकर स-
पन्नहुआ कार्य करताहै वह निर्वार्य सन्निक
है अवाच् मूक यह दो नाम उसके है जो
कि बोलनेकों समर्थ नहीं है मनोजवस पि-
तृसन्निभ यह दो नाम उसके है जो कि
पिताकेतुल्य हो ॥ १३ ॥ वरकेअर्थ स-
त्कारकरके जो अलंकृतकन्याको देताहै वह
कूकुद सन्निक है लक्ष्मीवत् लक्ष्मण श्रील
श्रीमत् यह चार नाम लक्ष्मीवानके हैं स्निग्ध
वत्सल यह दो नाम पुत्रादिकोंकेविषे प्रेमयु-
क्तवालेके है ॥ १४ ॥

स्यादपालुः कारुणिकः कृपालु सू-
रत समा ॥ स्वतन्त्रोऽप्यावृतः स्वैरी
स्वच्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥ प-
रतन्त्र पराधीन परवान्नाथवान-
पि ॥ अधीनो नित्र आयत्तोऽस्वच्छ-
न्दो गृहकोऽप्यसौ ॥ १६ ॥

१ यहा स्मृतिसँ सत्यका लक्षण लिखतेहै—
व्यसने भ्रुण्ये चापि ह्यदिराग सता मा तस-
त्तमिनि च प्रोक्त नपविद्विगुणे क्रियेति ॥ १ ॥

दयालु कारुणिक कृपालु सूरत यह चार नाम दयावालेके हैं. यह चारो शब्द समानार्थ हैं. स्वतंत्र अपावृत स्वैरिन् स्वच्छन्द निरवग्रह यह पांच नाम स्वेच्छाचारीके हैं ॥ १५ ॥ परतंत्र पराधीन परवत् नाथवत् यह चार नाम पराधीनके हैं. अधीन निघ्न आयत्त अस्वच्छन्द गृह्यक यह पांच नाम आधीनमात्रके हैं ॥ १६ ॥

खलपूः स्याद्बहुकरो दीर्घसूत्रश्चिर-
क्रियः ॥ जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्या-
त्कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ॥ १७ ॥
कर्मक्षमोऽलंकर्मीणः क्रियावान्कर्म-
सूद्यतः ॥ स कर्मः कर्मशीलो यः
कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥ १८ ॥

खलपू बहुकर यह दो नाम संमार्जना-
दिक कर्म करनेवालेके हैं इसको झाड़ू देने-
वालाभी कहतेहैं. दीर्घसूत्र चिरक्रिय यह दो
नाम उसके हैं जो कि थोड़ीदेरमें होनेवाले
कार्यको बहुत देरमें करताहै. जाल्म अस-
मीक्ष्यकारिन् यह दो नाम उसके हैं जो
कि गुणदोषोंको न विचारकरके कार्य करता
है और जो कि क्रियाओंके विषे मंद अ-
र्थात् आलसी वा मूर्ख है वह कुंठ संज्ञिक
है ॥ १७ ॥ कर्मक्षम अलंकर्मीण यह दो
नाम कार्यमें सामर्थ्यवान् पुरुषके हैं. और
जो कि कार्यमें उद्युक्त अर्थात् उद्योगी र-
हताहै वह क्रियावत् संज्ञिक है. कर्म कर्म-
शील यह दो नाम सदाहीन कार्यमें प्रवृत्त

रहनेवालेके हैं. कर्मशूर कर्मठ यह दो नाम
उसके हैं जो कि आरम्भ कियेहुए कर्मको
प्रयत्नसे समाप्त करताहै ॥ १८ ॥

भरण्यभुक्कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रि-
यः ॥ अपस्नातो मृतस्नात आमि-
षाशी तु शौष्कुलः ॥ १९ ॥ बुभु-
क्षितः स्यात्क्षुधितो जिवत्सुरशना-
यितः ॥ परान्नः परपिण्डादो भक्षको
वस्मरोऽन्नरः ॥ २० ॥

भरण्यभुज् कर्मकर यह दो नाम उसके
हैं जो कि मजूरी लेकर कार्य करताहै. त-
त्क्रिय अर्थात् वह कर्मही है क्रिया जिसकी
ऐसा जो पुरुष है वह कर्मकार संज्ञिक है
अर्थात् यह एक नाम उसका है जो कि
विनाही मजूरीके कार्यमें उद्योगी रहता है
अपस्नात मृतस्नात यह दो नाम उसके हैं
जिसनेकि मृतको उद्देशकरके स्नान कि-
याहै आमिषाशिन शौष्कुल यह दो नाम
मछलीका मांस खानेवालेके हैं ॥ १९ ॥
बुभुक्षित क्षुधित जिवत्सु अशनायित यह
चार नाम भूखेके हैं परान्न परपिण्डाद यह
दो नाम पराये अन्नसें जीवनेवालेके हैं. भ-
क्षक वस्मर अन्नर यह तीन नाम खाने
वालेके हैं ॥ २० ॥

आद्यूनः स्यादौदरिको विजीगीषा-
विवर्जिते ॥ उभौ त्वात्मभरिः कुक्षि-
भरिः स्वोदरपूरके ॥ २१ ॥ सर्वा-
न्जीनस्तु सर्वान्नभोजी गृध्रस्तु गर्ध-

नः ॥ लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक् समौ
लोलुपलोलुभौ ॥ २२ ॥

आयून औदरिक यह दो नाम जीवनेकी
इच्छासें वर्जितमें वर्त्ते है अर्थात् यह दो नाम
भूखकर अत्यंत पीडितके है और जो कि
अपने पेटके भरनेवाला है उसमें आत्मभरि
कुक्षिभरि यह दो नाम वर्त्ते है ॥ २१ ॥
सर्वान्नीन सर्वान्नभोजिन यह दो नाम सब
वर्णोंके अन्न खानेवाले परमहंसादिकके हैं
गृध्र गर्धन यह दो नाम आकाशाशोकके है
लुब्ध अभिलाषुक तृष्णज् यह तीन नाम
अभिलाषवालेके हैं लोलुप लोलुभ यह दो
नाम अतितृष्णावालेके हैं ॥ २२ ॥

सोन्मादस्तून्मदिष्णुः स्यादविनीतः
समुद्धतः ॥ मत्ते शौण्डोत्कटशीवाः
कामुके कमिताऽनुक ॥ २३ ॥
कम्प, कामयिताऽभीक, कम्पनः का-
मनोऽभिकः ॥ विधेयो विनयग्राही
वचने स्थित आश्रयः ॥ २४ ॥

सोन्माद उन्मदिष्णु यह दो नाम उन्मा-
दवालेके हैं इसको सिरिवावलाभी कहतेहैं
अविनीत समुद्धत यह दो नाम दुर्विनीतके
है इसको अयायी कहतेहैं मत्त शौण्ड उ-
त्कट शीत यह चार नाम मतवालेके है
कामुक कमित् अनुक ॥ २३ ॥ कम्प काम-
यित् अभीक कम्पन कामन अभिक यह नौ
नाम कामोंके है विधेय विनयग्राहिन् वच-
नेस्थित आश्रय यह चार नाम वचन ग्रह-

ण करनेवालेके है इसको आज्ञाकारी कहते
है ॥ २४ ॥

वश्यः प्रणेयो निभृतविनीतप्रश्रिताः
समाः ॥ धृष्टे भृष्णवियातश्च प्रग-
ल्भः प्रतिभान्विते ॥ २५ ॥ स्यादधृष्टे
तु शालीनो विलक्षो विस्मयान्विते ॥
अधीरे कातरस्त्रस्ते भीरुभीरुकभी-
लुकाः ॥ २६ ॥

वश्य प्रणेय यह दो नाम वशीभूतके है
निभृत विनीत प्रश्रित यह तीन नाम विनी-
तके है धृष्ट धृष्णज् वियात यह तीन नाम
अविनीतके है प्रगल्भ प्रतिभान्वित यह दो
नाम नवीन २ प्रकट होनेवाली बुद्धियुक्तके
हैं इसको प्रगल्भ कहतेहैं ॥ २५ ॥ अधृष्ट
शालीन यह दो नाम सलज्जके है विलक्ष
विस्मयान्वित यह दो नाम पराये धर्मशी-
लआदिककेविषैं अचरज माननेवालेके है
अधीर कातर यह दो नाम भय क्षुधा पि-
पासा आदिकसें व्याकुलहुएके है वस्त भीरु
भीरुक भीलुक यह चार नाम डरनेवालेके
है ॥ २६ ॥

आशंसुराशंसितरि गृहपालग्रहीतरि ॥
श्रद्धालु श्रद्धया युक्ते पतपालस्तु
पानुके ॥ २७ ॥ लज्जाशीलेऽपन्न-
पिष्णुर्नन्दाररभिवादके ॥ शरारु-
पांतुको हिल्लः स्यादधिष्णुस्तु व-
र्धनः ॥ २८ ॥

नाम निकालेहुएके हैं. अपध्वस्त धिक्कृत यह दो नाम फटकारेहुएके हैं ॥ ३९ ॥ आ-
तर्गर्व अभिभूत यह दो नाम दूर कियेहुए
गर्ववालेके हैं. कोई आचार्य निष्कासित आ-
दिक चारोंकों एकार्थ कहते हैं. दापित सा-
धित यह दो नाम धनादिकके दिवानेवालेके
हैं यह दोनों समानार्थ हैं. प्रत्यादिष्ट निरस्त
प्रत्याख्यात निराकृत यह चार नाम निरा-
कृतके हैं इसकों दूर कियाहुआभी कहते
हैं ॥ ४० ॥

निकृतः स्यादिप्रकृतो विप्रलब्धस्तु
वञ्चितः ॥ मनोहतः प्रतिहतः प्रति-
वद्धो हतश्च सः ॥ ४१ ॥ अधि-
क्षितः प्रतिक्षिप्तो वद्धे कीलितसंयतो ॥
आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात्कांदिशीको
भयद्रुतः ॥ ४२ ॥

निकृत विप्रकृत यह दो नाम अपकार
कियेहुएके हैं. विप्रलब्ध वंचित यह दो नाम
ठगेहुएके हैं मनोहत प्रतिहत प्रतिवद्ध हत
यह चार नाम मनमें ताडेहुएके हैं इसकों
टूटा मनवाला कहतेहैं ॥ ४१ ॥ अधिक्षिप्त
प्रतिक्षिप्त यह दो नाम निन्दा कियेहुए अथवा
दुर्वचन कहेहुएके हैं. वद्ध कीलित संयत
यह तीन नाम रस्सी आदिकसें बंधेहुएके हैं.
आपन्न आपत्प्राप्त यह दो नाम आपदाकों
प्राप्तहुएके हैं. कांदिशीक भयद्रुत यह दो
नाम भयसें भागेहुएके हैं ॥ ४२ ॥

आक्षारितः क्षारितोऽभिशस्ते संकसु-
कोऽस्थिरे ॥ व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ
विहस्तव्याकुलौ समौ ॥ ४३ ॥ वि-
कुर्वो विह्वलः स्यात्तु विवशोऽरिष्टदु-
दुष्टधीः ॥ कश्यः कशार्ह संनद्धे त्वा-
ततायी वधोद्यते ॥ ४४ ॥

आक्षारित क्षारित अभिशस्त यह तीन
नाम लोकनिन्दासें दूषितहुएके हैं. संकसुक
अस्थिर यह दो नाम चलायमानप्रकृतिवालेके
हैं. व्यसनार्त उपरक्त यह दो नाम दुःखसें
पीडितहुएके हैं. विहस्त व्याकुल यह दो नाम
व्याकुलके हैं ॥ ४३ ॥ विक्लव विह्वल यह
दो नाम शोकादिकसें शरीरभंगकों प्राप्तहु-
एके हैं. विवश अरिष्टदुष्टधी यह दो नाम
उसकेहैं जिसकी समीपवर्त्तमानहुए मृत्युसें
बुद्धि दूषित होजातीहै. कश्य कशार्ह यह दो
नाम कुरा मारनेयोग्यके हैं. जो सन्नद्ध अ-
र्थात् कवच पहरेकर मारनेमें उद्यत हो उसमें
आततायिन शब्द वर्त्ते है ॥ ४४ ॥

द्वेष्ट्ये त्वक्षिगतो वध्यः शीर्षच्छेद्य
इमौ समौ ॥ विष्यो विषेण यो व-
ध्यो मुसल्यो मुसलेन यः ॥ ४५ ॥
शिश्निदानोऽकृष्णकर्मा चपलश्चि-
कुरः समौ ॥ दोषैकदृक् पुरोभागी
निकृतस्त्वनृजुः शठः ॥ ४६ ॥

द्वेष्ट्य अक्षिगत यह दो नाम वैरके यो-
ग्यके हैं. वध्य शीर्षच्छेद्य यह दो नाम वध-
के योग्यके हैं यह दोनों शब्द समानार्थ हैं.

जो कि विपकर मारनेयोग्य है वह विष्य सन्निक है और जो मुसलकर मारनेयोग्य है वह मुसन्न्य सन्निक है ॥ ४५ ॥ शि-
श्विदान अलुपणकर्मन् यह दो नाम पुण्य-
कर्मवालेके है इसकों पुण्यात्माभी कहतेहैं
चपल चिकुर यह दो नाम उसके हैं जो
विना विचारेंही शीघ्र वधादिक कार्य करता
है यह दोनों शब्द समानार्थ हैं दोषैकदृश्
पुरोभाग्निर यह दो नाम दोषमात्रही देखने-
वालेके है निरुत अनृजु शठ यह तीन
नाम उसके है जिसका कि अन्तःकरण
ढेढा रहता है इसकों शठ (कपटी) भी
कहतेहैं ॥ ४६ ॥

कर्णेजपः सूचकः स्यात्पिशुनो दु-
र्जनः खलः ॥ नृशतो घातुकः क्रूरः
पापो धूर्तस्तु वञ्चकः ॥ ४७ ॥ अज्ञे
मूढपथाजातमूर्खवैधेयवालिशाः ॥ क-
दपे दृपणक्षुद्राकिपचानमितपचा ४८

कर्णेजप सूचक यह दो नाम कानमें
पराईनिन्दा कहनेवालेके है इसकों चुगल
कहतेहैं पिशुन दुर्जन खल यह तीन नाम
आपसमें भेद करनेवालेके है इसकों दुर्जन
कहतेहैं नृशस घातुक क्रूर पाप यह चार
नाम दूसरेसें झोह करनेवालेके है इसकों क्रूर
कहतेहैं धूर्त वचक यह दो नाम ठगनेवालेके
हैं ॥ ४७ ॥ अन मूढ यथाजात मूर्ख वै-
धेय वालिश यह छे नाम मूर्खके हैं कदपं
दृपण क्षुद्र किपचान मितपच यह पाच

नाम उसकेहैं जो कि अपने स्त्री पुत्रादि-
कोंको पीडित करताहुआ लोभसें धनकों
इकठा करताहै इसकों कजूप कहतेहैं ॥ ४८ ॥

निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्ग-
तोऽपि सः ॥ वनीयको याचनको
मार्गणो याचकार्थिनौ ॥ ४९ ॥
अहकारवानहंयुः शुभंयुस्तु शुभा-
न्वितः ॥ दिव्योपपादुका देवा नृग-
वाद्या जरायुजाः ॥ ५० ॥

नि स्व दुर्विध दीन दरिद्र दुर्गत यह
पाच नाम दरिद्रीके है वनीयक याचनक
मार्गण याचक अर्थिन यह पाच नाम या-
चकके है ॥ ४९ ॥ अहकारवत् अहयु यह
दो नाम अहकारवालेके है शुभयु शुभा-
न्वित यह दो नाम शुभयुक्तके है और जो
कि देव अर्थात् मातापितादिक दृष्टकारणकी
नहीं अपेक्षा करनेवाले है वह दिव्योपपादुक
सन्निक है अर्थात् यह एक नाम देवजा-
तियोंका है और जो कि नृगवादिक (नर
गौ अश्ववादिक) जाति है वह जरायुज स-
न्निक हैं ॥ ५० ॥

स्वेदजाः हृमिदंशायाः पक्षिसर्पाद-
योऽण्डजाः ॥ उद्भिदस्तरुगुल्माद्या
उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ ५१ ॥ सु-
न्दर रुचिरं पारु सुपमं साधु शो-
भनम् ॥ कान्तं मनोरम रुच्य म-
नोज्ञं मन्त्रु मन्त्रुलम् ॥ ५२ ॥

१ (इतिनागिर्ग) यह और गुप्त कौमें विशेष है

और जो कि कृमि दंशादिक (कीडा डांस आदिक) जाति हैं वह स्वेदज संज्ञिक हैं. और जो कि पक्षी सर्पादिकजाति हैं वह अंडज संज्ञिक हैं. और जो कि तरुगुल्मादिक वृक्ष गुच्छा वेलि आदिक हैं वह उद्भिद् संज्ञिक हैं. उद्भिद् उद्भिज्ज उद्भिद यह तीन नाम वृक्षादिक जातिमात्रके हैं ॥५१॥ सुंदर रुचिर चारु सुषम साधु शोभन कान्त मनोरम रुच्य मनोज्ञ मंजु मंजुल यह वारह नाम सुन्दरके हैं ॥ ५२ ॥

तदासेचनकं तृतेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् ॥ अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम् ॥५३॥ निरुद्धप्रतिरुद्धावरेफयाप्यावमाधमाः ॥ कुपूयकुत्सितावद्यखेटगर्हाणकाः समाः ॥५४॥

जिसके दर्शनसे दृष्टि तथा मनकी तृप्तिका अन्त नहीं होताहै वह आसेचनक संज्ञिक है. अभीष्ट अभीप्सित हृद्य दयित वल्लभ प्रिय यह छै नाम प्यारेके हैं ॥५३॥ निरुद्ध प्रतिरुद्ध अवन् रेफ याप्य अवम अधम कुपूय कुत्सित अवद्य खेट गर्ह अणक यह तेरह नाम अधम अर्थात् नीचके हैं यह सब समानार्थ हैं ॥ ५४ ॥

मलीमसं तु मलिनं कच्चरं मलदूषितम् ॥ पूतं पवित्रं मेध्यं च वीध्रं तु विमलार्थकम् ॥ ५५ ॥ निर्णिकं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ॥

असारं फल्गुशून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके ॥ ५६ ॥

मलीमस मलिन कच्चर मलदूषित यह चार नाम मलीनके हैं. पूत पवित्र मेध्य यह तीन नाम पवित्रके हैं. वीध्र यह एक नाम विमलार्थक है अर्थात् यह एक नाम स्वभावनिर्मलका है ॥ ५५ ॥ निर्णिक शोधित मृष्ट निःशोध्य अनवस्कर यह पांच नाम दूर कियेहुए मलवालेके हैं. असार फल्गु यह दो नाम निर्वलके हैं. शून्य वशिक तुच्छ रिक्तक यह चार नाम उसके हैं जिसकेपास कुछभी न हो इसको तुच्छभी कहतेहैं ॥ ५६ ॥

कृत्रिमे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमाः ॥ मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवर्होऽनवराध्यवत् ॥ ५७ ॥ पराध्यग्रप्राग्रहरप्राड्याग्र्याग्रीयमग्रियम् ॥ श्रेयान् श्रेष्ठः पुष्कलः स्पात्सत्तमश्चातिशोभने ॥ ५८ ॥

प्रधान प्रमुख प्रवेक अनुत्तम उत्तम मुख्य वर्य वरेण्य प्रवर्ह अनवरार्ध्य ॥ ५७ ॥ परार्ध्य अग्र प्राग्रहर प्राड्य अग्र्य अग्रोय अग्रिय यह सत्तरह नाम प्रधानके हैं इसको मुखिया कहतेहैं. तिसमें प्रधान शब्द नपुंसकलिंगमें सदैव होताहै. श्रेयस् श्रेष्ठ पुष्कल सत्तम अतिशोभन यह पांच नाम श्रेष्ठके हैं ॥ ५८ ॥

स्फुत्तरपदं व्याघ्रपुंगवर्षभकुञ्जराः ॥
 सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थ-
 गोचराः ॥ ५९ ॥ अप्राप्यं द्व्यहीने
 द्वे अप्रधानोपसर्जने ॥ विशङ्कटं
 पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत् ॥ ६० ॥
 वङ्गोरु विपुलं पीनपीन्वी तु स्थूलपी-
 वरे ॥ स्तोकाल्पक्षुल्लकाः सूक्ष्मं श्लक्ष्णं
 दध्नं कृशतनु ॥ ६१ ॥ स्त्रिया
 मात्रा नुटि, पुंसि लवलेशकणाण-
 वः ॥ अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनी-
 योऽणीय इत्यपि ॥ ६२ ॥

यदि व्याघ्र पुगव ऋषभ कुञ्जर सिंह
 शार्दूल नाग आदिशब्दों से सोमादिक शब्द
 उत्तरपदमें श्रेष्ठार्थगोचर, अर्थात् श्रेष्ठार्थ-
 वाचक हों, तो पुलिगमें होते हैं जैसे [पुरुष-
 व्याघ्र-पुरुषश्रेष्ठ.] ॥ ५९ ॥ अप्राप्य अ-
 प्रधान उपसर्जन यह तीन नाम अप्रधानके
 हैं तिसमें अप्रधान उपसर्जन यह दो शब्द
 दोनों स्त्रीपुलिगमें वर्जित हैं किन्तु नपुमक-
 लिगमें ही होते हैं विशङ्कट पृथु बृहत् विशाल
 पृथुल महत् ॥ ६० ॥ वङ्ग उरु विपुल यह
 नौ नाम उड़ेके हैं पीन पीन स्थूल पीवर
 यह चार नाम मोड़ेके हैं स्तोक अल्प क्षु-
 ल्लक यह तीन नाम थोड़ेके हैं सूक्ष्म श्लक्ष्ण
 दध्न कृश तनु ॥ ६१ ॥ मात्रा नुटि त्य
 लेग कण अणु यह ग्यारह नाम सट्मके
 हैं निममे मात्रा ओर नुटिगन्द स्त्रीलिगमें
 होते हैं और त्वादिक् चार शब्द पुलिगमें

होते हैं अल्पिष्ठ अल्पीयस् कनीयस् अणी-
 यस् यह चार नाम अत्यल्प अर्थात् अति
 थोड़ेमें वर्ते हैं ॥ ६२ ॥

प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदध्नं बहुल बहु ॥
 पुरुहः पुरु भूयिष्ठ स्फारं भूयश्च
 भूरि च ॥ ६३ ॥ परश्वाद्यास्ते
 येषां परा सख्या शतादिकात् ॥
 गणनीये तु गणेर्यं संख्याते गणित
 मथ समं सर्वम् ॥ ६४ ॥ विश्वम-
 शेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि
 निःशेषम् ॥ समग्रं सकलं पूर्णमख-
 ण्ड स्यादनूनके ॥ ६५ ॥

प्रभूत प्रचुर प्राज्य अदध्न बहुल बहु
 पुरुह पुरु भूयिष्ठ स्फार भूयस् भूरि यह
 बारह नाम उहुते हैं ॥ ६३ ॥ जिन स-
 ख्यायोग्योंकी सख्या शतादिकों से आदिश-
 ब्दों से सहस्रों पर हो, तो वह पर गत वा
 दिशब्दों से पर सहस्र सन्निक है भान यह है
 कि, जिनकी सख्या सोसे अधिक हो, वह
 पर गत सन्निक है और जिनकी सख्या
 सहस्रों से अधिक हो, वह पर सहस्र सन्निक
 है गणनीय गणेर्य यह दो नाम उसके हैं, जो
 कि गिननेकों योग्य हो सख्यात गणित यह
 दो नाम उसके हैं जिसकी गिती करनी हो
 सम सम ॥ ६४ ॥ विश्व अग्रोप टन्म न-
 म्न निखिल अखिल नि शेष समग्र उरुट
 पूर्ण अग्रट जाताक यह ग्यारह नाम सम-
 ग्रों के हैं ॥ ६५ ॥

घनं निरन्तरं सान्द्रं पेलवं विरलं
तनु ॥ समीपे निकटसन्नसन्निकट-
सनीडवत् ॥ ६६ ॥ सदेशाभ्याशस-
विधसमर्थादसवेशवत् ॥ उपकण्ठा-
न्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अव्यभितोऽव्य-
यम् ॥ ६७ ॥

घन निरन्तर सान्द्र यह तीन नाम घ-
नेके हैं. पेलव विरल तनु यह तीन नाम वि-
रलेके हैं. समीप निकट आसन्न सन्निकट
सनीड ॥ ६६ ॥ सदेश अभ्याश सविध
समर्थाद सवेश उपकंठ अन्तिक अभ्यर्ण
अभ्यग्रा अभितः यह पन्दरह नाम समीपके
हैं. तिसमें अभितःशब्द अव्यय है ॥ ६७ ॥

संसक्ते त्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि ॥
नेदिष्ठमन्तिकतमं स्यादूरं विप्रकृष्ट-
कम् ॥ ६८ ॥ दवीयश्च दविष्ठं च
सुदूरं दीर्घमायतम् ॥ वर्तुलं निस्तुलं
वृत्तं बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ६९ ॥

संसक्त अव्यवहित अपदान्तर यह तीन
नाम उसमिले हुएके हैं, जिसके मिलनेमें कुछ
अन्तर न हो. नेदिष्ठ अन्तिकतम यह दो
नाम अतिनिकटके हैं. दूर विप्रकृष्ट यह दो
नाम दूरके हैं ॥ ६८ ॥ दवीयस् दविष्ठ सुदूर यह
तीन नाम अत्यन्त दूरके हैं. दीर्घ आयत
यह दो नाम दीर्घके हैं. वर्तुल निस्तुल वृत्त
यह तीन नाम गोलके हैं. और जो कि
उन्नतानत अर्थात् स्वभावसे ऊंचा और

उपाधिवशसे कुछ नीचा हो वह बन्धुर
संज्ञिक है ॥ ६९ ॥

उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गेऽथ वा-
मने ॥ न्यङ्नीचस्वर्वह्रस्वाः स्युरवा-
ग्रेऽवनतानतम् ॥ ७० ॥ अरालं वृ-
जिनं जिह्वमूर्मिमत्कुञ्चितं नतम् ॥
आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेलितं वक्र-
मित्यपि ॥ ७१ ॥

उच्च प्रांशु उन्नत उदग्र उच्छ्रित तुंग
यह छै नाम ऊंचेके हैं. वामन न्यच् नीच
स्वर्व ह्रस्व यह पांच नाम ह्रस्वके हैं. अवाग्र
अवनत आनत यह तीन नाम नये हुएके हैं
॥ ७० ॥ अराल वृजिन जिह्व ऊर्मिमत्
कुञ्चित नत आविद्ध कुटिल भुग्न वेलित वक्र-
यह ग्यारह नाम टेढेके हैं ॥ ७१ ॥

ऋजावजिह्वप्रगुणौ व्यस्ते त्वप्रगुणा-
कुलौ ॥ शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदा-
तनसनातनाः ॥ ७२ ॥ स्थास्नुः
स्थिरतरः स्थेयानेकरूपतया तु यः ॥
कालव्यापी स कूटस्थः स्थावरो ज-
ङ्गमेतरः ॥ ७३ ॥

ऋजु अजिह्व प्रगुण यह तीन नाम
सीधेके हैं. व्यस्त अप्रगुण आकुल यह तीन
नाम आकुलके हैं. शाश्वत ध्रुव नित्य सदा-
तन सनातन यह पांच नाम नित्यके हैं
॥ ७२ ॥ स्थास्नु स्थिरतर स्थेयस् यह
तीन नाम अतिस्थिरके हैं. और जो एक-
रूपता अर्थात् एकही स्वभाव कर कालका

व्याप्त करनेवाला है, वह कूटस्थ सन्निक है
स्थावर जगमेतर यह दो नाम अचरके
है ॥ ७३ ॥

चरिष्णु जङ्गमचरं व्रसमिङ्गं चरा-
चरम् ॥ चलन कम्पनं कम्पं चलं
लोलं चलाचलम् ॥ ७४ ॥ चञ्चल
तरलं चन पारिप्लवपरिप्लवे ॥ अति-
रिक्तः समधिको दृढसधिस्तु संहतः ७५

चरिष्णु जगम चर व्रस इग चराचर
यह छे नाम चरके है चलन कपन कम
यह तीन नाम काँपनेवालेके है चल लोल
चलाचल ॥ ७४ ॥ चञ्चल तरल पारिप्लव
परिप्लव यह सात नाम चलनेवालेके है अति-
रिक्त समधिक यह दो नाम अधिकदूरके
है दृढसन्धि संहत यह दो नाम दृढपूर्वक जु-
टेहुएके है ॥ ७५ ॥

कर्मण कठिनं कुरं कठोर निष्ठुर द-
टम् ॥ जड इ मूर्तिमन्मूर्त प्रवृद्ध शीट-
मेधितम् ॥ ७६ ॥ पुगणे मतनम-
वपुगातनमिगतना ॥ मत्पयोऽभि-
नयो नव्यो नवीनो नूतनो नय ॥ ७७ ॥
नूतन सुकुमार नु कोमलं मृदुल मृ-
दु ॥ अन्तर्गन्ततमनुगे नूतनं शीघ्र
मध्यमम् ॥ ७८ ॥

कर्मण कठिन कठोर निष्ठुर द-
टम् ॥ जड इ मूर्तिमन्मूर्त प्रवृद्ध शीट-
मेधितम् ॥ ७६ ॥ पुगणे मतनम-
वपुगातनमिगतना ॥ मत्पयोऽभि-
नयो नव्यो नवीनो नूतनो नय ॥ ७७ ॥
नूतन सुकुमार नु कोमलं मृदुल मृ-
दु ॥ अन्तर्गन्ततमनुगे नूतनं शीघ्र
मध्यमम् ॥ ७८ ॥

मतन मल पुरातन चिरतन यह पाच नाम
पुरानेके है मत्पय अभिनव नव्य नवीन
नूतन नय ॥ ७७ ॥ नूल यह सात नाम
नवीनके है सुकुमार कोमल मृदुल यह तीन
नाम कोमलके है अवक् अवक्ष अनुग
यह तीन नाम पीछेके हैं यह तीनों
अव्ययीभाव होनेसे नपुंसक तथा अव्यय
है ॥ ७८ ॥

मत्पय स्यादेन्द्रियकममत्पयमतीन्द्रि-
यम् ॥ एतन्नानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्र-
कायनावपि ॥ ७९ ॥ अप्येषमगं
एकाग्रोऽप्येषापनगतोऽपि सः ॥
पुस्पादिः पुर्वपीरस्त्यमथमाया अथा-
न्त्रिपाम् ॥ ८० ॥ अन्तो जपन्य
चरममन्यपाथाप्यपश्चिमा ॥ मोष
निरर्थक स्पष्टं स्फुट मध्यममुल्लवणम् ८१

मत्पयेंद्रियक यह दो नाम नेमात्रितो
नामनेके है अमत्पय अतीन्द्रिय यह दो
नाम जगहे है आ त्रिपेसादिनेके नामने ।
है ॥ एतन्नान आत्मवृत्ति एकाग्र एताप्य
॥ ७९ ॥ एतन्नान एकाग्र एकाग्रतय
यह मात नाम एताप्ये है आत्ति पुन पीरस्त्य
मथम आया यह चरि नाम आत्ति है
त्रिपाम आदिजन्त पुनिये है एताप्य
अन्य एतन्नान एताप्य मत्पयि यह छे
मत्पय अनेके है त्रिपय आत्ति एताप्य
एतन्नान पुनिये है एताप्य एताप्य
यह मात नाम एताप्ये है आत्ति पुन पीरस्त्य
मथम आया यह चरि नाम आत्ति है

प्रव्यक्त उत्पन्न यह चार नाम स्पष्टके हैं

॥ ८० ॥ ८१ ॥

साधारणं तु सामान्यमेकाकी त्वेक
एककः ॥ भिन्नार्थका अन्यतर ए-
कस्त्वोऽन्येतरावपि ॥ ८२ ॥ उच्चा-
वचं नैकभेदमुच्चण्डमविलम्बितम् ॥
अरुंतुदं तु मर्मस्पृगवाधं तु निर्ग-
लम् ॥ ८३ ॥

साधारण सामान्य यह दो नाम साधारणके
हैं. एकाकिन् एक एकक यह तीन नाम अके-
लेके हैं. भिन्न अन्यतर एक त्व अन्येतर
यह छै नाम भिन्नार्थवाचक हैं ॥ ८२ ॥

उच्चावच नैकभेद यह दो नाम अनेकप्रका-
रके हैं. उच्चंड अवलम्बित यह दो नाम
जल्दीके हैं. अरुंतुद मर्मस्पृश यह दो नाम
मर्मस्थल भेदन करनेवालेके हैं. अवाध निर्गल
यह दो नाम बाधवर्जितके हैं ॥ ८३ ॥

प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्टु च ॥
वायं शरीरं सव्यं स्यादपसव्यं तु द-
क्षिणम् ॥ ८४ ॥ संकटं ना तु सं-
वाधः कलिलं गहनं समे ॥ संकीर्णं
संकुलाकीर्णं मुण्डितं परिवापितम् ॥ ८५ ॥

प्रसव्य प्रतिकूल अपसव्य अपष्टु यह चार
नाम विपरीतके हैं. इसको उलटा कहते हैं
और जो कि बायाँ शरीर है वह सव्य
संज्ञिक है. और जो कि, दायाँ शरीर है, वह
अपसव्य संज्ञिक है ॥ ८४ ॥ संकट संवाध
यह दो नाम थोड़े अवकाशवाले मार्गादि-

कके हैं. तिसमें संवाधशब्द पुलिग है. कलिल
गहन यह दो नाम दुःखकरके प्राप्त होने-
योग्यके हैं. संकीर्ण संकुल आकीर्ण यह
तीन नाम मनुष्यादिकोंकर अत्यन्त मिलेहु-
एके हैं. मुंडित परिवापित यह दो नाम मुँड
हुएके हैं ॥ ८५ ॥

ग्रन्थितं संदितं दृढं विसृतं विस्तृतं
ततम् ॥ अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात्प्राप्त-
प्रणिहिते समे ॥ ८६ ॥ वेलितप्रे-
ङ्खिताधूतचलिताकम्पिता धुते ॥
नुत्तनुच्चारतनिष्ठचूता विद्धक्षितेरिताः
समाः ॥ ८७ ॥

ग्रन्थित संदित दृढ यह तीन नाम गुहे-
हुएके हैं. विसृत विस्तृत तत यह तीन नाम
फैलेहुएके हैं. अन्तर्गत विस्मृत यह दो नाम
भुलेहुएके हैं. प्राप्त प्रणिहित यह दोनों
समानार्थ नाम प्राप्त हुएके हैं ॥ ८६ ॥
वेलित प्रेङ्खित आधूत चलित आकम्पित धुत
यह छै नाम कोंपे हुएके हैं. नुत्त नुच्च अस्त
निष्ठचूत आविद्ध क्षित ईरित यह सात नाम
प्रेरणा किये हुएके हैं. यह सातों समानार्थ
हैं ॥ ८७ ॥

परिक्षिप्तं तु निवृतं मूषितं मुषितार्थ-
कम् ॥ प्रवृद्धप्रसृते न्यस्तनिसृष्टे गु-
णिताहते ॥ ८८ ॥ निदिग्धोपाचिते
गूढगुप्ते गुण्ठितरूपिते ॥ कुतावदीर्णे
उद्धूर्णोद्यते काचितशिक्षियते ॥ ८९ ॥

परिक्षिप्त निवृत यह दो नाम परकोटा
आदिककर सवतरफसे घेरेहुएके है मूषित
मुषित यह दो नाम चुरायेहुएके है प्रवृद्ध
प्रसृत यह दो नाम बढेहुए, तथा फैलेहुएके
न्यस्त निसृष्ट यह दो नाम रक्खेहुएके है
गुणित आहत यह दो नाम गुणैहुएके है
॥ ८८ ॥ निदिग्ध उपाचित यह दो नाम
समृद्धके है गूढ गुप्त यह दो नाम छिपेहु-
एके है गुठित रूपित यह दो नाम धूलिसँ
मनेहुएके है द्रुत अवदीर्ण यह दो नाम
भिद्येहुएके है उदूर्ण उद्यत यह दो नाम
उद्यतके है काचित शिक्वित यह दो नाम
छीकेपर रक्खे हुएके है ॥ ८९ ॥

प्राणघ्राते दिग्धलिप्ते समुदकोद्धृते
समे ॥ वेष्टितं स्यादलपित सवीतं
रुद्धमावृतम् ॥ ९० ॥ रुग्ण भुग्नेऽथ
निश्चितक्षणात्तातानि तेजिते ॥ स्पा-
दिनाशोन्मुखं पक्व ह्रीणह्रीतौ तु ल-
ज्जिते ॥ ९१ ॥

प्राण घ्रात यह दो नाम सूँघेहुएके है
दिग्ध लिप्त यह दो नाम विलेप कियेहुएके
है समुदक उद्धृत यह दो नाम क्पादिकसें
उसारेहुए जलादिकके है यह दोनों शब्द
समानार्थ है वेष्टित वलयित संगीत रुद्ध
आवृत यह पाच नाम लपेटे हुएके है ॥ ९० ॥
रुग्ण भुग यह दो नाम व्यथितके है निश्चित
क्षणात् तात तेजित यह चार नाम शानआ-
दिकसें पैनेकियेहुए शस्त्रादिकके है. और जो

कि विनाशके उन्मुख है, वह पक्व सज्जिक है
अर्थात् यह एकनाम उसका है, जिसका कि
विनाश थोड़े कालमें होनेवाला हो हीत लज्जित
यह तीन नाम लज्जितके है ॥ ९१ ॥

वृत्ते तु वृत्तव्यावृत्तौ संयोजित उपा-
हितः ॥ प्राप्य गम्यं समासाद्य स्पन्तं
रीणं स्तुतं स्तुतम् ॥ ९२ ॥ संगूढः
स्पात्संकलितोऽवगीतः स्थातगर्हणः ॥
विविधः स्पाद्बहुविधो नानारूपः पृ-
थग्विधः ॥ ९३ ॥

वृत्त-वृत्त व्यावृत्त यह तीन नाम वरण
कियेहुएके है संयोजित उपाहित यह दो
नाम संयोगकों प्राप्त हुएके है प्राप्य गम्य
समासाद्य यह तीन नाम प्राप्त होनेके यो-
ग्यके है स्पन्त रीण स्तुत स्तुत यह चार
नाम बहतेहुएके है ॥ ९२ ॥ संगूढ संकलित
यह दो नाम जाडेहुए अकादिकके है अव-
गीत स्थातगर्हण यह दो नाम निदितके हैं
विविध बहुविध नानारूप पृथग्विध यह
चार नाम बहुत तरहके है ॥ ९३ ॥

अवरीणो विकृष्टश्चाप्यवध्वस्तोऽव-
चूर्णितः ॥ अनायासकृतं फाण्टं स्व-
नितं ध्वनितं समे ॥ ९४ ॥ बद्धे
सदानितं मूतमदितं संदितं सितम् ॥
निष्पके कथितं पाके क्षीराज्यहविषा
शृतम् ॥ ९५ ॥

अवरीण विकृत यह दो नाम धिक्कार
कियेहुएके हैं. अवध्वस्त अवचूर्णित यह दो

पगतम् ॥ ईलितशस्तपणायितपना-
यितप्रणुतपणितपनितानि ॥ १०९ ॥
अपि गीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानि स्तु-
तार्थानि ॥ भक्षितचर्वितलीढप्रत्यव-
सितगिलितखादितप्सातम् ॥ ११० ॥
अभ्यवहतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ताशितं
भुक्ते ॥ क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थ-
विष्ठवंहिष्ठाः ॥ १११ ॥ क्षिप्रक्षुद्राभी-
प्सितपृथुपीवरबहुलप्रकर्षार्थाः ॥ सा-
धिष्ठद्राधिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठहसिष्ठवृन्दि-
ष्ठाः ॥ ११२ ॥ वाढव्यायतबहुगु-
रुवामनवृन्दारकातिशये ॥ ११३ ॥

बुद्ध बुधित मनित विदित प्रतिपन्न अव-
सित अवगत यह सात नाम जानेंहुएके हैं।
ऊरीकृत ऊररीकृत अंगीकृत आश्रुत प्रतिज्ञात
॥ १०८ ॥ संगीर्ण विदित संश्रुत समा-
हित उपश्रुत उपगत यह ग्यारह नाम
स्वीकार किये हुएके हैं। इसकों कबूल किया-
हुआभी कहतेहैं। ईलित शस्त पणायित पना-
यित प्रणुत पणित पनित ॥ १०९ ॥ गीर्ण
वर्णित अभिष्टुत ईडित स्तुत यह बारह नाम
स्तुति किये हुएके हैं। भक्षित चर्वित लीढ
प्रत्यवसित गिलित खादित प्सात ॥ ११० ॥
अभ्यवहत अन्न जग्ध ग्रस्त ग्लस्त अशित
भुक्त यह चौदह नाम स्थाये हुएके हैं। क्षेपिष्ठ
क्षोदिष्ठ प्रेष्ठ वरिष्ठ स्थविष्ठ वंहिष्ठ यह कमसें
निम्न क्षुद्र अभीप्सित पृथु पीवर बहुल
शब्दोंके अतिशयार्थ हैं। जैसें जोकि अतिश-

यकरकें क्षिप्रहै वह क्षेपिष्ठ संज्ञिक है। और
जोकि अतिशयकरकें क्षुद्रहै वह क्षोदिष्ठ
संज्ञिकहै। यहाँ प्रिय उरु स्थूल शब्दोंकी
जगह अभीप्सित पृथु पीवर शब्दोंका
आदेश एकार्थ होनेसे है जो कि अतिश-
यकरकें प्रिय है वह प्रेष्ठ संज्ञिक है। और
जो कि अतिशयकरकें उरु है वह वरिष्ठ
संज्ञिक है। और जो कि अतिशयकरकें
स्थूल है वह स्थविष्ठ संज्ञिक है। और जो
कि अतिशयकरकें बहुल है, वह वंहिष्ठ
संज्ञिक है। साधिष्ठ द्राधिष्ठ स्फेष्ठ गरिष्ठ
हसिष्ठ वृदिष्ठ यह कमसें वाढव्यायतबहुगु-
रुवामनवृन्दारकशब्दोंके अतिशय अर्थमें
वर्ते हैं। जैसें जो कि अतिशयकरकें वाढ है
वह साधिष्ठ संज्ञिक है। और जो कि अति-
शयकरकें दीर्घ है वह द्राधिष्ठ संज्ञिक है।
और जो कि अतिशयकरकें स्फिर है वह
स्फेष्ठ संज्ञिक है। और जो कि अतिशयकर-
कें गुरु है वह गरिष्ठ संज्ञिक है और जो
कि अतिशयकरकें ठस्य है वह हसिष्ठ
संज्ञिक है और जो कि अतिशयकरकें
वृन्दारके है वह वृन्दिष्ठ संज्ञिक है यहाँ
व्यायत बहु वामनशब्द कमसें दीर्घस्फिर
ह्रस्वशब्दोंके पर्याय हैं ॥ १११ ॥ ११२ ॥
॥ ११३ ॥ इतिविशेष्यनिघ्नवर्गः

१ शीघ्र. २ नीच. ३ व्याप्त. ४ बडा.
५ मोटा. ६ बहुत. ७ मजबूत. ८ बडा.
९ बहुत. १० बडा. ११ छोटा मुख्य.

प्रकृतिप्रत्ययाद्यर्थैः संकीर्णं लिङ्गमु-
च्येत् ॥ कर्म क्रिया तत्सातत्ये गम्ये
स्वरपरस्पराः ॥ १ ॥ साकल्यासं-
गवचने पारायणतुरायणे ॥ यदृच्छा
स्वैरिता हेतुशून्या त्वास्था विलक्ष-
णम् ॥ २ ॥

पहिले दोनोंकांडोंके विषय प्रकरणोंकर
स्वर्गादिकनाम सजातीय निबद्ध कियेथे, और
इसकांडमेंभी सुकृत्पादिकोंको विशेष्यके
आधीन निबद्ध करचुके अब पहिलोंकी
संकीर्णताके भयसे जो कि पहिले नहीं क-
हेथे, उनके समूहके वास्ते संकीर्णप्रारम्भ
कर दिया जाता है इसवर्गमें कर्मक्रियादिक भाव-
वचन है, और अपरस्परादिक विशेष्याधीन
हैं, और स्तम्बादिक करणवचन है, और
आपूषिकादिक समूहवचन है, इसप्रकार
मिटे झुटे वचन और मिटे झुटे अर्थ और
लिंगोंकर इसवर्गको संकीर्ण कहते हैं क्योंकि
मिटे हुए जाति अर्थोंको संकीर्ण बोलते हैं
यदि कहौ कि, इस विगेषविधानके अभाव-
वाली संकीर्णतामें कैसे लिंगज्ञान होनाचा-
हिये तिसमें उपाय कहते हैं—संकीर्णनामवाले
इसवर्गमें लिंगसमूहवर्गकी कहीहुई रीतिसें
प्रकृतिप्रत्ययार्थादिकोंकर लिंग पहचाने
अर्थात्, प्रकृत्यर्थ और प्रत्ययार्थ और
आदिशब्दसे रूपभेदादिकोंकर लिंग जानें
तहाँ प्रकृत्यर्थ करके जैसे—अपरस्पर—इत्या-

दिकमें प्रकृति नाम विशेष्यके आधीन लिंग-
जानना चाहिये, और प्रत्ययार्थकरके जैसे—
स्फाति—इत्यादिकमें स्त्रीपुंलिंगाद्यर्थवाचक
प्रत्ययके आधीन लिंग जानना चाहिये, और
रूपभेदकर जैसे—कर्म—इत्यादिकमें क्लीब
स्त्रीपुंलिंगरूपभेदसे लिंग जानना चाहिये,
और कही साहचर्यसे जैसे [द्विवे द्वमरविष्वक्]
इसवचनमें द्विवेशब्द पुलिंग जानना चाहिये
क्योंकि इसके सहचरीय द्वमर विष्वक्
पुंलिंग हैं कर्म क्रिया यह दो नाम क्रियाके
है, और उस क्रियाकी निरन्तरता प्राप्तहो-
नेमें अपस्पर यह एक नाम होता है जैसे
[अपरस्पराः सार्था गच्छन्ति] अर्थात्, औरही
औरसमूह निरन्तर जा रहे हैं तिसमें अपर-
स्परशब्द क्रियाकी निरन्तरतामें एकरचन,
तथा नपुंसकलिंग होताहै जैसे [अपरस्पर
गच्छन्ति] और क्रियावालोंकी निरन्तर-
तामें तीनों लिंगके विषय होता है ॥ १ ॥ जो
कि साकल्यवचन और आसंगवचन है, वह
क्रममें पारायण परायण सन्निक है भाव
यह है कि, पारायण यह एक नाम साकल्य-
वचनका है और परायण यह एकनाम
आसंगवचनका है यदृच्छा स्वैरिता यह दो
नाम स्वतंत्रताके हैं, और जो कि हेतुशून्य
कारणवर्जित स्थिति है, वह विलक्षण
सन्निक है ॥ २ ॥

गमयस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमयो
दमः ॥ अवदानं कर्म वृत्तं काम्य-

दानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥ वशक्रिया
संवननं मूलकर्म तु कार्मणम् ॥ विधू-
ननं विधुवनं तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥
पर्याप्तिः स्थात्परित्राणं हस्तवारण-
मित्यपि ॥ सेवनं सीवनं स्यूतिर्विदरः
स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥ आक्रोशन-
मभीषङ्गः संवेदो वेदना न ना ॥
संमूर्च्छनमभिव्याप्तिर्याञ्जना भिक्षार्थ
नाऽर्दना ॥ ६ ॥

शथम शम शान्ति यह तीन नाम शान्ति
यानी चित्तके रोकनेके हैं। दान्ति दमथ दम
यह तीन नाम दम यानी इंद्रियोंके रोकनेके
हैं, और जो कि वर्त्ताहुआ कर्म है, यानी जो
कि चरित्र पहिलें होचुका है, वह अवदान
संज्ञिक है। और जो कि काम्य तुलापुरुषा-
दिकका दान है, वह प्रवारण संज्ञिक है
॥ ३ ॥ वशक्रिया संवनन यह दो नाम
मणिमंत्रादिकसें वश करनेके हैं, और जो कि
मूलकर्म अर्थात् ओषधियोंके मूलोंकर जो
कि उच्चाटनादिक कर्म है, वह कार्मण संज्ञिक
है। विधूनन विधुवन यह दो नाम काँपनेके
हैं। तर्पण प्रीणन अवन यह तीन नाम
वृत्तिके हैं ॥ ४ ॥ पर्याप्ति परित्राण हस्त-
वारण यह तीन नाम मारनेको तय्यार
हुएके निवारण करनेके हैं। सेवन सीवन स्यूति
यह तीन नाम सीनेके हैं। विदर स्फुटन
भिदा यह तीन नाम दो तुकड़े होनेके हैं।
इसको फूटना कहते हैं ॥ ५ ॥ आक्रोशन

अभीषंग यह दो नाम गाली देनेके हैं। संवेद
वेदना यह दो नाम अनुभवके हैं। तिसमें
वेदना शब्द पुलिंग नहीं है, किन्तु स्त्रीनपुंसक-
लिंग है। संमूर्च्छन अभिव्याप्ति यह दो नाम
सवतर्फ व्याप्त होनेके हैं। याञ्जना भिक्षा अर्थना
अर्दना यह चार नाम माँगनेके हैं ॥ ६ ॥

वर्धनं छेदनेऽथ द्वे आनन्दनसभाजने ॥
आप्रच्छन्नमथान्नायः संप्रदायः क्षये
क्षिया ॥ ७ ॥ ग्रहे ग्राहो वशः का-
न्तौ रक्षणस्त्राणे रणः क्रणे ॥ व्यधो
वेधे पचा पाके हवो हूतौ वरो वृतौ ॥ ८ ॥
ओषः श्लोषे नयो नाये ज्यानिर्जीर्णौ
भ्रमो भ्रमौ ॥ स्फातिर्वृद्धौ प्रथा
ख्यातौ स्पृष्टिः पृक्तौ स्तवः स्तवे ॥ ९ ॥
एधा समृद्धौ स्फुरणे स्फुरणा प्रमितौ
प्रमा ॥ प्रसूतिः प्रसवे श्रयोते प्राधारः
कुमथः कुमे ॥ १० ॥

वर्द्धन छेदन यह दो नाम काटनेके हैं
इसको कपटनाभी कहते हैं। आनन्दन सभा-
जन आप्रच्छन्न यह तीन नाम स्वागतसं-
प्रश्नादिकर रचे हुए आनन्दके हैं। आन्नाय
संप्रदाय यह दो नाम गुरुपरंपरासें प्राप्त हुए
उत्तम उपदेशके हैं। क्षय क्षिया यह दो नाम
कम होनेके हैं ॥ ७ ॥ ग्रह ग्राह यह दो
नाम ग्रहण करनेके हैं। वश कान्ति यह दो
नाम इच्छाके हैं। रक्षण त्राण यह दो नाम
रक्षाके हैं। रण क्रण यह दो नाम शब्द
करनेके हैं। व्यध वेध यह दो नाम छेदनेके

है. पचा पाक यह दो नाम पकानेके है हव
 हूति यह दो नाम बुलानेके है वर वृति
 यह दोनाम लपेटनेके है ॥ ८ ॥ ओष
 षोष यह दो नाम जलानेके है नय नाय
 यह दो नाम नीतिके है ज्ञानि जीर्णि यह
 दो नाम जीर्णहोनेके है भ्रम भ्रमि यह
 दो नाम भ्रान्तिके है. स्फाति वृद्धि यह दो नाम
 बढ़नेके है प्रथा ख्याति यह दो नाम विख्या-
 त होनेके है स्पृष्टि पृक्ति यह दो नाम छूनेके
 है. स्रव स्रव यह दो नाम झिर्नेके है ॥ ९ ॥
 एधा सष्टद्धि यह दो नाम बहुत होनेके है
 स्फुरण स्फुरणा यह दो नाम करकनेके है.
 प्रमिति प्रमा यह दो नाम यथार्थज्ञानके है
 प्रसूति प्रसव यह दो नाम गर्भ छोड़नेके है
 श्लोत प्राधार यह दो नाम धीआदिकके
 टपकनेके है क्लमथ क्लम यह दो नाम
 ग्लानिके है ॥ १० ॥

उत्कर्षाऽतिशये संधिः श्लेपे विषय
 आश्रये ॥ क्षिपायां क्षेपणं गीर्णि-
 गिरौ गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥ उच्चाय
 उन्नये श्रापः श्रपणे जयने जयः ॥
 निगादो निगदं मादो मद उद्देग
 उद्गमे ॥ १२ ॥

उत्कर्ष अतिशय यह दो नाम अतिश-
 यके है संधि श्लेप यह दो नाम भेटके है
 विषय आश्रय यह दो नाम आश्रयके है
 क्षिपा क्षेपण यह दो नाम घेरणाके हैं
 गीर्णि गिरि यह दो नाम निगलनेके है गुरण

उद्यम यह दो नाम उद्यमके है ॥ ११ ॥
 उच्चाय उन्नय यह दो नाम ऊपर लेजा-
 नेके हैं श्राय श्रयण यह दो नाम सेवाके है
 जयन जय यह दो नाम जीतके है निगाद
 निगद यह दो नाम कहनेके है माद मद
 यह दो नाम हर्षके है उद्देग उद्भ्रम यह
 दो नाम उद्देगके है ॥ १२ ॥

विमर्दनं परिमलोऽभ्युपपत्तिरनुग्रहः ॥
 निग्रहस्तद्विरुद्धः स्यादभिपोगस्त्व-
 भिग्रहः ॥ १३ ॥ मुष्टिवन्धस्तु सं-
 ग्राहो द्विम्बे डमरविप्लवौ ॥ बन्धनं
 प्रसितिश्वारः स्पर्शः स्पर्शोपतत्तरि १४ ॥
 निकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्व-
 ङ्गा इङ्गितम् ॥ परिणामो विकारो
 द्वे समे विवृतिविक्रिये ॥ १५ ॥ अ-
 पहारस्त्वपचयः समाहारः समुच्चयः ॥
 मत्प्राहार उपादानं विहारस्तु परि-
 क्रमः ॥ १६ ॥

विमर्दन परिमल यह दो नाम कुकुमादि-
 कके मसलनेके है अभ्युपपत्ति अनुग्रह यह
 दो नाम अमीकारके है और जो कि उस
 अनुग्रहसे विरुद्ध है, वह निग्रह सन्निक है
 इसकों न माननाभी कहते है. अभिपोग
 अभिग्रह यह दो नाम लड़ाईमें पुकारनेके
 है ॥ १३ ॥ मुष्टिबध संग्राह यह दो नाम
 मुष्टिकरके दृढपूर्वक पकड़नेके है द्विम्ब डमर
 विप्लव यह दो नाम नरोंका लूटना आदिक
 पीडाविशेषके हैं. कोई आचार्य अशक्तकल-

हके यह तीन नाम बताते हैं. और कोई प्रल-
यके बताते हैं. बंधन प्रसिति चार यह तीन
नाम बन्धनके हैं. स्पर्श स्पष्ट उपतप्त यह
तीन नाम उपताप नाम रोगविशेषके हैं ॥ १४ ॥

निकार विप्रकार यह दो नाम अपकारके
हैं. आकार इंग इंगित यह तीन नाम अभि-
प्रायके अनुरूप चेष्टितके हैं. परिणाम विकार
प्रकृतिसँ अन्यप्रकार होनेके हैं. विकृति
विक्रिया यह दो नाम विरुद्ध करनेके हैं.
॥ १५ ॥ अपहार अपचय यह दो नाम
अपहरणके हैं. इसकों छीनलैना कहते हैं.
समाहार समुच्चय यह दो नाम इकट्ठेकर-
नेके हैं. प्रत्याहार उपादान यह दो नाम
इन्द्रियोंके खेंचनेके हैं. विहार परिक्रम यह
दो नाम पावोंसे चलनेके हैं ॥ १६ ॥

अभिहारोऽभिग्रहणं निर्हारोऽभ्यव-
कर्षणम् ॥ अनुहारोऽनुकारः स्यादर्थ-
स्यापगमे व्ययः ॥ १७ ॥ प्रवाहस्तु
प्रवृत्तिः स्यात्प्रवहो गमनं बहिः ॥
वियामो वियमो यामो यमः संयाम-
संयमौ ॥ १८ ॥

अभिहार अभिग्रहण यह दो नाम चौरी-
करनेके हैं. निर्हार अभ्यवकर्षण यह
दो नाम बाणादिकके निकालनेके हैं. अनुहार
अनुकार यह दो नाम विडंबनके हैं. इसकों
नकलकरनाभी कहते हैं. अर्थ नाम धनादि-
कके अपगममें व्यय शब्द होता है. इसकों
खर्च कहते हैं ॥ १७ ॥ प्रवाह प्रवृत्ति यह

दो नाम जलादिकोंकी निरन्तर गतिके हैं
और जो कि बाहिर गमन है, वह प्रवह
संज्ञिक है. वियाम वियम याम संयाम संयम
यह छै नाम संयमके हैं ॥ १८ ॥

हिंसाकर्माभिचारः स्याज्जागर्या जा-
गरा द्वयोः ॥ विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः
स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रये ॥ १९ ॥
निर्वेश उपभोगः स्यात्परिसर्पः परि-
क्रिया ॥ विधुरं तु प्रविश्लेषेऽभिप्रा-
यश्छन्द आशयः ॥ २० ॥

और जो कि हिंसाकर्म अर्थात्, हिंसाफ-
लवाला जो कि कर्म जारणमारण आदिक
है, वह अभिचार संज्ञिक है. जागर्या जागर
यह दो नाम जागनेके हैं. तिसमें जागराशब्द
दोनों स्त्रीपुंलिङ्गमें होता है. विघ्न अन्तराय
प्रत्यूह यह दो नाम विघ्नके हैं. और समीपके
आश्रयमें उपघ्न शब्द वर्तै है ॥ १९ ॥
निर्वेश उपभोग यह दो नाम उपभोगके हैं.
परिसर्प परिक्रिया यह दो नाम कुटुम्बादिकके
घेरनेके हैं. विधुर प्रविश्लेष यह दो नाम
अत्यन्त वियोगके हैं. अभिप्राय छन्द आशय
यह तीन नाम अभिप्रायके हैं ॥ २० ॥

संक्षेपणं समसनं पर्यवस्था विरोधन-
म् ॥ परिसर्या परीसारः स्यादास्या
त्वासना स्थितिः ॥ २१ ॥ विस्तारो
विग्रहो व्यासः स च शब्दस्य विस्तरः ॥
संवाहनं मर्दनं स्याद्विनाशः स्याद-
दर्शनम् ॥ २२ ॥

सक्षेपण समसन यह दो नाम सक्षेपके हैं पर्यवस्था विरोधन यह दो नाम विरोधके है परिसर्या परीसार यह दो नाम सन-औरसें फैलनेके है आस्या आसना स्थिति यह तीन नाम स्थितिके है ॥ २१ ॥ विस्तार विग्रह व्यास यह तीन नाम विस्तारके है, और जोकि शब्दसबन्धी विस्तार है, वह विस्तर सन्निक है, सवाहन मर्दन यह दो नाम अगोके मसलनेके है विनाश अदर्शन यह दो नाम विनाशके है ॥ २२ ॥

संस्तवः स्यात्परिचयः प्रसरस्तु विसर्पणम् ॥ नीवाकस्तु प्रयामः स्यात्सन्निधिः सन्निकर्षणम् ॥ २३ ॥ लवोऽभिलावो लवने निष्पावः पवने पवः ॥ प्रस्तावः स्यादवसरस्त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥

सस्तव परिचय यह दो नाम इकठेकरनेके है प्रसर विसर्पण यह दो नाम घाव आदिकके फैलनेके है नीवाक प्रयाम यह दो नाम उसके है, जो कि धनधान्योंके विगे मनुष्योंका अतिशय आदर होता है सन्निधि सन्निकर्षण यह दो नाम समीपताके है ॥ २३ ॥ लव अभिलाव लवन यह तीन नाम धायादिकके काटनेके है निष्पाव पवन पव यह तीन नाम धायादिकोंके पवित्र करनेके है प्रस्ताव अवसर यह दो नाम प्रसंगके है त्रसर सूत्रवेष्टन यह दो नाम नलीपर सूत्रत्पेटनेके है ॥ २४ ॥

प्रजनः स्यादुपसरः प्रश्रयप्रणयौ समौ ॥ धीशक्तिर्निष्क्रमोऽस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः ॥ २५ ॥ प्रत्युत्क्रमः प्रयोगार्थः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ॥ स्यादभ्यादानमुद्धात आरम्भः संभ्रमस्त्वेरा ॥ २६ ॥

प्रजन उपसर यह दो नाम गर्भग्रहण करनेके है प्रश्रय प्रणय यह दो नाम प्रेमके है धीशक्ति निष्क्रम यह दो नाम बुद्धिके सामर्थ्यके है सक्रम दुर्गसंचर यह दो नाम दुर्गमार्गके है कोई इन दो नामोंको दुर्गादिकमें प्रवेश करनेके कहते है तिसमें सक्रम शब्द स्त्रीलिंग नहीं है, किन्तु पुनपुसकालिग है ॥ २५ ॥ प्रत्युत्क्रम प्रयोग यह दो नाम युद्धके वास्ते अतिशय किये हुए उद्योगके है प्रक्रम उपक्रम यह दो नाम प्रथम आरम्भके है, आभ्यादान उद्धात आरम्भ यह तीन-नाम आरम्भभावके है सभ्रम त्वरा यह दो नाम सभ्रमके है ॥ २६ ॥

प्रतिबन्धः प्रतिष्ठम्भोऽवनापस्तु निपातनम् ॥ उपलम्भस्त्वनुभवः समालम्भो विलेपनम् ॥ २७ ॥ विप्रलम्भो विप्रयोगो विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ॥ विश्रावस्तु प्रतिख्यातिरवेक्षा प्रतिजागरः ॥ २८ ॥

प्रतिबन्ध प्रतिष्ठम्भ यह दो नाम प्रतिबन्धके हैं अवनाय निपातन यह दो नाम गिरानेके हैं, उपलम्भ अनुभव यह दो नाम

साक्षात्कारके हैं. समालंभ विलेपन यह दो नाम कुंकुमादिकसें विलेप करनेके हैं ॥ २७ ॥ विप्रलम्भ विप्रयोग यह दो नाम स्नेह तोड़नेके हैं. विलंभ अतिसर्जन यह दो नाम अति दानके हैं, विश्राव प्रतिख्याति यह दो नाम अति प्रसिद्धिके हैं. अवेक्षा प्रतिजागर यह दो नाम वस्तुओंके देखनेके हैं ॥ २८ ॥

निपाठनिपठौ पाठे तेमस्तेमौ समुन्द-
ने ॥ आदीनवास्त्वौ क्लेशे मेलके
सङ्गसंगमौ ॥ २९ ॥ संवीक्षणं
विचयनं मार्गणं मृगणा मृगः ॥
परिरम्भः परिष्वङ्गः संश्लेष उपगू-
हनम् ॥ ३० ॥

निपाठ निपठ पाठ यह तीन नाम पढ़नेके हैं. तेम स्तेम समुन्दन यह तीन नाम गीलेकर-
नेके हैं. आदीनव आस्त्व क्लेश यह तीन नाम क्लेशके हैं. मेलक संग संगम यह तीन नाम संगमके हैं ॥ २९ ॥ संवीक्षण विच-
यन मार्गण मृगणा मृग यह पांच नाम वस्तु-
ओंके ढूँढ़नेके हैं. परिरंभ परिष्वंग संश्लेष उपगूहन यह चार नाम आलिंगनके हैं. इसको लिपटनाभी कहते हैं ॥ ३० ॥

निर्वर्णनं तु निध्यानं दर्शनालोकने-
क्षणम् ॥ प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्या-
देशो निराकृतिः ॥ ३१ ॥ उपशायो
विशायश्च पर्यायशयनार्थकौ ॥ अ-

र्तनं च ऋतीया च हृणीया च घृणा-
र्थकाः ॥ ३२ ॥

निर्वर्णन निध्यान दर्शन आलोकन ईक्षण यह पांच नाम देखनेके हैं. प्रत्याख्यान निर-
सन प्रत्यादेश निराकृति यह चार नाम निराकरणके हैं. इसको दूर करनाभी कह-
ते हैं ॥ ३१ ॥ और क्रमकरके शयन अर्थ-
वाले उपशाय विशाय शब्द हैं, अर्थात् यह दो नाम क्रमकरके पहरेंदार आदिकोंके सोनेके हैं. अर्तन ऋतीया हृणीया घृणा यह चार नाम जुगुप्सा अर्थात् विनानेके हैं ॥ ३२ ॥

स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो व्यत्ययश्च
विपर्यये ॥ पर्ययोऽतिक्रमस्तस्मिन्-
तिपात उपात्ययः ॥ ३३ ॥ प्रेषणं
यत्समाहूय तत्र स्यात्प्रतिशासनम् ॥
स संस्तावः क्रतुषु या स्तुतिभूमिर्हि-
जन्मनाम् ॥ ३५ ॥

व्यत्यास विपर्यास व्यत्यय विपर्यय यह चार नाम विपर्ययके हैं. इसको उलटा होनाभी कहते हैं. पर्यय अतिक्रम अतिपात उपात्यय यह चार नाम अतिक्रमके हैं. इसको उलंघन करनाभी कहते हैं ॥ ३३ ॥ जो कि बुलाकर नोकर आदिकोंका भेजना है, उसको प्रतिशासन शब्द होता है, और जो यज्ञोंके-
विषे द्विजन्मा ब्राह्मणोंकी स्तुतिभूमि अर्थात्, स्तुति करनेका देश है, वह संस्ताव संज्ञिक है ॥ ३४ ॥

निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स
उदनः ॥ स्तम्बस्तु स्तम्बघनः स्त-
म्बो येन निहन्यते ॥ ३५ ॥ आ-
विधो विध्यते येन तत्र विष्वक्समे
निघः ॥ उत्कारश्च निकारश्च द्वौ
धान्योत्क्षेपणार्थकौ ॥ ३६ ॥

जिस काष्ठके विषे रखकर काष्ठ ताला जाय,
वह काष्ठरूप आधार उदन सत्तिक है
जिस शस्त्रसे कि स्तम्ब नाम तृणोंका गुच्छा
काटा जाता है, वह स्तम्बघ्न स्तम्बघन सत्तिक
है इसको खुरपा कहते हैं ॥ ३५ ॥ और
जिसकरके काष्ठादिक वेधा जाता है, वह
आविध सत्तिक है अर्थात् यह एक नाम
धर्मा सूई आदिकका है और सब तरफसे
समान लेवाई चौड़ाईवाले वृक्षमें निघ शब्द-
वर्त्त है उत्कार निकार यह दो नाम
धान्यके उत्क्षेपण अर्थवाले हैं अर्थात् यह
दो नाम अन्नादिकके फटकनेके हैं ॥ ३६ ॥

निगारोद्गारविक्षावोद्ग्राहस्तु गरणा-
दिषु ॥ ३७ ॥ ओरत्पवरतिविरतय
उपरामेऽथास्त्रिया तु निष्ठेवः॥निष्ठचू-
तिनिष्ठेवनं निष्ठीवनमित्यभिन्नानि ३८
जवने जूतिः सातिस्त्ववसाने स्यादथ
ज्वरे जूतिः ॥ उदजस्तु पशुप्रेरणम-
करणिरित्यादयः शापे ॥ ३९ ॥
गोत्रान्तेऽपस्तस्य वृन्दमित्यौपगव-
कादिकम् ॥ आपूपिकं शाण्डुलिक-
मेवमाद्यमचेतसाम् ॥ ४० ॥

निगार उद्गार विक्षाव उद्ग्राह यह नाम
गरणादिकोंके विषे वर्त्त है अर्थात् निगार
यह एक नाम निगलनेका है उद्गार यह एक
नाम उगलनेका है विक्षाव यह एक नाम
छीकका है उद्ग्राह यह एक नाम डकार-
नेका है ॥ ३७ ॥ आरति अवरति विरति
उपराम यह चार नाम उपरामके हैं इसको
थमनाभी कहते हैं निष्ठेव निष्ठचूति निष्ठेवन
निष्ठीवन यह चार नाम अभिन्न अर्थात्
एकार्थ हुए थूकनेके हैं तिसमें निष्ठेवन शब्द
स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुसकलिंगमें होता है ॥ ३८ ॥
जवन जूति यह दो नाम वेगके हैं साति
अवसान यह दो नाम अन्तके हैं ज्वर जूति
यह दो नाम ज्वरके हैं, और जो कि पशु-
ओंकी प्रेरणा है, वह उदज सत्तिक है और
शापके विषे अकरणि आदिशब्दसे अजीवनि
आदिक होते हैं, जैसे—रे पाप तू कैसे अक-
रणिकर नहीं लज्जित होता है और जैसे—
हे शठ तेरी अजीवनि अर्थात् न जीवना
होवै ॥ ३९ ॥ गोत्रान्त अर्थात् अपत्यार्थ-
वाचक प्रत्यया तवाले औपगवादिक शब्दसे
समूहार्थमें औपगवक आदिशब्द होते हैं
जैसे—औपगवोंका समूह औपगवक सत्तिक है
आदिशब्दसे इसीप्रकार मार्गक दाक्षक शब्द
जानने और जो कि अचेत यानी जड़ अपू-
पादिकोंका समूह है, वह आपूपिक शाण्डु-
लिक इत्यादिक सत्तिक है अर्थात् आपू-
पिक यह एक नाम पुओंके समूहका है

और शाष्कुलिक यह एक नाम पुरियोंके समूहका है ॥ ४० ॥

माणवानां तु माणव्यं सहायानां सहायता ॥ हल्या हलानां ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विजन्मनाम् ॥ ४१ ॥
द्वे पशुकानां पृष्ठानां पार्श्वं पृष्ठच्यमनुक्रमात् ॥ खलानां खलिनी खल्याप्यथ मानुष्यकं नृणाम् ॥ ४२ ॥
ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या पृथक्पृथक् ॥ अपि साहस्रकारीषवार्मणार्थर्वणादिकम् ॥ ४३ ॥

इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

माणव नाम वालकोंका समूह माणव्य संज्ञिक है. सहाय नाम सत्वाओंका समूह सहायता संज्ञिक है. और हलोंका समूह हल्या संज्ञिक है. द्विजन्मा नाम ब्राह्मणोंका समूह ब्राह्मण्य वाडव्य संज्ञिक है ॥ ४१ ॥
पार्शुक नाम हड्डिविशेष और पृष्ठ नाम पीठ इनदोनोंका समूह क्रमसे पार्श्व पृष्ठच्य संज्ञिक है. और खलोंका समूह खलिनी खल्या संज्ञिक है. और नृ नाम मनुष्योंका समूह मानुष्यक संज्ञिक है. ग्रामता यह एक नाम ग्रामोंके समूहका है. जनता यह एक नाम जनोंके समूहका है. धूम्या यह एक नाम धूमोंके समूहका है. पाश्या यह एक नाम फासोंके समूहका है. गल्या यह एक नाम गड़े २ कासोंके समूहका है. यह पांचो नाम पृथक् २ जानने. साहस्र यह एक नाम हजा-

रोंके समूहका है. कारीष यह एक नाम उपलोंके समूहका है. वार्मण यह एक नाम कवचोंके समूहका है. आथर्वण यह एक नाम अथर्वणोंके समूहका है. आदिशब्दसे चर्मण आंगार चर्मिण आदिक शब्द जानने.

इति संकीर्णवर्गः ॥

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः॥भूरिप्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥ आकाशे त्रिदिवे नाको लोकस्तु भुवने जने ॥ पद्ये यशसि च श्लोकः शरे खड्गे च सायकः ॥ २ ॥

इसके अनन्तर नानार्थवर्ग प्रारम्भ किया जाता है. यदि कहो कि, किस अर्थ अनेकार्थशब्द प्रारम्भ किये जाते हैं, क्योंकि वह शब्द तो पहिले कहे हुए वर्गोंमें कह दिये हैं. और यदि इसमें कहे जायेंगे, तो पहिले कैसे कह दिये तहाँ कहते हैं—इन कहेजानेवाले कान्तादिकवर्गोंके विषे कोई शब्द नानार्थ कहे हैं, वह पहिले कहे हुए पर्यायोंमें नहीं कहे. जैसे [मारुते वेधसि बध्ने पुंसि कः कं शिरोम्बुनोः] और जो कि भूरिप्रयोग अर्थात्, जहाँ कहींभी काव्यादिकमें कवियोंने बहुधा करके प्रयुक्त किये हैं, जो नाक लोकादिकशब्द वह जिन पूर्व कहे हुए पर्यायोंमें दीखें हैं, तिन्ही पर्यायोंमें इन कान्तादिकवर्गोंके विषेभी कहे हैं. जैसे नाक शब्द बहुधा प्रयोग होनेसे पहिले स्वर्ग आकाशमेंभी है.

फिर यहाँभी कह दिया है, और जम्बुक शब्द पहिले सृगालपर्यायोंके विषे कहा है, और बहुधा प्रयोग न होनेसे वरुणपर्यायोंमें नहीं कहा, और यहाँ जम्बुकशब्द सृगाल और वरुण इन दोनोंमें कहा है आकाश और त्रिविव नाम स्वर्गमें नाक शब्द वर्त्तै है, और भुवन नाम स्वर्गादिक और जन मनुष्यमें लोक शब्द वर्त्तै है, पद्य नाम अनुष्टुप्-आदिक छन्द और यशमें श्लोक शब्द वर्त्तै है, और शर नाम बाण और खड्ग तलवार इनमें सायक शब्द वर्त्तै है ॥ २ ॥

जम्बुकौ क्रोष्ट्वरुणौ पृथुकौ चिपि-
 टार्भकौ ॥ आलोकौ दर्शनघोतौ भे-
 रीपटहमानकौ ॥ ३ ॥ उत्सङ्गवि-
 ह्वयोरङ्कः कलङ्कोऽङ्गापवादयोः ॥
 तक्षको नागवर्धकयोरर्कः स्फटिकसू-
 र्ययोः ॥ ४ ॥

क्रोष्टु नाम शयार और वरुण यह दोनों जम्बुक सत्तिक है चिपिट भुनेहुए धान चावल और शिशु नाम (बालक) यह दोनों पृथुक सत्तिक है दर्शन और घात नाम प्रकाश यह दोनों आलोक सत्तिक है, और भेरी और पटह नाम नगाहा यह दोनों आनक सत्तिक हैं ॥ ३ ॥ उत्सङ्ग गोद और चिन्ह इन दोनोंमें अक शब्द वर्त्तै है, और अक नाम चिन्ह और अपवाद निन्दामें कलक शब्द वर्त्तै है नाग नाम सर्पविशेष और वर्द्धक बढईमें तक्षक शब्द वर्त्तै है और स्फटिक और सूर्यमें अर्क शब्द वर्त्तै है ॥ ४ ॥

मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शि-
 रोम्बुनोः ॥ स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये
 संक्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ५ ॥ उलूके
 करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः ॥
 कमण्डलौ च करकः सुगते च वि-
 नायकः ॥ ६ ॥

मारुत नाम पवन और वेधस् (ब्रह्मा) और ब्रध्न (सूर्य) इनमें क शब्द वर्त्तै है, यह शब्द पुलिगमें होता है और शिर और अम्बु नाम जल इनमें नपुसकलिगवाची क शब्द वर्त्तै है तुच्छ धान्य और संक्षेप नाम अविस्तार और भक्तसिक्थक नाम अन्नका टुकड़ा इनमें पुलाक शब्द वर्त्तै है ॥ ५ ॥ उलूक नाम उल्लूषक्षी और हाथीकी पूछके जडके समीप गुदाके ढकनेवाले मातपिण्डमें पेचक शब्द वर्त्तै है कमण्डलुमें और चकारसे ओलोंमें और दाहिमादिकमें करक शब्द वर्त्तै है, सुगत नाम मुद्धमें और चकारसे गणेश तथा गरुडमें विनायक शब्द वर्त्तै है ॥ ६ ॥

किङ्कुरुहस्ते वितस्तौ च शूकक्रीटे च
 वृश्चिकः ॥ प्रतिकूटे प्रतीकस्त्रिपेक-
 देगे तु पुंस्पयम् ॥ ७ ॥ स्याद्भूतिकं
 तु भूनिम्बे कत्तृणे भूस्तृणेऽपि च ॥
 ज्योत्स्निकाया च घोपे च कोशात-
 क्यथ वट्फले ॥ ८ ॥ सिते च स-
 दिरे सोमवल्कः स्यादथ सिल्हके ॥
 तिलकल्के च पिण्याको बाह्मीरं
 रामठेऽपि च ॥ ९ ॥

हस्त नाम हस्तप्रमाण और वितस्ति नाम विलादमें किष्कु शब्द वर्त्तते है. शूककीट अर्थात् तीकुरकी समान रोमोंसे युक्त जो कीड़ा है, उसमें और चकारसे विच्छू और ककैटा और वृक्षविशेष और अष्टमराशिमें वृश्चिक शब्द होता है, और प्रतिकूल और एकदेश अवयवके विषे प्रतीक शब्द होता है, तिसमें प्रतिकूलार्थक जो प्रतीक शब्द है, वह तीनोंलिंगमें होता है. और जो कि अवयवार्थक प्रतीक शब्द है, वह पुंलिंगमें होता है ॥ ७ ॥ भूनिव नाम चिरायता और कत्तृण सुगंधित तृण और भूस्तृण जलतृण इन तीनोंमें भूतिक शब्द वर्त्तते है. ज्योत्स्निका नाम चंचेडा और घोष नाम सेतफूलकी तुरई इन दोनोंमें कोशातकी शब्द वर्त्तते है. कट्फल नाम काँयफल और सेत खदिरमें सोमवल्क शब्द वर्त्तते है. सिल्हक लोहवान और तिलकल्क अर्थात् विना तेलवाले तिलके चूर्णमें पिण्याक शब्द वर्त्तते है, और रामठ नाम हींगके विषे चकारसे बाल्हिकदेशमें और घोडामें और धीरेमें बाल्हिक शब्द वर्त्तते है ॥ ८ ॥ ९ ॥

महेन्द्रगुग्गुलूकव्यालग्राहिषु कौशिकः ॥ रुक्तापशङ्कास्वातङ्कः स्वल्पेऽपि क्षुल्लकस्त्रिषु ॥ १० ॥ जैवातृकः शशाङ्केऽपि खुरेऽप्यश्वस्य वर्तकः ॥ व्याघ्रेऽपि पुण्डरीको ना यवान्यामपि दीपकः ॥ ११ ॥

महेन्द्र नाम इन्द्र और गुग्गुलु अर्थात् गुग्गुलु और व्यालग्राही सर्प पकड़नेवाला इनमें कौशिक शब्द वर्त्तते है. रुज् रोग और ताप संताप और शंका भय इनमें आतंक शब्द वर्त्तते है. स्वल्प नाम अल्पके विषे और अपिशब्दसे नीच तथा अतिछोटा तथा दरिद्रीमेंभी क्षुल्लक शब्द वर्त्तते है. यह शब्द तीनों लिंगमें होता है ॥ १० ॥ शशांक नाम चंद्रमाके विषे अपिशब्दसे बड़ी अवस्थावालेके विषे जैवातृक शब्द वर्त्तते है, और घोडेके खुरके विषे अपिशब्दसे बटेर वा बतक नाम पक्षिभेदमें वर्तक शब्द वर्त्तते है. और व्याघ्रके विषे अपिशब्दसे अग्नि तथा दिग्गजादिकके विषे और सेतकमलादिकमें पुण्डरीक शब्द वर्त्तते है, तिसमें व्याघ्र तथा अग्नि तथा दिग्गजादिक अर्थमें तौ पुण्डरीक पुंलिंग है. और सेतकमलादिकमें नपुंसकलिंग है. और यवानी नाम अजमायन ओषधिमें अपिशब्दसे मोरकी चोटी और प्रकाशमें दीपक शब्द वर्त्तते है ॥ ११ ॥

शालावृकाः कपिक्रोष्टुश्चानः स्वर्णेऽपि गैरिकम् ॥ पीडार्थेऽपि व्यलीकं स्यादलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ १२ ॥ शीलान्वयावनूके द्वे शलके शकलवल्कले ॥ साष्टे शते सुवर्णानां हेम्यु- रोभूषणे पले ॥ १३ ॥ दीनारेऽपि च निष्कोऽस्त्री कल्कोऽस्त्री शमलैनसोः ॥ दम्भेऽप्यथ पिनाकोऽस्त्री शूलशंकरधन्वनोः ॥ १४ ॥

कपि नाम बन्दर और कोष्ट श्यार और
 श्वन् नाम कुत्ता यह शालावृक सञ्ज्ञिक है,
 और सुवर्णके विषे अपिशब्दसें गेरु नाम
 घातुके विषे गैरिक शब्द वर्त्तै है, पीडाथर्म
 मलीक शब्द वर्त्तै है अपिय और असत्यमें
 मलीक शब्द वर्त्तै है ॥ १२ ॥ शील नाम
 इभाव अन्वय वंश यह दोनों अनूक सञ्ज्ञिक
 शकल नाम टुकड़ा और वल्कल अर्थात्
 कुला यह दोनों शल्क सञ्ज्ञिक है सुवर्णके
 क सौ आठ कर्पमें और हेम नाम सुवर्ण-
 त्रयमें और उरोभूषण अर्थात् छातीके
 हनेमें और पल नाम चारकर्पमें ॥ १३ ॥
 और दीनार नाम साव्यवहारिकमें निष्क
 शब्द वर्त्तै है यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुस-
 तल्लिगमें होता है शमल नाम विष्ठा और एनस्
 ताप इन दोनोंमें और दध्न (कपट) इसमें और
 तण्डिशब्दसें हाथीदाँत और घी तेलके अव-
 योमें कल्क शब्द वर्त्तै है यह शब्द स्त्रीलि-
 ंगवर्जित पुनपुसकल्लिगमें होता है और शूल
 नेशूल और शिवजीके धनुषमें पिनाक
 शब्द वर्त्तै है यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपु-
 स्तल्लिगमें होता है ॥ १४ ॥

धेनुका तु करेण्वा च मेघजाले च
 कालिका ॥ कारिका यातनावृत्त्योः
 कर्णिका कर्णभूषणे ॥ १५ ॥ क-
 रिहस्तेऽङ्गुली पद्मबीजकोश्या त्रिपू-
 त्तरे ॥ वुन्दारकौ रूपिमुख्यावेके मु-
 ख्यान्पकेवलाः ॥ १६ ॥

करेणु नाम हथिनी और चकारसें नवीन
 व्याई हुई गौमें वेनुका शब्द वर्त्तै है और
 मेघजाल अर्थात् मेघोंके समूहमें और
 चकारसें देवताविषयमें कालिका शब्द
 होता है यातना नाम नरकक्लेश और वृत्ति
 विवरणश्लोक इन दोनोंमें कारिका शब्द
 वर्त्तै है कर्णभूषण कानके गहनेमें करिहस्त
 अर्थात् हाथीकी शूङ्के अग्रभागमें अङ्गु-
 लीमें और पद्मबीजकोशी अर्थात् कमलके
 अन्तर्गत कोशमें कर्णिका शब्द वर्त्तै है, यहाँसें
 उत्तर खान्तशब्दोंसें पूर्व जो शब्द है, वह
 तीनोंलिगमें होते हैं रूपी रूपवाला मुख्य
 श्रेष्ठ यह दोनों वुन्दारक सञ्ज्ञिक हैं, और
 मुख्य और अन्य नाम न्यारा और केवल
 यह तीनों एक सञ्ज्ञिक हैं ॥ १५ ॥ १६ ॥

स्याद्दाम्भिकः कौकुटिको यश्चादूरे-
 रितेक्षणः ॥ लालाटिकः प्रभोर्भाल-
 दर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ १७ ॥

॥ इति कान्ताः ॥

१ भुभृन्नितम्बवल्गुचक्रेषु कटकोऽस्त्रियाम् ॥
 सूच्यन्ते क्षुद्रशत्रौ च रोमहर्षे च कण्टक ॥
 पाकौ पत्तिशिखौ मध्यरत्ने नेतरि नायक ॥
 पर्यङ्क स्यात्परिकरे स्याद्दृष्टाग्रेऽपि च लुब्धक २
 पेटकस्त्रिषु वृन्देऽपि गुरौ देश्ये च देशिक ॥
 खेटकौ ग्रामफलकौ धीवरेऽपि च जालिक ३
 पुष्परेणौ च किञ्चलकौ शुल्कोऽस्त्री स्त्रीधनेऽपि च
 स्यात्कलोलोऽप्युत्कलिता गर्धक भागवृन्दयो ४
 करिण्या चापि गणिका दारकौ शालभेदकौ ॥
 अन्येऽप्यनेहमूक स्याद्वट्टौ दर्पाश्मशरणौ ॥ ५ ॥

१ भुभृन्नितम्ब अर्थात् पर्वतका मध्यभाग

दांभिक नाम मायावी और जो कि समीपमेंही प्रेरण किये हुए नेत्रोंवाला है, यह दोनों कौकुटिक संज्ञिक हैं, और जो कि भृत्य क्रोध वा प्रसन्नताका चिन्ह जाननेके लिये प्रभुका भाल नाम ललाटकों देखता है, वह और जो कि कार्याक्षम अर्थात् कार्य करनेकों असमर्थ हो, वह लालाटिक संज्ञिक है ॥ १७ ॥

॥ इति कान्ताः ॥

वलय पट्टची वा कंकण चक्र पहिया इनमें कटक शब्द वर्त्तते है. यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकालिगमें होता है, और सूच्यग्र सुईके अग्र-भागमें क्षुद्रशत्रु अर्थात् तुच्छ वैरीमें और रोमह-र्षमें कटक शब्द वर्त्तते है ॥ १ ॥ पक्ति नाम पकाना और शिशु नाम बालक यह दोनों पाक संज्ञिक हैं. और मध्यरत्न अर्थात् रत्नोंका मध्य और नेता नायक इन दोनोंमें नायक शब्द वर्त्तते हैं. परिकर नाम फेंटमें पर्यंक शब्द वर्त्तते है, और व्याघ्रके-विषे अपिशब्दसे व्याघ्रके विषे लुब्धक शब्द वर्त्तते है ॥ २ ॥ और वृंद नाम समूहमें अपिशब्दसे पिटारीमें पेटक शब्द वर्त्तते है. तिसमे समूहार्थवाची पेटकशब्द तीनों लिंगमें होता है. गुरु नाम बडेमें और देश्य नाम देशसंबन्धी पदार्थमें देशिक शब्द वर्त्तते है. ग्राम और फलक नाम ढाल यह दोनों खेटक संज्ञिक हैं. धीवर और अपिशब्दसे जाल फैलाकर पक्षियोंके बांधनेवालेमें जालिक शब्द वर्त्तते है ॥ ३ ॥ पुष्पकी रेणुमें चकारसे केसरमें किंजल्क शब्द वर्त्तते है. और स्त्रीधनमें और अपि-शब्दसे नदी आदिकपर राजाके दैनेनिमित्त धनमें शुल्क शब्द वर्त्तते है. यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकालिग है, और कल्लोल नाम बडी जलकी लहरमें और अपि शब्दसे फलकी कलीमें कल्लोल शब्द वर्त्तते है. और भाव और वृन्द नाम

मयूखस्तिवट्करज्वालास्वलिषाणौ शि-
लीमुखौ ॥ शङ्खौ निधौ ललाटास्थि
कम्बौ न स्त्रीन्द्रियेऽपि सम् ॥ १८ ॥
घृणिज्वाले अपि शिखे-

॥ इति खान्ताः ॥

इसके अनन्तर खान्तशब्दोंकों कहते हैं-त्विष नाम शोभा और कर नाम किरण और ज्वालाके विषे मयूख शब्द वर्त्तते है. अलि नाम भौरा और वाण यह दोनों शिलीमुख संज्ञिक हैं. और निधि नाम खजानेके भेदमें और माथेके हड्डिमें और कंबु नाम शंखमें शंख शब्द वर्त्तते है. इंद्रिय नाम चक्षुरादिक, अपिशब्दसे आकाश तथा शून्य तथा पुर तथा क्षेत्र तथा बिन्दु तथा संवेदन तथा देवलोक तथा क्षेममें ख शब्द वर्त्तते है. यह शब्द स्त्रीलिंग नहीं है ॥ १८ ॥ घृणि नाम किरण और ज्वाला यह दोनों और अपिशब्दसे चोटी और प्रपद तथा मोरकी चोटी शिखा संज्ञिक है-

॥ इति खान्ताः ॥

समूहमें वार्द्धक शब्द वर्त्तते है ॥ ४ ॥ करिणी नाम हथिनी और अपिशब्दसे वेदया और यूथिकामें गणिका शब्द वर्त्तते है. बाल और भेटक नाम काटने वाला यह दोनों दारक संज्ञिक हैं. अंधेमें और अपिशब्दसे बाहिर गुंगेमें एडमूक शब्द वर्त्तते है. दर्प नाम गर्व और अश्मदारण (पत्थरके काटनेवाले) शस्त्रमें टंक शब्द वर्त्तते है. यह पांच श्लोक क्षेपक हैं, इसकारण टिप्पणीद्वारा व्याख्या किये हैं. ॥ ५ ॥

शैलवृक्षौ नगावगौ ॥

आशुगौ वायुविशिसौ शरार्कविहगाः
स्वगाः ॥ १९ ॥ पतङ्गौ पक्षिसूर्यौ
च पूगः क्रमुकवृन्दयोः ॥ पशवोऽपि
मृगा वेगः प्रवाहजवयोरपि ॥ २० ॥
परागः कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ र-
जस्पि ॥ गजेऽपि नागमातङ्गाव-
पाङ्गस्तिलकेऽपि च ॥ २१ ॥

शैल नाम पर्वत और वृक्ष यह दोनों
नग अग सन्निक है वायु नाम पवन और
विशित्व (वाण) यह दोनों आशुग सन्निक
है शर (वाण) और अर्क (सूर्य) और
विहग (पक्षी) यह तीनों स्वग सन्निक है
॥ १९ ॥ पक्षी और सूर्य पतग सन्निक है
चकारसें तालिमभेदमें भी जानना क्रमुक
नाम सुपारी और वृद्ध नाम समूह इन दोनोंमें
पूग शब्द वर्त्तै है, पशु नाम हरिणादिक
और अपिशब्दसें मृगशीर्षं नक्षत्र और ढूँडना
यह मृग सन्निक है और प्रवाहमें तथा
जव नाम वेगमें और अपिशब्दसें विष्टादि-
कके बाहिर निकालनेमें वेग शब्द वर्त्तै है
॥ २० ॥ कौसुमेरेणु अर्थात् फूलसमन्वी
रेणु और स्नानीय अर्थात् स्नान करनेयोग्य
गन्ध चूर्णविशेष और आदिशब्दसें मुरतादि-
कके श्रमके दूर होनेके लिये कामशाखादि-
ककर कहाहुआ कर्पूरादिक चूर्णविशेष और
रज नाम धूलि और अपिशब्दसें उपराग इनमें
पराग शब्द वर्त्तै है, और गज नाम प्राथमिक
विषे नाग मातग शब्द वर्त्तै है अपिशब्दसें

काद्वेय तथा नागकेशर तथा नागवल्ली तथा
हास्तिनपुर तथा मेघ तथा मुस्तकादिकमें
नाग शब्द पुलिग है, और सीमे और लौगके
विषे नपुंसकलिग है और अपिशब्दसें
चाढालके विषे भी मातगशब्द वर्त्तै है तिल-
ककेविषे और अपिशब्दसें नेत्रके अन्तर्भा-
गमें तथा अगहीनमें अपाग शब्द वर्त्तै
है ॥ २१ ॥

सर्गः स्वभावनिर्मोक्षनिश्चयाध्यायसृ-
ष्टिपु ॥ योगः संनहनोपायध्यानसं-
गतियुक्तिपु ॥ २२ ॥ भोगः सुखे
रूपादिभूतावहेश्च फणकाययोः ॥
चातके हरिणे पुंसि सारङ्गः शबले
त्रिपु ॥ २३ ॥

स्वभाव नाम प्रकृति और निर्मोक्ष नाम
त्याग और निश्चय तथा अध्याय अर्थात्
काव्यादिकका विरामस्थान, और सृष्टिरचना
इनमें सर्ग शब्द वर्त्तै है सन्नहन कवच और
उपाय सामादिक और ध्यान अर्थात् चित्त-
वृत्तिका रोकना और सगति (सगम)
और युक्ति इत्यादिकमें योग शब्द वर्त्तै है
॥ २२ ॥ सुख और स्त्री हाथी घोडा
षादिककी भृति अर्थात् मोल पालनभरणमें
और अहि नाम सापके फणा तथा शरीरमें
भोग शब्द वर्त्तै है चातक (पपैया) और
हरिणमें और शबल नाम कर्चुरवणमें सारग
शब्द वर्त्तै है, त्रिणमें चातक और हरिणार्थ-
वाचक सारग शब्द पुलिगमें होता है, और शब-
लार्थम सारग शब्द त्रीनल्लिगमें होता है ॥ २३ ॥

कपौ च प्लवः शापे त्वभिषङ्गः प-
राभवे ॥ यानाद्यङ्गे युगः पुंसि युगं
युग्मे कृतादिषु ॥ २४ ॥ स्वर्गेषु प-
शुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले ॥ ल-
क्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौर्लिङ्गं
चिह्नशेषतोः ॥ २५ ॥ शृङ्गं प्रा-
धान्यसान्धोश्च वराङ्गं मूर्धगुह्ययोः ॥
भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नार्ककी-
र्तिषु ॥ २६ ॥

॥ इति गांताः ॥

कपि नाम वन्दरके विषे चकारमें मेंडक
तथा सारथि आदिकमें प्लवग शब्द वर्त्तै है.
शाप नाम गालीमें और पराभव (तिरस्कार)
में अभिषंग शब्द वर्त्तै है. यानादिकोंके
अंगमें अर्थात् रथ (गाडी) आदिकोंके
अंगमें पुंलिङ्गवाचक युग शब्द वर्त्तै है, और
युग्म नाम दोके विषे और कृतादि अर्थात्
सत्यवेतादिकमें और आदिशब्दसें हस्तचतु-
ष्टय और औषधभेदमें नपुंसकलिङ्गवाची
युग शब्द वर्त्तै है ॥ २४ ॥ स्वर्ग देवलोक
और इषु (घाण) और पशु अर्थात् गाय
बैल और वाच् (वाणी) और वज्र और
दिशा और नेत्र और घृणि (किरण)
और भू (पृथिवी) और जल इनदशोंमें
गो शब्द वर्त्तै है. यह शब्द लक्ष्यदृष्टि अर्थात्
प्रयोगके अनुसार करके स्त्रीपुंलिङ्गमें जानने
योग्य है. जैसें सुरभिके विषे गोशब्द स्त्रीलिङ्ग
है, और वृषभके विषे पुंलिङ्ग है, और

चिह्न तथा शेष अर्थात् लिङ्गेन्द्रिय इन
दोनोंमें लिङ्ग शब्द वर्त्तै है ॥ २५ ॥ प्राधान्य
प्रभुता और सानु नाम पर्वतकी चोटी और
चकारसें पशुके अंगमें शृङ्ग शब्द वर्त्तै है. मूर्धा
(मस्तक) और गुह्य नाम योनि इन दोनोंमें
वराङ्ग शब्द वर्त्तै है. श्री नाम संपदा शोभा
और काम (इच्छा) और माहात्म्य
(ऐश्वर्य) और वीर्य और यत्न (प्रयत्न)
और अर्क (सूर्य) और कीर्ति (यश)
इनमें भग शब्द वर्त्तै है ॥ २६ ॥

॥ इति गान्ताः ॥

परिघः परिघातेऽस्त्रेऽप्योघो वृन्देऽ-
म्भसां रये ॥ मूल्ये पूजाविधावर्षो-
ऽहोदुःस्वव्यसनेष्वघम् ॥ २७ ॥

त्रिष्विष्टेऽल्पे लघुः—

॥ इति घान्ताः ॥

इसके अनन्तर घान्तशब्दोंको कहते
हैं. परिघात यानी चारोंतरफसें मारनेमें
और अस्त्र लोहमय लघुडमें परिघ शब्द
वर्त्तै है, अपिशब्दसें योगभेदमेंभी जा-
नना. वृन्द नाम समूहमें और जलके प्रवाहमें
ओघ शब्द वर्त्तै है. मूल्य नाम मोल और
पूजाके विधानमें अर्घ शब्द वर्त्तै है. अहस्
नाम पाप और दुःख (जरा मरणादिक)
और व्यसन मृगया छूतादि इनमें अघ शब्द
वर्त्तै है ॥ २७ ॥ इष्ट मनोज्ञ और अल्प
नाम थोडेमें लघु शब्द वर्त्तै है

॥ इति घान्ताः ॥

काचाः शिक्पमृद्देदृष्टुजः ॥
विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः पावके
शुचिः ॥ २८ ॥ मास्यमात्ये चाप्युपधे
पुसि मेध्ये सिते त्रिषु ॥ अभिष्वङ्गे
स्पृहाया च गभस्तौ च रुचिः
स्त्रियाम् ॥ २९ ॥

॥ इति चांताः ॥

इसके अनन्तर चान्त शब्द कहते हैं शिक्प
नाम छीका और मृद्देद काच और दृष्टुज् अ-
र्थात् नेत्रोंका रोग यह तीनों काचसंज्ञिक हैं.
विपर्यास नाम विपरीतता और विस्तर विस्तार
और चकारसे प्रतारणमें प्रपञ्च शब्द होता है
॥ वक नाम अग्निमें भास नाम आपाठमें
और अमात्य (मन्त्री) में और अत्युपध
अर्थात् शुद्धचित्तमें और मेध्य नाम पवित्रमें
और सित नाम श्वेतमें शुचि शब्द वर्त्ते है
तिसमें शुचि शब्द अत्युपधपर्यन्त ती पुलि-
में होता है और मेध्यादिकमें तीनों लिंग-
विषे होता है अभिष्वङ्ग अर्थात् मिलाप

सन्ने भल्लुकेऽप्यच्छो गुच्छ स्तरुहारयो ॥
रिधानाश्चले कच्छो जलप्रान्ते विन्निप्रक ॥ १ ॥

इसके अनन्तर छान्त शब्दोंको क्षेपक होनेसे
स्पृणगीमे कहते हैं प्रसन्ननाम निर्मल ओर
ल्लुक नाम रीछमें अपिशब्दमें स्फटिकमें अ-
र्थात् वर्त्ते है, और स्तरुक नाम गुच्छमें और
रामे गुच्छ शब्द वर्त्ते है चलेके अन्तमें और
ल्लुके भान्तभागमें कच्छ शब्द वर्त्ते है तिसमें
ल्लु शब्द जलप्रान्तके विषे तीनों लिंग-
नाम है ॥ १ ॥

और स्पृहा (इच्छा) और गभस्ति
किरण और चकारसे प्रकाश और शोभाके
विषे रुचि शब्द वर्त्ते है यह शब्द स्त्रीलिंगमें
होता है ॥ २९ ॥

॥ इति चांताः ॥

केकिताक्ष्यावहिभुजौ दन्तविमाण्डजा
दिजाः ॥ अजा विष्णुहरच्छागा
गोष्ठाष्वनिवहा व्रजाः ॥ ३० ॥
धर्मराजौ जिनपमौ कुजौ दन्तेऽपि
न स्त्रियाम् ॥ वलजे क्षेत्रपूर्वारे वलजा
वल्लुदर्शना ॥ ३१ ॥

इसके अनन्तर जान्त शब्द कहते हैं
केकी नाम मोर और ताक्ष्य गरुड यह
दोनों अहिभुज संज्ञिक हैं दन्त नाम
दात और विम नाम ब्राह्मण क्षत्रिय
वैश्य और अहज पक्षी यह तीनों द्विज
संज्ञिक हैं विष्णु और हर (शिवजी)
और छाग अर्थात् बकरा यह तीनों अज
संज्ञिक हैं गोष्ठ अर्थात् गौओंका स्थान
और अघा (मार्ग) और निवह (समूह)
यह तीनों व्रज संज्ञिक हैं ॥ ३० ॥ जिन
(बुद्ध) और यम (यमराज) यह दोनों
धर्मराज संज्ञिक हैं और दन्त नाम हाथीके
दाँतमें अपिशब्दसे निकुज नाम सघनवनमें
कुज शब्द होता है यह शब्द स्त्रीलिंगमें नहीं
होता है, किन्तु पुनपुनकलिंगमें होता है क्षेत्र-
नाम खेत और पूर्वारे (नगरका दरवाजा)
यह दोनों वलज संज्ञिक हैं और वल्लुदर्शना

अर्थात् उत्तमदर्शनवाली स्त्री वलजा संज्ञिक है ॥ ३१ ॥

समे क्षमांशे रणेऽप्याजिः प्रजा स्या-
त्संततौ जने ॥ अञ्जौ शङ्खशशा-
ङ्कौ च स्वके नित्ये निजं त्रिषु ॥ ३२ ॥

सम क्षमांश अर्थात् समभूभागमें और
रण संग्राममें आजि शब्द वर्त्तते है. संतति
(सन्तान) और जन (मनुष्य) में
प्रजा शब्द वर्त्तते है. शंख और शशांक
(चंद्रमा) यह दोनों, और चकारसें
कमल अञ्ज संज्ञिक है. स्वक नाम अप-
नेमें और नित्यमें निज शब्द वर्त्तते है. यह
शब्द तीनों लिंगमें होता है ॥ ३२ ॥

॥ इति जान्ताः ॥

पुंस्यात्मनि प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो वाच्य-
लिङ्गकः ॥ संज्ञा स्याच्चेतना नाम
हस्ताद्यैश्वर्यसूचना ॥ ३३ ॥

॥ इति जान्ताः ॥

इसके अनन्तर जान्तशब्दोंको दिखाते हैं.
आत्मा नाम पुरुष और प्रवीण नाम चतुर

१ दोषज्ञौ वैद्यविद्वांसौ ज्ञो विद्वान्सोमजोऽपि
च ॥ विज्ञौ प्रवीणकुशलौ कालज्ञौ ज्ञानिकुकुटौ
१ यह श्लोक क्षेत्रज्ञ है. इसका अर्थ यह है, कि
वैद्य नाम चिकित्सा करनेवाला और विद्वान्
यह दोनों दोषज्ञ संज्ञिक हैं. और विद्वान् और
सोमज बुध यह दोनों ज्ञ संज्ञिक हैं. और प्रवीण
और कुशल यह दोनों विज्ञ संज्ञिक हैं और
ज्ञानी और कुकुट (मुरगा) यह दोनों कालज्ञ
संज्ञिक हैं.

इन दोनोंमें क्षेत्रज्ञ शब्द वर्त्तते है. तिसमें क्षेत्र-
ज्ञशब्द आत्माके विषे पुल्लिङ्ग है. और प्रवीणके
विषे वाच्यलिङ्ग यानी विशेष्यलिङ्ग होता है.
चेतना (बुद्धि) और हाथ भोयें नेत्रादि-
कोंकर अर्थ सूचना अर्थात् प्रयोजन जताना
यह दोनों संज्ञा संज्ञिक हैं ॥ ३३ ॥

॥ इति जान्ताः ॥

काकेभगण्डौ करटौ गजगण्डकटी
कटौ ॥ शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्च-
र्मणि महेश्वरे ॥ ३४ ॥ देवशिल्पि-
न्यपि त्वष्टा दिष्टं देवेऽपि न द्वयोः ॥
रसे कटुः कट्वकार्ये त्रिषु मत्सरती-
क्ष्णयोः ॥ ३५ ॥

इसके अनन्तर टान्त शब्दोंको कहते
हैं. काक और इभगंड अर्थात् हाथीका
कपोल यह दोनों करट संज्ञिक हैं.
गजगंड अर्थात् हाथीका कपोल और कटि
(कमर) यह दोनों कट संज्ञिक हैं. खलति
नाम रोगकरके निष्केश शिरवाला और
दुश्चर्म अर्थात् दुष्टत्वचावाला और महेश्वर
इनमें शिपिविष्ट शब्द वर्त्तते है ॥ ३४ ॥
देवशिल्पी अर्थात् विश्वकर्माके विषे और
अपिसब्दसें रविभेदेमें और काष्ठके छीलने-
वालेमें त्वष्टृ शब्द वर्त्तते है. देव नाम पूर्व
किये हुए कर्ममें अपिशब्दसें कालमें दिष्ट
शब्द वर्त्तते है. यह शब्द स्त्रीपुल्लिङ्ग दोनोंमें
नहीं होता. और जो कि दिष्ट शब्द कालार्थ-
वाचक है, वह पुल्लिङ्ग है. रस नाम पिप्पली-
आदिक रसभेदेमें पुल्लिङ्गवाची कटु शब्द

होता है, और अकार्य अर्थात् करनेके अयोग्यमें नपुसकलिंगवाची कटु शब्द वर्त्ते है और मत्सर और तीक्ष्णमें तीनों लिंगके विषे कटु शब्द होता है ॥ ३५ ॥

रिष्टं क्षेमाशुभाभावेष्वरिष्टे तु शुभाशुभे ॥ मायानिश्चलपत्रेषु कैतवानुतराशिषु ॥ ३६ ॥ अयोधने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् ॥ सूक्ष्मैलायां वृद्धिः स्त्री स्यात्कालेऽल्पे संशयेऽपि सा ॥ ३७ ॥ आत्युत्कर्षाश्रयः कोट्यो मूले लग्नकचे जटा ॥ व्युष्टिः फले समृद्धौ च दृष्टिज्ञानेऽक्षिण दर्शने ॥ ३८ ॥ इष्टियागेच्छयोः सृष्टं निश्चिते बहुनि त्रिषु ॥ कटे तु रुच्छ्रगहने दक्षामन्दागदेषु च ॥ ३९ ॥

पटुर्द्वौ वाच्यलिङ्गौ च

॥ इति टान्ताः ॥

क्षेम नाम कल्याण और अशुभ (अमंगल) और अभावमें रिष्ट शब्द वर्त्ते है और शुभ तथा अशुभ यह दोनों अरिष्ट सन्निक हैं तुशब्दसें स्मृतिकागृह तथा तक्र और आत्तव और मरणचिह्नमें भी अरिष्टशब्द वर्त्ते है माया अर्थात् औरसे और आकारका दीखना और निश्चल अविकार आकाशादिक, और यत्र नाम मृगवघनविशेष और कैतव (कपट) और अनृत (असत्य) और राशिसमूह ॥ ३६ ॥ और अयोधन (टोहके कूटनेका शस्त्रविशेष) और शैलशृंग अर्थात् पर्वतका शिखर

और सीराङ्ग यानी हलका अग्रभाग इन नौ वचनोंमें कूट शब्द वर्त्ते है यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुसकलिंगमें होता है सूक्ष्मैला अर्थात् छोटी इलायची और काल (कालभेद) और अल्प अर्थात् लेशमात्र और सशय (सदेह) इनमें स्त्रीलिंगवाचक वृद्धि शब्द वर्त्ते है ॥ ३७ ॥ आर्त्ति नाम धनुषका अग्रभाग और उत्कर्ष (प्रकर्ष) और अश्रिकोण यह तीनों कोटिसन्निक है और सत्त्वाभेदमें भी कोटि शब्द होता है मूल नाम जड़में और लग्नकच अर्थात् मिलेहुए केशमें जटा शब्द वर्त्ते है फल और सघृद्धि नाम सपदा इन दोनोंमें व्युष्टि शब्द वर्त्ते है ज्ञान तथा अक्षि नाम नेत्र और दर्शन इनमें दृष्टि शब्द वर्त्ते है ॥ ३८ ॥ याग नाम यज्ञ और इच्छा इन दोनोंमें इष्टि शब्द वर्त्ते है और निश्चित अर्थात् निश्चय किये हुऐमें और बहु अर्थात् बहुतमें सृष्ट शब्द वर्त्ते है यह शब्द तीनों लिंगमें होता है रुच्छ्र (दुःख) और गहन अर्थात् दुरधिगमात् प्राप्त यह दोनों कष्टसन्निक है दक्ष (चतुर) और अमद (तीक्ष्ण) और अगद (रोगहीन) इन तीनोंमें ॥ ३९ ॥

पटु शब्द वर्त्ते है यह दोनों कष्ट और पटु शब्द वाच्यलिंग यानी विशेष्यलिंग हैं

॥ इति टान्ता ॥

नीलकण्ठः शिवेऽपि च ॥

पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुसूलोऽन्तर्गृहं तथा ॥ ४० ॥ निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि ॥

त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि कनिष्ठोऽति-
युवाल्पयोः ॥ ४१ ॥

॥ इति ठान्ताः ॥

इसके अनन्तर ठान्त शब्दोंको कहते हैं। शिव नाम महादेवमें अपिशब्दसें मोरमें नीलकंठ शब्द वर्त्तै है। अन्तर्जठर अ-
थाव पेटके भीतरकी जगह और कुसूल नाम अन्नका घर और अन्तर्गृह अर्थात् घरकी बीचकी जगह इन शब्दोंमें कोष्ठ शब्द वर्त्तै है। यह शब्द पुल्लिङ्गमें होता है ॥ ४० ॥ निष्पत्ति नाम सिद्ध करना और नाश (अद-
र्शन) और अन्त (प्रध्वंस) यह तीनों निष्ठा-
संज्ञिक हैं। उत्कर्ष अर्थात् उत्कृष्टता और स्थिति नाम मर्यादा और दिशा इन तीनोंमें काष्ठा शब्द वर्त्तै है। अतिशस्त नाम अति-
श्रेष्ठमें और अपिशब्दसें अतिवृद्धमें और बड़े भ्रातामें और ज्येष्ठमासमें ज्येष्ठ शब्द वर्त्तै है। यह शब्द तीनों लिङ्गमें होता है। और अति युवा और अल्पमें कनिष्ठ शब्द वर्त्तै है, और अनुजके विषेभी कनिष्ठ शब्द होता है। यह शब्दभी तीनों लिङ्गमें होता है ॥ ४१ ॥

॥ इति ठान्ताः ॥

दण्डोऽस्त्री लगुडोऽपि स्याद्गुडो गोले-
क्षुपाकयोः ॥ सर्पमांसात्पशू व्याडौ
गोभूवाचस्त्रिधा इलाः ॥ ४२ ॥
क्ष्वेडा वंशशलाकाऽपि नाडी नाले-
ऽपि षट्क्षणे ॥ काण्डोऽस्त्री दण्डवा-
णाध्वर्गावसरवारिषु ॥ ४३ ॥

स्याद्गाण्डमश्वाभरणोऽमत्रे मूलवणिग्धने ॥

॥ इति डान्ताः ॥

इसके अनन्तर डान्त शब्द कहते हैं। लगुड नाम लाठीमें और अपिशब्दसें दमके विषे मानभेदमें यमराजमें सेनामें व्यूह-
भेदमें प्रकाण्डमें घोडामें कोणमें मन्थनमें अभिमानमें ग्रहमें सूर्यके पारिपार्श्वकमें दंड शब्द वर्त्तै है। गोल नाम मृत्तिकाआदिकका गुला और इक्षुपाक ऊखका विकार इन दोनोंमें गुड शब्द वर्त्तै है। सर्प और मांसके खानेवाला पशु व्याघ्र यह दोनों व्याड-
संज्ञिक हैं। डकारलकारकी सवर्णता होनेसे यह शब्द व्यालभी बोलाजाता है। गो (गौ) और भू (पृथिवी) और वाच् (वाणी) यह तीनों इडा इलासंज्ञिक हैं ॥ ४२ ॥ और वंश-
शलाका अर्थात् जो कि पींजरा तथा शूष आदिकके बनानेके लिये वांशकी शलाका है, वह क्ष्वेडासंज्ञिक है। अपिशब्दसें पुल्लिङ्ग-
वाची यह शब्द विषमें तथा स्त्रीलिङ्गवाची सिंहनादमें वर्त्तै है। नालमें और षट्क्षण अर्थात् छैक्षणोंकर मिलेहुए कालमें नाडी शब्द वर्त्तै है। अपिशब्दसें शिरादिकके विषेभी यह शब्द वर्त्तै है। दण्ड और वाण और अर्वा नाम नीच और वर्ग (विभाग) और अवसर (प्रस्ताव) और वारि (जल) इन छै शब्दोंमें काण्ड शब्द वर्त्तै है। यह शब्द स्त्रीलिङ्गवर्जित पुंनपुंसकलिङ्ग है ॥ ४३ ॥ अश्वाभरण अर्थात् घोडेका गहना और

अमत्र (पात्र) इन दोनोंमें भाड शब्द वर्त्तै है और मूलवर्णिके धनमेंभी यह शब्द वर्त्तै है.

॥ इति ढान्ता ॥

भृशप्रतिज्ञयोर्बाढं प्रगाढं भृशरुच्छ्र-
योः ॥ ४४ ॥ शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ
व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ ॥

॥ इति ढान्ताः ॥

इसके अनन्तर ढान्त शब्द कहते हैं भृश नाम
अत्यर्थ और प्रतिज्ञा नाम स्वीकार इन दोनोंमें
बाढ शब्द वर्त्तै है और भृश अत्यर्थ और
रुच्छ्र इन दोनोंमें प्रगाढ शब्द वर्त्तै है और
दृढमेंभी प्रगाढ शब्द होता है ॥ ४४ ॥ और शक्त
(समर्थ) और स्थूल यह दोनो दृढसन्निक
हैं यह शब्द तीनों लिगमें होता है विन्यस्त नाम
रक्ता हुआ और सहत इकट्ठा हुआ यह
दोनों व्यूढसन्निक है और यह शब्द पृथु-
लमें होता है

॥ इति ढान्ता ॥

भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे वाणो बलि-
सुते शरे ॥ ४५ ॥ कणोऽति-
सूक्ष्मे धान्याशे संघाते भ्रमथे ग-
णः ॥ पणो घृतादिपूत्सृष्टे भूतौ
मूल्ये वनेऽपि च ॥ ४६ ॥ मौर्व्या
द्रव्याश्रिते सत्त्वशौर्यसंघ्यादिके गु-
णः ॥ निर्व्यापारस्थितौ काटविशे-
पोत्सवयोः क्षणः ॥ ४७ ॥

इसके अनन्तर णान्त शब्द कहते हैं
अर्भक (बालक) मेंभी और स्त्रैणगर्भ

अर्थात् स्त्रीसबन्धो गर्भमें भ्रूण शब्द
वर्त्तै है बलिसुत नाम बलिके पुत्रमें
और शर (बाण) में वाण शब्द वर्त्तै
है ॥ ४५ ॥ अतिसूक्ष्ममें और धान्याश
अर्थात् धान्यके भागमें कण शब्द वर्त्तै है.
संघात नाम समूहमें और भ्रमथ नाम शिव-
जीके अनुचरमें गण शब्द वर्त्तै है घृत नाम
फासोंकरके क्रीडामें और आदिशब्दसे मेघ-
कुङ्कुटादिकके युद्धादिकमें और उत्सृष्ट
त्यागेहुए अर्थमें और भृति नाम मजदूरीमें
और मूल्य नाम मोलमें और धनमें पण
शब्द वर्त्तै है और चकारसे जूआके दावमें
और खरीदने योग्य शाकादिकमेंभी यह
शब्द वर्त्तै है ॥ ४६ ॥ मौर्वी नाम
प्रत्यक्षामें और द्रव्याश्रित रसगन्धादिकमें
और सत्त्व शौर्य संघ्यादिकमें, अर्थात् सत्त्व
रज आदिकमें और शौर्य चातुर्यादिकमें
और सधिविग्रहादिकमें और आदिशब्दसे
इन्द्रिय रज्जुआदिकमें गुण शब्द होता है
निर्व्यापारस्थितमें और काटविशेष अर्थात्
मुहूर्त्तके बारहवें भागमें, और उत्सव पुत्र-
जन्मादिकमें क्षण शब्द होता है और पर्वक-
वियेंभी यह शब्द होता है ॥ ४७ ॥

वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुवौ वर्णं
तु वाऽक्षरे ॥ अरुणो भास्करेऽपि
स्यादर्शभेदेऽपि च त्रिषु ॥ ४८ ॥
स्थाणुः शर्वेऽप्यथ द्रोणः काके प्या-
जौ रवे रणः ॥ ग्रामणीर्नापिते पुंसि
श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु ॥ ४९ ॥

द्विजादि (ब्राह्मणक्षत्रियादिक) और शुक्लादि (शुक्लपीतादिक) और स्तुति (स्तव) इनमें वर्ण शब्द वर्तते हैं. और अक्षरके विषे वर्ण शब्द विकल्पकरके नपुंसकीलग है. भास्कर नाम सूर्यके विषे और वर्णभेदमें अपिशब्दसे सूर्यके सारथिमें और अव्यक्तराग तथा संध्यारागमें अरुण शब्द वर्तते हैं. तिसमें वर्णभेदमें जो अरुण शब्द होता है, वह तीनों लिंगके विषे वर्तते हैं ॥ ४८ ॥ शर्व नाम शिवजी और अपिशब्दसे स्तंभादिक स्थाणु संज्ञिक हैं. काकमें और अपिशब्दसे अश्वत्थामाके पितामें और परिमाण विशेषमें द्रोण शब्द होता है, आजि नाम संग्राममें और रव नाम शब्दमें रण शब्द वर्तते हैं. नापित नाम नाईके विषे ग्रामणी शब्द पुल्लिंगमें होता है. और श्रेष्ठ नाम मुख्य और ग्रामाधिप नाम ग्रामके मालिकमें ग्रामणी शब्द तीनों लिंगमें होता है ॥ ४९ ॥

ऊर्णा मेषादिलोम्नि स्यादावर्ते चान्तरा भ्रुवोः ॥ हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या ॥ ५० ॥ त्रिषु पाण्डौ च हरिणः स्थूणा स्तम्भेऽपि वेश्मनः ॥ तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे जुगुप्सा करणे घृणे ॥ ५१ ॥

मेषादिक नाम मेष शश उष्ट्रादिकोंके लोम नाम बालमें और भौओंके बीचके आवर्तमें ऊर्णा शब्द वर्तते हैं. मृगी और सुवर्णकी प्रतिमा और जो कि हरिता अर्थात्

हरिद्वर्ण है, वह हरिणीसंज्ञिक है ॥ ५० ॥ पांडु नाम पांडुरवर्णमें चकारसे मृगभेदमें हरिण शब्द वर्तते हैं, यह शब्द तीनों लिंगमें होता है. वेश्म नाम घरके स्तंभमें अपिशब्दसे लोहकी प्रतिमामें स्थूणा शब्द वर्तते हैं. स्पृहा (वांछा) और पिपासा (प्यास) यह दोनों तृष्णासंज्ञिक हैं. जुगुप्सा (निन्दा) और करुणा (दया) यह दोनों घृणासंज्ञिक हैं ॥ ५१ ॥

वणिक्पथे च विपणिः सुरा प्रत्यक् च वारुणी ॥ करेणुरिभ्यां स्त्री नेभे द्रविणं तु बलं धनम् ॥ ५२ ॥ शरणं गृहरक्षितोः श्रीपर्ण कमलेऽपि च ॥ विषाभिमरलोहेषु तीक्ष्णं क्लीबे स्वरे त्रिषु ॥ ५३ ॥ प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृषु ॥ करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि ॥ ५४ ॥ प्राण्युत्पादे संसरणमसंवाधचमूगतौ ॥ घण्टापथेऽथ वान्तास्ते समुद्रिरणमुज्जये ॥ ५५ ॥

वणिक्पथ (बाजार) चकारसे दुकानमें विपणि शब्द वर्तते हैं. प्रत्यक् नाम पश्चिम दिशा और सुरा (मदिरा) वारुणीसंज्ञिक हैं. इभी नाम हथिनीके विषे करेणु शब्द स्त्रीलिंग है, और इभ नाम हाथीके विषे करेणु शब्द पुल्लिंग है. बल (पराक्रम) और धन द्रविण संज्ञिक है ॥ ५२ ॥ गृह (घर) और रक्षिता नाम रक्षाकरनेवालेमें

शरण शब्द वर्त्ते है कमलमें और अपिशब्दसें
अरणिमें श्रीपर्ण शब्द वर्त्ते है विषमें और
अभिपर युद्धमें और लोहमें तीक्ष्ण शब्द
वर्त्ते है यह शब्द नपुसकलिगमें होता है
और जो कि खर नाम तिग्ममें तीक्ष्ण शब्द
वर्त्ते है, वह तीनों लिगोंमें होता है ॥ ५३ ॥
हेतु नाम कारण और मर्यादा सीमा और
शास्त्र और इयत्ता नाम परिच्छेद और
प्रमाता जाननेवाला इनमें प्रमाण शब्द वर्त्ते है,
साधकतम अर्थात् कियाकी सिद्धिमें प्रह-
लहेतु और क्षेत्र नाम सस्यका उत्पत्तिस्थान
और गात्र नाम शरीर और इन्द्रिय इनमें,
और अपिशब्दसें कर्मादिकमें करण शब्द
वर्त्ते है ॥ ५४ ॥ प्राण्युत्पाद नाम प्राणियोंके
जन्ममें और निर्वाधसेनाके चलनेमें और
घटापथ राजमार्गमात्रमें ससरण शब्द वर्त्ते है
वाताज्ज नाम खाकर त्यागे हुए अन्नमें और
उन्नय नाम जलपात्रादिके ऊपर लेजानेमें
समुद्रिण शब्द वर्त्ते है ॥ ५५ ॥

अतस्त्रिषु विषाणं स्पात्पशुभृङ्गोभद-
न्तपोः ॥ प्रवणं क्रमनिष्क्रोर्षां प्रहे ना
तु चतुष्पथे ॥ ५६ ॥ संकीर्णौ नि-
चिताशुद्धाविरिणं शून्यमूपरम् ॥

॥ इति णान्ता ॥

१ सेतो च उरणो वेणी नदीभेदे कचोद्ये,
सेतु नाम पुल औपधिविशेष और चका-
रसें प्रकारमें वरण गुम्ह वर्त्ते है नदीभेद ओर
कचोद्यय अर्थात् वालोंके समूहमें वेणी शब्द
वर्त्ते है यह आधा श्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है

इससें पैरे जो कि णान्त शब्द कहे जावै-
में, वह तीनों लिगोंमें होवैगे पशुशृग नाम
पशुके सींग और इभदन्त नाम हाथीके
दाँत इन दोनोंमें विषाण शब्द वर्त्ते है क्रम-
सें नीची हुई उर्वी नाम पृथिवीमें और प्रह-
नाम नम्रमें और चतुष्पथ नाम चह्वाटेमें
प्रवण शब्द वर्त्ते है जो कि प्रवण शब्द चतु-
ष्पथार्थवाची है, वह पुलिग है ॥ ५६ ॥
गिचित नाम व्याप्त और अशुद्ध यह दोनों
सकीर्णसन्निक है, शून्य (निराश्रयदेश)
और ऊपर स्थलविशेष यह दोनों इरिण-
सन्निक है

॥ इति णान्ता ॥

देवसूर्यौ विवस्वन्तौ सरस्वन्तौ नदा-
र्णवौ ॥ ५७ ॥

इसके अनन्तर तान्त शब्दोंको कहते हैं
देव और सूर्य यह दोनों विवस्वत्सन्निक
हैं नद नाम सरिदिशेष अर्णव (समुद्र)
यह दोनों सरस्वत्सन्निक है ॥ ५७ ॥

पक्षिताक्षर्यौ गरुत्मन्तौ शकुन्तौ भा-
सपक्षिणौ ॥ अश्रुन्यातौ धूमकेतू
जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ ५८ ॥ हस्तौ
तु पाणिनक्षत्रे मरुतौ पवनामरौ ॥
यन्ता हस्तिपके सूते भर्ता धातरि
पोटरि ॥ ५९ ॥

पक्षी और ताक्ष्य (गरुड) यह दोनों
गस्त्वसन्निक है भास (पक्षिभेद) पक्षी
(पक्षिमात्र) यह दोनों शकुन्त सन्निक है

अग्नि और उत्पात नाम धूममयी तारा यह दोनों धूमकेतुसंज्ञिक हैं. और मेघ तथा पर्वत यह दोनों जीमूतसंज्ञिक हैं ॥ ५८ ॥ पाणि नाम हाथ और नक्षत्र अर्थात् अश्विनीसे लेकर तेरहवाँ नक्षत्र यह दोनों हस्तसंज्ञिक हैं. पवन और अमर (देवता) यह दोनों मरुतसंज्ञिक हैं. हस्तिपक हाथीवानमें और सूत सारथिमें यन्त्र शब्द वर्त्ते है, धाता नाम धारणकरनेवाला और पोटा पुष्ट करनेवाला इन दोनोंमें भर्तृ शब्द वर्त्ते है ॥ ५९ ॥

यानपात्रे शिशौ पोतः प्रेतः प्राण्यन्तरे मृते ॥ ग्रहभेदे ध्वजे केतुः पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥ स्थपतिः कारुभेदेऽपि भूमिधूमिधरे नृपे ॥ मूर्धाभिषिक्तो भूपेऽपि ऋतुः स्त्रीकुसुमेऽपि च ॥ ६१ ॥

यानपात्र और शिशु नाम बालकमें पोत शब्द वर्त्ते है. प्राण्यन्तर नाम भूतान्तरमें और मृत नाम मरेहुएमें प्रेत शब्द वर्त्ते है. ग्रहभेद और ध्वज नाम पताकामें केतु शब्द वर्त्ते है. पार्थिव नाम राजा और तनय (पुत्र) में सुत शब्द वर्त्ते है ॥ ६० ॥ कारुभेद नाम शिल्पिभेदमें और अपिशब्दसें जीवेष्टि नाम यज्ञके करनेवालेमें तथा कंचुकधारीमें स्थपति शब्द वर्त्ते है. भूमिधर पृथिवीके धारण करनेवालेमें तथा नृप नाम राजामें भूमृत् शब्द वर्त्ते है. भूप नाम पृथिवीपतिमें और अपिशब्दसें प्रधानमें तथा क्षत्रियमात्रमें

मूर्धाभिषिक्त शब्द वर्त्ते है. स्त्रीकुसुम अर्थात् स्त्रीके रजमें अपिशब्दसें हेमन्तादिकमें ऋतु शब्द वर्त्ते है ॥ ६१ ॥

विष्णावप्यजिताव्यक्तौ सूतस्त्वटारि सारथौ ॥ व्यक्तः प्राज्ञेऽपि दृष्टान्तावुभौ शास्त्रनिदर्शने ॥ ६२ ॥ क्षत्ता स्यात्सारथौ द्वाःस्थे क्षत्रियायां च शूद्रजे ॥ वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रकारे कात्स्न्यवार्तयोः ॥ ६३ ॥

विष्णुमें और अपिशब्दसें शिवजीमें अजित अव्यक्त यह दो शब्द वर्त्ते हैं. त्वष्टा नाम शिल्पिभेदमें और सारथिमें सूत शब्द वर्त्ते है. प्राज्ञ नाम पंडितमें अपिशब्दसें स्फुटमें व्यक्त शब्द वर्त्ते है. शास्त्र (तर्कादिक) और निदर्शन (उदाहरण) यह दोनों दृष्टान्तसंज्ञिक हैं ॥ ६२ ॥ सारथिमें और द्वाःस्थ नाम द्वारपाल इचोढीवानमें और क्षत्रियजातिस्त्रीके विषैं शूद्रसें उत्पन्न हुए पुत्रमें चकारसें दासोपुत्रमें क्षत्त शब्द वर्त्ते है. प्रकरण (प्रस्ताव) और प्रकार (भाव) और कात्स्न्य (साकल्य) और वार्त्ता इनमें वृत्तान्त शब्द होता है ॥ ६३ ॥

आनर्तः समरे नृत्यस्थाननीवृद्धिशेषयोः ॥ कृतान्तो यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु ॥ ६४ ॥ श्लेष्मादिरसरक्तादि महाभूतानि तद्गुणाः ॥ इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः ॥ ६५ ॥

समर नाम सयाम और नृत्यस्थान (नाच-
नेकी जगह) और नीवृद्धिशेष अर्थात् देश-
विशेष इनमें आनर्त्त शब्द वर्त्तते है यम
(धर्मराज) और सिद्धान्त और दैव पूर्व
कियाहुआ कर्म और अकुशल कर्म पाप
इनमें कृतान्त शब्द होता है ॥ ६४ ॥
श्लेष्मादि अर्थात् कफपित्तादिक और रस-
रक्तादिक अर्थात् रस रुधिर वसा मज्जादिक
और महाभूत अर्थात् पृथिव्यादिक और
तद्रूप अर्थात् महाभूतोंके गुण गंधादिक,
और इन्द्रिय (चक्षुरादिक) और अश्म-
विकृति (मन शिलादिक) और शब्दयोनि
(भू सत्ताया) इत्यादिक धातुसंज्ञिक है ॥ ६५ ॥

कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृपस्यासर्व-
गोचरे ॥ कामसूत्रार्थयोः शक्ति-
मूर्तिः काठिन्यकाययोः ॥ ६६ ॥
विस्तारवल्ल्योर्ब्रततिर्वसती रात्रिवे-
श्मनोः ॥ क्षयार्चयोरपचितिः साति-
र्दानावसानयोः ॥ ६७ ॥

असर्वगोचर अर्थात् सबके न देखने-
योग्य जो राजाका कक्षावर अर्थात् राज-
धानी स्थानविशेष है, वह उसमें, और
अपिशब्दसे अत्र पुरमें शुद्धान्त शब्द वर्त्तते है
कामसू नाम बरछी और सामर्थ्य इन दोनोंमें
शक्ति शब्द वर्त्तते है काठिन्य (दृढता)
और काय (शरीर) इन दोनोंमें मूर्ति
शब्द वर्त्तते है ॥ ६६ ॥ विस्तारमें और
वलि नाम बेलिमें ब्रतति शब्द वर्त्तते है

रात्रि और वेश्म नाम घर इन दोनोंमें
वसति शब्द वर्त्तते है क्षय (हानि)
अर्चा (पूजा) इन दोनोंमें अपचिति शब्द
वर्त्तते है दान और अवसान अतमें साति
शब्द वर्त्तते है ॥ ६७ ॥

आर्तिः पीडाधनुष्कोट्योर्जातिः सा-
मान्यजन्मनोः ॥ प्रचारस्पन्दयो
रीतिरीतिर्द्विम्बप्रवासयोः ॥ ६८ ॥
उदयेऽधिगमे प्राप्तिस्त्रेता त्वग्नित्रये
युगे ॥ वीणाभेदेऽपि महती भूतिर्भ-
स्मनि संपदि ॥ ६९ ॥

पीडा और धनुष्कोटि यानी धनुषका
अग्रभाग इन दोनोंमें आर्ति शब्द वर्त्तते है
सामान्य (साधारण) और जन्म इन
दोनोंमें जाति शब्द होता है प्रचार नाम
लोकाचार और स्पन्द नाम क्षिरना इन
दोनोंमें रीति शब्द होता है, द्विम्ब नाम सात-
प्रकारका विष्टव और प्रवासमें ईति शब्द
वर्त्तते है ॥ ६८ ॥ उदय नाम उत्पत्ति और
अधिगम (लाभ) इन दोनोंमें प्राप्ति शब्द
वर्त्तते है, अग्नित्रय नाम दक्षिणगार्हपत्याहव-
नीयाख्य अग्निमें और युगमें त्रेता शब्द
वर्त्तते है वीणाभेद अर्थात् नारदीवीणामें
अपिशब्दसे महत्वयुक्त भार्यादिकमें महती
शब्द होता है भस्म और सपदोंमें तथा
अणिमादिकके विषे भूति शब्द होता है ॥ ६९ ॥
नदीनगर्योर्नागानां भोगवत्पथ संगरे ॥
सङ्गे सभाया समितिः क्षयवासावपि

क्षिती ॥ ७० ॥ रवेरर्चिश्च शस्त्रं
च वह्निज्वाला च हेतयः ॥ जगती
जगति छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि ७१
पङ्क्तिश्छन्दोऽपि दशमं स्यात्प्रभावेऽ-
पि चायतिः ॥ पत्तिर्गतौ च मूले तु
पक्षतिः पक्षभेदयोः ॥ ७२ ॥ प्रकृ-
तियोंनिलिङ्गे च कैशिक्याद्याश्च वृत्त-
यः ॥ सिकताः स्युर्वालुकापि वेदे
श्रवसि च श्रुतिः ॥ ७३ ॥

नागोंकी नदी और नगरी इन दोनोंके-
विषेँ भोगवती शब्द होता है. संगर नाम
संग्रामके विषेँ होता है. संग नाम संगमके विषेँ
और सभाके विषेँ समिति शब्द होता है. क्षय
(नाश) और वास (निवास) यह दोनों
और अपिशब्दसेँ पृथिवी आदिक क्षिति-
संज्ञिक हैं. ॥ ७० ॥ सूर्यकी अर्चि नाम
ज्वाला और शस्त्र और अग्निकी ज्वाला
हेतिसंज्ञिक हैं. जगत लोक और छन्दवि-
शेष और क्षिति (पृथिवी) अपिशब्दसेँ जन
इत्यादिकमें जगती शब्द वर्त्तै है ॥ ७१ ॥
दशम छंद अर्थात् दशअक्षरके पादवाला
छंद और अपिशब्दसेँ आवलि पंक्तिसंज्ञिक
हैं. प्रभावमें अपिशब्दसेँ आनेवाले कालमें
और संयममें और दीर्घतामें आयति शब्द
वर्त्तै है. गतिमें और चकारसेँ वीरभेदमें तथा
सेनाभेदमें पत्ति शब्द वर्त्तै है. पक्ष नाम
मासार्धवाची और पक्षीका अवयववाची
यह दो भेदके जो पक्ष हैं तिनके मूल

नाम जडमें पक्षति शब्द वर्त्तै है. भाव यह
है कि पक्ष नाम मासार्धका मूल प्रतिपदा
तिथि पक्षति संज्ञिक है. और पक्ष नाम
पक्षीके पक्षकी मूल (जड) पक्षतिसंज्ञिक
है ॥ ७२ ॥ योनिमें और लिंगमें चकारसेँ
प्रधानतामें और अमात्यादिकमें और
स्वभावमें प्रकृति शब्द वर्त्तै है. कैशिक्या-
दिक वृत्तिसंज्ञिक हैं. आदिशब्दसेँ आर-
भटी सात्वती भारती शब्द जाननें. और
चकारसेँ जीविकामें और सूत्रके अर्थ
खोलनेमेंभी वृत्तिशब्द वर्त्तै है. वालुका
नाम वालू और अपिशब्दसेँ सिकतायुक्त देश
सिकतासंज्ञिक हैं. तिसमें सिकता शब्द
वालुकाके विषेँ बहुवचनान्त तथा स्त्रीलिंग है.
वेदमें और श्रवस् नाम कर्णमें और चका-
रसेँ वाक्तामें तथा सुननेमें श्रुति शब्द वर्त्तै
है ॥ ७३ ॥

वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च
योषिति ॥ गुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि
धृतिधारणधैर्ययोः ॥ ७४ ॥ बृहती
क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदे महत्यपि ॥
वासिता स्त्रीकरिण्योश्च वार्ता वृत्तौ
जनश्रुतौ ॥ ७५ ॥

उत्पन्न किया है अत्यन्त अनुराग
जिसके विषेँ, ऐसी स्त्रीमें वनिता शब्द वर्त्तै है.
क्षितिव्युदास नाम पृथिवीके छिद्रमें और
अपिशब्दसेँ रक्षामें गुप्ति शब्द वर्त्तै है. और
धारणमें तथा धैर्यमें धृति शब्द वर्त्तै है.

॥ ७४ ॥ क्षुद्रवार्त्ताकी औषधिविशेष और छन्दभेद अर्थात् नवम छन्द और महती नाम विपत्ता यह तीनों बृहती सन्निक हैं स्त्री और करिणी नाम हथिनीके विषै वासिता शब्द वर्त्ते है वृत्ति (जीविका) और जनश्रुति (वृत्तान्त) इन दोनोंमें वार्त्ता शब्द वर्त्ते है ॥ ७५ ॥

वार्त्तं फल्गुन्यरोगे च त्रिष्वप्सु च घृतामृते ॥ कलधौतं रूप्यहेम्नोर्निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः ॥ ७६ ॥ श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्गुणपर्याप्तयोः कृतम् ॥ अत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ॥ ७७ ॥

फल्गु नाम अन्तार तुच्छ और अरोग-नाम रोगरहित इन दोनोंमें वार्त्त शब्द वर्त्ते है यह शब्द तीनों लिंगमें होता है और अप नाम जलोंके विषै घृत अमृत शब्द वर्त्ते है रूप्य नाम चादी ओर हेम (सुवर्ण) इन दोनोंमें कलधौत शब्द वर्त्ते है हेतु (कारण) और लक्ष्म नाम चिन्ह इन दोनोंमें निमित्त शब्द वर्त्ते है ॥ ७६ ॥ शास्त्र और अवधृत नाम श्रवण किया इन दोनोंमें श्रुत शब्द वर्त्ते है और गुण नाम प्रथम गुणमें और पर्याप्त यानी अल्पमर्थमें कृत शब्द वर्त्ते है और जो कि जीवानपेक्षि साहसरूप कर्म है, वह और महाभीति अर्थात् महद्गुण यह दोनों अत्याहित सन्निक हैं ॥ ७७ ॥

युक्ते क्षमादावृते भूतं प्राण्यतीते संमे त्रिषु ॥ वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले ॥ ७८ ॥ महद्राज्यं चावगीतं जन्ये स्याद्वर्हिते त्रिषु ॥ श्वेतं रूप्येऽपि रजतं हेम्नि रूप्ये सिते त्रिषु ॥ ७९ ॥

युक्त नाम न्याय्य और क्षमादिक अर्थात् पृथिवी अप तेज वायु आकाश और ऋत नाम सत्य और प्राणी नाम जन्तु और अतीत नाम भूतकाल और सम नाम सदृश इनमें भूत शब्द वर्त्ते है यह तीनों लिंगोंमें होता है पद्य नाम श्लोक और चरित्र और अतीत नाम भूतकाल और दृढ और निस्तल नाम गोल इनमें वृत्त शब्द वर्त्ते है. तिसमें अतीतादिक अर्थमें वृत्त शब्द तीनों लिंगोंमें होता है ॥ ७८ ॥ राज्य और चकारसे बृहत् यह दोनों महत्सन्निक है जन्य नाम मनुष्योंकी नि दाँमें और वर्हित (निन्दित) में अवगीत शब्द वर्त्ते है यह शब्द तीनों लिंगोंमें होता है. रूप्य नाम चादीमें अपिशब्दसें शुक्लमें श्वेत शब्द वर्त्ते है हेम नाम सुवर्णमें और रूप्य नाम चादीमें और सित नाम शुक्लवर्णमें रजत शब्द वर्त्ते है यह शब्द तीनों लिंगोंमें होता है इस रजतशब्दसें परै तान्त शब्द तीनों लिंगोंमें होते है ॥ ७९ ॥

त्रिष्वतो जगदिद्रेऽपि रक्तं नील्यादिरागि च॥ अवदातः सिते पीते शुद्धे

वद्भार्जुनौ सितौ ॥ ८० ॥ युक्तेऽति-
संस्कृते मर्षिण्यभिनीतोऽथ संस्कृतम् ॥
कृत्रिमे लक्षणोपेतोऽप्यनन्तोऽनवधा-
वपि ॥ ८१ ॥

इंग नाम जंगममें और अपिशब्दसें भुव-
नमें जगत् शब्द वर्त्तै है. और नील्यादि-
रागि अर्थात् जो कि नील्यादिक रागयुक्त है
वह रक्त संज्ञिक है. और चकारसें रक्तवर्ण
और कुंकुम तथा ताम्रमेंभी रक्तशब्द वर्त्तै है.
सित नाम श्वेत और पीत (पीला) और
शुद्ध इन तीनोंमें अवदात शब्द वर्त्तै है.
वद्ध नाम बँधा हुआ और अर्जुन शुक्ल यह
दोनों सित संज्ञिक हैं ॥ ८० ॥ युक्त
नाम न्याययोग्यमें अतिसंस्कृत नाम अति-
श्रेष्ठमें और मर्षी नाम सहनेवालेमें अभिनीत
शब्द वर्त्तै है. कृत्रिम नाम बनायेहुए घटा-
दिकमें और लक्षणोपेत नाम शास्त्रोक्तलक्ष-
णोपेत नाम शास्त्रोक्तलक्षणोंसें युक्तमें संस्कृत
शब्द वर्त्तै है. अनवधि नाम निःसीमामें और
अतिशब्दसें शेषादिकमें अनन्त शब्द वर्त्तै
है ॥ ८१ ॥

ख्याते हृष्टे प्रतीतोऽभिजातस्तु कुलजे
बुधे ॥ विविक्तौ पूतविजनौ मूर्च्छितौ
मूढसोच्छ्रयौ ॥ ८२ ॥ द्वौ चाम्ल-
परुषौ शुक्तौ शितौ धवलमेचकौ ॥
सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्य-
र्हिते च सत् ॥ ८३ ॥

ख्यात नाम प्रसिद्धमें और हृष्ट नाम प्रस-
न्नमें प्रतीत शब्द वर्त्तै है. और कुलज नाम
कुलीनमें और बुध नाम पंडितमें अभिजात
शब्द वर्त्तै है. पूत नाम पवित्र और विजन
नाम एकान्त यह दोनों विविक्त संज्ञिक हैं.
मूढ नाम मोहकों प्राप्त हुआ और सोच्छ्रय
यानी वृद्धियुक्त यह दोनों मूर्च्छित संज्ञिक-
हैं. अम्ल (चूक) और परुष नाम निष्ठुर
यह दोनों शुक्त संज्ञिक हैं. धवल नाम उज्ज्वल
और मेचक कालावर्ण यह दोनों शिति
संज्ञिक हैं. सत्य नाम सोच और साधु
अर्थात् मान्य और विद्यमान और प्रशस्त
श्रेष्ठ और अभ्यर्हित (पूजित) इनमें सत्
शब्द वर्त्तै है ॥ ८३ ॥

पुरस्कृतः पूजितेऽरात्यभियुक्तेऽग्रतः
कृते ॥ निवातावाश्रयावातौ शस्त्रा-
भेद्यं च वर्म यत् ॥ ८४ ॥ जातो-
न्मद्भवृद्धाः स्युरुच्छ्रिता उत्थिता-
स्त्वमी ॥ वृद्धिमत्प्रोद्यतोत्पन्ना आ-
हतौ सादरार्चितौ ॥ ८५ ॥

॥ इति तान्ताः ॥

पूजित नाम पूजेहुएमें और अरात्यभियुक्त
अर्थात् वैरीकर दवाये हुएमें और अगारी
क्रिये हुएमें पुरस्कृत शब्द वर्त्तै है. आश्रय
नाम निवास और निवात नाम पवनवर्जित
यह दोनों निवात संज्ञिक हैं. और जो कि
वर्म (कवच) शस्त्रसें नहीं कटने योग्य है
वहभी निवात संज्ञिक है ॥ ८४ ॥ जात

नाम उत्पन्न हुआ उन्नद्ध नाम गर्वा हुआ
और प्रवृद्ध नाम बड़ा हुआ यह तीनों उच्छ्रित
सत्तिक हैं और यह वृद्धिमान तथा प्रोद्यत
तथा उत्पन्न शब्द उत्थित सत्तिक है साद-
रे नाम आदरयुक्त और अर्चित पूजित यह
दोनों आदृत सत्तिक है ॥ ८५ ॥

॥ इति तान्ता ॥

अर्थोऽभिधेयैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिपु॥
निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जटे
गुरौ ॥ ८६ ॥ समर्थस्त्रिपु शक्तिस्थे
संबद्धार्ये हितेऽपि च ॥ दशमीस्थौ
क्षीणरागवृद्धौ वीथी पदव्यपि ॥ ८७ ॥

इसके अनन्तर थान्तशब्दोंको कहते हैं.
अभिधेय नाम वाच्य और रै नाम वन और
वस्तु नाम तत्व और प्रयोजन और निवृत्ति
इनमें अर्थ शब्द वर्त्ते है निपान नाम कूप,
जटाशय आगम नाम बोद्धशास्त्रसे अथवा
शास्त्र इन दोनोंमें तथा ऋषियोंके सेवे हुए
जल्मे और गुरु (उपाध्याय) में तीर्थ शब्द
वर्त्ते है ॥ ८६ ॥ शक्तिस्थ नाम शक्ति
युक्तमें सबद्धार्य नाम सबद्ध हुए अर्थमें और
हित नाम अनुकूलमें समर्थ शब्द वर्त्ते है यह
शब्द तीनों लिंगोंमें होता है क्षीणराग और वृद्ध
(अनिवृद्ध) यह दोनों शब्द दशमीस्थ स-
त्तिक है पदयो (मार्ग) और अपिशदसे
पक्ति वीथी सत्तिक है ॥ ८७ ॥

आस्थानीयत्नयोरास्था प्रस्थोऽस्त्री
सानुमानयोः ॥

॥ इति थान्ताः ॥

अभिप्रायवशौ छन्दावद्धौ जीमूतव-
त्सरौ ॥ ८८ ॥ अपवादौ तु निन्दाज्ञे
दायादौ सुतवान्धवौ ॥ पादा र-
श्म्यङ्घ्रिनुर्पाशाश्चन्द्राग्न्यर्कास्तमो-
नुदः ॥ ८९ ॥

आस्थानी (सभा) और यत्न (प्रयत्न)
इन दोनोंमें आस्था शब्द वर्त्ते है सानु नाम
पर्वतका अग्रभाग और मान- (परिमाण)
भेद इन दोनोंमें प्रस्थ शब्द वर्त्ते है यह
शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुसकलिंग है

॥ इति थान्ता ॥

इसके अनन्तर दातशब्दोंको कहते है अ-
भिप्राय (वाशय) और वश नाम आवीन यह
दोनों छन्द सत्तिक है जीमूत (मेघ) और
वत्सर (वर्ष) यह दोनों अन्द सत्तिक है
॥ ८८ ॥ निन्दा और आज्ञा अपवाद सत्तिक
है सुत नाम पुत्र और वाधव यह दोनों
दायाद सत्तिक है रश्मि (किरण) और अग्नि
(चरण) और तुर्पाश नाम चौथा भाग

१ शास्त्रद्वयिणयोर्ग्रन्थ सन्ध्याधारे म्यिनो
मृतो.

२ शास्त्र और त्रयिण नाम धनमें यस्य शब्द
वर्त्ते है आधारमें (स्थितिमें) और मृति नाम
मरणमें मर्या शब्द वर्त्ते है यह अर्द्धश्लोक
क्षेपक है

यह तीनों पाद संज्ञिक हैं. चंद्र (चंद्रमा)
और अग्नि और अर्क (सूर्य) यह तीनों
तमोनुद् संज्ञिक हैं. ॥ ८९ ॥

निर्वादो जनवादेऽपि शादो जम्वा-
लशष्पयोः ॥ आरावे रुदिते त्रात-
र्याक्रन्दो दारुणे रणे ॥ ९० ॥
स्यात्प्रसादोऽनुरागेऽपि सूदः स्याद्व्य-
जनेऽपि च ॥ गोष्ठाध्यक्षेऽपि गो-
विन्दो हर्षेऽप्यामोदवन्मदः ॥ ९१ ॥

जनवाद नाम लोकापवादमें और अपि-
शब्दसें निर्णय कीए हुए वादमें निर्वाद शब्द
वर्त्तते हैं. जंबाल नाम कींच और शष्प नाम
छोटी २ घास इन दोनोंमें शाद शब्द वर्त्तते
है. आराव नाम शब्दमें और रुदित नाम दुखि-
तके शब्दमें और त्राता नाम रक्षकमें और
दारुण रण अर्थात् घोर संग्राममें आक्रन्द शब्द
वर्त्तते है ॥ ९० ॥ अनुराग (अनुग्रह) में
अपिशब्दसें प्रसन्नता और काव्यगुणमें प्र-
साद शब्द वर्त्तते है. व्यंजनमें और अपिश-
ब्दसें रसाई करनेवालेमें सूद शब्द वर्त्तते है.
गोष्ठाध्यक्ष नाम गौओंके स्थानके स्वामीमें
अपिशब्दसें बृहस्पति तथा श्रीकृष्णमें गो-
विन्द शब्द वर्त्तते है. हर्षमें आमोद मद् यह
दो शब्द वर्त्तते हैं. अपिशब्दसें आमोद शब्द
अतिमनके हरनेवाले गंधमेंभी वर्त्तते है. और
अपिशब्दसें मद् शब्द गर्व और हाथीके मद्
तथा वीर्यमेंभी वर्त्तते हैं ॥ ९१ ॥

प्राधान्ये राजलिंगे च वृषाङ्गे ककुदो-
ऽस्त्रियाम् ॥ स्त्री संविज्ज्ञानसंभाषा-
क्रियाकाराजिनामसु ॥ ९२ ॥ धर्मे
रहस्युपनिषत्स्यादृतौ वत्सरे शरत् ॥
पदं व्यवसितत्राणस्थानलक्ष्माङ्घ्रिव-
स्तुषु ॥ ९३ ॥

प्राधान्य और राजलिंग अर्थात् राजाके
चिन्ह छत्र चामरादिक और वृषाङ्ग नाम
बैलके अंगमें ककुद् शब्द वर्त्तते है. यह शब्द
स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होता है. ज्ञान
और संभाषा नाम संभाषण और क्रियाकार
(कर्मनियम) और आजि नाम युद्ध और
नाम संज्ञा इनके विषे स्त्रीलिंग संविद् शब्द
वर्त्तते है ॥ ९२ ॥ धर्म और रहस्य नाम ए-
कान्त इनमें उपनिषद् शब्द वर्त्तते है. ऋतु-
नाम ऋतुभेद और वत्सर नाम वर्ष इनमें श-
रद् शब्द वर्त्तते है. व्यवसिति नाम व्यवसाय
निश्चय और त्राण (रक्षा) और स्थान
और लक्ष्म (चिन्ह) और अङ्घ्रि (चरण)
और वस्तु इनमें पद शब्द वर्त्तते है ॥ ९३ ॥

गोष्पदं सेविते माने प्रतिष्ठा कृत्यमा-
स्पदम् ॥ त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू मृदू
चातीक्ष्णकोमलौ ॥ ९४ ॥ सूढा-
ल्पापटुनिर्भाग्या मन्दाः स्युर्दौ तु
शारदौ ॥ प्रत्यग्राप्रतिमौ विद्वत्सुप्र-
गल्भौ विशारदौ ॥ ९५ ॥

॥ इति दान्ताः ॥

सेवित नाम गौओंकरके सेवित हुए देशमें और मान नाम गौओंके स्वरूपमाणमें गोष्पद शब्द वर्त्ते है और प्रतिष्ठा (स्थान) और कृत्य (कार्य) यह दोनों आस्पद सन्निक है। इससें पैर वर्गसमाप्तिपर्यन्त दान्त शब्द तीनो लिंगोंमें होते है इष्ट नाम सुन्दर और मधुर यह दोनों स्वादु सन्निक है और अतीक्षण अर्थात् जो कि तीखा न हो, और कोमल जो कि करी न होय यह दोनों मृदु सन्निक है ॥ ९४ ॥ मूढ नाम मूर्ख और अल्प (थोड़ा) और अपटु (अतीक्षण) और निर्भाग्य अर्थात् भाग्यरहित यह मद सन्निक है प्रत्यग्र (अतिनवीन) और अप्रतिम अर्थात् जो कि प्रगल्भ न हो यह दोनों शारद सन्निक है विद्वान् और प्रगल्भ यह दोनों विशारद सन्निक है ॥ ९५ ॥

॥ इति दाताः ॥

व्यामो वटश्च न्यग्रोधावुत्सेधः काय उन्नतिः ॥ पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ च तौ ॥ ९६ ॥ परिधिर्यज्ञि-
यतरोः शाखायामुपसूर्यके ॥ बन्धकं व्यसनं चेतःपीडाधिष्ठानमाधयः ॥ ९७ ॥

इसके अनन्तर धान्तशब्दोंको कहते हैं व्याम नाम फैलाई हुई दोनों भुजाओंका कुण्डल और वट नाम बड़ यह दोनों न्यग्रोध सन्निक हैं काय नाम शरीर उन्नति (उँचाई) यह दोनों उत्सेध सन्निक है पर्याहार अर्थात् ध्यानादिक और मार्ग नाम रास्ता

यह दोनों विवध वीवध सन्निक हैं ॥ ९६ ॥ यज्ञियतरु नाम यज्ञसबन्धी वृक्ष पलाशादिक तिसकी शाखाके विपै और उपसूर्यक नाम सूर्यके समीपवर्ती मडल परिवेष्टाख्यमें परिधि शब्द वर्त्ते है साहूकारके घर ऋणके मोचनपर्यन्त विश्वासके लिये जो वस्तु रक्खा जाता है वह बध सन्निक है व्यसन नाम आपदा और चेतःपीडा अर्थात् मानसी व्यथा और अधिष्ठान नाम अध्यासन यह तीनों आधि सन्निक है ॥ ९७ ॥

स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च समा-
धयः ॥ दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्र-
कृत्यादिविनश्वरे ॥ ९८ ॥ मुख्या-
नुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने ॥
विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि परिच्छेदे बिले-
ऽवधिः ॥ ९९ ॥

समर्थ नाम योग्य अयोग्यकी परीक्षा और नीवाक नाम वनधान्यादिकोंके विपै जनोंका आदरातिशय और नियमअगीकार यह तीनों समाधि सन्निक हैं दोषके सिद्ध करनेमें और जो कि प्रकृति प्रत्यय आगम आदेशके विपै विनश्वर अर्थात् नाशवान इत्तसन्निक अक्षर हो उसमें ॥ ९८ ॥ और जो कि मुख्यपिशादिकके पिछारी चलता है उस शिशु नाम बालकमें और प्रकृतके अनुवर्तनमें अर्थात् किये हुए कार्यके करनेकी निवृत्तिके अभावमें अनुबन्ध शब्द वर्त्ते है विष्णुमें और चंद्रमामें विधु शब्द

वर्त्ते है. परिच्छेद नाम सीमा और विल नाम छिद्र इनमें अवधि शब्द वर्त्ते है ॥ ९९ ॥

विधिर्विधाने दैवेऽपि प्रणिधिः प्रार्थने चरे ॥ बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि स्कन्धः समुदयेऽपि च ॥ १०० ॥ देशे नद-विशेषेऽब्धौ सिन्धुर्ना सरिति स्त्रियाम् ॥ विधा विधौ प्रकारे च साधू रम्येऽपि च त्रिषु ॥ १०१ ॥

विधानमें और दैव नाम पूर्वके शुभाशु-भकर्ममें और अपिशब्दसें ब्रह्मामें विधि शब्द वर्त्ते है. प्रार्थनामें और चर नाम हल-कारमें प्रणिधि शब्द वर्त्ते है. बुध वृद्ध शब्द पंडितमें वर्त्ते हैं. अपिशब्दसें बुध नाम चंद्र-पुत्रमें वर्त्ते है और वृद्ध नाम बूढेमें वर्त्ते है. समुदय अर्थात् समूहमें अपिशब्दसें कांडमें और राजामें और कौधेमें स्कंध शब्द वर्त्ते है. ॥ १०० ॥ देश नाम देशभेदमें और नदविशेषमें और अब्धि—(समुद्र) में पुं-लिंग सिन्धु शब्द होता है. और सरित् नाम नदीके विषैं सिंधु शब्द स्त्रीलिंगमें होता है. वि-धि नाम विधानमें और प्रकारमें विधा शब्द वर्त्ते है. रम्य नाम सुन्दरमें और अपिशब्दसें वार्धुपिक और सज्जनमें साधु शब्द वर्त्ते है. यह शब्द तीनों लिंगोंमें होता है ॥ १०१ ॥

वधूर्जाया स्त्रुषा स्त्री च सुधा लेपोऽ-मृतं स्नुही ॥ संधा प्रतिज्ञा मर्यादा श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृहा ॥ १०२ ॥ मधु मद्ये पुष्परसे क्षौद्रेऽप्यन्धं तम-

स्पपि ॥ अतस्त्रिषु समुन्नद्धौ पण्डि-तंमन्यगर्वितौ ॥ १०३ ॥ ब्रह्मव-न्धुरधिक्षेपे निर्देशेऽथावलम्बितः ॥ अविदूरेऽप्यवष्टब्धः प्रसिद्धौ ख्यात-भूषितौ ॥ १०४ ॥

॥ इति धान्ताः ॥

जाया (भार्या) और स्त्रुषा (पुत्रकी स्त्री) और स्त्री नाम स्त्रीमात्र वधू संज्ञिक हैं. लेप अर्थात् जिसकरके देवस्थानादिक लीपे जाते हैं वह, और अमृत और स्नुही नाम सेहुंड-वृक्ष यह तीनों सुधा संज्ञिक हैं. प्रतिज्ञा नाम स्वीकार और मर्यादा संधा संज्ञिक हैं. और संप्रत्यय (आदर) और स्पृहा (कांक्षा) श्रद्धा संज्ञिक है ॥ १०२ ॥ मद्य नाम म-दिरामें और फूलके रसमें और क्षौद्र नाम सहतमें मधु शब्द वर्त्ते है. तमस् नाम अंध-कारमें और अपिशब्दसें नेत्रहीनमें अंध शब्द वर्त्ते हैं. इस्सें पैरें धातवर्गपर्यन्त शब्द तीनों लिंगमें होते हैं. पंडितंमन्य अर्थात् जो कि आत्माकों पण्डित मानता है वह और गर्वित यह दोनों समुन्नद्ध संज्ञिक हैं ॥ १०३ ॥ अधिक्षेप अर्थात् निन्दाप्रयो-गमें और निर्देशमें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंका ब्रह्मबन्धु नाम होता है. अवलम्बित नाम आश्रित और अविदूर नाम समीपवर्त्ती और अपिशब्दसें बँधा हुआभी अवष्टब्ध संज्ञिक है. ख्यात नाम विख्यात और भूषित यह दोनों प्रसिद्ध संज्ञिक हैं ॥ १०४ ॥

॥ इति धान्ताः ॥

सूर्यवह्नी चित्रभानू भानू रश्मिदिवा-
करौ ॥ भूतात्मानौ धातृदेहौ मूर्ख-
नीचौ पृथग्जनौ ॥ १०५ ॥ ग्रावाणौ
शैलपाप्राणौ पत्रिणौ शरपक्षिणौ ॥
तरुशैलौ शिखरिणौ शिखिनौ वह्नि-
वर्हिणौ ॥ १०६ ॥

इसके अनन्तर नान्तशब्दोंको दिखाते हैं
सूर्य और वह्नि नाम अग्नि यह दोनों चित्र-
भानु सन्निक है रश्मि (किरण) और
दिवाकर (सूर्य) भानु सन्निक है धातृ-
नाम ब्रह्मा और देह भूतात्मन् सन्निक हैं
और मूर्ख और नीच पृथग्जन सन्निक है
॥ १०५ ॥ शैल (पर्वत) और पाप्राण
नाम पत्थर यह दोनों ग्रावन् सन्निक
है शर (बाण) और पक्षी यह दोनों
पक्षिन् सन्निक है तरु नाम वृक्ष और
शैल (पर्वत) यह दोनों शिखिन् सन्निक
है वह्नि (अग्नि) और वर्हिन् (मोर)
यह दोनों शिखिन् सन्निक हैं ॥ १०६ ॥

प्रतिपन्नावुभौ लिप्तापग्रहावथ सा
दिनौ ॥ दौ सारथिहयारोहौ वाजि-
नोऽश्वेषुपक्षिणः ॥ १०७ ॥ कुलेऽ-
प्यभिजनो जन्मभूम्यामप्यथ हाय
ना ॥ वर्षार्चिर्ब्रह्मिहेमाश्च चन्द्राङ्ग-
का विरोचना ॥ १०८ ॥

लिप्ता (चाला) और उपग्रह नाम
अनुकूल करना यह दोनों प्रतिपत्न सन्निक
हैं सारथि नाम रथादिकके हाँकेनेवाला और

हयारोह अर्थात् घोड़ेका सवार यह दोनों
सादिन् सन्निक है और अश्व (घोड़ा)
और इषु (बाण) और पक्षी यह तीनों
वाजिन् सन्निक है ॥ १०७ ॥ कुल नाम
वशमें और जन्मभूमि अर्थात् जन्मके
स्थानमें और अपिशब्दसें कुल मुख्यमें
अभिजन शब्द वर्त्ते है वर्ष और अर्चि नाम
ज्वाला वा किरण और ब्रह्मिहेमा यह तीनों
हायन् सन्निक है चद्र और अग्नि और
अर्क (सूर्य) यह तीनों विरोचन सन्निक
है ॥ १०८ ॥

कुलेऽपि वृजिनो विश्वकर्माकंसुरशि-
ल्पिनोः ॥ आत्मा पत्नो धृतिर्बुद्धिः
स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च ॥ १०९ ॥
शक्रो घातुकमत्तेभो वर्षुकाब्दो घना-
घनः ॥ घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते
निरन्तरे ॥ ११० ॥

और कुशमें वृजिन शब्द वर्त्ते है अपि-
शब्दसें पाप तथा टेढ़ेके विषे वृजिन शब्द
नपुसकलिंग है अर्क नाम सूर्य और सुर-
शिल्पी नाम देवशिल्पी इन दोनोंमें विश्वकर्मन्
शब्द वर्त्ते है यत्न और धृति (धारणा) और
बुद्धि और स्वभाव ब्रह्म (परमात्मा) और वर्ष्म
(शरीर) यह आत्मन् सन्निक हैं ॥ १०९ ॥ शक्र
नाम इन्द्र और घातुक मत्तेभ अर्थात् मारने-
वाला मत्तवाला हाथी और वर्षुकाब्द अर्थात्
वर्षनेवाला मेघ यह सब घनाघन सन्निक हैं
मेघमें और मूर्तिगुण—(काठिन्य) में पुलिग
घन शब्द होता है और मूर्त्त नाम कठिनमें

और निरन्तर नाम घनेमें घनशब्द तीनों-
लिंगके विषे होता है ॥ ११० ॥

अभिमानोऽर्थादिदपे ज्ञाने प्रणयहिं-
सयोः ॥ इनः सूर्ये प्रभौ राजा मृगा-
ङ्गे क्षत्रिये नृपे ॥ १११ ॥ वाणि-
न्यौ नर्तकीदूतयौ स्रवन्त्यामपि वाहि-
नी ॥ ह्यादिन्यौ वज्रतडितौ वन्दा-
यामपि कामिनी ॥ ११२ ॥

अर्थादि अर्थात् धनपशुकुलगुणादिक
करके जो दर्प नाम गर्व है, उसमें और
ज्ञानमें और प्रणय नाम प्रेममें और हिंसामें
अभिमान शब्द वर्त्तै है. सूर्यमें इन शब्द
वर्त्तै है. प्रभु नाम स्वामीमें और मृगांक नाम
चंद्रमामें और क्षत्रियमें और नृप नाम नर-
पतिमें राजन् शब्द वर्त्तै है. ॥ १११ ॥
नर्तकी (नाचनेवाली) और दूती यह
दोनों वाणिनी संज्ञिक हैं. स्रवती नाम नदी
और अपिशब्दसे सेनामें वाहिनी शब्द वर्त्तै
है. वज्र नाम कुलिश और तडित् नाम बिजुली
यह दोनों ह्यादिनी संज्ञिक हैं. वन्दा नाम
वृक्षके ऊपर उत्पन्न हुई लताविशेष यानी
अमरवेलि इसमें और अपिशब्दसे विलासि-
नीस्त्रीमें कामिनी शब्द वर्त्तै है. ॥ ११२ ॥

त्वग्देहयोरपि तनुः सूनाऽधोजिह्वि-
कापि च ॥ क्रतुविस्तारयोरस्त्री वि-
तानं त्रिषु तुच्छके ॥ ११३ ॥ मन्दे-
ऽथ केतनं कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे ॥

वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्रः प्र-
जापतिः ॥ ११४ ॥

त्वचा और देह इन दोनोंमें और अपि-
शब्दसे विरल तथा कृश और अल्पमें तनु
शब्द वर्त्तै है. अधोजिह्विका नाम गलकंठिका
यानी घांटी और अपिशब्दसे पुत्री और
वधस्थान सूना संज्ञिक है. क्रतु नाम यज्ञ
और विस्तार फैलाव इन दोनोंमें स्त्रीलिंग
वर्जित वितान शब्द होता है. और तुच्छक
नाम शून्य और मंदके विषे वितान शब्द
तीनों लिंगोंमें होता है. ॥ ११३ ॥ कृत्यमें
और केतु नाम ध्वजामें और उपनिमन्त्रण
यानी निवासमें केतन शब्द वर्त्तै है. वेद
(ऋग्वेदादि) और तत्त्व (चैतन्य) और
तप यह तीनों नपुंसलिंगवाची ब्रह्मन् संज्ञिक
हैं. और विप्र (ब्राह्मण) और प्रजापति ब्रह्मा
यह पुल्लिंगवाची ब्रह्मन् संज्ञिक हैं ॥ ११४ ॥

उत्साहने च हिंसायां सूचने चापि
गन्धनम् ॥ आतञ्जनं प्रतीवापजवना-
प्यायनार्थकम् ॥ ११५ ॥ व्यञ्जनं
लाञ्छनं श्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि ॥
स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धे पश्वहि-
पक्षिणाम् ॥ ११६ ॥

उत्साहन (उत्साह करनेमें) और
हिंसामें और सूचन नाम जतानेमें गंधन
शब्द वर्त्तै है. प्रतीवाप नाम दूधआदिकमें
तक्रादिकका डालना और जवन (वेग)
और आप्यायन (तृप्त करना) इन अर्थों-

वाला आतचन शब्द है ॥ ११५ ॥ लाछ-
न नाम चिन्ह और श्मश्रु (हाडी) और
निष्ठान नाम भोजन और अवयव (भेद)
इन अर्थोंमें व्यजन शब्द होता है लोकवाद
-जाम लोकनिन्दामें और पशु सर्प पक्षियोंके
युद्धमें कौलीन शब्द वर्त्तते है ॥ ११६ ॥

स्पादुद्यानं निःसरणे वनभेदे प्रयो-
जने ॥ अवकाशे स्थितौ स्थानं क्री-
डादावपि देवनम् ॥ ११७ ॥ उत्था-
नं पौरुषे तत्रे संनिविटोद्गमेऽपि च ॥
व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽ-
पि च ॥ ११८ ॥

नि सरण नाम ग्रहादिकसें निकलनेमें
और वनभेद यानी उपवनमें और प्रयोज-
नमें उद्यान शब्द वर्त्तते है अवकाशमें और
स्थितिमें स्थान शब्द वर्त्तते है क्रीडाके विषे
और आदिशब्दसें व्यवहारमें तथा जीव-
नेकी इच्छा आदिकमें परिदेवन शब्द वर्त्तते
है ॥ ११७ ॥ पौरुष नाम पुरुषार्थमें और
तत्र नाम कुटुम्बकृत्यमें और बैठे हुएके उठनेमें
अपिशब्दसें पुस्तकमें तथा रणमें तथा मल-
रोगमें उद्यममें उत्थान शब्द वर्त्तते है प्रति-
रोध तिरस्कार और विरोधके आचरणमें और
अपिशब्दसें स्वातन्त्र्यकृत्यमें व्युत्थान शब्द
वर्त्तते है ॥ ११८ ॥

मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्येऽर्थदा-
पने ॥ निर्वर्तनोपकरणानुव्रज्यासु च
साधनम् ॥ ११९ ॥ निर्यातनं वैर-

शुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च ॥ व्य-
सनं विपदि अंशे दोषे कामजको-
पजे ॥ १२० ॥

मारण नाम पाराभादिक धातुओंके मार-
नेमें और मृतसंस्कार अर्थात् मृतकके अ-
ग्निदाहमें और गति नाम गमनमें और द्रव्य-
नाम धनमें और अर्थदापन नाम धनादि-
कके दिवावनेमें निर्वर्तन नाम अर्थके सिद्ध
करनेमें और उपकरण नाम परिकर वा उपा-
यमें और अनुव्रज्या नाम पिछारी चलनेमें
और अपिशब्दसें सेना तथा भेदमें साधन
शब्द वर्त्तते है ॥ ११९ ॥ वैरशुद्धिमें और
दान नाम त्यागमें और न्यासार्पण अर्थात्
धरोहर सौपनेमें निर्यातन शब्द वर्त्तते है विप-
द नाम विपत्तिमें भ्रश नाम नाशमें और का-
मज कोपज दोष अर्थात् शिकार जुआ स्त्री
मदिरापान कामजदोषमें और वाक्पारुष्या-
दिक कोपजदोषमें व्यसन शब्द वर्त्तते है १२०

पक्षमाक्षिलोन्नि किजल्के तन्वाद्यशेऽ-
प्यणीयसि ॥ तिथिभेदे क्षणे पर्व व-
र्त्म नेत्रच्छदेऽध्वनि ॥ १२१ ॥ अ-
कार्यगुह्ये कौपीनं मैथुनं संगतौ रते ॥
प्रधानं परमात्मा धीः प्रज्ञानं बुद्धि-
चिह्नयोः ॥ १२२ ॥

अक्षिलोम अर्थात् नेत्रके चालमें और
किजल्क नाम केसरमें और अति अल्प तनु-
आदिकके अशमें यानी सूत आदिकके अ-
तिसूक्ष्म अशमें पक्ष्मन् शब्द वर्त्तते है तिथि-

भेद (अष्टमी अमावसी पौर्णमासी) आदिक तिथियोंमें और क्षण नाम उत्सवमें पर्वन् शब्द वर्त्तते है। नेत्रच्छद नाम नेत्रके ढकनेवाले चर्मपुटमें और अध्वा नाम मार्गमें वर्त्मन् शब्द वर्त्तते है ॥ १२१ ॥ अकार्य नाम नहीं करने-योग्यमें तथा गुह्य नाम उपस्थ इंद्रियमें कौपीन शब्द वर्त्तते है। संगति नाम भार्यादिकसंबन्धमें और रत नाम सुरतमें मैथुन शब्द वर्त्तते है। परमात्मा (परमेश्वर) और धी (बुद्धि) प्रधान संज्ञिक हैं। बुद्धि और चिन्ह इन दोनोंमें प्रज्ञान शब्द वर्त्तते है ॥ १२२ ॥

प्रसूनं पुष्पफलयोर्निधनं कुलनाश-
योः ॥ क्रन्दने रोदनाह्वाने वर्ष्म दे-
हप्रमाणयोः ॥ १२३ ॥ गृहदेहत्वि-
द्प्रभावा धामान्यथ चतुष्पथे ॥ सं-
निवेशे च संस्थानं लक्ष्म चिह्नप्रधान-
योः ॥ १२४ ॥

पुष्प और फल इन दोनोंके विषे प्रसून शब्द वर्त्तते है। कुल और नाश इन दोनोंमें निधन शब्द वर्त्तते है। रोदन नाम रोना और आव्हान नाम बुलाना यह दोनों क्रन्दन संज्ञिक हैं। देह और प्रमाण इन दोनोंमें वर्ष्मन् शब्द वर्त्तते है ॥ १२३ ॥ गृह और त्विष (प्रभा) और प्रभाव यह चार धामन संज्ञिक हैं। चतुष्पथ नाम चहूटेमें। और सन्निवेश (अंगविभागमें) संस्थान शब्द वर्त्तते है। और चकारसें मरणमें तथा आकृतिमेंभी सन्निवेश शब्द वर्त्तते है। चिन्ह और प्रधान इन दोनोंमें लक्ष्मन् शब्द वर्त्तते है ॥ १२४ ॥

आच्छादने संपिधानमपवारणमित्यु-
भे ॥ आराधनं साधने स्थादवाप्तौ
तोषणेऽपि च ॥ १२५ ॥ अधिष्ठानं
चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि ॥ रत्नं
स्वजातिश्रेष्ठेऽपि वने सलिलका-
नने ॥ १२६ ॥

संपिधान नाम छिपना और अपवारण नाम वस्त्रादिकसें ढकना यह दोनो आच्छा-
दन संज्ञिक हैं। साधन नाम सिद्ध करनेमें और अवाप्ति नाम लाभमें और तोषण नाम तुष्टिमें आराधन शब्द वर्त्तते है ॥ १२५ ॥ चक्र नाम पहिया और पुर (नगर) और प्रभाव और अध्यासन नाम दवाकर बैठनेमें अधिष्ठान शब्द वर्त्तते है। स्वजातिश्रेष्ठ नाम जो कि अपनी जातिमें श्रेष्ठ उसमें और अपिशब्दसें मणिमेंभी रत्न शब्द वर्त्तते है। सलिल नाम जल और कानन नाम वन यह दोनों वन संज्ञिक हैं ॥ १२६ ॥

तलिनं विरले स्तोके वाच्यलिङ्गं त-
थोत्तरे ॥ समानाः सत्समैके स्युः पि-
शुनौ स्तलमूचकौ ॥ १२७ ॥ हीन-
न्यूनावूनगह्यौ वेगिशूरौ तरम्बिनौ ॥
अभिपन्नोऽपराद्धोऽभिग्रस्तव्यापद्म-
तावपि ॥ १२८ ॥

॥ इति नान्ताः ॥

१लेख्ये भूम्यादिदानार्थं यातनाज्ञा च शा-
सनम् । निदानमवसाने च सार्थे वार्धुषिके
धनौ ॥ १ ॥ कक्षापटेपि कौपीनं न ना खेदे

विरल नाम वेगरा और स्तोक (अल्प) इन दोनोंमें तलिन शब्द वर्त्ते है यह शब्द वाच्यलिङ्ग अर्थात् विशेष्यलिङ्ग है और जैसे कि यह शब्द विशेष्यलिङ्ग है वैसे उत्तर (अगारो) आनेवाले नातवर्ग समाप्तिपर्यन्त वाच्यलिङ्ग है सत् (पडित) और सम (सदृश) और एक यह तीनों समान सन्निक है खल (दुर्जन) और सूचक (चुगल) यह दोनों पिथुन सन्निक है ॥ १२७ ॥ ऊन (अल्प) और गहं (निन्दायोग्य) यह दोनों हीन न्यून सन्निक है वेगी (वेगयुक्त) और शूर (बली) यह दोनों तरस्विन् सन्निक है अपराद्ध (अपराधवाला) और अभिग्रस्त नाम बैरीकर दबाया हुआ और व्यापद्रव अर्थात् प्राप्तहुई विपत्तिवाला यह सब अभिपन्न सन्निक है ॥ १२८ ॥

॥ इति नात्वा ॥

पि वेदना ॥ शुम्भ वऽलेथ भार्यापि जातिदोषे-
ऽपि लाछनम् ॥ २ ॥

यह दो श्लोक नान्तप्रकरणमें क्षेपक हैं

पृथिवी आदिकके दानके वास्ते लिखनेयोग्यमे यातना शब्द वर्त्ते है और आज्ञा शासन सन्निक है और अवसानमें निदान शब्द वर्त्ते है और सार्थ नाम धनयुक्त और वार्धुविक नाम व्योहरम धनिन् शब्द वर्त्ते है ॥ १ ॥ काखके पल्लमें कौपीन शब्द वर्त्ते है और खेदके विषे वेदना शब्द पुलिङ्ग नहीं है किन्तु खनपुसकलिंग है और बलमे शुम्भ शब्द वर्त्ते है और भार्या और जातिदोषमें लाछन शब्द वर्त्ते है ॥ २ ॥

कटापो भूषणे बर्हे तूणीरे संहताव-
पि ॥ परिच्छदे परीवापः पर्युप्तौ स-
लिलस्थितौ ॥ १२९ ॥ गोधुग्गो-
ष्ठपती गोपौ हरविष्णू वृपाकपी ॥
वाष्पमूष्माश्रु कशिपु त्वन्नमाच्छाद-
नं द्वयम् ॥ १३० ॥

इसके अनन्तर पान्त शब्द कहते है भूषण नाम गहनेमात्रमें और बर्ह नाम मोर-
पांत्वमें और तूणीर नाम तरकसमें और सह-
ति नाम समूहमें और अपिशब्दसें काचीमें क-
लाप शब्द वर्त्ते है परिच्छद नाम पट मटप आ-
दिक उपकरणमें और पर्युप्ति अर्थात् चारोंओ-
रसें बनेमें और सलिलस्थिति अर्थात् जलके
आधारमें परीवाप शब्द वर्त्ते है ॥ १२९ ॥
गोधुह नाम गौओंका दूहनेवाला और गोष्ठ-
पति गौओंके स्थानका मालिक यह दोनों
गोप सन्निक है हर नाम शिव और विष्णु
यह दोनों वृपाकपि सन्निक हैं ऊष्म नाम
गरम और अश्रु नाम आँसू यह दोनों
वाष्प सन्निक है अथवा ऊष्माश्रु अर्थात्
जो कि गरम आँसू है वह वाष्प सन्निक
है अन्न (भोजन) और आच्छादन
(वस्त्र) यह दोनों कशिपु सन्निक हैं यह
शब्द स्त्रीलिङ्गवर्जित पुनपुसकलिंगमें होता
है क्योंकि अगारी कहाहुआ अस्त्रिया यह
पद कशिपु और तत्प इन दोनोंके विषे
अन्वित है ॥ १३० ॥

तल्पं शय्याद्वदारेषु स्तम्बेऽपि विट-
पोऽस्त्रियाम् ॥ प्रातरूपस्वरूपाभिरू-
पा बुधमनोज्ञयोः ॥ १३१ ॥ भेद्य-
लिङ्गा अमी कूर्मी वीणाभेदश्च क-
च्छपी ॥ कुतपो मृगरोमोत्थपटे चा-
ह्लोऽष्टमैऽशकैः ॥ १३२ ॥

॥ इति पान्ताः ॥

शय्या नाम पत्यंक और अट्ट (अटारी)
और दारा (स्त्री) इनके विषै तल्प शब्द वर्त्ते है.
स्तंभ नाम दृणादिकके गुच्छामें अपिशब्दसें
विस्तार तथा शाखामें विटप शब्द वर्त्ते है.
यह तीनों शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसक-
लिंगमें होते हैं. बुध नाम पंडित और मनोज्ञ
नाम सुन्दर इन दोनोंमें प्रातरूप स्वरूप

१ खर्वे पुंसि रेफः स्यात्कुत्सिते वा-
च्यलिंगकः, शिफा शिखायां सरिति मांसिका-
यां च मातरि ॥ १ ॥ शफं मूले तरुणां स्याद्ब्रवादीनां
खुरेऽपि च । गुंफः स्याद्गुंफने वाहोरलंकारे च
कीर्तितः ॥ २ ॥

यह दोश्लोक क्षेपक हैं इनका अर्थ यह है—

खर्वण नाम रकाके विषै रेफ शब्द पुंलिंगमें
होता है और कुत्सित (निन्दितके) विषै रेफ-
शब्द वाच्यलिंग यानी विशेष्यलिंग है शिखा
नाम चोटीके विषै और सरित नाम नदीके विषै
और मासिका नाम जटामांसीके विषै और
माताके विषै शिफा शब्द वर्त्ते है ॥ १ ॥ और बृक्षोक्ती
जडमें और गौ आदिक पशुओंके खुरमें शफ-
शब्द वर्त्ते है और गुंफन नाम गूहनेमें और
भुजाओंके गहनेमें गुफ शब्द वर्त्ते है ॥ २ ॥

॥ इति पान्ताः ॥

अभिरूप शब्द वर्त्ते हैं. यह तीनों शब्द
भेद्यलिंग अर्थात् विशेष्यलिंग हैं ॥ १३१ ॥
कूर्मी नाम कच्छपी और वीणाभेद अर्थात्
सरस्वतीकी वीणा कच्छपी संज्ञिक है. जो
कि हरिणके रोमसें उत्पन्न हुआ पट नाम
वस्त्र है उसमें और दिनके अष्टम भागमें
कुतुप शब्द वर्त्ते है ॥ १३२ ॥

॥ इति पान्ताः ॥

अन्तराभवसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो दिव्य-
गायने ॥ कम्बुर्ना वलये शङ्खे द्वि-
जिह्वौ सर्पसूचकौ ॥ १३३ ॥ पूर्वोऽन्य-
लिङ्गः प्रागाह पुंवहुत्वेऽपि पूर्वजान् ॥
॥ इति वान्ताः ॥ कुम्भौ वटेभमूर्धाशौ
डिम्भौ तु शिशुवालिशौ ॥ १३४ ॥

इसके अनन्तर वकारकी सवर्णता होनेसें
वान्त और वान्त शब्दकों कहते हैं. अंतरा-
भवसत्त्व अर्थात् जो कि जन्म और मर-
णके बीचमें स्थित हुआ प्राणी है उसमें
और अश्व नाम घोडामें और दिव्य गान
करनेवाले विश्वावसुआदिकमें गन्धर्व शब्द
वर्त्ते है. वलय नाम पहुचीमें और शंखमें
पुंलिंग कंबु शब्द वर्त्ते है. सर्प और सूचक
नाम चुगल यह दोनों द्विजिह्व संज्ञिक हैं
॥ १३३ ॥ यदि जो पूर्वशब्द प्राक्
अर्थको कहै तो अन्यलिंग अर्थात् विशे-
ष्यलिंग होता है. और यदि जो पूर्वशब्द
पूर्वज पितामह आदिककों कहै तो पुंलिंग
और बहुवचनमें होता है.

॥ इति वान्ताः ॥

इसके अनन्तर भान्त शब्दोंको कहते हैं
घट नाम कलश और इभमूर्दाश अर्थात्
हाथीके मस्तकका भाग यह दोनों कुम्भ
सज्जिक है शिशु नाम बालक और बालिश
नाम मूर्ख यह दोनों डिभ सज्जिक है ॥ १३४ ॥

स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ शंभू ब्रह्म-
त्रिलोचनौ ॥ कुक्षिभ्रूणार्भका गर्भा
विस्त्रम्भः प्रणयेऽपि च ॥ १३५ ॥
स्पाद्रेया दुन्दुभिः पुंसि स्पादक्षे दुन्दु-
भिः स्त्रियाम् ॥ स्यान्महारजने क्लीवं
कुसुम्भं करके पुमान् ॥ १३६ ॥

स्थूणा नाम घरका स्तम्भ और जडी-
भाव नाम जड़ता यह दोनों स्तम्भ सज्जिक
हैं ब्रह्मा और त्रिलोचन (महादेव) यह
दोनों शिशु सज्जिक है कुक्षि नाम उदर
और भ्रूण नाम गर्भमें स्थित हुआ प्राणी
और अर्भक (बालक) यह गर्भ सज्जिक
है प्रणय नाम स्नेहमें अपिशब्दसे विश्वास
तथा वधमें विस्त्रम्भ शब्द वर्त्तते है ॥
॥ १३५ ॥ भेरीके विषे दुदुभि शब्द पुलि-
गमें होता है और अक्ष नाम बालक्रीडाका
उपकरण जिसको तितारिगि बोलते है उसमें
दुदुभि शब्द स्त्रीलिङ्गमें होता है महारजन
नाम कसूमें नपुसकालिग कुसुभ शब्द
होता है और करक नाम कमडलुमें पुलिग
कुसुभ शब्द वर्त्तते है ॥ १३६ ॥

क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना सुरभिर्गवि च

स्त्रियाम् ॥ सभा संसदि सभ्ये च त्रि-
ष्वध्यक्षेऽपि वल्लभः ॥ १३७ ॥

॥ इति भान्ताः ॥

किरणप्रग्रहौ रश्मी कपिभेकौ पुवंगमौ
॥ इच्छामनोभवौ कामौ शौर्योद्योगौ
पराक्रमौ ॥ १३८ ॥

क्षत्रियके विषे अपिशब्दसे मुख्यनृपमें
तथा चक्रमध्यमें पुलिग नाभि शब्द होता है
और चकारसे नाभिशब्द प्राणीके अगमें
स्त्रीपुलिङ्गके विषे होता है और सृगभेदमें
नाभिशब्द स्त्रीलिङ्ग है गौकेविषे सुरभि शब्द
स्त्रीलिङ्गमें होता है और चकारसे वसन्त
तथा जातीफल तथा चपकके विषे पुलिङ्ग
और सुगन्धि तथा मनोहरके विषे तीनों
लिङ्गवाचक और सुवर्ण तथा कमलमें नपु-
सकालिङ्ग होता है ससद् नाम सभा और
सभ्य नाम सभाके बैठने योग्यमें सभा शब्द
वर्त्तते है अध्यक्ष नाम स्वामीमें अपिशब्दसे
प्यारमें और लक्षणयुक्त घोडामें वल्लभ शब्द
वर्त्तते है यह शब्द तीनों लिङ्गोंमें होता है
परन्तु लक्षणयुक्त घोडामें पुलिङ्ग है ॥ १३७ ॥

॥ इति भान्ताः ॥

इसके अनन्तर भान्त शब्दोंको कहते हैं,
किरण और प्रग्रह नाम घोडाआदिकोंके बाध
नेकी रस्ती यह दोनों रश्मि सज्जिक हैं क-
पि नाम चंदर और भेक नाम मेंढक यह
दोनों पुवंगम सज्जिक है इच्छा और मनो-
भव (कामदेव) यह दोनों काम सज्जिक

हैं. शौर्य (सामर्थ्य) और उद्योग यह दोनों पराक्रम संज्ञिक हैं. ॥ १३८ ॥

धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसो-
मपाः ॥ उपायपूर्व आरम्भ उपधा
चाप्युपक्रमः ॥ १३९ ॥ वणिक्पथः
पुरं वेदो निगमो नागरो वणिक् ॥
नैगमौ द्वौ बले रामो नीलचारुसिते
त्रिषु ॥ १४० ॥

पुण्य और यमराज तथा न्याय तथा
स्वभाव तथा आचार तथा सोमप यानी
सोमका पीनेवाला यह सब धर्म संज्ञिक हैं.
जो कि उपायपूर्वक आरंभ है, वह और उ-
पधा नाम मंत्रियोंके शीलकी परीक्षाका उ-
पाय और चकारसे चिकित्सा और विक्रम
उपक्रम संज्ञिक है ॥ १३९ ॥ वणिक्पथ
नाम वाणिज्य और पुर (नगर) और वेद
यह निगम संज्ञिक हैं. नागर नाम नगरके
रहनेवाला और वणिक् (वणियाँ) यह दोनों
नैगम संज्ञिक हैं. बल नाम बलदेवाख्य श्री-
कृष्णके भ्राताके विषे राम शब्द पुल्लिङ्ग है.
और नील नाम काला और चारु (सुन्दर)
और सित नाम श्वेत इनके विषे राम शब्द
तीनों लिंगोंमें होता है ॥ १४० ॥

शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः क्रान्तौ
च विक्रमः ॥ स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृ-
न्दे जिह्मस्तु कुटिलेऽलेसं ॥ १४१ ॥

१४०ऽपि धर्मश्चेष्टालंकारे भ्रान्तौ च विभ्रमः ॥
उष्ण नाम गरममें तथा अपिशब्दसे प-

गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च जामिः स्वसृ-
कुलस्त्रियोः ॥ क्षितिक्षान्तयोः क्षमा
युक्ते क्षमं शक्ते हिते त्रिषु ॥ १४२ ॥

शब्दादिक हैं पूर्व जिसके ऐसा ग्राम
शब्द वृन्द नाम समूहमें वर्त्तते हैं. जैसे—शब्द-
ग्रामः—अर्थात् शब्दोंका समूह और अपि
शब्दसे ग्राममें तथा स्वरमें ग्राम शब्द होता
है. क्रान्तिमें तथा चकारसे पराक्रममें विक्रम
शब्द वर्त्तते हैं. स्तोत्रमें और अध्वर नाम य-
ज्ञमें और वृन्द नाम समूहमें स्तोम शब्द वर्त्तते
हैं. कुटिल और अलस नाम आलसीमें जिह्म
शब्द वर्त्तते हैं ॥ १४१ ॥ रुक् नाम रोगभेद
स्तम्ब नाम कुशादिकोंका गुच्छा और सेना
तथा चकारसे सेनाको रक्षा गुल्म संज्ञिक है.
स्वसृ नाम बहनि कुलस्त्री नाम कुलवधू इत्यादि
दोनोंमें जामि शब्द वर्त्तते हैं. क्षिति (पृथिवी)
और क्षान्ति (क्षमा) इनमें क्षमा शब्द वर्त्तते
हैं. युक्त नाम योग्यमें क्षम शब्द वर्त्तते हैं.
और शक्त नाम समर्थ और हित नाम प्रियमें
क्षम शब्द तीनों लिंगमें होता है. ॥ १४२ ॥

त्रिषु श्यामौ हरित्कृष्णौ श्यामा
स्याच्छारिवा निशा ॥ ललामं पुच्छ-
पुण्ड्राश्चभूषाप्राधान्यकेतुषु ॥ १४३ ॥

सूक्ष्ममध्यात्ममध्याद्ये प्रधाने प्रथम-
स्त्रिषु ॥ वामौ बलुप्रतीपौ दावधमौ
न्यूनकुत्सितौ ॥ १४४ ॥

सीनेमें वर्म शब्द वर्त्तते हैं. चेष्टालंकार नाम
(हावमें) और भ्रान्तिमें चकारसे शोभामें विभ्रम
शब्द वर्त्तते हैं.

हरि नाम हरा और लृष्ण नाम काला यह दोनों श्याम सन्निक हैं यह शब्द तीनों लिंगोंमें होता है शारिवा शतावरी और निशा नाम हलदी वा रात्रि श्याम सन्निक है. पुच्छ नाम पूछ और पुडू नाम अश्व-
दिकोंका ललाट चिह्न और अश्व (घोड़ा) और भूषा नाम आभूषण और प्रावान्य-
नाम प्रधान और केतु नाम ध्वजा इनमें ल-
लाम शब्द होता है ॥ १४३ ॥ अध्यात्म
नाम आत्मामें अधिकार किया हुआ लिंगदेह
और अपिशब्दसे कैतव और अतिअल्प
सूक्ष्म सन्निक है आद्यमें तथा प्रधान नाम
मुख्यमें प्रथम शब्द होता है महासे मान्त-
वर्गपर्यन्त शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं वल्गु-
नाम सुन्दर और प्रतीप नाम विपरीत यह
दोनों वाम सन्निक हैं. न्यून नाम अल्प और
कुरितत (निन्दित) यह दोनों अधम स-
न्निक है ॥ १४४ ॥

जीर्णं च परिभुक्तं च यातयाममिदं
द्वयम् ॥

॥ इति मान्ताः ॥

तुरंगगरुडौ ताक्षयौ निलयापचयौ क्षयौ
॥ १४५ ॥ श्वशुर्यौ देवरश्पालौ भ्रातृ-
व्यौ भ्रातृजद्विपौ ॥ पर्जन्यौ रसदब्दे-
न्द्रौ स्वादर्यः स्वामिवैश्ययोः ॥ १४६ ॥

जीर्ण (पुराना) और परिभुक्त अर्थात्
भोगकर त्यागा हुआ यह दोनों यातयाम
सन्निक हैं

॥ इति मान्ताः ॥

इसके अनन्तर यान्त शब्दोंको कहते
हैं. तुरग (घोड़ा) और गरुड ताक्ष्य
सन्निक हैं निलय नाम घर और अपचय
(घटना) यह दोनों क्षय सन्निक है. ॥ १४५ ॥
देवर नाम पतिका भाई और शपाल नाम
सौका भाई यह दोनों श्वशुर्य सन्निक है
भ्रातृज नाम भाईका पुत्र और द्विपू नाम वैरी
यह दोनों भ्रातृव्य सन्निक हैं रसदब्द नाम
शब्द करनेवाला मेघ और द्ब यह
दोनों पर्जन्य सन्निक है और स्वामी और
वैश्यमें अर्य शब्द वर्त्ते है ॥ १४६ ॥

तिष्यः पुष्ये कलियुगे पर्यायोऽवसरे
क्रमे ॥ प्रत्ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वा-
सहेतुषु ॥ १४७ ॥ रन्ध्रे शब्देऽथा-
नुशयो दीर्घद्वेषानुतापयोः ॥ स्थूलो-
च्चयस्त्वसाकल्पे नागानां मध्यमे
गते ॥ १४८ ॥

पुष्य नाम पुष्य नक्षत्रमें और कलियुगमें
तिष्य शब्द वर्त्ते है अवसर प्रस्तावमें और
क्रममें पर्याय शब्द वर्त्ते है अधीन नाम
आधीन और शपथ अर्थात् सौगन्द और
ज्ञान और विश्वास और हेतु (कारण)
इनमें ॥ १४७ ॥ और रन्ध्र नाम छिद्रमें
और शब्द नाम विचादिक प्रत्ययोंमें प्रत्यय
शब्द वर्त्ते है दीर्घद्वेष नाम बहुतकालका वैर
और अनुताप नाम पछिताना इन दोनोंमें
अनुशय शब्द वर्त्ते है असाकल्प नाम अ-
समग्रतामें और हाथीघोंकी मध्यमगति अ-
र्थात् जो कि न बहुत शीघ्र न बहुत मंद

गति है उसमें अपिशब्दसें पर्वतसें भ्रष्ट हुए मोटे २ पत्थरोंमें स्थूलोच्चय शब्द वर्त्ते है ॥ १४८ ॥

समयाः शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः ॥ व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्यनयास्त्रयः ॥ १४९ ॥ अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽप्यथापदि ॥ युद्धायत्योः संपरायः पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च ॥ १५० ॥

शपथ नाम सौगन्द और आचार और काल और सिद्धान्त तथा संविद् (संभाषा) यह समय संज्ञिक हैं. व्यसन द्यूतादिक और अशुभ दैव नाम अशुभ भाग्य और विपत्ति यह तीनों अनय संज्ञिक हैं ॥ १४९ ॥ अतिक्रम नाम उलंघनमें और कृच्छ्र नाम कष्टमें और दोषमें तथा दंडमें और अपिशब्दसें नाशमें अत्यय शब्द वर्त्ते है. आपदायें और युद्धमें और आयति नाम आनेवाले कालमें संपराय शब्द वर्त्ते है. श्वशुरमें और अपिशब्दसें पूजाके योग्यमें पूज्य शब्द वर्त्ते है ॥ १५० ॥

पश्चादवस्थायि बलं समवायश्च संनयौ ॥ संघाते संनिवेशे च संस्त्यायः प्रणयास्त्वमी ॥ १५१ ॥ विस्त्रम्भयाच्चाप्रेमाणो विरोधेऽपि समुच्छ्रयः ॥ विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेऽपि ॥ १५२ ॥

पश्चादवस्थायि बल नाम जो कि सेनाके पिछले भागमें स्थित होवे है, वह और सम-

वाय नाम समूह यह दोनों सन्नय संज्ञिक हैं. संघात नाम समूहमें और संनिवेश नाम समीचीन वासस्थानमें और विस्तृतिमें संस्त्याय शब्द वर्त्ते है. ॥ १५१ ॥ विस्त्रम्भ नाम विश्वास और याच्ना नाम माँगना और प्रेम नाम स्नेह यह तीनों प्रणय संज्ञिक हैं विरोधमें और अपिशब्दसें उन्नतिमें समुच्चय शब्द वर्त्ते है. जिसका जो जाना हुआ पदार्थ है उसमें और शब्दादिक अर्थात् शब्द स्पर्श रूप रस गंध इनमें और अपिशब्दसें देशमें विषय शब्द वर्त्ते है ॥ १५२ ॥

निर्यासेऽपि कषायोऽस्त्री सभायां च प्रतिश्रयः ॥ प्रायो भूङ्मयन्तगमने मन्युर्दैन्ये क्रतौ क्रुधि ॥ १५३ ॥ रहस्योपस्थयोर्गुह्यं सत्यं शपथतथ्ययोः ॥ वीर्यं बले प्रभावे च द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये ॥ १५४ ॥

निर्यास नाम क्वाथ रसमें और अपि शब्दसें विलेपनादिकमें कषाय शब्द वर्त्ते है. यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंग है. सभामें और चकारसें आश्रय तथा अंगीकारमें प्रतिश्रय शब्द वर्त्ते है. भूमन् नाम बाहुल्य अर्थमें और अंतगमन अर्थात् जिसकरके अंत यानी नाश प्राप्त होवे उस अभोजनमें प्राय शब्द वर्त्ते है. दैन्य दीनतामें और क्रतु नाम यज्ञमें और क्रोधमें मन्यु शब्द वर्त्ते है ॥ १५३ ॥ रहस्य नाम गोप्य यानी छिपानेयोग्यमें और उपस्थ इंद्रियमें गुह्य शब्द वर्त्ते है. शपथ नाम सौगन्दमें और त-

ध्यनाम सत्यमें सत्य शब्द वर्त्तै है बल नाम सामर्थ्यमें और प्रभावमें और चकारसें रेव-
समें तथा शक्तिमें वीर्य शब्द वर्त्तै है भव्य नाम सत्वमें और गुणाश्रय पृथिव्यादिकमें
चकारसें धनमें द्रव्य शब्द वर्त्तै है ॥ १५४ ॥

धिष्ण्यं स्थाने गृहे भेऽग्नौ भाग्यं कर्म
शुभाशुभम् ॥ कशेरुहेमोगाङ्गोयं वि-
शल्या दन्तिकाऽपि च ॥ १५५ ॥
वृषाकपायी श्रीगौर्यारभिरुषा नाम-
शोभयोः ॥ आरम्भो निष्कृतिः शि-
क्षा पूजनं संप्रधारणम् ॥ १५६ ॥
उपायः कर्म चेष्टा च विक्रित्ता च
नव क्रियाः ॥ छाया सूर्यमिया का-
न्तिः प्रतिबिम्बमनातपः ॥ १५७ ॥

स्थानमें तथा गृहमें तथा भ नाम नक्ष-
त्रमें तथा अग्निमें धिष्ण्य शब्द वर्त्तै है
जो कि शुभ तथा अशुभ कर्म है, वह
भाग्य सत्तिक है यह शब्द ऐश्वर्यके विषयी
होता है कशेरु और हेम नाम सुवर्ण इन-
दोनोंमें गागेय शब्द वर्त्तै है दंतिका नाम
दन्तीवृक्ष और अपिशब्दसें अग्निशिता
तथा गिलोयभी विशल्या सत्तिक है
॥ १५५ ॥ श्री (लक्ष्मी) और गौरी
(पार्वती) में वृषाकपायी शब्द वर्त्तै है
नाम और शोभामें अभिरुषा शब्द वर्त्तै है
आरंभ और निष्कृति (प्रायश्चित्त) और
शिक्षा और पूजन तथा संप्रधारण (निचार)
॥ १५६ ॥ और उपाय और कर्म और

चेष्टा और विक्रित्ता यह नौ शब्द क्रिया
सत्तिक हैं सूर्यमिया नाम शनैश्वरकी माता
और कान्ति और प्रतिबिम्ब तथा अनातप
नाम छाँह यह छाया सत्तिक है ॥ १५७ ॥

कक्ष्या प्रकोष्ठे हर्म्यादेः काञ्च्या म-
ध्येभवन्धने ॥ कृत्या क्रियादेवतयो-
स्त्रिषु भेद्ये धनादिभिः ॥ १५८ ॥
जन्मं स्याज्जनवादेऽपि जघन्योऽन्ये-
ऽधमेऽपि च ॥ गर्हाहीनौ च वक्त-
व्यौ कल्पौ सज्जनिरामयौ ॥ १५९ ॥

हर्म्यादिकके प्रकोष्ठ नाम अन्तर्गृहमें
तथा काची नाम कौधनीमें और मध्येभव-
धन यानी हाथीके कमरबाधनेकी रस्तीमें
कक्ष्या शब्द वर्त्तै है, क्रिया (कर्म) और
देवता नाम देवविशेष इनमें कृत्या शब्द
वर्त्तै है और धनादिक करके भेदन करने-
योग्य पुरुषादिकके विषय कृत्या शब्द तीनों
लिङ्गोंमें होता है ॥ १५८ ॥ जनवाद नाम
निन्दित वादमें अपिशब्दसें युद्धादिकमें जय
शब्द वर्त्तै है अन्यमें और अधम नाम
नीचमें जघन्य शब्द वर्त्तै है, और अपिश-
ब्दसें शिश्र इन्द्रियमेंभी जघन्य शब्द वर्त्तै है
गर्हा नाम निन्दित और अहीन यह दोनों
और चकारसें कहने योग्य वक्तव्य सत्तिक
है सज्ज नाम मन्त्रादिकसें रक्षित और निरा-
मय (नीरोग) यह दोनों कल्प सत्तिक
हैं ॥ १५९ ॥

आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थ्यौ पुण्यं तु
चार्वपि ॥ रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि वदा-
न्यो वल्गुवागपि ॥ १६० ॥ न्याय्येऽपि
मध्यं सौम्यं तु सुन्दरे सोमदैवते ॥

॥ इति यान्ताः ॥

आत्मवान् बुद्धिमान् और जो कि
अर्थसे अनपेत अर्थात् वर्जित नहीं है, वह
यह दोनों अर्थ संज्ञिक हैं. चारु नाम सुन्द-
रमें और अपिशब्दसे सुकृत तथा धर्ममें
पुण्य शब्द वर्त्तते है. प्रशस्तरूप अर्थात्

१ सर्वज्ञभिषजौ वैद्यौ कुल्या कुलवधू ।
सरित् । फलकल्याणयोर्भव्यं योग्यं सांप्रतिके
त्रिषु ॥ १ ॥ क्रियाचारातिक्रमेपि जलाधारेपि
चाशयः । दैत्याचार्येपि धिष्यथो ना कषायः
सुरभावपि ॥ २ ॥ चंद्रोदये वितानेपि स्यादा-
म्नायोऽन्वये श्रुतौ ॥

यह ढाईश्लोक दोषक हैं इनका अर्थ यह है.

सर्वज्ञ और भिषज (चिकित्सा करनेवाला)
यह दोनों वैद्य संज्ञिक हैं. कुलवधू और सरित्
(नदी) कुल्या संज्ञिक हैं. फल तथा कल्या-
णमें भव्य शब्द वर्त्तते है. और सांप्रतिकमें तीनों
लिंगोंकेविषे योग्य शब्द वर्त्तते है. चारातिक्रममें
तथा अपिशब्दसे आरम्भादिकमें क्रिया शब्द
वर्त्तते है. और जलके आधारमें तथा अपिशब्दसे
अभिप्रायमें आशय शब्द वर्त्तते है. और दैत्या-
चार्य श्रुतमें पुल्लिङ्ग तथा अपिशब्दसे स्थाना-
दिकमें धिष्यथ शब्द वर्त्तते है. सुरभि नाम सुग-
न्धिमें अपिशब्दसे काथरसमें कषाय शब्द वर्त्तते
है २ चंद्रोदयमें तथा वितानमें तथा अन्वयमें
तथा श्रुतिनाम वेदमें आम्नाय शब्द वर्त्तते है.

जिसका कि श्रेष्ठरूप हो उसमें और अपि-
शब्दसे गठीहुई चांदी सोनेमें रूप्य शब्द वर्त्तते
है. वल्गुवाक् नाम सुन्दर वाणीवाला और
अपिशब्दसे देनेवालाभी वदान्य संज्ञिक है
॥ १६० ॥ न्याय्य नाम उचितमें तथा
अपिशब्दसे मध्यभागमें मध्य शब्द वर्त्तते है.
और सुन्दरमें तथा सोमदेवतावाले पुरोडा-
शादिकमें सौम्य शब्द वर्त्तते है. और तुश-
ब्दसे बुधमें पुल्लिङ्ग सौम्य शब्द होता है.

॥ इति यान्ताः ॥

निवहावसरौ वारौ संस्तरौ प्रस्तरा-
ऽध्वरौ ॥ १६१ ॥ गुरू गीर्षति-
पित्राद्यौ द्वापरौ युगसंशयौ ॥ प्र-
कारौ भेदसादृश्ये आकाराविक्रिता-
कृती ॥ १६२ ॥

इसकेअनन्तर रान्तशब्द कहते हैं. निवह
नाम समूह और अवसर नाम पस्ताव यह
दोनों वार संज्ञिक हैं. प्रस्तर नाम कुशमुष्टि
वा कुशशय्या और अध्वर (यज्ञ) यह
दोनों संस्तर संज्ञिक हैं ॥ १६१ ॥
गीर्षतिनाम बृहस्पति और पित्रादिक गुरु
संज्ञिक हैं. आदिशब्दसे शास्त्रके पढानेवालाभी
गुरु संज्ञिक है. युग और संशय नाम संदेह
यह दोनों द्वापर संज्ञिक हैं. भेदविशेष
और सादृश्य यह दोनों प्रकार संज्ञिक हैं.
इंगित (चेष्टित) और आकृति (स्वरूप)
यह दोनों आकार संज्ञिक हैं ॥ १६२ ॥

किशारू सस्यशूकेषू मरू धन्वधरा-
धरौ ॥ अद्रयो द्रुमशैलार्काः स्त्रीस्व-
नाब्दौ पयोधरौ ॥ १६३ ॥ ध्वा-
न्वारिदानवा वृत्रा बलिहस्तांशवः
कराः ॥ प्रदरा भङ्गानारीरुग्वाणा
अस्ताः कचा अपि ॥ १६४ ॥

सस्यशूके नाम धान्यके तीकुरोंमें और इषु
नाम बाणमें किशारू शब्द वर्त्तै है ककपक्षवा-
णमेंभी यह शब्द होताहै धन्वानाम निर्जलदेश
तथा धराधर पर्वत यह दोनों मरु सत्तिक हैं.
द्रुम(वृक्ष)और शैल(पर्वत)और अर्क(सूर्य)यह
तीनों अद्रि सत्तिक है स्त्रियोंके स्तन(कुच)
और अब्द (मेघ) यह दोनों पयोधर सत्तिक
है ॥ १६३ ॥ ध्वा-तनाम अ धकार अरि(शत्रु)
और दानव (दैत्यभेद) यह वृत्र सत्तिक है
बलिनाम राजा कर लेनेयोग्य भाग और
हाथ और अशु (किरण) यह कर
सत्तिक हैं भगनाम भौंग नारीरुक् स्त्रियों-
का रोगभेद और वाण प्रदर सत्तिक है
कच (बाल) और अपिशब्दसें कोणभी
अस्त सत्तिक हैं ॥ १६४ ॥

अजातशृङ्गो गौः कालेऽप्यश्वश्रुर्ना
च तुररौ ॥ स्वर्णेऽपि राः परिकर-
पर्यङ्कपरिवारयोः ॥ १६५ ॥ मु-
काशुद्धौ च तारः स्याच्छारो वायौ-
स तु निषु ॥ कर्बुरेऽथ प्रतिज्ञाजिसं-
विदापत्सु संगरः ॥ १६६ ॥

नहीं उत्पन्न हुए हैं साँग जिसके ऐसा

गोनाम बैल और काल नाम समयकेविषे
नहीं है श्वश्रु अर्थात् डाढी जिसके ऐसा
नर यह दोनों तुरर सत्तिक है. सुवर्णकेविषे
और अपिशब्दसें वित्तमात्रकेविषे रै शब्द
वर्त्तै है पर्यंक नाम पलिका तथा परिवार
(कुटुम्ब) इन दोनोंमें परिकर शब्द वर्त्तै
है. ॥ १६५ ॥ मुकाशुद्धि, अर्थात् मोति-
योंके शुद्ध करनेमें तथा चकारसें तरनेमें
तथा ऊचेस्वरमें तार शब्द वर्त्तै है वायु
नाम पवनमें शार शब्द वर्त्तै है और वहही
शारशब्द कर्बुरवर्णमें तीनों लिंगकेविषे होता
है प्रतिज्ञा और आजि (युद्ध) और सविद्
(क्रियाकार) यानी कर्मनियम और आप-
दाके विषे संगर शब्द वर्त्तै है ॥ १६६ ॥

वेदभेदे गुप्तवादे मन्त्रो मित्रो रवाव-
पि ॥ मस्त्रेषु यूपखण्डेऽपि स्वरुग्हेऽ-
प्यवस्करः ॥ १६७ ॥ आहस्वरस्तू-
र्यरवे गजेन्द्राणां च गर्जिते ॥ अ-
भिहारोऽभियोगे च चौर्ये संनहनेऽपि
च ॥ १६८ ॥

वेदभेदमें तथा गुप्तवाद अर्थात् एका-
त्ममें करनेयोग्य निश्चयमें मन्त्र शब्द वर्त्तै
है रविनाम सूर्यमें और अपिशब्दसें सत्तामें
मित्र शब्द वर्त्तै है मस्त्रनाम यज्ञमें यूपखण्डमें
तथा अपिशब्दसें वज्रमें स्वरु शब्द वर्त्तै है
गुप्त नाम उपस्थ इद्रियमें अपिशब्दसें विष्टामें
अवस्कर शब्द वर्त्तै है. ॥ १६७ ॥ तूर्य-
रवनाम बाजोंके शब्दमें और हाथियोंके

गर्जनेमें आडंबर शब्द वर्त्तै है. अभियोग-
नाम अभिग्रहणमें और चोरीमें तथा सन्न-
हन अर्थात् कवचादिकके ग्रहणमें अभि-
योग शब्द वर्त्तै है. ॥ १६८ ॥

स्याज्जङ्गमे परीवारः खड्गकोषे परि-
च्छदे ॥ विष्टरो विटपी दर्भमुष्टिः पी-
ठाद्यमासनम् ॥ १६९ ॥ द्वारि द्वाः-
स्थे प्रतीहारः प्रतीहार्यप्यनन्तरे ॥
विपुले नकुले विष्णौ वभ्रुर्नापिङ्गले
त्रिषु ॥ १७० ॥

जंगम नाम जंगमविशेष परिजनमें खड्ग-
कोश अर्थात् तलवारके ढकनेवाले चर्मादि-
कमें और परिच्छद नाम उपकरण छत्र
चौर आदिकमें परीवार शब्द वर्त्तै है. विटपी
(वृक्ष) और दर्भमुष्टि नाम कुशोंकी मुष्टि
और पीठाद्य आसन अर्थात् चौकी आदिक
आसन विष्टर संज्ञिक हैं. ॥ १६९ ॥ द्वार
नाम दरवाजेमें और द्वाःस्थनाम ड्योढी-
वानमें प्रतीहार शब्द होताहै. और अनन्तर
द्वारपालमें अर्थात् अनन्तरकरके कहेहुए
ड्योढीवानमें प्रतीहारी शब्द होताहै. विपु-
लनकुलमें अर्थात् बड़े न्यौलेमें और विष्णुमें
पुंलिंग वभ्रु शब्द होताहै. और पिङ्गलवर्णमें
वभ्रुशब्द तीनोंलिंगकेविषै होताहै ॥ १७० ॥

सारो वले स्थिरांशे च न्याय्ये क्लीवं
वरे त्रिषु ॥ दुरोदरो द्यूतकारे पणे
द्यूते दुरोदरम् ॥ १७१ ॥ महारण्ये

दुर्गपथे कान्तारं पुनपुंसकम् ॥ मत्सरो-
ऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु १७२

वटमें और स्थिरांशनाम वृक्षादिकके
कठोरभागमें पुंलिंग और न्याय्यनाम
न्याय्ययुक्तमें नपुंसक और वर नाम श्रेष्ठमें
तीनोंलिंगोंके विषै सार शब्द होताहै. द्यूत-
कारनाम जुआरीमें और पणनाम बाजीमें
पुंलिंग दुरोदर शब्द वर्त्तै है. और द्यूतनाम
जुआमें नपुंसकलिंग दुरोदर शब्द वर्त्तै है
॥ १७१ ॥ महारण्य नाम बडेभारी वनमें
दुर्गपथ नाम दुर्गममार्गमें पुनपुंसकलिंग
कान्तार शब्द होताहै. अन्य शुभद्वेषनाम
दूसरेके शुभके बैरमें यानी पराई संपदाके
न सहनेमें और तद्वत् नाम जो कि उस
मत्सरतासें युक्त हो वह और कृपण इन
दोनोंमें मत्सर शब्द वर्त्तै है. तिसमें पिछले
दोनों अर्थोंकेविषै मत्सरशब्द तीनोंलिंगमें
होताहै. ॥ १७२ ॥

देवाहूते वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीवं मना-
कम्पिये ॥ वंशाङ्कुरे करीरोऽस्त्री तरु-
भेदे घटे च ना ॥ १७३ ॥ ना च-
मूजघने हस्तसूत्रे प्रतिसरोऽस्त्रियाम् ॥
यमानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहांशुवा-
जिषु ॥ १७४ ॥ शुकाहिकपिभेकेषु
हरिर्ना कपिले त्रिषु ॥ शर्करा कर्परां-
शेऽपि यात्रा स्याद्यापने गतौ ॥ १७५ ॥

देवाहूत अर्थात् देव सकाशसें वरेहुए
इच्छित अर्थमें पुंलिंग और श्रेष्ठके विषै

तीनों लिंगमें और मनाक्प्रिय नाम कुछ थोड़े प्यारेमें नपुसक वर शब्द होता है वशाकुरनाम वाशके अकुरमें स्त्रीलिंगवर्जित और तरुभेदनाम वृक्षभेदमें और घटनाम कलशमें पुलिग करीर शब्द होता है ॥ १७३ ॥ चमू जघननाम सेनाके पिछले भागमें पुलिग और हस्तसूत्र अर्थात् जो कि मगलकेवास्ते मंत्रोंसे अभिमन्त्रितकर सूत्र हाथमें बाँधा जाता है उसमें स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुसकलिगके विषे प्रतिसर शब्द वर्त्ते है यम (यमराज) और अनिल (पवन) और इद्र तथा चद्रमा तथा अर्क (सूर्य) और सिंह तथा अशु (किरण) और वाजि (घोड़ा) ॥ १७४ ॥ और शुक (शुआ) और अहि (सर्प) और कपि (बदर) और भेक (भेंडक) इनके विषे पुलिग और कपिल वर्णके विषे तीनों लिंगमें हरि शब्द वर्त्ते है कर्पराश नाम बालूके विषे और अपिशब्दसें खाडके विकारमें तथा बालूयुक्त देशमें रोगभेदमें तथा शकलमें शर्करा शब्द वर्त्ते है यापन नाम प्रस्थानमें तथा गति नाम गमनमें यात्रा शब्द वर्त्ते है और देवताओंके पूजनेके उत्सवमेंभी यह शब्द वर्त्ते है ॥ १७५ ॥

इरा भूवाक्सुराप्सु स्यात्तन्त्री निद्रा-
प्रमीलयोः ॥ धात्री स्याद्गुपमाताऽपि-
क्षितिरप्यामलक्यपि ॥ १७६ ॥
क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा क-

ण्टकारिका ॥ त्रिपु क्रूरेऽवमेऽल्पेऽपि
क्षुद्रं मात्रा परिच्छदे ॥ १७७ ॥

भू (पृथिवी) वाक् (वाणी) और सुरा (मदिरा) और अप (जल) इनके विषे इरा शब्द वर्त्ते है निद्रा और प्रमीला अर्थात् श्रमादिकसें जो कि सब इन्द्रियोंमें आलस आजाता है वह इन दोनोंमें तद्री शब्द वर्त्ते है उपमाता दूध देनेवाली तथा क्षिति (पृथिवी) और आमलकी वृक्षविशेष और अपिशब्दसें माताभी बात्री सक्षिक है ॥ १७६ ॥ व्यगानाम अगहीन स्त्री और नटी (नौचनेवाली) और वेश्या और सरघा नाम सहृत्की मास्त्री और कटकारिका नाम भटकटाई यह क्षुद्रा सक्षिक है क्रूरमें अधम नाम नीचमें और अल्पनाम छोटमें और अपिशब्दसें लुपणमें तथा दरिद्रमें तीनों लिंगोंके विषे क्षुद्र शब्द वर्त्ते है परिच्छद नाम उपकरणमें अल्पनाम थोड़ेमें और परिमाणमें मात्रा शब्द वर्त्ते है ॥ १७७ ॥

अल्पे च परिमाणे सा मात्रं कात्स्न्येऽ-
वधारणे ॥ आलेख्याश्चर्ययोश्चित्रं
कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ॥ १७८ ॥
योग्यभाजनयोः पात्र पत्रं वाहनपक्ष-
योः ॥ निदेशग्रन्थयोः शास्त्रं शस्त्र-
मायुधलोहयोः ॥ १७९ ॥

और कात्स्न्य नाम समग्रता अर्थमें और अवधारण नाम निश्चयार्थमें नपुमकाटिग मात्र शब्द होता है आलेख्यनाम भीति आ-

दिकपर अनेक वर्णोंका लिखना और आ-
श्चर्य अचरज इन दोनोंमें चित्र शब्द वर्त्तते है।
श्रोणि नाम कटि और भार्या (स्त्री) इनके
विषे कलत्र शब्द वर्त्तते है ॥ १७८ ॥ योग्य
और भाजन नाम वर्त्तन इन दोनोंमें पात्र
शब्द वर्त्तते है। वाहन (अश्वादिक) और
पक्ष नाम पांख इन दोनोंमें पत्र शब्द वर्त्तते
है। निदेश (आज्ञा) और ग्रन्थ (व्याकर-
णादिक) इन दोनोंमें शास्त्र शब्द वर्त्तते है।
आयुध नाम हतियार और लोह इन दोनोंमें
शस्त्र शब्द वर्त्तते है ॥ १७९ ॥

स्याज्जटांशुकयोर्नेत्रं क्षेत्रं पत्नीशरीर-
योः ॥ मुखाग्रे क्रोडहलयोः पोत्रं
गोत्रं तु नास्ति च ॥ १८० ॥ सत्र-
माच्छादने यज्ञे सदादाने वनेऽपि च ॥
अजिरं विषये कायेऽप्यम्बरं व्योम्नि
वाससि ॥ १८१ ॥

जटानाम वृक्षकी जड़ और अंशुक नाम
वस्त्रभेद इन दोनोंमें नेत्र शब्द वर्त्तते है। पत्नी
(स्त्री) और देह (शरीर) इन दोनोंमें क्षेत्र
शब्द वर्त्तते है। क्रोड नाम सूकर और हल
इनके मुखाग्रमें पोत्र शब्द वर्त्तते है। नामके
विषे और चकारसे पर्वत तथा कुलके विषे
गोत्र शब्द वर्त्तते है ॥ १८० ॥ आच्छादन
वस्त्रमें और यज्ञमें सदा दान अर्थात् नित्य
त्यागमें और वनमें और अपिशब्दसे कैतवमें
सत्र शब्द वर्त्तते है। विषय नाम रूपादिकमें
तथा काय (शरीर) में और अपिशब्दसे

आंगनमें अजिर शब्द वर्त्तते है। व्योम (आ-
काश) और वासस् (वस्त्र) इनमें अंबर
शब्द वर्त्तते है ॥ १८१ ॥

चक्रं राष्ट्रेऽप्यक्षरं तु मोक्षेऽपि क्षीर-
मप्यु च ॥ स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्रौ द्वौ
द्वारमात्रेऽपि गोपुरम् ॥ १८२ ॥
गुहादम्भौ गह्वरे द्वे रहोऽन्तिकमुप-
ह्वरे ॥ पुरोऽधिकमुपर्यग्राण्यगारे नग-
रे पुरम् ॥ १८३ ॥

राष्ट्रनाम देशमें तथा अपिशब्दसे सेनामें
और पहियामें और चाक आदिकमें चक्र
शब्द वर्त्तते है। मोक्षमें अपिशब्दसे वर्ण तथा
परम ब्रह्म और आकाशआदिकमें अक्षर
शब्द वर्त्तते है। अप्नाम जलमें और चका-
रसे दुग्धमें क्षीर शब्द वर्त्तते है। भूरिशब्द
तथा चंद्रशब्द यह दोनों सुवर्णमें वर्त्तते हैं।
अपिशब्दसे वासुदेव तथा शिव तथा ब्रह्मामें
पुंलिंग भूरिशब्द वर्त्तते है। और चंद्रशब्द
कपूर आदिकमें वर्त्तते है। द्वारमात्रमें तथा
अपिशब्दसे पुरके दरवाजेमें गोपुर शब्द
वर्त्तते है ॥ १८२ ॥ गुहा और दम्भ
(कपट) यह दोनों गह्वर संज्ञिक हैं रहस
(एकान्त) और अंतिक (समीप) यह
दोनों उपह्वर संज्ञिक हैं। पुरस् तथा अधिक
तथा उपरि यह तीनों अग्र संज्ञिक हैं।
अगार नाम घरके विषे और नगरकेविषे
पुर मन्दिर शब्द वर्त्तते हैं। और चकारसे
पुरशब्द शरीरमें वर्त्तते है ॥ १८३ ॥

मन्दिरं चाथ राट्रोऽस्त्रो विषये स्या-
दुपद्रवे ॥ द्रोऽस्त्रिया भये श्वश्रे व-
ज्रोऽस्त्रो हीरके पवौ ॥ १८४ ॥
तद्यं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परि-
च्छेदे ॥ औशीरश्चामरे दण्डेऽप्यौशीरं
शयनासने ॥ १८५ ॥

विषय नाम देशमें और उपद्रव (मर-
णादिक) में स्त्रीलिंगवर्जित राष्ट्र शब्द वर्त्ते
हे भयमें तथा श्वश्रुनाम छिद्रमें दूर शब्द
स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुसकलिंगकेविषे होता है
हीरकनाम हीरामें और पवि (वज्र) में
स्त्रीलिंगवर्जित वज्र शब्द होता है ॥ १८४ ॥
प्रधानमें तथा सिद्धान्तमें और सूत्रवायनाम
सूत्र युग्मनेवालेमें और परिच्छेद (उपक-
रण) में तत्र शब्द वर्त्ते है चामर दंड
अर्थात् चमरसमधी दंडमें औशीर शब्द
पुल्लिंगवाची वर्त्ते है और शयन तथा
आसनेमें नपुसकलिंग औशीर शब्द वर्त्ते
है ॥ १८५ ॥

पुष्करं वरिहस्ताग्रे पाद्यभाण्डमुत्से-
जते ॥ व्योम्नि सङ्गरुते पत्रे तीर्थो-
पपित्रिगोपयो ॥ १८६ ॥ अन्नर-
मयकाशावधिपरिधानान्नाभिभेदताद-
र्थ्यं ॥ छिद्रात्मीपविनावहिरवसरम-
प्येन्नरात्मनि च ॥ १८७ ॥

दार्ष्टिके पात्रे अन्नभागमें और बत्ता-
मेयोग्य पात्रे सुगमें और जटमें तथा
व्योमनाम आकाशमें और सरुगस्त नाम

तलवारके मध्यभागमें और पत्र नाम कम-
लमें और तीर्थविशेष और ओपधिविशेषमें
पुष्कर शब्द वर्त्ते है ॥ १८६ ॥ अवका-
शमें और अवधिमें और परिवानमें और
अन्तर्धि और भेदमें और तादर्थ्यमें और
छिद्रमें और आत्मीयमें और विनाशधर्म
और बहिरर्थमें और अवसरमें और मध्यमें
और अंतरात्तामें और चकारसें सादृश्यमें
अन्तर शब्द वर्त्ते है ॥ १८७ ॥

मुस्तेऽपि पिठरं राजकशेरुण्यपि ना-
गरम् ॥ शार्वरं त्वन्धतमसे घातुके
भेद्यल्लिङ्गकम् ॥ १८८ ॥ गौरोऽ-
रुणे सिते पीते घणकार्यप्परुष्करः ॥
जठरः कठिनेऽपि स्यादधस्तादपि चा-
धर ॥ १८९ ॥

मुस्तनाम मुस्तक यानी मोथामें और ज-
पिगदसें स्थालीमें तथा मयानमें पिठर शब्द
वर्त्ते है राजकशेरु नाम जटसे उत्पन्न हुए
तृणका मूट यानी नागरमोथा और अपि-
शब्दसें ग्राहिमें और चतुर्मे नागर नाद
वर्त्ते है अधतमनाम बड़े गाटे अकारमें
और घातुकेनाम हिङ्गक शार्वर शब्द वर्त्ते
है सितमें घातुकेविषे गौरशब्द भेद्य-
ल्लिङ्गक यानी त्रिगोपल्लिङ्ग है ॥ १८८ ॥
अरुण (लाल) म शिपनाम श्वेतमें और
पीतनाम पीलेमें गौर गुच्छ वर्त्ते है और
घणसे घनज्ञान तथा घनगुण्य मित्य-
वाचक अकार सङ्गति कठिननाम

करमें और अपिशब्दसे उदरमें जठर शब्द वर्त्तते है. अधस्तात् अर्थात् नीचेमें और अपिशब्दसे ओष्ठ तथा हीनमें अधर शब्द वर्त्तते है. ॥ १८९ ॥

अनाकुलेऽपि चैकाग्रो व्यग्रो व्यासक्त आकुले ॥ उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्वप्युत्तरः स्यादनुत्तरः ॥ १९० ॥ एषां विपर्यये श्रेष्ठे दूरानात्मोत्तमाः पराः ॥ स्वादुप्रियो तु मधुरो क्रूरो कठिननिर्दयौ ॥ १९१ ॥ उदारो दातृमहतोरितरस्त्वन्यनीचयोः ॥ मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरः शुभ्रमुदीतशुक्रयोः ॥ १९२ ॥

॥ इति रान्ताः ॥

अनाकुल नाम स्वस्थमें और अपिशब्दसे एकतानमें एकाग्र शब्द वर्त्तते है. व्यासक्तमें तथा आकुल अर्थात् अनेक अर्थोंमें रक्खेहुए चित्तवालेमें व्यग्र शब्द वर्त्तते है. उपरिनाम ऊपरवाची अर्थ और उदीच्य नाम उत्तरदिशाके विपै वर्त्तमान और श्रेष्ठ नाम मुख्य इनमें उत्तर शब्द वर्त्तते है. और इन उपर्यादिक शब्दोंके विपरीत भावमें श्रेष्ठमें अनुत्तर शब्द वर्त्तते है. ॥ १९० ॥ दूर और अनात्मा नाम आत्मासें अन्य और उत्तम (श्रेष्ठ) यह तीनों पर संज्ञिक हैं. स्वादु और प्रिय (प्यारा) यह दोनों मधुर संज्ञिक हैं. कठिन (कर्त) और निर्दय नाम दयाहीन यह दोनों क्रूर संज्ञिक हैं ॥ १९१ ॥ दातृ नाम दानी और मह-

त्तनाम बड़ा इन दोनोंमें उदार शब्द वर्त्तते है. अन्य नाम दूसरा और नीच इन दोनोंमें इतर शब्द वर्त्तते है. मन्द (मुख) और स्वच्छन्द नाम स्वाधीन इन दोनोंमें. स्वैर शब्द वर्त्तते है. उदीप्तनाम प्रकाशमान और शुक्र इन दोनोंमें शुभ्र शब्द वर्त्तते है ॥ १९२ ॥

॥ इतिरान्ताः ॥

चूडा किरीटं केशाश्च मंयता मौल्यस्त्रयः ॥ द्रुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि पीलवः ॥ १९३ ॥ कृतान्तानेहसोः कालश्चतुर्थेऽपि युगे कलिः ॥ स्यात्कुरङ्गोऽपि कमलः प्रावारेऽपि च कम्बलः ॥ १९४ ॥

इसके अनन्तर रान्त शब्द दित्वाते हैं. चूडा (शिखा) और किरीट नाम मुकुट और संयतकेश अर्थात् बंधेहुए वाल यह तीनों मौलि संज्ञिक हैं. द्रुमप्रभेद नाम वृक्षभेद और मातंग (हाथी) और कांड (बाण) और पुष्प (फूल) यह पीलु संज्ञिक हैं ॥ १९३ ॥ कृतान्त नाम मृत्यु और अनेहस् (समय) इन दोनोंमें काल शब्द वर्त्तते है. चतुर्थयुगमें और अपिशब्दसे कलहमें कलि शब्द वर्त्तते है. कुरंगनाम हरिणमें और अपिशब्दसे जलमें आकाशमें तथा कमलमें कमल शब्द वर्त्तते है. प्रावार नाम ओढनेके वस्त्रमें तथा अपिशब्दसे बैलके गलेके लटके हुए चर्ममें तथा नागराजमें तथा कृमिमें कंबल शब्द वर्त्तते है ॥ १९४ ॥

करोपहारयोः पुंसि वलिः प्राण्यङ्ग-
जे स्त्रियाम् ॥ स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु
बलं ना काकसीरिणोः ॥ १९५ ॥
वानुलः पुंसि वात्यापामपि वातासहे
त्रिषु ॥ भेद्यलिङ्गः शठे व्यालः पुंसि
श्वापदसर्पयोः ॥ १९६ ॥

करनाम राजाकेलिये देनेयोग्य भाग
और उपहारभेद इन दोनोंमें पुलिगके विषे
बलि शब्द वर्त्तै है और प्राणीके अगमें
उत्पन्नहुए त्वक्तकोचमें स्त्रीलिगके विषे बलि
शब्द वर्त्तै है स्थौल्यनाम स्थूलता और
सामर्थ्य और सेनाके विषे नपुंसकलिग और
काक तथा सीरीनाम बलदेवके विषे पुलिग
बल शब्द होता है ॥ १९५ ॥ वात्यानाम
पवनसमूहके विषे पुलिग और वातासह
अर्थात् पवनविकारके नसनेवाले प्राणीके
विषे तीनों लिगमें वानुल शब्द होता है
और अपिशब्दसे वानुल शब्दभी होता है
गठकेविषे भेद्यलिग यानी विशेष्यलिग और
श्वापद तथा सर्पकेविषे पुलिगमें व्याल शब्द
होता है ॥ १९६ ॥

मलोऽस्त्री पापमिदं विद्वान्यस्त्री शूल
रुगायुधम् ॥ शङ्खारवि द्वयोः कीलः
पालिः रूपश्चपद्विषु ॥ १९७ ॥
कटा शिले कालभेदेऽप्याली सरपा-
वली अपि ॥ अन्ध्यम्बुमिदं तौ त्रि-
काममयादयोगपि ॥ १९८ ॥
पाप और विद्वान् और मिदं नाम

दिकसे उत्पन्न हुआ गैल यह चीनों मल सं-
क्षिप्त है. यह शब्द स्त्रीलिगपरिणत पुंनपुंस-
कलिग है. रुक्नाम रोगविशेष और शामुध
शस्त्रविशेष यह दोनों शूल सक्षिप्त है यह
शब्द स्त्रीलिगसे परिणत है. शङ्खनाम छोटकी
बनोहुई कीलकेविषे दोनों स्त्रीपुलिगमें और
अपिशब्दसे व्यालकेविषे कील शब्द वर्त्तै
है. अभिनाम धारा या कोण और अफ
नाम गोद या चिह्न और पकि (पाँति)
इनकेविषे स्त्रीलिग पालि शब्द होता है ॥
॥ १९७ ॥ शिल्पनाम गीतपापादिक नि-
पुणताकेविषे और कालभेद नाम तीश का-
दारूप कालकेविषे और अपिशब्दसे मूल
घनकी वृद्धिमें और अशमायम और चम-
माके सोलहें भागमें कटा शब्द वर्त्तै है.
सखी और आपलि (पकि) यह दोनों
आलि सक्षिप्त है और अपिशब्दसे सेगुमेंभी
आलि शब्द होता है अन्ध्यम्बुमिदं नाम ता-
मुदके जलके विकारम या भी चंद्रोदयादिक
करकं जो कि समुद्रके जलनी वृद्धि होती है.
उसमें और कालम और मयादामें तथा अपि-
शब्दसे नदीसमुद्रादिकें तीरमें और जल्लि-
परणम रोगम वेला शब्द वर्त्तै है ॥ १९८ ॥

बहुला उत्तिवा गाथी बहुलोऽप्री
नी त्रिषु ॥ मीटाविलागक्रि-
पन्ना शङ्खारवि य ॥ १९९ ॥
जितेऽम्भमि कीलाङ्गं मृग
भयो ॥ जाल ममृद जा
गर्गकेप्यपि ॥ २०० ॥

कृत्तिकातारा और गौ (धेनु) बहुला संज्ञिक हैं. यह शब्द बहुत होनेसे बहुवचन है. और अग्निके विषे बहुल शब्द पुंलिंग होता है. और शित नाम कृष्णवर्णमें तीनों लिंगके विषे बहुल शब्द होता है. विलास तथा क्रिया इन दोनोंमें लोला शब्द वर्त्तते है. शर्करा अर्थात् वालू वा खांडका विकार उपला संज्ञिक है. और अपिशब्दसे पथ्य-रके विषे पुंलिंग यह शब्द होता है ॥ १९९ ॥ शोणित नाम लालमें और अंभस् नाम जलमें कीलाल शब्द वर्त्तते है. आघमें और शिफा नाम वृक्षकी जड़में और भ नाम मूलनक्षत्रमें मूल शब्द वर्त्तते है. समूहमें और आनाय नाम सनसूतकी बनाई हुई रस्सियोंका समूह और गवाक्ष नाम झरोखा और क्षारक नाम नवीन पुष्पकी कली इनमें और अपिशब्दसे दंभमें जाल शब्द वर्त्तते है ॥ २०० ॥

शीलं स्वभावे सद्वृत्ते सस्ये हेतुकृते फलम् ॥ छदिर्नेत्ररुजोः क्लीवं समूहे पटलं न ना ॥ २०१ ॥ अधःस्वरूपयोरस्त्री तलं स्याच्चाभिषे पलम् ॥ और्वानलेऽपि पातालं चैलं वस्त्रेऽधमे त्रिषु ॥ २०२ ॥

स्वभाव (प्रकृति) में और सद्वृत्त नाम सच्चरितमें शील शब्द वर्त्तते है. सस्य नाम वृक्षादिकोंके फलमें तथा हेतुकृत यानी हेतुकरके सिद्ध कियेहुएमें फल शब्द वर्त्तते है. और बाणका अग्रभागभी फल संज्ञिक है.

छदिस् यानी छानी और नेत्ररुज् नाम नेत्रोंका रोग इनके विषे नपुंसकलिंग और समूहकेविषे पुंलिंग नहीं किन्तु स्त्रीनपुंसकलिंग पटल शब्द होता है ॥ २०१ ॥ अधः नाम नीचे अर्थमें और स्वरूपमें स्त्रीलिंगवर्जित तल शब्द वर्त्तते है. आमिषनाम मांसकेविषे पल शब्द वर्त्तते है. और यह शब्द उन्मानमेंभी होता है. और्वानल नाम वाडवाग्निमें और अपिशब्दसे छिद्रमें पाताल शब्द वर्त्तते हैं. वस्त्रके विषे नपुंसक लिंग और अधम नाम नीचेके विषे तीनोंलिंगमें चैल शब्द वर्त्तते है ॥ २०२ ॥

कुकूलं शङ्कुभिः कीणश्च भ्रे ना तु तुषानले ॥ निर्णीते केवलमिति त्रिलिङ्गं त्वेककृत्स्नयोः ॥ २०३ ॥ पर्याप्तिके मपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु ॥ प्रवालमङ्कुरेऽप्यस्त्री त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च ॥ २०४ ॥ करालो दन्तुरे तुङ्गे चारौ दक्षे च पेशलः ॥ मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः स्याल्लोलश्चलसतृष्णयोः ॥ २०५ ॥

॥ इति लान्ताः ॥

कीलोंकरके व्याप्त हुए श्वभ्र नाम छिद्रमें कुकूल शब्द वर्त्तते है. और तुषानल नाम भुसीकीं गारामें पुंलिंग कुकूल शब्द वर्त्तते है. निर्णीत नाम निश्चित अर्थमें नपुंसकलिंग और एक और कृत्स्न नाम समग्र अर्थ इन दोनोंमें तीनों लिंगवाचक केवल शब्द होता है ॥ २०३ ॥ पर्याप्ति (सामर्थ्य) और

क्षेम (कल्याण) और पुण्य इनके विषे नपुंसकलिंग और शिक्षित अर्थमें तीनों लिंगके विषे कुशल शब्द वर्त्ते है अकुरमें तथा अपिशब्दसे नूतन पत्र और विद्रुम तथा वीणादृढके विषे स्त्रीलिंगवर्जित प्रवाल शब्द वर्त्ते है, जड नाम मूर्खमें और अपिशब्दसे मोट्टेमें तीनोंलिंगके विषे स्थूल शब्द वर्त्ते है ॥ २०४ ॥ दतुर नाम ऊचे २ दाँतोंसे युक्तमें तथा तुग नाम ऊचेमें कराळ शब्द वर्त्ते है चारु नाम सुन्दरमें और दक्ष नाम चतुरमें पेशल शब्द वर्त्ते है मूर्खमें तथा अर्भक नाम बालकमें और अपिशब्दसे बालोंमें तथा हाथी घोड़ोंकी पूँछमें बाल शब्द वर्त्ते है चल नाम चलायमान और सत्पुष्प नाम काक्षायुक्त इन दोनोंमें लोल शब्द वर्त्ते है २०५ ॥

॥ इति छान्ता ॥

द्वदावी बनारण्यवह्नी जन्महरौ भवौ ॥ मन्त्री सहायः सचिवौ पतिशास्त्रिनरा धवाः ॥ २०६ ॥ अवयः शैलमेपार्का आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः ॥ भावः सत्तास्वभावान्निप्रायचेष्टात्मजन्मसु ॥ २०७ ॥

इसके अनन्तर वान्तशब्द कहते हैं वन और अरण्यवाह (वनाग्नि) यह दोनों दव दाव सज्जिक हैं जम और हर (महादेव) यह दोनों भव सज्जिक हैं मन्त्री नाम सहाय देनेवाला और सहाय यह दोनों

सचिव सज्जिक हैं पति (स्वामी) और शास्त्री (वृक्ष भेद) और नर (मनुष्य) यह धव सज्जिक हैं ॥ २०६ ॥ शैल (पर्वत) और मेप (मेंढा) और अकं (सूर्य) यह अवि सज्जिक हैं, आज्ञा और आह्वान नाम बुलाना वा पुकारना और अध्वर (यज्ञ) यह हव सज्जिक है, सत्ता और स्वभाव और अभिप्राय तथा चेष्टा तथा आत्मा तथा जन्म इनके विषे भाव शब्द वर्त्ते है ॥ २०७ ॥

स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो गर्भमोचने ॥ अविश्वासेऽपह्ववेऽपि निहृतावपि निह्ववः ॥ २०८ ॥ उत्सेकाः मर्षयोरिच्छाप्रसवे मह उत्सवः ॥ अनुभावः प्रभावे च सता च मतिनिश्चये ॥ २०९ ॥

उत्पाद नाम उत्पत्तिके विषे और फलमें तथा पुष्पमें तथा गर्भके छोड़नेमें प्रसव शब्द वर्त्ते है सन्तान अर्थमेंभी प्रसवशब्द होता है अविश्वासमें और अपह्व नाम अपट्टापमें और निहृति नाम छलमें निह्व शब्द वर्त्ते है ॥ २०८ ॥ उत्सेक नाम ऊपरकों उगना और अमर्ष (क्रोध) इन दोनोंमें तथा इच्छाके प्रसर नाम वेगमें और मह नाम क्षण यानी आनन्दके अवसरमें उत्सव शब्द वर्त्ते है प्रभायमें और सत्पुरुषोंकी मति नाम ज्ञानके निश्चयमें तथा चकारसे भाव सूचनमें अनुभाव शब्द वर्त्ते है ॥ २०९ ॥

स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानं चाद्यो-
पलब्धये ॥ शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे
पारशवो मतः ॥ २१० ॥ ध्रुवो भजे-
दे क्लीवं तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु ॥
स्वो ब्राह्मणात्मनि स्वं त्रिष्व्वात्मीये
स्वोऽस्त्रियां धने ॥ २११ ॥

आद्योपलब्धि नाम प्रथम ज्ञानकेवास्ते
जो स्थान है वह और जो कि जन्मका
कारण पित्रादिक है वह प्रभव संज्ञिक है.
और चकारसे जन्ममूलभी प्रभव संज्ञिक है.
शूद्रास्त्रीकेविषे विप्रतनय नाम ब्राह्मणसे
उत्पन्नहुए पुत्रमें और शस्त्रमें पारशव शब्द
माना है ॥ २१० ॥ भजेद नाम नक्षत्रभेदमें
पुंलिंग और निश्चित अर्थमें नपुंसकलिंग
और शाश्वत नाम नित्यमें तीनों लिंगके
विषे ध्रुव शब्द वर्त्तै है. ज्ञाति नाम सगोज
में तथा आत्मा (क्षेत्रज्ञ) के विषे पुंलिंग
स्व शब्द वर्त्तै है. और आत्मीय अर्थात्
आत्मसंबन्धी पदार्थके विषे तीनों लिंगमें स्व
शब्द वर्त्तै है. और धनके विषे स्त्रीलिंगवर्जित
पुंनपुंसकलिंगके विषे स्व शब्द वर्त्तै है ॥ २११ ॥

स्त्रीकटीवस्त्रवन्धेऽपि नीवी परिपणेऽ-
पि च ॥ शिवा गौरीफेरवयोर्द्वन्द्वं
कलहयुग्मयोः ॥ २१२ ॥ द्रव्यासु-
व्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु ॥
क्लीवं नपुंसकं षण्ढे वाच्यलिङ्गमवि-
क्रमे ॥ २१३ ॥

॥ इति वान्ताः ॥

स्त्रियोंकी कटिके विषे जो कि वस्त्रका
बन्धन है उसमें और परिपण नाम बनि-
योंके मूल धनमें तथा अपिशब्दसे राजपु-
त्रादिकोंके बंधकमें नीवी शब्द वर्त्तै हैं. गौरी
(पार्वती) और फेरव (स्यार) इन दोनोंमें
शिवा शब्द वर्त्तै है. कलह और युग्म नाम
दो इनमें द्वंद्व शब्द वर्त्तै है ॥ २१२ ॥ द्रव-
वस्तु और असु (प्राण) और व्यवसाय
नाम वीर्यातिशय इनके विषे नपुंसकलिंग
और जन्तुओंके विषे स्त्रीलिंगवर्जित सत्व
शब्द होता है. षण्ढ नाम हीजरामें नपुंसकलिंग
क्लीव शब्द वर्त्तै है. और अविक्रम नाम
आलसीमें वाच्यलिंग यानी विशेष्यलिंग
क्लीवशब्द होता है. वकारवकारकी सवर्णता
होनेसे इस शब्दका यहाँ ग्रहण है. ॥ २१३ ॥

॥ इति वान्ताः ॥

द्वौ विशौ वैश्यमनुजौ द्वौ चराभिम-
रौ स्पशौ ॥ द्वौ राशी पुञ्जमेषाद्यौ
द्वौ वंशौ कुलमस्करौ ॥ २१४ ॥
रहःप्रकाशौ वीकाशौ निर्वेशो भृति-
भोगयोः ॥ कृतान्ते पुंसि कीनाशः
क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु ॥ २१५ ॥

इसके अनन्तर शान्त शब्दोंको कहते
हैं. वैश्य और मनुज (मनुष्य) यह दोनों
विशू संज्ञिक हैं. चर नाम जो कि राजाका
गुप्त पुरुष है और अभिमर (युद्ध) यह
दोनों स्पश संज्ञिक हैं. पुंज (समूह) और
मेषादिकराशि यह दोनों राशि संज्ञिक हैं.

कुल और मस्कर नाम वास यह दोनों वग सन्निक हैं ॥ २१४ ॥ रह. (एकान्त) और प्रकाश यह दोनों वीकाश सन्निक हैं. भृति अर्थात् मजूरी और भोग (उपभोग) यह दोनों निर्वेश सन्निक हैं रुवात नाम यममें पुडिंगके विषै और क्षुद्र (रुपण) और कर्पक नाम खेती करनेवाला इन दोनोंके विषै तीनोंलिगमें कीनाश शब्द होता है ॥ २१५ ॥

पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः स्यात्कुश-
मप्सु च ॥ दशाऽवस्थानेकविधाप्या
शा तृष्णापि चायता ॥ २१६ ॥
वशा स्त्री करिणी च स्याद्दृग्ज्ञाने
ज्ञातरि त्रिषु ॥ स्यात्कर्कशः साहसिकः
कठोरामसृणावपि ॥ २१७ ॥

पद नाम व्याज यानी बहानेमें और लक्ष्य नाम निशानेमें और निमित्तमें अप देश शब्द वर्त्ते है अप नाम जलोंके विषै नपुसकालिग और चकारसें रामपुत्रमें तथा दर्भमें तथा द्वीपमें पुडिंग कुग शब्द होता है और जो कि अनेक प्रकारकी वाल्या-दिकारूप अवस्था है वह दशा सन्निक है और अपिशब्दसें वत्तके अन्तर्भागमेंभी लुडिंग तथा बहुवचन दशागन्द वर्त्ते है और जो आयत नाम दीर्घ तृष्णा (फाता) है यह और चकारसें दिशाभी जाशा सन्निक है ॥ २१६ ॥ स्त्री और करिणी नाम हथिनी वशा सन्निक है और चका-

रसें वाझ गौभी वशा सन्निक है ज्ञान नाम बुद्धिमें स्त्रीलिग और ज्ञातानाम जाननेवा-लेमें तीनों लिगके विषै दृश् शब्द वर्त्ते है यह शब्द दर्शन तथा नेत्रके विषैभी होता है साहसिक नाम विवेकवर्जित और कठोर (दृढ) और अमसृण नाम दुःस्पर्श यह कर्कश सन्निक है ॥ २१७ ॥

प्रकाशोऽतिप्रसिद्धेऽपि शिशावज्ञे च
वालिशः ॥

॥ इति शान्ताः ॥

अति प्रसिद्धमें तथा अपिशब्दसें आ-तपमें प्रकाश शब्द वर्त्ते है. और शिशुनाम बालक और अज्ञानाम मूर्ख इनमें वालिश शब्द वर्त्ते है

॥ इतिशान्ता ॥

१ नाश क्षये तितोधाने जीवितेश प्रिये यमे ॥
नृदासखड्गो निस्त्रिशाप्रशुः सूर्याश्व करा १
आश्वाख्या शालिशीघ्राथे पाशो गन्धनश-
स्त्रयो ॥

यह सार्धश्लोक ओर पुस्तकोंमें विशेष है इसका अर्थ यह है—

क्षयमें और तितोधान नाम टापनेमें नाश शब्द वर्त्ते है और प्रियमें तथा यमराजम जी-वितेश शब्द वर्त्ते है नृदास नाम प्रर और खड्ग (तलवार) यह गेता निस्त्रिंश सन्निक है स-ूर्यश्व नाम सूर्यके चरित्र और करा (हाथ) अश्व सन्निक है १ शालि नाम धारिण्य और शी-घ्राथमें आश्व नाम घोष है और गन्धन जी-शयमें पाश शब्द वर्त्ते है

सुरमत्स्यावनिमिषौ पुरुषावात्ममान-
वौ ॥ २१८ ॥ काकमत्स्यात्खगौ
ध्वाङ्क्षौ कक्षौ तु तृणवीरुधौ ॥
अभीषुः प्रग्रहे रश्मौ प्रैषः प्रेषण-
मर्दने ॥ २१९ ॥

इसके अनन्तर पान्त शब्दोंको कहते
हैं. सुर (देवता) और मत्स्य नाम
मछली यह दोनों अनिमिष संज्ञिक हैं.
आत्मा (क्षेत्रज्ञ) और मानव (नर) यह
दोनों पुरुष संज्ञिक हैं ॥ २१८ ॥ काक
और मत्स्यात्खग अर्थात् मछलियोंका खा-
नेवाला पक्षी वगुला आदिक यह दोनों
ध्वाङ्क्ष संज्ञिक हैं. तृण और वीरुध् नाम
लता यह दोनों कक्ष संज्ञिक हैं. प्रग्रह नाम
घोडा आदिकोंकी रस्सीमें और रश्मि नाम
किरणमें अभीषु शब्द वर्त्तते हैं. प्रेषण नाम
भोजनेमें और मर्दन नाम पीडामें प्रैष शब्द
वर्त्तते हैं. ॥ २१९ ॥

पक्षः सहायेऽप्युष्णीषः शिरोवेष्टकि-
रीटयोः ॥ शुक्रले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते
वृषभे वृषः ॥ २२० ॥ कोषोऽस्त्रो
कुङ्मले खड्गपिधानेऽर्थौघदिव्ययोः ॥
घूतेऽक्षे शारिफलकेऽप्याकर्षोऽथाक्ष-
मिन्द्रिये ॥ २२१ ॥

सहायमें तथा अपिशब्दसे मासार्द्धादि-
कमें पक्ष शब्द वर्त्तते हैं. शिरोवेष्ट नाम पगडी
और किरीट (मुकुट) इन दोनोंमें उष्णीष
शब्द वर्त्तते हैं. शुक्रल नाम वृषणमें तथा मू-

षिक नाम मुसेमें तथा श्रेष्ठमें और सुकृत्
नाम धर्ममें और वृषभ नाम बैलमें वृष शब्द
वर्त्तते हैं. ॥ २२० ॥ कुङ्मल नाम कलमें
और खड्गपिधान नाम तरवारके म्यानमें
तथा अर्थौघ नाम द्रव्यका समुदाय और
दिव्य नाम शपथमें कोष शब्द वर्त्तते हैं. यह
शब्द अस्त्री नाम पुनपुंसकलिंगमें होवे है.
घूत नाम जुआमें और अक्ष नाम फाँसेमें
और शारिफलकनाम चौपडमें और अपि-
शब्द आकर्षणमेंभी आकर्ष शब्द वर्त्तते हैं.
और इंद्रियके विषे अक्ष शब्द वर्त्तते हैं ॥ २२१

ना घूताङ्गे कर्षचक्रे व्यवहारे कलि-
द्रुमे ॥ कर्षवार्ता करीपाग्निः कर्षूः
कुल्याभिधापिनी ॥ २२२ ॥ पुंभा-
वे तत्क्रियायां च पौरुषं विषमप्यु च ॥
उपादानेऽप्यामिषं स्यादपराधेऽपि
किल्बिषम् ॥ २२३ ॥

और घूतांग अर्थात् फाँसेमें और कर्ष
अर्थात् तोलभेदमें और चक्र अर्थात् पहि-
यामें और व्यवहारमें और कलिद्रुम नाम
विभीतक यानी बहेडेके वृक्षमें अक्ष शब्द
ना अर्थात् पुलिंग है. वार्ता (जीविका)
और करीपाग्नि अर्थात् शूके हुए गोवरका
अग्नि कर्षू संज्ञिक है. यह शब्द पुलिंग है.
और कुल्या नाम नदीभेदके नामवाला कर्षू
स्त्रीलिंग है ॥ २२२ ॥ पुंभाव अर्थात् पु-
रुषके भावमें और तत्क्रिया अर्थात् उस
पुरुषके कर्मके विषे और चकारसे तेजके

विषं पौरुष शब्द वर्त्ते है अपना नाम जलोंमें तथा चकारसे विषमें विष शब्द वर्त्ते है उपादान नाम उत्कोचमें और अपिशब्दसे मांसमें तथा सभोगमें और भोगनेयोग्य वस्तुमें आपिष शब्द वर्त्ते है अपराधमें और अपिशब्दसे पापमें और रोगमें कित्विष शब्द वर्त्ते है ॥ २२३ ॥

स्याद्दृष्टौ लोकधात्वंशे वत्सरे वर्षम-
स्त्रियाम् ॥ प्रेक्षा नृत्येक्षणं प्रज्ञा भि-
क्षा सेवार्थना भृतिः ॥ २२४ ॥ वि-
द् शोभापि त्रिषु परे न्यक्षं कात्स्न्यं-
निरुद्धयोः ॥ प्रत्यक्षेऽधिष्ठितेऽध्यक्षो
रूक्षस्त्वप्रेम्ण्यचिक्वणे ॥ २२५ ॥

॥ इति पान्ताः ॥

वृष्टि नाम मेघ वर्षनेमें और लोकधा-
त्वश अर्थात् लोकधातु नाम जगद्दीप उसका
अश भारतादि खड्ड तिसमें और वत्सर नाम
वर्षमें वर्ष शब्द वर्त्ते है यह शब्द स्त्रीलिंग-
वर्जित पुनपुसकलिंगमें होता है नृत्येक्षण
नाम नृत्यका देखना और प्रज्ञा (बुद्धि)
यह दोनों प्रेक्षा सत्तिक है सेवा और
अर्थना (यात्रा) और भृति अर्थात् मज-
दूरी यह भिक्षा सत्तिक है और मागोहुई
वस्तुमेंभी भिक्षा शब्द वर्त्ते है ॥ २२४ ॥
शोभा और अपिशब्दसे कान्ति तथा वाणी
और रुचि त्रिषु सत्तिक है पर नाम इससे
अगारीके शब्द तीनों लिंगमें होते हैं
कात्स्न्य नाम साकत्स्य और निरुद्ध नाम

अधम इन दोनोंमें न्यक्ष शब्द वर्त्ते है प्रत्य-
क्षमें और अधिकृत नाम नियुक्तमें अध्यक्ष
शब्द वर्त्ते है अप्रेम नाम स्नेहके अभा-
वमें और अचिक्वण नाम जो कि चिकना
न हो उसमें रूक्ष शब्द वर्त्ते है ॥ २२५ ॥

॥ इति पान्ता ॥

रविश्वेतच्छदौ हंसौ सूर्यवह्नी विभाव-
सू ॥ वत्सौ तर्णकवर्षौ द्वौ सारङ्गा-
श्च दिवौकसः ॥ २२६ ॥ शुङ्गारा-
दौ विपे वीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः ॥
पुंस्फुत्तंसावतंसौ द्वौ कर्णपूरे च
शेखरे ॥ २२७ ॥

इसकेअनन्तर सान्त शब्दोंको कहते हैं
रवि नाम सूर्य और श्वेतच्छद (पक्षिभेद)
यह दोनों हंस सत्तिक हैं सूर्य और वह्नि
(अग्नि) यह दोनों विभावसु सत्तिक है
तर्णक नाम गौका बच्छा और वर्ष यह
दोनों वत्स सत्तिक हैं सारंग (चातक)
और चकारसे देवता दिवौकस् सत्तिक हैं
॥ २२६ ॥ शुङ्गारादिक अर्थात् शृङ्गार धीर
करुणादिकमें और विपमें और वीर्य नाम
तेजमें और गुण अर्थात् स्वादु अम्लादिकमें
और रागमें तथा द्रवमें रस शब्द वर्त्ते है
कर्णपूर नाम कर्णके आभूषणविशेषमें तथा
शेखर नाम शिरके आभूषणमें उत्तम अव-
तल शब्द वर्त्ते हैं यह दोनों शब्द पुल्लिंगके
विषे होते हैं ॥ २२७ ॥

देवभेदेऽनले रश्मौ वसु रत्ने धने
वसु ॥ विष्णौ च वेधाः स्त्री त्वाग्नी-
हिताशंसाहिदंष्ट्रयोः ॥ २२८ ॥ ला-
लसे प्रार्थनात्सुक्ये हिंसा चौर्यादिक-
र्म च ॥ प्रसूरश्चापि भूद्यावौ रोदम्यौ
रोदसी च ते ॥ २२९ ॥

देवभेदमें तथा अनल नाम अग्निमें और
रश्मि नाम किरणमें पुल्लिङ्ग वसु शब्द वर्त्त
है, रत्नमें तथा धनमें नपुंसक वसु शब्द वर्त्त
है, विष्णुके विषे और चकारसे ब्रह्मलोकविषे
वेधस् शब्द वर्त्त है, हिताशंसा नाम हितका
कहना यानी आशीर्वाद और अहिदंष्ट्रा
नाम सौपकी डाढ़ इन दोनोंमें आशिस् शब्द
वर्त्त है, यह शब्द स्त्रीलिङ्ग है ॥ २२८ ॥
प्रार्थना नाम याज्ञा यानी मागना और
औत्सुक्य अर्थात् उत्सुकता यह दोनों ला-
लसा संज्ञिक हैं, और तृष्णाको अधिकता-
मेंभी लालसा शब्द होता है, और चौर्यादि
कर्म अर्थात् चोरी आदिक कर्म और च-
कारसे वधभी हिंसा संज्ञिक है, अश्वा
(घोड़ी) और अपिशब्दसे माताभी प्रसू
संज्ञिक है, भूद्यावौ नाम एकवचन करके
कहेहुये पृथिवी आकाश शब्द रोदम्यौ रो-
दसी संज्ञिक है ॥ २२९ ॥

ज्वालाभासौ न पुंस्यर्चिर्ज्योतिर्भद्यो-
तद्वटिषु ॥ पापापराधयोरगः खग-
वाल्पादिनोर्वयः ॥ २३० ॥ तेजः-
पुरीषयोर्वर्चो महस्तूतसवतेजसोः ॥

स्त्री गृणं च स्त्रीपुष्पे गार्हो ज्ञाने
गृणे तमः ॥ २३१ ॥

ज्वाला तथा भाग (दीप्ति) के विषे
अर्चिस् शब्द वर्त्त है, यह पुल्लिङ्गमें नहीं
गैता किन्तु स्त्री नपुंसकलिङ्गमें गैता है, अ
नाम नक्षत्र और यात नाम आकाश और
वटि नाम नेत्रके नासिका मध्यभाग इनके
विषे ज्योतिस् शब्द वर्त्त है, पाप और अप-
राध इन दोनोंके विषे आगस् शब्द वर्त्त है,
खग नाम पक्षी और वाल्पादिक अवस्थामें
वयस् शब्द वर्त्त है ॥ २३० ॥ तेज और
पुरीष नाम बिठा इन दोनोंमें वर्धस् शब्द
वर्त्त है, उत्सव और तेज इन दोनोंमें सहस्
शब्द वर्त्त है, गुण नाम गुणभेदमें तथा स्त्री
पुष्प अर्थात् स्त्रीके आर्तवमें तथा चकारसे
धूलिमें रजस् शब्द वर्त्त है, राहु नाम ग्रह-
भेदमें और ध्वान्त नाम अन्धकारमें और
गुण नाम गुणभेदमें तमस् शब्द वर्त्त है ॥ २३१

छन्दः पद्येऽभिलाषे च तपः कृच्छ्रा-
दिकर्म च ॥ सहो वलं सहा मार्गो नमः
स्वं श्रावणो नभाः ॥ २३२ ॥ ओकः
सद्माश्रयश्चोकाः पयः क्षीरं पयोऽम्बु
च ॥ ओजो दीप्तौ वले स्रोत इन्द्रि-
ये निम्नगारये ॥ २३३ ॥

पद्यनाम गायत्र्यादिक वृत्तमें और अ-
भिलाषेमें और चकारसे स्वैराचारमें छन्दस्
शब्द वर्त्त है, और कृच्छ्रादि कर्म अर्थात्
कृच्छ्र नाम सातपनादिव्रत और आदिश-

वर्त्से चाद्रायणादिक और चकारसे लोका-
न्तर तथा धर्ममें तपस् शब्द वर्त्ते है बल
नाम बलवाचक सहस् शब्द नपुसकलिङ्ग है
और मार्गनाम मार्गशीर्ष मासवाचक सहस्
शब्द पुलिङ्ग है खनाम आकाशवाचक नभस्
शब्द नपुसकलिङ्ग है और श्रावणमासवाचक
नभस् शब्द पुलिङ्ग है ॥ २३२ ॥ सध्र
नाम गृहवाचक ओकस् शब्द नपुसकलिङ्ग है
और आश्रयवाचक ओकस् शब्द पुलिङ्ग
है, क्षीर नाम दुग्ध और अम्बु नाम
जल पयस् सन्निक है दीप्तिमें तथा बलमें
ओजस् शब्द वर्त्ते है और इन्द्रियमें और
निम्नगारय नाम नदीके वेगमें स्रोतस् शब्द
वर्त्ते है ॥ २३३ ॥

तेजः प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्लेऽप्य-
तस्त्रिषु ॥ विद्वान्विदंश्च वीभत्सो हिं-
स्रोऽप्यतिशये त्वमी ॥ २३४ ॥ वृ-
द्धमशस्त्वयोऽर्णायान्कनीयास्तु युवा-
ल्पयोः ॥ वरीयांस्तूरुवरयोः साधीया-
न्साधुवाढयोः ॥ २३५ ॥

॥ इति सान्ताः ॥

प्रभावमें और दीप्तिमें तथा बलमें और
शुक्लनाम वीरजमें तेजस् शब्द वर्त्ते है इससे
परे सातवर्ग पर्यन्त शब्द तीनों लिङ्गमें होते
हैं विदम् (ज्ञाता) और चकारसे आत्म-
ज्ञानी विदस् सन्निक है हिंस नाम क्रूर और
अपिशब्दसे रसभेदमें वीभत्स शब्द वर्त्ते है,
यह कहेजानेवाले ज्यायस् आदिक साधीय-

स् शब्दपर्यन्त सात शब्द वृद्धादिक वाढप-
र्यन्त शब्दोंके अतिशय अर्थमें जानने योग्य
है ॥ २३४ ॥ वृद्ध नाम बड़ा और प्रश-
स्यनाम बड़ाई करनेयोग्य इन दोनोंके अति-
शय अर्थमें ज्यायस् शब्द वर्त्ते है युवा और
अल्पनामें थोड़ा इनदोनोंके अतिशय अर्थमें
कनीयस् शब्द वर्त्ते है उरु महान् और वर
(श्रेष्ठ) इन दोनोंके अतिशय अर्थमें वरी-
यस् शब्द वर्त्ते है साधु और वाढनाम दृढ इ-
न दोनोंके अतिशय अर्थमें साधीयस् शब्द
वर्त्ते है ॥ २३५ ॥

॥ इतिसान्ताः ॥

दलेऽपि बह्वं निर्वन्धोपरागाकादयो
ग्रहाः ॥ दार्यापोढे काथरसे निर्व्यू-
हो नागदन्तके ॥ २३६ ॥ तुलास्त-
त्रेऽश्वादिरश्मौ ग्रहाहः ग्रहोऽपि
च ॥ पत्नीपरिजनादानमूलशापाः
परिग्रहाः ॥ २३७ ॥

इसके अनन्तर हान्तशब्द कहते है दल-
नाम पत्तमें और अपिशब्दसे मोरपाखमेंभी
बह्वं शब्द वर्त्ते है, निर्वन्धनाम आग्रह विशेष
याना हठ और उपराग अर्थात् चद्रसूर्यका
ग्रहण और अर्कादिक अर्थात् सूर्यादिक ग्र-
ह ग्रह सन्निक हैं द्वार नाम दरवाजेमें और
आपीड नाम शेरार यानी शिरके आभूष-
णोंमें और काथरस यानी काढेके रसमें ना-
गदन्तक अर्थात् गृहादिककी भीतिमें स्थि-
तहुए दो कीलोंमें निर्व्यूह शब्द वर्त्ते है ॥ २३६ ॥

तुलासूत्र अर्थात् तराजूके सूतमें यानी जिसको पकड़कर कि तोलाजाता है और अ-
श्वादिशिम अर्थात् वोडादिकोंकी रस्सीमें
प्रग्राह प्रग्रह शब्द वर्ते हैं. पत्नी विवाहितस्त्री
और परिजन (परिवार) और आदान
(स्वीकार) और मूल तथा शाप यह परि-
ग्रह संज्ञिक हैं ॥ २३७ ॥

दारेषु च गृहाः श्रोण्यामप्यारोहो
वरस्त्रियाः ॥ व्यूहो वृन्देऽप्यहिर्वृत्रेऽ-
प्यग्नीन्द्रकास्तमोऽपहाः ॥ २३८ ॥
परिच्छदे नृपाहंऽर्थे परिवर्हो-

॥ इति हान्ताः ॥

दारनाम स्त्रियोंके विषे और चकारसें
घरकेविषे गृह शब्द वर्ते है. यह शब्द पुं-
लिंग तथा बहुवचनमें होता है. और उत्तम-
स्त्रीके श्रोणिनाम कटिमें और अपिशब्दसें
सीजियोंमें तथा हाथीके आरोहमें तथा व-
स्त्रादिककी लंबाईमें और अवरोहमें आरोह
शब्द वर्ते है. वृन्दनाम समूहमें और अपिश-
ब्दसें सेनाकी रचनामें व्यूह शब्द वर्ते है.
और वृत्रनाम वृत्रासुरमें तथा अपिशब्दसें
सर्पमें अहि शब्द वर्ते है. अग्नि और इंदु
(चंद्रमा) और अर्क (सूर्य) यह तीनों
तमोपह संज्ञिक हैं ॥ २३८ ॥ परिच्छद नाम
छत्र चामरादिकमें और नृपाहं अर्थ अर्थात्
राजाके योग्य द्रव्यमें परिवर्ह शब्द वर्ते है.

॥ इतिहान्ताः ॥

ऽव्ययाः परे ॥ आजीपदर्थेऽभिव्याप्तौ
सीमार्थे धातुयोगजे ॥ २३९ ॥

इससेपरे कहेजानेवाले आडादिकशब्द
अव्यय कहेजाते हैं. इस वर्गमें उन अव्यय
शब्दोंका आरंभ पहिलेशब्दोंकी समान ना-
नार्थ होनेसे किया गया है. ईषदर्थनाम अ-
ल्पार्थमें और अभिव्याप्ति अर्थात् सर्वत्र
व्याप्ति होनेमें सीमार्थनाम मर्यादा अर्थमें और
धातुयोगज अर्थात् धातुके योगसे उत्पन्न-
हुए अर्थमें आङ् अव्यय वर्ते है. इसमें
ङकार उच्चारणकेवास्ते है. ॥ २३९ ॥

आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्येऽप्यास्तु
स्यात्कोपपीडयोः ॥ पापकुत्सेपदर्थे
कु धिङ् निर्भर्त्सननिन्दयोः ॥ २४० ॥
चान्वाचयसमाहारेतरेतरसमुच्चये ॥
स्वस्त्याशीःक्षेमपुण्यादौ प्रकर्षे लङ्घ-
नेऽप्यति ॥ २४१ ॥

और जो कि प्रगृह्यसंज्ञिक आ यह
शब्द निपात है वह स्मृतिनाम याद
करनेमें तथा वाक्यनाम वाक्यकी पूर्तिमें
और अपिशब्दसें दया तथा समुच्चयकेविषे-
भी वर्ते है. कोपनाम क्रोध और पीडा इन
दोनोंमें आः अव्यय वर्ते है. पाप और कुत्सा
(निन्दा) और ईषदर्थ अर्थात् अल्पार्थ इ-
नकेविषे कु शब्द वर्ते है. निर्भर्त्सन अर्थात्

१ अव्ययके लक्षण लिखतेहैं-सदृशं त्रिषु लिङेषु
सर्वासु च विभक्तिषु ॥ वचनेषु च सर्वेषु यन्नव्ये-
ति तदव्ययम् ॥ १ ॥

फटकारना और निन्दा दोषका प्रकट करना इन दोनोंमें विक्र शब्द वर्त्तै है ॥ २४० ॥
अन्वाचय तथा समाहार तथा इतरतरयोग तथा समुच्चय अर्थमें च अव्यय वर्त्तै है आशी (आशीर्वाद) और क्षेम (कल्याण) यानी निरुपद्रव तथा पुण्यादिकमें स्वस्ति शब्द वर्त्तै है प्रकर्षनाम बाहुल्यार्थमें और लघन लौघनेमें और अपिशब्दसं अत्यर्थमें अति शब्द वर्त्तै है ॥ २४१ ॥

स्वित्प्रश्ने च वितर्के च तु स्याद्देदेऽवधारणे ॥ सक्तसहैकवारे चाप्पारादूरसमीपयोः ॥ २४२ ॥ प्रतीच्याचरमे पश्चादुताप्पर्ययिकल्पयोः ॥
१ पुनःसहार्ययो' शश्वत्साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः ॥ २४३ ॥

प्रश्न और वितर्क इन दोनोंमें स्वित्र शब्द वर्त्तै है चकारसे पादपूरणमें स्वित्र शब्द वर्त्तै है भेदमें और अवधारण नाम निश्चयमें तु अव्यय वर्त्तै है सह नाम सहाय्यार्थ और एकवारमें सह अव्यय वर्त्तै है दूर अर्थ और समीप अर्थ इन दोनोंमें आराव शब्द वर्त्तै है ॥ २४२ ॥ प्रतीची नाम पश्चिमदिगामें और चरमनाम अन्तसंबन्धी कोटादिकमें पश्चात् शब्द वर्त्तै है अप्यर्थ अर्थात् अतिशब्दका अर्थ नमुचय और विस्तृत अर्थ इन दोनोंमें उत शब्द वर्त्तै है पुनः नाम पान पुन अर्थ तथा तदर्थ इन्द्रोनोंमें शम्भु शब्द वर्त्तै है और प्रत्यक्ष

और तुल्यार्थ इन दोनोंमें साक्षात् शब्द वर्त्तै है ॥ २४३ ॥

सेदानुकम्पासंतोपविस्मयामन्नणे वत ॥ हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविपादयोः ॥ २४४ ॥ प्रति प्रतिनिधौ वीप्सा लक्षणादौ प्रयोगतः ॥ इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिसमाप्तिपु ॥ २४५ ॥

त्वेद अर्थमें तथा अनुकपा अर्थात् कृपा अर्थमें और संतोष अर्थमें तथा विस्मय नाम आश्चर्य अर्थमें और आमन्त्रण नाम बुलावनेके अर्थमें वत अव्यय वर्त्तै है हर्ष (आनन्द) में और अनुकपा (कृपा) में और वाक्यका आरम्भ और विपाद अर्थ इन दोनोंमें हत अव्यय वर्त्तै है ॥ २४४ ॥ प्रतिनिधि नाम जो कि मुराय करके सट्टरा है उसमें और वीप्सा नाम व्याप्त होनेकी इच्छा और लक्षणा और आदिशब्दमें इत्थ भूतारयानादिकमें प्रयोगमें प्रति अव्ययका प्रक्षेप है हेतु नाम कारणार्थ और प्रकरण नाम प्रकारार्थ और प्रकाश अर्थमें और आदि शब्दमें एवमर्थमें और समानि नाम अतवारक अर्थमें इति अव्यय वर्त्तै है ॥ २४५ ॥

मान्या पुस्तकान्यथे पुरार्थेऽग्रत इत्यपि ॥ पारतावय मान्येऽप्यधी मानेऽवधारणे ॥ २४६ ॥ मन्त्रात्मनन्तगन्धमन्त्रात्मन्त्यन्तयो अथ ॥ प्रधानिर्गन्धमन्त्रात्मन्त्योनां नानेकोपपाथयोः ॥ २४७ ॥

प्राचीनाम पूर्वदिशामें और प्रथमार्थमें और पुरार्थ अर्थात् बीतेहुए कालमें और अग्रतः अग्रवाचक अर्थमें पुरस्तात् अव्यय वर्त्तते है. साकल्यार्थमें तथा अवधिअर्थमें तथा माननाम परिमाण अर्थमें तथा अवधारण नाम निश्चयार्थमें यावत् तावत् अव्यय होते हैं ॥ २४६ ॥ मंगलार्थमें तथा अनन्तर अर्थमें और आरम्भ अर्थमें तथा प्रश्नमें तथा कात्स्न्य अर्थ अर्थात् समग्रताके अर्थमें अथ अव्यय वर्त्तते है. निरर्थक अर्थ और अविधि अर्थात् विधिहीन इन दोनोंमें वृथा अव्यय होता है. अनेकार्थ तथा उभयार्थ इन दोनोंमें नाना अव्यय वर्त्तते है ॥ २४७ ॥

नु पृच्छायां विकल्पे च पश्चात्सादृश्ययोरनु ॥ पश्चावधारणाऽनुज्ञानुनयामत्रणे ननु ॥ २४८ ॥ गर्हासमुच्चयप्रश्नशङ्कासंभावनास्वपि ॥ उपमायां विकल्पे वा सामि त्वर्धे जुगुप्सिते ॥ २४९ ॥

पृच्छानाम प्रश्नार्थमें तथा विकल्पार्थमें और चकारसें अनुनय तथा प्रतीतिार्थमें नु शब्द वर्त्तते है पश्चात् अर्थ और सादृश्यार्थ इन दोनोंमें अनु अव्यय वर्त्तते है. प्रश्नमें और अवधारण निश्चय अर्थमें और अनुज्ञानाम आज्ञाअर्थमें और अनुनय नाम समुज्ञानेके अर्थमें और आमंत्रण नाम संबोधन अर्थमें ननु अव्यय वर्त्तते है ॥ २४८ ॥ गर्हा अर्थात् निन्दा अर्थमें और समुच्चय अर्थमें और

प्रश्न अर्थमें और शंका अर्थमें और संभावना अर्थमें अपि अव्यय वर्त्तते है. उपमा अर्थके विषे तथा विकल्पअर्थके विषे वा अव्यय वर्त्तते है. और अर्ध अर्थमें तथा जुगुप्सित निन्दित अर्थमें सामि अव्यय वर्त्तते है ॥ २४९ ॥

अमा सह समीपे च कं वारिणि च मूर्धनि ॥ इवेत्यमर्थयोरेवं नूनं तर्कऽर्थनिश्चये ॥ २५० ॥ तूष्णीमर्थे सुखे जोषं किं पृच्छायां जुगुप्सने ॥ नाम प्राकाश्यसंभाव्यक्रोधोपगमकुत्सने २५१

सहअर्थमें तथा समीप अर्थात् निकट अर्थमें अमा अव्यय वर्त्तते है. वारिनाम जलमें और मूर्धानाम शिरमें और चकारसें सुखमें कं अव्यय वर्त्तते है. इवअर्थ नाम तुल्यार्थमें और इत्थंअर्थनाम इसप्रकार अर्थमें एवं अव्यय वर्त्तते है. तर्कमें और अर्थ निश्चय अर्थात् अर्थकी निश्चयमें नूनं अव्यय वर्त्तते है ॥ २५० ॥ तूष्णीमर्थ अर्थात् मौनअर्थ और सुखमें जोषं अव्यय वर्त्तते है. पृच्छा नाम प्रश्न अर्थमें और जुगुप्सन नाम निन्दा करनेमें किं अव्यय वर्त्तते है. प्राकाश्य नाम प्रसिद्धि अर्थमें और संभाव्यनाम कथंचित् अर्थमें और क्रोध अर्थमें और उपगम नाम सद्द्वेषके अंगीकार अर्थमें और कुत्सननाम निन्दामें नाम अव्यय वर्त्तते है ॥

अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम् ॥ हुं वितर्के परिप्रश्ने समयान्ति-कमध्ययोः ॥ २५२ ॥ पुनरप्रथमे

भेदे निर्निश्चयनिषेधयोः ॥ स्यात्प्र-
वन्धे चिरातीते निकटगामिके
पुरा ॥ २५३ ॥

भूषणनाम अलंकार अर्थमें और पर्याप्ति-
नाम परिपूर्णता अर्थमें और शक्तिनाम सामर्थ्य
अर्थमें और वारण अर्थात् निवारण अर्थमें
इनका कहनेवाला अल अव्यय है वितर्कमें
और परिभ्रममें हु अव्यय वर्त्ते है और अ-
तिकनाम समीप और मध्य अर्थमें समया
अव्यय वर्त्ते है ॥ २५२ ॥ अमथम अर्थमें
तथा भेद नाम भेदार्थमें पुन अव्यय वर्त्ते है
निश्चय अर्थमें और निषेध अर्थ अर्थात्
दूरकरनेमें नि अव्यय वर्त्ते है प्रवन्धमें
चिरानाम चिरतन यानी बहुतकाल अर्थमें
और अतीत नाम बीतेहुए कालमें और
निकटअर्थमें और आगामिक अर्थात् आने
वाले कालमें पुरा शब्द वर्त्ते है ॥ २५३ ॥

ऊरयूरी चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ
त्रयम् ॥ स्वर्गं परे च लोके स्वर्वाता-
संभाव्ययोः किल ॥ २५४ ॥ निषे-
धवाक्यालंकारजिज्ञासानुनये खलु ॥
समोपोन्नतः शीघ्रसाकल्याभिमुखेऽ-
भितः ॥ २५५ ॥ नामप्राकाशयो-
माद्भिर्मथोऽन्योन्यं रहस्पि ॥ तिरो-
ऽन्तर्धा तिर्पगयं हा विपादशुग-
तिपु ॥ २५६ ॥ अहहेत्यद्भुते खेदे
हि रैतावधारणे ॥

॥ इति नानार्थवर्गः ॥ ३ ॥

विस्तारमें और अङ्गीकृति अर्थात् अं-
गीकार अर्थमें ऊररी ऊरी उररी यह तीन
अव्यय वर्त्ते है स्वर्गनाम स्वर्गलोकमें तथा
परलोकमें स्वः अव्यय वर्त्ते है वार्ता और
संभाव्यनाम संभावना करनेयोग्य अर्थमें इन
दोनोंमें किल अव्यय वर्त्ते है ॥ २५४ ॥
निषेध अर्थमें तथा वाक्यालंकार नाम वा-
क्यभूषा अर्थमें और जिज्ञासा नाम जान-
नेकी इच्छा अर्थमें और अनुनय नाम सा-
त्वन्में खलु अव्यय वर्त्ते है समीप अर्थमें
और उन्नतः अर्थात् उन्नयार्थमें और शीघ्र
अर्थमें और साकल्यार्थ अर्थात् समग्रता
अर्थके विषे और अभिमुखनाम सम्मुख
अर्थमें अभित शब्द वर्त्ते है ॥ २५५ ॥
नाम अर्थमें तथा प्राकाश नाम प्रसिद्धिअ-
र्थमें प्रादु अव्यय वर्त्ते है अन्योन्य नाम
परस्पर अर्थ और रहनाम एकान्त अर्थमें
मिथ अव्यय वर्त्ते है अन्तर्धनाम छिपनेअ-
र्थमें तथा तिर्पगयं अर्थात् तिरछेअर्थमें
तिर अव्यय वर्त्ते है और विपाद अर्थ त-
था शुक् शोक अर्थ तथा भक्ति (पीडा)
अर्थ इनमें विपाद अव्यय वर्त्ते है ॥ २५६ ॥
अद्भुत नाम आश्चर्य अर्थमें और खेद अ-
र्थमें अहह अव्यय वर्त्ते है और हेतु (का-
रण) में तथा अवधारण (निश्चय) अर्थमें
हि अव्यय वर्त्ते है ॥

॥ इति नानार्थवर्ग समाप्त ॥

चिराय चिररात्राय चिरस्याद्याधिरा-
र्थकाः ॥ मुहुः पुनः पुनः शब्दधी-

क्षणमसकृत्समाः ॥ १ ॥ साक् झटि-
त्यञ्जसाह्वाय द्राक् मङ्क्षु सपदि द्रुते ॥
वलवत्सुष्टु किमुत स्वत्यतीव च नि-
र्भरे ॥ २ ॥

चिराय चिररात्राय चिरस्य और आ-
दिशब्दोंसे चिरेण चिरात् चिरं यह छै अ-
व्यय चिरार्थक अर्थात् दीर्घकालवाचक हैं.
मुहुः पुनःपुनः शश्वत् अभीक्षण असकृत्
यह पांच अव्यय समानार्थ हैं. यानी चार
२ अर्थके बोधक हैं ॥ १ ॥ साक् झटिति
अञ्जसा अह्वाय द्राक् मङ्क्षु सपदि यह सात
अव्यय द्रुतनाम शीघ्रार्थमें वर्ते हैं. वलवत्
सुष्टु किमुत सु अति अतीव यह छै अव्यय
निर्भरनाम अतिशय यानी बहुधा अर्थमें
वर्ते हैं ॥ २ ॥

पृथग्विनान्तरेणैर्हि रुक् नाना च
वर्जने ॥ यत्तद्यतस्ततो हेतावसाकल्ये
तु चिच्चन ॥ ३ ॥ कदाचिज्जातु सा-
धै तु साकं सत्रा समं सह ॥ आनु-
कूल्यार्थकं प्राध्वं व्यर्थके तु वृथा
मुधा ॥ ४ ॥

पृथक् विना अन्तरेण ऋते हिरुक् ना-
ना यह छै अव्यय वर्जन अर्थात् विनार्थमें
वर्ते हैं. यत् तत् यतः ततः यह चार अव्यय
हेतुनाम कारण अर्थमें वर्ते हैं. चित् चन यह
दो अव्यय असाकल्य अर्थात् असमग्रता-
र्थमें वर्ते हैं. जैसे—[कश्चित्—कंचन] ॥ ३ ॥
कदाचित् जातु यह दो अव्यय किसीएक

कालकेवाचक हैं. साधै साकं सत्रा समं सह
यह पांच अव्यय सहार्थवाचक हैं. प्राध्वं
यह एक अव्यय अनुकूलतार्थवाचक है.
वृथा मुधा यह दो अव्यय व्यर्थमें वर्ते हैं ॥ ४ ॥

आहो उताहो किमुत विकल्पे किं
किमुत च ॥ तु हि च स्म ह वै पाद
पूरणे पूजने स्वति ॥ ५ ॥ दिवाह्नी
त्यथ दोषा च नक्तं च रजनाविति ॥
तिर्यगर्थे साचि तिरोऽप्यथ संबोधना-
र्थकाः ॥ ६ ॥ स्युः प्याट् पाडङ्ग
हे है भोः समया निकषा हिरुक् ॥
अतर्किते तु सहसा स्यात्पुरः पुरतो-
ऽग्रतः ॥ ७ ॥

आहो उताहो किमुत किं किमु उत
यह छै अव्यय विकल्प नाम विकल्पनार्थमें
वर्ते हैं. तु हि च स्म ह वै यह छै अव्यय
पादपूरण अर्थात् श्लोकके चरणकी पूर्ण-
तामें वर्ते हैं. सु अति यह दो अव्यय
पूजन अर्थात् पूजार्थमें वर्ते हैं ॥ ५ ॥
दिवा यह अव्यय अहन् नाम दिनके विषे
वर्ते है. दोषा नक्तं यह दो अव्यय रजनि
नाम रात्रिके विषे वर्ते हैं. साचि तिरः यह
दो अव्यय तिर्यगर्थ अर्थात् तिरछे अर्थमें
वर्ते हैं. प्याट् पाट् अंग हे है भोः यह छै
अव्यय संबोधनार्थ वाचक हैं. समया
निकषा हिरुक् यह तीन अव्यय समोपता
में वर्ते हैं. सहसा यह अव्यय अतर्कित
अर्थात् नहीं तर्क कियेहुए यानी अकस्मात्

अर्थमें वर्त्ते है पुर, पुरतः अग्रतः यह तीन अव्यय अग्राधवाचक है ॥ ६ ॥ ७ ॥

स्वाहा देवहविदानि श्रौपद् वौपद् वपद् स्वधा, ॥ किचिदीपन्मनागल्पे प्रेत्या-
मुत्र भवान्तरे ॥ ८ ॥ व वा यथा
तथेवैवं साम्येऽहो ही च विस्मये ॥
मौने तु तूष्णीं तूष्णीका सद्यः सपदि
तत्क्षण ॥ ९ ॥

स्वाहा श्रौपद् वौपद् वपद् स्वधा यह पाच अव्यय देवताके लिये हविदान अर्थात् घृत दान विशेषमें वर्त्ते हैं परन्तु स्वधा अव्यय पितृदामें प्रसिद्ध है किचित् ईषत् मनाक् यह तीन अव्यय अल्प नाम अल्पा-
र्थमें वर्त्ते हैं प्रेत्य अमुत्र यह दो अव्यय भवांतर अर्थात् जन्मांतरके विषे वर्त्ते है ॥ ८ ॥ व वा यथा तथा इव एव यह छे अव्यय साम्य अर्थात् सादृश्यार्थमें वर्त्ते हैं अहो ही यह दो अव्यय विस्मय नाम आश्चर्यार्थमें वर्त्ते हैं, तूष्णीं तूष्णीका यह २ अव्यय मौन अर्थात् मौनार्थमें वर्त्ते हैं सद्य सपदि यह दो अव्यय तत्क्षण नाम तात्काळ अर्थमें वर्त्ते हैं ॥ ९ ॥

दिष्ट्या समुपजोषं चेत्यानन्देऽनान्त-
रेऽन्तरा ॥ अन्तरेण च मध्ये स्युः
प्रसह्य तु हठार्थकम् ॥ १० ॥ पुके
हे सामत स्थानेऽभीक्ष्णं शश्वदनारते ॥
अभावे नह्य नो नापि मास्म माठ
च वारणे ॥ ११ ॥

दिष्ट्या समुपजोष यह दो अव्यय आनन्दमें वर्त्ते है अन्तरे अन्तरा अन्तरेण यह तीन अव्यय मध्यार्थमें वर्त्ते है प्रसह्य यह एक अव्यय हठार्थ वाचक है ॥ १० ॥ सामत स्थाने यह दो अव्यय युक्तार्थमें वर्त्ते हैं अभीक्ष्ण शश्वत् यह दो अव्यय अनारत अर्थात् नित्य अर्थमें वर्त्ते है नहि अ नो न यह चार अव्यय अभाव अर्थमें वर्त्ते है मास्म मा अल यह तीन अव्यय वारण नाम निवारण यानी मौने करना इस अर्थमें वर्त्ते है ॥ ११ ॥

पक्षान्तरे चेद्यदि च तत्त्वे त्वद्धाज-
सा ह्यम् ॥ प्राकाशये प्रादुराविः
स्यादोमेवं परमं मते ॥ १२ ॥ सम-
न्तवस्तु परितः सर्वतो विष्वगित्यपि ॥
अकामानुमतौ काममसूयोपगमेऽस्तु
च ॥ १३ ॥

चेत् यदि यह दो अव्यय पक्षान्तरमें वर्त्ते है जैसे (सत्य चेत्तपसा च किम्) अर्थात् जो सत्य है तो तप करके क्या है अद्धा अजसा यह दो अव्यय तत्त्वार्थमें वर्त्ते है प्रादुः आवि यह दो अव्यय प्राकाश्य यानी स्पष्टता अर्थमें वर्त्ते है औ एव परम यह तीन अव्यय मतनाम अगी-
कारमें वर्त्ते है ॥ १२ ॥ समतत परित सर्वत विष्वक् यह चार अव्यय सबतरफ ऐसे अर्थवाचक हैं अकामानुमति अर्थात् अनिच्छानुमतिमें काम अव्यय वर्त्ते है.

असूयोपगम अर्थात् असूयापूर्वक स्वीकार
अर्थमें अस्तु अव्यय वर्त्ते है ॥ १३ ॥

ननु च स्याद्विरोधोक्तौ कच्चित्कामप्र-
वेदने ॥ निःषमं दुःषमं गर्ह्यं यथास्वं
तु यथातथम् ॥ १४ ॥ मृषा मिथ्या च
वितथे यथार्थं तु यथातथम् ॥ स्युरेवं
तु पुनर्देवैत्यवधारणवाचकाः ॥ १५ ॥

ननु यह एक अव्यय विरोधोक्ति
अर्थात् विरोध कहनेमें वर्त्ते है. कच्चित् यह
एक अव्यय कामप्रवेदन अर्थात् इच्छाके
जतानेमें वर्त्ते है. निःषमं दुःषमं यह दो
अव्यय गर्ह्य नाम निन्दा करने योग्यमें
वर्त्ते हैं. यथास्वं यथातथं यह दो अव्यय
यथायोग्य अर्थमें वर्त्ते हैं. ॥ १४ ॥ मृषा
मिथ्या यह दो अव्यय वितथ नाम अस-
त्यमें वर्त्ते हैं. यथार्थं यथातथं यह दो
अव्यय सत्यमें वर्त्ते हैं. एवं तु पुनः वै वा
यह पांच अव्यय अवधारण नाम निश्च-
यार्थवाचक हैं. ॥ १५ ॥

प्रागतीतार्थकं नूनमवश्यं निश्चये द्व-
यम् ॥ संवद्वर्षेऽवरे त्वर्वागामेवं स्व-
यमात्मना ॥ १६ ॥ अल्पे नीचै-
र्महत्युच्चैः प्रायो भूमन्यद्भुते शनैः ॥
सना नित्ये वहिर्वाह्ये स्मातीतेऽस्तम-
दर्शने ॥ १७ ॥

प्राक् यह एक अव्यय अतीतार्थक
अर्थात् व्यतीतकालवाचक है. नूनं अवश्यं
यह दोनों अव्यय निश्चय अर्थमें वर्त्ते हैं.

संवत् यह अव्यय वर्षमें वर्त्ते है. अर्वाक्
यह एक अव्यय अवर नाम नीचे अर्थमें
वर्त्ते है. आं एवं यह दो अव्यय अंगी-
कार अर्थमें वर्त्ते हैं. स्वयं यह एक अव्यय
आत्म अर्थमें वर्त्ते. अर्थात् यह शब्द अप-
ना वाचक है ॥ १६ ॥ नीचैः यह अव्यय
अल्प अर्थवाचक है. उच्चैः यह अव्यय
महत् अर्थवाचक है. प्रायः यह अव्यय
भूमा नाम बाहुल्य अर्थमें वर्त्ते है. शनैः यह
एक अव्यय अद्भुत अर्थात् अशीघ्र अर्थमें
वर्त्ते है. सना यह एक अव्यय नित्य अर्थमें
वर्त्ते है. वहिः यह एक अव्यय बाह्य अर्थमें
वर्त्ते है. इसको बाहिरभी कहते हैं. स्म
यह अव्यय अतीत अर्थात् भूत अर्थमें
वर्त्ते है. अस्तं यह एक अव्यय अदर्शन
अर्थात् न दीखनेमें वर्त्ते है. ॥ १७ ॥

अस्ति सत्त्वे रूपोक्तावु ऊं प्रश्नेऽनुनये
त्वयि ॥ हुं तर्के स्यादुषा रात्रेरवसाने
नमो नतौ ॥ १८ ॥ पुनरर्थेऽङ्ग
निन्दायां दुष्टु सुष्टु प्रशंसने ॥ सायं
साये प्रगे प्रातः प्रभाते निकषाऽ-
न्तिके ॥ १९ ॥

अस्ति यह अव्यय सत्त्व नाम होने
अर्थमें वर्त्ते है यह एक अव्यय रूपोक्ति
अर्थात् क्रोधपूर्वक कहनेमें वर्त्ते है ऊं यह
अव्यय प्रणमें वर्त्ते है अयि यह एक
अव्यय अनुनय नाम समुझानेमें वर्त्ते है हुं
यह अव्यय तर्कमें वर्त्ते है. उषा यह एक

अव्यय रात्रिके अवसान नाम अन्तमें वर्त्ते है नमः यह एक अव्यय नति अर्थात् नष्ट-तामें वर्त्ते है ॥ १८ ॥ अग यह अव्यय पुनरर्थमें वर्त्ते है दुष्ट यह अव्यय निदाके विषे वर्त्ते है सुष्ट यह अव्यय प्रशसन अर्थात् बढाई करनेमें वर्त्ते है साय यह एक अव्यय साय नाम दिनके अन्तमें वर्त्ते है प्रगे प्रात यह दो अव्यय प्रभातकालमें वर्त्ते है निकषा यह अव्यय अतिक नाम समीपार्थमें वर्त्ते है ॥ १९ ॥

परुत्परार्यैपमोऽब्दे पूर्वं पूर्वतरे यति॥

अद्यात्राह्वयथ पूर्वोऽह्नीत्यादौ पूर्वो-त्तरापरात् ॥ २० ॥ तथाऽधरान्या-न्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः ॥ उभयद्यु-श्रोभयेद्युः परे त्वह्नि परेद्यवि ॥ २१ ॥

परुत् परारी ऐपम यह तीन अव्यय क्रमसे पूर्व अब्द अर्थात् बीतेहुए वर्षमें और पूर्वतर अब्द अर्थात् बीतेहुए वर्षसे जो पूर्व वर्ष है उसमें और यति अब्द अर्थात् वर्त्तमान वर्षमें होते हैं भाव यह है कि परुत् अव्यय व्यतीत वर्षमें वर्त्ते है और परारि अव्यय उस बीतेहुए वर्षसेभी पूर्व वर्षमें वर्त्ते है और ऐपम अव्यय वर्त्तमान वर्षमें वर्त्ते है अद्य यह अव्यय अत्राहि याना इस दिनवाचक अर्थमें वर्त्ते है पूर्वेहि इत्यादि अर्थमें पूर्व तथा उत्तर तथा पर-शब्दसे ॥ २० ॥ तथा अवर तथा अन्य तथा अन्यतर तथा इतर शब्दसे पूर्वद्यु, आदिक

अव्यय होते हैं आदिशब्दसे क्रमसे उत्त-रेद्यु अपरेद्यु अधरेद्यु, अन्येद्यु अन्यतरेद्यु इतरेद्यु जानने भाव यह है कि पूर्वदिनके विषे पूर्वद्यु और उत्तरदिनकेविषे उत्तरेद्यु और अपरदिनके विषे अपरेद्यु और अधर दिनके विषे अधरेद्यु, और अन्यदिनके विषे अन्येद्यु और अन्यतर दिनकेविषे अन्यतरेद्युः अव्यय वर्त्ते है और इतरदिनकेविषे इतरेद्यु शब्द वर्त्ते है और उभयद्यु, उभयेद्यु यह दो अव्यय उभय दिनकेविषे वर्त्ते है परेद्यवि यह एक अव्यय परदिनमें वर्त्ते है ॥ २१ ॥

ह्यो गते नागतेऽह्नि श्वः परश्वस्तु परेऽहनि ॥ तदा तदानी युगपदेकदा सर्वदा सदा ॥ २२ ॥ एतर्हि संप्र-तोदानीमधुना सांप्रतं तथा ॥ दि-ग्देशकाले पूर्वादौ प्रागुदक्रम्यगा-दयः ॥ २३ ॥

॥ इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

और गत अर्थात् बीतेहुएदिनमें त्य, अव्य-य वर्त्ते है और अनागत अर्थात् आनेवाले-दिनकेविषे श्वः अव्यय वर्त्ते है और उससे-परे जो दिन है उसमें परश्व अव्यय वर्त्ते है तदा तदानी यह दो अव्यय तिससमय इस अर्थमें वर्त्ते है युगपत् एकदा यह दो अव्यय एकसमय इस अर्थमें वर्त्ते हैं सर्व-दा सदा यह दो अव्यय सवकाल इस अर्थ में वर्त्ते हैं ॥ २२ ॥ एतर्हि संप्रति इदानीं अधुना सांप्रत यह पाच अव्यय इससमय

इसअर्थमें वर्ते हैं. पूर्वादिक दिशा देशकालमें प्राक् उदक् प्रत्यक् आदिक अव्यय वर्ते हैं. आदिशब्दसे अवाक् आदिकाभी ग्रहण है. भाव यह है कि जो कि पूर्वसंबन्धी दिशा देशकाल है वह प्राक्संज्ञिक है. और जो कि उत्तर संबन्धी दिशा देश काल है वह उदक् संज्ञिक है और जो कि पश्चिमसंबन्धी दिशा देश काल है वह प्रत्यक् संज्ञिक है. और जो कि दक्षिणसंबन्धी दिशा देश काल है वह अवाक् संज्ञिक है. आदिशब्दसे इसीप्रकार उत्तरात् अधरात् दक्षिणात् उत्तरेण अधरेण दक्षिणेन दक्षिणादक्षिणाहि दक्षिणतः उत्तरतः उपरि उपरिष्ठात् इत्यादिक जानने ॥ २३ ॥

॥ इति अव्ययवर्गः ॥

सलिङ्गशास्त्रैः सन्नादिरुत्तद्धितसमासजैः ॥ अनुक्तैः संग्रहे लिङ्गं संकीर्णवदिहोच्येत् ॥ १ ॥

इसके अनन्तर लिङ्गसंग्रह वर्ग कहते हैं—सलिङ्गशास्त्र अर्थात् पाणिनी आदिक करके कहे हुए लिङ्गशास्त्र सहित ऐसे जो पूर्व नहीं कहेहुए सन्नादि रुत्तद्धितसमासज शब्द अर्थात् सन्नादिक प्रत्ययोंसे उत्पन्न हुए शब्द तथा रुदन्तसे उत्पन्न हुए शब्द तथा तद्धितसे उत्पन्न हुए शब्द तथा समाससे उत्पन्न हुए शब्द तिन्होंकरके किये हुए इस संग्रहवर्गमें संकीर्ण वर्गकी समान लिङ्ग जानने. भाव यह है कि इस वर्गमें पाणिनी

आदिकोंने जो व्याकरण ग्रंथोंमें लिङ्गविधान किया है. उस लिङ्गविधान सहित पूर्व नहीं कहे हुए सन्नादि प्रत्यय रुदन्त तद्धित समाससे बनाये हुए शब्दोंका संग्रह किया है. परन्तु उस शब्दोंके संग्रहमें लिङ्ग उसप्रकार जानाजाता है. जिसप्रकार कि संकीर्ण वर्गमें प्रकृति प्रत्ययादिकोंकर जानाजाता है १

लिङ्गशेषविधिव्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः ॥ स्त्रियामीदृद्विरामैकाच् सयोनिप्राणिनाम च ॥ २ ॥

सन्नादि रुत्तद्धित समाससे उत्पन्न हुए शब्दोंका विषय ऐसा जो पूर्व कहेहुए शब्द लिङ्गसे अन्यलिङ्ग है वह लिङ्गशेष है. उसका विधि यदि विशेष यानी पूर्व कहे हुए तथा यहाँ कहे हुए विशेष विधियोंकर अबाधित अर्थात् बाधित न हो तौ व्यापक होवै है. इसकरके इस लिङ्गविशेष विधिके स्वर्गादिक वर्ग बाधक जानने योग्य हैं. तिन स्वर्गादिक वर्गोंमें पहिले कहे हुए विशेषलिङ्गोंका विधान यहां पुनरुक्ति दोष प्रसंगसे तथा विस्तारके भयसे नहीं किया. जैसे कि—इस वर्गमें स्वर्गपर्याय पुलिङ्गमें कहाजायगा उसका—घोदिवौ द्वे । स्त्रियां कृत्रि विविष्टपम्—यह पूर्व कहाहुआ विधि बाधक है. और औरनी आदिक शब्दोंकी बाधकविधि—(कृतः कर्तरि) इत्यादिक कर कहाजायगा. यद्यपि पूर्वलिङ्ग कहभी दिया है. तथापि अमासकी प्राप्तिरूप अर्थ

होनेसें लिगानुशासन यहाँभी प्रधान है [स्त्रिया] यह अधिकार मसी शब्दपर्यन्त जानना ईकार वा ऊकार है अन्तमें जिसके ऐसा एक स्वरवाला शब्द स्त्रीलिङ्गमें होता है जैसे—वी श्रो भू भू शब्द जाननें और नी इत्यादिमें [क्तव कर्त्तरि] इसकर बाधित होनेसें वाच्यलिङ्गता है योनि नाम भग उसकरके सहित जो प्राणी हैं उनका नाम स्त्रीलिङ्गमें होता है जैसे [माता दुहिता धेनु] इत्यादिक और दारशब्दादिमें—[दारा पु-भूजि] इत्यादिक बाधक विधि पहिले कह-दिया है ॥ २ ॥

नाम विद्युन्निशावल्लीवीणादिभून्दी-
ह्रियाम् ॥ अदन्तैर्दिगुरेकार्थो न स
पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥

विद्युत् (विजुली) और निशा (रात्रि)
और वल्ली (वेलि) और वीणा और
दिशा और भू (पृथिवी) और नदी
और ह्री (लज्जा) इन्हेंका नाम स्त्रीलि-
ङ्गमें होता है जैसे [विद्युत् तडित् निशा
रात्रि रजनि वल्ली व्रतति वीरुध् वीणा
विपची] इत्यादिक स्त्रीलिङ्ग जाननें अकार
है अन्तमें जिनके ऐसे शब्दोंकर एकार्थ
अर्थात् समाहारार्थवाला द्विगुसमास है वह
स्त्रीलिङ्गमें होता है जैसे—[पचाना मूलाना
समाहार]—पचमूलि और इमी प्रकार
त्रिलोकी—पडध्यायी—और अकार है अन्तमें
जिनके ऐसे पात्र युगादिक उत्तरपद शब्दों-

कर एकार्थवाला द्विगुसमास है वह स्त्रीलि-
ङ्गमें नहीं होता है जैसे—[पचपात्र—चतुर्थ्यं
त्रिभुवन] इत्यादिक जाननें ॥ ३ ॥

तत् वृन्दे येनिकट्यत्रा वैरमैथुनिका-
दिवुन् ॥ स्त्रीभावादावनिक्तिण्वुल्-
णच्ण्वुक्क्वप्युजिञ्जिनिशाः ॥ ४ ॥

जो कि भावादिक अर्थमें तत्प्रत्यय
है वह स्त्रीलिङ्गमें होवे है जैसे भावमें शुकृता
और कर्ममें ब्राह्मणता और समूहमें ग्रामता
इत्यादिक जाननें जो कि वृन्द नाम समू-
हमें य इनि कट्य त्र यह चार प्रत्यय हैं.
वह स्त्रीलिङ्गमें होते है जैसे पाशोंका समूह
पाश्या सन्निक है इसीप्रकार (वात्या खलि-
नी पद्मिनी रथकट्या गोत्रा) आदिक
जाननें और वैर मैथुनिकादिकके विषे जो
वुन् प्रत्यय है वह स्त्रीलिङ्गमें होता है जैसे
अश्व और महिषका जो वैर यानी विरोध
है वह अश्वमहिषिका सन्निक है और
अत्रि और भगद्वाजको जो मैथुनिका यानी
निवाहरूप संघ है वह अत्रिभरद्वाजिका
सन्निक है स्त्रीभावादि अर्थात् स्त्रीलिङ्गको
अधिकार करके जो भावादिकके विषे
अनि किन् ण्वुल् णच् ण्वुक् क्वप् युच्
इञ् अङ् नि श यह ग्यारह प्रत्यय है वह
स्त्रीलिङ्गमें होवे है अनि प्रत्यय जैसे अक-
रणि अजीवनि इत्यादिक और किन् प्रत्यय
जैसे रुति गति इत्यादिक और ण्वुल्
प्रत्यय जैसे प्रच्छदिका प्रवाहिका इत्यादिक
और णच् प्रत्यय जैसे व्यावक्रोशी इत्या-

दिक ण्वुच् प्रत्यय जैसें शायिका इक्षुभ-
क्षिका इत्यादिक और क्यप्प्रत्यय जैसें
ब्रज्या इज्या और युच् प्रत्यय जैसें कारणा
आसना इत्यादिक और इञ् प्रत्यय जैसें
वापि वासि इत्यादिक और अङ् प्रत्यय
जैसें पचा त्रपा भिदा इत्यादिक और
निप्रत्यय जैसें ग्लानि हानि इत्यादिक और
शप्रत्यय जैसें क्रिया इच्छा इत्यादिक ॥४॥

उणादिषु निरुरीश्च ड्यावूङन्तं चलं
स्थिरम् ॥ तत्क्रीडायां प्रहरणं चे-
न्मौटा पाल्वा णदिक् ॥ ५ ॥

उणादिक गणोंके विषैं जो (नि ऊ
ई) यह तीन प्रत्यय हैं. वह स्त्रीलिंगमें
होवे हैं. निकारान्त जैसें (श्रेणि श्रोणि
द्रोणि) इत्यादिक और ऊकारान्त जैसें
(चमू कर्षू) इत्यादिक और ईकारान्त
जैसें (तंत्री तरी) इत्यादिक डी और
आप् और ऊङ् यह प्रत्यय हैं अन्तमें
जिसके ऐसा चल नाम जंगम और स्थिर
अर्थात् स्थावर वाचक शब्द स्त्रीलिंगमें
होता है. जंगम जैसें (नारी शिवा ब्रह्मवधू)
इत्यादिक और स्थावर जैसें (कदली माला
कर्कन्धू) इत्यादिक तत् नाम मुष्ट्यादिक
प्रहरण यानी प्रहार जो क्रीडाके विषैं होवै
तौ उस अर्थमें रचाहुआ ण प्रत्यय स्त्रीलिं-
गमें होता है. जैसें (मौष्टा पाल्वा) यह
उदाहरण है. भाव यह है कि मुष्टि-
प्रहार हो जिस क्रीडाके विषैं वह मौष्टा

संज्ञिक है. और पाल्वा प्रहार हो जिस
क्रीडाके विषैं वह पाल्वा संज्ञिक है ॥ ५ ॥

घञो जः सा क्रियाऽस्यां चेदाण्ड-
पाता हि फाल्गुनी ॥ श्येनंपाता घ
मृगया तैलंपाता स्वधेति दिक् ॥६॥
स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिर्विवक्षा-
पचये यदि ॥ लङ्का शेफालिका टीका
धातकी पञ्जिकाऽऽढकी ॥ ७ ॥

जो घञ् प्रत्ययान्तवाच्य दण्डपातादिक
क्रिया है वह जिस फाल्गुन्यादिक अर्थमें
वर्तमान होवै तौ उस घञ् प्रत्ययान्त शब्द-
सैं जो जप्रत्यय होवै है वह स्त्रीलिंगकेविषैं
होवे है. जैसें [दाण्डपाता फाल्गुनी] अ-
र्थात् दंडपात जिस फाल्गुनीके विषैं होवे व-
ह दांडपाता फाल्गुनी है. इसीप्रकार श्येनं-
पाता मृगया और तैलंपाता स्वधा यह उ-
दाहरण हैं ॥ ६ ॥ यदि अपचय अर्थात्
अल्पतामें कहनेकी इच्छा होवै तौ कोईएक
मृणाली आदिशकशब्द स्त्रीलिंग होते हैं.
जैसें अल्प जो मृणाल है वह मृणाली
संज्ञिक है. आदिशब्दसैं वंशी कुंभी
प्रणाली छत्री पटी तटी मठी इत्यादि इसी-
प्रकार जाननें. काचित् इसशब्द कहनेसैं वृ-
क्षक इत्यादिकशब्द स्त्रीलिंगमें नहीं होते हैं.
इसके अनन्तर जो कान्तादिक शब्द हैं वह
स्त्रीलिंगमें होते हैं. लंका राक्षसपुरी है. और
शेफालिका पुष्पभेद वा वृक्षभेद है. इसको
निर्गुंडी कहते हैं. और टीका यह एक नाम

विषमपदकी व्याख्याका है और धातकी यह वृक्षभेदका नाम है इसको औवलाभी कहतेहैं पजिका यह नाम समग्रपदकी व्याख्याका है आढकी यह नाम अरहरका है७॥

सिधका सारिका हिका भाचिकोल्का
पिपीलिका ॥ तिन्दुकी कणिका भ-
इगिः सुरङ्गासूचिमाढ्यः ॥ ८ ॥
पिच्छावितण्डाकाकिण्यश्रूणिः शाणी
द्रुणी दरत् ॥ सातिः कन्था तथा-
ऽऽसन्दीनाभी राजसभापि च ॥ ९ ॥

सिधका यह नाम वृक्षभेदका है सारि-
का यह नाम पक्षिभेदका है इसको मैना क-
हतेहैं हिका यह नाम स्वरभेदका है इसको
रुहिकी कहतेहैं भाचिका यह नाम वनम-
क्षिकाका है उल्का यह नाम तेजसमूहका
है पिपीलिका यह नाम कीटभेदका है इ-
सको चीटी कहतेहैं तिन्दुकी यह नाम वृक्ष-
भेदका है इसको तेंदुआ कहतेहैं कणिका
यह नाम परिमाणुका है, भगि यह नाम
कुटिलताके भेदका है सुरगा यह नाम छिद्र-
भेदका है इसको सुरग बोलतेहैं सूचि यह
नाम सूईका है माढि यह नाम पत्तशिराका
है ॥ ८ ॥ पिच्छा यह नाम शाल्मलि तथा
निर्पास तथा भाव आदिकके माढका है
वितडा यह नाम वादभेदका है काकिणी
यह नाम षण्के चौथे भागका है चूर्णि यह
नाम चूर्णिकाका है शाणी यह नाम शनके
वखविशेषका है द्रुणी यह नाम कर्णजले-

काका है दरत् यह नाम म्लेच्छजातिका है
साति यह नाम दानवा अन्तका है कंथा
यह नाम कथरीका है आसदि यह नाम
आसनभेदका है इसको वेवासन कहतेहैं
नाभी यह नाम लूडीका है राजसभा यह
नाम राजाओंकी सभाका है, इसको कच-
हरी कहतेहैं ॥ ९ ॥

झलरी चर्चरी पारी होरा लट्वा च
सिध्मला ॥ लाक्षा लिक्षा च गण्डूपा
गृधसी चमसी मसी ॥ १० ॥

॥ इति स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ॥

झलरी यह नाम वाद्यभेदका है, चर्चरी
यह नाम हाथोंके शब्दका वा हर्षकीडाका
है पारी यह नाम हाथियोंके पाँवकी रस्सी
का है होरा यह नाम लग्नका है वा राशि-
के अर्धभागका है लट्वा यह नाम ग्रामचट-
कका है सिध्मला यह नाम मछलीके वि-
कारका है लाक्षा यह नाम लाखका है
लिक्षा यह नाम यूकाडका है गण्डूपा यह
नाम जटादिकसें मुख भरनेका है इसको
कुछा कहतेहैं गृधसी यह नाम वातरोगभेद-
का है चमसी यह नाम यज्ञके पात्रभेदका
है और मसी यह नाम कज्जलका है यह
कहे हुए समस्तशब्द स्त्रीलिङ्ग है ॥ १० ॥

॥ इति स्त्रीलिङ्ग संग्रहः ॥

पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरा-
सुराः ॥ स्वर्गयागाद्रिमेधाव्धिद्रुका-
लासिशरारयः ॥ ११ ॥ करगण्डो-

ष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः ॥ अ-
ह्नाहान्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ताः प्रा-
गसंख्यकाः ॥ १२ ॥

इसके अनन्तर पुंलिङ्ग संग्रह कहते हैं. पुंस्त्वे यह पतद्ग्रहशब्द पर्यन्त अधिकार है. भेद (तुषितसाध्यादिक) और अनुचर (सुनन्दादिक) तिनसहित सु-
रासुरनाम देवदैत्य पर्यायोंकरके सहित पुं-
लिङ्गमें होते हैं. परन्तु इनकाभी [दैवतानि
पुंसि वा देवताः स्त्रियाम्] इत्यादिक पूर्व
कहाहुआ विधान बाधक है. स्वर्ग और
याग नाम यज्ञ और अग्निनाम पर्वत और
मेघ तथा अविधि (समुद्र) और द्रुनाम वृ-
क्ष और काल (समय) और असिनाम
खड्ग और शर (बाण) और अरि (शत्रु)
॥ ११ ॥ करनाम राजग्राह्य भाग वा हस्त
वा किरण और गंड (कपोल) और ओष्ठ
और दोस् नाम भुज और दन्त और कंठ
और केश नाम बाल और नख और स्तन
(कुच) यह स्वर्गादिक उन्नीश नाम भेद
तथा पर्यायों सहित पुंलिङ्गमें होते हैं परन्तु
इनकाभी [द्योदिवौद्वे स्त्रियां । क्लीबेत्रिविष्टपम्]
इत्यादिक विधान बाधक है. अन्ह औ अ-
हशब्द हैं अन्तमें जिनके ऐसे शब्दभी पुंलि-
ङ्गमें होते हैं जैसे [पूर्वाह्न अपराह्न व्यहः]
इत्यादिक जानने और क्ष्वेड भेद यानी विष
विशेषभी पुंलिङ्गमें होते हैं. जैसे [सौराष्ट्रिकः]
इत्यादिक जानने प्रागसंख्यक अर्थात् पूर्व

नहीं हैं. संख्या वाचक शब्द जिनके ऐसे
रात्रान्त शब्द पुंलिङ्गमें होते हैं जैसे [अहो-
रात्रः सर्वरात्रः पूर्वरात्र अपररात्रः] इत्यादि-
क और प्रागसंख्यक ऐसा विशेषण क्यों
दिया जैसे [पंचरात्रं गणरात्रम् इत्यादिक १२]

श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता
अवाधिताः ॥ कशेरुजतुवस्तूनि हि-
त्वा तुरुविरामकाः ॥ १३ ॥ कष-
णभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी अथा॥
पथनयसटोपान्ता गोत्राख्याश्चरणा-
ह्वयाः ॥ १४ ॥ नाम्न्यकर्तरि भावे
च घञजव्णङ्णघाथुचः ॥ ल्युः क-
र्तरीमनिज् भावे को वोः किः प्रादि-
तोऽन्यतः ॥ १५ ॥

जो कि श्रीवेष्टादिक शब्द निर्यास अ-
र्थात् द्रवसारवाचक हैं. वह पुंलिङ्गमें होते हैं.
जैसे—[श्रीवेष्टः—सरलः—] इत्यादिक आ-
दिशब्दसे श्रीवास वृक धूपादिक और च-
कारसे गुग्गुलु सिह्वाकादिक जानने. अस्
और अच् यह दो हैं अन्त जिनके ऐसे
शब्द कहेजानेवाले—[द्व्यच्कमसिसुसन्नन्तम्]
इत्यादिक बाधकविधान करके तथा—[अ-
प्सरसः स्त्रियां] इत्यादिक पूर्व कहे हुए
बाधक विधान करके जो बाधित न हों तो
पुंलिङ्गमें होते हैं. जैसे—[अंगिराः—वेधाः—
चंद्रमाः—रुष्णवर्मा—मघवा] इत्यादिक और
अबाधित ऐसा विशेषण क्यों दिया कि—
[वयः—लोमः—] इत्यादिक पुंलिङ्ग नहीं हैं.

तु और रु है विराम नाम अन्तमें जिनके ऐसे शब्द कसेरु तथा जतु तथा वस्तु इत्यादिक शब्दोंको त्यागिकर पुलिगमें होते हैं जैसे—हेतु,—सेतु—धातु,—कुरु,—मेरु,—किशारुः—इत्यादिक ॥ १३ ॥ ककार और पकार और णकार और भकार और मकार और रकार यह छै वर्ण होवै उपान्त नाम अत्यवर्णके समीप जिनके ऐसे शब्द यदि अकारान्त होवैं तो पुलिगमें होते हैं जैसे—[अक—ओप—पापाण—कौस्तुभ—होम.—झझर.—] इत्यादिक जानने पकार और थकार और यकार और सकार और टकार यह छै वर्ण है उपान्त (अत्यवर्णके समीप) जिनके ऐसे शब्द बाधक विधिसैं बाधित न हों तो पुलिगमें होते हैं जैसे (यूप वेपथु इनः आयः रसः पटः) इत्यादिक जानने गोत्र नाम वशके विधैं होवैहैं आख्या अर्थात् नाम जिनका ऐसे गोत्राख्य ऋषि सन्निक गोत्रके आदिपुरुष और जो कि प्रवराध्याय करके पठित और जो कि अन्य अपत्य प्रत्ययके विना गोत्रवाची होनेसैं लोकमें प्रसिद्ध है वह पुलिगमें होते हैं जैसे (भरद्वाजः गोत्रम्) इसीप्रकार कश्यप वत्स आदिक जानने और चरणाह्वय नाम ऐदकी शाखाके नाम पुलिगमें होते हैं जैसे (कठ बहुच.) इत्यादिक ॥ १४ ॥ नाम सज्ञाके विधैं अकर्त्ता अर्थात् कर्त्ता-वर्जित कारकके विधैं और भाव मात्रके विधैं (घञ् अच् अप् नङ् ण च अयुच्)

यह सात प्रत्यय हैं वह पुलिगके विधैं होवै हैं. चकारसैं असंज्ञाके विधैं घञ् प्रत्यय ग्रहण किया है घञ् प्रत्यय जैसे वेद प्रपात. इत्यादिक और अच् प्रत्यय जैसे जय. चय. इत्यादिक अप् प्रत्यय जैसे कर. गर. इत्यादिक नङ् प्रत्यय जैसे यज्ञ प्रश्न. इत्यादिक ण प्रत्यय जैसे न्याद इत्यादिक घप्रत्यय जैसे उरश्छद इत्यादिक अथुच् प्रत्यय जैसे वेपथु. इत्यादिक और जा कि कर्त्ताके विधैं तुल्यप्रत्यय होवै हैं वह पुलिगमें होताहै जैसे (नन्दनः रमण मधुसूदन) इत्यादिक और भावके विधैं पृथ्वादिक्से जो इमनिच् प्रत्यय होवै हैं वह पुलिगमें होताहै जैसे (पृथिमा महिमा) इत्यादिक और भावके विधैं जो क—प्रत्यय होवै हैं वह पुलिगमें होताहै जैसे (आखूत्थ प्रस्थ.) इत्यादिक यहाँ भावे यह शब्द देहलोदीपक न्यायकरके पूर्व तथा परमें सबद्ध है. प्रादिक उपसर्गसैं वा अ य अर्थात् नामसैं पैर जो घुसन्निक यानी दाप् दैप्के विना दारूप और धारूप वातु है उससैं जो—कि—प्रत्यय होवै हैं वह पुलिगमें होताहै जैसे (प्रधि निधि आदि जलधि.) इत्यादिक ॥ १५ ॥

द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहते॥
कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वाऽयःपूर्वको-
ऽपि च ॥ १६ ॥ वटकश्चानुवाक्श्च
रत्नकश्च कुडङ्गकः॥ पुड्स्त्रो न्यूड्स्त्र.
समुद्रश्च विटपट्टघटा. स्वटा.॥ १७ ॥

द्वंद्व समासके विषे अश्व और वडवा यह दोनों शब्द पुल्लिङ्गमें होते हैं. जैसे अश्ववडवा: यह उदाहरण है. परन्तु समा-
हत अर्थात् समाहार अर्थवाले द्वंद्वसमासके विषे अश्व और वडवा शब्द पुल्लिङ्ग नहीं होते हैं. किन्तु नपुंसकलिङ्गमें होते हैं. सूर्य और इन्दु नाम चंद्र इन दोनोंके पर्याय अर्थात् नाम हैं पूर्व जिसके और अयः नाम लोह इसके नाम हैं पूर्व जिसके ऐसा कान्त शब्द पुल्लिङ्गमें होता है. जैसे (सूर्य-
कान्तः अर्ककान्तः चंद्रकान्तः इन्दुकान्तः अयस्कान्तः लोहकान्तः) इत्यादिक ॥ १६ ॥
इसके अनन्तर जो कि कान्तादिक शब्द हैं वह पुल्लिङ्गमें होते हैं. वटक यह एक नाम पिष्टक भेदका है. इसको बडा कहते हैं. अनुवाक यह नाम वेदके अंगका है. रल्लक यह नाम कंबलका है. कुडंगक यह नाम वृक्ष लताओंकर घने वनका है. इसको झाडी कहते हैं. पुंख यह नाम बाणके अंगका है. न्यूंख यह नाम सामवेदके विषे स्थितहुए ओंकारका है. समुद्र यह नाम संपुटकका है इसको डिव्वा कहते हैं. विट यह नाम धूर्तका है. पट्ट यह नाम काष्ठा-
दिककर बनाये हुए आसन विशेषका है. इसको पट्टा कहते हैं. घट यह नाम तुलाका है. इसको तराजू कहते हैं. खट यह नाम अन्धकूपादिकका है. यह शब्द बहुवचन है १७

कोटारवट्टहट्टाश्च पिण्डगोण्डपिच-
ण्डवत् ॥ गडुः करण्डो लगुडो वर-

ण्डश्च किणो घुणः ॥ १८ ॥ दृति-
सीमन्तहरितो रोमन्थोद्वीथबुद्बुदाः ॥
कासमर्दोऽर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ स-
यूपकौ ॥ १९ ॥

कोट यह नाम दुर्गपुरका है. इसको कोट कहते हैं. अरघट्ट यह नाम कूपभेदका है. हट्ट यह नाम बाजारका है. पिंड यह नाम मिट्टी आदिकके समूहका है. इसको पिंडही कहते हैं. गोंड यह नाम बढीहुई नाभिका है पिचण्ड यह नाम पेटका है. गडु यह नाम गलगंडका है. करंड यह नाम वांस आदिककर बनाये हुए बर्तनका है. इसको पिटारा कहते हैं. लगुड यह नाम लाठीका है. वरंड यह नाम मुखरोगका है. किण यह नाम मांस-
ग्रंथिभेदका है. यह कस्सी आदिकके दण्डा-
दिकके संघर्षणसें हस्तादिकमें हो जाता है. और यह नाम घावके चिन्हकाभी है. घुण यह नाम काठके कीड़ेका है. इसको घुन कहते हैं ॥ १८ ॥ दृति यह नाम मशकका है. सीमन्त यह नाम केशवेशका है. हरित यह नाम हरीरंगतका है. रोमन्थ यह नाम पशुओंके जुगारेके हैं. उद्वीथ यह नाम सामभेदका है. बुद्बुद यह नाम जलविकारका है. इसको पानीका बबूला कहते हैं. कासमर्द यह नाम गुल्मभेदका है. अर्बुद यह नाम दश करोड़का है. कुंद यह नाम शिल्पमांडका है. फेन यह नाम जलविकारका है. स्तूप यह नाम वटकादिकका है. यूप यह नाम यज्ञखंभका है ॥ १९ ॥

आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणपक्षुरके-
दराः ॥ पूरक्षुरप्रचुक्राश्च गोलहिङ्गु-
लपुद्गलाः ॥ २० ॥ वेतालभल्लमल्लाश्च
पुरोडाशोऽपि पट्टिशः ॥ कुल्माषो
रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥

॥ इतिपुलिग शेषः ॥

आतप यह नाम घासका है और क्षत्रि-
यकेविषै नाभि शब्द वर्त्तै है भाव यह
है कि क्षत्रियवाची नाभि शब्द पुलिगमें
होताहै कुणप यह नाम मुर्देका है क्षुर
यह नाम क्षुराका है केदर यह नाम
व्यवहार पदार्थका है पूर यह नाम जल-
प्रवाहका है क्षुरप यह नाम बाणभेदका है,
चुक्र यह नाम शाक भेदका है गोल यह
नाम गोलपिडका है हिङ्गुल यह नाम राग-
द्रव्यके भेदका है पुद्गल यह नाम आत्माका
है ॥ २० ॥ वेताल यह नाम भूतविशे-
षका है भल्ल यह नाम रीछका है मल्ल
यह नाम उसका है जो कि बाहुयुद्धमें
चतुर होताहै पुरोडाश यह नाम यज्ञके
हविभेदका है पट्टिश यह नाम अस्त्रभेदका
है कुल्माष यह नाम काजीका है रभस
यह नाम हर्ष वा वेगका है कटाहसहित
पतद्ग्रह शब्द पुलिगमें होता है कटाह यह
नाम घृततैलादिकके पकानेके पात्रका है
इसको कढाई कहते है और पतद्ग्रह यह
नाम पीरुदानका है ॥ २१ ॥

॥ इति पुलिगसमूहः ॥

द्विहीनेऽन्यच्च स्तारण्यपर्णश्चब्रह्मि-
दकम् ॥ शीतोष्णमासरुधिरमुखा-
क्षिद्रविणं वल्गम् ॥ २२ ॥ फलहेम-
शुल्बलोहसुखदुःखशुभाशुभम् ॥ ज-
लपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेप-
नम् ॥ २३ ॥

इसके अन तर नपुसकीलग समूह कह-
तेहै द्विहीने नपुसके (यह अधिकार
बाह्यिकशब्दपर्यंत है) यह दो श्लोकोंमें
प्रधानता कर दिखाये हुए स्वआदिक छव्वीश
नाम पर्यायों सहित द्विहीन अर्थात् दोनों
स्त्रीपुलिगसें वर्जित नपुसकीलगमे होते है
परन्तु जो बाधकविधिसें अन्य हैं वह नपु-
सकीलगमें होते है न कि सब चकारसें
यहां ब्रह्माभरणादिकोंकाभी समूह है स्व
ताम आकाश वाऽइन्द्रिय और अरण्य नाम
वन और पर्ण नाम पत्र और श्वभ्र नाम
छिद्र और हिम नाम तुषार और उदक
नाम जल और शीत और उष्ण और मांस
और रुधिर और मुख और अक्षि नाम
नेत्र और द्रविण नाम धन और बल नाम
पराक्रम वा सैन्य ॥ २२ ॥ फल नाम फल-
मात्र कपित्थादिक और हेम (सुवर्ण)
और शुल्ब नाम ताम्र आदिक और लोह
और सुख और दुःख और शुभ नाम
कल्याण और अशुभ नाम अकल्याण
और जलपुष्प अर्थात् कमलादिक और
लवण नाम सैन्धव आदिक और व्यञ्जन
नाम तेमन इत्यादिक और अनुलेपन

अर्थात् कुंकुमादिक यह छब्बीश नाम अपने पर्यायोंसहित नपुंसकलिङ्गमें होते हैं. परन्तु जो बाधक विधिसें अन्य होवे तौ बाधक विधि जैसें (आकाशो विहायाद्यौः अट-
वी अरण्यानी) इत्यादिकमें पुलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्गकी विधि नपुंसकलिङ्ग विधिका बाधक है इस प्रकार और जगहभी जानना ॥ २३ ॥

कोट्याः शतादिसंख्याऽन्या वा लक्षा नियुतं च तत् ॥ द्व्यच्कमसिसुसञ्च-
न्तं यदनान्तमकर्तरि ॥ २४ ॥ त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक्संख्यया-
न्वितम् ॥ पात्राद्यदन्तैरेकार्थौ द्विगु-
लक्ष्यानुसारतः ॥ २५ ॥

कोटिशब्दसें जो कि अन्य शतादिक संख्या है. वह नपुंसकलिङ्गमें होवे है जैसें (शतं सहस्रं अयुतं) और लक्ष शब्द विकल्पकरके नपुंसक लिङ्गमें होता है. जैसें (लक्षा लक्षं) और जो कि नियुत शब्द लक्षसंज्ञिक है वहभी नपुंसकलिङ्गमें होता है. अस् तथा इस् तथा उस् तथा अन् यह है अन्तमें जिसके ऐसा जो द्व्यच्क यानी दो स्वरवाला शब्द है वह नपुंसकलिङ्गमें होवे है. जैसें (पयः सर्पिः वपुः चर्म) इत्यादिक और अन है अन्तमें जिसके ऐसा शब्द जो अकर्तरि अर्थात् कर्त्तासें भिन्न अर्थमें होवे तौ नपुंसकलिङ्गमें होवे है. जैसें (गमनं मरणं दानम्) इत्यादिक अकर्त्तरि ऐसा क्यों कहा कि (इध्मवश्चनः

कुठारः नन्दनः रमणः) इत्यादिक नपुंसकलिङ्ग नहीं होते ॥ २४ ॥ व है अन्तमें जिसके और सकार वा लकार है उपधा नाम अन्त्य वर्णसें पूर्व जिसके ऐसा शब्द शिष्ट अर्थात् पूर्व कहेहुए बाधकविधिसें बचाहुआ हो तौ पुंनपुंसकलिङ्गमें होता है. जैसें (पात्रं विसं कुलं) इत्यादिक. शिष्टं यह विशेषण क्यों दिया कि पुत्रः हंसः शिला इत्यादिक नपुंसकलिङ्ग नहीं होते. और जो कि पूर्वसंख्यायुक्त रात्रशब्द है वह नपुंसकलिङ्गमें होता है जैसें (त्रिरात्रं पंचरात्रं) इत्यादिक जानने और अकार है अन्तमें जिनके ऐसे पात्रादिक शब्दोंकरके एकार्थनाम समाहारार्थवाला जो द्विगुसमास है वह नपुंसकलिङ्गमें लक्ष्यानुसार अर्थात् शिष्टप्रयोगके अनुसारसें जानें. जैसें (पंचरात्रं) आदिशब्दसें (चतुर्युगम्) इत्यादिक. लक्ष्यानुसारतः यह क्यों कहा कि (पंचमूली त्रिलोकी) इत्यादिक नपुंसकलिङ्गमें नहीं होते हैं ॥ २५ ॥

द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ पथः संख्या-
व्ययात्परः ॥ षष्ठ्याश्छाया बहूनां
चेद्विच्छायं संहतौ सभा ॥ २६ ॥
शालार्थापि परा राजामनुष्यार्थाद-
राजकात् ॥ दासीसभं नृपसभं रक्षः-
सभमिमा दिशः ॥ २७ ॥

द्वंद्व समासका एक भाव और अव्ययी-
भाव समास यह दोनों नपुंसकलिङ्गमें होवे हैं जैसें द्वंद्वका एकभाव [पाणिपादम्.

शिरोघ्रीवम्] और अव्ययीभाव जैसे [अधिस्त्रि उपगगम्] सख्यावाचक शब्द और अन्ययसे परै जो पथशब्द है सो नपुसक-
लिगमें होता है जैसे [द्विपथ चतुष्पथं विपथ कापथ] इत्यादिक (सख्याव्ययाव)
ऐसा क्यों कहा कि [धर्मपथः कापथः] इ-
त्यादिक नपुसकलिगमें नहीं होते समासके
विषै पट्टीविभक्तिसँ अर्थात् पष्ठचन्त शब्द-
सँ परै जो छाया शब्द है वह छाया यदि
बहुतोंकि सबधिनी हो तौ नपुसकलिगमें
होवे है जैसे विच्छाय उदाहरण है समास-
केविषै पष्ठचन्त शब्दसँ परै समूह अर्थमें
जो सभाशब्द है वह नपुसकलिगमें होता है
जैसे दासीसभ इत्यादिक शालार्था अर्थात्
गृह अर्थवाला तथा अपिशब्दसँ समूह अ-
र्थवाला जो सभा शब्द है वह यदि अरा-
जक अर्थात् राजशब्दसँ वर्जित ऐसा जो
राजपर्याय और अमनुष्यार्थ पष्ठचन्त शब्द
उससँ परै होवे तौ नपुसकलिगमें होता है जै-
सँ (नृपसभ रक्ष.सभ) यह उदाहरण है,
और दासीसभ यह उदाहरण समूह अर्थमें
पहिले दिखादिया अराजकाव ऐसा क्यों
कहा कि राजसभा इत्यादिकमें नपुसकलिग
नहीं होता और अमनुष्यार्थात् ऐसा क्यों
कहा की चद्रगुप्तसभा इत्यादिकमें नपुसक-
लिग नहींहोता ॥ २७ ॥

उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने॥
कोपज्ञकोपक्रमादिकन्थोशीनरनाम-
सु ॥ २८ ॥ भावे नणकचिद्भ्योऽन्ये

समूहे भावकर्मणोः ॥ अदन्तप्रत्ययाः
पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः॥ २९ ॥

तत् नाम उपज्ञा और उपक्रमका आ-
दित्व अर्थात् प्रथमतःके प्रकाश करनेमें
उपज्ञा वा उपक्रम है अन्तमें जिसके
ऐसा समास नपुसकलिगमें होता है जैसे
(कोपज्ञ मजा कोपक्रम लोकः) इत्यादिक
(तदादित्व प्रकाशने) ऐसा क्यों कहा कि
(देवदत्तोपज्ञाष्टमयः प्रकारः देवदत्तोपक्रमो र-
थः) इनमें नपुसक लिग नहीं होता उशीनरो-
के नामोंके मध्यमें पष्ठचन्त शब्दसँ परै जो
कया शब्द होता है वह नपुसक लिगमें
होता है जैसे सौशमिकथ और उशीनरसँ
अन्यत्र दाक्षिकथा होता है, नामसु एसा क्यों
कहा कि वीरणकथा यह नपुसकलिग नहीं
होता ॥ २८ ॥ न तथा ण तथा क तथा
चिव अर्थात् जिसका कि चकार इतनाम
अनुगध होवे इनसँ जो अन्य तव्यादिक अ-
कारान्त धातुप्रत्यय भावमें रचे है वह नपु-
सकलिगमें होवे हैं तहाँ धातुप्रत्यय जैसे (भ-
वितव्य भाव्यं सहित मुक्त इत्यादिक और
समूह अर्थमें और भाव तथा कर्म इन दोनों
अर्थोंमें जो कि अकारान्त तद्धितप्रत्यय है
वह नपुसक लिगमें होवे है तहा समूह अ-
र्थमें जैसे (भिक्षाणा समूहो भैक्ष) और भा-
वअर्थमें जैसे (गोर्भावः गोत्व) और कर्म
अर्थमें जैसे (राक्ष कर्म राज्यम्) इत्यादि-
क जानने पुण्य तथा सुदिन शब्दोंसँ परै

समासान्त अह शब्द है. वह नपुंसकलिङ्गमें होता है जैसे (पुण्याहं सुदिनाहं) ॥ २९ ॥

क्रियाव्ययानां भेदकान्येकत्वेऽप्यु-
क्त्यतोदके ॥ चोचं पिच्छं गृहस्थूणं
तिरीटं मर्मं योजनम् ॥ ३० ॥ रा-
जसूर्यं वाजपेयं गद्यपद्ये कृतौ कवेः॥
माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरपिञ्ज-
रम् ॥ ३१ ॥

क्रिया और अव्ययोंके भेदक नाम विशेषण नपुंसक लिङ्गमें तथा एकवचनमें होवे हैं. क्रियाविशेषण जैसे—(रम्यं पत्रति) इत्यादिक और अव्ययविशेषण जैसे (रम्यं स्वः—सुखदं प्रातः) इत्यादिक इसके अनन्तर जो कि उक्त्यादिक शब्द हैं. वह नपुंसकलिङ्गमें होते हैं. उक्त्य यह नाम सामभेदका है. तोटक यह नाम छंदके भेदका है. चोच यह नाम भोगेहुए फलके वचे हुए भागका है. कोई आचार्य इसको तालफल वा कदलीका फल कहते हैं. पिच्छ यह नाम मोरपांखका है. गृहस्थूण यह नाम घरके थूनका है. तिरीट यह नाम वेष्टन वा शिरके आभूषणका है. मर्मन् यह नाम संधिस्थानका है. योजन यह नाम चारको-शका है. ॥ ३० ॥ राजसूर्य वाजपेय यह दो नाम यज्ञभेदके हैं. गद्य पद्य यह दोनों कविकी कृतिमें वृत्तें हैं. माणिक्य यह नाम रत्नभेदका है. भाष्य यह नाम पदके अर्थके

खुलासा करनेका है. सिंदूर यहनाम सिन्दूरका है. चीर यह नाम वस्त्रभेदका है. चीवर यह नाम मुनियोंके वस्त्रका है. पिंजर यह नाम पींजराका है. ॥ ३१ ॥

लोकायतं हरितालं विदलस्थालवा-
ह्लिकम् ॥

॥ इति क्लीविसंग्रहः ॥

लोकायत यह नाम चार्वाक शास्त्रविशे-
षका है. हरिताल यह नाम हरतालका है. विदल यह नाम वांसके पत्रोंके बनाये हुए पात्रका है. स्थाल यह नाम थालका है. वाल्हिक यह नाम कुंकुमादिकका है.

॥ इतिनपुंसकसंग्रहः ॥

पुंनपुंसकयोः शेषोऽर्धचर्चपिण्याकक-
ण्टकाः ॥ ३२ ॥ मोदकस्तण्डकटङ्कः
शाटकः कर्पटोऽवुदः ॥ पातकोद्योग-
चरकतमालामलकानडः ॥ ३३ ॥

इसके अनन्तर चिक्रसपर्यन्त शब्द पुलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्गमें कहे जावेंगे. शेष अर्थात् कहेहुएसें जो अन्य है वह पुंनपुंसकलिङ्ग दोनोंमें होता है. भाव यह है कि जैसे कि शंख और पद्म शब्द निधिवाचक पुलिङ्गमें होते हैं. और कंबु और नलिन वाचक पुंन-पुंसकलिङ्ग दोनोंमें होते हैं. तैसैंही इस पुंन-पुंसकसंग्रह वर्गका शब्दभी जिसपर्यायमें बाधित हो और वह यदि उसपर्यायसें.

१ भाष्यलक्षण कहते हैं—सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र

वाक्यैः सूत्रानुकारिभिः ॥ स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः ॥ १ ॥

भिन्न हो तो पुनपुसकलिग दोनोंमें होता है
अर्धर्च यह नाम ऋचाके अर्धभागका है
पिण्याक यह नाम बिनातेलवाले तिलके
चूर्णका है इसको खरि कहते हैं कटक
यह नाम रोमहर्षादिकका है ॥ ३२ ॥
मोदक यह नाम लड्डूका है, तडक यह नाम
उपताप विशेषका है टक यह नाम पत्थ-
रके काटनेवाले शस्त्र विशेषका है इसको
टाकी कहते हैं, शाटक यह नाम वस्त्रभे-
दका है कर्पट यह नाम स्थानभेदका वा
वस्त्रभेदका है अर्बुद यह नाम सख्या-
भेदका है पातक यह नाम ब्रह्महत्यादिकका
है उद्योग यह नाम उत्साहका है, चरक
यह नाम वैद्योंके शास्त्रभेदका है तमाल
यह नाम वृक्षभेदका है आमलक यह नाम
आँवलेके फलका है नड यह नाम तृणभे-
दका है ॥ ३३ ॥

कुष्ठं मुण्डं शीघ्रं बुस्तं क्ष्वेडितं क्षेम-
कुट्टिमम् ॥ संगमं शतमानानामशम्ब-
लावपयताण्डवम् ॥ ३४ ॥ कवियं कन्द-
कार्पातं पारावारं युगंधरम् ॥ यूपं प्रग्री
वेपात्रीवे यूपं चमसचिकसौ ॥ ३५ ॥

कुष्ठ यह नाम रोगभेदका है मुड यह
नाम गिरका है शीघ्र यह नाम मदिराका
है बुस्त यह नाम भ्रष्टमांस वा पनसादिक
फलके बिनसारवाले भागका है क्ष्वेडित यह
नाम धीराकर किये हुए सिंहनादका है
क्षेम यह नाम कुगलका है कुट्टिम यह नाम
फरसबन्दीका है संगम यह नाम सयो-

गका है शतमान यह नाम तोलभेदका है
अर्म यह नेत्रोंके रोगभेदका है शवल यह
नाम वर्णभेदका इसको कबरा रँग कहते हैं
अव्यय यह नाम स्वरादिनिपातवाचक है
ताडव यह नाम नृत्यभेदका है ॥ ३४ ॥
कविय यह नाम लगामका है कद यह
नाम कमल आदिककी जडका है कार्पास
यह नाम कपासका है पारावार यह नाम
नदी आदिकके दोनों किनारोंका है युगं-
धर यह नाम गाड़ी आदिकके अगभेदका
है यूप यह यज्ञका अगभेद है प्रग्रीव यह
नाम वृक्षके शिरका वा झरोखाओंका है,
पात्रीव यह यज्ञका पात्रभेद है यूप यह
नाम मॉडका है, चमस चिकस यह दोनों
पात्रभेद है ॥ ३५ ॥

अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं
ध्रुवम् ॥ तन्नोक्तमिह लोकेऽपि तच्चे-
दस्यस्तु शेषवत् ॥ ३६ ॥

॥ इति पुनपुंसकसंग्रहवर्गः ॥

जो कि घृतादिकोंकी पुस्त्वाद्य अर्थात्
पुलिंगतादिक पाणिनी आदिकोंने कहाहै
वह निश्चयही वैदिक है अर्थात् वेदमें मसिद्ध
है इस कारण अर्धर्चादि पुनपुंसक अधिका-
रवाले इसवर्गमें वह नहीं कहा और वह
यदि लोकेमेंभी होताहो तो उसप्रकार हो
जैसे कि शेष नाम कहे हुएसे जो अन्य
है वह जिसप्रकार होता है भाव यह है
कि जैसे गेप (गिष्ट) प्रयोगसे ग्रहण

कियाजाता है तैसैं हीं वहभी शिष्टप्रयो-
गसैं ग्रहण करने योग्य है ॥ ३६ ॥

॥ इति पुंनपुंसकसंग्रहवर्गः ॥

स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुःषट्पदो-
रगाः ॥ जातिभेदाः पुमाख्याश्च स्त्री-
योगैः सहमल्लकः ॥ ३७ ॥

इसके अनन्तर स्त्रीपुंलिंगसंग्रहवर्ग कह-
तेहैं—अपत्य प्रत्यय हैं अन्तमें जिनके ऐसे
शब्द स्त्रीपुंलिंगमें होवै हैं जैसैं उपगुका
अपत्य यदि पुमान् होवै तौ औपगवः संज्ञिक
है. और स्त्रीलिंग हो तौ औपगवि संज्ञिक
है. और द्विपद चतुष्पद षट्पदवाची तथा
उरगवाची अर्थात् सर्पवाची जातिभेद
स्त्रीपुंलिंगमें होवै हैं. द्विपदजातिभेद जैसैं—
(मानुषः पुमान् मानुषी स्त्री) इत्यादिक
और चतुष्पदजातिभेद जैसैं (मृग मृगी)
इत्यादिक और षट्पद जातिभेद जैसैं
(भृंगः—भृंगी) और सर्पजातिभेद जैसैं
(उरगः उरगी) इत्यादिक और स्त्रीयोगों-
सहित पुमाख्य अर्थात् पुंनाम स्त्री पुंलिंगमें
होवै हैं. जैसैं (इंद्रः इंद्राणी) और जैसैं
(मातुलः पुमान् मातुली स्त्री) इत्यादिक यहां-
सैं लेकर कुटीपर्यन्त मल्लकादिक शब्द स्त्रीपुं-
लिंगमें होते हैं. जैसैं (मल्लकः मल्लिका)
यह नाम चमेलीका है. ॥ ३७ ॥

मुनिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको ज्ञाटलि-
मनुः ॥ मूषा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः
शाटी कटो कुटी ॥ ३८ ॥

॥ इति स्त्रीपुंसशेषसंग्रहवर्गः ॥

अग्नि यह नाम तरंगका है. इसकों
लहरी कहते हैं. वराटक वराटिका यह
नाम कमलगट्टा वा रस्सीका है. स्वाति यह
नाम स्वातिनक्षत्रका है. वर्णक वर्णिका यह
नाम चन्दनका है. ज्ञाटलि यह नाम ढाक्-
वृक्षकी सदृश वृक्षभेदका है. मनु यह नाम
स्वायंभुवादिकका वा मंत्रका है. मूषन् यह
नाम सुवर्णादिक तावनेकी घरियाका है.
सृपाटी सृपाट यह नाम परिमाण भेदका है.
कर्कन्धू यह नाम बदरीवृक्षका है. यष्टि यह
नाम लाठीका है. शाटी शाट यह नाम
वस्त्रभेदका है. कटी कट यह नाम देहके
अंगका है. इसकों कमरि कहते हैं. कुटी
कुट यह नाम सभागृहका है. ॥ ३८ ॥

॥ इति स्त्रीपुंलिंगसंग्रहवर्गः ॥

स्त्रीनपुंसकयोर्भावक्रिययोः ष्यञ् क-
चिच्च वुञ् ॥ औचित्यमौचिती मैत्री
मैत्र्यं वुञ् प्रागुदाहृतः ॥ ३९ ॥

इसके अनन्तर स्त्री नपुंसकसंग्रहवर्ग कह-
ते हैं.—भाव और क्रिया नाम कर्म इन दोनों-
केविषैं वर्तमान ष्यञ् प्रत्यय और वुञ्
प्रत्यय कहीं स्त्री नपुंसक लिंगमें होवै हैं.
जैसैं ष्यञ् प्रत्ययका उदाहरण देते हैं (औ-
चित्यं औचिती मैत्री मैत्र्यं) इत्यादिक
और वुञ् प्रत्यय (वैरमैथुनिकादि वुन्) इस
प्रकार पहिलैं स्त्रीलिंगसंग्रहमें उदाहृत किया
है यानी दिखादियाहै. जैसैं कि मिथुनका
भाव वा कर्म मैथुनिका मैथुनक संज्ञिक
है ॥ ३९ ॥

पष्ठच्यन्तप्राक्पदाः सेनाछायाशाला-
सुरानिशाः ॥ स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं
गोशालमितरे च दिक् ॥ ४० ॥
आवन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि नश्च
लुप् ॥ त्रिखट्वं च त्रिखट्ठी च त्रितक्षं
च त्रितक्षपि ॥ ४१ ॥

॥ इति स्त्रीनपुंसकशेषः ॥

पक्षी विभक्ति है अन्तमें जिनके ऐसे
शब्द है पूर्वपद जिनके ऐसे (सेना छाया
शाला सुरा निशा) शब्द स्त्री तथा नपुंसक
लिङ्गमें होवै हैं जैसे (नृसेन श्वनिश
गोशाल) और विकल्पकरके (नृसेना—
श्वनिशा गोशाला) यह उदाहरण है
और इसीप्रकार इतर नाम अन्यशब्दभी
जानने योग्य है ॥ ४० ॥ आप्रत्ययान्त
और अन्प्रत्ययान्त शब्द है उत्तरपद
जिसके ऐसा द्विगुसमास अपुंसि अर्थात्
पुलिङ्गवर्जित स्त्रीनपुंसक लिङ्गके विषे हो
और अन् प्रत्ययान्त उत्तरपद शब्दका जो
अत्य नकार है उसका लोप हो जैसे
(त्रिखट् त्रिखट्ठी त्रितक्ष त्रितक्षी) यह
उदाहरण हैं (त्रितक्ष त्रितक्षी) इसमें
तक्षन् शब्दका अत्य नकार लोप होगया
है ॥ ४१ ॥

॥ इति स्त्रीनपुंसकसमग्रहवर्गः ॥

त्रिपु पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदा-
डिमी ॥

॥ इति त्रिडिङ्गशेषसंग्रहः ॥

इसके अनन्तर त्रिडिङ्गसमग्रहवर्ग कहते
हैं पात्री आदिक दाडिमन्त शब्द तीनों
लिङ्गमें होवै है। जैसे (पात्री पात्र.—पात्र)
इसीप्रकार पुटी आदिक शब्द तीनों लिङ्गमें
जानने योग्य है पात्री यह नाम पात्रका
है पुटी यह नाम मट्टीके पात्र विशेषका
है वाटी यह नाम मार्गका है। इसको वाट
कहते हैं पेटी यह नाम पिटारीका है कुवल
यह नाम बदरीफलका है। दाडिम यह नाम
अनारका है

॥ इति त्रिडिङ्गसमग्रहवर्गः ॥

परं लिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषे-
ऽपि तत् ॥ ४२ ॥ अर्थान्ताः प्राद्यलं-
प्राप्तापन्नपूर्वा परोपगाः ॥ तद्धितार्थो
द्विगुः संख्यासर्वनामतदन्तकाः ॥ ४३ ॥

स्वप्रधान नाम उभयपदप्रधान ऐसे
इतरेतर सन्निक द्वंद्व समासकेविषे और
तत्पुरुष समासके विषे जो कि पर
लिङ्ग अर्थात् अगलेपदमें स्थित लिङ्ग
है वह ही लिङ्ग होवै है तहाँ द्वन्द्वके
विषे जेसं (कुकुट मयूरो इमे—मयूरीकु-
कुटौ इमौ) और तत्पुरुषके विषे जैसे—
(धान्येन अर्थ धान्यार्थ सर्पात् भीति.
सर्पभीति) इत्यादिक जानने ॥ ४२ ॥
कहे हुए तत्पुरुष लिङ्गका अपवाद कहते
हैं तत्पुरुष समासके विषे अर्थ शब्द है
अन्तमें जिनके ऐसे शब्द परोपग अर्थात्
विशेष्यलिङ्ग होतेहैं जैसे (द्विजार्थः स्वः

द्विजार्था यवागूः द्विजार्थं पयः) इत्यादिक और आदि उपसर्ग और अलं शब्द और प्राप्त शब्द और आपन्न शब्द हैं पूर्व जिसके ऐसे शब्दभी परोपग अर्थात् विशेष्यलिंग होवे हैं. तहाँ प्रादि पूर्व जैसे (अतिमालो-हारः अतिमालेयं अतिमालमिदं) और अलंपूर्व जैसे (अलं कुमारिरयं अलंकुमारिरियं अलंकुमारि इदम्) और प्राप्तपूर्व जैसे (प्राप्तजीविको द्विजः प्राप्तजीविका स्त्री प्राप्तजीविकमिदम्) और आपन्नपूर्व जैसे (आपन्नजीविकः) इत्यादिक और तद्धितार्थ द्विगुसमास विशेष्यलिंग होवै है. जैसे (पंचकपालः पुरोडाशः पंचकपालं हविः) इत्यादिक जाननें. संख्या शब्द और सर्वनाम संज्ञिक और वहही संख्या शब्द और सर्वनाम संज्ञिक हैं अन्तमें जिनके ऐसे शब्द परगामी अर्थात् विशेष्यलिंग होवै हैं. तहाँ संख्याशब्द जैसे । एकः पुमान् एकं कुलं एका स्त्री) इत्यादिक संख्याके विषे विंशत्यादिक तथा शतादिकका लिंग पीछे निर्णयकर चुके और सर्व नाम जैसे (सर्वो देशः सर्वा नदी सर्वं जलम्) इत्यादिक और संख्यांतक जैसे (ऊनत्रयः ऊनतिस्रः ऊनत्रीणि) इत्यादिक और सर्वनामांतक जैसे (परमसर्वः परमसर्वा परमसर्वम्) इत्यादिक ॥ ४३ ॥

बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नामुन्नेयं तदुदाहृतम् ॥ गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधिभिः परगामिनः ॥ ४४ ॥ कृतः कर्तव्य-

संज्ञायां कृत्याः कर्तरि कर्मणि ॥ अणाद्यन्तास्तेन रक्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः ॥ ४५ ॥

अदिङ्नाम्नां अर्थात् दिक्शब्दसे वर्जित जो नाम हैं उनका जो बहुव्रीहिसमास है वह विशेष्यलिंग होवे है. उसका उदाहरण स्वयंही संभावना करनेयोग्य है. जैसे (बहुधनः पुमान् बहुधना स्त्री बहुधनमिदं कुलम्) इत्यादिक अदिङ्नाम्नाम् ऐसा क्यों कहाकि जैसे (दक्षिणपूर्वादिक् यह बहुव्रीहि विशेष्यलिंग नहीं होता किन्तु दिक्वाचक होनेसे स्त्रीलिंग है. जैसे दक्षिणपूर्वा दिक् गुणयोग और द्रव्ययोग और क्रियायोग इनकरके जो उपाधिनाम विशेषण हैं वह विशेष्यके विषे प्रवृत्त होवें तो परगामी अर्थात् विशेष्यलिंग होवै हैं तहाँ गुणयोग करके जैसे (गंधवती पृथ्वी गंधवानश्मा गंधवत्कुसुमम्) और द्रव्ययोगकरके जैसे (दण्डिनी स्त्री) इत्यादिक और क्रिया योगकरके जैसे (पाचकः पुरुषः पाचिका स्त्री) इत्यादिक जाननें ॥ ४४ ॥ असंज्ञाके विषे कर्त्तामें जो कृत्यप्रत्यय होवै हैं वहभी विशेष्यलिंग होवै हैं. जैसे (कर्त्ता पुमान् कर्तुं कलत्रम्) इत्यादिक असंज्ञायां ऐसा क्यों कहाकि प्रजा हरिः इत्यादिक संज्ञार्थमें तीनों लिंग नहीं होते. और कर्म और कर्त्ताके विषे वर्त्तमान हुए कृत्यप्रत्यय विशेष्यलिंग होवै हैं तहाँ कर्त्ताके विषे जैसे (वास्तव्योयम् वास्तव्या सा—वास्तव्यं तव)

इत्यादिक और कर्मकेविषे जैसे (कर्त्तव्या भक्तिः कर्त्तव्यो धर्मस्त्वया) इत्यादिक जाननें वेन रक्तादिक अर्थके विषे जो कि अणादि तद्धित प्रत्ययान्त शब्द हैं वह अनेक अर्थके भेदक अर्थात् विशेषण हुए विशेष-लिंग होवै हैं जैसे कुसुमकरके रंगा-हुआ वस्त्र कौसुम सज्जिक है. इसका उदाहरण यह है (कौसुमी शाटी कौसुम पटः कौसुम वासः) इत्यादिक रक्ताद्यर्थे इसमें जो आदिशब्द है उससे यह उदाहरण है कि मथुरासे आया हुआ माथुरसज्जिक है. जैसे (माथुरोऽय माथुरी इय) इत्यादिक जाननें ॥ ४५ ॥

पदसंज्ञकास्त्रिषु समा युष्मदस्मत्तिड-
व्ययम् ॥ परं विरोधे शेषं तु ज्ञेयं
शिष्टप्रयोगतः ॥ ४६ ॥

॥ इति लिगादिसंग्रहवर्गः ॥

पदसंज्ञक पान्त ना त संख्या और कतिशब्द यह तीनों लिंगमें समानरूप है अर्थात् इन शब्दोंके रूप तीनों लिंगमें एकसे होते हैं और बहुवचन होते हैं जैसे (पडिमे पडिमा. पडिमानि पचपुरुषा पच-स्त्रियः पचकुलानि कतिपुरुषा. कतिस्त्रिय) इत्यादिक जाननें युष्मद् अस्मद् शब्द और तिङन्त शब्द और अव्यय यहभी तीनों-लिंगमें समानरूप होते हैं युष्मद् शब्द

जैसे (त्व पुरुष त्व स्त्री त्व कलत्रम्) और अस्मद् शब्द जैसे (अह पुरुष अह स्त्री अह कलत्रम्) और तिङन्तशब्द जैसे (स्थाली भवति घटो भवति पात्रं भवति) और अव्यय जैसे (उच्चैः दाराः उच्चैः स्त्री उच्चैः कलत्रम्) इत्यादिक जाननें पूर्वका परसें विरोध होनेपर परलिंगविधि प्रवृत्त होवै है जैसे मानुषशब्दमें (कपणभमरोपान्ताः) इस पूर्वविधिसें पुलिगता प्राप्त होवै है परतु द्विचतुःषट्पदेति इस उत्तरविधान कर स्त्री पुलिगता निश्चयकरने योग्य है जैसे (मानुषी इय मानुषोयम्) इत्यादिक और शेष अर्थात् इसग्रथमें नहीं कहाहुआ नाम लिंग शिष्ट नाम भाष्यकारादिक महाकवियोंके प्रयोगसे जाननें योग्य है ॥ ४६ ॥

॥ इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥ ५ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशा-
सने ॥ सामान्यकाण्डस्तृतीयः साङ्ग
एव समर्थितः ॥ ४७ ॥

तृतीयं काण्डं संपूर्णम् ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

इसप्रकार अमरसिंहको कृति, नाम और लिंगोंके अनुशासन अर्थात् जतानेवाले शास्त्रमें तृतीय सामान्य नाम काण्ड अर्थात् वर्गसमूह अर्गोसहित निरूपण किया है ॥ ४७ ॥

संचिताऽमरसिंहेन नामलिंगस्वधाबुधाः ॥

तां पिबन्ति मयाद्याज्ञान् मत्वाक्षध्यां च
पायिता ॥ १ ॥

इतिश्रीमदमरसिंहकृतौ श्रीपाठकमंगलसेनात्म-
जकाशिरामविरचितभाषाटीकायां तृतीयका-
ण्डः समाप्तः ॥ ३ ॥

श्लोक

सन्मंगलानुसृतमंगलसेनसूनुः कृष्णा
प्रकाशितद्वंद्वजकाशिरामः॥सत्पाठ-
कान्वयहरिस्तवपाठको यो-ढाढौलि-
विप्रवरमौलिकृतप्रणामः॥१॥हरिप्रसा-
दायहरिप्रसादाद्विवृत्य दत्ताऽमरको
शभाषा ॥ भुजेषु खंडेन्दुमितं हि सं-
वन्नभस्य मासेसितविष्णुतिथ्याम्॥२॥

दोहा

सुजलरामगंगासरित, अरुसुरगंगा-
पास॥शंभलपश्चिमदिशि निकट,ग्राम-
ढढौलिनिवास ॥१॥ श्रीसन्मंगलमूर्ति-
मय, मंगलसेनसुजात ॥ श्रुतिपाठक
पाठकसुकुल,काशिरामविख्यात॥२॥
हरिप्रसादहितविरचितिन, हरिप्रसाद-
हितदीन ॥ अमरकोशभाषातिलक
अमरकीर्तिछितिकीन ॥ ३ ॥
संवत् भुजशरअंकछिति, भाद्रमासउ-
जियार ॥ हरितिथिहरिरिपुगुरुदिवस
पूरणकरचौसुभार ॥ ४ ॥

हरिप्रसाद भगीरथजी.

ठि०—कालिकादेविरोड़ रामवाड़ी

मुम्बई.

श्रीः ।

अथमूलस्थशब्दानामकारादिक्रमेण

शब्दानुक्रमणिका

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोक | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोक | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोक |
|--------------|---------|-------|-------------|---------|-------|--------------|---------|-------|
| अ | २४७ | ११ | अक्षान्ति | ३४ | २४ | अग्निमन्य | ६३ | ६६ |
| अश | १५५ | ८९ | अक्षि | { १०० | ९३ | अग्निमुखी | ५९ | ४२ |
| अंशु | १७ | ३३ | | { २५७ | २२ | अग्निशिख | १०५ | १२४ |
| अशुक | १०४ | ११५ | अक्षिकूटक | १२४ | ३८ | अग्निशिखा | { ७० | ११८ |
| अशुमती | ६९ | ११५ | अक्षिगत | १७४ | ४५ | | { ७२ | १३६ |
| अशुमत्फला | ६९ | ११३ | अक्षीव | { ५८ | ३१ | अग्न्युत्पात | { १९ | १० |
| अस | ९७ | ७८ | | { १४६ | ४१ | | { २०५ | ५८ |
| असल | ९२ | ४४ | अक्षोट | ५७ | २९ | अग्र | { १७६ | ५८ |
| अंहति | ११३ | ३० | अक्षौहिणी | १३२ | ८१ | | { २३० | १८३ |
| अहस् | २१ | २३ | अखण्ड | १७७ | ६५ | अग्रज | ९२ | ४३ |
| अग्नि | ९६ | ७१ | अखात | ४२ | २७ | अग्रजन्मन् | १०८ | ४ |
| अकारणि | १९१ | ३९ | अखिल | १७७ | ६५ | अग्रत सर | १३० | ७२ |
| अकूपार | ३८ | १ | अग | १२७ | १९ | अग्रतस् | { २४३ | २४६ |
| अकृष्णकर्मन् | १७४ | ४६ | अगद | ९३ | ५० | | { २४६ | ७ |
| | ६१ | ५८ | अगदकार | ९४ | ५७ | अग्रमास | ९५ | ६८ |
| अक्ष | { १५४ | ८६ | अगम | ५४ | ५ | अग्रिय | { ९२ | ४३ |
| | { १४६ | ४३ | अगस्त्य | १५ | २० | | { १७६ | ५८ |
| | { १६६ | ४५ | अगाध | ४० | १५ | अग्रीय | १७६ | ५८ |
| अक्षत | १४७ | ४७ | अगार | ४२ | ५ | अग्रेदिधिषू | ८८ | २३ |
| अक्षदर्शक | ११९ | ५ | अगुरु | १०५ | १२६ | अग्रेसर | १३० | ७२ |
| अक्षवेचिन् | १६५ | ४४ | अगुरुशिंशपा | ६२ | ६२ | अग्र्य | १७६ | ५८ |
| अक्षधूर्त | १६६ | ४४ | अग्रायी | १११ | २१ | अघ | { २१ | २३ |
| अक्षर | २३० | १८२ | अग्नि | ९ | ५६ | | { १९८ | २७ |
| अक्षरचुवूषु | १२० | १५ | अमिकण | ९ | ६० | अघमर्पण | ११६ | ४८ |
| अक्षरचण | १२० | १५ | अमिचित् | १०९ | १२ | अघ्न्या | १५० | ६७ |
| अक्षरविन्यास | १२० | १६ | अमिज्वाला | ७० | १२४ | अङ्क | { १४ | १७ |
| अक्षयती | १६६ | ४५ | अमित्रय | १११ | २० | | { १९३ | ४ |
| अक्षाप्रकीलक | १२८ | ५६ | अमिमू | ७ | ४२ | अङ्कुर | ५४ | ४ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|----------------|---------|--------|-----------|---------|--------|---------------|---------|--------|
| अङ्कुश | १२५ | ४१ | अज | १५२ | ७६ | अटस्प | ६८ | १०३ |
| अङ्कोट | ५७ | २९ | अज | १९९ | ३० | अटवी | ५३ | १ |
| अङ्क्य | ३१ | ५ | अजगन्धिका | ७३ | १३९ | अटा | १४ | ३६ |
| अङ्ग | ९६ | ७० | अजगर | ३६ | ५ | अट्ट | ५० | १२ |
| अङ्ग | २४६ | ७ | अजगव | ६ | ३७ | अट्टा | २२० | १३१ |
| अङ्गद | २४८ | १९ | अजहा | ६६ | ८६ | अट्टा | ११४ | ३६ |
| अङ्गद | १०२ | १०७ | अजन्य | १३७ | १०९ | अणक | १७६ | ५४ |
| अङ्गन | ५० | १३ | अजमोदा | ७४ | १४५ | अणव्य | १४० | ८ |
| अङ्गना | १३ | ५ | अजभृङ्गी | ७० | ११९ | अणि | १२८ | ५६ |
| अङ्गना | ८५ | ३ | अजस्र | ११ | ६९ | अणिमन् | ७ | ३८ |
| अङ्गविक्षेप | ३२ | १६ | अजा | १२२ | ७६ | अणीयस् | १७७ | ६२ |
| अङ्गसंस्कार | १०५ | १२१ | अजाजी | १४५ | ३६ | अणु | १४२ | २० |
| अङ्गहार | ३२ | १६९ | अजाजीव | १६० | ११ | अणु | १७७ | ६२ |
| अङ्गार | १४४ | ३० | अजित | २०६ | ६२ | अण्ड | ८३ | ३७ |
| अङ्गारक | १६ | २५ | अजिन | ११६ | ४७ | अणुकोश | ९७ | ७६ |
| अङ्गारधानिका | १४४ | २९ | अजिनपत्रा | ८२ | २६ | अणुज | ४० | १७ |
| अङ्गारवल्ली | ६० | ४८ | अजिनयोनि | ७८ | ८ | अणुज | ८३ | ३३ |
| अङ्गारवल्ली | ६६ | ९० | अजिर | ५० | १३ | अणुज | १७५ | ५१ |
| अङ्गारशकटी | १४४ | २९ | अजिर | २३० | १८१ | अतट | ५२ | ४ |
| अङ्गीकार | २४ | ५ | अजिह्व | १७८ | ७२ | अतर्कित | २४६ | ७ |
| अङ्गीकृत | १८३ | १०८ | अजिह्वग | १३३ | ८६ | अतलस्पर्श | ४० | १५ |
| अङ्गुलिमुद्रा | १०२ | १०८ | अज्जुगा | ३२ | ११ | अतसी | १४२ | २० |
| अङ्गुली | ९८ | ८२ | अज्झटा | ७१ | १२७ | अति | २४६ | ५ |
| अङ्गुलीयक | १०२ | १०७ | अज्ज | १७३ | ३८ | अति | २४२ | २४१ |
| अङ्गुष्ठ | ९८ | ८२ | अज्ज | १७५ | ४८ | अतिक्रम | १९० | ३३ |
| अङ्घ्रिपर्णिका | ६६ | ९२ | अज्ञान | २४ | ७ | अतिक्रम | २२४ | १५० |
| अचण्डि | १५१ | ७० | अञ्चित | १८२ | ९८ | अतिचरा | ७४ | १४६ |
| अचल | ५२ | १ | अञ्जन | १३ | ३ | अतिच्छत्र | ७७ | १६७ |
| अचला | ४५ | २ | अञ्जनकेशी | ७१ | १३० | अतिच्छत्रा | ७५ | १५२ |
| अचिह्नण | २३९ | २२५ | अञ्जनावती | १३ | ५ | अतिजव | १३० | ७३ |
| अच्युत | ५ | १९ | अञ्जलि | ९९ | ८५ | अतिथि | ११३ | ३४ |
| अच्युतायज | ५ | २४ | अञ्जसा | २४७ | १२ | अतिनिर्हारिन् | २४ | १० |
| अच्छ | ४० | १४ | अञ्जसा | २४६ | २ | अतिनु | ४० | १४ |
| अच्छमह | ७८ | ४ | अटनी | १३२ | ८४ | अतिपथिन् | ४८ | १६ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-------------|---------|--------|-----------|---------|--------|----------------|---------|--------|
| अनय | २२४ | १४९ | अनुक्रोश | ३३ | १८ | अनृजु | १७४ | ४६ |
| अनर्थक | २९ | २० | अनुग | १७९ | ७८ | अनृत | २९ | २१ |
| अनल | ९ | ५७ | अनुग्रह | १८७ | १३ | अनेकप | १३८ | २ |
| अनवधानता | ३४ | ३० | अनुचर | १३० | ७१ | अनेहस् | १२४ | ३४ |
| अनवरत | ११ | ६९ | अनुज | ९२ | ४३ | अनोकोह | १७ | १ |
| अनवस्कर | १७६ | ५६ | अनुजीविन् | ११९ | ९ | अन्त | ५४ | ५ |
| अनवराध्य | १७६ | ५७ | अनुतर्पण | १६५ | ४३ | अन्तःपुर | १३८ | ११६ |
| अनस् | १२७ | ५२ | अनुताप | ३४ | २५ | अन्तक | १७९ | ८१ |
| अनागतार्तया | ८६ | ८ | अनुत्तम | १७६ | ५७ | अन्तर | ५० | ११ |
| अनातप | २२५ | १५७ | अनुत्तर | २३२ | १९० | अन्तरा | १० | ५९ |
| अनादर | ३३ | २२ | अनुनय | २४८ | १८ | अन्तरा | २३१ | १८७ |
| अनामय | ९२ | ५० | अनुपद | १७९ | ७८ | अन्तरा | २४७ | १० |
| अनामिका | ९८ | ८२ | अनुपदीना | १६३ | ३० | अन्तराभवसत्त्व | २२० | १३३ |
| अनायासकृत | १८१ | ९४ | अनुपमा | १३ | ४ | अन्तराय | १८८ | १९ |
| अनारत | ११ | ६९ | अनुप्लव | १३० | ७१ | अन्तराल | १३ | ६ |
| अनार्यतिक्त | ७३ | १४३ | अनुबन्ध | २१३ | ९८ | अन्तरिक्ष | १३ | १ |
| अनाहत | १०३ | ११२ | अनुबोध | १०५ | १२२ | अन्तरीप | ३९ | ८ |
| अनिभिष | १३८ | ११८ | अनुभव | १८९ | २७ | अन्तरीय | १०४ | ११७ |
| अनिरुद्ध | ५ | २८ | अनुभाव | ३३ | २१ | अन्तरे | २४७ | १० |
| अनिल | ३ | १० | अनुमति | २३५ | २०९ | अन्तरेण | २४७ | १० |
| अनिश | ११ | ६९ | अनुयोग | १८ | ८ | अन्तरेण | २४६ | ३ |
| अनीक | १३१ | ७८ | अनुरोध | २७ | १० | अन्तर्गत | १८० | ८६ |
| अनीकस्थ | १३६ | १०४ | अनुलाप | २८ | १६ | अन्तर्धा | १४ | १२ |
| अनीकिनी | ११९ | ६ | अनुलेपन | २५७ | २३ | अन्तर्धि | १४ | १२ |
| अनीकिनी | १३१ | ७८ | अनुवर्तन | १२० | १२ | अन्तर्द्वार | ५० | १४ |
| अनु | १३२ | ८१ | अनुवाक | २५५ | १७ | अन्तर्मनस् | १६८ | ८ |
| अनु | २४४ | २४८ | अनुवाय | २५५ | १७ | अन्तर्वल्नी | ८८ | २२ |
| अनुक | १७१ | २३ | अनुवाय | २२३ | १४८ | अन्तर्वाणि | १६८ | ६९ |
| अनुकम्पा | ३३ | १८ | अनुष्ण | १६१ | १८ | अन्तर्वेशिक | ११९ | ८ |
| अनुकर्ष | १२८ | ५७ | अनुहार | १८८ | १७ | अन्तावसायिन् | १६० | १०१ |
| अनुकल्प | ११५ | ४० | अनूक | १९४ | १३ | अन्तिक | १७८ | ६७ |
| अनुकाशीन | १३१ | ७६ | अनूचान | १०९ | १० | अन्तिकतम | १७८ | ६८ |
| अनुकार | १८८ | १७ | अनूनक | १७७ | ६५ | अन्तिका | १४४ | २९ |
| अनुक्रम | ११४ | ३७ | अनूप | ४७ | १० | अन्तेवासिन् | १०९ | ११ |
| | | | अनूरु | १७ | ३२ | | १६२ | २० |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|------------|---------|-------|---------------|---------|-------|------------|---------|-------|
| अन्त्य | १७९ | ८१ | अपत्रपिण्डु | १७१ | २८ | अपान | १० | ६७ |
| अम्त्र | ९९ | ६६ | अपथ | ४८ | १७ | अपामार्ग | ९६ | ७३ |
| अन्तुक | १२५ | ४१ | अपथिन् | ४८ | १७ | अपावृत | ६६ | ८८ |
| अन्ध | ९४ | ६१ | अपदान्तर | १७८ | ६८ | अपासन | १६९ | १५ |
| | २१४ | १०३ | अपदिश | १३ | ५ | अपि | १३७ | ११३ |
| अन्धकरिपु | ६९ | ३४ | अपदेश | ३५ | ३३ | अपिधान | २४४ | २४९ |
| अन्धकार | ३६ | ३ | अपध्वस्त | २३७ | २१६ | अपिनाद | १४ | १३ |
| अन्धतमस | ३६ | ३ | अपभ्रश | १७३ | ३९ | अपिनाद | १२९ | ६५ |
| अन्धसू | १४७ | ४८ | अपयान | २६ | २ | अपूप | १४७ | ४८ |
| अन्धु | ४२ | २६ | अपरस्पर | १३७ | १११ | अप्यति | १० | १६४ |
| अन्न | १४७ | ४८ | अपरस्पर | १८५ | १ | अप्यिक्त | ९ | ५९ |
| | १८४ | १११ | अपराजिता | ६८ | १०४ | अप्रकाण्ड | ५४ | ९ |
| अन्य | १८० | ८२ | अपराजिता | ७४ | १४९ | अप्रगुण | १७८ | ७२ |
| अन्यतर | १८० | ८२ | अपराक्षपृषत्क | १३० | ६८ | अप्रत्यक्ष | १७९ | ७९ |
| अन्वक्ष | १७९ | ७८ | अपराध | १२२ | २६ | अप्रधान | १७७ | ६० |
| अन्वक् | १७९ | ७८ | अपराह | १७ | ३ | अप्रहत | ४६ | ५ |
| अन्वय | १०७ | १ | अपर्णा | ७ | ३९ | अप्राप्य | १७७ | ६० |
| अन्ववाय | १०७ | १ | अपलाप | २८ | १७ | अप्सरस् | ३ | २१ |
| अन्वाहार्य | ११३ | ३१ | अपवर्ग | २४ | ७ | अफल | ९ | ५५ |
| अन्विष्ट | १८३ | १०५ | अपवर्जन | ११३ | ३० | अफल | ५४ | ७ |
| अन्वेष्टा | १८३ | १०५ | अपवाद | २११ | ८९ | अबल | २९ | २० |
| अन्वेष्टित | १८३ | १०५ | अपवारण | १४ | १२ | अबलमुख | १७३ | ३६ |
| अप् (आप) | ३८ | ३ | अपवारण | २४८ | १२५ | अबन्ध्य | ५४ | ६ |
| अपकारिगृ | २८ | १४ | अपशब्द | २६ | २ | अबला | ८५ | २ |
| अपक्रम | २३७ | १११ | अपष्टु | १८० | ८४ | अबाध | १८० | ८३ |
| अपघन | ९६ | ७० | अपसद | १६१ | १६ | अब्ज | १४ | १४ |
| अपचय | १८७ | १६ | अपसर्प | १२० | १३ | अब्ज | २०० | ३२ |
| अपचायित | १८२ | १०१ | अपसव्य | १८० | ८४ | अब्जयोनि | ४ | १७ |
| अपचित | १८२ | १०१ | अपस्कर | १२८ | ५५ | अब्ज | २१ | २० |
| अपचिति | १८२ | १०१ | अपस्नात | १७० | १९ | अब्ज | २११ | ८८ |
| | २१४ | ३५ | अपहार | १८७ | १६ | अब्ज | २२३ | १४६ |
| अपटु | २०७ | ६७ | अपापति | ३८ | २ | अब्धि | ३८ | १ |
| अपत्य | ९४ | ५८ | अपापति | १०० | ९४ | अब्धिकफ | २१४ | १०१ |
| अपत्य | ८९ | २८ | अपाङ्ग | ११७ | २१ | अब्धिकफ | १५७ | १०५ |
| अपनपा | ३३ | २३ | अपाची | १२ | १ | अब्धमु | १३ | ४ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|--------------|---------|--------|-------------|---------|--------|--------------|---------|--------|
| अन्नद्वय | ३२ | १४ | अभिवादक | १७१ | २८ | अभ्यवकर्षण | १८८ | १७ |
| अभय | ७६ | १६४ | अभिवादन | ११५ | ४१ | अभ्यवस्कन्दन | १३७ | ११० |
| अभया | ६२ | ५९ | अभिध्याप्ति | १८६ | ६ | अभ्यवहत | १८४ | १११ |
| अभाषण | ११४ | ३६ | अभिज्ञस्त | १७४ | ४३ | अभ्याख्यान | २७ | १० |
| अभिक | १७१ | २४ | अभिज्ञस्ति | ११३ | ३२ | अभ्यागम | १३६ | १०५ |
| अभिक्रम | १३५ | ९६ | अभिज्ञाप | २७ | ११ | अभ्यागारिक | १६९ | १२ |
| अभिख्या | २२५ | १५६ | अभिषङ्ग | १९८ | २४ | अभ्यादान | १८९ | २६ |
| अभिग्रह | १८७ | १३ | अभिषव | ११६ | ४७ | अभ्यान्त | ९४ | ५८ |
| अभिग्रहण | १८८ | १७ | अभिषव | १६५ | ४२ | अभ्यामर्द | १३६ | १०५ |
| अभिघातिन् | १२० | ११ | अभिषेणन | १३४ | ९५ | अभ्याश | १७८ | ६७ |
| अभिचार | १८८ | १९ | अभिष्टुत | १८४ | ११० | अभ्यासादन | १३७ | ११० |
| अभिजन | १०७ | १ | अभिसपात | १३६ | १०५ | अभ्युदित | ११७ | ५५ |
| अभिजात | | ८१ | अभिसर | १३० | ७१ | अभ्युपगम | २४ | ५ |
| अभिज्ञ | १६८ | ४ | अभिसारिका | ८६ | १० | अभ्युपपत्ति | १८७ | १३ |
| अभितस् | २४५ | २५५ | अभिहार | १८८ | १७ | अभ्यूष | १४७ | ४७ |
| अभिधान | २७ | ८ | अभिहित | १८३ | १०७ | अभ्र | १२ | १ |
| अभिध्या | ३४ | २४ | अभीक | १७१ | २४ | अभ्र | १३ | ६ |
| अभिनय | ३२ | १६ | अभीक्षणम् | २४५ | १ | अभ्रक | १५७ | १०० |
| अभिनव | १७९ | ७७ | अभीक्ष्णम् | २४७ | ११ | अभ्रपुष्प | ५७ | ३० |
| अभिनवोद्भिद | ५४ | ४ | अभीप्सित | १७६ | ५३ | अभ्रमातङ्ग | ८ | ४९ |
| अभिनिर्मुक्त | ११७ | ५५ | अभीप्सित | १८४ | ११२ | अभ्रमुवहम् | ८ | ४९ |
| अभिनिर्गण | १३४ | ९५ | अभीरु | ६७ | १०० | अभि | ४० | १३ |
| अभिनीत | १२२ | २४ | अभीरुपत्री | ६७ | १०१ | अभ्रिय | १३ | ८ |
| अभिपन्न | २१० | ८१ | अभीषङ्ग | १८६ | ६ | अभ्रेष | १२२ | २४ |
| अभिपन्न | २१८ | १२८ | अभीषु | २३८ | २१९ | अमत्र | १४५ | ३३ |
| अभिप्राय | १८८ | २० | अभीष्ट | १७६ | ५३ | अमर | ३ | ७ |
| अभिभूत | १७३ | ४० | अभ्यया | १७८ | ६७ | अमरावती | ८ | ४८ |
| अभिमर | २३६ | २१४ | अभ्यन्तर | १३ | ६९ | अमर्त्य | ३ | ८ |
| अभिमान | ३३ | २२ | अभ्यमित | ९४ | ५८ | अमर्ष | ३४ | २६ |
| अभियोग | १८७ | १३ | अभ्यमित्रीण | १३१ | ७५ | अमर्षण | १७२ | ३२ |
| अभिरूप | २२० | १३१ | अभ्यमित्रीय | १३१ | ७५ | अमल | १५७ | १०० |
| अमिलाव | १८९ | २४ | अभ्यमित्र्य | १३१ | ७५ | अमा | २४४ | २५० |
| अमिलाय | ३४ | २८ | अभ्यर्ण | १७८ | ६७ | अमांस | ९२ | ४४ |
| अमिलायुक | १७१ | २२ | अभ्यर्हित | २१० | ८३ | अमात्य | ११८ | ४ |
| | | | | | | अमावस्या- | १८ | ८ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द- | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-------------|---------|-------|------------|---------|------------|-----------|---------|-------|
| अमात्रास्या | १८ | ८ | अमलवेतस | ७३ | १४१ | अरुणा | ६७ | ९९ |
| अमित्र | १२० | ११ | अम्लान | ६४ | ७३ | अरुतुद | १८० | ८३ |
| अमुत्र | २४७ | ८ | अम्लिका | ६० | ४३ | अरुष्कर | ५९ | ४२ |
| अमृणाल | ७६ | १६४ | अय | २२ | २७ | | २३१ | १८९ |
| { | ८ | ५१ | अयन | १९ | १३ | अरुस् | ९३ | ५४ |
| | २४ | ६ | अयस् | ४८ | १५ | अरोक | १८२ | १०० |
| | ३८ | ३ | अय प्रतिमा | १५६ | ९८ | { | १६ | २९ |
| | ११२ | २८ | अयि | १६४ | ३५ | | १९३ | ४ |
| | १३९ | ६ | अयोम | २४८ | १८ | अर्कपण | ६५ | ८१ |
| { | २०९ | ७६ | अयोधन | १४३ | २५ | अर्कवन्धु | ४ | १५ |
| | ६१ | ५८ | अग | २०१ | ३७ | अर्काहु | ६५ | ८० |
| | ६२ | ५९ | अरघट्ट | १० | ६८ | अर्गल | ५१ | १७ |
| | ६५ | ८२ | अरणि | २५६ | १८ | अर्घ | १९८ | २७ |
| अमृतान्धस | ३ | ८ | { | १११ | १९ | अर्घ्य | ११३ | ३३ |
| { | ६१ | ५४ | | ५३ | १ | अर्चा | ११४ | ३५ |
| | ६८ | १०६ | अरण्य | २५७ | २२ | { | १६४ | ३६ |
| अम्वर | १२ | १ | अरण्यानी | ५३ | १ | | १८२ | १०१ |
| अम्वरीप | १४१ | ३० | अरलि | ९९ | ८६ | { | २१० | ८५ |
| अम्वठ | १५९ | २ | अरर | ५१ | १७ | | ९ | ६० |
| { | ६३ | ७१ | अरलु | ६१ | ५७ | अर्चित | २४० | २३० |
| | ६५ | ८४ | अरविन्द | ८८ | ३९ | { | ६५ | ८० |
| | ७३ | १४० | अराति | १२० | १० | | २५ | १३ |
| अम्बा | ३२ | १४ | अराल | १७८ | ७१ | { | ६० | ४५ |
| अम्बिका | ७ | ३९ | अरि | ११९ | १० | | ७७ | १६७ |
| अम्बु | ३८ | ४ | अरि | ४० | १३ | { | ३८ | १ |
| अम्बुकण | १४ | ११ | अरिमेद | ६० | ५० | | २०५ | ५७ |
| अम्बुज | ६२ | ६१ | { | ५० | ८ | { | ३८ | ८ |
| अम्बुभृत् | १३ | ७ | | ५८ | ३१ | | १९० | ३२ |
| अम्बुवाहिनी | ३९ | ११ | अरिट | ६२ | ६२ | { | २०७ | ६८ |
| अम्बुवेतस | ५७ | ३० | { | ७४ | १४८ | | १५५ | ९० |
| अम्बुसरण | ३९ | ११ | | १४८ | ७३ | अर्णस् | २१२ | ८६ |
| अम्बुकृत | २९ | २० | } | ८१ | २० | { | ११३ | ३२ |
| अम्भस् | ३८ | ८ | अरिटबुटधी | २०१ | ३६ | | १८६ | ६ |
| अम्भोरुह | ४४ | ४१ | { | १७४ | ४४ | { | १३९ | ४ |
| अम्भय | ३८ | ५ | | १६ | २९ | | अर्थ | |
| अम्भ | २४ | ९ | अरुण | १७ | ३२ | { | | |
| अम्भलोगिका | ७३ | १४० | | २५ | १५ | | अर्थना | |
| | | | २०३ | ४८ | अर्थप्रयोग | | | |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-------------|---------|--------|------------|---------|--------|------------|---------|--------|
| अर्थशास्त्र | २६ | ५ | अलक | १०० | ९६ | अवगणित | १८३ | १०६ |
| अर्थिन् | ११९ | ९ | अलका | ११ | ७० | अवगत | १८३ | १०८ |
| | १७५ | ४९ | अलक्त | १०५ | १२५ | अवगीत | १८१ | ९३ |
| अर्थ्य | १५७ | १०४ | अलक्ष्मी | ३७ | २ | | २०९ | ७९ |
| | २२६ | १६० | अलगद | ३६ | ५ | अवग्रह | १४ | ११ |
| अर्दना | १८६ | ६ | अलंकरिण्यु | १०१ | १०० | | १२४ | ३८ |
| अर्दित | १८२ | ९७ | अलंकर्तृ | १०१ | १०० | अवग्राह | १४ | ११ |
| | १४ | १६ | अलंकर्माण | १७० | १८ | अवचूर्णित | १८१ | ९४ |
| अर्थ | १४ | १६ | अलंकार | १०१ | १०१ | अवज्ञा | ३३ | २३ |
| अर्थचन्द्रा | ६८ | १०९ | अलंकृत | १०१ | १०० | अवज्ञात | १८३ | १०६ |
| अर्थनाव | ४० | १४ | अलंक्रिया | १०१ | १०१ | अवष्ट | ३६ | २ |
| अर्थरात्र | १८ | ६ | अलर्क | ६५ | ८१ | अवटीट | ९२ | ४५ |
| अर्थर्च | २६० | ३२ | | १६२ | २२ | अवटु | ९९ | ८८ |
| अर्थहार | १०२ | १०६ | अलस | १६१ | १८ | अवतंस | २३९ | २२७ |
| अर्थोरुक | १०४ | ११९ | अलात | १४४ | ३० | अवतमस | ३६ | ३ |
| अर्बुद | २५६ | १९ | अलावू | ७५ | १५६ | अवतोका | १५१ | ६९ |
| अर्भक | १३१ | ३८ | अलि | ७९ | १४ | अवदंश | १६५ | ४० |
| अर्म | २६१ | ३१ | | ८२ | २९ | अवदात | २५ | १३ |
| | १३८ | १ | अलिक | १०० | ९२ | | २०९ | ८० |
| अर्य | २२३ | ११६ | अलिन् | ८२ | २९ | अवदान | १८५ | ३ |
| अर्यमन् | १६ | २८ | अलिजर | १४४ | ३१ | अवदाह | ७७ | १६५ |
| अया | ८७ | १४ | अलिन्द | ५० | १२ | अवदारण | १४१ | १२ |
| अर्याणी | ८७ | १४ | अलीक | १९४ | १२ | अवदीर्ण | ३८० | ८९ |
| अर्या | ८७ | १५ | अलू | १४४ | ३१ | अवद्य | १७६ | ५४ |
| अर्व | १७६ | ५४ | अल्प | १७७ | ६१ | अवधारण | २२९ | १७८ |
| अर्वन् | १२५ | ४४ | अल्पतनु | ९२ | ४८ | अवधि | २१३ | ९९ |
| | ३९ | ८ | अल्पमारिप | ७२ | १३६ | अवध्वस्त | १८१ | ९४ |
| अर्वाक् | १४८ | १६ | अल्पसरस् | ४२ | २८ | अवन | १८६ | ४ |
| अर्शस | ९४ | ५९ | अल्पिष्ट | १७७ | ६२ | अवनत | १७८ | ७० |
| अशस् | ९३ | ५४ | अल्पियस् | १७७ | ६२ | अवनाट | ९२ | ४५ |
| अशोत्र | ७५ | १५७ | अत्रकर | ५१ | १८ | अवनाय | १८९ | २७ |
| अशोरोगयुत | ९४ | ५९ | अवकीर्णिन् | ११७ | ५४ | अवनि | ४५ | ३ |
| अर्हणा | ११४ | ३५ | अवकुट्ट | १७३ | ३९ | अवन्तिसोम | १४६ | ३९ |
| अर्हित | १८२ | १०१ | अवकेशिन् | ५४ | ७ | अवन्ध्य | ५४ | ६ |
| | २४४ | २५२ | अवक्रय | १५३ | ७९ | अवभृथ | ११२ | २७ |
| अलम् | २४७ | ११ | | | | अवभृट् (ट) | ९२ | ४५ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|----------|---------|-------|-------------|---------|-------|--------------|---------|-------|
| अवम | १७६ | ५४ | अवाक्पुष्पी | ७५ | १५२ | अश्मज | १५७ | १०४ |
| अवमत | १८३ | १०६ | अवाप्त | १७८ | ७० | अश्मन् | ५२ | ४ |
| अवमर्द | १३७ | १०९ | अवाच्य | २९ | २१ | अश्मन्त | १४४ | २९ |
| अवमानना | ३३ | २३ | अवार | ३९ | ८ | अश्मपुष्प | ७० | १२२ |
| अवमानित | १८३ | १०६ | अवासस् | १७३ | ३९ | अश्मरी | ९४ | ५६ |
| अवयव | ९६ | ७० | अवि | ८८ | २० | अश्मसार | १५६ | ९८ |
| अवर | १२५ | ४० | अवि } | २३५ | २०७ | अश्रान्त | ११ | ६५ |
| अवरज | ९२ | ४३ | अविश्र | ६३ | ६७ | अश्रि | १३४ | ९३ |
| अवरति | १९१ | ३८ | अवित | १८३ | १०६ | अश्र | १०० | ९३ |
| अवरवर्ण | १५९ | १ | अविद्या | २४ | ७ | अशील | २९ | १९ |
| अवरीण | १८१ | ९४ | अविनीत | १७१ | २३ | अश्र | १२५ | ४३ |
| अवरोध | ५० | १२ | अविरत | ११ | ६९ | अश्वकर्णक | ६० | ४४ |
| अवरोधन | ५० | २१ | अविलम्बित } | १० | ६८ | अश्वत्थ | ५७ | २१ |
| अवरोह | ५५ | ११ | | १८० | ८३ | अश्वमेधीय | १२६ | ४५ |
| अवर्ण | २८ | १३ | अत्रिपट | २९ | २१ | अश्वयुज् | १५ | २१ |
| अवलक्ष | २५ | १३ | अत्रीचि | ३७ | १ | अश्ववडव | २५५ | १६ |
| अवलम्ब | ९८ | ७९ | अत्रीरा | ८६ | ११ | अश्व | १२६ | ४६ |
| अवलम्बित | २१४ | १०४ | अवेक्षा | १८९ | २८ | अश्वभरण | २०२ | ४४ |
| अवलगुज | ६७ | ९८ | अव्यक्त | २०६ | ६२ | अश्वरोह | १२९ | ६० |
| अववाद | १२२ | २५ | अव्यक्तराग | २५ | १५ | अश्विन् | ९ | ५१ |
| अवदपम् | २४८ | १६ | अव्यण्टा | ६६ | ८६ | अश्विनी | १५ | २१ |
| अवदयाय | १५ | १८ | अयथा } | ६२ | ५९ | अश्विनीस्त | ९ | ५१ |
| अवदृष्ट | २१४ | १०४ | | ७४ | १४६ | अश्वीय | १२६ | ८८ |
| अवसर | १८९ | २४ | अव्यय | २६१ | ३४ | अपलक्षीण | १२२ | २२ |
| अवसान | १९१ | ३८ | अव्यवहित | १७८ | ६८ | अटापव } | ९५ | ९३ |
| | ४९ | ४ | अशनाया | १४८ | ५१ | | १६६ | ४६ |
| अवसित } | १८२ | ९८ | अशनायिन | १७० | २० | अटोवत् | ९६ | ७२ |
| | १८३ | १०८ | अशनि | ८ | ५० | असङ्गत | २४६ | १ |
| अवस्तर } | ९६ | ६७ | अशित | १८४ | १११ | असती | ८६ | १० |
| | २२७ | १६७ | अशिभी | ८६ | ११ | असतोद्यत | ८९ | २६ |
| अवस्था | २२ | २९ | अशुभ | २५७ | २३ | असन | ६० | ४४ |
| अयदार | ४१ | २१ | अशेष | १७७ | ६ | असमीक्ष्यमान | १७० | १७ |
| अयदित्या | ३५ | ३४ | अशोक | ६२ | ६४ | असार | १७६ | ८६ |
| अयरेलन | ३३ | २३ | अशोकरोहिणी | ६८ | ८८ | असि | १३३ | ८९ |
| अयस् } | १७२ | ३३ | अरमगर्भ | १८६ | ९० | असिक्ती | ८८ | १८ |
| | १६९ | १३ | | | | | | |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-------------|---------|--------|-------------|---------|--------|------------|---------|--------|
| असित | २५ | १४ | अहन् | १७ | २ | आक्रन्द | २१२ | ९० |
| असिधावक | १६० | ७ | अहमहमिका | १३५ | १०१ | आक्रोड | ५४ | ३ |
| असिधेनुका | १३४ | ९२ | अहंपूर्विका | १३५ | १०० | आक्रोश | २८ | १५ |
| असिपुत्री | १३४ | ९२ | अहंमति | २४ | ७ | आक्रोशन | १८६ | ६ |
| असिर्हेति | १३० | ७० | अहर्पति | १६ | ३० | आक्षारणा | २८ | १५ |
| असु | १३८ | ११९ | अहर्मुख | १७ | २ | आक्षारित | १७४ | ४३ |
| असुधारण | १३८ | ११९ | अहस्कार | १६ | २८ | आक्षेप | २८ | १३ |
| असुर | ४ | १२ | अहह | २४५ | २५७ | आखण्डल | ८ | ४७ |
| असूक्ष्ण | ३३ | २३ | अहार्य | ५२ | १ | आखु | ७९ | १२ |
| असूया | ३४ | २४ | अहि | ३६ | ६ | आखुभुज् | ७८ | ६ |
| असृग्धरा | ९५ | ६२ | अहित | २४२ | २३८ | आखेट | १६२ | २३ |
| असृज् | ९५ | ६४ | अहित | १२० | ११ | आख्या | २७ | ८ |
| असेचनक | १७६ | ५३ | अहितुण्डिक | ३७ | ११ | आख्यात | १८३ | १०७ |
| असौम्यस्वर | १७३ | ३७ | अहिभय | १२३ | ३० | आख्यायिका | २६ | ५ |
| अस्त } | ५२ | २ | अहिभुज् | १९९ | ३० | आगन्तु | ११३ | ३४ |
| | १८० | ८७ | अहेतु | ६७ | १०१ | आगस् | १२२ | २६ |
| अस्तम | २४८ | १७ | अहो | २४७ | ९ | | २४० | २३० |
| अस्ति | २४८ | १८ | अहोरात्र | १९ | १२ | आगार | ४९ | ५ |
| अस्तु | २४७ | १३ | अह्नाय | २४६ | २ | आगू | २४ | ५ |
| अस्त्र | १३२ | ८२ | | | | आग्नीष्र | ११० | १७ |
| अस्थि | ९६ | ६८ | आ. | | | आग्रहायणिक | २० | १४ |
| अस्थिर | १७४ | ४३ | आ (आः) | २४२ | २४० | आग्रहायणी | १५ | २३ |
| अस्फुट्वाच् | १७३ | ३७ | आम् | २४८ | १६ | आड् | २४३ | २३९ |
| | ९५ | ६४ | आकम्पित | १८० | ८७ | आङ्गिक | ३२ | १६ |
| अस्त्र } | १०० | ९३ | आकर | ५३ | ७ | आङ्गिरस | १५ | २४ |
| | २२७ | १६४ | आकर्ष | २३८ | २२१ | आचमन | ११४ | ३६ |
| अस्त्रप | १० | ६२ | आकल्प | १०१ | ९९ | आचाम | १४७ | ४९ |
| असु | १०० | ९३ | आकार | १८७ | १५ | आचार्य | १०९ | ७ |
| अस्वच्छन्द | १६९ | १६ | | २२६ | १६२ | आचार्या | ८७ | १४ |
| अस्वप्न | ३ | ८ | आकारगुमि | ३५ | ३४ | आचार्यानी | ८७ | १५ |
| अस्वर | १७३ | ३७ | आकारणा | २७ | ८ | आचित | १५४ | ८७ |
| अस्वाध्याय | ११७ | ५४ | आकाश | १२ | २ | आच्छादन } | १४ | १३ |
| अहंयु | १७५ | ५० | आकीर्ण | १८० | ८५ | | १०४ | ११५ |
| अहंकार | ३३ | २२ | आकुल | १७८ | ७२ | आच्छुरित | ३५ | ३४ |
| अहंकारवान् | १७५ | ५० | आकृति | २२६ | १६२ | आच्छोदन | १६२ | २३ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|------------|---------|-------|-------------|---------|-------|--------------|---------|-------|
| आजक | १५२ | ७७ | आत्मभू | ४ | १६ | आनाह | ९३ | ५५ |
| आजानेय | १२५ | ४४ | आत्मभरि | ५ | २७ | आनाह | १०३ | ११४ |
| आजि | १३६ | १०६ | आत्रेयी | १७० | २१ | आनुपूर्वी | ११४ | ३७ |
| आजीव | २०० | ३२ | आथर्वण | ८८ | २० | आन्धाधिक | १४४ | २८ |
| आजू | १३८ | १ | आदर्श | १२२ | ४३ | आन्वीक्षिकी | २६ | ५ |
| आज्ञा | ३७ | ३ | आदि | १०७ | १४० | आपक | १४७ | ४७ |
| आज्ञा | १२२ | २६ | आदि | १७९ | ८० | आपगा | ४३ | ३० |
| आज्य | १४८ | ५२ | आदिकारण | २२ | २८ | आपण | ४९ | २ |
| आदि | ८१ | २५ | आदितेय | ३ | ८ | आपणिक | १५३ | ७५ |
| आडम्बर | १३६ | १०८ | आदित्य | ३ | ८ | आपत्याप्त | १७४ | ४२ |
| आडि | २२७ | १६८ | आदिनव | १६ | १० | आपद् | १३२ | ८२ |
| आडि | ८१ | २५ | आदित्य | ३ | २८ | आपन्न | १७४ | ४२ |
| आडक | १५५ | ८८ | आदीनव | १२० | २९ | आपन्नसत्त्वा | ८८ | २२ |
| आडकिक | १४० | १० | आदित | २१० | ८५ | आपमित्यक | ४ | ४ |
| आडकी | ७१ | १३० | आदेश | १०९ | ७ | आपान | १६५ | ४३ |
| आदध | १६९ | १० | आद्य | १७९ | ८० | आपीड | १०७ | १३६ |
| आतङ्ग | १९४ | १० | आद्यमापक | १५४ | ८५ | आपीन | १५२ | ७३ |
| आतञ्जन | २१६ | ११५ | आद्यून | १७० | २१ | आपूषिक | ११४ | २८ |
| आतनायिन | १७४ | ४४ | आधार | ४३ | २९ | आप्त | १२० | १३ |
| आतय | १७ | ३४ | आधि | ३४ | २८ | आप्य | ३८ | ५ |
| आतपत्र | २५७ | २० | आधूत | २१३ | ९७ | आप्यायन | २१६ | ११५ |
| आतर | १२३ | ३२ | आधूत | १८० | ८७ | आपच्छन्न | १८६ | ७ |
| आतायिन | ३९ | ११ | आधरण | १२९ | ५९ | आपपद | १०४ | ११९ |
| आतिथेय | ८१ | २१ | आध्यान | ३४ | २९ | आपपदीन | १०४ | ११९ |
| आतिथ्य | ११३ | ३३ | आनक | ३१ | ६ | आप्तव | १०५ | १२१ |
| आतुर | ११३ | ३३ | आनक | १९३ | ३ | आप्तव | १०५ | १२१ |
| आतुर | ९४ | ५८ | आनकतुन्दुभि | ५ | २३ | आप्तव | १४१ | १३ |
| आतोद्य | ३१ | ५ | आनत | १७८ | ७० | आप्तव | ३२ | १२ |
| आत्तगर्व | १७३ | ४० | आनद | ३० | ४ | आप्तव | १०१ | १०१ |
| आत्मगुप्ता | ६६ | ८६ | आनन | ९९ | ८९ | आभाषण | २८ | १५ |
| आत्मघोष | ८१ | २० | आनन्द | २२ | २८ | आभास्यर | ३ | १० |
| आत्मज | ८९ | २७ | आनन्दन | १८६ | ७ | आभीर | १४९ | ५७ |
| आत्मन् | २२ | २९ | आनर्त | २०६ | ६६ | आभीरपल्ली | ५२ | २० |
| आत्मन् | २१५ | १०९ | आनाय | ४० | १६ | आभीरी | ८६ | १३ |
| | | | आनाय्य | १११ | २१ | | | |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|----------|---------|--------|-----------|---------|--------|------------|---------|--------|
| आभील | ३८ | ४ | आरनालक | १४६ | ३९ | आलोक | १९३ | ३ |
| आभोग | १०७ | १३७ | आरति | १९१ | ३७ | आलोकन | १९० | ३१ |
| आमगन्धिन | २५ | १२ | आरम्भ | ११० | २६ | आवपन | १४५ | ३३ |
| आमनस्य | ३८ | ३ | आरव | २९ | २३ | आवर्त | ३९ | ६ |
| आमय | ९३ | ५१ | आग | १६४ | ३५ | आवलि | ५४ | ४ |
| आमयाविन् | ९४ | ५८ | आरात् | २४३ | २४२ | आवसित | १४३ | २३ |
| आमलक | २६० | ३३ | आराधन | २१८ | १२५ | आवाप | ४३ | २२ |
| आमलकी | ६१ | ५७ | आराम | ५३ | २ | आवापक | १०२ | १०७ |
| आमिक्षा | १११ | २३ | आरालिक | ११४ | २८ | आवाल | ४३ | २२ |
| आमिष | ९५ | ६३ | आराव | २१२ | २३ | आविष्ट | १७८ | ७१ |
| | २३८ | २२३ | आरेवत | ५७ | २४ | | १८० | ८७ |
| आमिषाशिन | १७० | १९ | आरोग्य | ९२ | ५० | आविध | १९१ | ३६ |
| आमुक्त | १२९ | ६५ | आरोह | २४२ | २३८ | आविल | ४० | १४ |
| आमोद | २२ | २४ | आरोहण | ५१ | १८ | आविस् | २४७ | १२ |
| | २४ | १० | आर्तगल | ६४ | ७४ | आवुक | ३२ | ११ |
| आमोदिन् | २५ | ११ | आर्तव | ८८ | २१ | आवुक्त | ३२ | १२ |
| आम्नाय | २६ | ३ | आर्द्र | १८३ | १०५ | आवृत् | ११४ | ३७ |
| | १८६ | ७ | आर्द्रक | १४५ | ३७ | आवृत | १८१ | ९० |
| आम्र | ५८ | ३३ | आर्य | १०८ | ३ | आवेगी | ७२ | १३७ |
| आम्नातक | ५७ | २७ | | ३२ | १४ | आवेशन | ४९ | ७ |
| आम्नेडित | २८ | १२ | आर्यावर्त | ४६ | ८ | आवेशिक | ११३ | ३४ |
| आयत | १७८ | ६९ | आर्षभ्य | १५० | ६२ | आशंसितृ | १७१ | २७ |
| आयतन | ४९ | ७ | आल | १५७ | १०३ | आशंसु | १७१ | २७ |
| आयति | १२३ | २९ | आलम्भ | १३७ | ११५ | आशय | १८८ | २० |
| | २०८ | ७२ | आलय | ४९ | ५ | आशर | १० | ६२ |
| आयत्त | १६९ | १६ | आलवाल | ४३ | २९ | आशा | १२ | १ |
| आयाम | १०३ | ११४ | आलस्य | १६१ | १८ | | २३७ | २१६ |
| आयुध | १३२ | ८२ | आलान | १२५ | ४१ | आशितंगवीन | १४९ | ५९ |
| आयुधिक | १२९ | ६७ | आलाय | २८ | १५ | आशीविष | ३७ | ७ |
| आयुधीय | १२९ | ६७ | | ४७ | १४ | आशीस् | २४० | २२८ |
| आयुष्मत् | १६८ | ६ | आलि | ५४ | ४ | आशु | १० | ६८ |
| आयुस् | १३८ | १२० | | १२ | १२ | | १४२ | १५ |
| आयोधन | १३६ | १०३ | आलिङ्ग्य | ३१ | ५ | आशुग | १० | ६५ |
| आरकूट | १५६ | ९७ | आलीढ | १३३ | ८५ | | १९७ | १९ |
| आरग्वय | ५७ | २३ | आलु | १४४ | ३१ | आशुशुक्षणि | ९ | ५५ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-----------|---------|-------|-------------|---------|-------|--------------|---------|-------|
| आधर्य | ३३ | १९ | आस्फोटनी | १६४ | ३३ | इत्तर | १५० | ६२ |
| आभ्रम | १०८ | ४ | आस्फोटा | ६८ | १०४ | इडा | २०२ | ४२ |
| आभ्रय | १२१ | १८ | आस्फोत | ६५ | ८० | इतर | १६१ | १६ |
| आभ्रयाश | ९ | ५४ | आस्फोता | ६३ | ७० | इति | १८० | ८२ |
| आभ्रव | २४ | ५ | आस्य | ९९ | ८९ | इति | २३२ | १९२ |
| आभ्रुत | १७१ | २४ | आस्या | १८८ | २१ | इतिह | २४३ | २४५ |
| आभ्र | १८३ | १८ | आस्रव | १९० | २९ | इतिहास | १०९ | १२ |
| आभ्र | १२६ | ४८ | आहत | २९ | २१ | इतिहास | २६ | ४ |
| आभ्ररथ | ५६ | १८ | आहतलक्षण | १६९ | १० | इत्थरी | ८६ | १० |
| आभ्रयुज | २० | १७ | आहव | १३६ | १०२ | इदानीम् | २४९ | २३ |
| आभ्रिन | २० | १७ | आहवनीय | १११ | १९ | इध्म | ५५ | १३ |
| आभ्रिनेय | ९ | ५१ | आहार | १४९ | ५६ | इन | २१६ | १११ |
| आभ्रिन | १२६ | ४७ | आहार | ४२ | २६ | हन्दीवर | ४४ | ३७ |
| आपाढ | २० | १६ | आहेय | ३७ | ९ | हन्तु | १४ | १३ |
| आसक्त | ११६ | ८६ | आहो | २४६ | ५ | हन्दीवरी | ६७ | १०० |
| आसन | १६८ | ९ | आहोपुरुषिका | १३५ | १०१ | हन्त्र | ७ | ४४ |
| आसन | १०७ | १३८ | आह्वय | २७ | ७ | हन्त्र | १२ | २ |
| आसना | १२१ | १८ | आह्वा | २७ | ८ | हन्त्र | ६० | ८५ |
| आसन्दी | १२५ | ३९ | आह्वान | २७ | ८ | हन्त्रयव | ६३ | ६७ |
| आसन्न | १७८ | ६६ | इक्षु | ७६ | १६३ | हन्त्रवारणी | ७५ | १५६ |
| आसव | १६५ | ४२ | इक्षुगन्धा | ६८ | १०४ | हन्त्रसुरस | ३३ | ६८ |
| आसादित | १८३ | १०४ | इक्षुगन्धा | ६८ | ११० | इन्त्राणिका | ६३ | ६८ |
| आसार | १४ | ११ | इक्षुर | ६८ | १०४ | इन्त्राणी | ८ | ४५ |
| आसुरी | १३५ | ९६ | इक्षुवाकु | ७२ | १०६ | इन्त्रायुध | १३ | १० |
| आस्कन्दन | १३६ | १०४ | इक्षु | ७२ | १०६ | इन्त्रारि | ४ | १३ |
| आस्कन्वित | १२६ | ४८ | इक्षु | ७२ | १०६ | इन्त्रावरज | ५ | २० |
| आस्तरण | १२५ | ४२ | इक्षु | ७२ | १०६ | इन्त्रिय | २४ | ८ |
| आस्था | २११ | ८८ | इक्षु | ७२ | १०६ | इन्त्रियार्थ | २४ | ८ |
| आस्थान | ११० | १५ | इक्षु | ७२ | १०६ | इन्धन | ५५ | १३ |
| आस्थानी | ११० | १५ | इक्षु | ७२ | १०६ | इम | १२४ | ३५ |
| आस्पद | २१२ | ९४ | इक्षु | ७२ | १०६ | इभ्य | १६९ | १० |
| | | | इक्षु | ७२ | १०६ | इरमद | १३ | १० |
| | | | इक्षु | ७२ | १०६ | इरा | १६५ | ४० |
| | | | इक्षु | ७२ | १०६ | | १२९ | १७६ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|----------------|---------|--------|--------------|---------|--------|------------|-----------|--------|
| इन्वला | १५ | २३ | ईषा | १४१ | १४ | उडुप | ३९ | ११ |
| इला | २०२ | ४२ | ईहा | ३४ | २७ | उड्डीन | ८३ | ३७ |
| इव | २४७ | ९ | ईहामृग | ७८ | ७ | उत } | १८३ | १०१ |
| इप | २० | १७ | उ | २४८ | १८ | | २४३ | २४३ |
| इपु | १३३ | ८७ | | | | | २४६ | ५ |
| इपुधि | १३३ | ८८ | उ | २४८ | १८ | उताहो | २४६ | ५ |
| इट } | ११२ | २८ | उक्त | १८३ | १०७ | उत्क | १६८ | ८ |
| | १४९ | ५७ | उक्ति | २६ | १ | उत्कट | ७२ | १३४ |
| इटकापथ | ७७ | १६५ | उक्थ | २६० | ३० | उत्कण्ठा | १७१ | २३ |
| इटगन्ध | २५ | ११ | उक्षन् | १४९ | ५९ | उत्कार | ३४ | २९ |
| इटार्थोद्युक्त | १६८ | ९ | उखा | १४४ | ३१ | उत्कार्ष | ८४ | ४२ |
| इटि | २०१ | ३९ | उख्य | १४७ | ४५ | उत्कर्ष | १८७ | ११ |
| इप्वास | १३२ | ८३ | उय } | ६ | ३४ | उत्कलिका | ३४ | २९ |
| ई | | | | उय | ३३ | २० | उत्कार | १९१ |
| ईक्षण | १०० | ९३ | उयगंधा } | १५९ | २ | उत्क्रोश | २१ | २३ |
| ईक्षणिका | ८८ | २० | | उयगंधा | ६७ | १०२ | उत्तंस | २३९ |
| ईडित | १८४ | ११० | उच्च } | ७४ | १४५ | उत्त | १८३ | १०५ |
| ईति | १०७ | ६८ | | उच्च | १७८ | ७० | उत्तम | ९५ |
| ईणि | १०५ | ५६ | उच्चटा | ७६ | १६० | उत्तम | १७६ | ५७ |
| ईरित | १८० | ८७ | उच्चण्ड | १८० | ८३ | उत्तमर्ण | १३९ | ५ |
| ईर्म | ९३ | ५४ | उच्चार | ९६ | ६७ | उत्तमा | ८५ | ४ |
| ईर्प्या | ३४ | २४ | उच्चावच | १८० | ८३ | उत्तमाङ्ग | १०० | ९५ |
| ईरित | १८४ | १०९ | उच्चैःश्रवत् | ८ | ४८ | उत्तर } | २७ | १० |
| ईली | १३४ | ९१ | उच्चैर्घुट | २८ | १२ | | २३२ | १९० |
| ईश } | ६ | ३३ | उच्चैस् | २४८ | १७ | उत्तरा | १२ | २ |
| | १२ | ३ | उच्च्य | ५५ | १० | उत्तरासङ्ग | १०४ | ११७ |
| ईशान | ६ | ३२ | उच्च्य | ५५ | १० | उत्तरीय | १०४ | ११८ |
| ईशित | १६९ | १० | उच्चित } | १७८ | ७० | उच्चा | ४० | १५ |
| ईशार } | ६ | ३२ | | उच्चासन | २१० | ८५ | उत्तानशया | ९१ |
| | १६९ | १० | उज्ज्वल | १३७ | ११५ | उत्थान | २१७ | ११८ |
| ईशरी | ७ | ३८ | उज्ज्वल | ३६ | १७ | उत्थित | ३६ | ३८ |
| ईश | ३४७ | ८ | उज्ज्वल | १३८ | २ | उद्धव | २१० | ८५ |
| ईशित | १०५ | ३८ | उज्ज्वलशिल | १३८ | २ | उपतितृ | १७२ | २९ |
| ईशित | २५ | १३ | उज्ज्वल | ४९ | ६ | उत्पत्ति | २२ | ३० |
| | | | उज्ज्वल | १५ | २१ | उत्पत्तिणु | १७२ | २९ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-------------|---------|-------|--------------|---------|-------|-----------|---------|--------|
| उत्पन्न | २१० | ८५ | उदधित् | १४८ | ५३ | उद्धृत | १८१ | ९० |
| उत्पल } | ४४ | ३७ | उदात्त | २६ | ४ | उद्भव | २२ | ३० |
| | ७१ | १२६ | उदान | १० | ६७ | उद्भिज्ज | १७५ | ५१ |
| उत्पलशारिवा | ६९ | ११२ | उदार } | १६८ | ८ | उद्भिद् | १७५ | ५१ |
| उत्पात | १३७ | १०९ | उदासीन | २३२ | १९२ | उद्भिद | १७५ | ५१ |
| उत्फुल्ल | ५८ | ७ | उदाहार | ११९ | १० | उद्भ्रम | १८७ | १२ |
| उत्स | ५२ | ५ | उदाहर | २७ | ९ | उद्धृत | १८१ | ८९ |
| उत्सर्जन | ११३ | २९ | उदित | १८३ | १०७ | उद्यम | १८७ | ११ |
| उत्सव } | ३६ | ३८ | उदीची | १२ | २ | उद्यान } | ५८ | ३ |
| | २३५ | २०९ | उदीच्य } | ४६ | ७ | | २१७ | ११७ |
| उत्सादन | १०५ | १२१ | उदुम्बर } | २३२ | १९० | उद्युक्त | १६८ | ९ |
| उत्साह } | ३४ | २९ | उदुम्बर | ५७ | २२ | उद्योग | २६० | ३३ |
| | १२१ | १९ | उदुम्बरपर्णा | १५६ | ९७ | उद्ग | ४१ | २० |
| उत्साहन | २१६ | ११५ | उदुम्बरपर्णा | ७३ | १४४ | उद्गर्तन | १०५ | १२१ |
| उत्साहवर्धन | ३३ | १८ | उदुखल | १४३ | २५ | उद्गन्त | १८२ | ३६ |
| उत्सुक | १६८ | ९ | उद्गत | १८२ | ९७ | उद्गासन | १३७ | ११५ |
| उत्सृष्ट | १८३ | १०७ | उद्गम | २१७ | ११८ | उद्गाह | ११८ | ५७ |
| उत्सेक | २३५ | २०९ | उद्गमनीय | १०३ | ११२ | उद्देश | ७७ | १६९ |
| उत्सेध } | ५५ | १० | उद्गाढ | ११ | ७० | उद्देश } | १८७ | १२ |
| | २१३ | ९६ | उद्गातृ | ११० | ४७ | उद्देश | ७९ | १२ |
| उदक् | २४९ | २३ | उद्गार | १९१ | ३७ | उद्गत | १७८ | ७० |
| उदक } | ३८ | ८ | उद्गीथ | २५६ | १९ | उद्गतानत | १७८ | ६९ |
| | २५७ | २२ | उद्गूर्ण | १८० | ८९ | उद्गति | २१३ | ९६ |
| उदन्त्या | ८८ | २१ | उद्ग्राह | १९१ | ३७ | उद्गद | २१० | ८५ |
| उदम | १७८ | ७० | उद्ग | २२ | २७ | उद्गय | १८७ | १२ |
| उदज | १९१ | ३९ | उद्घन | १९१ | ३८ | उद्गाय | १८७ | १२ |
| उदधि | ३८ | १ | उद्घाटन | १६३ | २७ | उद्गन्त } | ७४ | ७७ |
| उदन्त | २७ | ७ | उद्घात | १८९ | २६ | | ९८ | ६० |
| उदन्त्या | १४९ | ५५ | उद्धान | १२२ | २६ | उ मदिष्णु | १७१ | २३ |
| उदन्त्यत् | ३८ | १ | उद्दाल | ५८ | ३४ | उन्मनस् | १६८ | ८ |
| उदपान | ८२ | २६ | उद्दित | १८१ | ९५ | उन्माय } | १३७ | ११५ |
| उदय | ५२ | २ | उद्ग्राय | १३७ | १११ | | १६३ | २६ |
| उदर | ९७ | ७७ | उद्दय | ३६ | ३८ | उन्माद } | ३४ | २६ |
| उदके | १०३ | २९ | उद्दय | ३६ | ३८ | | १७१ | २३ |
| उदधसित | ४९ | ४ | उद्दा | १४४ | २९ | उन्मादन | ९८ | ६० |
| | | | उद्दार | १३९ | ८ | उपकण्ठ | १७८ | ६७ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|------------|---------|--------|-------------|---------|--------|----------------|---------|--------|
| उपकारिका | ५० | १० | उपभृत् | ११२ | २५ | उपस्थ | ९७ | ७५ |
| उपकार्या | ५० | १० | उपभोग | १८८ | २० | उपस्पर्श | ११४ | ३६ |
| उपकुञ्चिका | ७१ | १२५ | उपमा | १६४ | ३६ | उपहार | १२३ | २८ |
| | १४५ | ३७ | उपमातृ | २२९ | १७६ | | २३३ | १९५ |
| उपकुल्या | ६७ | ९६ | उपमान | १६४ | ३६ | उपहर | २३० | १८३ |
| उपक्रम | ११० | १३ | उपयम | ११८ | ५६ | उपांशु | १२२ | २३ |
| | २२२ | १३९ | उपयाम | ११८ | ५७ | उपाकरण | ११५ | ४१ |
| | १८९ | २६ | उपरक्त | १९ | १० | उपाकृत | ११२ | २५ |
| उपक्रोश | २८ | १३ | | १७४ | ४३ | उपात्यय | ११४ | ३७ |
| उपगत | १८३ | १०९ | उपरक्षण | १२४ | ३३ | | १९० | ३३ |
| उपगूहन | १९० | ३० | उपराग | १९ | ९ | उपादान | १८७ | १६ |
| उपग्रह | १३८ | ११९ | उपराम | १९१ | ३८ | उपाधि | ३४ | २८ |
| उपग्राह्य | १२३ | २८ | उपरि | २३२ | १८३ | | १६९ | १२ |
| उपग्न | १८८ | १९ | उपल | ५२ | ४ | उपाध्याय | १०९ | ७ |
| उपचरित | १८३ | १०२ | उपलब्धार्था | २६ | ५ | उपाध्याया | ८७ | १४ |
| उपचाय्य | १११ | २० | उपलब्धि | २३ | १ | उपाध्यायानी | ८७ | १५ |
| उपचित | १८० | ८९ | उपलम्भ | १८९ | २७ | उपाध्यायी | ८७ | १४ |
| उपचित्रा | ६६ | ८७ | उपला | २३३ | १९९ | | ८७ | १५ |
| उपजाप | १२२ | २१ | उपवन | ५३ | २ | उपानह | १६३ | ३१ |
| उपज्ञा | ११० | १३ | उपवर्तन | ४६ | ८ | उपाय (चतुष्टय) | १२१ | २० |
| उपतप्त | १८७ | १४ | उपवास | ११४ | ३८ | उपायन | १२३ | २८ |
| उपताप | ९३ | ५१ | उपविषा | ६७ | ९९ | उपालम्भ | २८ | १४ |
| उपत्यका | ५३ | ७ | उपवीति | ११६ | ५० | उपावृत्त | १२७ | ५० |
| उपदा | १२३ | २८ | उपशल्य | ५२ | २० | उपासंग | १३३ | ८८ |
| उपधा | १२२ | २१ | उपशाय | १९० | ३२ | उपासन | १३३ | ८६ |
| | २२२ | १३९ | उपश्रुत | १८३ | १०९ | उपासना | ११४ | ३५ |
| उपधान | १०७ | १३७ | उपसंव्यान | १०४ | १०७ | उपासित | १८३ | १०२ |
| उपधि | ३४ | ३० | उपसंपन्न | ११२ | २६ | उपाहित | १९ | १० |
| उपनाह | ३१ | ७ | | १४७ | ४५ | | १८१ | ९२ |
| उपनिधि | १५३ | ८१ | उपसर | १८९ | २५ | उपेन्द्र | ५ | २० |
| उपनिषद् | २१२ | ९३ | उपसर्ग | १३७ | १०९ | उपोदिका | ७५ | १५७ |
| उपनिष्कर | ४८ | १८ | उपसर्जन | १७७ | ६० | उपोद्घात | २७ | ९ |
| उपन्यास | २७ | ९ | उपसर्या | १५१ | ७० | उपकृष्ट | १४० | ८ |
| उपपत्ति | ९० | ३५ | उपसूर्यक | १७ | ३२ | उभयद्युस | २४९ | २१ |
| उपवर्ह | १०७ | १३७ | उपस्कार | १४५ | ३५ | उभयेद्युस् | १४९ | २१ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|------------|---------|-------|------------|---------|-------|-------------|---------|-------|
| उमा | ७ | ३८ | उपर्वुध | ९ | ५७ | ऊर्ध्वजानु | ९२ | ४७ |
| उमापति | १४२ | २० | उपस् | १७ | २ | ऊर्ध्वजु | ९२ | ४७ |
| उर स्रजिका | ६ | ३६ | उपा | २४८ | १८ | ऊर्म | ३८ | ५ |
| उर | १०१ | १०८ | उपापति | ५ | २८ | ऊर्मिका | १०२ | १०७ |
| उरण | ३७ | ८ | उपित | १८२ | ९ | ऊर्ममत | १७८ | ७१ |
| उरण | १५२ | ७६ | उर | १५२ | ७५ | ऊय | ४६ | ४ |
| उरणाख्य | ७८ | १४७ | उर | २० | १९ | ऊयण | ४६ | ५ |
| उरभ्र | १५२ | ५६ | उय्य | १६२ | १९ | ऊयर | ४६ | ५ |
| उररी | २४५ | २५४ | तण्णारश्मि | २५७ | २२ | ऊयवत् | २० | १८ |
| उररीकृत | १८३ | १०८ | उणिका | १६ | २९ | ऊम्मक | २० | १९ |
| उररुद्ध | १२९ | ६४ | उणीप | १४७ | ५० | ऊम्मागम | २३ | ३ |
| उरस् | ९७ | ७८ | उण्योपगम | २३८ | २२० | ऊह | | |
| उरसिल | १२१ | ७६ | उस | २० | १९ | | | |
| उरस्य | ८२ | २८ | उसा | १७ | ३३ | | | |
| उरस्वत् | १३१ | ७६ | ऊ | १५० | ६६ | ऊ | | |
| उरवुक | ६० | ५१ | ऊत | १८२ | १०१ | ऊक्ष | १५५ | ९० |
| उर्वरा | ४६ | ४ | ऊत | १५२ | ७३ | ऊक्षगन्धिका | १५ | २१ |
| उर्वशी | ९ | ५५ | ऊयस् | २१८ | १२८ | ऊक्ष | ६१ | ५७ |
| उर्वार | ७५ | १५५ | ऊन | २१८ | १८ | ऊक्ष | ७८ | ४ |
| उर्वार | ४५ | ३ | ऊम् | २४८ | १ | ऊक्ष | ६८ | ११० |
| उर्वार | ५५ | ९ | ऊरय | १३८ | १ | ऊक्ष | २६ | ३ |
| उलभ | ७९ | १५ | ऊरी | २४५ | २५४ | ऊक्ष | १४४ | ३२ |
| उलुक | ७९ | २५ | ऊरी | २४५ | २५४ | ऊक्ष | १७८ | ७० |
| उलुखल | १४३ | ३५ | ऊरीकृत | १८३ | १०८ | ऊक्ष | १३२ | ३ |
| उलुखलक | ५८ | ३४ | ऊर | २६ | ७३ | ऊक्ष | १३९ | ३२ |
| उलुपिन् | ४१ | १८ | ऊरज | १३८ | १ | ऊक्ष | २९ | २२ |
| उलुपिन् | २५३ | ८ | ऊरपन् | २६ | ७३ | ऊक्ष | १९० | ३२ |
| उल्का | ९१ | ३८ | ऊर्ज | २० | १८ | ऊक्ष | १९ | १३ |
| उल्का | १७९ | ८१ | ऊर्जस्वल | १३१ | ७५ | ऊक्ष | ८८ | २१ |
| उल्का | १४४ | ३० | ऊर्जस्विन् | १३१ | ७५ | ऊक्ष | २४६ | ३ |
| उल्मुक | ९४ | ५७ | ऊर्जनाभ | ७९ | १३ | ऊक्ष | ११० | १७ |
| उल्लाप | १०४ | १२० | ऊर्जा | २०४ | ५० | ऊक्ष | १८३ | २३ |
| उल्लोच | ३९ | ६ | ऊर्जायु | १५२ | ७६ | ऊक्ष | ६९ | ११० |
| उल्लोच | १६ | २५ | ऊर्जायु | १८८ | १०७ | ऊक्ष | ३ | ८ |
| उल्लोच | ७६ | १६४ | ऊर्ध्वक | ३१ | ५ | ऊक्ष | ८ | ४७ |
| उल्लोच | ६७ | ९७ | | | | ऊक्ष | ७९ | १० |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|--------------|---------|--------|-----------|---------|--------|------------|---------|--------|
| कपभ | ३० | १ | एकाशीला | ६५ | ८५ | ऐरावत | ८ | ४९ |
| | ६९ | ११६ | एड | ९२ | ४८ | | १३ | ३ |
| | १४९ | ५९ | एडक | १५२ | ७६ | | ५९ | ३८ |
| | १७७ | ५९ | एडगज | ७४ | १४७ | ऐरावती | १३ | ९ |
| कपि | ११५ | ४३ | एडमूक | १७३ | ३८ | ऐलविल | ११ | ७३ |
| कण्यकेनु | ५ | २८ | एडूक | ४९ | ४ | ऐलेय | ७० | १२१ |
| कण्यप्रोक्ता | ६६ | ८७ | एण | ७९ | १० | ऐश्वर्य | ७ | ३८ |
| | ६७ | १०१ | एत | २५ | १७ | ऐपमस् | २४९ | २० |
| ए | | | एतर्हि | २४९ | २३ | ओ | | |
| एक | १८० | ८२ | एध | ५५ | १३ | ओकस् | २४० | २३३ |
| | १९५ | १ | एधस् | ५५ | १३ | ओघ | ३१ | ९ |
| एकक | १८० | ८२ | एधा | १८६ | १० | | ८४ | ३९ |
| एकगुरु | १०९ | १२ | एधित | १७१ | ७६ | ओंकार | २६ | ४ |
| एकतान | १७९ | ७९ | एनस् | २१ | २३ | ओजस् | २४० | २३३ |
| एकताल | ३० | ३ | एरण्ड | ६० | ५१ | ओण्डुपुष्प | ६४ | ७६ |
| एकदन्त | ७ | ४१ | एला | ७१ | १२५ | ओतु | ७८ | ६ |
| एकदा | २४९ | २२ | एलापर्णी | ७३ | १४० | ओदन | १४७ | ४८ |
| एकधुर | १५० | ६५ | एलावालुक | ७० | १२१ | ओम् | २४७ | १२ |
| एकधुरावह | १५० | ६५ | एव | | | ओष | १८६ | ९ |
| एकधुरीण | १५० | ६५ | | | | ओषधी | ५४ | ६ |
| एकपदी | ४८ | १५ | | | | ओषधीश | १४ | १४ |
| एकपिङ्ग | ११ | ६९ | | | | ओष्ठ | ९९ | ९० |
| एक यष्टिका | १०२ | १०६ | एवम् | २४४ | २५० | औ | | |
| एकसर्ग | १७९ | ८० | एषणिका | २४७ | १२ | | | |
| एक हायनी | १०२ | ६८ | | २४७ | १५ | औक्षक | १४९ | ६० |
| एकाकिन् | १८० | ८२ | | २४८ | १६ | औचिती | २६२ | ३९ |
| | १७९ | ७९ | ऐ | १६४ | ३२ | औचित्य | २६२ | ३९ |
| एकाग्र | २३२ | १९० | एकागारिक | १६२ | २४ | औत्तानपादि | १५ | २० |
| एकाग्र्य | १७९ | ८० | ऐंगुद | ५६ | १८ | औत्सुक्य | २४० | २२९ |
| एकान्त | ११ | ७० | ऐलविल | ११ | ६९ | औदनिक | १४४ | २८ |
| एकाब्दा | १५१ | ६८ | ऐण | ७८ | ८ | औदरिक | १७० | २१ |
| एकायन | १७९ | ७९ | ऐणेय | ७८ | ८ | औपगवक | १९१ | ३९ |
| एकायनगत | १७९ | ८० | ऐतिह्य | १०९ | १२ | औपयिक | १२२ | २४ |
| एकावलि | १०२ | १०६ | ऐन्द्रियक | १७९ | ७९ | औपवस्त | ११४ | ३८ |
| एकाशील | ६५ | ८१ | ऐरावण | ८ | ४९ | औरभ्रक | १५२ | ७७ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-------------|---------|-------|-----------|---------|-------|------------|---------|-------|
| औरस | ८९ | २८ | कचुग्रा | ६६ | ९२ | कणिका | ६३ | ६६ |
| और्ध्वदेहिक | ११३ | ३० | कचू | ९३ | ५३ | कणिश | २५३ | ८ |
| और्व | ९ | ५९ | कचू | ९४ | ५८ | कणिक | १४२ | २१ |
| औशीर | २३१ | १८५ | कचुक | ३७ | ९ | कटक | २६० | ३२ |
| औषध | ७२ | १३५ | कचुकिन् | १२९ | ६३ | कटकारिका | ६६ | ९३ |
| औष्टक | ९३ | ५० | | ११९ | ८ | कण्टकिफल | ६२ | ६१ |
| | १५२ | ७७ | | ९७ | ७४ | कण्ट | ९९ | ८८ |
| क | | | कट | १२४ | ३७ | कण्टभूषा | १०१ | १०४ |
| क | १९३ | ५ | | १४३ | २६ | कण्डू | ९३ | ५३ |
| कस | १४४ | ३२ | | २०० | ३४ | कण्डूया | ९३ | ५३ |
| कसारानि | ५ | २१ | कटक | ५२ | ५ | कण्डूरा | ६६ | ८६ |
| ककुद | २१२ | ९२ | | १०२ | १०७ | कण्डोल | १४३ | २६ |
| ककुद्मती | ९७ | ७४ | कटभी | ७४ | १५० | कण्डोलवीणा | १६४ | ३२ |
| कुकुन्दरे | ९७ | ७५ | कटम्भरा | ६५ | ८५ | कतृण | ७७ | १६६ |
| ककुम् | १२ | १ | कटाक्ष | १०० | ९४ | कथा | २६ | ६ |
| ककुम् | ३१ | ७ | कटाह | २५७ | २१ | कदध्वन् | ४८ | १६ |
| ककुम् | ६० | ४५ | कटि | ९७ | ७४ | कदम्ब | ५९ | ४२ |
| ककौलक | १०६ | १३० | कटिप्रोथ | ९७ | ७५ | कदम्बक | ८४ | ४० |
| कक्ष | ९८ | ७९ | करी | २६२ | ३८ | | १४२ | १७ |
| | २३८ | २१९ | कटु | २४ | ९ | कदर | ६० | ५० |
| कक्ष्या | १२५ | ४२ | कटुतुम्बी | ६५ | ८६ | कदर्य | १७५ | ४८ |
| कङ्क | ८० | १६ | कटुतुम्बी | ७५ | १५६ | | ६९ | ११३ |
| कङ्कटक | १२९ | ६४ | कटुरोहिणी | ६५ | ८५ | कदली | ७९ | ९ |
| कङ्कण | १०२ | १०८ | कटुफल | ५९ | ४० | कदाचित् | २४६ | ४ |
| कङ्कतिका | १०७ | १३९ | कटुङ्ग | ६१ | ५६ | कटुष्ण | १७ | ३५ |
| कङ्काल | ९६ | ६९ | कटिज्वर | ६५ | ७२ | कटु | ३५ | १६ |
| कङ्कालक | १०६ | १३० | कटिन | १७९ | ७६ | कटु | ३५ | १६ |
| कङ्गु | १४२ | २० | कटिष्क | ७५ | १५४ | कटु | १७३ | ३७ |
| कच | १०० | ९५ | कटोर | १७९ | ७६ | कनक | १५६ | ९४ |
| कघर | १७३ | ५५ | कडङ्गर | १४२ | २२ | कनकाध्यक्ष | ११९ | ७ |
| कचित् | २४८ | १४ | कडम्ब | १४५ | ३५ | कनकालुका | १२३ | ३२ |
| कच | ४७ | १० | कडार | २५ | १६ | कनकाक्षय | ६४ | ७७ |
| कच | ७१ | १२८ | कण | १७७ | ६२ | कनिष्ठ | ९२ | ८३ |
| कचप | ८१ | २१ | कणा | २०३ | ४६ | कनिष्ठा | २०२ | ८१ |
| कचपि | २२० | १३० | | ६७ | ९६ | कनीनिका | ९८ | ८२ |
| | | | | १८५ | ३६ | | १०९ | ९२ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-------------|---------|--------|----------|---------|--------|--------|---------|--------|
| कनीयस् | १७० | ६२ | कपोल | ९९ | ९० | करक | ६२ | ६४ |
| कन्था | २४१ | २३५ | कफ | ९५ | ६२ | करका | १९३ | ६ |
| कन्द | २५३ | ९ | कफिन् | ९४ | ६० | करका | १४ | १२ |
| कन्दर | ७५ | १५७ | कफोणि | ९८ | ८० | करज | ६० | ४७ |
| कन्दर | २६१ | ३५ | कवन्ध | ३८ | ४ | करंजक | ७१ | १२९ |
| कन्दराल | ५२ | ६ | कवरी | १३८ | ११८ | करट | ६० | ४७ |
| कन्दर्प | ६० | ४३ | कम् | १०१ | ९७ | करण | ८१ | २० |
| कन्दली | ५७ | २९ | कमट | ७३ | १३९ | करण | २०० | ३४ |
| कन्दु | ५ | २६ | कमठी | १४६ | ४० | करण्ड | १५९ | २ |
| कन्दुक | ७९ | ९ | कमण्डलु | २४४ | २५० | करतोया | २०४ | ५४ |
| कन्धरा | १४४ | ३० | कमन | २५६ | २१ | करम्भ | २५६ | १८ |
| कन्यकाजात | १०७ | १३८ | कमल | ४१ | २१ | करभूषण | ४३ | ३३ |
| कन्या | ९९ | ८८ | कमला | ४२ | २४ | करमदक | १६४ | ३४ |
| कपट | ८९ | २४ | कमलासन | ११६ | ४६ | करम्भ | १३४ | ९१ |
| कपर्द | ८६ | ८ | कमलोत्तर | २४ | २४ | करम्भ | ९८ | ८१ |
| कपर्दिन् | ३४ | ३० | कमितृ | १५२ | ३ | करम्भ | १५२ | ७५ |
| कपाट | ६ | ३७ | कम्प | ४४ | ४० | करम्भ | १०२ | १०८ |
| कपाल | २३२ | १९४ | कम्पन | ५ | २८ | करम्भ | ६३ | ६७ |
| कपालभृत् | ५१ | १७ | कम्प | ४ | १७ | करम्भ | १४७ | ४८ |
| कपाट | ९६ | ६८ | कम्प | १५८ | १०६ | करम्भ | ९८ | ८३ |
| कपाल | ६ | ३ | कम्प | १७१ | २३ | करम्भ | १३३ | |
| कपि | ७८ | ३ | कम्प | ३६ | ३८ | करम्भ | ६४ | ७७ |
| कपिकच्छु | ६६ | ८७ | कम्प | १७९ | ७४ | करम्भ | ९८ | ८२ |
| कपित्थ | ५७ | २१ | कम्प | १७९ | ७४ | करम्भ | १२४ | ३७ |
| कपिल | २५ | १६ | कम्प | १७९ | ७४ | करम्भ | ४४ | ४३ |
| कपिला | १३ | ४ | कम्प | १०४ | ११६ | करम्भ | ६१ | ५२ |
| कपिला | ६२ | ६३ | कम्प | २३२ | १९४ | करम्भ | २३४ | २०५ |
| कपिला | ७० | १२० | कम्प | १२७ | ५२ | करम्भ | १३६ | १०७ |
| कपिवह्नि | ६७ | ९७ | कम्प | १४५ | ३४ | करम्भ | १२४ | ३६ |
| कपिश | २५ | १६ | कम्प | ४२ | २३ | करम्भ | १२४ | ३४ |
| कपिश | ५७ | २७ | कम्प | २२० | १३३ | करम्भ | ६७ | ९७ |
| कपीहन | ६० | ४३ | कम्प | ९९ | ८८ | करम्भ | १२४ | ३५ |
| कपीहन | ६२ | ६३ | कम्प | १७१ | २४ | करम्भ | ६४ | ७७ |
| कपोत | ७९ | १४ | कम्प | १७१ | २४ | करम्भ | २२८ | १७३ |
| कपोतपालिका | ५१ | १५ | कम्प | २२७ | १६४ | करम्भ | १४८ | ५१ |
| कपोतान्द्रि | ७१ | १२९ | कम्प | | | करम्भ | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|------------|---------|-------|------------|---------|-------|-----------|---------|-------|
| करुणा | { ३३ | १७ | कर्मकर | { १६१ | १५ | कला | { १४ | १५ |
| | { ३३ | १८ | | { १७० | १९ | | { १९ | ११ |
| करेदु | ८० | १९ | कर्मकार | १७० | १९ | | { २३३ | १९८ |
| करेणु | २०४ | ५२ | कर्मक्षम | १७० | १८ | कलाद | १६० | ८ |
| २ करोटि | ९६ | ६९ | कर्मठ | १७० | १८ | कलानिधि | १४ | १४ |
| कक | १२६ | ६६ | कर्मण्या | १६५ | ३८ | कलाप | २१९ | १२९ |
| कर्कटक | ४१ | २१ | कर्मन्दिन् | ११५ | ४२ | कलाय | १४२ | १६ |
| कर्कटी | ७५ | १५५ | कर्मशील | १७० | १८ | कलि | { १३६ | १०५ |
| | { ५९ | ३६ | कर्मशूर | १७० | १८ | | { २३२ | १९६ |
| कर्कण्डू | { २६२ | ३८ | कमसचिव | ११८ | ४ | कलिका | ५६ | १६ |
| | { २४४ | ३१ | कर्मार | ७६ | १६० | कलिङ्ग | { ६३ | ६७ |
| कर्करोदु | ८० | १९ | कमेन्द्रिय | २४ | ८ | | { ८० | १६ |
| | { ७४ | १४६ | कर्प | १५४ | ८६ | कलिव्रुम | ६१ | ५८ |
| कर्कश | { २३७ | २१७ | कर्पक | १३९ | ६ | कलिमारक | ६० | ४८ |
| | { ७५ | १५५ | कर्पफल | ६१ | ५८ | कलिल | १८० | ८५ |
| कर्कोरु | ७५ | १५४ | कर्पु | २३८ | २३२ | कलुप | { २१ | २३ |
| कर्धूर | ७५ | १३५ | फल | ३० | २ | | { ४० | १४ |
| १ कर्धूरक | ७२ | ९४ | कलकल | २९ | २५ | कलेवर | ९६ | ७० |
| कर्ण | १०० | १३ | | { १४ | १७ | कल्क | १९६ | १४ |
| कर्णजलौकस् | ७९ | १२ | कलङ्क | { १२३ | ४ | | { २१ | २१ |
| कर्णधार | ८० | १०३ | कलत्र | १२८ | ३५ | कल्प | { २१ | २२ |
| कर्णवेष्टन | १०१ | १०३ | कलघौत | २०९ | ७६ | | { ११५ | ४० |
| | { १०१ | १५ | कलम्ब | { १३३ | ८७ | कल्पना | { १२५ | ४२ |
| कर्णिका | { १२५ | ५२ | | { १६५ | ३५ | कल्पवृक्ष | ८ | ५३ |
| कर्णिकार | ६२ | ५२ | कलभ | १२४ | ३५ | कल्पान्त | २१ | २२ |
| कर्णीरथ | १२७ | ४७ | कलम | १४३ | २४ | कल्मष | २१ | २३ |
| कर्णेजय | १७५ | ३४ | कलम्बी | ७५ | १५७ | कल्माष | २५ | १७ |
| कर्तरी | १६४ | ९ | कलरव | ७९ | १४ | | { ७० | २ |
| कईम | ३९ | ६८ | कलल | ९१ | ३८ | कल्य | { ९४ | ५७ |
| कर्पठ | १०४ | १०१ | कलविक | ८० | १८ | | { २२५ | १५९ |
| कर्पर | ९६ | १३० | कलश | १४४ | ३१ | कल्या | २९ | १८ |
| कर्परी | १५७ | ६३ | कलशि | ६६ | ९३ | कल्याण | २२ | २५ |
| कर्पूर | १०६ | १७ | कलरस | ८१ | २३ | कक्षोल | ३९ | ६ |
| | { १० | ९४ | कलद | १३६ | १०४ | कथच | १२९ | ६४ |
| कर्पूर | { २५६ | | | | | | | |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|------------|---------------------|----------------|---------------|-----------|----------|---------------|--------------|-----------|
| कवल | १४८ | ५४ | काकाङ्गी | ७० | ११८ | कान्ता | ८५ | ३ |
| कवि | { १६ १०८ | २५ ५ | काकिणी | २५३ | ९ | कान्तार | { ४८ २२८ | २७ १७२ |
| कविका | १२७ | ४९ | काकु | २८ | १२ | कान्तारक | ७६ | १६३ |
| कविय | २६१ | ३५ | काकुद | १०० | ९१ | कान्ति | १४ | १७ |
| कवोष्ण | १७ | ३५ | काकोदुम्बरिका | ५९ | ३९ | कान्दविक | १४४ | २८ |
| कव्य | ११२ | २४ | काकोदर | ६२ | ६१ | कान्दिशीक | १७४ | ४२ |
| कशा | १६३ | ३१ | काकोल | ३७ | ७ | कापथ | ४८ | १६ |
| कशार्ह | १७४ | ४४ | { | ३७ | १० | कापोत | { ८४ १५८ | ४३ १०९ |
| कशिपु | २१९ | १३० | काक्षी | ७१ | १३१ | कापोताञ्जन | १५७ | १०० |
| कशेरु | २५४ | १३ | { | १५७ | ९९ | { | ५ | २६ |
| कशेरुका | ९६ | ६९ | काच | १६३ | ३० | { | ३४ | २८ |
| कश्मल | १३७ | १०९ | { | १९९ | २८ | काम | { १४९ २२१ | ५७ १३८ |
| करय | { १२६ १६५ १७४ | ४७ ४० ४४ | काचस्थाली | ६१ | ५४ | { | १३१ | ७६ |
| कष | १६४ | ३२ | काचित | १८० | ८९ | कामंगामिन् | १७१ | २४ |
| कषाय | { २४ २२४ | ९ १५३ | काञ्ची | १०२ | १०८ | कामन | ५ | २४ |
| कष्ट | { ३८ २०१ | ४ ३९ | काञ्जिक | १४६ | ३९ | कामपाल | १४७ | १३ |
| कस्तूरी | १०६ | १२९ | काण्ड | २०२ | ४३ | कामयितृ | १७१ | २४ |
| कल्हार | ४४ | ३६ | काण्डपृष्ठ | १२९ | ६७ | कामिनी | ८५ | ३ |
| कद्व | ८१ | २२ | काण्डवत् | १३० | ६९ | कामुक | १७१ | २३ |
| काङ्क्षा | ३४ | २७ | काण्डोर | १३० | ६९ | कामुका | ८६ | ९ |
| कांस्यताल | ३० | ४ | काण्डेक्षु | ६८ | १०४ | कामुकी | ८५ | ९ |
| काक | ८१ | २० | कातर | १७१ | २६ | काम्पिल्य | ७४ | १४६ |
| काकचिश्वा | ६७ | ९८ | कात्यायनी | { ७ ८७ | ३८ १७ | काम्बल | १२७ | ५४ |
| काकतिन्दुक | ५९ | ३९ | कादम्ब | ८१ | २३ | काम्बविक | १६० | ८ |
| काकनासिका | ७० | ११८ | कादम्बरी | १६५ | ४० | काम्बोज | १२६ | ४५ |
| काकपक्ष | १०० | ९६ | काम्बिनी | १३ | ८ | काम्बोजी | ७३ | १३८ |
| काकपीलुक | ५९ | ३९ | काद्रवेय | ३६ | ४ | काम्यदान | १८५ | ३ |
| काकमाची | ७५ | १५१ | कानन | ५३ | १ | काय | ९६ | ७१ |
| काकमुहा | ६९ | ११३ | कानीन | ८९ | २४ | काय (तीर्थ) | ११७ | ५१ |
| काकाली | ३० | २ | कान्त | १७५ | ५२ | कायस्था | ६२ | ५९ |
| | | | कान्तलक | ७१ | १२८ | कारण | २२ | २८ |
| | | | | | | कारण्य | ३७ | ३ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-------------|---------|-------|---------------|---------|-------|-------------|---------|-------|
| कारणिक | १६८ | ७ | कालकूट | ३७ | १० | काष्ठ | ५५ | १३ |
| कारण्डव | ८३ | ३४ | कालखण्ड | ९५ | ६६ | काष्ठकुहाल | ४० | १३ |
| कारम्भा | ६१ | ५६ | कालधर्म | १३८ | ११६ | काष्ठतन्त्र | १६० | ९ |
| कारयो | ६८ | १११ | कालपृष्ठ | १३२ | ८३ | काष्ठा | १२ | १ |
| | ७५ | १५२ | कालमेशिका | ६६ | ९० | | १९ | ११ |
| | १४५ | ३७ | कालमेषिका | ६८ | १०९ | | २०१ | ४१ |
| | १४६ | ४० | कालमेषी | ६७ | ९६ | | ३९ | ११ |
| कारवेल्ल | ७५ | १५४ | कालशेय | १४८ | ५३ | काष्ठीला | ६९ | ११३ |
| कारा | १३८ | ११९ | कालसूत्र | ३७ | २ | कास | ९३ | ५२ |
| कारिका | १९५ | १५ | कालस्कन्ध | ५९ | ३८ | कासमर्द | २५६ | १९ |
| कारीय | १९२ | ४३ | | ६३ | ६८ | कासर | ७८ | ४ |
| काह | १५९ | ५ | | ६६ | ९४ | कासार | ४२ | २८ |
| कारुणिक | १६९ | १५ | | १४५ | ३७ | कासू | २०७ | ६६ |
| कारुण्य | ३३ | १८ | काला | ६८ | १०९ | किवदन्ती | २७ | ७ |
| कारोत्तर | १६५ | ४३ | कालागुर | १०५ | १२७ | किशार | १४२ | २१ |
| कार्तस्वर | १५६ | ९५ | कालानुसार्य | १०५ | १२६ | | २२७ | १६३ |
| कार्तान्तिक | १२० | १४ | कालायस | १५६ | ९८ | | ५७ | २९ |
| कार्तिक | २० | १७ | कालिका | १९५ | १५ | | ८० | १६ |
| | २० | १८ | कालिन्दी | ४३ | ३२ | किंकर | १६१ | १७ |
| | ७ | ४१ | कालिन्दीभेदन | ५ | २४ | किंकिणी | १०२ | ११० |
| | १०३ | १११ | काली | ७ | ३८ | किंचित् | २४७ | ८ |
| कार्पास | २६१ | ३५ | कालीयक | १०५ | १२६ | किचुलक | ४१ | २२ |
| | ६९ | ११६ | कालेयक | ६७ | १०१ | किजलक | ४४ | ४३ |
| कार्पासी | १७० | १८ | काल्यक | ७२ | १३५ | किटि | ७८ | २ |
| कार्म | १८६ | ४ | काल्या | १५१ | ७० | किट्ट | ९५ | ६५ |
| कार्मण | १६२ | ८३ | कार्वाचक | १२९ | ६६ | किण | २५६ | १८ |
| कार्मुक | १५५ | ८८ | कावेरी | ४३ | ३५ | किणिही | ६६ | ८९ |
| कार्यापण | १५५ | ८८ | काव्य | १६ | २५ | किण्व | १६५ | ४२ |
| कार्यक | ६० | ४४ | काश | ७६ | १६२ | कितव | ६४ | ७७ |
| कार्य | १० | ६२ | काश्मरी | ५९ | ३५ | | १६६ | ४४ |
| | १७ | १ | काश्मर्य | ५९ | ३६ | | ३ | ११ |
| | २५ | १४ | काश्मीर | ७४ | १४५ | | ११ | ७४ |
| काल | २३२ | १९४ | काश्मीरजन्मन् | १०५ | १२४ | किन्नर | ११ | ७२ |
| कालक | ९२ | ४९ | काश्यपि | १७ | ३२ | किम् | २४४ | २५१ |
| कालकाण्टक | ८१ | २१ | काश्यपी | ४५ | २ | | २४६ | ५ |
| | | | | | | किमु | २४६ | ५ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|------------|---------|--------|----------------|---------|--------|------------|---------|--------|
| किमुत | २४६ | २ | कुकूल | २३४ | २०३ | कुडेरक | ६५ | ७९ |
| | २४६ | ५ | कुकुट | ८० | १७ | कुडंगक | २५५ | १७ |
| किम्पचान | १७५ | ४८ | कुकुभ | ८३ | ३५ | कुडव | १५५ | ८९ |
| किम्पुरुष | ११ | ७४ | कुकुर | ७१ | १३२ | कुडमल | ५६ | १६ |
| किरण | १७ | ३३ | | १६२ | २१ | कुडय | ४९ | ४ |
| किरात | १६२ | २० | कुक्षि | ९७ | ७७ | कुणप | १३८ | ११८ |
| किराततिक्त | ७३ | १४३ | कुक्षिभरी | १७० | २१ | कुणि | ७१ | १२८ |
| किरि | ७८ | २ | कुंकुम | १०२ | १२३ | | ९२ | ४८ |
| किरीट | १०१ | १०२ | कुच | ९७ | ७७ | कुण्ठ | १७० | १७ |
| किर्मीर | २५ | १७ | कुचन्दन | १०६ | १३२ | कुण्ड | ९० | ३६ |
| किल | २४५ | २५४ | कुचर | १७३ | ३७ | | १४४ | ३१ |
| किलास | ९३ | ५३ | कुचाय | ९७ | ७७ | कुण्डल | १०१ | १०३ |
| किलासिन् | ९४ | ६१ | कुंचित | १७८ | ७१ | कुण्डलिन् | ३७ | ७ |
| किलिंजक | १४३ | २६ | कुज | १६ | २५ | कुण्डी | ११६ | ४६ |
| किल्विष | २१ | २३ | कुंज | ५३ | ८ | कुतप | ११३ | ३१ |
| | २३८ | २२३ | | १९९ | ३१ | कुतुक | ३५ | ३१ |
| किशोर | १२६ | ४६ | कुंजर | १२४ | ३४ | कुतुप | १४५ | ३३ |
| किष्कु | १९३ | ७ | | १७७ | ५९ | कुतू. | १४५ | ३३ |
| किसलय | ५५ | १४ | कुंजराशन | ५७ | २० | कुतूहल | ३५ | ३१ |
| कीकस | ९६ | ६८ | कुंजल | १४६ | ३९ | कुत्सा | २८ | १३ |
| कीचक | ७६ | १६१ | कुट | ५४ | ५ | कुत्सित | १७६ | ५४ |
| कीनाश | २३६ | २१५ | कुटक | १४४ | ३२ | कुथ | ७७ | १३६ |
| कीर | ८१ | २१ | कुटज | १४१ | १३ | | १२५ | ४२ |
| कीर्ति | २७ | ११ | कुटन्नट | ६३ | ६७ | कुहाल | ५७ | २२ |
| कील | ९ | ६० | | ६१ | ५७ | कुनटी | १५८ | १०८ |
| | २३३ | १९७ | कुटिल | ७१ | १३१ | कुनाशक | ६६ | ९१ |
| कीलक | १५२ | ७३ | कुटी | १७८ | ७१ | कुन्त | १३४ | ९३ |
| कीलाल | ३८ | ३ | | ४९ | ६ | कुन्तल | १०० | ९५ |
| | २३३ | २०० | कुटुम्बव्यापृत | २६२ | ३८ | कुन्द | ६४ | ७३ |
| कीलित | १७४ | ४२ | कुटुम्बिनी | १६९ | ११ | | ७० | १२१ |
| कीश | ७८ | ३ | कुडनी | ८५ | ६ | | २५६ | १९ |
| कु | ४५ | ३ | | ८८ | १९ | कुन्दुरु | ७० | १२१ |
| | २४२ | २४० | कुडिम | २६१ | ३४ | कुन्दुरुकी | ७० | १२४ |
| कुकर | ९२ | ४८ | कुवर | १५२ | ७४ | कुपूय | १७६ | ५४ |
| कुकुन्दर | ९७ | ७५ | कुठार | १३४ | ९२ | कुप्य | १५५ | ९१ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-------------|---------|-------|----------------|---------|-------|-------------|---------|-------|
| कुचेर | { ११ | ७१ | कुलक | { ५९ | ३९ | कुसीद | १३९ | ४ |
| | { १२ | ३ | | { १५९ | ५ | कुसीदिक | १३९ | ५ |
| कुचेरक | ७१ | १२७ | कुलटा | ८६ | १० | कुसुम | ५६ | १७ |
| कुचेराक्षी | ६१ | ५५ | कुलत्तिका | १५७ | १०२ | कुसुमाजा | १५७ | १०३ |
| कुञ्ज | ९२ | ४८ | कुलपालिका | ८६ | ७ | कुसुमेपु | ५ | २७ |
| कुमार | { ७ | ४३ | कुलभट्टिन् | १५९ | ५ | कुसुम्भ | { १५८ | १०६ |
| | { ३२ | १२ | कुलसभ्य | १०८ | २ | | { २२१ | १३६ |
| कुमारक | ५७ | २५ | कुलखी | ८६ | ७ | कुसृति | ३४ | ३० |
| कुमारी | { ६४ | ७३ | कुलप | ८३ | ३७ | कुस्तुम्बुर | १४५ | ३८ |
| | { ८६ | ८ | कुलाल | १६० | ६ | कुहा | ११७ | ५३ |
| कुमुद | { १३ | ३ | कुलाली | १५७ | १०२ | कुहर | ३६ | १ |
| | { ४४ | ३७ | कुलिश | ८ | ५० | कुहू | १९ | ९ |
| कुमुदमाय | ४६ | ९ | कुली | ६६ | ९८ | कुक्कुद | १६९ | १४ |
| कुमुदवान्धय | १४ | १३ | कुलीन | १०८ | ३ | | { ५२ | १ |
| कुमुदिका | ५९ | ८० | कुलीर | ८१ | २१ | कूट | { ८४ | ८२ |
| कुमुदिनी | ४४ | ३९ | कुलमाप | { १०२ | १८ | | { २०१ | ३७ |
| कुमुद्वर | ८६ | ९ | | { २५७ | २१ | कूटयन्त्र | १६३ | २६ |
| कुमुद्वती | ४८ | ३८ | कुलमापामिपुत्र | १८६ | ३९ | कूटशाल्मलि | ६० | ४७ |
| कुम्भा | ११० | १८ | कुल्य | ९६ | ६८ | कूटस्थ | १७८ | ७३ |
| | { १२४ | ३७ | कुल्या | ८३ | ३४ | कृप | ८२ | २६ |
| कुम्भ | { ५८ | ३८ | कुनल | ५९ | ३६ | | { ३९ | १० |
| | { २२० | १३४ | कुनलय | ४४ | ३७ | कृपक | { ८० | १२ |
| कुम्भकार | १५९ | ६ | कुवाद | १७३ | ३७ | | { ९७ | ७५ |
| कुम्भसभ्य | १५ | २० | कुमिन्द | १६० | ६ | कृवर | १०८ | ५७ |
| कुम्भिका | ४८ | ३८ | कुपेणी | ४० | १६ | कृर्व | १०० | ९२ |
| कुम्भी | ५९ | ४० | कुश | { ७७ | १६६ | कृर्वशीप | ७३ | १४२ |
| कुम्भीर | ४१ | २१ | | { २३७ | २१६ | कृर्विका | १४६ | ८४ |
| कुम्भक | ७८ | ८ | | { २० | २६ | कृर्वी | ३५ | ३३ |
| कुम्भक | १६२ | २८ | कुशल | { १६८ | १ | कृर्वर | ९८ | ८० |
| कुम्भक | ६४ | ७४ | | { २३८ | २०१ | कृर्वसक | १०८ | ११८ |
| कुम्भक | ६८ | ७८ | कुशी | १५७ | ९९ | कृर्व | ८१ | २१ |
| कुम्भक | ८१ | २३ | कुशील | १६१ | १० | कृर्व | ३९ | ७ |
| कुम्भक | ७६ | १५९ | कुशील | ८८ | १० | कृर्व्याणक | ७५ | १५५ |
| कुम्भक | १५८ | ८६ | कुशील | { ७१ | १०६ | कृर्व्याण | ८० | १९ |
| कुम्भक | { ८८ | ८१ | कुशील | { ९३ | ८१ | कृर्व्याण | ७९ | १० |
| कुम्भक | { १०७ | १ | कुशील | { २६१ | ३४ | कृर्व्याण | ८० | १७ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-------------|---------|--------|---------------|---------|--------|--------------|---------|--------|
| कुकाटिका | ९९ | ८८ | कुपीवल | १३९ | ६ | केशिक | ९२ | ४५ |
| कुच्छ | ३८ | ४ | कुष्ट | १४० | ८ | केशिन् | ९२ | ४५ |
| कृत | १२७ | ५२ | कृष्टि | १०८ | ६ | केशिनी | ७१ | १२६ |
| कृतपुङ्ख | २०९ | ७७ | कुष्ण | ४ | १८ | केसर | ४४ | ४३ |
| कृतमाल | ११३ | ६८ | कुष्ण | २५ | १४ | केसर | ५७ | २५ |
| कृतमुख | ५७ | २४ | कुष्णपाकफल | १४५ | ३६ | केसरिन् | ६२ | ६५ |
| कृतलक्षण | १६८ | ४ | कुष्णफला | ६३ | ६७ | केसरिन् | ७८ | १ |
| कृतसापलिका | १६९ | १० | कुष्णफला | ६७ | ९६ | कैटभजित् | ५ | २२ |
| कृतहस्त | ८६ | ७ | कुष्णभेदी | ६६ | ८६ | कैडर्य | ५९ | ४० |
| कृतान्त | १३० | ६८ | कुष्णला | ६७ | ९८ | कैतव | ३४ | ३० |
| कृताभिषेका | १० | ६६ | कुष्णलोहित | २५ | १६ | कैतव | १६६ | ४५ |
| कृतिन् | २०६ | ६४ | कुष्णवर्मन् | ९ | ५७ | कैदारक | १४१ | ११ |
| कृताभिषेका | ८५ | ५ | कुष्णवृन्ता | ६१ | ५५ | कैदारिक | १४१ | ११ |
| कृतिन् | १०८ | ४ | कुष्णसार | ७९ | १० | कैदार्य | १४१ | ११ |
| कृत् | १६८ | ४ | कुष्णा | ९६ | ६७ | कैरव | ४४ | ३७ |
| कृत् | १८३ | १०३ | कृष्णिका | १४२ | १९ | कैलास | ११ | ७४ |
| कृत्ति | ११६ | ४७ | केकर | ९२ | ४९ | कैवर्त | ४० | १५ |
| कृत्तिवासस् | ६ | ३३ | केका | ८२ | ३१ | कैवर्तमुस्तक | ७ | १३२ |
| कृत्या | २२५ | १५८ | केकिन् | ८२ | ३० | कैवल्य | २४ | ६ |
| कृत्रिमधूपक | १०५ | १२८ | केतकी | ७७ | १६० | कैशिक | १०० | ९६ |
| कृत्स्न | १७७ | ६५ | केतन | १३५ | ९९ | कैश्य | १०० | ९६ |
| कृपण | १७५ | ४८ | केतन | ११४ | २१६ | कोक | ७८ | ७ |
| कृपा | ३३ | १८ | केतु | २०६ | ६० | कोक | ८१ | २२ |
| कृपाण | १३३ | ८९ | केदर | २५७ | २० | कोकनद | ४४ | ४२ |
| कृपाणी | १६४ | ३४ | केदार | १४१ | ११ | कोकनदच्छवि | २५ | १५ |
| कृपालु | १६९ | १५ | केनिपातक | ४० | १३ | कोकिल | ८० | १९ |
| कृपोटयोनि | ९ | ५६ | केयूर | १०२ | १०७ | कोकिलाक्ष | ६८ | १०४ |
| कृमिकोशोत्थ | १०३ | १११ | केलि | ३५ | ३२ | कोटर | ५५ | १३ |
| कृमिघ्न | ६८ | १०६ | कवल | २३४ | २०३ | कोटवी | ८७ | १७ |
| कृश | १७७ | ६१ | केश | १०० | ९५ | कोटि | १३२ | ८४ |
| कृशानु | ९ | ५७ | केशाम्बुनामन् | ७० | १२२ | कोटि | १३४ | ९३ |
| कृशानुरेतस् | ६ | ३५ | केशपाशी | १०१ | ९७ | कोटि | २०१ | ३८ |
| कृशाश्विन् | १६१ | १२ | केशव | ४ | १८ | कोटिवर्षा | ७२ | १३३ |
| कृपि | १०८ | २ | केशव | ९२ | ४५ | कोटिश | १४१ | १२ |
| कृपिक | १४१ | १३ | केशवेश | १०१ | ९७ | कोट्टार | २५६ | १८ |
| | १३९ | ६ | | | | | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|----------|---------|-------|------------|---------|-------|------------|---------|-------|
| कोठ | ९३ | ५४ | कौटिक | १६१ | १४ | कयविक्रयिक | १५३ | ७८ |
| कोण | ३१ | ६ | कौणप | १० | ६२ | कयिक | १५३ | ७९ |
| | १३४ | ९३ | कौतुक | ३५ | ३१ | कथ्य | १५३ | ८१ |
| कोदण्ड | १३२ | ८३ | कौतूहल | ३५ | ३१ | कव्य | ९५ | ६३ |
| कोद्व | १४२ | १६ | कौद्वीण | १४० | ८ | कव्याद् | १० | ६२ |
| कोप | ३४ | २६ | कौन्तिक | १३० | ७१ | कव्याद | १० | ६२ |
| कोपना | ८५ | ४ | कौन्ती | ७० | १२० | कायिक | १५३ | ७९ |
| कोपिन् | १७२ | ३२ | कौपीन | २१७ | १२२ | क्रिमि | ७९ | १३ |
| कोमल | १७९ | ७८ | कौमुदी | १४ | १६ | क्रिया | २६ | २ |
| कोषट्टिक | ८३ | ३५ | कौमोदकी | ५ | ३० | क्रियावत् | २२५ | १५७ |
| कोरक | ५६ | १६ | कौलटिनेय | ८९ | २७ | | १७० | १८ |
| कोरङ्गी | ७१ | १२५ | कौलटेय | ८९ | २७ | कीडा | ३५ | ३२ |
| कोररूप | १४२ | १६ | | ८९ | २६ | | ३५ | ३३ |
| | | ३९ | कौलटेर | ८९ | २६ | कुड् | ८१ | २२ |
| कोल | ५९ | ३६ | कौलीन | २१६ | ११६ | कुध् | ३४ | २६ |
| | ७८ | २ | कौलेयक | १६२ | २१ | कुड | ३५ | ३५ |
| कोलक | १०६ | १२९ | कौशिक | ५८ | ३४ | कू | १७५ | ४७ |
| | १४५ | ३६ | | १९४ | १० | कू | २३२ | १९१ |
| कोलदल | ७१ | १३० | कौशेय | १०३ | १११ | केतव्य | १७९ | ७६ |
| कोलम्बक | ३१ | ७ | कौस्तुभ | ५ | ३० | केय | १५३ | ८१ |
| कोलनक्षी | ६७ | ९७ | ककच | १६४ | ३५ | | १५३ | ८१ |
| कोला | ६७ | ९७ | | ६४ | ७७ | कोड | ७८ | २ |
| कोलाहल | २९ | २५ | ककर | ८० | १९ | | ९७ | ७७ |
| कोलि | ५९ | ३६ | कतु | ११० | १३ | कोध | ३४ | २६ |
| कोविद | १०८ | ५ | कतुध्वसिन् | ६ | ३६ | कोधन | १७२ | ३२ |
| कोविदार | ५७ | २२ | कतुमुज् | ३ | -९ | कोशयुग | ४८ | १८ |
| कोशफल | १०६ | ३० | कथन | १३७ | ११५ | कोष्ट | ७८ | ५ |
| कोशातकी | १९३ | ८ | | १३६ | १०७ | कोटुविघ्ना | ६६ | ९३ |
| | ८३ | ३७ | कन्दन | २१८ | १२३ | कोटी | ६८ | ११० |
| कोप | १५५ | ९१ | कन्दित | ३५ | ३५ | कौश्व | ८१ | २२ |
| | २३८ | २२१ | कम् | १५ | ४० | कौश्वदरण | ७ | ४३ |
| कोष्ठ | २०१ | ४० | | ५९ | ४१ | कम् | १८६ | १० |
| कोष्ण | १७ | ३५ | कमुक | ५९ | ४१ | कम्प | १८६ | १० |
| कौकुटिक | १९५ | १७ | | ७७ | १६९ | कम्प | १८३ | १०५ |
| कौक्षेयक | १३३ | ८९ | कमेलक | १५२ | ७५ | कम्प | ९८ | ६० |
| कोटनक्ष | १६० | ९ | | | | मिश्रित | १८२ | ९८ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-------------|---------|--------|-------|---------|--------|------------------------|---------|--------|
| क्रिष्ट | २९ | १९ | क्षय | २१ | २२ | क्षुद्रा | ६६ | ९४ |
| क्षीतक | १८२ | ९८ | क्षय | ९३ | ५१ | क्षुद्राण्डमत्स्यसंघात | २२९ | १७७ |
| क्षीतकिका | ६८ | १०९ | क्षय | १८६ | ७ | क्षुद्राण्डमत्स्यसंघात | ४१ | १९ |
| क्षीव | ६६ | ९४ | क्षय | २२३ | १४५ | क्षुब्ध | १४८ | ५४ |
| क्षीव | ९१ | ३९ | क्षय | ९३ | ५२ | क्षुधाभिजनन | १४२ | १९ |
| क्षीव | २३६ | २१३ | क्षय | १४२ | १९ | क्षुधित | १७० | २० |
| क्षेश | १९० | २९ | क्षय | ९३ | ५२ | क्षुप | ५४ | ८ |
| क्षोम | ९५ | ६५ | क्षय | १८२ | ९७ | क्षुमा | १४२ | २० |
| क्षण | २९ | २४ | क्षय | ३४ | २४ | क्षुर | ६८ | १०४ |
| क्षण | १८६ | ८ | क्षय | १५७ | ९९ | क्षुर | २५७ | २० |
| क्षणन | २९ | २४ | क्षय | ५६ | १६ | क्षुरक | ५९ | ४० |
| क्षयित | १८१ | ९५ | क्षय | ४६ | ४ | क्षुरप्र | २५७ | २० |
| क्षण | २९ | २४ | क्षय | १७४ | ४३ | क्षुरिन् | १६० | १० |
| क्षण | १९ | ११ | क्षय | ४५ | २ | क्षुरिन् | १६१ | १६ |
| क्षण | ३६ | ३८ | क्षय | २०८ | ७० | क्षुरक | १७७ | ६१ |
| क्षण | २०३ | ४७ | क्षय | १८० | ८७ | क्षुरक | १२४ | १० |
| क्षणदा | १८ | ४ | क्षय | १० | ६८ | क्षेत्र | २३० | १८० |
| क्षणन | १३७ | ११४ | क्षय | १७२ | ३० | क्षेत्र | १४१ | ११ |
| क्षणप्रभा | १३ | ९ | क्षय | १८६ | ७ | क्षेत्रज्ञ | २२ | २९ |
| क्षतज | ९५ | ६४ | क्षय | ३८ | ४ | क्षेत्रज्ञ | २०० | ३३ |
| क्षतव्रत | ११७ | ५४ | क्षय | १४८ | ५१ | क्षेत्राजीव | १३९ | ६ |
| क्षत | १२९ | ५९ | क्षय | २३० | १८२ | क्षेपण | १८७ | ११ |
| क्षत | १५९ | ३ | क्षय | १४६ | ४४ | क्षेपणी | ४० | १३ |
| क्षत | २०६ | ६३ | क्षय | ६८ | ११० | क्षेपिष्ठ | १८४ | १११ |
| क्षत्रिय | ११८ | १ | क्षय | ६८ | ११० | क्षेपिष्ठ | २२ | २६ |
| क्षत्रिया | ८७ | १४ | क्षय | ६७ | १०० | क्षेम | ७१ | १२८ |
| क्षत्रियो | ८७ | १५ | क्षय | ६० | ४५ | क्षेम | २६१ | ३४ |
| क्षत्रियाणी | ८७ | १४ | क्षय | ३८ | २ | क्षेत्र | १४१ | ११ |
| क्षपा | १८ | २ | क्षय | १७१ | २३ | क्षोणि | ४५ | २ |
| क्षपाकर | १४ | १५ | क्षय | ९३ | ५२ | क्षोद | १३५ | ९९ |
| क्षम | २२२ | १४२ | क्षय | ९३ | ५२ | क्षोदिष्ट | १८४ | १११ |
| क्षमा | २२२ | १४४ | क्षय | १७५ | ४८ | क्षोम | ५० | १२ |
| क्षमिन् | १७२ | ३१ | क्षय | २२९ | ११७ | क्षौद्र | १०३ | ११३ |
| क्षमिन् | १७२ | ३१ | क्षय | १०२ | ११० | क्षौम | १५८ | १०७ |
| क्षमन् | १७२ | ३१ | क्षय | ४२ | २३ | क्षुत | १०३ | ११३ |
| | | | क्षय | | | क्षुत | १८१ | ९१ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-----------|---------|-------|------------|---------|-------|-----------|---------|-------|
| क्षमा | ४५ | ३ | खरणस | ९२ | ४६ | गङ्गा | ४३ | ३१ |
| क्षमाभूत | ५२ | १ | खरपुष्पा | ७३ | १३९ | गङ्गाधर | ६ | ३६ |
| क्ष्वेड | ११८ | १ | खरमञ्जरी | ६६ | ८९ | गज | १२४ | ३४ |
| क्ष्वेडा | ३७ | ९ | खरा | ६३ | ६९ | गजता | १२४ | ३६ |
| क्ष्वेडित | १३६ | १०७ | खराभा | ६८ | १११ | गजवन्धनी | १२५ | ४३ |
| | २०२ | ४३ | खर्जू | ९३ | ५३ | गजभक्ष्या | ७० | १२३ |
| | २६१ | ३४ | खर्जूर | ७७ | १७० | गजानन | ७ | ३८ |
| क्ष | | | खर्जूरी | १५६ | ९६ | गज्जा | ५० | ८ |
| | १२ | १ | खर्व | ७७ | १७० | गजक | ४० | १७ |
| क्ष | १९६ | १८ | खल | ९२ | ४६ | गडु | २५६ | १८ |
| | २५७ | २२ | खलपू | १७५ | ४७ | गडुल | ९२ | ४८ |
| क्षग | ८२ | ३२ | खलिनी | १७० | १७ | | ८४ | ४० |
| | १३३ | ८६ | खलीन | १९२ | ४२ | गण | १३९ | ८१ |
| | १९७ | १९ | खलु | १२७ | ४९ | | २०३ | ४६ |
| खगेश्वर | ६ | ३१ | खल्या | २४५ | २५५ | गणक | १२० | १४ |
| खजाका | १४५ | ३४ | खात | १९२ | ४२ | गणदेवता | ३ | १० |
| खञ्ज | ९२ | ४९ | खाति | ४२ | २७ | गणनीय | १७७ | ६४ |
| खञ्जन | ८० | १५ | खारी | १८४ | ११० | गणरात्र | १८ | ६ |
| खञ्जरीट | ८० | १५ | खारीक | १५५ | ८८ | गणरूप | ६५ | ८० |
| खट | २५५ | १७ | खारीवाप | १४० | १० | गणहासक | ७१ | १२८ |
| खट्वा | १०७ | १३८ | खिल | १४० | १० | गणाधिप | ७ | ३८ |
| खड्ग | ७८ | ४ | खुर | ४६ | ५ | गणिका | ६३ | ७१ |
| | १३३ | ८९ | | ७१ | १३० | | ८८ | १९ |
| खड्गिन् | ७८ | ४ | खुरणस् | १२७ | ४९ | गणिकारिका | ६३ | ६६ |
| खण्ड | १४ | १६ | खुरणस | ९२ | ४७ | गणित | १७७ | ६४ |
| खण्डपरशु | ६ | ३३ | खेट | ९२ | ४७ | गणय | १७७ | ६४ |
| खण्डविकार | १४६ | ४३ | खेय | १७६ | ५४ | गण्ड | ९९ | ९० |
| खदिर | ६० | ४९ | खेला | ४३ | २९ | | १२४ | ३७ |
| खदिरा | ७३ | १४१ | खोड | ३५ | ३३ | गण्डक | ७८ | ४ |
| खद्योत | ८२ | २८ | ख्यात | ९२ | ४१ | गण्डकारी | ७३ | १४१ |
| खनि | ५३ | ७ | ख्यात | १६८ | ९ | गण्डशैल | ५३ | ६ |
| खनित्र | १४१ | १२ | ख्यातगह्वण | १८१ | ९३ | गण्डाली | ७६ | १५९ |
| खपुर | ७७ | १६९ | ख्याति | १६ | ९८ | गण्डीर | ७५ | १५७ |
| खर | १७ | ३५ | ग | | | गण्डूपद | ४१ | २२ |
| | १५२ | ७७ | | | | गण्डुपदी | ४२ | २४ |
| खरणस् | ९२ | ४६ | गगन | १२ | १ | | | |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|--------------|---------|--------|--------------|---------|--------|---------------|---------|--------|
| गण्डूषा | २५३ | १० | गम्य | १८१ | ९२ | गवय | ७९ | २१ |
| गतनासिक | ९२ | ४६ | गरल | ३७ | ९ | गवल | १५७ | १०० |
| गद | ९३ | ५१ | गरिष्ठ | १८४ | ११२ | गवाक्ष | ५० | ९ |
| गद्य | २६० | ३१ | गरी | ६३ | ६९ | गवाक्षी | ७५ | १५६ |
| गन्त्री | १२७ | ५२ | गरुड | ६ | २९ | गवीश्वर | १४९ | ५८ |
| गन्ध | २४ | ७ | गरुडध्वज | ४ | १९ | गवेधु | १४३ | २५ |
| गन्धक | १५७ | १०२ | गरुडाग्रज | १७ | ३२ | गवेधुका | १४३ | २५ |
| गन्धकुटी | ७० | १२३ | गरुत् | ८३ | ३६ | गवेषणा | ११३ | ३२ |
| गन्धन | २१६ | ११५ | | ६ | ३१ | गवेषित | १८३ | १०५ |
| गन्धनाकुली | ६९ | ११४ | गरुत्मत् | ८३ | ३४ | गद्य | १४८ | ५० |
| गन्धफली | ६१ | ५६ | | २०५ | ५८ | गव्या | १४९ | ६० |
| | ६२ | ६४ | गर्गरी | १५२ | ७४ | गव्यूति | ४८ | १८ |
| गन्धमादन | ५२ | ३ | गर्जित | १३ | ८ | गहनं | ५३ | १ |
| गन्धमूली | ७५ | १५४ | | १२४ | ३६ | | १८० | ८५ |
| गन्धरस | १५७ | १०४ | गर्त | ३६ | २ | गहर | ५३ | ६ |
| | ३ | ११ | गर्दभ | १५२ | ७७ | | २३० | १८३ |
| | ९ | ५५ | गर्दभाण्ड | ६० | ४३ | गांगेय | १५६ | ९४ |
| गन्धर्व | ७९ | ११ | गर्धन | १७० | २२ | | २३५ | १५५ |
| | १२५ | ४४ | गर्भ | ९१ | ३९ | गांगेरुकी | ६९ | ११७ |
| | २२० | १३३ | | २२१ | १३५ | गाढ | २१ | ७० |
| गन्धर्वहस्तक | ६० | ५० | गर्भक | १०७ | १३५ | गाणिक्य | ८८ | २२ |
| गन्धवह | १० | ६२ | गर्भागार | ५० | ८ | गाण्डिव | १३२ | ८४ |
| गन्धवहा | ९९ | ८९ | गर्भाशय | ९१ | ३८ | गाण्डीव | १३२ | ८४ |
| गन्धवाह | १० | ६२ | गर्भिणी | ८८ | २२ | गात्र | ९६ | ७० |
| गन्धसार | १०६ | १३१ | गर्भोपधातिनी | १५१ | ६९ | | १२५ | ४० |
| गन्धाश्मन् | १५७ | १०२ | गर्भुत् | ७७ | १६५ | गात्रानुलेपनी | १०६ | ११३ |
| गन्धिनी | ७० | १२३ | गर्व | ३३ | २२ | गान | ३० | २५ |
| गन्धोत्तमा | १६५ | ४० | गर्हण | २८ | १३ | गान्धार | ३० | १ |
| गन्धोली | ८२ | २७ | गर्ह | १७६ | ५४ | गायत्री | ६० | ४९ |
| गभस्ति | १७ | ३३ | गर्हवादिन् | १७३ | ३७ | | १११ | २२ |
| गभीर | ४० | १५ | गल | ९९ | ८८ | गारुत्मत | १५६ | ९२ |
| गम | १३४ | ९५ | गलकम्बल | १५० | ६३ | गार्भिण | ८८ | २२ |
| गमन | १३४ | ९५ | गलन्तिका | १४४ | ३१ | गार्हपत्य | १११ | १९ |
| गम्भारी | ५९ | ३५ | गलित | १८३ | १०४ | गालव | ५८ | ३३ |
| गम्भोर | ४० | १५ | गलोद्देश | १२६ | ४८ | गिर | २६ | १ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-----------|---------|--------|-------------|---------|--------|-----------|---------|--------|
| गिरि | { ५२ | १ | गद | ९६ | ७३ | गृहगोधिका | ७२ | १२ |
| | { १८७ | २१ | गुन्द्र | ७६ | १६५ | गृहपति | १२० | १५ |
| गिरिकर्ण | ६८ | १०४ | गुन्द्रा | { ६१ | ५५ | गृहयालु | १७१ | २७ |
| गिरिका | ७९ | १२ | | { ७६ | १६० | गृहस्थूण | २६० | ३० |
| गिरिज | { १५७ | १०० | गुप्त | { १८० | ८९ | गृहागत | ११३ | ३४ |
| | { १५७ | १०४ | गुप्ति | { १८३ | १०६ | गृहागम | ५३ | १ |
| गिरिमलिका | ६३ | ६६ | गुरण | २०८ | ७४ | गृहावयवी | ५० | १३ |
| गिरिश्वा | ६ | ३३ | गुरु | १८७ | ११ | गृहिन | १०८ | ३ |
| गिरीश | ६ | ३३ | गुरु | { १५ | २४ | गृह्यक | { ८४ | ४३ |
| गिलित | १८४ | ११० | गुर्विणी | { १०९ | ७ | | { १६९ | १६ |
| गीत | ३० | २५ | गुल्फ | ८८ | २२ | गैन्दुक | १०७ | १३८ |
| गीर्ण | १८४ | ११० | | ९६ | ७२ | गैह | ४९ | ४ |
| गीर्ण | १८७ | ११ | | { ५४ | ९ | गैरिक | { ५३ | ८ |
| गीर्षति | १५ | २४ | गुल्म | { ९५ | ६६ | | { १९४ | १२ |
| गीर्वाण | ३ | ९ | | { १३२ | ८१ | गैरेय | १५७ | १०४ |
| गुग्गुलु | ५८ | ३४ | गुल्मिनी | { २२२ | १४२ | | | |
| गुग्गु | १४२ | २१ | गुवाक | ५४ | ९ | गो | { १४९ | ६० |
| गुब्जा | ६७ | ९८ | गुह | ७७ | १६९ | | { १५० | ६६ |
| गुड | २०२ | ४२ | गुह | ७ | ४२ | | { १९८ | २५ |
| गुडपुष्प | ५७ | २७ | गुहा | { ५२ | ६ | गोकण्टक | ६७ | ९९ |
| गुडफल | ५७ | २८ | | { ६६ | ९३ | गोकर्ण | { ७९ | १० |
| गुडा | ६८ | १०५ | गुहा | २२४ | १५४ | | { ९९ | ८३ |
| गुडुची | ६५ | ८२ | गुह्यक | ३ | २१ | गोकर्णा | ६५ | ८४ |
| | { २३ | २९ | गुह्यकेश्वर | ११ | ७१ | गोकुल | १४९ | ५८ |
| | { १२१ | १९ | गूढ | १८० | ८९ | गोक्षुरक | ६७ | ९९ |
| | { १३३ | ८५ | गूढपाद् | ३७ | ७ | गोचर | २४ | ८ |
| गुण | { १४४ | २८ | गूढपुरष | १२० | १३ | गोजिह्वा | ७० | ११९ |
| | { १६३ | २७ | गूथ | ९६ | ६८ | गोडुम्बा | ७५ | १५६ |
| | { २०३ | ४७ | गुन | १८५ | ९६ | गोण्ड | १५६ | १८ |
| गुणवृक्षक | ४० | १२ | गुब्जजन | ७४ | १८८ | | { ५२ | १ |
| गुणित | १८० | ८८ | गृध्रु | १७० | २२ | गोत्र | { १७० | १ |
| गुणितत | १८० | ८९ | गृध्र | ८१ | २१ | | { २३० | १८० |
| गुत्स | १०२ | १०५ | गृध्रसी | २५३ | १० | गोत्रभिद् | ७ | ४५ |
| गुत्सक | ५६ | १६ | गृष्टि | ७५ | १५१ | गोत्रा | { ४५ | ३ |
| गुत्सार्ध | १०२ | १०५ | गृह | { ४९ | ४ | | { १४९ | ६० |
| | | | | { ४९ | ५ | गोदाराण | १४१ | १४ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|------------|---------|--------|-------------|---------|--------|-------------|---------|--------|
| गोदुह् | १४९ | ५७ | गोवन्दनी | ६१ | २५ | ग्रहणीरुज् | ९३ | ५५ |
| गोधन | १४९ | ५८ | गोविन्द | ४ | १९ | ग्रहपति | १६ | ३० |
| गोधा | १३२ | ८४ | गोविन्द | २१२ | ९१ | ग्रहीवृ | १७१ | २७ |
| गोधापदी | ७० | ११९ | गोविप् | १४८ | ५० | ग्राम | ५२ | १९ |
| गोधि | १०० | ९२ | गोशाल | २६३ | ४० | ग्राम | २२२ | १४१ |
| गोधिका | ४१ | २२ | गोशीर्ष | १०६ | १३१ | ग्रामणी | २०३ | ४९ |
| गोधिकात्मज | ७८ | ६ | गोष्ठ | ४७ | १३ | ग्रामतक्ष | १६० | ९ |
| गोधूम | १४२ | १८ | गोष्ठपति | २१९ | १३० | ग्रामता | १९२ | ४३ |
| गोनर्द | ७१ | १३२ | गोष्ठी | ११० | १३ | ग्रामाधीन | १६० | ९ |
| गोनस | ३६ | ४ | गोष्ठीन | ४७ | १५ | ग्रामान्त | ५२ | २० |
| | | | गोष्पद | २१२ | ९४ | ग्रामीणा | ६६ | ९४ |
| गोप | २१९ | ७ | गोसख्य | १४९ | ५७ | ग्राम्य | १९ | १८ |
| | १४९ | २७ | गोस्तन | १०२ | १०५ | ग्राम्यधर्म | ११८ | ५७ |
| | २१९ | १३० | गोस्तनी | ६८ | १०७ | | | |
| गोपति | १५० | ६२ | गोस्थानक | ४७ | १३ | ग्रावन् | ५२ | ४ |
| गोपरस | १५७ | १०४ | गौतम | ४ | १५ | | ५२ | १ |
| गोपानसी | ५१ | १५ | गौधापदी | ७० | ११८ | ग्रास | २१५ | १०६ |
| गोपायित | १८३ | १०६ | गौधार | ७८ | ६ | | १४८ | ५४ |
| गोपाल | १४९ | ५७ | गौधिय | ७८ | ६ | ग्राह | ४१ | २१ |
| गोपी | ६८ | ११२ | गौधिर | ७८ | ६ | | १८६ | ८ |
| | ५१ | १६ | | | ६ | ग्राहिन् | ५७ | २१ |
| गोपुर | ७१ | १३२ | गौर | २५ | १३ | ग्रीवा | ९९ | ८८ |
| | २३० | १८२ | | २५ | १४ | ग्रीष्म | २० | १८ |
| गोप्यक | १६१ | १७ | | २३१ | १८९ | ग्रीव्यक | १०१ | १०४ |
| गोमत् | १४९ | ५८ | गौरी | ७ | ३८ | ग्लस्त | १८४ | १२१ |
| गोमय | १४८ | ५० | | ८६ | ८ | ग्लह | १६६ | ४५ |
| गोमायु | ७८ | ५ | ग्रन्थित | १८० | ८६ | ग्लान | ९४ | ५८ |
| गोमिन् | १४९ | ५८ | ग्रन्थि | ७६ | १६२ | ग्लास्नु | ९४ | ५८ |
| गोरस | १४८ | ५३ | ग्रन्थिक | १५८ | ११० | ग्लौ | १४ | १४ |
| गोर्द | ९५ | ६५ | ग्रन्थिपर्ण | ७१ | १३२ | | | |
| गोल | २५७ | २० | ग्रन्थिल | ५९ | ३७ | | | |
| गोलक | ९० | ३६ | | ६४ | ७७ | | | |
| गोला | १५८ | १०८ | ग्रस्त | २९ | २० | घट | १४४ | ३२ |
| गोलीढ | ५९ | ३९ | | १८४ | १२१ | घटना | १३६ | १०७ |
| | | | | | ९ | घटा | १३६ | १०७ |
| गोलोमी | ६७ | १०२ | ग्रह | १९ | ८ | घटीयन्त्र | १६३ | २७ |
| | ७६ | १५९ | | १८६ | २३६ | घट्ट | २५६ | १८ |
| | १५८ | १११ | | २४१ | | | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|------------|---------|-------|--------------|---------|-------|----------------|---------|-------|
| घण्टापाटलि | ५९ | ३९ | घोर | ३३ | २० | चञ्चु | ६१ | ५१ |
| घण्टापथ | ४८ | १८ | घोष | ५२ | २० | चटक | ८३ | ३६ |
| घण्टारवा | ६८ | १०७ | घोषक | ६९ | ११७ | चटका | ८० | १८ |
| | १३ | ७ | घोषणा | २८ | १२ | चटकाशिरस् | ८० | १८ |
| | ३० | ८ | घ्राण | ९९ | ८९ | चणक | १५८ | ११० |
| घन | ३१ | ९ | घ्राणतर्पण | १८१ | ९० | चण्ड | १४२ | १८ |
| | १३४ | ९१ | घ्रात | २५ | ११ | चण्ड | १७२ | ३२ |
| | १७८ | ६६ | | १८१ | ९० | चण्डा | ७१ | १२८ |
| | २२५ | ११० | च | | | चण्डात | | ७३ |
| घनरस | ३८ | ५ | | | | चण्डातक | | |
| घनसार | १०६ | १३० | च | २५२ | २४१ | चण्डाल | १०४ | ११९ |
| घनाघन | २१५ | २१० | चकोरक | २५६ | ५ | | १५९ | ४ |
| घर्म | ३५ | ३३ | | ८३ | ३५ | | १६२ | १९ |
| घस्मर | १७० | २० | | ८१ | २२ | चण्डालवल्ली | १६४ | ३१ |
| घस | १७ | २ | | १२८ | ५६ | चण्डिका | ७ | ३९ |
| घाटा | ९९ | ८८ | चक्र | १३१ | ७८ | चतु शाल | ४९ | ६ |
| घाण्टिक | १३५ | ९७ | | २३० | १८२ | चतुर | १६२ | १९ |
| घात | १३७ | ११५ | चक्रसारक | ७१ | १२९ | चतुरङ्गुल | ५७ | २३ |
| | १७५ | ४७ | चक्रपाणि | ५ | २० | चतुरानन | ४ | १६ |
| घातुक | १७१ | २८ | चक्रमर्दक | ७८ | १४७ | चतुर्भद्र | ११८ | ५८ |
| घास | ७७ | १६७ | चक्रयान | १२७ | ५१ | चतुर्भुज | ५ | २० |
| घुटिका | ९६ | ७२ | चक्रला | ७६ | १६० | चतुर्वर्ग | ११८ | ५८ |
| घुण | २५६ | १८ | चक्रगार्तिन् | ११८ | २ | चतुष्पथ | ४८ | १७ |
| घूर्णित | १७२ | ३२ | चक्रवर्तिनी | ७५ | १५३ | चतुर्थयणी | १२१ | ६८ |
| | ३३ | १८ | चक्रयाक | ८१ | २२ | | ८० | १३ |
| घृणा | १९० | ३२ | चक्रयाल | १३ | ६ | चत्वर | ११० | १८ |
| | २०४ | ५१ | | ५२ | ७ | चन | २८६ | ३ |
| घृणि | १७ | ३३ | चक्राग्रा | ८१ | २३ | चन्न | १०६ | १३१ |
| | १४८ | ५२ | चक्राग्री | ६६ | ८६ | | १४ | १३ |
| घत | २०९ | ७६ | चक्रिन् | ३७ | ७ | चन्द्र | ७८ | १६ |
| घटि | ७८ | २ | चकीयत् | १५२ | ७७ | | २३० | ८२ |
| घोटक | १२५ | ४३ | चक्षु भ्रमस् | ३७ | ७ | चक्रक | ८२ | ३१ |
| घोगा | ९९ | ८९ | चक्षुप् | १०० | ९३ | चक्रमस् | ११ | १३ |
| घोगिन् | ७८ | २ | चक्षुष्या | १५७ | १०० | चन्द्रयाता | ७१ | १०५ |
| | ५९ | ३७ | चञ्चल | १७९ | ७७ | चन्द्रशेखर | ६ | ३० |
| घोण्टा | ७७ | १६९ | चञ्चना | १३ | ९ | (चन्द्रसप्त) | १०६ | १३० |

| शब्दः | पृष्ठम् : | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|---------------|-----------|--------|---------------|---------|--------|----------------|---------|--------|
| चन्द्रहास | १३३ | ८९ | चर्मप्रसेविका | १६४ | ३३ | चाप | ८० | १६ |
| चन्द्रिका | १४ | १६ | चर्मिन् | ७० | ४६ | चिकित्सक | ९४ | ५७ |
| | १० | ६८ | | १३० | ७१ | चिकित्सा | ९२ | ५० |
| चपल | १५७ | ९९ | चर्या | ११४ | ३६ | चिकुर | १०० | ९५ |
| | १७४ | ४६ | चर्वित | १८४ | ११० | | १७४ | ४६ |
| चपला | १३ | ९ | चल | १७९ | ७४ | चिकुण | १४७ | ४६ |
| | ६७ | ९६ | चलदल | ५६ | २० | चिकस | २६१ | ३५ |
| चपेट | ९८ | ८४ | चलन | १७९ | ७४ | चिश्वा | ६० | ४३ |
| चमर | ७९ | १० | चलाचल | १७९ | ७४ | चित् | २३ | १ |
| चमरिक | ५७ | २२ | चलित | १३५ | ९६ | | २४६ | ३ |
| चमस | २६१ | ३५ | | १८० | ८७ | चिता | १३८ | ११७ |
| चमसी | २५३ | १० | चविक | ६७ | ९८ | चिति | १३८ | ११७ |
| | १३१ | ७८ | चव्य | ६७ | ९८ | चित्त | २२ | ३१ |
| चमू | १३२ | ८१ | चपक | १६५ | ४३ | चित्तविभ्रम | ३४ | २६ |
| चमूरु | ७९ | ९ | चपाल | ११० | १८ | चित्तसमुन्नति | २२ | २२ |
| चम्पक | ६२ | ६३ | चाक्रिक | १३५ | ९७ | चित्ताभोग | २३ | २ |
| | ४९ | ३ | चाङ्गेरी | ७३ | १४० | चित्या | १३८ | ११७ |
| चय | ८४ | ४० | चाटकैर | ८० | १८ | | २५ | १७ |
| | १२० | १३ | चाण्डाल | १६२ | २० | चित्र | ३३ | १९ |
| चर | १७९ | ७४ | चाण्डालिका | १६४ | ३१ | | २२९ | १७८ |
| चरक | २६० | ३३ | चातक | ८० | १७ | चित्रक | ६१ | ५१ |
| चरण | ९६ | ७१ | चातुर्वर्ण्य | १०७ | २ | | ६५ | ८० |
| चरणायुध | ८० | १७ | चन्द्रभागा | ४३ | ३४ | | १०५ | १२३ |
| चरम | १७९ | ८१ | चाप | १३२ | ८३ | चित्रकार | १६० | ७ |
| चरमःमाभृत् | ५२ | २ | चामर | १२३ | ३१ | चित्रकृत | ५७ | २७ |
| चराचर | १७९ | ७४ | चामीकार | १५६ | ९५ | चित्रतण्डुला | ६८ | १०६ |
| चरिणु | १७९ | ७४ | चाम्पेय | ६२ | ६३ | चित्रपर्णी | ६६ | ९२ |
| चरु | १११ | २२ | | ६२ | ६५ | | ९ | ५९ |
| चर्चरी | २५३ | १० | चार | १२० | १३ | चित्रभानु | १६ | ३० |
| | २३ | २ | | १८७ | १४ | | २१५ | १०५ |
| चर्चा | १०५ | १२२ | चारटी | ७४ | १४६ | चित्रशिखण्डिज | १५ | २४ |
| चर्मकया | ७३ | १४३ | चारण | १६१ | १२ | चित्रशिखण्डिन् | १६ | २७ |
| चर्मकार | १६० | ७ | चारु | १७५ | ५२ | चित्रा | ६६ | ८७ |
| चर्मन् | ११६ | ४७ | चारिक्य | १०५ | १२२ | | ७५ | १५६ |
| | १३४ | ९० | चालनी | १४३ | २६ | चिन्ता | ३४ | २९ |
| चर्मप्रसेविका | १६४ | ३५ | | | | | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|------------|---------|-------|------------|---------|-------|-----------|---------|-------|
| चिपिटक | १४७ | ४७ | चूलिका | १२४ | ३८ | चन्द | १८८ | २० |
| चिवुक | ९९ | ९० | चैटक | १६१ | १७ | चन्द | २११ | ८८ |
| चिरक्रिय | १७० | १७ | चेव | २४७ | १२ | चन्दस् | १११ | २२ |
| चिरटी | ८६ | ९ | चेतकी | ६२ | ५९ | चन्दस् | २४० | २३२ |
| चिरतन | १७९ | ७७ | चेतन | २२ | ३० | चन्द्र | १२२ | २२ |
| चिरमसूता | १५१ | ७१ | चेतना | २३ | १ | चन्द्र | १८२ | ९८ |
| चिररात्राय | २४५ | १ | चेतस् | २२ | ३१ | चन्द्र | १३६ | १०८ |
| चिरस्य | २४५ | १ | चैल | १०४ | ११५ | चवि | १८ | १७ |
| चिराय | २४५ | १ | चैल | २३४ | २०२ | चवि | १७ | ३४ |
| चिरिविल्व | ६० | ४७ | चैत्य | ४९ | ७ | चाग | १५२ | ७६ |
| चिलिचिम | ४१ | १८ | चैत्र | २० | १५ | चागी | १५२ | ७६ |
| चिल्ल | ८१ | २१ | चैत्ररय | ११ | ७३ | चात | ९२ | ४४ |
| चिल्ल | २४ | ६० | चैत्रिक | २० | १५ | चात | १८३ | १०३ |
| चिल्ल | १४ | १७ | चोच | ७२ | १३४ | चात्र | १०९ | ११ |
| चीन | ७९ | ९ | चोरपुष्पी | २६० | ३० | चादित | १८२ | ९८ |
| चीर | २६० | ३१ | चोल | ७१ | १२६ | चान्दस | १०८ | ६ |
| चीरी | ८२ | २८ | चौर | १०४ | ११८ | चाया | २२५ | १५७ |
| चीरुका | ८२ | २८ | चौरिका | १६२ | २८ | चित | १८३ | १०३ |
| चीवर | २६० | ३१ | चौरिका | १६२ | २५ | छिन्न | ३६ | २ |
| चुक | ७३ | १४१ | चौर्य | १६२ | २५ | छिन्नित | १८२ | ९९ |
| चुक | १४५ | ३५ | च्युत | १८३ | १०४ | छिन्न | १८३ | १०३ |
| चुक | २५७ | २० | च्युत | १८३ | १०४ | छिन्नरुहा | ६५ | ८२ |
| चुक्रिका | ७३ | १४० | च | ७ | ७६ | छुरिका | १३४ | ९२ |
| चुल्ल | ९४ | ६० | छगलक | १५२ | ७६ | छेक | ८४ | ४३ |
| चुल्लि | १४४ | २९ | छगलान्त्री | ७२ | १३७ | छेदन | १८६ | ७ |
| चुचुक | ९७ | ७७ | छत्र | १२३ | ३९ | ज | ८६ | ६ |
| चूटा | ८२ | ३१ | छत्रा | ६८ | १०५ | जगत | २०९ | ८० |
| चूटामणि | १०१ | १०२ | छत्रा | ७७ | १६७ | जगती | ४६ | १ |
| चूटाला | ७६ | १६० | छत्राकी | १४५ | ३७ | जगती | २०८ | ७६ |
| चूत | ५८ | ३३ | छद | ५५ | १४ | जगत्पाण | १० | ६५ |
| चूर्ण | १०६ | १३४ | छदन | ८३ | ३६ | जगर | १२२ | ६५ |
| चूर्ण | १३५ | ९९ | छदन | ५५ | १४ | जगल | १६५ | ८२ |
| चूर्णकुतल | १०० | ९६ | छदिस | ५१ | १४ | जग्ध | १८४ | १११ |
| चाग | २५३ | ९ | छान् | ३४ | ३० | जग्धि | १४९ | ५५ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|------------|---------|--------|------------|---------|--------|------------|---------|--------|
| जघन | ९७ | ७४ | जनश्रुति | २७ | ७ | जयन्ती | ६२ | ६५ |
| जघनेफल | ६२ | ६१ | जनार्दन | ५ | १९ | जया | ६२ | ६५ |
| जघन्य | { १७९ | ८१ | जनाश्रय | ५० | ९ | जय्य | १३१ | ७४ |
| | { २२५ | १५९ | जनि | २२ | ३० | जरण | १४५ | ३६ |
| जघन्यज | { ९२ | ४३ | जनी | { ७५ | १५३ | जरत् | ९१ | ४२ |
| | { १५९ | १ | | { ८६ | ९ | जरद्भव | १५० | ६१ |
| जङ्गम | १७९ | ७४ | जनुष् | २२ | ३० | जरा | ९१ | ४१ |
| जङ्मेतर | १७८ | ७३ | जन्तु | २२ | ३० | जरायु | ९१ | ३८ |
| जङ्घा | ९६ | ७२ | जन्तुफल | ५७ | २२ | जरायुज | १७५ | ५० |
| जङ्घाकारिक | १३१ | ७३ | जन्मन् | २२ | ३० | जल | ३८ | ३ |
| जङ्घाल | १३० | ७३ | जन्मिन् | २२ | ३० | जलजन्तु | ४१ | २० |
| | { ५५ | ११ | | { ११८ | ५८ | जलधर | १३ | ७ |
| जटा | { १०१ | ९७ | जन्य | { १३६ | १०३ | जलनिधि | ३८ | २ |
| | { २०१ | ३८ | | { २२५ | १५९ | जलनिर्गम | ३९ | ७ |
| जटामांसी | ७२ | १३४ | जन्यु | २२ | ३० | जलनीली | ४४ | ३८ |
| जटिन् | ५८ | ३२ | जय | ११६ | ४७ | जलप्राय | ४७ | १० |
| जटिला | ७१ | १३४ | जय्य | ११६ | ४८ | जलमुञ्च | १३ | ७ |
| जठर | { १७९ | ७७ | जपापुष्प | ६४ | ७६ | जलव्याल | ३६ | ५ |
| | { २३१ | १८९ | जम्पती | ९१ | ३८ | जलशायिन् | ५ | २३ |
| जड | { १५ | १९ | जम्बाल | ३९ | ९ | जलशुक्ति | ४२ | २३ |
| | { १७३ | ३८ | | { ५७ | २४ | जलाधार | ४२ | २५ |
| जडुल | ९२ | ४९ | जम्बीर | { ६५ | ७९ | जलाशय | { ४२ | २५ |
| जतु | १०५ | १२५ | जम्बु | ५६ | १९ | | { ७७ | १६४ |
| जतुका | १४६ | ४० | जम्बुक | { ७८ | ५ | जलोच्छ्वास | ३९ | १० |
| जतुका | ८२ | २६ | | { १९३ | ३ | जलौकस् | ४१ | २२ |
| जतुकुत् | ७५ | १५३ | जम्बू | ५६ | १९ | जलौका | ४१ | २२ |
| जतूका | ७५ | १५३ | जम्भ | ५७ | २४ | जल्पाक | १७३ | ३६ |
| जत्रु | ९७ | ७८ | जम्भभेदिन् | ८ | ४६ | जल्पित | १८३ | १०७ |
| जनक | ८९ | २८ | जम्भल | ५७ | २४ | जव | { १० | ६८ |
| जनङ्गम | १६२ | १९ | जम्भीर | ५७ | २४ | | { १३१ | ७३ |
| जनता | १९२ | ४३ | | { ६३ | ६६ | जवन | { १२६ | ४५ |
| जनन | { २२ | ३० | जय | { १३७ | ११० | | { १३१ | ७३ |
| | { १०७ | १ | | { १८७ | १२ | जवनिका | १०४ | १२० |
| जननी | ८९ | २९ | जयन | १८७ | १२ | जन्हुतनया | ४१ | ३१ |
| जनपद | ४६ | ८ | जयन्त | ८ | ४९ | | | |
| जनयित्री | ८९ | २९ | | | | | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-----------|---------|-------|-------------|---------|-------|----------------|---------|-------|
| जागरा | १८८ | १९ | जात्म | १६१ | १६ | जुगुप्सा | २८ | १३ |
| जागरितृ | १७२ | ६२ | जिबत्सु | १७० | १७ | जुङ्ग | ७२ | १३७ |
| जागरूक | १७२ | ६२ | जिङ्गी | १७० | २० | जुहू | ११२ | २५ |
| जागर्या | १८८ | १९ | जित्वर | १३१ | ७७ | जुति | १९१ | ३८ |
| जाङ्गुलिक | ३७ | ११ | जिन | ४ | १३ | जूर्ति | १९१ | ३८ |
| जाङ्गविक | १३१ | ७३ | जिण्डु | ७ | ४५ | जृम्भ | ३५ | ३५ |
| जात | २२ | ३१ | जिह्वा | १७८ | ७१ | जृम्भण | ३५ | ३५ |
| जातरूप | १५६ | ९५ | जिह्वाग | ३७ | ८ | जेवृ | १३१ | ७४ |
| जातवेदस् | ९ | ५६ | जिह्वा | १०० | ९१ | जेमन | १४९ | ५६ |
| जातापत्या | ८७ | १६ | जीन | ९१ | ४२ | जेय | १३१ | ७१ |
| जाति | २२ | ३१ | जीमूत | १३ | ७ | जैव | १३१ | ७४ |
| | ६३ | ७२ | जीरक | १४५ | ३६ | जैवानृक | १४ | १४ |
| | २०७ | ६८ | जीर्ण | ९१ | ४२ | | १६८ | ६ |
| जातीकोश | १०६ | १३२ | जीर्णवस्त्र | १०४ | ११५ | जोङ्गक | १०५ | १२६ |
| जातीफल | १०६ | १३२ | जीव | १५ | २४ | जोपम् | २४४ | २५१ |
| जानु | २४६ | ८ | जीवक | १३८ | ११९ | ज्ञ | १०८ | ५ |
| जातोक्ष | १५० | ६१ | जीवजीव | ७३ | ३५ | ज्ञपित | १८२ | ९८ |
| जानु | ९६ | ७२ | जीवन | ३८ | ३ | ज्ञप्त | १८२ | ९८ |
| जावाल | १६० | ११ | जीवनी | ७३ | ७३ | ज्ञति | २३ | १ |
| जामातृ | ९० | ३२ | जीवनीया | ७३ | १८२ | ज्ञातसिद्धान्त | १२० | १५ |
| जामि | २२२ | १४२ | जीवनौपध | १३८ | १२० | ज्ञातृ | १७२ | ३० |
| जाम्बव | ५६ | १९ | जीवन्तिका | ६५ | ८२ | ज्ञातय | ९० | ३५ |
| जाम्बूनद | १५६ | ९५ | जीवती | ७३ | १४२ | ज्ञान | २४ | ६ |
| जायक | १०५ | १२५ | जीरा | ७३ | १४२ | ज्ञानिन् | १२० | १६ |
| जाया | ८५ | ६ | जीरा | ७३ | १४२ | ज्ञ्या | ८५ | २ |
| जायाजीव | १६१ | १२ | जीरा | ७३ | १४२ | ज्ञ्यापातजारण | १३२ | ८४ |
| जायापती | ९१ | ३८ | जीरा | ७३ | १४२ | ज्ञ्यानि | १८६ | ९ |
| जायु | ९३ | ५० | जीरा | ७३ | १४२ | ज्ञ्यायस | ९२ | ८३ |
| जार | ९० | ३५ | जीरा | ७३ | १४२ | ज्येष्ठ | २०२ | ८१ |
| जारज | ९० | ३५ | जीरा | ७३ | १४२ | ज्येष्ठ | २० | १६ |
| जाल | ४० | १६ | जीरा | ७३ | १४२ | ज्योतिरिद्वय | ८२ | २८ |
| | २३३ | २०० | जीरा | ७३ | १४२ | | | |
| जालक | ५६ | १६ | जीरा | ७३ | १४२ | | | |
| जालिक | १६१ | १४ | जीरा | ७३ | १४२ | | | |
| जाली | ७० | ११८ | जीरा | ७३ | १४२ | | | |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-------------|--------------|----------|-----------|-------------|---------|-----------|-------------|-------------|
| ज्योतिष्मती | ७४ | १५० | डिण्डिम | ३१ | ८ | | ९६ | ७१ |
| ज्योतिस् | २४० | २३० | डिम्ब | १८७ | १४ | तनु | १७७ | ६१ |
| ज्योत्स्ना | १४ | १६ | डिम्भ | ८३ | ३८ | | १७८ | ६६ |
| ज्यौतिषिक | १२० | १४ | डिम्भा | २२० | १३४ | | २१६ | ११३ |
| ज्यौसनी | { १८ ७० | ५ ११८ | डुण्डुभ | ९१ | ४१ | तनुत्र | २२९ | ६४ |
| ज्वर | ९४ | ५६ | | ३६ | ५ | तनू | ९६ | ७१ |
| ज्वलन | ९ | ५६ | ढक्का | ३१ | ६ | तनूकृत | १८२ | ९९ |
| ज्वाल | ९ | ६० | त | | | तनूनपात् | ९ | ५६ |
| | झ | | तक्र | १४८ | ५३ | तनूरह | { ८३ १०१ | { ३६ ९९ |
| झटामला | ७१ | १२७ | तक्षक | १९३ | ४ | तन्तु | १६३ | २८ |
| झटिति | २४६ | २ | तक्षन् | १६० | ९ | तन्तुभ | १४२ | १७ |
| झर | ५२ | ५ | तट | ३९ | ७ | तन्तुवाय | { ७९ १६० | { १३ ६ |
| झर्झर | ३१ | ८ | तटिनी | ४३ | ३० | तन्त्र | २३० | १८२ |
| झलरी | २५३ | १० | तडाग | ४२ | २८ | तन्त्रक | १०३ | ११२ |
| झष | ४० | १७ | तडित् | १३ | ९ | तन्त्रिका | ६५ | ८३ |
| झषा | ६९ | ११७ | तडित्वत् | १३ | ७ | तन्त्री | { ३५ २२९ | { ६७ १७६ |
| झाटल | ५९ | ३९ | तण्डक | २६० | ३३ | तप | २० | १९ |
| झाटलि | २६२ | ३८ | तण्डुल | ६८ | १०६ | तपःकेशसह | ११५ | ४३ |
| झावुक | ५९ | ४० | तण्डुलीयक | ७२ | १३६ | तपन | { १६ ३७ | { ३१ १ |
| झिण्टी | ६४ | ७५ | तत | { ३० १८० | ४ ८६ | तपनीय | १५६ | ९४ |
| झिल्लिका | ८२ | २८ | ततस् | २४६ | ३ | तपस् | { २० २४० | { १५ २३२ |
| | ट | | तत्काल | १२३ | २९ | तपस्य | २० | १५ |
| टङ्क | { १६४ २६० | ३४ ३३ | तत्त्व | ३१ | ९ | तपस्विन् | ११५ | ४२ |
| टिट्ठिम | ८३ | ३५ | तत्पर | १६८ | ९ | तपस्विनी | ७२ | १३४ |
| टीका | २५२ | ७ | तथा | २४७ | १३ | तम | १६ | २६ |
| टुण्टुक | ६१ | ५६ | तथागत | ४ | २२ | तमस् | { २२ ३६ | { २९ ३ |
| | ड | | तथ्य | २९ | ३ | तमस्विनी | २४० | २३१ |
| उमर | १८७ | १४ | तद् | २४६ | २९ | तमाल | { ६३ २६० | { ४ ३३ |
| उमरु | ३१ | ८ | तदा | २४९ | २९ | | | |
| उयन | १२७ | ५२ | तदात्व | १२३ | २२ | | | |
| उहु | ६२ | ६० | तदानोम | २४९ | २२ | | | |
| | | | तनय | ८९ | २७ | | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|------------|---------|-------|--------------|---------|-------|------------|---------|-------|
| तमालपत्र | १०५ | १२३ | तर्प | ३४ | २८ | ताल | ३१ | ९ |
| तमिस्र | ३६ | ३ | | १४९ | ५५ | | ७७ | १६८ |
| तमिस्रा | १८ | ५ | तल | १३२ | ८४ | | ९८ | ८३ |
| तमी | १८ | ४ | | २३४ | २०२ | | १५७ | १०३ |
| तमोनुद् | २११ | ८९ | तलिन | २१८ | १२७ | तालपत्र | १०१ | १०३ |
| तमोपह | २४२ | २३८ | तल्प | २२० | १३१ | तालपर्णा | ७० | १२३ |
| तरक्षु | ७८ | १ | तल्लज | २२ | २७ | तालमूलिका | ७० | ११९ |
| तरङ्ग | ३८ | ५ | तट | १८२ | ९९ | तालवृन्तक | १०७ | १४० |
| तरङ्गिणी | ४३ | ३० | तस्कर | १६२ | २४ | तालाङ्क | ५ | २५ |
| | १६ | ३० | ताण्डव | ३१ | १० | ताली | ७१ | १२७ |
| तरणी | ३९ | १० | | २६१ | ३४ | | ७७ | १७० |
| | ६४ | ७३ | तात | ८९ | २८ | तालु | १०० | ९१ |
| तरपण्य | ३९ | ११ | ताग्त्रिक | १२० | १५ | तावत | २४३ | २४६ |
| | १०१ | १०२ | तापस | ११५ | ४२ | तिक्त | २४ | ९ |
| तरल | १७९ | ७५ | तापसतर | ६० | ४६ | तिक्तक | ७५ | १५५ |
| तरला | १४७ | ५० | तापिच्छ | ६३ | ६८ | तिक्तशाक | ५७ | २५ |
| | १० | ६७ | तामरस | ४४ | ४० | तिग्म | १७ | ३५ |
| तरस् | १३६ | १०२ | तामलकी | ७१ | १२७ | वितड | १४३ | २६ |
| तरस | ९५ | ६३ | तामसी | १८ | ५ | वितिक्षा | ३४ | २४ |
| | १३१ | ७३ | ताम्बूलपल्लो | ७० | १२० | वितिक्षु | १७२ | ३१ |
| तरस्विन् | | १२८ | ताम्बूली | ७० | १२० | वितिक्षि | ८३ | ३५ |
| | ३९ | १० | ताम्रक | १५६ | ९७ | विधि | १७ | १ |
| तरि | ५४ | ५ | ताम्रकर्णी | १३ | ५ | विनिश | ५७ | २६ |
| तरु | ९१ | ४२ | ताम्रकुट्टक | १६० | ८ | विन्निडी | ६० | ४३ |
| तरुण | ८६ | ८ | ताम्रचूड | ८० | १७ | विन्निडीक | १४५ | ३५ |
| तरुणी | २३ | ३ | | ३० | २ | विन्दुक | ५९ | ३८ |
| तर्क | २६ | ५ | तार | २२७ | १६६ | विन्दुकी | २५३ | ८ |
| तर्कविद्या | ६२ | ६५ | तारकजित | ७ | ४० | विगि | ४१ | १९ |
| तर्कारी | ९८ | ८१ | तारका | १५ | २१ | विमिद्विल | ४१ | २० |
| तर्जनी | १५० | ६१ | | १०० | ९२ | विमित | १८३ | १०५ |
| तर्जक | १४५ | ३४ | तारा | १५ | २१ | विमिर | ३६ | ३ |
| तर्ज | ११० | १४ | तारण्य | ९१ | ४० | तिरस् | २४५ | २५६ |
| तर्पण | १४९ | ५६ | तार्थ्य | ६ | २९ | | २४६ | ६ |
| | १८६ | ४ | | २२३ | १४५ | तिरस्करिणी | १०४ | १२० |
| तर्मन् | १११ | १९ | तार्थ्यशेख | १५७ | १०२ | तिरस्किया | ३३ | २२ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|--------------|---------|--------|------------|---------|--------|---------------|---------|--------|
| तिरीट | ५८ | ३३ | तुण्डी | ७ | ४३ | तूण | १३३ | ८८ |
| तिरोधान | २६० | ३० | तुण्डिकेरी | १९ | ११६ | तूणी | १३३ | ८९ |
| तिरोहित | १४ | १३ | तुण्डिकेरी | ७३ | १३९ | तूणीर | १३३ | ८८ |
| तिर्यक् | १३७ | ११२ | तुण्डिभ | ९४ | ६१ | तूर्ण | १० | ६५ |
| तिर्यच् | १७२ | ३४ | तुण्डिल | ९१ | ६१ | तूल | ५९ | ४२ |
| | ५९ | ४० | तुत्था | ६७ | ९५ | तूलिका | १५८ | १०६ |
| | ९२ | ४९ | तुत्था | ७१ | १२५ | तूलिका | १६४ | ३३ |
| तिलक | ९५ | ६५ | तुत्थाञ्जन | १५७ | १०१ | तुवर | २२७ | १६५ |
| | १०५ | १२३ | तुन्दिन् | ९२ | ४४ | तूणीशील | १७३ | ३९ |
| | १४६ | ४३ | तुन्दिभ | ९२ | ४४ | तूणीक | १७३ | ३९ |
| तिलकालक | ९२ | ४९ | तुन्दिल | ९२ | ४४ | तूणीकाम | २४७ | ९ |
| तिलपर्णी | १०६ | १३२ | तुन्न | ७१ | १२७ | तूणीम | २४७ | ९ |
| तिलपिञ्ज | १४२ | १९ | तुन्नवाय | १६० | ६ | तूणं | ७७ | १६७ |
| तिलपेज | १४२ | १९ | तुवरिका | ७१ | १३१ | तूणद्रुम | ७७ | १७० |
| तिलिप्स | ३६ | ५ | तुमुल | १३६ | १०६ | तूणधान्य | १४३ | २५ |
| तिल्य | १४० | ७ | तुम्बा | ७५ | १५६ | तूणध्वज | ७६ | १६० |
| तिल्व | ५८ | ३३ | तुरग | १२५ | ४३ | तूणराज | ७७ | १६८ |
| तिष्य | १५ | २२ | तुरङ्ग | १२५ | ४३ | तूणशून्य | ६३ | ६९ |
| | २२३ | १४७ | तुरङ्गम | १२५ | ४२ | तूण्या | ७७ | १६८ |
| तिष्यफला | ६१ | ५७ | तुरङ्गवदन | ११ | ७५ | तृतीयाप्रकृति | ९१ | ३९ |
| | १७ | ३५ | तुरायण | १८५ | २ | तृप्त | १८३ | १०३ |
| तीक्ष्ण | १५६ | ९८ | तुरासाह | ८ | ४४ | तृप्ति | १४९ | ५६ |
| | २०४ | ५३ | तुरीय | १०५ | १२३ | तृप्त | ३४ | २७ |
| तीक्ष्णगन्धक | ५८ | ३१ | तुरुष्क | १०५ | १२८ | तृष्णक | १७१ | २२ |
| तीर | ३९ | ७ | तुला | १५४ | ८७ | तृष्णा | २०४ | ५१ |
| तीर्थ | २११ | ८६ | तुलकोटि | १०२ | १०९ | तेजन | ७६ | १६१ |
| तीव्र | ११ | ६७ | तुल्य | १६४ | ३७ | तेजनक | ७६ | १६२ |
| तीव्रवेदना | ३८ | ३ | तुल्यपान | १४९ | ५५ | तेजनी | ६५ | ८३ |
| | २४३ | २४२ | तुवर | २४ | ९ | तेजस | ९५ | ६२ |
| तु | २४६ | ५ | तुष | ६१ | ५८ | तेजित | २४० | २३४ |
| | २४८ | १५ | तुषार | १४२ | २२ | तेजित | १८१ | ९१ |
| तुङ्ग | ५७ | २५ | तुषित | १५ | १८ | तेम | १९० | २९ |
| | १७८ | ७० | तुहिन | ३ | १० | तेमन | १४६ | ४४ |
| तुङ्गी | ७३ | १३९ | | १५ | १८ | तैजसावर्तिनी | १६४ | ३३ |
| तुच्छ | १७६ | ५६ | | | | | | |
| तुण्ड | ९९ | ८९ | | | | | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|--------------|---------|-------|--------------|---------|-------|-------------|---------|-------|
| तैत्तिर | ८४ | ४३ | तिकटु | १५८ | १११ | त्रोटि | ८३ | ३६ |
| तैलपार्णिक | १०६ | १३१ | त्रिका | ४२ | २७ | त्र्यम्बक | ६ | ३३ |
| तैलपायिका | ८२ | २६ | त्रिकूट | ५२ | २ | त्र्यम्बकसख | ११ | ७१ |
| तैलीन | १४० | ७ | त्रिखट्ट | २६३ | ४१ | त्र्ययण | १५८ | १११ |
| तैय | २० | १५ | त्रिखट्टी | २६३ | ४१ | त्वक्दीरी | १५८ | १०९ |
| तोक | ८९ | २८ | त्रिगुणाकृत | १४० | ९ | त्वक्पत्र | ७२ | १३४ |
| तोक्तक | ८० | १७ | त्रितक्ष | २६३ | ४१ | त्वक्सार | ७६ | १६० |
| तोक्तम | १४२ | १६ | त्रितक्षी | २६३ | ४१ | त्व | १८० | ८२ |
| तोटक | २६० | ३० | त्रिदश | ३ | ७ | त्वच् | ९५ | ६२ |
| तोत्त | १२५ | ४१ | त्रिदशालय | ३ | ६ | त्वच | ७२ | १३४ |
| तोदन | ११४ | १२ | त्रिदिन | ३ | ६ | त्वचिसार | ७६ | १६० |
| तोमर | १३४ | २३ | त्रिदिवेश | ३ | ७ | त्यरा | १८९ | २६ |
| तोय | ३८ | ४ | त्रिपथगा | ४३ | ३१ | त्यरित | १० | ६४ |
| तोयपिप्पली | ६८ | १११ | त्रिपुटा | ७१ | १२५ | त्यरितोदित | २९ | २० |
| तोराण | ५१ | १६ | त्रिपुरान्तक | ६ | ३३ | त्यष्ट | १८२ | ९९ |
| तोयैर्त्रिका | ३१ | १० | त्रिफला | १५८ | १११ | त्वष्ट | १६० | ९ |
| त्यक्त | १८३ | १०७ | त्रिभण्डी | ६८ | १०८ | त्वष्ट | २०० | ३५ |
| त्याग | ११३ | २९ | त्रियामा | १७ | ४ | त्विप् | १७ | ३४ |
| त्रपा | ३३ | २३ | त्रिलोचन | ६ | ३ | त्विप् | २३९ | २२५ |
| त्रपु | १५८ | १०५ | त्रिवर्ग | ११८ | ५८ | त्विपापति | १६ | ३० |
| त्रयी | २६ | ३ | त्रिविक्रम | १२१ | १९ | त्सर | १३४ | ९० |
| त्रस | १७९ | ७४ | त्रिविष्टप | ५ | २० | दश | ८२ | २७ |
| त्रसर | १८९ | २४ | त्रिविष्टप | ३ | ६ | दशन | १२९ | ६४ |
| त्रस्त | १७१ | ३६ | त्रिवृत् | ६८ | १०८ | दशित | १२९ | ६५ |
| त्रण | १८३ | १०६ | त्रिवृता | ६८ | १०८ | दशी | ८२ | २७ |
| त्रात | १८३ | १०६ | त्रिसन्ध्य | १७ | ३ | दष्टिन् | ७८ | २ |
| त्रायन्ती | ७४ | १८० | त्रिसीत्य | १४० | ९ | दक्ष | १६२ | १९ |
| त्रापुप | १६३ | २९ | त्रिस्रोतस् | ४३ | ३१ | दक्षिण | १६८ | ८ |
| त्रायमाण | ७४१ | ५० | त्रिहन्त्य | १४० | ९ | दक्षिणस्थ | १२९ | ६० |
| त्रास | ३३ | २१ | त्रिहायणी | १५१ | ६८ | दक्षिणा | १२ | १ |
| त्रिरु | ९७ | ७६ | त्रुटि | ७१ | १२५ | दक्षिणाभि | १११ | १९ |
| त्रिककुद् | ५२ | २ | त्रेता | २०१ | ३७ | दक्षिणादस् | १६२ | २४ |
| | | | | २०७ | ६९ | दक्षिणार्ध | १६८ | ५ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|---------------|---------|--------|------------|---------|--------|-------------|---------|--------|
| दाक्षिणीय | १६८ | ५ | दया | ३३ | १८ | दाक्षायणी | ७ | २१ |
| दाक्षिणेर्मन् | १६२ | २३ | दयालु | १६९ | १५ | दाक्षाय्य | ८१ | २१ |
| दाक्षिण्य | १६८ | ५ | दर | ३३ | २१ | दाडिम | ६२ | ६४ |
| दग्ध | १८२ | ९९ | दर | २३१ | १८४ | दाडिम | २६३ | ४२ |
| दग्धिका | १४७ | ४९ | दरत् | २५३ | ९ | दाडिमपुष्पक | ६० | ४९ |
| | १६९ | ३१ | दरित्र | १७५ | ४९ | दाण्डपाता | २५२ | ६ |
| दण्ड | १२२ | २१ | दरी | ५२ | ६ | दात | १८३ | १०३ |
| | २०२ | ४२ | दर्दुर | ४२ | २४ | दातृ | १६८ | ८ |
| दण्डधर | १० | ६२ | दद्गुन्न | ७४ | १४७ | दात्यूह | ८१ | २१ |
| दण्डनीति | २६ | ५ | दद्गुण | ९४ | ५९ | दात्र | १४१ | १३ |
| दण्डविष्कम्भ | १५२ | ७४ | दर्दुरोगिन | ९४ | ५९ | | ११३ | २९ |
| दण्डाहत | १४८ | ५३ | दर्प क | ५ | ५ | | १२१ | २० |
| दधित्थ | ५७ | २१ | दर्पण | १०७ | १४० | दान | १२४ | ३७ |
| दधिफल | ५७ | २१ | दर्भ | ७७ | १६६ | दानध | ४ | १२ |
| दधिसक्तु | १४७ | ४८ | दर्वि | १४५ | ३४ | दानवारि | ३ | ९ |
| दनुज | ४ | १२ | दर्वाकर | ३७ | ८ | दानशौण्ड | १६८ | ६५ |
| दन्त | १०० | ९१ | | १८ | ८ | | १८२ | ४३ |
| दन्तधावन | ६० | ४९ | दर्श | ११६ | ४८ | दान्त | १८५ | ३ |
| दन्तभाग | १२५ | ४० | दर्शक | ११९ | ६ | दान्ति | १७३ | ४० |
| दन्तशठ | ५७ | २१ | दर्शन | १९० | ३१ | दापित | १५२ | ७३ |
| | ५७ | २४ | दल | ५५ | १४ | दाम | १५२ | ७३ |
| दन्तशठा | ७३ | १४० | दव | २३५ | २०६ | दामिनी | १५२ | ७३ |
| दन्तावल | १२४ | ३४ | दविष्ट | १७८ | ६९ | दामोदर | ४ | १८ |
| दन्तिका | ७३ | १४० | दवीयस् | १७८ | ६९ | दायाद | २११ | ८९ |
| दन्तिन् | १२४ | ३४ | दशन | १०० | ९१ | दार | ८५ | ६९ |
| दन्दशूक | ३७ | ८ | दशनवासस् | ९९ | ९० | दारद | ३७ | ११ |
| दध्र | १७७ | ६१ | दशबल | ४ | १४ | दारित | १८२ | १०० |
| | १२२ | २१ | दशमिन् | ९२ | ४३ | | ५५ | १३ |
| दम | १८५ | ३ | दशमीस्थ | २११ | ८७ | | ६१ | ५३ |
| दमथ | १८५ | ३ | दशा | १०३ | ११४ | दारुण | ३३ | २० |
| दमित | १८२ | ९७ | | २३७ | २१६ | दारुहरित्रा | ६७ | १०२ |
| दमुनस् | ९ | ५९ | | १२० | ११ | दारुहस्तक | १४५ | ३४ |
| दम्पती | ९१ | ३८ | दस्यु | १६२ | २४ | दार्वावाट | ८० | १७ |
| दम्भ | ३४ | ३० | दस्य | ९ | ५ | दार्विका | ७० | ११९ |
| दम्भोलि | ८ | ४७ | दहन | ९ | ५८ | दार्वा | ६७ | १०२ |
| दस्य | १५० | ६२ | | | | | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्द. | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|--------------|-------------------|---------------|---------------|-------------|----------|---------------|-------------|------------|
| दाव | २३५ | २०६ | दिष्टान्त | १३८ | ११६ | दुर्गन्ध | २५ | १२ |
| दाविक | ४४ | ३६ | दिष्ट्या | २४७ | १० | दुर्गसचर | १८९ | २५ |
| दाश | ४० | १५ | दीक्षित | १०९ | ८ | दुर्गा | ७ | ३७ |
| दाशपुर | ७१ | १३१ | दीदिवि | १४७ | ८८ | दुर्जन | १७५ | ४७ |
| दास | १६१ | १७ | दीधिति | १७ | ३३ | दुर्दिन | १४ | १२ |
| दासी | ६४ | ७४ | दीन | १७५ | ४९ | दुर्नामक | ९३ | ५४ |
| दासीसभ | २५८ | २७ | दीप | १०७ | १३८ | दुर्नामन् | ४२ | २५ |
| दासेय | १६१ | १७ | दीपक | १९४ | ११ | दुर्वल | ९२ | ४४ |
| दासेर | १६१ | १७ | दीप्ति | १७ | ३४ | दुर्मनस् | १६८ | ८ |
| दिक्करिणी | १३ | ४ | दीप्य | ६८ | १११ | दुर्मुख | १७३ | ३६ |
| दिग्गवर | १७३ | ३९ | दीर्घ | १७८ | ६९ | दुर्धर्ष | १५६ | ९६ |
| दिग्गज | १३ | ४ | दीर्घकोशिका | ४२ | २५ | दुर्विध | १७५ | ४९ |
| दिग्ध | { १३३ १८१ | ८८ ९० | दीर्घदीर्घान् | १०८ | ६ | दुर्द्व | ११९ | १० |
| दित | १८३ | १०३ | दीर्घपृष्ठ | ३७ | ८ | दुर्लि | ८२ | २४ |
| दितिद्यत | ४ | १२ | दीर्घवृन्त | ६१ | ५७ | दुक्षयवन | ८ | ४४ |
| विधिपु | ८८ | २३ | दीर्घसूत्र | १७० | १७ | दुष्कृत | २१ | २३ |
| विधिपू | ८८ | २३ | दीर्घिका | ४२ | २८ | दुष्ट | २४८ | १९ |
| दिन | १७ | २ | दु ख | { ३८ २५७ | ३ | दुष्पत्र | ७१ | १२८ |
| दिनात् | १७ | ३ | दु यमम् | २४८ | २३ | दुष्प्रधर्षणी | ६९ | ११४ |
| दिव् | { ३ १२ | ६ १ | दु स्पर्श | ६६ | ९१ | दुहितृ | ९१ | २८ |
| दिवस | १७ | २ | दु स्पर्शा | ६६ | ९४ | दुत् | १२० | १६ |
| दिवस्पति | ७ | ४२ | दुकूल | १०३ | ११३ | दुत्वी | ८७ | १७ |
| दिवा | २४६ | ६ | दुरध | १४८ | ५१ | दुत्य | १२० | १६ |
| दिवाकर | १६ | २८ | दुग्धिका | ६७ | १०० | दुन | १८३ | १०२ |
| दिवाकीर्त | { १६० १६२ | १० १९ | दुन्नुम | ७४ | १४८ | दुर | १७८ | ६८ |
| दिविपद् | ३ | ८ | दुन्नुभि | { ३१ २२१ | ५ १३६ | दुरदर्शिन | १०८ | ६ |
| दिनौकस् | ३ | ७ | दुरध्व | ४८ | १६ | दुर्गा | ७६ | १५८ |
| दिव्योपपादुक | १७५ | ५० | दुरालभा | ६६ | ९२ | दुपिका | ९६ | ६७ |
| दिश | १२ | १ | दुरिगि | २१ | २३ | दुप्य | १०८ | १२० |
| विशपति | १२ | ३ | दुरोदर | २२८ | १७१ | दुप्या | १२५ | ४२ |
| विश्य | १२ | २ | दुर्ग | १२१ | १७ | दुष्ट | { ११ १७९ | { ७० ७६ |
| विष्ट | { १७ २२ २०० | १ २८ ३५ | दुर्गति | १७५ | ८९ | दृष्टसधि | १७९ | ७५ |
| | | | | ३७ | १ | दृति | २५६ | १९ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|--------------|---------|--------|-------------|---------|--------|-------------|---------|--------|
| दृग्ध | १८० | ८६ | देवृ | ९० | ३२ | द्रप्स | १४८ | ५१ |
| दृग् | १०० | ९३ | देश | ४६ | ८ | द्रव | ३५ | ३२ |
| दृषद् | ५२ | ४ | देशरूप | १२२ | २४ | द्रवन्ती | १३७ | १११ |
| दृष्ट | १२३ | ३० | देह | ९६ | ७१ | द्रवन्ती | ६६ | ८७ |
| दृष्टरजस् | ८६ | ८ | देहली | ५० | १३ | द्रविण | १३६ | १०२ |
| दृष्टान्त | २०६ | ६२ | दैतेय | ४ | १२ | द्रविण | १५५ | ९० |
| दृष्टि | १०० | ९३ | दैत्य | ४ | १२ | द्रव्य | २०४ | ५२ |
| दृष्टेन्दु | २०१ | ३८ | दैत्यगुरु | १६ | २५ | द्रव्य | २५७ | २२ |
| देव | १९ | ३ | दैत्या | ७० | १२३ | द्रव्य | १५५ | ९० |
| देव | ३ | ७ | दैत्यारि | ४ | १९ | द्रव्य | २२४ | १५४ |
| देवकीनन्दन | ३२ | १३ | दैत्य्य | १०३ | ११४ | द्राक् | २४६ | २ |
| देवकुसुम | ५ | २१ | दैव | २२ | २८ | द्राक्षा | ६८ | १०७ |
| देवखातक | १०५ | १२५ | दैव (तीर्थ) | ११७ | ५१ | द्राघिष्ठ | १८४ | ११२ |
| देवखातविल | ४२ | २७ | दैवज्ञ | १२० | १४ | द्राविडक | ७२ | १३५ |
| देवखातविल | ५२ | ६ | दैवज्ञा | ८८ | २० | द्रु | ५४ | ५ |
| देवच्छन्द | १०२ | १०५ | दैवत | ३ | ९ | द्रुकिलिम | ६१ | ५३ |
| देवजग्धक | ७७ | १६६ | दैवत | २१ | २१ | द्रुघण | १३४ | ९१ |
| देवतरु | ८ | ५३ | दोला | ६७ | ९५ | द्रुण | ७९ | १४ |
| देवता | ३ | ९ | दोषज्ञ | १२७ | ५३ | द्रुणी | २५३ | ९ |
| देवताड | ६३ | ६९ | दोषज्ञ | १०८ | ५ | द्रुत | १० | ६८ |
| देवदारु | ६१ | ५४ | दोषा | २४६ | ६ | द्रुत | ३१ | ९ |
| देवद्रव्यञ्च | १७२ | ३४ | दोषैकवृश् | १७४ | ४६ | द्रुत | २४६ | १०० |
| देवन | १६६ | ४५ | दोस् | ९८ | ८० | द्रुम | ५४ | ५ |
| देवन | २१७ | ११७ | दोहद | ३४ | २७ | द्रुमामय | १०५ | १२५ |
| देववल्लभ | ५७ | २५ | दोहदवती | ८८ | २१ | द्रुमात्पल | ६२ | ६० |
| देवभूय | ११७ | ५२ | द्युति | १४ | १७ | द्रुवय | १५४ | ८५ |
| देवमातृक | ४७ | १२ | द्युति | १७ | ३४ | द्रुहिण | ४ | १७ |
| देवयोनि | ३ | ११ | द्युमणि | १६ | ३० | द्रोण | १५५ | ८८ |
| देवर | ९० | ३२ | द्युम्न | १५५ | ९० | द्रोण | २०३ | ४९ |
| देवल | १६० | ११ | द्युत | १६६ | ४५ | द्रोणकाक | ८१ | २१ |
| देवसभा | ८ | ५१ | द्युतकारक | १६६ | ४४ | द्रोणक्षीरा | १५२ | ७२ |
| देवाजीवी | ६० | ११ | द्युतकृत् | १६६ | ४४ | द्रोणदुग्धा | १५२ | ७२ |
| देवी | ३२ | १३ | द्यो | ३ | ६ | द्रोणी | ३९ | ११ |
| देवी | ६५ | ८३ | द्यो | १२ | १ | द्रोणी | ६७ | ९५ |
| | | १३३ | द्योत | १७ | ३४ | द्रोहचिंतन | २३ | ४ |
| | | | | | | द्रौणिक | १४० | १० |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-------------|---------|--------|----------|---------|--------|-----------|---------|--------|
| दन्द् | ८३ | ३८ | द्वयट | १५६ | ९७ | धर्मराज | ४ | १३ |
| द्वयानिग | ११५ | ४५ | ध | | | धर्मसहिता | १० | ६१ |
| द्वयशाङ्गुल | ९८ | ८४ | धत्तूर | ६४ | ७७ | धर्मसहिता | १९९ | ३१ |
| द्वयशात्मन् | १६ | २८ | धन | १५५ | ९० | धय | २६ | ६ |
| द्वयपर | २३ | ३ | धनजय | ९ | ५३ | धवल | १० | ३५ |
| द्वय | ५१ | १६ | धनद | ११ | ७२ | धयल | २३५ | २०६ |
| द्वय | ५१ | १६ | धनहरी | ७१ | १२८ | धयल | २५ | १३ |
| द्वयपाल | ११९ | ६ | धनाधिप | ११ | ७२ | धयल | १५१ | ६७ |
| द्वयस्य | ११९ | ६ | धनिन् | ११ | ७२ | धयल | १११ | २३ |
| द्वयस्थित | ११९ | ६ | धनिन् | १६९ | १० | धयल | ७० | १२४ |
| द्विगुणाकृत | १४० | ९ | धनिठ | १५ | २२ | धयल | २५२ | ७ |
| द्विग | ८२ | ३२ | धनुर्धर | १६० | ३९ | धयल | ५३ | ८ |
| द्विगयज | १९९ | ३० | धनुष्यट | ५२ | ३५ | धयल | २०६ | ६५ |
| द्विजा | ७० | १२० | धनुष्मन् | १३० | ६९ | धयल | ७० | १२४ |
| द्विजाति | १०८ | ४ | धनुस् | १३२ | ८३ | धयल | ४ | १७ |
| द्विजिद | २२० | १३३ | धन्य | १६७ | ३ | धयल | २२९ | १७६ |
| द्विनीया | ८५ | ५ | धन्य | ४६ | ५ | धयल | १४७ | ४७ |
| द्विप | १२४ | ३४ | धन्ययास | १३२ | ८३ | धयल | १३० | ६९ |
| द्विपाय | १२३ | २७ | धन्ययास | ६६ | ९१ | धयल | १४२ | २१ |
| द्विद | १२४ | ३४ | धन्ययास | १३० | ६९ | धयल | १४२ | २२ |
| द्विफ | ८२ | २२ | धन्ययास | ७६ | १६२ | धयल | १४५ | ३८ |
| द्वि | १२० | ११ | धन्ययास | ९८ | ६५ | धयल | १४६ | ३९ |
| द्विद | ११९ | १० | धन्ययास | ७१ | १३० | धयल | २१८ | १२४ |
| द्विपनी | १५१ | ६८ | धन्ययास | १०१ | ९७ | धयल | ६६ | ८८ |
| द्विप | ३९ | ८ | धन्ययास | ८२ | १ | धयल | ६९ | ११७ |
| द्विपनी | ८३ | ३० | धन्ययास | ४८ | २ | धयल | ११ | २२ |
| द्विपनी | ७८ | १ | धन्ययास | १०१ | ९७ | धयल | १२२ | २६ |
| द्विपनी | ११९ | १० | धन्ययास | ८२ | १ | धयल | १२७ | ६९ |
| द्विपनी | १७४ | ४५ | धन्ययास | ८८ | २ | धयल | १३ | ७ |
| द्विपनी | १२१ | १८ | धन्ययास | ८८ | २ | धयल | १४ | ११ |
| द्विपनी | १२५ | ८३ | धन्ययास | ८८ | २ | धयल | ८१ | २४ |
| द्विपनी | ७ | ३८ | धन्ययास | १४२ | ३६ | धयल | ६६ | ९३ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-----------|---------|--------|-------------|---------|--------|-------------|---------|--------|
| धिषणा | २३ | १ | धेनु | १५१ | ७१ | नक्षत्रेश | १४ | १५ |
| धिष्य | २२५ | १५५ | धेनुका | १२४ | ३६ | नख | ७१ | १३० |
| धी | २३ | १ | | १९५ | १५ | | ९८ | ८३ |
| धीन्द्रिय | २४ | ८ | धेनुग्या | १५२ | ७२ | नखर | ९८ | ८३ |
| धीमत् | १०८ | ६ | धैनुक | १४९ | ६० | नग | १९७ | १९ |
| धीमती | ८६ | १२ | धैय | २०८ | ७४ | नगरी | ४८ | १ |
| धीर | १०५ | १२४ | धैयत | ३० | १ | नगौकस् | ८३ | ३३ |
| | १०८ | ५ | धीरण | १२८ | ५८ | नम | १७३ | ३९ |
| धीवर | ४० | १५ | धौतकौशेय | १०३ | ११३ | नमहू | १६५ | ४२ |
| धीशक्ति | १८९ | २५ | धौरितक | १२८ | ४८ | नयिका | ८६ | ८ |
| धीसचिव | ११८ | ४ | धौरेय | १५० | ६५ | | ६१ | ५६ |
| धुनी | ४३ | ३० | ध्याम | ७७ | १६६ | नट | १६१ | १२ |
| धुर | १२८ | ५ | | १५ | २० | नटन | ३१ | १० |
| धुरंधर | १५० | ५ | धुव | ५४ | ८ | नटी | ७१ | २२९ |
| धुरीण | १५० | ६५ | | १७८ | ७२ | | ७६ | १६२ |
| धुर्य | १५० | ६५ | | २३६ | २११ | नड | २६० | ३३ |
| धूत | १८३ | १०७ | धुवा | ६९ | ११५ | नडमाय | ४६ | ९ |
| धूपायित | १८३ | १०२ | | ११२ | २५ | नडसंहति | ७७ | १६८ |
| धूपित | २८३ | १०२ | ध्वज | १३५ | ९९ | नड्या | ७७ | १६८ |
| धूमकेतु | २०५ | ५८ | ध्वजिनी | १३१ | ७८ | नड्वत् | ४६ | ९ |
| धूमयोनौ | १३ | ७ | ध्वनि | २९ | २२ | नड्वल | ४६ | ९ |
| धूमल | २५ | १६ | ध्वनित | १८१ | ९४ | नत | १७८ | ७१ |
| धूम्रा | १९२ | ४२ | ध्वस्त | १८३ | १०४ | नतनासिक | ९२ | ४५ |
| धूम्याट | ८० | १६ | ध्वांक्ष | ८१ | २० | नदी | ४३ | २९ |
| धूम्र | २५ | १६ | ध्वान | २९ | २२ | नदीमातृक | ४७ | १२ |
| धूर्जटि | ६ | ३५ | ध्वान्त | ३६ | ३ | नदीसर्ज | ६० | ४५ |
| | ६४ | ७७ | न | २४७ | २१ | नभी | १६३ | ३१ |
| धूर्त | १६५ | ४४ | न | ६९ | ११५ | ननान्द | ८९ | २९ |
| | १७५ | ४७ | नकुलेष्टा | १०४ | ११५ | ननु | २४४ | २४८ |
| धूर्वह | १५० | ६५ | नक्तक | २४६ | ६ | ननुच | २४८ | १४ |
| धूलि | १३५ | ९८ | नक्तम् | ६० | ४७ | नन्दक | ५ | ३० |
| धुसर | २५ | १३ | नक्तमाल | ४१ | २१ | नन्दन | ८ | ४८ |
| धृति | २०८ | ७४ | नक्षत्र | १५ | २१ | नन्दिवृक्ष | ७१ | १२८ |
| धृष्ट | १७१ | २५ | नक्षत्रमाला | १०२ | १०६ | नन्द्यावर्त | ५० | १० |
| धृष्णज् | १७१ | २५ | | | | नपुंसक | ९१ | ३९ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|------------|---------|-------|--------------|---------|-------|--------------|---------|-------|
| नञ्जी | ८९ | २९ | नवाम्बर | १०३ | ११२ | नायवत् | १६९ | १६ |
| | १२ | १ | नञ्जीन | १७९ | ७७ | नाद | २९ | २३ |
| नभस् | २० | १६ | नवोद्धृत | १४८ | ५२ | | ५७ | ३० |
| | २४० | २३२ | नव्य | १७९ | ७७ | नादेयी | ५९ | ३८ |
| नभसङ्गम | ८३ | ३४ | नष्ट | १३७ | ११२ | | ६२ | ६५ |
| नभस्य | २० | १७ | नष्टचेष्टता | ३५ | ३३ | | ७० | ११८ |
| नभस्त्वत् | १० | ६६ | नष्टाभि | ११७ | ५३ | नागा | २४३ | २४७ |
| नभस् | २४८ | १८ | नष्टेन्दुकला | १९ | ९ | | २४६ | ३ |
| नभसित | १८२ | १०१ | नस्तित | १५० | ६३ | नानारूप | १८१ | ९३ |
| नभस्वारी | ७३ | १४१ | नस्योत | १५० | ६३ | नान्दीकर | १७३ | ३८ |
| नभस्या | ११४ | ३५ | नहि | २४७ | ११ | नान्दीवादिन् | १७३ | ३८ |
| नभस्त्यत | १८२ | १०१ | नाक | ३ | ६ | नापित | १६० | १० |
| नमुचिच्छदन | ८ | ४६ | | १९२ | २ | | १२८ | ५६ |
| नय | १८६ | ९ | नाकु | ४७ | १४ | नाभि | २२१ | १३७ |
| नया | १०० | ९३ | नाकुली | ६९ | ११४ | | २५३ | ९ |
| नर | ८५ | १ | | ३६ | ४ | नाम | २४४ | २५१ |
| नरक | ३७ | १ | नाग | १२४ | ३४ | नामधेय | २७ | ८ |
| नरसादन | ११ | ७२ | | १५७ | १०५ | नामन् | २७ | ८ |
| नर्तक | ३२ | ११ | | १७७ | ५९ | नाय | १८६ | ९ |
| नर्तकी | ३१ | ८ | | १९७ | २१ | नायक | ३७ | ११ |
| नर्तन | ३१ | १० | नागकेसर | ६२ | ६५ | नारक | ३७ | १ |
| नर्मदा | ४३ | ३० | नागजितिका | १५८ | १०८ | नारद | ८ | ५१ |
| नर्मन् | ३५ | ३२ | नागप्रला | ६९ | ११७ | नारान | १३३ | ८७ |
| नलकुवर | ११ | ७३ | नागर | १४५ | ३८ | नागची | १६४ | ३२ |
| नलद | ७६ | १६४ | | २३१ | १८८ | नागयग | ४ | १८ |
| नलमीन | ४१ | १८ | नागरा | ५९ | ३८ | नागयगी | ६७ | १०१ |
| नलिन | ४४ | ३९ | नागलोक | ३६ | १ | नारी | ८५ | २ |
| नल्लिनी | ४४ | ३९ | नागपल्ली | ७० | १२० | | ४४ | ४२ |
| नली | ७१ | १२९ | नागसम्भय | १५७ | १०५ | नाल | १४२ | २२ |
| नल्य | ४८ | १८ | नागान्तक | ६ | २२ | नाला | ४४ | १० |
| नय | १७९ | ७७ | नाट्य | ३१ | १० | नालिका | १४५ | ३४ |
| नयक | ४४ | ४३ | नाटिन्धम | १६० | ८ | नालिकेर | ७७ | १६८ |
| नयनीत | १४८ | ५० | | ९५ | ६५ | नायिक | ४० | १० |
| नयनालिका | ६३ | ७२ | नाटी | १४२ | २२ | नाय | ३२ | १० |
| नयनिना | १५१ | ७१ | नाडीगग | २०२ | ४३ | नाय | १२८ | ११६ |
| | | | | ९३ | ५४ | नायन्य | ९ | ५४ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-----------|---------|--------|------------|---------|--------|----------|---------|--------|
| नासा | { ५० | १३ | निकृण | २९ | २४ | निनाढ | २९ | २२ |
| | { ९९ | ८९ | निकाण | २९ | २४ | निन्दा | २८ | १३ |
| नासिका | ९९ | ८९ | निखिल | १७७ | ६५ | निप | १४४ | ३२ |
| नास्तिकता | २३ | ४ | निगड | १२५ | ४१ | निपट | १९० | २९ |
| निःशलाक | १२२ | २२ | निगढ | १८७ | १२ | निपाठ | १९० | २९ |
| निःशेष | १७७ | ६५ | निगम | { ४८ | १ | निपातन | १८९ | २७ |
| निःशोध्य | १७६ | ५६ | | { २२२ | १४० | निपान | ४२ | २६ |
| निःश्रेणि | ५१ | १८ | निगाद | १८७ | १२ | निपुण | १६८ | ४ |
| निःश्रेयस | २४ | ६ | निगार | १९१ | ३७ | निवन्धन | ३१ | ७ |
| निःषम | २४८ | १४ | निगाल | १२६ | ४८ | निवहर्णन | १३७ | २१२ |
| निःसरण | ५२ | १९ | नियह | १८७ | १३ | निभ | १६५ | ३८ |
| निःस्व | १७५ | ४९ | निघ | १९१ | ३६ | निभृत | १७१ | २५ |
| निकट | १७८ | ६६ | निघास | १४९ | ५६ | निमय | १५३ | ८० |
| निकर | ८४ | ३९ | निघ्न | १६९ | १६ | निमित्त | २०९ | ७६ |
| निकर्षण | ५२ | १९ | निचुल | ६२ | ६१ | निमेष | १९ | ११ |
| निकष | १६४ | ३२ | निचाल | १०४ | ११६ | निम्न | ४० | १५ |
| निकषा | { २४६ | ७ | निज | २०० | ३२ | निम्नगा | ४३ | ३० |
| | { २४८ | १९ | नितम्ब | ९७ | ७४ | निम्ब | ६२ | ६२ |
| निकषात्मज | १० | ६३ | नितम्बिनी | ८५ | ३ | निम्बतरु | ५७ | २६ |
| निकाम | १४२ | ५७ | नितान्त | ११ | ६७ | नियति | २२ | २८ |
| निकाय | ८४ | ४२ | नित्य | १७८ | ७२ | नियन्तृ | १२९ | ५९ |
| निकाय्य | ४९ | ५ | निदाघ | { २० | १९ | | { २४ | ५ |
| निकार | { १८७ | १५ | | { ३५ | ३३ | नियम | { ११४ | ३८ |
| | { १९१ | ३६ | निदान | २२ | २८ | | { ११६ | ४९ |
| निकारण | १३७ | ११२ | निदिग्ध | १८० | ८९ | नियामक | ४० | १२ |
| निकुञ्चक | १५५ | ८८ | निदिग्धिका | ६६ | ९३ | नियुत | २५८ | २४ |
| निकुञ्ज | ५३ | ८ | निदेश | १२२ | २५ | नियुद्ध | १३६ | १०६ |
| निकुम्भ | ७३ | १४४ | निद्रा | ३५ | ३६ | नियोज्य | १६१ | १७ |
| निकुरम्ब | ८४ | ४० | निद्राण | १७२ | ३३ | निर | २४५ | २५३ |
| निकृत | { १७४ | ४१ | निद्रालु | १७२ | ३३ | निरन्तर | १७८ | ६६ |
| | { १७४ | ४६ | निधन | { १३८ | ११६ | निरय | ३७ | १ |
| निकृति | ३४ | ३० | निधि | { २१८ | १२३ | निरर्गल | १८० | ८३ |
| निकृष्ट | १७६ | ५४ | निधुवन | ११ | ७५ | निरवग्रह | १६९ | १५ |
| निकेतन | ४९ | ४ | निध्यान | १९० | ३१ | निरसन | १९० | ३१ |
| निकोचक | ५७ | २९ | निनद | २९ | २२ | | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|----------------------|--------------------|----------------|------------|---------------------|-----------------|-------------|-------------|----------|
| निरस्त | { २९ १३३ १७३ | २० ८८ ४० | निर्वापण | १३७ | ११४ | निपादिन् | १२९ | ५९ |
| निराकरिण्यु | १७२ | ३० | निर्वार्य | १६९ | १३ | निपुदन | १३७ | ११३ |
| निराकृत | १७३ | ४० | निर्वासन | १३७ | ११३ | निष्क | १९४ | १४ |
| निगाकृति | { ११७ १९० | ५४ ३१ | निर्वृत्त | १८२ | १०० | निष्कला | ८८ | २१ |
| निरामय | ९४ | ५७ | निर्वेश | { १६५ १८८ २३६ | ३९ २० २१५ | निष्कासित | १७३ | ३९ |
| निरीश | १४१ | १३ | निर्व्यथन | ३६ | २ | निष्कुट | ५३ | १ |
| निर्कृति | ३७ | २ | निर्हार | १८८ | १७ | निष्कुटि | ७१ | १२५ |
| निर्गुण्डी | { ६३ ६३ | ६८ ७० | निर्हारिन् | २५ | ११ | निष्कुर | ५५ | १३ |
| निर्ग्रन्थन | १३७ | ११३ | निर्हादि | २९ | २३ | निष्कग | १८९ | २५ |
| निर्घोष | २९ | २३ | निलय | ४९ | ५ | निष्ठा | { ३२ २०१ | १५ ११ |
| निर्जर | ३ | ७ | नियह | ८४ | ३९ | निष्ठान | १४६ | ४४ |
| निर्जितेन्द्रियग्राम | ११५ | ४४ | नियत | २१० | ८४ | निष्ठीवन | १९१ | ३८ |
| निर्झर | ५२ | ५ | नित्राप | ११३ | ३१ | निष्ठुर | { २९ १७९ | १९ ७६ |
| निर्णय | २३ | ३ | नित्रीत | { १०३ ११६ | ११३ ५० | निष्ठेव | १९१ | ३८ |
| निर्णोजक | १६० | १० | निवृत्त | १८० | ८८ | निष्ठेया | १९१ | ३८ |
| निर्देश | १२२ | २५ | निवेश | १२४ | ३३ | निष्ठयुत | १८० | ८७ |
| निर्वन्ध | २४१ | २३६ | निशा | १७ | १ | निष्ठयति | १९१ | ३८ |
| निर्भर | ११ | ७० | निशान्त | ४९ | ५ | निष्णात | १६८ | ४ |
| निर्मद | १२४ | ३६ | निशापति | १४ | १४ | निष्पक्त | १८१ | ९७ |
| निर्मुक्त | ३६ | ६ | निशाब्दया | १४६ | ४१ | निष्पन्न | १८२ | १०० |
| निर्माक | ३७ | ९ | निशित | १८१ | ९१ | निष्पात्र | १८९ | २४ |
| निर्याण | १२४ | ३८ | निशीय | १८ | ६ | निष्प्रभ | १८२ | १०० |
| निर्यानन | २१७ | १२० | निशीयिनी | १७ | ४ | निष्प्रयाणि | १८३ | ११२ |
| निर्या | २४१ | २३६ | निथय | २३ | ३ | निसर्ग | ३६ | ३८ |
| निर्यपन (ण) | ११३ | ३० | निथ्रेणी | ५१ | १८ | निसृष्ट | १८० | ८८ |
| निर्वर्णन | १९० | ३१ | निषत्त | १३३ | ८८ | निसाल | १७८ | ६९ |
| निर्वहण | ३२ | १८ | निषद्भिन्न | १३० | ६९ | निस्तरण | १३७ | ११४ |
| निर्याण | { २४ १८२ | ६ ९६ | निषद्या | १९ | २ | निर्धेय | १३३ | ८९ |
| निर्यात | १८२ | ९६ | निषहर | ३९ | ९ | निष्ठात्र | १४७ | ८९ |
| निर्यादि | { २८ २१२ | १३ ९० | निषध | ५२ | ३ | निरसन | २९ | २३ |
| | | | निषाद | { ३० १६० | १ २० | निम्मान | २९ | २३ |
| | | | | | | निम्नान | १३७ | ११४ |
| | | | | | | निरास | ४१ | २२ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|----------------|--------------|-------------|-------------|--------------|-------------|-----------|--------------|--------------|
| निर्हिंसन | १३७ | ११३ | नूल | १७९ | ७८ | नौतार्य | ३९ | १० |
| निदीन | १६१ | १६ | नूद | ५९ | ४१ | न्यक्ष | २३९ | २२५ |
| निह्व | { २८ २३५ | { १७ २०८ | नूनम् | { २४४ २४८ | { २५० १६ | न्यग्रोध | { ५८ २१३ | { ३२ ९६ |
| नीकाश | १६५ | ३८ | नूपुर | १०२ | १०९ | न्यग्रोधी | ६६ | ८७ |
| नीच | १६१ | १६ | नृ | ८५ | १ | न्यच् | १७८ | ७० |
| नीचैस् | २४८ | १७ | नृत्य | ३१ | १० | न्यङ्कु | ७९ | १० |
| नीड | ८३ | ३७ | नृप | ११८ | १ | न्यस्त | १८० | ८८ |
| नीडोद्भव | ८३ | ३४ | नृपलक्ष्मन् | १२३ | ३२ | न्याद | १४९ | ५६ |
| नीध | ५१ | १४ | नृपसभ | २५८ | २७ | न्याय | १२२ | २४ |
| नीप | ५९ | ४२ | नृपासन | १२३ | ३१ | न्याय्य | १२२ | २५ |
| नीर | ३८ | ४ | नृशंस | १७५ | ४७ | न्यास | १५३ | ८१ |
| नील | २५ | १४ | नृसेन | २६३ | ४० | न्युङ्ख | २५५ | १७ |
| नीलकण्ठ | { ८२ २०१ | { ३० ४० | नेतृ | { १६९ १०० | { ११ ९३ | न्युज्ज | { ९४ २१८ | { ६१ १२८ |
| नीलङ्गु | ७९ | १३ | नेत्र | { २३० १०० | { १८० ९३ | न्यून | २१८ | १२८ |
| नीललोहित | ६ | ३५ | नेत्राम्बु | १०० | ९३ | | | |
| नीला | ८२ | २६ | नेदिष्ट | १७८ | ६८ | पक्कण | ५२ | २० |
| नीलाम्बर | ५ | २५ | नेपथ्य | १०१ | ९९ | पक्क | { १८१ १८२ | { ९१ ९६ |
| नीलाम्बुजन्मन् | ४४ | ३७ | नेमि | { ४२ १२८ | { २७ ५६ | पक्ष | { १९ ८३ | { १२ ३६ |
| नीलिका | ६३ | ७० | नेमी | ५७ | २६ | | { १०१ १३३ | { ९८ ८७ |
| नीलिनी | ६७ | ९५ | नैकभेद | १८० | ८३ | | { २३३ २३८ | { २२० २२० |
| नीली | .६६ | ९४ | नैगम | { १५३ २२२ | { ७८ १४० | पक्षक | ५१ | १४ |
| नीवाक | १८९ | २३ | नैचिकी | १५१ | ६७ | पक्षति | { १७ ८३ | { १ ३६ |
| नीवार | १४३ | २५ | नैपाली | १५८ | १०८ | | { ८३ ५१ | { ३६ १४ |
| नीवी | { १५३ २३६ | { ८० २१२ | नैमेय | १५३ | ८० | पक्षद्वार | ५१ | १४ |
| नीवृत् | ४६ | ८ | नैयग्रोध | ५६ | १८ | पक्षभाग | १२५ | ४० |
| नीगार | १०४ | ११८ | नैर्गत | { १० १२ | { ६० २ | पक्षमूल | ८३ | ३६ |
| नीहार | १५ | १८ | नैष्कि | ११९ | ७ | पक्षान्त | १८ | ७ |
| नु | २४४ | २४८ | नैर्लिशिक | १३० | ७० | पक्षिन् | ८२ | ३२ |
| नुनि | २७ | ११ | नो | २४७ | ११ | पक्षिणी | १८ | ५ |
| नुत्त | १८० | ८७ | नौ | ३९ | १० | पक्षमन् | २१७ | १२१ |
| नुन्न | १८० | ८७ | नौकादण्ड | ४० | १३ | पङ्क | { २१ ३९ | { २३ ९ |
| नृतन | १७९ | ७७ | | | | | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|------------|---------|-------|------------|---------|-------|-------------|---------|-------|
| पङ्क्ति | ४७ | १० | पङ्क्ति | ५९ | ४१ | पत्तिसहति | १२९ | ६७ |
| पङ्क्तिरुह | ४४ | ४० | पङ्क्ति | २५७ | २१ | पत्नी | ८५ | ५ |
| पङ्क्ति | ५४ | ४ | १५५ | ८८ | | ५५ | १४ | |
| १०८ | ७२ | पण | १५५ | ३९ | पञ्च | २३ | ३६ | |
| १५५ | | | १५६ | ४५ | | १२८ | ५८ | |
| पङ्गु | ९२ | ४८ | ३१ | ८ | | २२९ | १७९ | |
| पञ्चपचा | ६७ | १०२ | पणव | १८४ | १०९ | पञ्चपरशु | १६४ | ३३ |
| पचा | १८६ | ८ | पणायित | १८४ | १०९ | पञ्चपादया | १०१ | १०३ |
| पञ्चजन | ८५ | १ | पणित | १५३ | ८२ | पञ्चरथ | ८२ | ३३ |
| पञ्चता | १३८ | ११६ | पणितव्य | ९१ | ३९ | पञ्चलेखा | १०५ | १२२ |
| पञ्चदशी | १८ | ७ | पण्ड | १०८ | ५ | पञ्चाङ्ग | १०६ | १३९ |
| पञ्चम | ३० | १ | पाण्डित | १५३ | ८२ | १५८ | १११ | |
| पञ्चलक्षण | २६ | ५ | पण्य | ४९ | २ | पञ्चाङ्गुलि | १०५ | १२२ |
| पञ्चशर | ५ | २६ | पण्यवीथिका | ७४ | १५० | | ७९ | १५ |
| पञ्चाश | ९८ | ८१ | पण्या | १५३ | ७८ | पञ्चिन् | ८२ | ३३ |
| पञ्चाङ्गुल | ६१ | ५१ | पण्याजीव | ८२ | ३३ | | १३३ | ८७ |
| पञ्चालिका | १६३ | २९ | पतग | ८२ | २८ | | २१५ | १०६ |
| पञ्चास्य | ७८ | १ | पतङ्ग | १९७ | २० | पत्रोर्ण | ६१ | ५६ |
| पञ्जर | २६० | ३१ | पतङ्गिका | ८२ | २७ | | १०३ | ११३ |
| पञ्जिका | २५२ | ७ | पतम् | ८२ | ३३ | पथिक | १२० | १७ |
| पट | १०४ | ११६ | पतत्र | ८३ | ३६ | पथिन् | ४८ | १५ |
| पटघर | १०४ | ११५ | पनत्रिन् | ८२ | ३३ | पथ्या | ६२ | ५९ |
| | ५१ | १४ | | | | पट् | ९६ | ७१ |
| पटल | २३४ | २०१ | पतद्रुमह | १०७ | १३९ | पद | २१२ | ९३ |
| | ५१ | १४ | | २५७ | २१ | पदय | १२९ | ६६ |
| पटलप्रान्त | | | पतयालु | १७१ | ५७ | पदवी | ४८ | १५ |
| पटवासक | १०७ | १३९ | पताका | १३५ | ९९ | पदाजि | १२९ | ६६ |
| | ३१ | ६ | पताकिन् | १३० | ७१ | पदाति | १२९ | ६६ |
| | १३६ | १०८ | | ९० | ३५ | पदिक | १२९ | ६७ |
| | ७५ | १५५ | पति | १६९ | १० | पद्म | १२९ | ६७ |
| पटु | १६२ | १९ | पतिवरा | ८६ | ७ | पद्धति | ४८ | १५ |
| | २०१ | ४० | पतिवली | ८६ | १२ | | ११ | ७५ |
| पटुपर्णा | ७३ | १३८ | पतिवता | ८५ | ६ | | ४४ | ३९ |
| पटोल | ७५ | १५५ | पत्तन | ४८ | १ | पद्मक | १२५ | ३९ |
| पटोलिका | ७० | ११८ | | १२९ | ६६ | पद्मनारिणी | ७४ | १४६ |
| पट्ट | २५५ | १७ | पत्ति | १३२ | ८० | | ५ | २० |
| पाङ्ग | ५९ | ४१ | | २०८ | ७३ | पद्मनाथ | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|------------|---------|--------|--------------|---------|--------|------------|---------|--------|
| पद्मपत्र | ७४ | १४५ | परशु | १३४ | ९२ | परिचारक | १६१ | १७ |
| पद्मराग | १५६ | ९२ | परश्वध | १३४ | ९२ | परिणत | १८२ | ९६ |
| पद्मा | ५ | २७ | परश्वस् | २४९ | २२ | परिणय | ११८ | ५७ |
| | ६६ | ८५ | परश्वशत | १७७ | ६४ | परिणाम | १८७ | १५ |
| | ७४ | १४६ | पराक्रम | १३६ | १०२ | परिणाय | १६६ | ४५ |
| पद्माकर | ४२ | २८ | पराग | २२१ | १३८ | परिणाह | १०३ | ११४ |
| पद्माट | ७४ | १४७ | | ५६ | १७ | परितसू | २४७ | १३ |
| पद्मालया | ५ | २७ | | १९७ | २१ | परित्राण | १८६ | ५ |
| पद्मिन् | १२४ | ३५ | पराङ्मुख | १७२ | ३३ | परिदान | १५३ | ८० |
| पद्मिनी | ४४ | ३९ | पराचित | १६१ | १८ | परिदेवन | २८ | १६ |
| पद्य | २६० | ३१ | पराचीन | १७२ | ३३ | परिधान | १०४ | ११७ |
| पद्या | ४८ | १५ | पराजय | १३७ | १२१ | परिधि | १७ | ३२ |
| पनस | ६२ | ६१ | पराजित | १३७ | ११२ | | २१३ | ९७ |
| पनायित | १८४ | १०९ | पराधीन | १६९ | १६ | परिधिस्थ | १२९ | ६२ |
| पनित | १८४ | १०९ | पराज्ञ | १७० | २० | परिषण | १५३ | ८० |
| पन्न | १८३ | १०४ | पराभूत | १३७ | ११२ | परिपन्थिन् | १२० | ११ |
| पन्नग | ३७ | ८ | परारि | २४९ | २० | परिपाटी | ११४ | ३७ |
| पन्नगाशन | ६ | २९ | परार्थ | १७६ | ५८ | परिपूर्णता | १०७ | १३७ |
| पयस् | ३८ | ३ | परासन | १३७ | ११३ | परिपलव | ७१ | १३१ |
| | १४८ | ५१ | परास्त | १३८ | ११७ | परिप्लव | १७९ | ७५ |
| | २४० | २३३ | परास्कन्दिन् | १६२ | २५ | परिवर्ह | २४२ | २३९ |
| पयस्य | १४८ | ५१ | परिकर | २२७ | १६५ | परिभव | ३३ | २२ |
| पयोधर | २२७ | १६३ | परिकर्मन् | १०५ | १२० | परिभाषण | २८ | १४ |
| पर | १२० | ११ | परिक्रम | १८७ | १६ | परिभूत | १८३ | १०६ |
| | २३२ | १९१ | परिक्रिया | १८८ | २० | परिमल | २४ | १० |
| परजात | १६१ | १८ | परिक्षिप्त | १८० | ८८ | परिम्भ | १८७ | १३ |
| परतन्त्र | १६९ | १६ | परिखा | ४३ | २९ | | १९० | ३० |
| परपिण्डाद | १७० | २० | परियह | २४१ | २३७ | परिवर्जन | १६७ | ११४ |
| परभृत् | ८१ | २० | परिष | १३४ | ९१ | परिवादिनी | ३० | ३ |
| परभृत | ८० | १९ | | १९८ | २७ | परिवापित | १८० | ८५ |
| परमम् | २४७ | १२ | परिघातिन | १३४ | ९१ | परिवित्ति | ११८ | ५६ |
| परमा | १४ | १७ | परिचय | १९८ | २३ | परिवृढ | १६९ | ११ |
| परमान्न | ११२ | २४ | परिचर | १२९ | ६२ | परिवेत्तृ | ११८ | ५६ |
| परमेष्ठिन् | ४ | १६ | परिचर्या | ११४ | ३५ | परिवेष | १७ | ३२ |
| परंपराकृ | ११२ | २६ | परिचाय्य | १११ | २० | | | |
| परवत् | १६९ | १६ | | | | | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|------------|------------|----------|-----------|--------------|------------|-------------|--------------------|-----------------|
| परिव्याध | { ५७ ६२ | ३० ६० | पर्जन्य | ६७ | १०२ | पल्लव | ९१ | ४१ |
| परिनाज् | ११५ | ४२ | पर्जन्य | २२३ | १४६ | पल्लव | १०७ | १३८ |
| परिपद | ११० | १५ | पर्ण | { ५५ ५७ | १४ २२ | पल्लव | ५५ | १४ |
| परिष्कार | १०१ | १०१ | पर्ण | २५७ | २२ | पल्लव | ४२ | २८ |
| परिष्कृत | १०१ | १०० | पर्णशाला | ४९ | ६ | पत्र | १८९ | २४ |
| परिष्वग | १९० | ३० | पर्णास | ६५ | ७९ | पत्र | { १० १८९ | ६६ २४ |
| परितर | ८७ | १४ | पर्यङ्क | १०७ | १३८ | पत्रनाशन | ३७ | ८ |
| परितर्प | १८८ | २० | पर्यटन | ११४ | ३६ | पत्रमान | १० | ६६ |
| परितर्या | १८८ | २१ | पर्यन्तभू | ४७ | १४ | पत्रि | ८ | ५० |
| परिस्कन्द | १६१ | १८ | पर्याय | { ११४ १९० | ३७ ३३ | पत्रि | { ७७ ११५ १७६ | १६६ ४५ ५५ |
| परिस्तोम | १२५ | ४२ | पर्यवस्था | १८८ | २१ | पत्रिक | ४० | १६ |
| परिस्थ | १०७ | १३७ | पर्याप्त | १४९ | ५७ | पशुपति | ६ | ३२ |
| परिस्तु | १६५ | ३९ | पर्याप्त | १८६ | ५ | पशुभरण | १९१ | ३९ |
| परिस्तुता | १६५ | ४० | पर्याप्त | { ११४ २२३ | ३७ १४७ | पशुरज्जु | १५२ | ७३ |
| परोक्षक | १६८ | ७ | पर्याय | १३९ | ३ | पथात् | २४३ | २४३ |
| प्रीतिभाव | ३३ | २२ | पर्यवश्चन | ११३ | ३२ | पथात्ताप | ३४ | २५ |
| प्रीतिवर्त | १५३ | ८० | पर्यपणा | ५२ | १ | पश्चिम | १७९ | ८१ |
| प्रीतिवाद | ३८ | १३ | पर्यत | { ७६ २१७ | १६२ २२१ | पश्चिमा | १२ | १ |
| प्रीतिनाप | ११९ | १२९ | पर्यन्त | १८ | ७ | पश्चिमोत्तर | ४६ | ७ |
| प्रीतिवार | २२८ | १६९ | पर्यन्त | ९६ | ६९ | पाशु | १३५ | ९८ |
| प्रीतिवाद | ३९ | १० | पर्यन्त | { १५४ २३४ | ८६ २०२ | पाशुला | ८६ | ११ |
| प्रीतिटि | ११३ | ३२ | पर्यन्त | १६० | ६ | पाक | ८३ | ३८ |
| परितार | १८८ | २१ | पर्यन्त | ६७ | ९८ | पाकल | { ८६ १८६ | ३८ |
| परिहास | ३५ | ३२ | पर्यन्त | ९५ | ६३ | पाकशासन | ७१ | १२६ |
| परुत् | २४९ | २० | पर्यन्त | ९५ | ६३ | पाकशासनि | ७ | ४४ |
| परप | २९ | १९ | पर्यन्त | ९५ | ६३ | पाकशासनि | ८ | ४९ |
| परुस् | ७६ | १६२ | पर्यन्त | ९५ | ६३ | पाकस्थान | १८४ | २७ |
| पेत | १३८ | ११७ | पर्यन्त | ९५ | ६३ | पाक्य | १८६ | ४२ |
| पेतनाज् | १० | ६१ | पर्यन्त | ९५ | ६३ | पाक्यण्ड | ११५ | ८५ |
| पेट्यत्रि | २४९ | २१ | पर्यन्त | ९५ | ६३ | पाक्यचज्जन् | ५ | २९ |
| पेट्टका | १५१ | ७० | पर्यन्त | ९५ | ६३ | पाट | २४६ | ७ |
| पेट्थिन | १६१ | १८ | पर्यन्त | ९५ | ६३ | पाट्यर | १६२ | ०५ |
| पेट्थिणी | ८२ | २६ | पर्यन्त | ९५ | ६३ | पाटल | { २५ १२२ | १५ १५ |
| पेट्ठी | ५८ | ३२ | पर्यन्त | ९५ | ६३ | | | |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|----------------|---------|--------|----------------|---------|--------|----------------|---------|--------|
| पाटला | ६१ | ५४ | पादस्फोट | ९३ | ५२ | पारायण | १८५ | २ |
| पाटलि | ५९ | ३९ | पादाय | ९६ | ७१ | पारावत | ७९ | १४ |
| | ६१ | ५४ | पादाङ्गद | १०२ | १०९ | पारावताङ्गि | ७४ | १५० |
| पाठ | ११० | १४ | पादात | १२१ | ६७ | पारावार | ३८ | १ |
| | १९० | २९ | पादातिक | १२९ | ६६ | | २६१ | ३५ |
| पाठा | ६५ | ८४ | पादुका | १६३ | ३० | पाराशरिन् | ११५ | ४२ |
| पाठिन् | ६५ | ८० | पादू | १६३ | ३१ | पारिकाङ्क्षिन् | ११५ | ४२ |
| पाठिन | ४१ | १८ | पादूकृत् | १६० | ७ | पारिजातक | ८ | ५३ |
| पाणि | ९८ | ८१ | पाद्य | ११३ | ३३ | | ५७ | २६ |
| पाणिगृहिती | ८५ | ५ | पान | १६५ | ४० | पारितथ्या | १०१ | १०३ |
| पाणिघ | १६१ | १३ | पानगोष्ठिका | १६५ | ४३ | पारिप्लव | १७९ | ७५ |
| पाणिपीडन | ११८ | ५७ | पानपात्र | १६५ | ४३ | पारिभद्र | ५७ | २६ |
| पाणिवाद | १६१ | १३ | पानभाजन | १४४ | ३२ | पारिभद्रक | ६१ | ५३ |
| पाण्डर | २५ | १२ | पानीय | ३८ | ४ | पारिभाव्य | ७१ | १२६ |
| पाण्डु | २५ | १३ | पानीयशालिका | ४९ | ७ | पारियात्रक | ५२ | ३ |
| पाण्डुकम्बलिन् | १२७ | ५४ | पान्थ | १२० | १७ | पारिषद | ७ | ३७ |
| पाण्डुर | २५ | १३ | पाप | २१ | ५३ | पारिहार्य | १०२ | १०७ |
| पातक | २६० | ३३ | | १७५ | ४७ | पारि | २५३ | १० |
| पाताल | ३६ | १ | पापचेलि | ६५ | ८५ | पारुष्य | २८ | १४ |
| | २३४ | २०२ | पाप्मन् | २१ | २३ | पार्थिव | ११८ | १ |
| पातुक | १७१ | २७ | पामन् | ९३ | ५३ | पार्वती | ७ | ३९ |
| | ३९ | ८ | पामन | ९४ | ५८ | पार्वतीनन्दन | ७ | ४२ |
| पात्र | ११२ | २४ | पामर | १६१ | १६ | पार्थ | ९८ | ७९ |
| | १४५ | ३३ | पामा | ९३ | ५३ | | १९२ | ४२ |
| | २२९ | १७९ | पायस | १०५ | १२८ | पार्थभाग | १२५ | ४० |
| पात्री | २६३ | ४२ | | ११२ | २४ | पार्थास्थि | ९६ | ६९ |
| पात्रीव | २६१ | ३५ | पायु | ९६ | ७३ | पार्णि | ९६ | ७२ |
| पाथस् | ३८ | ४ | पाय्य | १५४ | ८५ | पार्णिग्राह | ११९ | १० |
| | ५६ | ७ | पार | ३९ | ८ | पालघ्न | ७७ | १६७ |
| पाद | ९६ | ७१ | पारद | १५७ | ९९ | पालङ्की | ७० | १२१ |
| | १५५ | ८९ | पारम्पर्योपदेश | १०९ | १२ | पालाश | २५ | १४ |
| | २११ | ८९ | पारशव | २३६ | २१० | पालि | १३४ | ९३ |
| पादकटक | १०२ | ११० | पारश्वधिक | १३० | ७० | | २३३ | १९७ |
| पादग्रहण | ११५ | ४१ | पारसीक | १२६ | ४५ | पालिन्दी | ६८ | १०८ |
| पादप | ५४ | ५ | पारलैण्य | ८९ | २४ | पालवा | २५२ | ५ |
| पादवन्धन | १४९ | ५८ | | | | | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-----------|---------|-------|-----------------|---------|-------|-----------|---------|-------|
| पावक | ९ | ५७ | पिठर | १४४ | ३१ | पियाल | ५९ | ३५ |
| पाश | १०१ | ९८ | | २३१ | १८८ | पिह | ९४ | ६० |
| पाशक | १६६ | ४५ | | १५६ | ९८ | पिशग | २५ | १६ |
| पाशिन | १० | ६४ | पिण्ड | १५७ | १०४ | पिशाच | ३ | ११ |
| पाशुपत | ६५ | ८१ | | २५६ | १८ | पिशित | ९५ | ६३ |
| पाशुपाल्य | १३८ | २ | पिण्डक | १०५ | १२८ | | १०५ | १२४ |
| पादया | १९३ | ४३ | पिण्डिका | १२८ | ५६ | पिशुन | १७५ | ४७ |
| पाश्चात्य | १७९ | ८१ | पिण्डीतक | ६१ | ५२ | | २१८ | १२७ |
| पाषाण | ५२ | ४ | पिण्याक | १९३ | ९ | पिशुना | ७२ | १३३ |
| पाषाणवारण | १६४ | ३४ | | २६० | ३२ | पिटक | १४७ | ४८ |
| पिक | ८० | १९ | पितामह | ४ | १६ | पिटपचन | १४४ | ३२ |
| पिह | २५ | १६ | | ९० | ३३ | पिट्रात | १०७ | १३९ |
| पिहल | १६ | ३१ | पितृ | ९१ | ३७ | पीठ | १०७ | १३८ |
| | २५ | १६ | | ८९ | २८ | पीडन | १३७ | १०९ |
| पिहला | १३ | ४ | पितृदान | ११३ | ३१ | पीडा | ३८ | ३ |
| | ९७ | ७७ | पितृपति | १० | ६१ | पीत | २५ | १४ |
| पिचण्ड | २५६ | १८ | पितृपितृ | १२ | २ | पीतदार | ६१ | ५३ |
| पिचिण्डिल | ९२ | ४४ | पितृप्रसू | ९० | ३३ | | ६२ | ६० |
| पिचु | १५८ | १०६ | पितृयन | १७ | ३ | | ६७ | १०१ |
| पिचुमन्द | ६२ | ६२ | पितृव्य | १३८ | ११८ | | ५७ | २७ |
| पिचुल | ५९ | ४० | पितृसन्निभ | ९० | ३१ | पितन | १०५ | १२४ |
| पिद्यट | १५८ | १०५ | पित्त | १६९ | १३ | | १५७ | १०३ |
| | ८२ | ३१ | विद्य (तीर्थ) | ९५ | ६२ | पीतसालक | ६० | ४३ |
| पिद्य | २६० | ३० | पित्तसू | ११७ | ५१ | पीता | १४६ | ४१ |
| पिच्छ | ६० | ४७ | पिधान | ८३ | ३४ | पीति | १२५ | ४३ |
| | २५३ | ९ | पिनद | १४ | १३ | पीताम्बर | ५ | १९ |
| पिच्छिल | १४७ | ४६ | | १२९ | ६५ | पीन | १७७ | ६१ |
| | ६० | ४६ | पिनाक | ६ | ३३ | पीनस | ९३ | ५१ |
| पिच्छला | ६२ | ६२ | | १९४ | १४ | पीनोमी | १५१ | ७१ |
| पिञ्ज | १३७ | ११५ | पिनाकिन् | ६ | ३३ | पीयूष | ८ | ५१ |
| पिञ्जर | १५७ | १०३ | पिपासा | १४९ | ५५ | | १४८ | ५१ |
| पिञ्जल | १३५ | ९९ | विपीलिका | २५३ | १ | पीलु | ५७ | २८ |
| पिट | १४३ | २६ | विप्ल | ५६ | २० | पीलुपर्णा | ७३ | १३९ |
| | १६३ | ३० | विप्लली | ६७ | ९७ | | ६५ | ८४ |
| पिटक | ९३ | ५३ | पिप्ललीमूल | १५८ | ११० | पीयर | १७७ | ६१ |
| | | | पिप्लु | ९२ | ४९ | पीवर | १७७ | ६१ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोक | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोक | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोक |
|-----------|---------------------|----------------|----------|---------------------|-----------------|------------------|-------------|------------|
| पुत | { ११५ १४३ १७६ | ४५ २३ ५५ | पृथग्जा | { २१५ १६१ १८१ | १०५ १६ ९३ | पेद्दी | ८३ | ३७ |
| पुतना | ६२ | ५९ | पृथग्विध | ४५ | ३ | पेटर | १४७ | ४५ |
| पुतिक | ६० | ४८ | पृथिवी | { १८५ १८६ १७७ | ३७ ४० ६० | पेनृप्यसेय | ८९ | २५ |
| पुतिकरज | ६० | ४८ | प्रयु | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पेनृप्यस्त्रोय | ८९ | २५ |
| पुतिकाष्ठ | { ६१ ६२ | ५४ ६० | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पेत्र (भहोरान) | २१ | २१ |
| पुतिगन्धि | २५ | १२ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पौगण्ड | ९२ | ४६ |
| पुतिकली | ६७ | ९६ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोटगल | { ७६ ७६ | १६३ १६२ |
| पूय | १४७ | ४८ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोश | ८७ | १५ |
| पूर | २५७ | २० | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोत | { ८३ २०६ | ३८ ६० |
| पूरणी | ६० | ४६ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोतगणज | ८० | १२ |
| पूरित | १८२ | ९८ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोतयाह | ४० | १२ |
| पूरप | ८५ | १ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोनाधा | ८१ | १९ |
| पूरु | { १७७ १८२ | ६५ ९८ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोत्र | २३० | १८० |
| पूरुकुम्भ | १२३ | ३२ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोत्रिन् | ७८ | २ |
| पूरुमा | १८ | ७ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पौण्डर्य | ७१ | १२७ |
| पूरुत | ११२ | २८ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पौवी | ८९ | २९ |
| पूरुष | { १७९ २२० | ८० १३४ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पौर | ७७ | १६६ |
| पूरुज | ९२ | ४३ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोरस्त्य | १७९ | ८० |
| पूरुदेव | ४ | १२ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोरय | ९९ | ८७ |
| पूरुपर्यत | ५२ | २ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोरोगय | १४१ | २७ |
| पूरुषा | १० | १ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोरोगमास | ११६ | ४८ |
| पूरुषुम् | २४९ | २१ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोरोगमासी | १८ | ७ |
| पूरुषा | १६ | २० | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोरुग्य | ११ | ७७ |
| पूरुषा | १८६ | ९ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोरुग्य | ११ | ७७ |
| पूरुषा | २७ | १० | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोरुग्य | ११ | ७७ |
| पूरुषा | { १३१ १३२ | ७८ ८१ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोरुग्य | ११ | ७७ |
| पूरुषा | २४६ | २ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोरुग्य | ११ | ७७ |
| पूरुषा | ६६ | ९० | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोरुग्य | ११ | ७७ |
| पूरुषा | { २० ११४ | ३१ ३८ | प्रयुक्त | { १८७ १९३ | ४७ ३ | पोरुग्य | ११ | ७७ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|--------------|---------|--------|--------------|---------|--------|--------------|---------|--------|
| प्रकीर्णक | १२३ | ३१ | प्रजाता | ८७ | १६ | प्रतिघातन | १३७ | ११४ |
| प्रकीर्य | ६० | ४८ | प्रजापति | ४ | १७ | प्रतिच्छाया | १६४ | ३६ |
| प्रकृति | २२ | २९ | प्रजावती | ८९ | ३० | प्रतिजागर | १८९ | २८ |
| | ३६ | ३७ | प्रज्ञा | २३ | १ | प्रतिज्ञात | १८३ | १०८ |
| | १२१ | १८ | | ८६ | १२ | प्रतिज्ञान | २४ | ५ |
| | २०८ | ७३ | प्रज्ञान | २१७ | १२२ | प्रतिदान | १५३ | ८१ |
| प्रकोष्ठ | ९८ | ८० | प्रज्ञ | ९२ | ४७ | प्रतिध्वान | ३० | २५ |
| प्रक्रम | १८९ | २६ | प्रडीन | ८३ | ३७ | प्रतिनिधि | १६४ | ३६ |
| प्रक्रिया | १२३ | ३१ | प्रणय | २२४ | १५१ | प्रतिपत् | १७ | १ |
| प्रक्षण | २९ | २५ | | १८९ | २५ | | २३ | १ |
| प्रक्षाण | २९ | २५ | प्रणव | २६ | ४ | प्रतिपन्न | १८३ | १०८ |
| प्रक्ष्वेडन | १३३ | ८७ | प्रणाद | २७ | ११ | प्रतिपादन | ११३ | २९ |
| प्रगण्ड | ९८ | ८० | प्रणाली | ४३ | ३५ | प्रतिबद्ध | १७४ | ४१ |
| प्रगतजानुक | ९२ | ४७ | प्रणिधि | १२० | १३ | प्रतिबन्ध | १८९ | २७ |
| प्रगल्भ | १७१ | २५ | | २१४ | १०० | प्रतिबिम्ब | २२५ | १५७ |
| प्रगाढ | २०३ | ४४ | प्रणिहित | १८० | ८६ | | १६४ | ३६ |
| प्रगुण | १७८ | ७२ | प्रणीत | १११ | २० | प्रतिभय | ३३ | २० |
| प्रगे | २४८ | १९ | | १४७ | ४५ | प्रतिभान्वित | १७१ | २५ |
| प्रग्रह | १३८ | ११९ | प्रणुत | १८४ | १०९ | प्रतिभू | १६६ | ४४ |
| | २४१ | २३७ | प्रणैय | १७१ | २५ | प्रतिमा | १६४ | ३६ |
| प्रग्राह | २४१ | २३७ | प्रतन | १७९ | ७७ | प्रतिमान | १२५ | ३९ |
| प्रग्रीव | २६१ | ३५ | प्रतल | ९८ | ८४ | | १६४ | ३६ |
| प्रघण | ५० | १२ | | ९९ | ८५ | प्रतिमुक्त | १२९ | ६५ |
| प्रघाण | ५० | १२ | प्रताप | १२१ | २० | प्रतियत्न | २१५ | १०७ |
| प्रचक्र | १३५ | ९६ | प्रतापस | ६५ | ८१ | प्रतियातना | १६४ | ३६ |
| प्रचलायित | १७२ | ३२ | प्रति | २४३ | २४५ | प्रतिरोधिन् | १६२ | २५ |
| प्रचुर | १७७ | ६३ | प्रतिकर्मन् | १०१ | ९९ | प्रतिवाक्य | २७ | १० |
| प्रचेतस् | १० | ६४ | प्रतिकूल | १८० | ८४ | प्रतिविषा | ६७ | ९९ |
| प्रचोदनी | ६६ | ९४ | प्रतिकृति | १६४ | ३६ | प्रतिशासन | १९० | ३४ |
| प्रच्छदपट | १०४ | ११६ | प्रतिकृष्ट | १७६ | ५४ | प्रतिश्याय | ९३ | ५१ |
| प्रच्छन्न | ५० | १४ | प्रतिक्षिप्त | १७४ | ४२ | प्रतिश्रय | २२४ | १५३ |
| प्रच्छर्दिका | ९३ | ५५ | प्रतिख्याति | १८९ | २८ | प्रतिश्रव | २४ | ५ |
| प्रजन | १८९ | २५ | प्रतियाह | १३२ | ७९ | प्रतिश्रुत् | ३० | २५ |
| प्रजविन् | १३१ | ७३ | प्रतियह | १०७ | १३९ | प्रतिटम्भ | १८९ | २७ |
| प्रजा | २०० | ३२ | प्रतिघा | ३४ | २६ | प्रतिसर | २२८ | १७४ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द. | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः |
|------------------|---------|-------|---------------|---------|-------|------------|---------|--------|
| प्रतिसीरा | १०४ | १२० | प्रत्यासार | १३२ | ७९ | प्रभव | २३६ | २१० |
| प्रतिहत | १७४ | ४१ | प्रत्याहार | १८७ | १६ | प्रभा | १७ | ३४ |
| प्रतिहास | ६४ | ७६ | प्रत्युत्कम | १८९ | २६ | प्रभाकार | १६ | २८ |
| प्रतीक | ९६ | ७० | प्रत्युपस् | १७ | २ | प्रभात | १७ | ३ |
| प्रतीकार | १३७ | ११० | प्रत्यूप | १७ | २ | प्रभाव | १२१ | २ |
| प्रतीकाश | १६८ | ३८ | प्रत्यूह | १८८ | १९ | प्रभिन्न | १२४ | ३६ |
| प्रतीक्ष्य | १६५ | ५ | प्रथम | २२२ | १४४ | प्रभु | १६९ | ११ |
| प्रतीची | १२ | १ | प्रथम | १७९ | ८० | प्रभूत | १७७ | ६३ |
| प्रतीत | १६८ | ९ | प्रथा | १८६ | ९ | प्रभृटक | १०७ | १३५ |
| प्रतीपदर्शिनी | २१० | ८२ | प्रथित | १६८ | ९ | प्रमथ | ७ | ३७ |
| प्रतीर | ८५ | २ | प्रदर | २२७ | १६४ | प्रमथन | १३७ | ११५ |
| प्रतीहार | ३९ | ७ | प्रदीप | १०७ | १३८ | प्रमयाधिप | ६ | ३३ |
| | ५१ | १६ | प्रदीपन | ३७ | १० | प्रमद | २२ | २४ |
| | ११९ | ६ | प्रदेशन | १२३ | २७ | प्रमदवन | ५४ | ३ |
| | २२८ | १७० | प्रदेशिनी | ९८ | ८१ | प्रमदा | ८५ | ३ |
| प्रतीहारी | २२८ | १७० | प्रदोष | १८ | ६ | प्रमनस् | १६८ | ७ |
| प्रतोली | ४९ | ३ | प्रद्युम्न | ५ | २६ | प्रमा | १८६ | १० |
| प्रत्न | १८९ | ७७ | प्रज्ञाव | १३७ | १११ | प्रमाण | २०४ | ५४ |
| प्रत्यक् | २४९ | २३ | प्रधन | १३६ | १०३ | प्रमाद | ३४ | ३० |
| प्रत्यक्पर्णी | ६६ | ८९ | प्रधान | २२ | २९ | प्रमापण | १३७ | ११२ |
| प्रत्यक्श्रेणी | ६६ | ८८ | | ११९ | ५ | प्रमिति | १८६ | १० |
| | ७३ | १४४ | | १७६ | ५७ | | ११२ | २६ |
| प्रत्यक्ष | १७९ | ७९ | | २१७ | १२२ | प्रमीत | १३८ | ११७ |
| प्रत्यम | १७९ | ७७ | प्रधि | १२८ | ५६ | प्रमीला | ३५ | ३७ |
| प्रत्यन्त | ४६ | ७ | प्रपञ्च | १२९ | २८ | प्रमुख | १७६ | ५७ |
| प्रत्यन्तपर्यन्त | ५३ | ७ | प्रपद | ९६ | ७१ | प्रमुदित | १८३ | १०३ |
| प्रत्यय | २२३ | १४७ | प्रपा | ४९ | ७ | प्रमोद | २२ | २४ |
| प्रत्ययित | १२० | १३ | प्रपात | ५२ | ४ | प्रयत | ११५ | ८५ |
| प्रत्यार्थन् | १२० | ११ | प्रपितामह | ९० | ३३ | प्रयस्त | १४७ | ४५ |
| प्रत्ययसिन्धु | १८४ | ११० | प्रपुत्राड | ७४ | १४७ | प्रयाम | १८९ | २३ |
| प्रत्याख्यात | १७३ | ४० | प्रपौण्डरीक | ७१ | १२७ | प्रयोगार्थ | १८९ | २६ |
| प्रत्याख्यात | १२० | ३१ | प्रफुल्ल | ५४ | ७ | प्रलम्बन | ५ | २४ |
| प्रत्यादिष्ट | १७३ | ४० | प्रवन्धकल्पना | २६ | ६ | | २१ | २२ |
| प्रत्यादेश | १२० | ३१ | प्रबोधन | १०५ | १२२ | प्रत्यय | ३५ | ३३ |
| प्रत्यालीड | १३३ | ८५ | प्रभञ्जना | १० | ६६ | | १३८ | ११६ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-------------|---------|--------|---------------|---------|--------|--------------|---------|--------|
| प्रलाप | २८ | १५ | प्रसभ | १३६ | १०८ | प्रस्थपुष्प | ६५ | ७९ |
| प्रवग | २०५ | ५६ | प्रसर | १८९ | २३ | प्रस्थान | १३४ | ९५ |
| प्रवयस् | ९१ | ४२ | प्रसरण | १३५ | ९६ | प्रस्फोटन | १४३ | २६ |
| प्रवर्ह | १७६ | ५७ | प्रसव | २३५ | २०८ | प्रसवण | ५२ | ५ |
| प्रवह | १८८ | १८ | प्रसव | १८६ | १० | प्रसाव | ९६ | ६७ |
| प्रवहण | १२७ | ५२ | प्रसववन्धन | ५६ | १५ | प्रहर | १८ | ६ |
| प्रवल्लिक | २६ | ६ | प्रसव्य | १८० | ८४ | प्रहरण | १३२ | ८२ |
| प्रवारण | १८६ | ३ | प्रसह्य | २४७ | १० | प्रहस्त | ९८ | ८४ |
| प्रवाल | ३१ | ७ | प्रसाद | १४ | १६ | प्रहि | ४२ | २६ |
| | १५६ | ९३ | | २१२ | ९१ | प्रहेलिका | २६ | ६ |
| प्रवाह | १८८ | १८ | प्रसाधन | १०१ | ९९ | प्रहूलन्न | १८३ | १०३ |
| प्रवासन | १३७ | ११३ | प्रसाधनी | १०७ | १३९ | प्रांशु | १७८ | ७० |
| प्रवाहिका | ९३ | ५५ | प्रसाधित | १०१ | १०० | प्राकार | ४९ | ३ |
| प्रविख्याति | १८९ | २८ | प्रसारिन् | १७२ | ३१ | प्राकृत | १६१ | १६ |
| प्रविदारण | १३६ | १०३ | प्रसित | १६८ | ९ | प्राग्दक्षिण | ४६ | ७ |
| प्रविश्रम्भ | १८८ | २० | प्रसिति | १८७ | १४ | प्राग्वंश | ११० | १६ |
| प्रयोग | १६८ | ४ | प्रसिद्ध | २१४ | १०४ | प्राग्रहर | १७६ | ५८ |
| | २७ | ७ | प्रसू | २४० | २२९ | प्राग्न्य | १७६ | ५८ |
| | १८८ | १८ | | ८९ | २९ | प्राधार | १८६ | १० |
| | १८० | ८८ | प्रसूता | ८७ | १६ | प्राच | २४८ | १६ |
| | १७९ | ७६ | प्रसूति | १८६ | १० | | २४९ | २३ |
| | १७६ | ५७ | प्रसूतिका | ८७ | १६ | प्राचिका | २५३ | ८ |
| | १०१ | ९८ | प्रसूतिज | ३८ | ३ | प्राची | १२ | १ |
| | १२५ | ४२ | प्रसून | ५६ | १७ | प्राचीन | ४९ | ३ |
| | ९८ | ८० | | २१८ | १२३ | प्राचीना | ६५ | ८५ |
| | १७९ | ८१ | प्रसूजनयितारौ | ९१ | ३७ | प्राचीनावीत | ११६ | ५० |
| | २७ | १० | प्रसूत | १८० | ८८ | प्राच्य | ४६ | ७ |
| | १८९ | २२ | प्रसूना | ९६ | ७२ | प्राजन | १४१ | १२ |
| | १७१ | २२ | प्रसूति | ९९ | ८५ | प्राजितृ | १२९ | ५९ |
| | १३० | ७२ | प्रमेव | १४३ | २६ | प्राज | १०८ | ५ |
| | १५० | ६३ | प्रमेवक | ३१ | ७ | प्राजा | ८६ | १२ |
| | १५१ | ७२ | प्रस्तर | ५२ | ४ | प्राजी | ८६ | १२ |
| | २० | १४ | प्रस्ताव | १८९ | २४ | प्राज्य | १७७ | ८६ |
| | १४ | १६ | प्रत्य | ५२ | ५ | प्राद्विवाक | ११९ | ५ |
| | १३१ | ४८ | | १५५ | ८९ | | | |
| | | | | २११ | ८८ | | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः |
|----------------|---------|--------|-----------|---------|--------|------------|---------|--------|
| माण | { १० | ६७ | प्रासिक | १३० | ७० | प्रक्ष | { ५८ | ३२ |
| | { १३६ | १०२ | प्राद्य | १७ | ३ | | { ६० | ४३ |
| | { १३८ | ११९ | | { ९० | ३५ | | { ३९ | ११ |
| | { १५७ | १०४ | प्रिय | { १७६ | ५३ | प्रव | { ४२ | २४ |
| माणम् | २२ | ३० | | { ५९ | ४२ | | { ८३ | ३४ |
| पातम् | २४८ | १९ | प्रियक | { ६० | ४४ | | { १६२ | १९ |
| पातिहारिक | १६० | ११ | | { ६१ | ५६ | प्रवग | { ७१ | १३२ |
| पायमकल्पिक | १०९ | ११ | | { ७९ | ९ | | { ७८ | ३ |
| पातुस् | { २४५ | २५६ | प्रियङ्गु | { ६१ | ५५ | प्रवङ्ग | { ७८ | ३ |
| | { २४७ | १२ | | { १४२ | २० | प्रवङ्गम् | २२१ | १३८ |
| प्रादेश | ९८ | ८३ | प्रियता | | | प्राक्ष | ५६ | १८ |
| प्रादेशान | ११३ | ३० | प्रियवद | १७३ | ३६ | प्रीहम् | ९५ | ६६ |
| प्राध्वम् | २४६ | ४ | प्रोणन | १८६ | ४ | प्रीहशत्रु | ६० | ४९ |
| प्रान्तर | ४८ | १७ | प्रीत | १८३ | १०३ | प्रुत | १२८ | ४८ |
| प्राप्त | { १८० | ८६ | प्रीति | २२ | २४ | प्रुष्ट | १८२ | ९९ |
| | { १८३ | १०४ | प्रुष्ट | १८२ | ९९ | प्रोप | १८६ | ९ |
| प्राप्तपञ्चत्व | १३८ | ११७ | प्रेक्षा | { २३ | १ | प्सात | १८४ | ११० |
| प्राप्तरूप | २२० | १३१ | | { २३९ | २२४ | फ | | |
| प्राप्ति | १०७ | ६९ | प्रेङ्खा | १२७ | ५३ | फणा | ३७ | ९ |
| प्राप्य | १८१ | ९२ | प्रेङ्खित | १८० | ८७ | फणिज्जक | ६५ | ७९ |
| प्राभृत | १२३ | २७ | प्रेत | २०६ | ६० | फणिन् | ३७ | ७ |
| प्राय | { ११७ | ५३ | प्रेता | ३७ | २ | | { १३४ | ७ |
| | { २२४ | १५३ | प्रेत्य | २४७ | ८ | फल | { १४१ | ९० |
| प्रायस् | २४८ | १७ | प्रेमन् | { ३४ | २७ | | { २३४ | २०१ |
| प्रायत | १८२ | ९७ | | { २२४ | १५२ | | { २५७ | २३ |
| प्रालम्ब | १०७ | १३६ | प्रेष्ठ | १८४ | १११ | फलक | १३४ | ९० |
| प्रालम्बिका | १०१ | १०४ | प्रेष | २३८ | २१९ | फलकपाणि | १३० | ७१ |
| प्रालेय | १५ | १८ | प्रेष्य | १६१ | १७ | फलत्रिक | १५८ | १११ |
| प्रानार | १०४ | ११७ | प्रोक्षण | १२४ | २६ | फलपाकान्ता | ५४ | ६ |
| प्रावृत | १०३ | ११३ | प्रोक्षित | १२४ | २६ | फलपूर | ६४ | ७२ |
| प्राट् | २० | १९ | प्रोष | १२७ | ४९ | फलपूर | ५८ | ७ |
| प्राट्पायणो | ६६ | ८६ | प्रोषपद | १५ | २२ | फलाध्यक्ष | ६० | ८५ |
| प्रास | १३१ | ९३ | प्रोडी | ४१ | १८ | फलित | ५४ | ७ |
| प्रासद्व | १२८ | ५७ | प्रोडपद | २० | १७ | फलित | ५४ | ७ |
| प्रासङ्ग्य | १५० | ६४ | प्रोड | १७१ | ७६ | फलिनी | { ६१ | ५५ |
| प्रासाद | ५० | ९ | | | | | { ७२ | १३६ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-----------|---------|--------|-------------|---------|--------|-------------|---------|--------|
| फली | ६१ | ५५ | बन्धन | १२२ | २६ | बलि | ११० | १४ |
| फलेग्रही | ५४ | ६ | | १८७ | १४ | | १२३ | २७ |
| फलैरुहा | ६१ | ५४ | बन्धु | ९० | ३४ | | २३३ | १९५ |
| फल्गु | ६२ | ६१ | बन्धुजीवक | ६४ | ७३ | बलिध्वंसिन् | ५ | २१ |
| | १७६ | ५६ | बन्धुता | ९० | ३५ | बलिन | ९२ | ४५ |
| फाणित | १४६ | ४३ | बन्धुर | १७८ | ६९ | बलिपुष्ट | ८१ | २० |
| फाण्ट | १८१ | ९४ | बन्धुल | ८९ | २६ | बलिभ | ९२ | ४५ |
| फाल | १०३ | १११ | बन्धूक | ६४ | ७३ | बलिभुज् | ८१ | २० |
| | १४१ | १३ | बन्धूकपुष्प | ६० | ४४ | बलिर | ९२ | ४९ |
| फाल्गुन | २० | १५ | बभ्रु | २२८ | १७० | बलिसन्न | ३६ | १ |
| फाल्गुनिक | २० | १५ | बर्बर | ६६ | ९० | बलीवर्द | १४९ | ५९ |
| फाल्गुनी | २५२ | ६ | बर्बरा | ७३ | १३९ | बल्लव | १४४ | २७ |
| फुल्ल | ५४ | ८ | बर्ह | ८२ | ३१ | | १४९ | ५७ |
| फेन | १५७ | १०५ | बर्हपुष्प | २४१ | २३६ | बल्वज | ७६ | १६३ |
| | २५६ | १९ | बर्हिः | ७१ | १३२ | बष्कयिणी | १५१ | ७१ |
| फेनिल | ५८ | ३१ | बर्हिः | ९ | ५७ | बस्त | १५२ | ७६ |
| | ५९ | ३८ | बर्हिण | ८२ | ३० | बस्ति | ९६ | ७३ |
| फेरव | ७८ | ५ | बर्हिन् | ८२ | ३० | बहिर्द्वार | ५१ | १६ |
| फेरु | ७८ | ५ | बर्हिर्मुख | ३ | ९ | बहिष्ठ | १८४ | १११ |
| फेला | १४९ | ५६ | बर्हिष्ठ | ७० | १२२ | बहिस् | २४८ | १७ |
| ब | | | | ५ | २५ | बहु | १७७ | ६३ |
| यक | ८१ | २२ | बल | १३१ | ७८ | बहुकर | १७० | १७ |
| वकुल | ६२ | ६४ | | १३६ | १०२ | बहुगर्हवाक् | १७३ | ३६ |
| वडिश | ४० | १६ | | २३३ | १९५ | बहुपाद् | ५८ | ३२ |
| वत | २४३ | २४४ | बलदेव | २५७ | २२ | बहुप्रद | १६८ | ६ |
| वदर | ५९ | ३७ | बलभद्र | ५ | २४ | बहुमूल्य | १०३ | ११३ |
| वदरा | ६९ | ११६ | बलभद्रिका | ७४ | १५० | बहुरूप | १०५ | १२८ |
| | ७५ | १५१ | बलवत् | ९२ | ४४ | | १७७ | ६३ |
| वदरी | ५९ | ३६ | | २४६ | २ | बहुल | १८४ | ११२ |
| वज्र | १७४ | ४२ | बलविन्यास | १३१ | ७९ | | २३३ | १९९ |
| | १८१ | ९५ | बला | ६८ | १०७ | बहुला | ७१ | १२५ |
| वधिर | ९२ | ४८ | बलाका | ८१ | २५ | | २३३ | १९९ |
| वन्दिन् | १३५ | ९७ | बलात्कार | १३६ | १०८ | बहुलीकृत | १४३ | २३ |
| वन्दी | १३८ | ११९ | बलाराति | ८ | ४६ | बहुवारक | ५८ | ३४ |
| वन्धकी | ८६ | १० | बलाहक | १३ | ६ | बहुविध | १८१ | ९३ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|------------|---------|-------|------------|---------|-------|----------------|---------|-------|
| बहुवेतस | ४६ | ९ | बाह्वलेय | ७ | ४२ | बुद्धि | २३ | १ |
| बहुधृता | ६७ | १०० | बाह्वलिक | { १२६ | ४५ | बुद्बुद् | २५६ | १९ |
| बहुसूति | १५१ | ७० | | { २६० | ३२ | बुध | { १६ | २६ |
| बाकुची | ६७ | ९६ | बाह्वलीक | { १०५ | १२४ | | { १०८ | ५ |
| बाह्व | { ११ | ७० | | { १४६ | ४० | बुधित | २१४ | १०० |
| | { २०३ | ४४ | बाह्व | १९३ | ९ | बुध्न | १८३ | १०८ |
| बाण | { १३३ | ८६ | विडाल | २४८ | १७ | बुभुक्षा | ५५ | १२ |
| | { २०३ | ४५ | विडौजस् | ७८ | ६ | बुभुक्षित | १४८ | ५४ |
| बाणा | ६४ | ७४ | विन्दु | ७ | ४४ | बुभुक्षित | १७० | २० |
| बादर | १०३ | १११ | विन्दु | ३९ | ६ | बुस | १४२ | २२ |
| बाधा | ३८ | ३ | विन्दुजालक | १२५ | ३९ | बुस्त | २६१ | ३४ |
| बान्धकिनेय | ८९ | २६ | बिम्ब | १४ | १५ | बृद्धित | १३६ | १२७ |
| बान्धव | ९० | ३४ | बिम्बिका | ७३ | १२९ | बृपी | ११६ | ४६ |
| बार्हत | ५६ | १९ | बिल | ३६ | १ | बृहत् | १७७ | ६० |
| | { ७० | १२२ | बिलेगय | ३७ | ८ | बृहत्तिका | १०४ | ११७ |
| बारु | { ९१ | ४२ | बिल्व | ५८ | ३२ | बृहती | { ६६ | ७४ |
| | { २३४ | २०५ | बिस | ४४ | ४२ | | { २०८ | ७५ |
| बालगर्भिणी | १५१ | ७० | विसकण्डिका | ८१ | २५ | बृहत्कुक्षि | ९२ | ८४ |
| बालतनय | ६० | ४९ | विलप्रखन | ४४ | ४१ | बृहन्नानु | ९ | ५७ |
| बालतृण | ७७ | १६७ | विसिनी | ४४ | ३९ | बृहस्पति | १५ | २४ |
| बालमूषिका | ७९ | १२ | विस्त | १५४ | ८६ | बोधकर | १३५ | ९७ |
| बाला | ३२ | १४ | बीज | { २२ | २८ | बोधिद्रुम | ५६ | २० |
| बालिश | { १७५ | ४८ | | { ९५ | ६२ | बोल | २५७ | १०४ |
| | { २३७ | २१८ | बीजकोश | ४४ | ४३ | ब्रध | १६ | २८ |
| बालेय | १५२ | ७७ | बीजपूर | ६४ | ७८ | ब्रह्मचारिन् | { १०८ | ३ |
| बालेयशाक | ६६ | ९० | बीजाकृत | १४० | ८ | | { १०५ | ४३ |
| बाल्य | ९१ | ४० | बीजिन् | १०८ | २ | ब्रह्मण्य | ५९ | ४१ |
| बाष्प | २१९ | १३० | बीज्य | १०८ | २ | ब्रह्मत्व | ११७ | ५२ |
| बाष्पिका | १४६ | ४० | | { ३३ | १७ | ब्रह्मदर्भा | ७४ | १८५ |
| बाह्व | ९८ | ८० | बीमत्स | { ३३ | १९ | ब्रह्मदारु | ५९ | ४१ |
| बाह्वज | ११८ | १ | | { २४१ | २३४ | ब्रह्मन् | { ४ | १६ |
| बाह्वदा | ४३ | ३३ | बुक | ६५ | ८१ | | { २१६ | ११४ |
| बाह्वमूल | ९८ | ७९ | बुक्ता | ९५ | ६४ | ब्रह्मपुत्र | ३७ | १० |
| बाह्वयुद्ध | १३६ | १०६ | बुद्ध | { ४ | १३ | ब्रह्मपन्धु | २१४ | १०४ |
| बाह्वल | २० | १८ | | { १८३ | १०८ | ब्रह्मप्रिन्दु | ११५ | ३९ |
| | | | | | | ब्रह्मभूय | ११७ | ५२ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-----------------|---------|--------|-------------|---------|--------|-------------|---------|--------|
| ब्रह्मयज्ञ | ११० | १४ | भट्टिनी | ३२ | १३ | भव | ६ | ३६ |
| ब्रह्मवर्चस | ११५ | ३९ | भण्टाकी | ६९ | ११४ | भवन | २३५ | २०६ |
| ब्रह्मसायुज्य | ११७ | ५२ | भण्डिल | ६२ | ६३ | भवानी | ४९ | ५ |
| ब्रह्मसू | ५ | २८ | भण्डी | ६६ | ९१ | भविक | ७ | ३९ |
| ब्रह्मसूत्र | ११६ | ५० | भण्डीरि | ६६ | ९१ | भवितृ | २२ | २६ |
| ब्रह्माञ्जलि | ११५ | ३९ | भद्र | २२ | २५ | भविष्य | १७२ | २९ |
| ब्रह्मासन | ११५ | ४० | भद्रकुम्भ | १४९ | ५९ | भविष्णु | १७२ | २९ |
| ब्रह्म | २१ | २१ | भद्रदारु | १२३ | ३२ | भव्य | २२ | २६ |
| ब्राह्मण | ११७ | ५१ | भद्रपर्णी | ६१ | ५३ | भषक | १६२ | २२ |
| ब्राह्मणयष्टिका | १०८ | ४ | भद्रवला | ५९ | ३६ | भस्त्रा | १६४ | ३३ |
| ब्राह्मणी | ६६ | ८९ | भद्रमुस्तक | ७५ | १५३ | भस्मगन्धिनी | १२० | १२० |
| ब्राह्मण्य | ६६ | ८९ | भद्रयव | ७६ | १६० | भस्मगर्भा | ६२ | ६३ |
| ब्राह्मी | १९२ | ४१ | भद्रश्री | ६३ | ६७ | भा | १७ | ३४ |
| भ | ७ | ३७ | भद्रासन | १०६ | १३१ | भाग | १५५ | ८९ |
| भ | २६ | १ | भय | १२३ | ३१ | भागधेय | २२ | २८ |
| भ | ७२ | १३७ | भयङ्कर | ३३ | २१ | भागिनेय | १२३ | २७ |
| भ | १५ | २१ | भयद्रुत | ३६ | २० | भागिनी | ९० | ३६ |
| भक्त | १४७ | ४८ | भयानक | १७४ | ४२ | भागिणी | ४३ | ३१ |
| भक्षक | १७० | २० | भर | ३३ | १७ | भाग्य | २२ | २८ |
| भक्षित | १८४ | ११० | भरण | ३३ | २० | भाजन | २२५ | १५५ |
| भक्ष्यकार | १४४ | २८ | भरण्य | ११ | ६९ | भाण्ड | १४५ | ३३ |
| भग | ९७ | ७६ | भरण्यभुज् | १६५ | ३९ | भाण्ड | १४५ | ३३ |
| भगन्दर | १२८ | २६ | भरद्वाज | २०२ | ४३ | भाद्र | २० | १७ |
| भगवत् | ९४ | ५६ | भर्ग | १७० | १९ | भाद्रपद | २० | १७ |
| भगिनी | ४ | १३ | भर्तृ | ८० | १५ | भाद्रपदा | २० | १७ |
| भङ्ग | ८९ | २९ | भर्तृदारक | ६ | ३५ | भाद्रपदा | १५ | २२ |
| भङ्गा | ३८ | ५ | भर्तृदारिका | ९० | ३५ | भानु | १६ | ३१ |
| भङ्गा | १४२ | २० | भर्त्सन | २०५ | ५९ | भानु | १७ | ३३ |
| भङ्गि | २५३ | ८ | भर्मन् | ३२ | १२ | भामिनी | २१५ | १०५ |
| भङ्ग्य | १४० | ७ | भर्मन् | ३२ | १३ | भामिनी | ८५ | ४ |
| भजमान | १२२ | २४ | भर्मन् | २८ | १४ | भार | १५४ | ८७ |
| भट्ट | १२९ | ६१ | भर्मन् | १५६ | ९४ | भारत | ४६ | ६ |
| भट्टि | १४७ | ४५ | भर्मन् | १६५ | ३८ | भारती | २६ | १ |
| भट्टा | ३२ | १३ | भर्मन् | ५९ | ४२ | भारद्वाजी | ६९ | ११६ |
| भट्टा | ३२ | १३ | भर्मन् | ७८ | ३ | भार्यष्टि | १६३ | ३० |
| भट्टा | ३२ | १३ | भर्मन् | ७८ | ४ | भारवाह | १६१ | १५ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-----------|---------|-------|-------------|---------|-------|-------------|---------|-------|
| भारिक | १६१ | १५ | मीम | ६ | ३६ | भृदार | ७८ | २ |
| भार्गव | १६ | २५ | | ३३ | २० | भृदेव | १०८ | ४ |
| भार्गवी | ७६ | १५८ | मीरु | ८५ | ३ | भृनिम्ब | ७३ | १४३ |
| भाङ्गी | ६६ | ८९ | | १७१ | २६ | भूप | ११८ | १ |
| भार्या | ८५ | ६ | मीरुक | १७१ | २६ | भूपदी | ६३ | ७० |
| भार्यापति | ९१ | ३८ | मीलुक | १७१ | २६ | भूमृत् | २०६ | ६१ |
| | ३२ | १२ | मीषण | ३३ | २० | भूमन् | २४८ | १७ |
| भाय | ३६ | २१ | मीष्म | ३३ | २० | भूमि | ४५ | २ |
| | २३५ | २०७ | मीष्मस्र | ४३ | ३१ | भूमिजम्बुका | ५९ | ३८ |
| | १०६ | १३४ | मुक्त | १८४ | १११ | | ७० | ११८ |
| भावित | १४७ | ४६ | | १७८ | ७१ | भूमिस्पृक् | १३८ | १ |
| | १८३ | १०४ | मुम | १८१ | ९१ | भूयस् | १७७ | ६३ |
| भावुक | २२ | २६ | मुज | ९८ | ८० | भूयिष्ठ | १७७ | ६३ |
| भाषा | २६ | १ | मुजग | ३६ | ६ | | १७७ | ६३ |
| भाषित | २६ | १ | मुजङ्ग | ३६ | ६ | भूरी | २३० | १८२ |
| | १८३ | १०७ | मुजङ्गमुज् | ८२ | ३० | भूरिफेना | ७३ | १८३ |
| भाष्य | २६० | ३१ | मुजङ्गम | ३७ | ६ | भूरिमाय | ७८ | ५ |
| भात | १७ | ३४ | मुजङ्गाक्षी | ६९ | ११५ | भूरुण्डी | ६३ | ६९ |
| भास्कर | १६ | २८ | मुजसिरस् | ९७ | ७८ | भूर्ज | ६० | ४६ |
| भास्वत् | १६ | ३९ | मुजान्तर | ९७ | ७७ | भूषण | १०१ | १०१ |
| | १८६ | ६ | मुजिष्य | १६१ | १७ | भूषित | १०१ | १०० |
| भिक्षा | २३२ | २२४ | | ३८ | ३ | भूष्णु | १७२ | २९ |
| | १०८ | ३ | भुवन | ४६ | ६ | भूस्तृण | ७७ | १६७ |
| भिक्षु | ११५ | ४२ | | ४५ | २ | भृगु | ५२ | ४ |
| भित्त | १४ | १६ | भू | ४५ | २ | | ७२ | १३४ |
| भित्ति | ४९ | ४ | | ३ | ११ | भृङ्ग | ८० | १६ |
| भिदा | १८६ | ५ | भूत | १८३ | १०४ | | ८० | २९ |
| भिदुर | ८ | ५० | | २०९ | ७८ | भृङ्गराज | ७५ | १५१ |
| भिन्दिपाल | १३४ | ९१ | भूतकेश | १५८ | १११ | भृङ्गार | १२३ | ३२ |
| | १८० | ८२ | भूतवेशी | ६३ | ७१ | भृङ्गारी | ८२ | ०८ |
| भिन्न | १८२ | १०० | भूतात्मन् | २१५ | १०५ | भृतक | १६१ | १८ |
| भियज् | ९४ | ५७ | भूतानास | ६१ | ५८ | भृति | १६५ | ३८ |
| भिस्तया | १४७ | ४९ | भृति | ७ | ३८ | भृतिभुज् | १६१ | १८ |
| भिस्ता | १४७ | ८८ | | २०७ | ६ | भृत्या | १६८ | ३८ |
| भी | ३३ | २१ | भृतिक | १९३ | ८ | प्रत्य | १६१ | १७ |
| भीति | ३३ | २१ | भूतेश | ६ | ३१ | भृश | ११ | ७० |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|---------------|---------|--------|-----------|---------|--------|--------------|---------|--------|
| भेक | ४२ | २४ | भ्रात्रीय | ९० | ३६ | मञ्जूषा | १६३ | ३० |
| भेकी | ४२ | २४ | भ्रान्ति | २३ | ४ | मठ | ५० | ८ |
| भेद | १२१ | २० | भ्राष्ट्र | १४४ | ३० | मड्डु | ३१ | ८ |
| | १२२ | २१ | भ्रुकुंस | ३२ | ११ | मणि | १५६ | ९३ |
| भेदित | १८२ | १०० | भ्रुकुटी | ३५ | ३७ | मणिक | १४४ | ३१ |
| भेरी | ३१ | ६ | भ्रू | १०० | ९२ | मणिवन्ध | ९८ | ८१ |
| भेषज | ९३ | ५० | भ्रुकुंस | ३२ | ११ | मण्ड | ६१ | ५१ |
| भैक्षा | ११६ | ४७ | भ्रुकुटी | ३५ | २७ | | १४७ | ४९ |
| भैरव | ३३ | १९ | | ९१ | ३९ | मण्डन | १०१ | १०२ |
| भैषज्य | ९३ | ५० | भ्रूण | २०३ | ४५ | | १७२ | २९ |
| भोग | १९७ | २३ | | २२१ | १३५ | मण्डप | ५० | ९ |
| भोगवती | २०७ | ६९ | भेष | १२२ | २३ | | १३ | ६ |
| भोगिन् | ३७ | ८ | | | | मण्डल | १४ | १५ |
| भोगिनी | ८५ | ५ | म | | | | १७ | ३२ |
| भोजन | २४९ | ५५ | मकर | ४१ | २० | मण्डलक | ९३ | ५४ |
| भोस् | २४६ | ७ | मकरध्वज | ५ | २७ | मण्डलाय | १३३ | ८९ |
| भौम | १६ | २५ | मकरन्द | ५६ | १७ | मण्डलेश्वर | ११८ | २५ |
| भौरिक | ११९ | ७ | मकुटक | १४२ | १७ | मण्डहारक | १६० | १० |
| भंश | १२२ | २३ | मकूलक | ७३ | १४४ | मण्डित | १०१ | १०० |
| भ्रुकुंस | ३२ | ११ | मक्षिका | ८२ | २६ | मण्डूक | ४२ | २४ |
| भ्रुकुटि | ३५ | २७ | मख | ११० | १३ | मण्डूकपर्ण | ६६ | ९१ |
| | २३ | ४ | मगध | १३५ | ९७ | मण्डूकपर्णी | ६६ | ९१ |
| भ्रम | ३९ | ७ | मधवन् | ७ | ४४ | मण्डूर | १५६ | ९८ |
| | १८६ | ९ | मङ्क्षु | २४६ | २ | मतङ्गज | १२४ | ३४ |
| भ्रमर | ८२ | २९ | मङ्गल | २२ | २५ | मतलिका | २२ | २७ |
| भ्रमरक | १०० | ९६ | मङ्गल्यक | १४२ | १७ | मति | २३ | १ |
| भ्रमि | १८६ | ९ | मङ्गल्या | १०५ | १२७ | | १२४ | ३६ |
| भ्रष्ट | १८३ | १०४ | मर्चिका | २२ | २७ | मत्त | १७१ | २३ |
| भ्रष्टयव | १४७ | ४७ | मज्जा | ५५ | १२ | | १८३ | १०३ |
| भ्राजिष्णु | १०१ | १०१ | मञ्जू | १०७ | १३८ | मत्तकाशिनी | ८५ | ४ |
| भ्रातरौ | ९० | ३६ | मञ्जूरि | ५५ | १३ | मत्सर | २२८ | १७२ |
| भ्रातृज | ९० | ३६ | मञ्जिष्ठा | ६६ | ९० | मत्स्य | ४० | १७ |
| भ्रातृजाया | ८९ | ३० | मञ्जिर | १०२ | १०९ | मत्स्यण्डी | १४६ | ४३ |
| भ्रातृभगिन्यौ | ९० | ३६ | मञ्जु | १७५ | ५२ | मत्स्यपित्ता | ६६ | ८६ |
| भ्रातृव्य | २२३ | १४५ | मञ्जुल | १७५ | ५२ | मत्स्यवेधन | ४० | १६ |
| | | | | | | मत्स्याक्षी | ७२ | १३७ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-------------|---------|-------|--------------|---------|-------|--------------------|---------|-------|
| मत्स्यात्खग | २३८ | २१९ | मधुरा | ७५ | १५२ | मनोगुप्ता | १५८ | १०८ |
| मत्स्याधानी | ४० | १६ | मधुरिका | ६८ | १०५ | मनोजवस | १६९ | १३ |
| मंथित | १५८ | ५३ | मधुरिपु | ५ | २० | मनोज्ञ | १७५ | ५२ |
| मथिन् | १५२ | ७४ | मधुलिह् | ८२ | २९ | मनोरथ | ३४ | २७ |
| मद | १२४ | ३७ | मधुवार | १६५ | ४० | मनोरम | १७५ | ५२ |
| | १८७ | १२ | मधुव्रत | ८२ | २९ | मनोहत | १७४ | ४१ |
| | २१२ | ९१ | मधुशिमु | ५८ | ३१ | मनोहा | १५८ | १०८ |
| मदकाल | १२४ | ३५ | मधुभ्रणी | ६५ | ८४ | मनु | १२२ | २६ |
| मदन | ५ | २५ | मधुष्टील | ५७ | २८ | मन्त्र | २२७ | १६७ |
| | ६१ | ५३ | मधुस्रवा | ७३ | १४२ | मन्त्रव्याख्याकृत् | १०९ | ७ |
| | ६४ | ७८ | यधुक | ५७ | २७ | मन्त्रिन् | ११८ | ४ |
| मदस्थान | १६५ | ४१ | मधूच्छिष्ट | १५८ | १०७ | मन्य | १५२ | ७४ |
| मदिरा | १६५ | ४० | मधूलक | ५७ | २८ | मन्यदण्डक | १५२ | ७४ |
| मदिरागृह | ५० | ८ | मधूलिका | ६५ | ८४ | मन्यनी | १५२ | ७४ |
| मदोत्कट | १२४ | ३५ | मध्य | ९८ | ७९ | मन्यर | १३० | ७२ |
| मद्गु | ८३ | ३४ | | २२६ | १६० | मन्यान् | १५२ | ७४ |
| मद्गुर | ४१ | १९ | मध्यदेश | ४३ | ७ | मन्द | १६१ | १८ |
| मद्य | १६५ | ४० | मध्यम | ३० | १ | मन्द | २१२ | ९५ |
| मधु | २० | १५ | | ४६ | ७ | | १३० | ७२ |
| | १५८ | १०७ | मध्यमा | ९८ | ७९ | मन्दगामिन् | ८ | ५२ |
| | १६५ | ४१ | | ८६ | ८ | मन्दाकिनी | ३३ | २३ |
| मधुक | २१४ | १०३ | मध्यान | ९८ | ८२ | मन्दार | ६५ | ८१ |
| | ६८ | १०९ | | १७ | ३ | | ४९ | ५ |
| मधुकर | ८२ | २९ | मध्वासव | १६५ | ४१ | मन्दिर | ४९ | ७ |
| मधुक्रम | १६५ | ४१ | मन शिला | १५८ | १०८ | | १७ | ३५ |
| मधुद्रुम | ५७ | २७ | मनस | २२ | ३१ | मन्त्र | ३० | २ |
| मधुप | ८२ | २९ | मनसिज | ५ | २७ | | ५ | २६ |
| मधुपर्णिका | ५९ | ३५ | मनस्कार | २३ | २ | मन्मथ | ५७ | २१ |
| | ६६ | ९४ | मनाक् | २४७ | ८ | | ९५ | ६५ |
| मधुपर्णी | ६५ | ८३ | मनित | १८३ | १०८ | मन्या | ३४ | २५ |
| मधुमक्षिका | ८२ | २६ | मनीषा | २३ | १ | | २२४ | १५३ |
| मधुयटिका | ६८ | १०९ | मनोषिन् | १०८ | ५ | मन्यु | २१ | २२ |
| मधुर | २४ | ९ | मनु | २६२ | ३८ | | १५२ | ७५ |
| | २३२ | १९१ | मनुज | ८५ | १ | मय | ११ | ७४ |
| मधुरक | ७३ | १४२ | मनुष्य | ८५ | १ | | ११ | ७४ |
| मधुरता | ६५ | ८३ | मनुष्यधर्मन् | ११ | ७२ | | | |
| | ६८ | १०७ | | | | | | |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-----------|---------|--------|------------|---------|--------|------------|---------|--------|
| मयुष्टक | १४२ | १७ | मलयज | १०६ | १३१ | महाराजिक | ३ | १० |
| मयूख | १७ | १३ | मलयू | ६२ | ६१ | महारौरव | ३७ | १ |
| | १९६ | १८ | मलिन | १७६ | ५५ | महाशय | १६७ | ३ |
| मयूर | ६८ | १११ | मलिनी | ८८ | २० | महाशुद्धी | ८६ | १३ |
| | ८२ | ३० | मलिम्लुच | १६२ | २५ | महाश्वेता | ६८ | ११० |
| मयूरक | ६६ | ८८ | मलीमस | १७६ | ५५ | महासहा | ६४ | ७३ |
| | १५७ | १०१ | मल्ल | २५७ | २१ | | ७३ | १३८ |
| मरकत | १५६ | ९२ | मल्लक | २६२ | ३७ | महासेन | ७ | ४१ |
| मरण | १३८ | ११६ | मल्लिका | ६३ | ६९ | महिला | ८५ | २ |
| मरीच | १४५ | ३६ | मल्लिकाक्ष | ८१ | २४ | महिलाद्वया | ६१ | ५५ |
| मरीचि | १६ | २७ | मल्लिगन्धि | १०५ | १२७ | महिष | ७८ | ४ |
| | १७ | ३३ | मसी | २५३ | १० | महिषी | ८५ | ५ |
| मरीचिका | १७ | ३५ | मसूर | १४२ | १७ | मही | ४५ | ३ |
| मरु | ४६ | ५ | मसूरविदला | ६८ | १०९ | महोक्षित | ११८ | १ |
| | २२७ | १६२ | मसृण | १४७ | ४६ | महीध | ५२ | १ |
| मरुत् | १० | ६५ | मस्कर | ७६ | १६१ | महीरुह | ५४ | ५ |
| | १२ | २ | मस्करिन् | ११५ | ४२ | महीलता | ४१ | २१ |
| | २०५ | ५९ | मस्तक | १०० | ९५ | महीसुत | १६ | २५ |
| मरुत्वत् | ७ | ४४ | मस्तिष्क | ९५ | ६५ | महेच्छ | १६७ | ३ |
| मरुन्माला | ७२ | १३३ | मस्तु | १४८ | ५४ | महेरुणा | ७० | १२४ |
| मरुवक | ६१ | ५२ | मह | ३६ | ३८ | महेश्वर | ६ | ३२ |
| | ६५ | ७९ | महत् | १७७ | ६० | महोक्ष | १५० | ६१ |
| मर्कट | ७८ | ३ | महती | २०७ | ६९ | महोत्पल | ४४ | ३९ |
| मर्कटक | ७९ | १३ | महस् | २४० | २३१ | महोत्साह | १६७ | ३ |
| मर्कटी | ६० | ४८ | महाकन्द | ७४ | १४८ | महोद्यम | १६७ | ३ |
| | ६६ | ८७ | महाकुल | १०८ | ३ | | ६७ | १०० |
| मर्त्य | ८५ | १ | महाङ्ग | १५२ | ७५ | महौषध | ७४ | १४८ |
| मर्दन | १८८ | २२ | महाजाली | ६९ | ११७ | | १४५ | ३८ |
| मर्दल | ३१ | ८ | महादेव | ६ | ३४ | मा | २४७ | ११ |
| मर्मन् | २६० | ३० | महाधन | १०३ | ११३ | मांस | ९५ | ६३ |
| मर्मर | २९ | २३ | महानस | १४४ | २७ | | २५७ | २२ |
| मर्मस्पृश | १८० | ८३ | महामात्र | ११९ | ५ | मांसल | ९२ | ४४ |
| मर्यादा | १२२ | २६ | महारजत | १५६ | ९५ | मांसात्पशु | २०२ | ४२ |
| मल | ९५ | ६५ | महारजन | १५८ | १०६ | मांसिक | १६१ | १४ |
| | २३३ | १९७ | महारण्य | ५३ | १ | माक्षिक | १५८ | १०७ |
| मलद्वयिन | १७६ | ५५ | | | | | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-------------|---------|-------|-------------|---------|-------|----------|---------|-------|
| शब्द | | | माद | १८७ | १२ | मार्जता | १४६ | ४४ |
| मागध | { १३५ | ९७ | माध | ४ | १८ | मार्जण्ड | १६९ | २९ |
| | { १५९ | २ | माधव | २० | १६ | मार्दविक | १६१ | १३ |
| मागधी | { ६३ | ७१ | माधवक | १६५ | ४१ | मार्द्वि | १०५ | १२१ |
| | { ६७ | ९६ | माधवी | ६३ | ७२ | मालक | ६२ | ६२ |
| मात्र | २० | १५ | माध्वीक | १६५ | ४१ | मालती | ६३ | ७२ |
| माप्य | ६४ | ७३ | मान | ३३ | २२ | माला | १०६ | १३७ |
| मात्र | १६ | ३१ | | १७४ | ८५ | मालाकार | १५९ | ५ |
| माद्वि | २५३ | ८ | मानव | ८५ | १ | मालावृणक | ७७ | १६७ |
| माणवक | { ९१ | ४२ | मानस | २२ | ३१ | मालिक | १५९ | ८ |
| | { १०२ | १०६ | मानसौकस् | ८१ | २३ | मालुधान | ३६ | १ |
| माणव्य | १९२ | ४१ | मानिनी | ८५ | ३ | मालूर | ५८ | ३ |
| माणिक् | २६० | ३१ | मानुष | ८५ | १ | माल्य | १०७ | १३ |
| गणिमन्य | १४६ | ४२ | मानुष्यक | १९२ | ४२ | माल्यवत | ५२ | १ |
| मातङ्ग | { १६२ | १९ | माया | १६० | ११ | मापपगी | ७३ | १३ |
| | { १९७ | २१ | मायाकार | १६० | ११ | मापीण | १४० | १३ |
| मातरपितरौ | ९१ | ३७ | मायादेवीशुत | ४ | १५ | माप्य | १४० | १३ |
| मातरिध्वज | १० | ६४ | मायु | ९५ | ६२ | मास | १९ | १९ |
| मातनि | ८ | ४८ | मायु | ८४ | ४३ | मासर | १४७ | १४७ |
| मातापितरौ | ९१ | ३७ | मायूर | ८ | २६ | मासिक | ११३ | ११३ |
| मातामह | ९० | ३३ | मार | ४ | १३ | मास्य | २४७ | २४७ |
| मातुल | { ६४ | ७८ | मारजित् | १३७ | ११४ | मास्य | १५९ | १५९ |
| | { ९० | ३१ | माण | ३२ | १४ | मास्य | १८० | १८० |
| मातुलपुत्रक | ६४ | ७८ | मासिप | १० | ६५ | मास्य | १७८ | १७८ |
| मातुलानी | { ८९ | ३० | मासन | ७२ | १७१ | मास्य | १७८ | १७८ |
| | { १८२ | २० | मार्कन | २० | १८ | मास्य | १७८ | १७८ |
| मातुलाहि | ३६ | ६ | मार्ग | ८८ | १८ | मास्य | १७८ | १७८ |
| मातुली | ८९ | ३० | | १३३ | ८७ | मास्य | १७८ | १७८ |
| मातुलुङ्ग | ६४ | ७८ | मार्ग | १७२ | ८९ | मास्य | १७८ | १७८ |
| मातु | { ७ | ३७ | मार्ग | १९० | ३० | मास्य | १७८ | १७८ |
| | { ३३ | १८ | मार्ग | २० | १८ | मास्य | १७८ | १७८ |
| मातृ | { ८९ | ३२ | मार्ग | १८३ | १०८ | मास्य | १७८ | १७८ |
| | { १५० | ६६ | मार्ग | ५८ | १०८ | मास्य | १७८ | १७८ |
| मातृगण्य | ८९ | ३२ | मार्ग | १०८ | १०८ | मास्य | १७८ | १७८ |
| मातृगण्य | ८९ | ३२ | मार्ग | ७६ | ७६ | मास्य | १७८ | १७८ |
| मातृगण्य | { १७७ | ६३ | मार्ग | ७६ | ७६ | मास्य | १७८ | १७८ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-------------|---------|--------|------------|---------|--------|-----------------|---------|--------|
| मिथ्यामति | २३ | ४ | मुनि | ४ | १४ | मूर्तिमत् | १७९ | ७६ |
| मिश्रेया | ६८ | १०५ | | ११५ | ४२ | मूर्द्धन् | १०० | ९५ |
| मिसि | ६८ | १०५ | | २६२ | ३८ | मूर्द्धाभिषिक्त | ११८ | १ |
| | ७५ | १५२ | मुनीन्द्र | ४ | १४ | मूर्वा | २०६ | ६१ |
| मिहिका | १५ | १८ | मुरज | ३१ | ५ | मूल | ६५ | ८३ |
| मिहिर | १६ | २९ | मुरा | ७० | १२३ | मूलक | ५५ | १२ |
| मीढ | १८२ | ९६ | मुषित | १८० | ८८ | मूलकर्मन् | २३३ | २०० |
| मीन | ४० | १७ | मुष्क | ९७ | ७६ | मूलधन | ७५ | १५७ |
| मीनकेतन | ५ | २६ | मुष्कक | ५९ | ३९ | मूल्य | १८६ | ४ |
| मुकुट | १०१ | १०२ | मुष्टिवन्ध | १८७ | १४ | मूल्य | १५३ | ७० |
| मुकुन्द | ७० | १२१ | मुसल | १४३ | २५ | मूल्य | १६५ | ७९ |
| मुकुर | १०७ | १४० | मुसलिन | ५ | २५ | मूषक | ७९ | ३९ |
| मुकुल | ५६ | १६ | मुसली | ७० | ११९ | मूषा | १६४ | १२ |
| मुक्तकञ्चुक | ३६ | ६ | | ७९ | १२ | मूषिकपर्णी | १६२ | ३३ |
| मुक्ता | १५६ | ९३ | मुसल्य | १७४ | ४५ | मूषित | ६६ | ३८ |
| मुक्तावली | १०२ | १०५ | मुस्तक | ७६ | १५९ | | १८० | ८८ |
| मुक्तास्फोट | ४२ | २३ | मुस्ता | ७६ | १६९ | | ७८ | ८७ |
| मुक्ति | २४ | ६ | मुहुस् | २४५ | १ | मृग | १९० | ३० |
| | ५२ | १९ | मुहुर्भाषा | २८ | १६ | | १९७ | २० |
| मुख | ९९ | ८९ | मुहुर्त | १९ | ११ | मृगणा | १९० | ३० |
| | २५७ | २२ | मूक | १६९ | १३ | मृगनृष्णा | १७ | ३५ |
| मुखर | १७३ | ३६ | मूढ | १७५ | ४८ | मृगदंशक | १६२ | २१ |
| मुखवासन | २५ | ११ | मूत | १८१ | ९५ | मृगधूर्तक | ७८ | ५ |
| मुख्य | ११५ | ४० | मूत्र | ९६ | ६७ | मृगनाभि | १०६ | १२९ |
| | १७६ | ५७ | मूत्रकृत् | ९४ | ५६ | मृगवधाजीव | १६२ | १ |
| मुण्ड | ९२ | ४८ | मूत्रित | १८२ | ९६ | मृगवन्धनी | १६३ | २९ |
| | २६१ | ३४ | मूर्ख | १७५ | ४८ | मृगमद | १०६ | १२९ |
| मुण्डित | ९२ | ४८ | मूर्च्छा | १३७ | १०९ | मृगया | १६२ | २३ |
| | १८० | ८५ | मूर्छाल | ९५ | ६१ | मृगयु | १६२ | २१ |
| मुण्डित् | १६० | १० | मूर्च्छित | ९५ | ६१ | मृगरामज | १०३ | १११ |
| मुद् | २२ | २४ | | २१० | ८२ | मृगव्य | १६२ | २३ |
| मुदिर | १३ | १७ | मूर्त | ९५ | ६१ | मृगशिरस् | १५ | २३ |
| मुद्रपर्णी | ६९ | ११३ | | १७९ | ७६ | मृगशीर्ष | १५ | २३ |
| मुद्गर | १३४ | ९१ | मूर्ति | ९६ | ७१ | मृगाङ्क | १४ | १४ |
| मुधा | २४६ | ४ | | २०७ | ६६ | मृगादन | ७८ | १ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोक | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोक |
|-----------------|---------|-------|-------------|---------|--------|------------|---------|-------|
| मृगित | १८३ | १०५ | मेघनिर्घोष | १३ | ८ | मोदक | २६० | ३३ |
| मृगेन्द्र | ७८ | १ | मेघपुष्प | ३८ | ५ | मोस्ट | १५८ | ११० |
| मृजा | १०५ | १२१ | मेघमाला | १३ | ८ | मोस्टा | ६५ | ८३ |
| मृड | ६ | ३३ | मेघगहन | ८ | ४७ | मोपक | १६२ | २४ |
| मृडानी | ७ | ३९ | मेचक | २५ | ११ | मोह | १३७ | १०९ |
| मृणाल | ४४ | ४२ | | ८२ | ३४ | मौक्तिक | १५६ | ९२ |
| मृणाली | २५२ | ७ | मेह | ९७ | ७६ | मौहीन | १४० | ८ |
| मृत् | ४६ | ४ | | १५२ | ७६ | मौन | १४४ | ३६ |
| | १३८ | ११७ | मेदक | १६५ | ४२ | मौरजिक | १६१ | १३ |
| मृत | १३९ | ३ | मेदस् | ९५ | ६४ | मौर्षी | १३३ | ८५ |
| मृतस्नात | १७० | १९ | मेदिनी | ८५ | ३ | मौलि | २३२ | १९२ |
| मृतालक | ७१ | १३१ | मेदुर | १७२ | ३० | मौठा | २५२ | ५ |
| मृत्तिका | ४६ | ४ | मेधा | २३ | २ | मौहर्त | १२० | १४ |
| मृत्यु | १३८ | ११६ | मेधि | १४२ | १५ | मोहार्तक | १२० | १४ |
| मृत्युजय | ६ | ३३ | मेध्य | १७६ | ५५ | म्लिट | २९ | २१ |
| मृत्ता | ४६ | ४ | मेनकात्मजा | ७ | ४० | म्लेच्छदेश | ४६ | ७ |
| | ४६ | ४ | मेर | ८ | ५२ | म्लेच्छमुख | १५६ | ९७ |
| मृत्तना | ७१ | १३१ | मेलक | १९० | २९ | | | |
| | ३१ | ५ | मेप | १६ | २७ | य | | |
| मृदन्न | १७९ | ७८ | मेपकम्यल | १५८ | १०७ | यकृत | ९५ | ६६ |
| मृदु | २१२ | ९४ | मेह | ९४ | ५६ | यक्ष | २१ | ७३ |
| मृदुत्वधू | ६० | ४६ | मेहन | ९७ | ७६ | यक्षकर्दम | १०६ | १६३ |
| मृदुल | १७९ | ७८ | मैत्रावरुणि | १५ | २० | यक्षधूप | १०५ | १२७ |
| मृद्रीका | ६८ | १०७ | मैत्री | २६२ | ३९ | यक्षराज | ११ | ७१ |
| मृध | १३६ | १०४ | मैत्र्य | २६२ | ३९ | यक्षमर | ९३ | ५१ |
| मृपा | २४८ | १५ | मैथुन | ११८ | ५७ | यजमा | १०९ | ८ |
| मृपार्थिक | २९ | २१ | मैथुन | २१७ | १२२ | यजुस् | २६ | ३ |
| मृष्ट | १७६ | ५६ | मैथुन | १६५ | ८२ | यश | ११० | १३ |
| मरुलकन्यका | ४३ | ३२ | मैथुन | ७४ | ७ | यशाक्ष | ५७ | २२ |
| मेरुता | १०२ | १०८ | मोक्ष | ५९ | | यशिय | ११० | ७७ |
| | १३४ | ९० | मोच | १७९ | | यजन् | १०९ | ८ |
| मेघ | १३ | ६ | मोघा | ६१ | | | २८६ | |
| मेघज्योतिस् | १३ | १० | मोचक | ५ | | | २४६ | |
| मेघनादानुलासिन् | ८० | ३० | मोच्या | ६ | | | ११८ | |
| मेघनामन् | ७६ | १५९ | | | | | ११५ | |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-------------|---------|--------|------------|---------|--------|-------------|---------|--------|
| यथा | २४७ | ९ | याचक | १७५ | ४९ | युक्तरसा | ७३ | १४० |
| यथाजात | १७५ | ४८ | याचनक | १७५ | ४९ | युग | ८३ | ३८ |
| यथातथम् | २४८ | १५ | याचना | ११३ | ३२ | युग | १९८ | २४ |
| यथायथम् | २४८ | १४ | याचित | १३९ | ३ | युगकीलक | १४१ | २४ |
| यथार्थम् | २४८ | १५ | याचितक | १३९ | ४ | युगन्धर | १२८ | ५७ |
| यथार्हवर्ण | १२० | १३ | याच्या | ११३ | ३२ | युगपत् | २६१ | ३५ |
| यथास्वम् | २४८ | १४ | याजक | १८६ | ६ | युगपत्रक | २४९ | २२ |
| यथेप्सित | १४९ | ५७ | यातना | ११० | १७ | युगपार्श्वग | ५७ | २२ |
| यदि | २४७ | १२ | यातयाम | ३८ | ३ | युगुल | १५० | ६३ |
| यदृच्छा | १८५ | २ | यातु | २२३ | १४५ | युगुल | ८३ | ३८ |
| यन्तृ | १२९ | ५९ | यातुधान | १० | ६३ | युग्म | ८३ | ३८ |
| | २०५ | ५९ | यातृ | १० | ६३ | युग्य | १२८ | ५८ |
| यम | १० | ६१ | यात्रा | ८९ | ३० | युद्ध | १५० | ६४ |
| | ११६ | ४९ | यादःपति | १३४ | ९५ | युध् | १३६ | १०३ |
| | १८८ | १८ | यादस् | २२८ | १७५ | युवति | १३६ | १०६ |
| यमराज् | १० | ६१ | यादसाम्पति | ३८ | २ | युवन् | ८६ | ८ |
| यमुना | ४३ | ३२ | यान | ४१ | २० | युवराज | ९१ | ४३ |
| यमुनाभ्रातृ | १० | ६१ | यानमुख | १० | ६४ | यूथ | ३२ | १२ |
| ययु | १२६ | ४५ | याप्य | १२१ | १८ | यूथनाथ | ८४ | ४१ |
| यत्र | १४२ | १५ | याप्यथान | १२८ | ५८ | यूथप | १२४ | ३५ |
| यत्रक्य | १४० | ७ | याम | ५५ | ५४ | यूथिका | १२४ | ३५ |
| यवक्षार | १५८ | १०८ | यामिनी | ५३ | ५३ | यूप | ६३ | ७१ |
| यवफल | ७६ | १६१ | यामुन | ६ | ६ | यूपकटक | ५९ | ४१ |
| यवस | ७७ | १६७ | यायजूक | १८८ | १८ | यूपखण्ड | २६१ | ३५ |
| यवागू | १४७ | ५० | याव | १८ | ४ | यूपाग्र | ११० | १८ |
| यवाग्रज | १५८ | १०८ | यावक | १५७ | १०० | यूष | २२७ | १६७ |
| यवानिका | ७४ | १४५ | यावत् | १०९ | ८ | यूष | १११ | १९ |
| यवास | ६६ | ९१ | यावन | १०५ | १२५ | यूष | २६१ | ३५ |
| यवीयस् | ९२ | ४३ | याष्टीक | १४२ | १८ | यूष | १४१ | १३ |
| यव्य | १४० | ७ | यास | २४३ | २४६ | योग | १९७ | २२ |
| यशःपटह | ३१ | ६ | युक्त | १०५ | १२८ | योगेष्ट | १५७ | १०५ |
| यशस् | २७ | ११ | | १३० | १७ | योग्य | ६९ | ११२ |
| यष्टि | २६२ | ३८ | | ६६ | ९१ | योजन | २६० | ३० |
| यष्टिमधुक | ६८ | १०९ | | १२२ | २४ | योजनवह्नि | ६६ | ९१ |
| यट्ट | १०९ | ८ | | | | योत्र | १४१ | १३ |
| याग | ११० | १३ | | | | योद्ध | १२९ | ६१ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-------------|---------|-------|-----------------|---------|-------|----------|---------|-------|
| योध | १२९ | ६१ | रजत | १५६ | ९६ | रथिन | १३१ | ७६ |
| योधसराव | १३६ | १०७ | | २०९ | ७९ | रथ्य | १२६ | ४६ |
| योनि | ९७ | ७६ | रजनी | १८ | ४ | रथ्या | ४९ | ३ |
| योपा | ८५ | २ | | ७५ | १५३ | | १२८ | ५५ |
| योषिद्व | ८५ | २ | रजनीमुख | १८ | ६ | रद | १०० | ९१ |
| यौतक | १२३ | २८ | | २२ | २९ | रदन | १०० | ९१ |
| यौतव | १५४ | ८५ | रजस् | ८८ | २१ | रदनच्छद | ९९ | ९० |
| यौवत | ८८ | २२ | | १३५ | ९८ | रन्ध्र | ३६ | २ |
| यौवन | ९१ | ४० | | २४० | २३१ | रभस | २५७ | २१ |
| | | | रजस्वला | ८८ | २० | रमणी | ८५ | ४ |
| र | | | रज्जु | १६३ | २७ | रम्भा | ६९ | ११३ |
| रहसू | १० | ६७ | रज्जन | १०६ | १३२ | रय | १० | ६७ |
| | २५ | १५ | रज्जुनी | ६७ | ९५ | | १०४ | ११६ |
| रक्त | ९५ | ६४ | | १३६ | १०४ | रल्लक | २५५ | १७ |
| | १०५ | १२४ | रण | १८६ | ८ | रव | २९ | २२ |
| | २०९ | ८० | | २०३ | ४९ | रवण | १७३ | ३८ |
| रक्तक | ६४ | ७३ | रण्डा | ६६ | ८८ | रवि | १६ | ३१ |
| रक्तचन्दन | १०६ | १३२ | रत | ११८ | ५७ | रशना | १०२ | १०८ |
| | १५८ | १११ | रतिपति | ५ | २७ | | १७ | ३३ |
| रक्तपा | ४१ | २२ | रत्न | १५६ | ९३ | रश्मि | २२१ | १३८ |
| रक्तफला | ७३ | १३९ | | २१८ | १२६ | | २७ | ७ |
| रक्तसन्ध्यक | ४४ | ३६ | रत्नसानु | ८ | ५२ | | २४ | ९ |
| रक्तसुरोह | ४४ | ४१ | रत्नाकर | ३८ | २ | रस | ३३ | १७ |
| रक्ताग्न | ७४ | १४६ | रत्नि | ९९ | ८६ | | १५७ | ९९ |
| रक्तोत्पल | ४४ | ४२ | रथ | ५७ | ३० | | २३९ | २२७ |
| रक्ष सभ | २५८ | २७ | रथकट्या | १२७ | ५१ | रसगर्भ | १५७ | १०२ |
| रक्षसू | ३ | ११ | | १२८ | ५५ | रसज्ञा | १०० | ९१ |
| | १० | ६३ | रथकार | १५९ | ४ | रसना | १०० | ९१ |
| रक्षित | १८३ | १०६ | रथगुप्ति | १६० | ९ | रसाञ्जुन | १५७ | १०१ |
| रक्षिवर्ग | ११९ | ६ | रथजु | १२८ | ५७ | रसवती | १४४ | २७ |
| रक्षण | १८६ | ८ | | ५७ | २६ | | ४५ | २ |
| रङ्गकु | ७९ | १० | रथाङ्ग | १२८ | ५५ | रसा | ७० | १२३ |
| रङ्ग | १५८ | १०६ | | १२८ | ५६ | | ३६ | १ |
| रङ्गाजीव | १६० | ७ | रथाङ्गाद्वयनामक | ८१ | २२ | रसातल | ५८ | ३३ |
| रचना | १०७ | १३१ | रथिक | १३१ | ७६ | | ७६ | १६३ |
| रजक | १६० | १० | रथिन् | १२९ | ६० | रसाल | १४६ | ४४ |
| | | | | १३१ | ७६ | | | |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-----------|---------|--------|----------------|---------|--------|
| रसित | १३ | ८ | रात्रिचर | १० | ६३ |
| रसोनक | ७४ | १४८ | रात्रिचर | १० | ६३ |
| रह | १२२ | २३ | राद्धान्त | २३ | ४ |
| रहस् | १२२ | २२ | राध | २० | १६ |
| रहस्य | १२२ | २३ | राधा | १५ | २२ |
| राका | १८ | ८ | | ५ | २४ |
| राक्षस | १० | ६२ | राम } | ७९ | ११ |
| राक्षसी | ७१ | १२८ | | २२२ | १४० |
| राक्षा | १०५ | १२५ | रामट | १४६ | ४० |
| राङ्गव | १०३ | १११ | रामा | ८५ | ४ |
| राजू | ११८ | १ | रामभ | ११६ | ४६ |
| राजक | ११८ | ३ | राल | १०५ | १२७ |
| राजकशेरू | २३१ | १८८ | राशि } | ८४ | ४२ |
| राजन } | ११८ | १ | | २३६ | २१४ |
| | २१६ | | | २३१ | १८४ |
| राजन्य | ११८ | १ | राष्ट्रिका | ६६ | ९४ |
| राजन्यक | ११८ | ४ | राष्ट्रीय | ३२ | १४ |
| राजन्वत् | ४७ | १३ | रासभ | १५२ | ७७ |
| राजवाला | ७५ | १५३ | | ६९ | ११४ |
| राजवीजिन | १०७ | २ | राज्ञा } | ७३ | १४० |
| राजराज | ११ | ७२ | राहु | १३ | २६ |
| राजलिङ्ग | २१२ | ९२ | रिक्तक | १७६ | ५६ |
| राजवंश्य | १०८ | २ | रिक्थ | १५५ | ९० |
| राजवत् | ४७ | १३ | रिद्धण | ३५ | ३६ |
| राजवृक्ष | ५७ | २३ | रिपु | ११९ | १० |
| राजसदन | ५० | १० | रिट्ट | २०१ | ३६ |
| राजसभा | २५३ | ९ | रिट्टि | १३३ | ८९ |
| राजस्तय | २६० | ३१ | रीढा | ३३ | २३ |
| राजहंस | ८१ | २४ | रीण | १८१ | ९२ |
| | ५९ | ३५ | | १५६ | ९७ |
| राजादन } | ६० | ४५ | रोति } | २०७ | ६८ |
| राजार्ह | १०५ | १२६ | | १५७ | १०३ |
| राजि | ५४ | ४ | रोतिपुष्प | ९२ | ५० |
| राजिका | १४२ | १९ | रूपप्रतिक्रिया | १५६ | ९५ |
| राजिल | ३६ | ५ | रूम | १६० | ८ |
| | ४१ | १९ | रूमकारक | २३९ | २२५ |
| राजीव } | ४४ | ४१ | रुक्ष | १८१ | ९१ |
| राज्याङ्ग | १२१ | १८ | रुग्ण | १७ | ३४ |
| रात्रि | १७ | ४ | रुच् | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-----------|---------|-------|------------|---------|-------|--------------|---------|-------|
| शोक | ३६ | २ | लक्ष्मणा | ८१ | २५ | लम्बन | १०१ | १०४ |
| शेग | ९३ | ५१ | | १४ | १७ | लम्बोदर | ७ | ४१ |
| शेगहारिन् | ९४ | ५७ | लक्ष्मन् | २१८ | १२४ | लय | ३१ | ९ |
| शेचन | ६० | ४७ | | ५ | २८ | ललना | ८५ | ३ |
| शेचनी | ६८ | १०८ | लक्ष्मी | ६९ | ११२ | ललन्तिका | १०१ | १०४ |
| | ७४ | १४६ | | १३२ | ८२ | ललाट | १०० | ९२ |
| शेचिष्णु | १०१ | १०१ | लक्ष्मीवत् | १६९ | १४ | ललाटिका | १०१ | १०३ |
| शेचिस् | १७ | ३४ | | ३५ | ३३ | ललाम | २२२ | १४३ |
| शेदन | १०० | ९३ | लक्ष्य | १३३ | ८६ | ललामक | १०७ | १३५ |
| शेदनी | ६६ | ९२ | लगुड | २५६ | १८ | ललित | ३५ | ३१ |
| शेदसी | २४० | २२ | लम | १६ | २७ | | १७७ | ६२ |
| शेदस्यौ | २४० | २२ | लमक | १६६ | ४४ | लव | १८९ | २४ |
| शेधस् | ३९ | ७ | | १० | ६८ | लवङ्ग | १०५ | १२५ |
| शेप | १३३ | ८१ | लघु | ७२ | १३३ | लवण | २४ | ९ |
| शेमन् | १०१ | ९९ | | १९९ | २८ | | १४६ | ४१ |
| शेमय | २५६ | १९ | लघुल्य | ७७ | १६५ | लगुणोद | ३८ | २ |
| शेमहर्षण | ३५ | ३५ | लङ्का | २५२ | ७ | लवन | १८९ | २४ |
| शेमाञ्च | ३५ | ३५ | लङ्कोपिका | ७२ | १३३ | लवित्र | १४१ | १३ |
| शेप | ३४ | २६ | लज्जा | ३३ | २३ | लशुन | ७४ | १४९ |
| शेहिणी | १५० | ८७ | लज्जाशील | १७१ | २८ | लस्तक | १३२ | ८५ |
| | १३ | १० | लज्जित | १८१ | ९१ | लक्षा | १०५ | १२५ |
| शेहित | २५ | १५ | लज्वा | २५३ | १० | | २५३ | १० |
| | ४१ | १९ | | ५४ | ९ | लक्ष्मसादन | ५९ | ४१ |
| | ७९ | १० | | ५५ | ११ | लङ्गल | १८१ | १३ |
| शेहितक | ६० | ४९ | लता | ६१ | ५५ | लङ्गलदण्ड | १४१ | १४ |
| शेहिताश्व | ९ | ५८ | | ६३ | ७२ | लङ्गुलपद्धति | १४१ | १४ |
| शेहिन् | ६० | ४९ | | ७२ | १३३ | लङ्गुलिकी | ७० | ११८ |
| शैत्र | ३३ | १७ | | ७४ | १५० | | ६८ | १११ |
| | ३३ | २० | लतार्क | ७४ | १८८ | लङ्गुल | ७७ | १६८ |
| शैमक | १४६ | ४२ | लपन | ९९ | ८९ | लाजा | १४७ | ८७ |
| शैव | ३७ | १ | लपित | २६ | १ | लाव्धन | १४ | १७ |
| शैहिण्य | ५ | २४ | | १८३ | १०७ | लाम | १५३ | ८० |
| | १६ | २६ | लभ | १८३ | १०४ | लामञ्जक | ७७ | १६५ |
| | ७७ | ११६ | लभ्य | १०८ | ६ | | ३४ | २८ |
| | ७९ | १० | | १०९ | १० | लालसा | २८० | २२ |
| लकुच | ६२ | ६० | | १२२ | २१ | | | |
| लक्ष | १३३ | ८६ | | | | | | |
| लक्षण | १४ | १७ | | | | | | |
| लक्ष्मण | १६९ | १४ | | | | | | |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-------------|---------|--------|------------|---------|--------|------------|---------|--------|
| लाला | ९६ | ६७ | लोकजित् | ४ | १३ | वंशरोचना | १५८ | १०९ |
| लालाटिक | १९५ | १७ | लोकायत | २६० | ३२ | वंशिक | १०५ | १२६ |
| लाव | ८३ | ३५ | लोकालोक | ५२ | २ | वक्तव्य | २५५ | १५९ |
| लासिका | ३१ | ८ | लोकेश | ४ | १६ | वक्तृ | १७३ | ३५ |
| लास्य | ३१ | १० | लोचन | १०० | ९३ | वक्त्र | ९९ | ८९ |
| लिकुच | ६२ | ६० | लोचमस्तक | ६८ | १११ | वक्र | १७८ | ७१ |
| लिङ्गा | २५३ | १० | लोघ्न | ५८ | ३३ | वक्षस् | ९७ | ७८ |
| लिखित | १२० | १६ | लोपामुद्रा | १५ | २० | वक्ष्ण | ९६ | ७३ |
| लिङ्गवृत्ति | ११७ | ५४ | लोष्व | १६२ | २५ | वङ्ग | १५८ | १०६ |
| लिपि | १२० | १६ | लोमन् | १०१ | २९ | वचन | २६ | १ |
| लिपिकर | १२० | १५ | लोमशा | ७२ | १३४ | वचनेस्थित | १७१ | २४ |
| लिप्त | १८१ | ९० | लोल | { १७९ | ७४ | वचस् | २६ | १ |
| लिप्तक | १३३ | ८८ | | { २३४ | २०५ | वचा | ६७ | १०२ |
| लिप्सा | ३४ | २७ | लोलुप | १७१ | २२ | | ८ | ५० |
| लिवि | १२० | १६ | लोलुभ | १७१ | २२ | वज्र | { ६८ | १०५ |
| लोढ | १८४ | ११० | लोष्ट | १४१ | १२ | | { २३१ | १८४ |
| | ३५ | ३२ | लोष्टभेदन | १४१ | १२ | वज्रनिघोषि | १३ | १०१ |
| लीला | { ३५ | ३२ | | { १०५ | १२६ | वज्रपुष्प | ६४ | ७६ |
| | { २३३ | १९९ | लोह | { १५६ | ९८ | वज्रिन् | ७ | ४५ |
| लुठित | १२७ | ५० | | { १५७ | ९९ | | { ७८ | ५ |
| लुब्ध | १७१ | २२ | | { २५७ | २३ | वञ्चक | { १७५ | ४७ |
| लुब्धक | १६२ | २१ | लोहकारक | १६० | ७ | वञ्चित | १७४ | ४१ |
| लुलाय | ७८ | ४ | लोहपृष्ठ | ८० | १६ | | { ५७ | २७ |
| लूना | ७९ | १३ | लोहल | १७३ | ३७ | वञ्जुल | { ५७ | ३० |
| लून | १८३ | १०३ | लोहाभिसार | १३४ | ९४ | | { ६२ | ६४ |
| लूम | १२७ | ५० | लोहित | { २५ | १५ | वट | ५८ | ३२ |
| लेख | ३ | ८ | | { ९५ | ६४ | वटक | २५५ | १७ |
| लेखक | १२० | ५५ | लोहितक | १५६ | ९२ | वटी | १६३ | २७ |
| लेखपत्र | ७ | ४५ | लोहितचन्दन | १०५ | १२४ | वडवा | १२६ | ४६ |
| लेखा | ५४ | ४ | लोहिताङ्ग | १६ | २५ | वडवानल | ९ | ५९ |
| लेपक | १६० | ६ | | | | वड् | १७७ | ६१ |
| लेश | १७७ | ६२ | व | २४७ | ९ | वणिक | १५३ | ७८ |
| लेष्टु | १४१ | १२ | | { ७६ | १६० | वणिकपथ | २०४ | ५२ |
| लेह | १४९ | ५६ | वंश | { १०७ | १ | वणिज्या | १५३ | ७९ |
| लोक | { १९२ | २ | | { २३६ | २१४ | वण्टक | १५५ | ८९ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|------------|---------|-------|-----------|---------|-------|------------|---------|-------|
| स | ९७ | ७८ | वनौकस् | ७८ | ३ | वरान्न | १९८ | २६ |
| सक | १५० | ६२ | वन्दा | ६५ | ८२ | वरान्नक | ७२ | १३४ |
| सत्तर | २३९ | २२६ | वन्दाह | १७१ | २८ | वरटक | ४४ | ४३ |
| सनाम | ६३ | ६६ | वध्य | १७४ | ४५ | वरारोहा | १६३ | २७ |
| सर | १५० | ६२ | वन्ध्य | ५४ | ७ | वरारोहा | २६२ | ३८ |
| सर | ३७ | ११ | वन्ध्या | १५१ | ६९ | वराशि | ८५ | ४ |
| सर | १९ | १३ | वन्धा | ५४ | ४ | वराह | १०४ | ११६ |
| सर | २१ | २० | वन्धा | ५४ | ४ | वरिवसित | ७८ | २ |
| सर | १६९ | १४ | वन्धा | ३६ | २ | वरिवसित | १८३ | १०२ |
| सरादनी | ६५ | ८२ | वन्धा | ९५ | ६ | वरिवस्या | ११४ | ३५ |
| द | १७३ | ३५ | वपुस् | ९६ | ७० | वरिवस्यित | ११४ | ३५ |
| दन | ९९ | ८९ | वम | ४९ | ३ | वरिवस्यित | १८३ | १०२ |
| दान्य | १६८ | ६ | वम | १४१ | ११ | वरिवस्यित | १५६ | ९७ |
| दावद | २२६ | १६० | वमथु | १५७ | १०५ | वरिवस्यित | १८४ | १११ |
| ध | १७३ | ३५ | वमथु | ९३ | ५५ | वरी | ६७ | १०० |
| ध | १३७ | ११५ | वमि | १२४ | ३७ | वरीयस् | २४१ | २३५ |
| ध | ७२ | १३३ | वयस् | ९३ | ५५ | वरुण | १० | ६४ |
| ध | ८५ | २ | वयस्थ | २४० | २२९ | वरुण | १२ | २ |
| ध | ८६ | ९ | वयस्थ | ९१ | ४२ | वरुण | ५७ | २५ |
| ध | २१४ | १०२ | वयस्था | ६१ | ५८ | वरुणात्मजा | १६५ | ३९ |
| ध | १७४ | ४५ | वयस्था | ७३ | १३७ | वरुण | १२८ | ५७ |
| ध | ३८ | ३ | वयस्थ | ७३ | १४४ | वरुणिनी | १३१ | ७८ |
| ध | ५३ | १ | वयस्थ | १२० | १२ | वरुण्य | १७६ | ५७ |
| ध | २१८ | १२६ | वयस्था | ८६ | १२ | वर्कर | १६२ | २३ |
| धनतिस्तिका | ६५ | ८५ | वर | १०५ | १२४ | वर्ग | ८४ | ४१ |
| धनमिय | ८० | १९ | वर | १८६ | ८ | वर्चस् | २४० | २३१ |
| धनमक्षिका | ८२ | २७ | वर | २२८ | १७३ | वर्चस्क | ९६ | ६८ |
| धनमालिन् | ५ | २१ | वरटा | ८१ | २५ | वर्चस्क | १०७ | १ |
| धनमुह | १४२ | १७ | वरटा | ८२ | २७ | वर्ण | १२५ | ४२ |
| धनशृङ्गाट | ६७ | ९९ | वरण | ४९ | ३ | वर्ण | २०३ | ४८ |
| धनसमूह | ५४ | ४ | वरण | ५७ | २५ | वर्णक | १०६ | १३३ |
| धनस्पति | ५४ | ६ | वरण्ड | २५६ | १८ | वर्णक | २६२ | ३८ |
| धनायुज | १२६ | ४५ | वरत्रा | १२५ | ४२ | वार्णत | १८४ | ११० |
| धनित | ८५ | २ | वरत्रा | १६३ | ३१ | वार्णन | ११५ | ४३ |
| धनित | २०८ | ७३ | वरद | १६८ | ७ | वार्णन | ८३ | ३५ |
| धनीयक | १७५ | ४९ | वरवार्णनो | ८५ | ४ | वार्णन | १२४ | ११ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-----------|---------|--------|-------------|---------|--------|--------------|---------|--------|
| वर्तन | { १३८ | १ | वलभी | ५१ | १५ | वस्तुक | { ६५ | ८० |
| | { १७२ | २९ | वलय | १०२ | १०७ | | { १४६ | ४२ |
| वर्तनी | ४८ | १५ | वलयित | १८१ | ९० | वस्तुदेव | ५ | २३ |
| वर्ति | १०६ | १३३ | वलीक | ५१ | १४ | वस्तुधा | ४५ | ३ |
| वर्तिका | ८३ | ३५ | वलीमुख | ७८ | ३ | वस्तुन्धरा | ४५ | ३ |
| वर्तिष्णु | १७२ | २९ | वल्क | ५५ | १२ | वस्तुमति | ४५ | ३ |
| वर्तुल | १७८ | ६९ | वल्कल | ५५ | १२ | वस्तु | २५४ | १३ |
| वर्त्मन् | { ४८ | १५ | वल्गित | १२६ | ४८ | वस्ति | १०३ | ११४ |
| | { २१७ | १२१ | वल्गु | २२२ | १४४ | वस्त्र | १०४ | ११५ |
| वर्धक | ६६ | ९० | वल्मिक | ४७ | १४ | वस्त्रयोनि | १०२ | ११० |
| वर्धकि | १६० | ९ | वल्मीकी | ३० | ३ | वस्त्रवेदमन् | १०४ | १२० |
| वर्धन | { १७१ | २८ | वल्म | { १७६ | ५३ | वस्त्र | १५३ | ७९ |
| | { १८६ | ७ | वल्मभ | { २२१ | १३७ | वस्त्रसा | ९५ | ६६ |
| वर्धमान | ६१ | ५१ | वल्मी | ५५ | १३ | वद | १६० | ६३ |
| वर्धमानक | १४४ | ३२ | वल्ली | ५४ | ९ | वह्नि | { ९ | ५३ |
| वर्धिष्णु | १७१ | २८ | वल्मी | ९५ | ६३ | | { १२ | २ |
| वर्धी | १६३ | ३१ | वल्मी | १८६ | ८ | वह्निसंज्ञक | ६५ | ६२ |
| वर्मन् | १२९ | ६४ | वल्मीक्रिया | १८६ | ४ | वह्निशिख | १५८ | १०६ |
| वर्मित | १२९ | ६५ | | { १२४ | ३६ | वा | { २४४ | २४९ |
| वर्य | १७६ | ५७ | वशा | { १५१ | ६९ | | { २४७ | ९ |
| वर्या | ८६ | ७ | | { २३७ | २१७ | वाक्पति | { २४८ | १५ |
| वर्षणा | ८२ | २६ | वशिक | १७६ | ५६ | वाक्पुत्र | १७३ | ३५ |
| | { १४ | ११ | वशिर | { ६७ | ९७ | वागोश | २६ | २ |
| वर्ष | { ४६ | ६ | वश्य | { १४६ | ४१ | वागुरा | १७३ | ३५ |
| | { २३९ | २२४ | वपट् | १७१ | २५ | वागुरिक | १६३ | २६ |
| वर्षवर | ११९ | ९ | वपट्कृत | २४७ | ८ | वाग्निम् | १६१ | १४ |
| वर्या | २० | १९ | वसति | ११२ | २७ | वाङ्मुख | १७३ | ३५ |
| वर्षाभू | ४२ | २४ | वसन | २०७ | ६६ | वाच् | २७ | ९ |
| वर्षाभ्वी | ४२ | २४ | वसन्त | १०४ | ११५ | वाच्यम् | २६ | १ |
| वर्षायस् | ९२ | ४३ | वसा | २० | १८ | वाच्यम | ११५ | ४२ |
| वर्षोपल | १४ | १२ | वस | ९५ | ६४ | वाचक | २६ | २ |
| वर्ष्मन् | { ९६ | ७० | वसु | { ३ | १० | वाचस्पति | १५ | २४ |
| | { २१८ | १२३ | | { ६५ | ८१ | वाचाट | १७३ | ६ |
| वलन | १९९ | ३१ | | { १५५ | ९० | वाचाल | १७३ | ३६ |
| वलजा | १९९ | ३१ | | { २४० | २२८ | वाचि | २८ | १७ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|---------------|---------|-------|-----------|---------|-------|------------|---------|-------|
| वाचोयुक्तिपटु | १७३ | ३५ | वान | ५६ | १५ | वारिप्रवाह | ५२ | ५ |
| वाज | १३३ | ८७ | वानमस्य | ५७ | २८ | वारिवाह | १३ | ६ |
| वाजपेथ | २६० | ३१ | वानर | ७८ | ३ | वारी | १२५ | ४३ |
| वाजिदन्तक | ६८ | १०३ | वानस्पत्य | ५४ | ६ | वारुणी | २०४ | ५२ |
| वाजिम् | ८३ | ३३ | वानीर | ५७ | ३० | वार्त | २४ | ५७ |
| | १२५ | ४४ | वानेय | ७१ | १३१ | | २०९ | ७६ |
| | २१५ | १०७ | वापी | ४२ | २८ | | २७ | ७ |
| वाजिशाला | ४२ | ७ | वाम | २२२ | १४४ | वार्ता | १३८ | १ |
| वाञ्छा | ३४ | २७ | वामदेव | ६ | ३ | | २०८ | ७५ |
| वाटी | २६३ | ४२ | वामन | १३ | ३ | वार्ताकी | ६९ | ११४ |
| वाट्यालका | ६८ | १०७ | | १२ | ४६ | वार्ताविह | १६१ | १५ |
| | ९ | ५९ | | १७८ | ७० | वार्धक | ९१ | ४० |
| वाड्य | १२६ | ४६ | वामलूर | ४७ | १४ | वार्धुपि | १३९ | ५ |
| | ९ | ५९ | वामलोचना | ८५ | ३ | वार्धुपिक | १३९ | ५ |
| वाड्यानल | १२२ | ४१ | वामा | ८५ | २ | वामण | १२२ | ४३ |
| वाङ्मय | १६३ | २८ | वामी | १२६ | ४६ | वार्धिक | ७४ | १५० |
| वाणि | १५३ | ७८ | वायदण्ड | १६३ | २८ | गल | १०० | ९५ |
| वाणिज | १३८ | २ | वायस | ८१ | २० | गलधी | १२७ | ५० |
| वाणिज्य | १५३ | ७९ | वायसाराति | ८० | १५ | वालपाइया | १०१ | १०३ |
| | २१६ | ११२ | वायसी | ७५ | १५१ | वालहस्त | १२७ | ५० |
| वाणिनी | २६ | १ | वायसेली | ७३ | १४४ | गलुक | ७० | १२१ |
| वाणी | १० | ६६ | वायु | १० | ६४ | वाल्क | १०३ | १११ |
| वात | ७४ | १४९ | वायुसद्य | ९ | ५८ | वायदूक | १७३ | ३५ |
| वातक | ५७ | २९ | वायु | ३८ | ३ | वाशिकी | ६८ | १०३ |
| वातकिन् | ७८ | ७ | गार | ८४ | ३९ | वाशित | २९ | २५ |
| वातपोथ | ७८ | ७ | | २२६ | १६१ | वास | ४९ | ६ |
| वातप्रमी | ७८ | ७ | वारण | १२४ | ३४ | वासक | ६८ | १०३ |
| वातमृग | ९४ | ५९ | वारणबुसा | ६९ | ११३ | वासगृह | ५० | ८ |
| वातरोगिन् | ५० | ९ | वारवाण | १२२ | ६३ | वासन्तो | ६३ | ७२ |
| वातायन | ७८ | ८ | वारमुखा | ८८ | १९ | वासयोग | १०६ | १३४ |
| वातायु | २३३ | १९५ | वारखी | ८८ | १९ | वासर | १७ | २ |
| वातूल | २३३ | १९५ | वाराही | ७५ | १५ | वासन | ७ | ४५ |
| वाल्या | १४९ | ६० | वारि | ३८ | ३ | वासस् | १०४ | ११५ |
| वात्सक | ३१ | ५ | वास्ति | १३ | ७ | | १०६ | १३४ |
| वादित्र | ३१ | ५ | वात्पिणा | ४४ | ३८ | | १०७ | ४६ |
| वाद्य | | | | | | | | |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-------------|---------|--------|------------|---------|--------|-------------|---------|--------|
| वासिता | २०८ | ७५ | विक्रम | १३६ | १०२ | विट् | १३८ | १ |
| वासुकि | ३६ | ४ | | २२२ | १४१ | विट् | २५५ | १७ |
| वासुदेव | ५ | २० | विक्रय | १५३ | ८३ | विट्क | ५१ | १५ |
| वासू | ३२ | १४ | विक्रयिक | १५३ | ७९ | विट्प | ५५ | १४ |
| वास्तु | ५२ | १९ | विक्रान्त | १३१ | ७७ | | २२० | १३१ |
| वास्तूक | ७६ | १५८ | विक्रिया | १८७ | १५ | विट्पिन् | ५४ | ५ |
| वास्तोष्पति | ७ | ४६ | विक्रेतृ | १५३ | ७९ | विट्खदिर | ६० | ५० |
| वाख | १२७ | ५४ | विक्रेय | १५३ | ८२ | विट्चर | १६२ | २३ |
| वाह | १२५ | ४४ | विक्रव | १७४ | ४४ | विड | १४६ | ४२ |
| | १५५ | ८८ | विक्षाव | १९१ | ३७ | विडङ्ग | ६८ | १०६ |
| वाहद्विषत् | ७८ | ४ | चिगत | १८२ | १०० | वितण्डा | २५३ | ९ |
| वाहन | १२८ | ५८ | चिगतार्तवा | ८८ | २१ | वितथ | २९ | २१ |
| वाहस | ३६ | ५ | चिय | ९२ | ४६ | वितरण | ११३ | २९ |
| वाहित्य | १२५ | ३९ | | ९६ | ७० | वितर्दि | ५१ | १६ |
| | १३१ | ७८ | चियह | १२१ | १८ | वितस्ति | ९८ | ८४ |
| वाहिनी | १३२ | ८१ | | १३६ | १०४ | वितान | १०४ | १२० |
| | २१६ | १२१ | | १८८ | २२ | | २१६ | ११३ |
| वाहिनीपति | १२९ | ६२ | विघस | ११२ | २८ | वितुन्न | ७४ | १४९ |
| वि | ८३ | ३३ | विघ्न | १८८ | १९ | | ७१ | १२६ |
| विंशति | १५३ | ८३ | विघ्नराज | ७ | ४० | वितुन्नक | १४५ | ३७ |
| विकङ्कत | ५९ | ३७ | विचक्षण | १८८ | ६ | | १५७ | १०१ |
| विकच | ५४ | ७ | विचयन | १९० | ३० | | १५५ | ९० |
| विकर्तन | १६ | २९ | विचर्चिका | ९३ | ५३ | वित्त | १६८ | ९ |
| विकलाङ्ग | ९२ | ४६ | विचारणा | २३ | २ | | १८२ | ९९ |
| विकसा | ६६ | ९० | विचारित | ९९ | ९९ | विदर | १८६ | ५ |
| विकसित | ५४ | ८ | विचिकित्स | २३ | ३ | विदल | २६० | ३२ |
| विकस्वर | १७२ | ३० | विच्छन्दक | ५० | ११ | विदारक | ३९ | १० |
| विकार | १८७ | १५ | विच्छाय | २५८ | २६ | विदारी | ६८ | ११० |
| विकासिन् | १७२ | ३० | विजन | १२२ | २२ | विदारिगन्धा | ६९ | ११५ |
| विकिर | ८३ | ३३ | | २१० | ८२ | विदित | १८३ | १०८ |
| विकीरिण | ६५ | ८० | विजय | १३७ | ११० | | १८३ | १०९ |
| विकुर्वाण | १६८ | ७ | विजिल | १४७ | ४६ | विदिशू | १३ | ५ |
| विकृत | ३३ | १९ | विज्ञ | १६८ | ४ | विदु | १२४ | ३७ |
| | ९४ | ५८ | विज्ञात | १६८ | ९ | विदुर | ५७ | ३० |
| विकृति | १८७ | १५ | विज्ञान | २४ | ६ | विदुल | ५७ | ३० |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|--------------|---------|-------|-------------|---------|-------|------------|---------|-------|
| विद्ध | १८२ | ९९ | विनाशोन्मुख | १८१ | ९१ | विश्रव | १८७ | १४ |
| विद्वकर्णी | ६५ | ८४ | विनीत | १२५ | ३४ | विबुध | ३ | ७ |
| विद्याधर | ३ | ११ | | १७१ | २५ | विभव | १५५ | ९० |
| विद्युत् | १३ | ९ | विन्दु | १७२ | ३० | विभाकर | १६ | २८ |
| विद्वधी | ९४ | ५६ | विन्ध्य | ५२ | ३ | विभाजरी | १८ | ४ |
| विद्वव | १३७ | १११ | विन्न | १८२ | ९९ | | ९ | ५९ |
| विद्रुत | १८२ | १०० | | १८३ | १०४ | विभावसु | १६ | ३० |
| विद्रुम | १५६ | ९३ | विपक्ष | १२० | ११ | | २३९ | २२६ |
| विद्रुमलता | ७१ | १२९ | विपञ्ची | ३० | ३ | विभीतक | ६१ | ५८ |
| | १०८ | ५ | विपण | १५३ | ८३ | विभृति | ७ | ३८ |
| विद्वस् | २४१ | २३४ | विपणि | ८९ | २ | विभूषण | १०१ | १०१ |
| विद्वेष | ३४ | २५ | | २०४ | ५१ | विभ्रम | ३५ | ३१ |
| विधना | ८६ | ११ | विपत्ति | १३२ | ८२ | विभ्राज् | १०१ | १०१ |
| | १६५ | ३८ | विपथ | ४८ | १६ | विमनस् | १६८ | १ |
| विधा | २१४ | १०१ | विप्रद | १३२ | ८२ | विमर्दन | १८७ | १३ |
| विधानृ | ४ | १७ | विपयय | १२० | ३३ | विमल | ७३ | १४३ |
| | ४ | १७ | विपर्यास | १२० | ३३ | विमानृज | ८९ | २५ |
| विधि | २२ | २८ | विपश्चित् | १०८ | ५ | विमान | ८ | ५१ |
| | ११५ | ४० | विपाट् | ४३ | ३३ | वियत् | १२ | २ |
| | २१४ | १०० | विपादिका | ९३ | ५२ | वियहगा | ८ | ५२ |
| विधिदर्शिन | ११० | १६ | विपाशा | ४३ | ३३ | वियम | १८८ | १८ |
| | ५ | २२ | विपिन | ५३ | १ | वियात | १७१ | २५ |
| विधु | १४ | १४ | विपुल | १७७ | ६१ | वियाम | १८८ | १८ |
| | २१३ | ९९ | विप्र | १०७ | २ | विरजस्तमस् | ११५ | ४५ |
| विधुत | १८३ | १०७ | | १०८ | ४ | विरति | १२१ | ३८ |
| विधुनुद | १६ | २६ | विप्रकार | १८७ | १५ | विरल | १७८ | ६६ |
| विधुर | १८८ | २० | विप्रकृत | १७४ | ८१ | विराज् | ११८ | १ |
| विधुवन | १८६ | ४ | विप्रकृष्टक | १७८ | ६१ | विराज | २२ | २३ |
| विधूनन | १८६ | ४ | विप्रतीसार | ३४ | २५ | विरिञ्चि | ४ | १७ |
| विधेय | १७१ | २४ | विप्रयोग | १८९ | २८ | विरूपाक्ष | ६ | ३४ |
| विजयप्राप्ति | १७१ | २४ | विप्रलम्भ | १७४ | ४१ | | १६ | ३० |
| विना | २४६ | ३ | विप्रलम्भ | ३५ | ३६ | विरोचन | २२५ | १०८ |
| | ४ | १४ | | १८९ | २८ | विरोध | ३४ | २५ |
| विनायक | ७ | ४० | विमलाप | २८ | १६ | विरोधन | १८८ | २१ |
| | १९३ | ६ | विमशिका | ८८ | २० | विरोधोक्ति | १८ | १६ |
| विनाश | १८८ | २२ | विमृप् | ३९ | ६ | | | |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|----------|---------|--------|-------------|---------|--------|------------------|---------|--------|
| विलक्ष | १७१ | २६ | विशाल | १७७ | ६० | विषाणी | ७० | ११९ |
| विलक्षण | १८५ | २ | विशालता | १०३ | ११४ | विषुव | २० | १४ |
| विलम्बित | ३१ | ९ | विशालत्वच् | ५७ | २३ | विषुवत् | २० | १४ |
| विलम्भ | १८९ | २८ | विशाला | ७५ | १५६ | विष्किर | ८३ | ३३ |
| विलाप | १८ | १६ | विशिख | १३३ | ८६ | विष्कम्भ | ५१ | १७ |
| विलास | ३५ | ३१ | विशिखा | ४९ | ३ | विष्टप | ४६ | ६ |
| विलीन | १८२ | १०० | विशेषक | १०५ | १२३ | विष्टर | २२८ | १६९ |
| विलेपन | १०६ | १३३ | विश्राणन | ११३ | २९ | विष्टरश्रवस् | ४ | १८ |
| | १८९ | २७ | विश्राव | १९८ | २२८ | विष्टि | ३७ | ३ |
| विलेपी | १४७ | ५० | विश्रुत | १६८ | ९ | विष्टा | ९६ | ६८ |
| विवध | २१३ | ९६ | | ३ | १० | विष्णु | ४ | १८ |
| विवर | ३६ | १ | विश्व | १४५ | ३८ | विष्णुक्रान्ता | ६८ | १०४ |
| विवर्ण | १६१ | १६ | | १७७ | ६५ | विष्णुपद | १२ | २ |
| विवश | १७४ | ४४ | विश्वकद्रु | १६२ | २२ | विष्णुपदी | ४३ | ३१ |
| | १६ | २९ | विश्वकर्मन् | २१५ | १०८ | विष्णुरथ | ६ | ३१ |
| विवस्वत् | २०५ | ५७ | विश्वज्यच् | १७२ | ३६ | विष्य | १७४ | ४५ |
| विवाद | २७ | ९ | विश्वभेषज | १४५ | ३८ | विष्वक् | २४७ | १३ |
| विवाह | ११८ | ५६ | विश्वम्भर | ५ | २२ | विष्वक्सेन | ५ | १९ |
| विविक्त | १२२ | २२ | विश्वंभरा | ४५ | २ | विष्वक्सेनप्रिया | ७५ | १५१ |
| | २१० | ८२ | विश्वसृज् | ४ | १७ | विष्वक्सेना | ६१ | ५६ |
| विविध | १८१ | ९३ | विश्वस्ता | ८६ | ११ | विसंवाद | ३५ | ३६ |
| विवेक | ११४ | ३८ | विश्रवा | ६७ | ९९ | विसर | ८४ | ३९ |
| विश्लोक | ३५ | ३१ | विश्वास | १२२ | २३ | विसर्जन | ११३ | २९ |
| विश | २३६ | २१४ | विष् | ९६ | ६८ | विसर्पण | १८९ | २३ |
| विशङ्कट | १७७ | ६० | विष | ३७ | ९ | विसार | ४० | १७ |
| विशद | २५ | १२ | | २३८ | २२३ | विसारिन् | १७२ | ३१ |
| विशर | १३७ | ११५ | विषधर | ३७ | ७ | विसृत | १८० | ८६ |
| | ६५ | ८३ | विषमच्छद | ५७ | २३ | विसृत्वर | १७२ | ३१ |
| विशल्या | ७२ | १३६ | | २४ | ७ | विसृमर | १७२ | ३१ |
| | २२५ | १५५ | विषय | ४६ | ८ | विस्तर | १८८ | २२ |
| विशसन | १३७ | १४४ | | २२४ | १५२ | विस्तार | ५५ | १४ |
| विशाख | ७ | ४२ | विषयिन् | २४ | ८ | | १८८ | २२ |
| विशाखा | १५ | २२ | विषवैद्य | ३७ | ११ | विस्तृत | १८० | ८६ |
| विशाय | १९० | ३२ | विषा | ६७ | ९९ | विस्फार | १३६ | १०८ |
| विशारण | १३७ | ११२ | विषाण | २०५ | ५५ | विस्फोट | ९३ | ५३ |
| विशारद | २१२ | ९५ | | | | | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|--------------|---------|-------|-------------|---------|-------|--------------|---------|-------|
| विस्मय | ३३ | १९ | वीरपत्नी | ८७ | १६ | वृत्रहन् | ७ | ४५ |
| विस्मयान्वित | १७१ | २६ | वीरपान | १३६ | १०३ | वृथा | २४६ | २४७ |
| विस्मृत | १८० | ८६ | वीरमार्या | ८७ | १६ | | २४६ | ४ |
| विस्म | २५ | १२ | वीरमातृ | ८७ | १६ | | ७० | १२२ |
| विस्मम् | १२२ | २३ | वीरवृक्ष | ५९ | ४२ | वृक्ष | ९१ | ४२ |
| | २२१ | १३५ | वीराशसन | १३५ | १०० | | २१४ | १०० |
| विस्मसा | ९१ | ४१ | वीरसू | ८७ | १६ | वृद्धत्व | ९१ | ४० |
| विहग | ८२ | ३२ | वीरहन् | ११७ | १३ | वृद्धसारक | ७२ | १३७ |
| विहग | ८२ | ३२ | वीरुध | ५४ | ९ | वृद्धनाभि | ९४ | ६१ |
| विहग्नम | ८२ | ३२ | | ३९ | २९ | वृद्धश्रवस् | ७ | ४४ |
| विहङ्गिका | १६३ | ३० | वीर्य | ९५ | ६२ | वृद्धसष | ९१ | ४० |
| विहसित | ३५ | ३५ | | २२४ | १५४ | वृद्धा | ८६ | १२ |
| विहस्त | १७४ | ४३ | वीरध | २१३ | ९६ | वृद्धि | १२१ | १९ |
| विहापित | ११३ | २९ | वुक | ६५ | ८१ | | १८६ | ९ |
| विहायस् | १२ | २ | वृक | ७८ | ७ | वृद्धिजीविका | १३९ | ४ |
| | ८२ | ३२ | वृक्षभेदिन् | १६४ | ३४ | वृद्धिमत् | २१० | ८५ |
| विहायस | १२ | २ | वृक्षरुहा | ६५ | ८२ | वृद्धोक्ष | १५० | ६ |
| विहार | १८७ | १६ | वृक्षवाटिका | ५३ | २ | वृन्त | ५६ | १५ |
| विहल | १७४ | ४४ | वृक्षादनो | ६५ | ८२ | वृद | ८४ | ४० |
| वोकाश | २३६ | २१५ | | १६४ | ३४ | वृन्दभेद | ८४ | ४१ |
| वीचि | ३८ | ५ | वृक्षाम्ल | १४५ | ३५ | वृन्शरक | ३ | ९ |
| वीणा | ३० | ३ | | २१ | २३ | | १९५ | १६ |
| वीणावाद | १६१ | १३ | वृजिन | १७८ | ७१ | वृन्दिष्ठ | १८४ | ११२ |
| वीत | १२५ | ४३ | | २१५ | १०९ | | ७९ | ११ |
| वातस | १६३ | २६ | वृत | १८१ | ९२ | वृथिक | ७९ | १४ |
| वीतिहोत्र | ९ | ५६ | वृति | ४९ | ३ | | १९३ | ७ |
| वीथी | ५४ | ४ | | १८६ | ८ | | १६ | २७ |
| | २११ | ८७ | वृत्त | १७८ | ६९ | | २२ | २४ |
| वीप्र | १७६ | ५५ | | १८१ | ९२ | | ६८ | १०३ |
| वीनाइ | ४२ | २७ | | २०९ | ७८ | वृ | ६९ | ११६ |
| वीर | ३३ | १७ | वृत्तात | २७ | ७ | | १८२ | ८९ |
| | ३३ | १८ | | २०६ | ६३ | | २३८ | २०० |
| | १३१ | ७७ | | १३८ | १ | वृयग | ९७ | ७६ |
| वीरण | ७६ | १६४ | वृत्ति | १३८ | २ | वृयदशक | ७८ | ६ |
| वीरतर | ७६ | १६४ | | २०८ | ७३ | वृयधज | ६ | ३६ |
| वीरतरु | ६० | ४८ | वृत्र | २२७ | १६८ | वृयम | १८२ | ५९ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|------------|---------|--------|----------------|---------|--------|-------------|---------|--------|
| वृषन् | ७ | ४५ | वेष्टित | १७८ | ७१ | वैधात्र | ९ | ५४ |
| वृषल | १५९ | १ | वेष्टित | १८० | ८७ | वैधेय | १७५ | ४८ |
| वृषस्यन्ती | ८६ | ९ | वेश | ४९ | २ | वैनतेय | ६ | ३१ |
| वृषा | ६६ | ८७ | वेशान्त | ४२ | २८ | वैनीतक | १२८ | ५८ |
| वृषाकपायी | २२५ | १५ | वेदमन् | ४९ | ४ | वैमात्रेय | ८९ | २५ |
| वृषाकपि | २१९ | १३० | वेदया | ८८ | १९ | वैयाघ्र | १२७ | ५३ |
| वृषी | ११६ | ४६ | वेदयाजनसमाश्रय | ४९ | २ | वैर | ३४ | २५ |
| वृष्टि | १४ | ११ | वेष | १०१ | ९९ | वैरनिर्यातन | १३७ | ११० |
| वृष्णि | १५२ | ७६ | वेशवार | १४५ | ३५ | वैरशुद्धि | १३७ | ११० |
| वेग | १९७ | २० | वेष्टित | १८१ | ९० | वैरिन् | ११९ | १० |
| वेगिन् | १३१ | ७३ | वेहत् | १५१ | ६९ | वैवधिक | १६१ | १५ |
| वेणि | १०१ | ९८ | वै | २४६ | ५ | वैवस्वत | १० | ६२ |
| वेणी | ६३ | ६९ | वै | २४८ | १५ | वैशाख | २० | १६ |
| वेणु | ७६ | १६१ | वैकाक्षिक | १०७ | १३६ | वैशाख | १५२ | ७४ |
| वेणुध्म | १६१ | १३ | वैकुण्ठ | ४ | १८ | वैश्य | १३८ | १ |
| वेतन | १६५ | ३८ | वैजनन | ९१ | ३९ | वैश्रवण | ११ | ७२ |
| वेतस | ५७ | २९ | वैजयन्त | ८ | ४९ | वैश्वानर | ९ | ५६ |
| वेतस्वत् | ४६ | ९ | वैजयन्तिक | १३० | ७१ | वैसारिण | ४० | १७ |
| वेताल | २५७ | २१ | वैजयन्तिका | ६२ | ६५ | वौषट् | २४७ | ८ |
| वेत्रवती | ४३ | ३४ | वैजयन्ती | १३५ | ९९ | व्यक्त | २०६ | ६२ |
| वेद | २६ | ३ | वैज्ञानिक | १६८ | ४ | व्यक्ति | २२ | ३१ |
| वेदना | १८६ | ६ | वैणव | ५६ | १८ | व्यग्र | २३२ | १९० |
| वेदि | ११० | १८ | वैणव | ११६ | ४६ | व्यङ्गा | २२९ | १७७ |
| वेदिका | ५१ | १६ | वैणविक | १६१ | १३ | व्यजन | १०७ | १४० |
| वेध | १८६ | ८ | वैणिक | १६१ | १३ | व्यञ्जक | ३२ | १६ |
| वेधनिका | १६४ | ३४ | वैणुक | १२५ | ४१ | व्यजन | २१६ | ११६ |
| वेधमुख्यक | ७२ | १३५ | वैतंसिक | १६१ | १४ | व्यजन | २५७ | २३ |
| वेधस् | ४ | १७ | वैतनिक | १६१ | १५ | व्यङ्गम्बक | ६१ | ५६ |
| वेधित | २४० | २२८ | वैतरणी | ३७ | २ | व्यत्यय | १९० | ३३ |
| वेपथु | १८२ | ९९ | वैतालिक | १३४ | ९७ | व्यत्यास | १९० | ३३ |
| वेमन् | ३६ | ३८ | वैदेहक | १५९ | ३ | व्यथा | ३८ | ३ |
| वेला | १६३ | २८ | वैदेहक | १५३ | ७८ | व्यध | १८६ | ८ |
| वेला | २३३ | १९८ | वैदेही | ६७ | ९६ | व्यध्व | ४८ | १६ |
| वेला | ६८ | १०६ | वैद्य | ९४ | ५७ | व्यय | १८८ | १७ |
| वेला | १४५ | ३५ | वैमातृ | ६८ | १०३ | व्यलीक | १९४ | १२ |

| शब्द. | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक. |
|--------------|---------|-------|---------------|---------|-------|--------------|---------|--------|
| व्यवधा | १४ | १२ | व्युत्थान | २१७ | ११८ | शकल | १४ | १६ |
| व्यवसाय | २३६ | २१३ | व्युष्टि | २०१ | ३८ | शकुलिम् | ४० | १७ |
| व्यवहार | २७ | ९ | व्यूढ | २०३ | ४५ | शकुन | ८२ | ३२ |
| व्यवाय | ११८ | ५७ | व्यूढकण्टक | १२९ | ६५ | शकुनि | ८२ | ३२ |
| व्यसन | २१७ | १२० | व्यूति | १६३ | २८ | शकुन्त | ८२ | ३३ |
| व्यसनार्त | १७४ | ४३ | | ८४ | ३९ | | २०५ | ५८ |
| व्यस्त | १७८ | ७२ | व्यूह | १३१ | ६९ | शकुन्ति | ८२ | ३२ |
| व्याकुल | १७४ | ४३ | | २४२ | २३८ | शकुल | ४१ | १९ |
| व्याकोश | ५४ | ७ | व्यूहपार्ष्णि | १३२ | ७९ | शकुलक्षका | ७६ | १५९ |
| व्याघ्र | ७८ | १ | व्योकार | १६० | ७ | शकुलदनी | ६६ | ८६ |
| | १७७ | ५९ | व्योमकेश | ६ | ३६ | | ६८ | १११ |
| व्याघ्रनख | ७१ | १२९ | व्योमन् | १२ | १ | शकुलार्भक | ४० | १७ |
| व्याघ्रपादू | ५९ | ३७ | व्योमयान | ८ | ५१ | शकुन् | ९६ | ६७ |
| व्याघ्रपुच्छ | ६० | ५० | व्योष | १५८ | १११ | शकुत्कारि | १५० | ६२ |
| व्याघ्राट | ८० | १५ | व्रज | ९४ | ३९ | | १२१ | १९ |
| व्याघ्री | ६६ | ९३ | | १९९ | ३० | शक्ति | १३६ | १०२ |
| व्याज | ३४ | ३३ | व्रज्या | १४४ | ३६ | | २०७ | ६६ |
| | ३५ | ३० | | १३४ | ९५ | शक्तिधर | ७ | ४३ |
| व्याड | २०२ | ४२ | व्रण | ९३ | ५४ | शक्तिहेतिक | १३० | ६२ |
| व्याडायुध | ७१ | १२९ | व्रणकार्य | २३१ | १८९ | शक्र | ७ | ४५ |
| व्याध | १६२ | २१ | व्रत | ११४ | ३८ | | ६३ | ६६ |
| व्याधि | ८१ | १२६ | व्रतति | ५४ | ९ | शक्रधनुस् | १३ | १० |
| | ९३ | ५१ | | २०७ | ६७ | शक्रपादप | ६१ | ५३ |
| व्याधिघात | ५७ | २४ | नतिन् | १०९ | ७ | शक्रपुष्पिका | ७२ | १३६ |
| व्याधित | ४९ | ५८ | व्रधन | १६४ | ३३ | शक्र | १७३ | ३६ |
| व्यान | १० | ६७ | नात | ८४ | ३९ | शङ्कर | ६ | ३२ |
| व्यापाद | २३ | ४ | व्रात्य | ११७ | ५४ | | ४१ | २० |
| व्याप्य | ७१ | १२६ | व्रीडा | ३३ | २३ | शङ्कु | ५४ | ८ |
| व्याम | ९९ | ८७ | | १४२ | १५ | | १३४ | ९३ |
| व्याल | ३७ | ७ | नोहि | १४२ | २१ | | ११ | ७५ |
| व्यालगाहिन् | २३३ | १९६ | नोहिभेद | १४२ | २० | शङ्ख | ४२ | २३ |
| | ३७ | ११ | वैश्य | १३९ | ६ | | ७१ | १३० |
| व्यावृत्त | १८१ | ९२ | | | | शङ्खनख | १२ | २३ |
| व्यास | १८८ | २२ | श | | | शङ्खिनी | ७१ | १२६ |
| व्याहार | २६ | १ | शकट | १२७ | ५२ | शची | ८ | ४८ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|------------|---------|--------|----------|---------|--------|-----------|---------|--------|
| शचीपति | ८ | ४६ | शबरालय | ५२ | २० | शयनीय | १०७ | १३७ |
| शटी | ७५ | १५४ | शबल | २५ | १७ | शयालु | १७२ | ३३ |
| शठ | १७४ | ४६ | शबली | १५१ | ६७ | शयित | १७२ | ३३ |
| शणपर्णी | ७४ | १४९ | | २४ | ७ | शयु | ३६ | ५ |
| शणपुष्पिका | ६८ | १०७ | शब्द | २६ | २ | शय्या | १०७ | १३७ |
| शणसूत्र | ४० | १६ | | २९ | २२ | शर | ७६ | १६२ |
| शत | १५४ | ८४ | शब्दग्रह | १०० | ९४ | शरजन्मन् | १३३ | ८७ |
| शतकोटि | ८ | ५० | शब्दन | २७३ | ३८ | शरण | ७ | ४१ |
| शतक्रु | ४३ | ३३ | शम | १८५ | ३ | शरणा | २०४ | ५३ |
| शतपत्र | ४४ | ४० | शमथ | १८५ | ३ | | २० | १९ |
| शतपत्रक | ८० | १६ | शमन | १० | ६१ | शरद् | २१ | २० |
| शतपदी | ७९ | १३ | | ११२ | २६ | | २१२ | ९३ |
| शतपर्वन् | ७६ | १६१ | शमनस्वसृ | ४३ | ३२ | शरभ | ७९ | ११ |
| शतपार्विका | ६७ | १०२ | शमल | ९६ | ६७ | शरभ्य | १३३ | ८६ |
| | ७६ | १५८ | शमित | १८२ | ९७ | शराभ्यास | १३३ | ८६ |
| शतपुण्या | ७५ | १५२ | शमी | ६१ | ५२ | शरारि | ८१ | २५ |
| शतप्राप्त | ६४ | ७६ | | १४३ | २३ | शराख | १७१ | २८ |
| शतमन्यु | ७ | ४५ | शमीधान्य | १४३ | २४ | शरात्र | १४४ | ३२ |
| शतमान | २६१ | ३४ | शमीरं | ६१ | ५२ | शरावती | ४३ | ३४ |
| शतमूली | ६७ | १०० | शम्पा | १३ | ९ | शरासन | १३२ | ८३ |
| शतयष्टिका | १०२ | १०५ | शम्ब | ८ | ५० | शरीर | ९६ | ७० |
| शतवीर्या | ७६ | १५९ | शम्बर | ३८ | ४ | शरीरिन् | २२ | ३० |
| शतवेधिन् | ७३ | १४१ | | ७९ | १० | | ४७ | ११ |
| शतहृदा | १३ | ९ | शम्बरारि | ५ | २७ | शर्करा | १४६ | ४३ |
| शनाङ्ग | १२७ | ५१ | शम्बरी | ६६ | ८७ | | २२८ | १७५ |
| शतावरी | ६७ | १०१ | शम्बल | २६१ | ३४ | शर्करावत् | ४७ | ११ |
| | ११९ | ९ | शम्बाकृत | १४० | ९ | शर्करिल | ४७ | ११ |
| शत्रु | १२० | ११ | शम्बूक | ४२ | २३ | शर्मन् | २२ | २५ |
| शनैश्चर | १६ | २६ | शम्भली | ८८ | १९ | शर्व | ६ | ३२ |
| शनैस् | २४८ | १७ | शम्भु | ६ | ३२ | शर्वरी | १७ | ३ |
| शपथ | २७ | ९ | | २२१ | १३ | शर्वणी | ७ | ३९ |
| शपन | २७ | ९ | शम्या | १४१ | १४ | शल | ७८ | ७ |
| शरु | १२७ | ४९ | शम्याक | ५७ | २३ | शलभ | ८२ | २८ |
| शरुती | ४१ | १८ | शय | १४१ | ८१ | शलल | ७८ | ७ |
| शवर | १६२ | २० | शयन | ३५ | ३६ | शलली | ७८ | ७ |
| | | | | १०७ | १३८ | शलाटु | ५६ | १५ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः |
|------------|---------|--------|------------|---------|--------|--------------|---------|--------|
| शल्क | १९४ | १३ | शाटी | २६२ | ३८ | शालूक | ४४ | ३८ |
| | ६१ | ५३ | शाट्य | ३४ | ३० | शालूर | ४२ | २४ |
| शल्य | ७८ | ७ | शाण | १६४ | ३२ | शालेय | ६८ | १०५ |
| | १३४ | ९३ | शाणी | २५३ | ९ | | १३९ | ६ |
| शय | १३८ | ११८ | शाण्डिल्य | ५८ | ३२ | शाल्मलि | ६० | ४६ |
| शश | ७९ | ११ | | २२ | २५ | शाल्मलीवेष्ट | ६० | ४७ |
| शशधर | १४ | १५ | शात | १८१ | ९१ | शावक | ८३ | ३८ |
| शम्भलोमन् | १५८ | १०७ | शानकुम्भ | १५६ | ९४ | शाभत | १७८ | ७२ |
| शशादन | ७९ | १४ | शात्रव | १२० | ११ | शाङ्कुलिक | १९१ | ४० |
| शशोर्ण | १५८ | १०७ | शाद | ३९ | ९ | शासन | १२२ | २५ |
| | २४३ | २६३ | | २१२ | ९० | शास्तृ | ८ | १४ |
| शश्वत् | २४५ | १ | शादहरति | ४७ | १० | शास्त्र | २२९ | १७९ |
| | २४७ | ११ | शाहल | ४७ | १० | शास्त्रविद् | १६८ | ६ |
| शप् | ७७ | १६७ | शान्त | १८२ | ९७ | शिम्य | १६३ | ३० |
| शस्त | २२ | २६ | शान्ति | १८५ | ३ | शिक्यित | १८० | ८९ |
| | १८४ | १०९ | शावर | ५८ | ३३ | शिक्षा | २६ | ४ |
| शख | १३२ | ८२ | शाम्बरी | १६० | ११ | शिक्षित | १६८ | ८ |
| | २२९ | १७९ | शार | २२७ | १६६ | शिखण्ड | ८२ | ३१ |
| शखक | १५६ | ९८ | | ५७ | २३ | शिखण्डक | १०० | ९६ |
| शखमार्ज | १६० | ७ | शारद | २१२ | ९५ | | ५२ | ४ |
| शखाजोन | १२९ | ६७ | शारदी | ६८ | १११ | शिखर | ५५ | १२ |
| शखी | १३४ | ९२ | शारीफल | १६६ | ४६ | | ५२ | १ |
| | ७२ | १३६ | शारिवा | ६९ | ११२ | शिखरिन् | २१५ | १०६ |
| शाक | १४५ | ३४ | शाकर | ४७ | ११ | | ९ | ६० |
| | १५० | ६४ | शार्ङ्गिन् | ५ | १९ | शिखा | ८२ | ३१ |
| शाकुनिक | १६१ | १४ | शार्दूल | ७८ | १ | | १०१ | ९७ |
| शाक्तीक | १३० | ६९ | | १७७ | ५९ | | १९६ | १९ |
| शान्यमुनि | ४ | १४ | शार्वर | २३१ | १८८ | शिखानत्र | ९ | ५८ |
| शान्यसिंह | ४ | १५ | शाल | ४१ | १९ | शिखानल | ८२ | ३० |
| शाखा | ५५ | ११ | | ५४ | ५ | शिखिप्रोत्र | १५७ | १०१ |
| शाखानगर | ४९ | २ | शालपर्णी | ६९ | ११५ | शिखिन् | ८२ | ३० |
| शाखामृग | ७८ | ३ | शाला | ४९ | ६ | | २१५ | १०६ |
| शाखाशिक्षा | ५५ | ११ | | ५५ | ११ | शिखिवाहन | ७ | १२ |
| शाखिन् | ५४ | ५ | शालाट्टक | १९१ | १२ | मिथु | ५८ | ३१ |
| शाङ्खिक | १६० | ८ | शालि | १४३ | २८ | | १५५ | ३४ |
| शाङ्खिक | २६० | ३३ | शालीन | १७१ | २६ | मिथुज | १५८ | ११० |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|------------|---------|--------|--------------|---------|--------|------------|---------|--------|
| शिञ्जित | २९ | २४ | | ७ | ३९ | शील | ३४ | २६ |
| शिञ्जिनी | १३३ | ८५ | | ६१ | ५२ | | २३४ | २०१ |
| शित | २१० | ८२ | शिवा | ६२ | ५९ | | ७१ | १३२ |
| शितिकण्ठ | ६ | ३४ | | ७१ | १२७ | शुक | ८१ | २१ |
| शितिसारक | ५९ | ३८ | | ७८ | ५ | शुकनास | ६१ | ५७ |
| शिपिविष्ट | २०० | ३४ | | २३६ | २१२ | शुक्त | २१० | ८३ |
| शिफा | ५५ | ११ | शिशिर | १५ | १९ | | ४२ | २३ |
| शिफाकन्द | ४४ | ४३ | | २० | १८ | शुक्ति | ७१ | १३० |
| शिविका | १२७ | ५३ | शिशु | ८३ | ३८ | | ९ | ५९ |
| शिविर | १२४ | ३३ | शिशुक | ४१ | १८ | | १६ | २५ |
| शिम्व | १४३ | २३ | शिशुत्व | ९१ | ४० | शुक्र | २० | १६ |
| शिरस् | १०० | ९५ | शिशुमार | ४१ | २० | | ९५ | ६२ |
| शिरस्त्र | १२९ | ६४ | शिभ्र | ९७ | ७६ | शुक्ल | २३८ | २२० |
| शिरस्य | १०१ | ९८ | शिबिदान | १७४ | ४६ | शुक्रशिष्य | ४ | १२ |
| शिरा | ९५ | ६५ | शिष्टि | १२२ | २६ | | २५ | १२ |
| शिरीष | ६२ | ६३ | शिष्य | १०९ | ११ | शुरू | १९ | १२ |
| शिरोग्र | ५५ | १२ | शीकर | १४ | ११ | शुब् | ३४ | २५ |
| शिरोधि | ९९ | ८८ | शीघ्र | १० | ६८ | | ९ | ५९ |
| शिरोरत्न | १०१ | १०२ | | १५ | १९ | शुचि | २० | १६ |
| शिरोरुह | १०० | ९५ | शीत | १५ | १९ | | २५ | १२ |
| शिल | १३८ | २ | | ५७ | ३० | | ३३ | १७ |
| शिला | ५० | १३ | | ५८ | ३४ | | १९९ | २८ |
| | ५२ | ४ | शीतक | २५७ | २२ | शुण्ठी | १४५ | ३८ |
| शिलाजतु | १५७ | १०४ | शीतभीरु | १६१ | १८ | शुण्डापान | १६५ | ४१ |
| शिली | ४२ | २४ | | ६१ | ७० | शुतुत्रि | ४३ | ३३ |
| शिलीमुख | १९६ | १८ | शीतल | १५ | १९ | शुद्धान्त | ५० | १२ |
| शिलोच्चय | ५२ | १ | | ७४ | १४९ | | २०७ | ६६ |
| शिल्प | १६४ | ३५ | शीतशिव | ६८ | १०५ | शुनक | १६२ | १२ |
| शिल्पिन् | १५९ | ५ | | ७० | १२२ | शुनासीर | ७ | ४४ |
| शिल्पिशाला | ४९ | ७ | शीधू | १४६ | ४२ | शुनी | १६२ | २२ |
| | २२ | ३२ | शीर्ष | २६१ | ३४ | | २२ | २५ |
| शिव | १५२ | ७३ | शीर्षक | १०० | ९५ | शुभ | १५२ | ७६ |
| शिवक | ६५ | ८१ | शीर्षच्छेद्य | १२९ | ६३ | शुभंयु | २५७ | २३ |
| शिवमल्लि | | | शीर्षण्य | १७४ | ४५ | शुभान्वित | १७५ | ५० |
| | | | | १०१ | ९८ | | २५ | १२ |
| | | | | १२९ | ६४ | शुभ्र | २३२ | १९२ |

| शब्द. | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|------------|---------|--------|-----------|---------|-------|-----------|---------|-------|
| शुभ्रदन्ती | १३ | ५ | शुद्धी | ४२ | २५ | शोभित | १४७ | ४६ |
| शुभ्राशु | १४ | १४ | शुद्धी | ६७ | १०० | शोक | १७६ | ५६ |
| शुल्क | १२३ | २७ | शुद्धीकनक | ६९ | ११६ | शोक | ९३ | ५२ |
| शुल्व | १५६ | ९७ | शुत | १५६ | ९६ | शोभन | १७५ | ५२ |
| | १६३ | २७ | शेखर | १८१ | ९५ | शोभा | १४ | १७ |
| | २५७ | २३ | शेखर | १०७ | १३६ | शोष | ९३ | ५१ |
| शुश्रूषा | ११४ | ३५ | शेफस् | ९७ | ७६ | शौक | ८४ | ४३ |
| शुष्कभास | ९५ | ६३ | शेफालिका | ६३ | ७० | शौर्हिकेय | ३७ | १० |
| शुष्म | १३६ | १०२ | शेमुपी | २५२ | ७ | शौक्ल्य | ९१ | ८१ |
| शुष्मन् | ९ | ५७ | शेतु | ७३ | १ | शौण्ड | १९१ | २३ |
| शूक | १४३ | २३ | शेधु | ५८ | ३४ | शौण्डिक | १६० | १० |
| शूककीट | ७९ | १४ | शेवधि | ११ | ७५ | शौद्धोदनि | ८ | १५ |
| शूकधान्य | १४३ | २४ | शेवाल | ४४ | ३८ | शौरि | ५ | २१ |
| शूकशिम्वि | ६६ | ८७ | शेष | ३६ | ४ | शौर्य | १३६ | १०२ |
| शूत्र | १५९ | १ | शैक्ष | १०९ | ११ | शौन्यिक | १६० | ८ |
| शूद्रा | ८६ | १३ | शैखरिक | ६६ | ८८ | शौकुल | १७० | १९ |
| शूत्री | ८६ | १३ | शैल | ५२ | १ | शौक्योत | १८६ | १० |
| शून्य | १७६ | ५६ | शैलालिन् | १६१ | १२ | श्मशान | १३८ | ११८ |
| शूर | १३१ | ७७ | शैलप | ५८ | ३२ | श्मशु | १०१ | ९९ |
| शूर्प | १४३ | २६ | शैलेय | १६१ | १२ | श्माम | २५ | १४ |
| शूल | २३३ | १९७ | शैल्य | ७० | १२३ | श्मामल | २२२ | १४३ |
| शूलकृत | १४७ | ४५ | शैल | ४४ | ३८ | श्मामल | २५ | १४ |
| शूलिन | ६ | ३२ | शैवलिनी | ४३ | ३० | श्मामा | ६१ | ५५ |
| शूल्य | १४७ | ४५ | शैशन | ९१ | ४० | श्मामा | ६८ | १०८ |
| शृगाल | ७८ | ५ | शोक | ३४ | २५ | श्मामा | ६९ | ११२ |
| शृङ्खल | १०२ | १०९ | शोन्मिकेश | ९ | ५७ | श्मामा | २२२ | १४३ |
| शृङ्खलक | १५२ | ७५ | शोचिस् | १७ | ३४ | श्मामा | ७७ | १६८ |
| शृङ्खला | १२५ | ४१ | शोण | २५ | १५ | श्माल | ९० | ३० |
| | ५२ | ४ | शोण | ४३ | ३४ | श्माल | २० | १६ |
| शृङ्ग | ७३ | १४२ | शोणक | ६१ | ५७ | श्मेत | २० | १० |
| | १९८ | २६ | शोणरत्न | १०६ | ९० | श्मेत | ७९ | १८ |
| शृङ्गेर | १४८ | ३७ | शोणित | ९८ | ८८ | श्मेनपता | २५० | ६ |
| शृङ्गाटक | ४८ | १७ | शोध | ९३ | ८० | श्मदा | २१८ | १०० |
| शृङ्गा | ३३ | १७ | शोधप्री | ७८ | १८९ | श्मदा | ८८ | २१ |
| शृङ्गिणी | १५० | ६६ | शोधप्री | ५१ | १८ | श्मदा | १७१ | २७ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|--------------|---------|--------|-----------|---------|--------|------------|---------|--------|
| अयण | १८७ | १२ | | २२ | २४ | अयस् | २४९ | २२ |
| अवण | १०० | ९४ | अयस् | २४ | ६ | असन | १० | ६४ |
| अवसू | १०० | ९४ | | १७६ | ५८ | | ६१ | ५२ |
| अविष्ठा | १५ | २२ | | ६२ | ५९ | आविध् | ७८ | ७ |
| आणा | १४७ | ५० | अयसी | ६५ | ८४ | अित्र | ९३ | ५४ |
| आद्ध | ११३ | ३१ | | ६७ | ९७ | | २५ | १२ |
| आद्धदेव | १० | ६२ | अष्ट | १७६ | ५८ | अेत | १६६ | ९६ |
| आय | १८७ | १२ | ओण | ९२ | ४८ | | २०९ | ७९ |
| आवण | २० | ४६ | ओणि | ९७ | ७४ | अेतगुरुत् | ८१ | २३ |
| आवणिक | २० | १६ | ओणिफलक | ९७ | ७४ | अेतमरिचि | १५८ | ११० |
| अी | ५ | २८ | ओत्र | १०० | ९४ | अेतरक्त | २५ | १५ |
| | १३२ | ८२ | ओत्रिय | १०८ | ६ | अेतसुरसा | ६३ | ७१ |
| अीकण्ठ | ६ | ३४ | औषट् | २४७ | ८ | | | |
| अीघन | ४ | १४ | शृङ्ग | १७७ | ६१ | प | | |
| अीद | ११ | ७३ | श्लेष | १८७ | ११ | पट्कर्मन् | १०८ | ४ |
| अीपति | ५ | २१ | श्लेष | ९४ | ६० | पट्पद | ८२ | २९ |
| अीपर्ण | ६३ | ६६ | श्लेषमन् | ९५ | ६२ | पडभिज्ञ | ४ | १४ |
| | २०४ | ५३ | श्लेषमल | ९४ | ६० | पडानन | ७ | ४१ |
| अीर्षणिका | ५९ | ४० | श्लेषमातक | ५८ | ३४ | पड्यन्थ | ६० | ४८ |
| अीर्षणी | ५९ | ३६ | श्लोक | १९२ | २ | पड्यन्था | ६७ | १०३ |
| अीफल | ५८ | ३२ | अःअयस् | २२ | २५ | पड्यन्थिका | ७५ | १५४ |
| अीफलो | ६७ | ९५ | अदंष्ट्रा | ६७ | ९८ | पड्ज | ३० | १ |
| अीमत् | १६९ | १४ | अन् | १६२ | २२ | पण्ड | १५० | ६२ |
| अीमान् | ५९ | ४० | अनिशु | २६३ | ४० | पण्ड | ९१ | ३९ |
| अील | १६९ | १४ | अपच | १६२ | २० | | ११९ | ९ |
| अीवत्सलाब्धन | ५ | २२ | | ३६ | २ | पष्टिकं | १४३ | २४ |
| अीवास | १०५ | १२९ | अभ्र | २३१ | १८४ | पष्टिक्य | १४० | ७ |
| अीवेष्ट | १०६ | १२९ | | २५७ | २२ | पाण्मातुर | ७ | ४३ |
| अीसंज्ञ | १०५ | १२५ | द्वयथु | ९३ | ५२ | | | |
| अीहस्तिनी | ६३ | ६९ | अवृत्ति | १३८ | २ | संयत् | १३६ | १०६ |
| अुत | २०९ | ७७ | अशुर | ९० | ३१ | सयत | १७४ | ४२ |
| | २६ | ३ | द्वशुरौ | ९१ | ३७ | संयस | १८८ | १८ |
| अुति | १०० | ९४ | अशुर्य | २२३ | १४६ | संयाम | १८८ | १८ |
| | २०८ | ७३ | अश्रु | ९० | ३१ | संयुग | १३६ | १०५ |
| अेणि | १५९ | ५ | अश्रु | ९१ | ३७ | संयोजित | १८१ | ९२ |
| अेणी | ५४ | ४ | अश्रुश्रु | | | | | |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|--------------|---------|-------|-----------|---------|-------|------------|---------|-------|
| सराव | २९ | २३ | सस्थान | २१८ | १२४ | सङ्ख्य | १३६ | १०४ |
| सलाप | २८ | १६ | सस्थित | १३८ | ११७ | सङ्ख्या | २३ | २ |
| सत्त्व | २४८ | १६ | संस्पर्शा | ७५ | १५४ | सङ्ख्यात | १७७ | ६४ |
| सवत्सर | २१ | २० | संस्फोट | १३६ | १०५ | सङ्ख्यावत् | १०८ | ५ |
| सत्पन्न | १८६ | ४ | सहत् | १७९ | ७५ | सङ्ख्येय | १५३ | ८३ |
| सवर्त | २१ | २२ | सहत्जानुक | ९२ | ४७ | सङ्ग | १९० | २९ |
| सवार्तका | ४१ | ४२ | सहति | ८४ | ४० | सङ्गत | २९ | १८ |
| सत्तय | ५२ | १९ | सहन्न | ९६ | ७० | सङ्गम | { १९० | २९ |
| सवाहन | १८८ | २२ | सहति | २७ | ८ | | { २६१ | ३४ |
| | २३ | १ | सकल | १७७ | ६५ | सङ्गर | २२७ | १६६ |
| सनिद् | { २४ | ५ | सकृत् | २४३ | २४२ | सङ्गोर्ण | १८३ | १०९ |
| | { २१२ | ९२ | सकृत्त्यज | ८१ | २० | सङ्गूढ | १८१ | ९३ |
| सवीक्षण | १९० | ३० | सक्थि | ९६ | ७३ | सङ्ग्रह | २६ | ६ |
| सवीत | १८१ | ९० | सखि | १२० | १२ | सङ्ग्राम | १३६ | १०५ |
| सवेग | ६५ | ३४ | सखी | ८६ | १२ | सङ्ग्राह | { १३४ | ९० |
| सवेद | १८६ | ६ | सरय | १२० | १२ | | { १८७ | १४ |
| सवेश | ३५ | ३६ | सगर्भ्य | ९० | ३४ | सङ्घ | ८४ | ४१ |
| सव्यान | १०४ | ११८ | सगोत्र | ९० | ३४ | सङ्घात | ८४ | ३९ |
| सशमक | १३५ | ९८ | सग्धि | १४९ | ५५ | सचित्र | २३५ | २०६ |
| सशय | २३ | ३ | सङ्कट | १८० | ८५ | सज्ज | १२९ | ६५ |
| सशयापन्नमानस | १६८ | ५ | सङ्कर | ५१ | १८ | सज्जन | { १०८ | ३ |
| सश्रव | २४ | ५ | सङ्कर्षण | ५ | २५ | | { १२४ | ३३ |
| सश्रुत | १८३ | १०९ | सङ्कलित | १८१ | ९३ | सज्जना | १२५ | ४२ |
| संक्षेप | १९० | ३० | सङ्कल्प | २३ | २ | सञ्चय | ८४ | ३९ |
| ससक्त | १७८ | ६८ | सङ्कष्टक | १७४ | ४३ | सञ्चारिका | ८७ | १७ |
| ससद् | ११० | १५ | सङ्काश | १६५ | ३८ | सञ्जवन | ४९ | ६ |
| ससरण | २०४ | ५४ | | १५९ | १ | सञ्ज्वर | ९ | ६० |
| ससिद्धि | ३६ | ३७ | सङ्कीर्ण | { १८० | ८५ | सञ्जपन | १३७ | ११३ |
| सस्कारहीन | ११७ | ५४ | | { २०५ | ५७ | सञ्ज्ञा | २०० | ३३ |
| सस्कृत | २१० | ८० | | { २९ | १९ | सञ्जु | ९२ | ४७ |
| सस्तर | २२६ | १६१ | सङ्कुल | { १८० | ८५ | सटा | १०१ | ९७ |
| सस्तन | १८९ | २३ | सङ्कोच | १०५ | १२४ | सण्डीन | ८३ | ३७ |
| सस्ताव | १९० | ३४ | सङ्कन्दन | ८ | ४७ | | { १०८ | ५ |
| सस्त्याय | २२४ | १५१ | सङ्क्रम | १८९ | २५ | | { २१० | ८३ |
| सस्था | १२२ | २६९ | सङ्क्षेपण | १८८ | २१ | सत | ११ | ६९ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-----------|---------|--------|------------|---------|--------|-----------------|---------|--------|
| सती | ८५ | ६ | सनाभि | ९० | ३३ | सपदि | २४६ | २ |
| सतीनक | १४२ | १६ | सनि | ११३ | ३२ | | २४७ | ९ |
| सतीर्थ | १०९ | १२ | सनिष्ठीव | २९ | २० | सपर्या | ११० | १४ |
| सत्तम | १७६ | ५८ | सनीड | १७८ | ६६ | | ११४ | ३५ |
| सत्त्व | { २२ | २९ | सन्तत | ११ | ६९ | सपिण्ड | ९० | ३३ |
| | { २३६ | २१३ | सन्तति | १०७ | १ | सपीति | १४९ | ५५ |
| सत्पथ | ४८ | १६ | सन्तप्र | १८३ | १०२ | सप्तकी | १०२ | १०८ |
| सत्य | { २९ | २२ | सन्तान | { ८ | ५३ | सप्ततन्तु | ११० | १३ |
| | { २२४ | १५४ | | { १०७ | १ | सप्तपर्ण | ५७ | २३ |
| सत्यलूकार | १५३ | ८२ | सन्ताप | ९ | ६० | सप्तला | { ६३ | ७२ |
| सत्यवचस् | ११५ | ४३ | सन्तापित | १८३ | १०२ | | { ७३ | १४३ |
| सत्याकृति | १५३ | ८२ | सन्दान | १५२ | ७३ | सप्तार्चिस् | ९ | ५९ |
| सत्यानृत | १३९ | ३ | सन्दानित | १८१ | ९५ | सप्ताश्रव | १६ | २९ |
| सत्यापन | १५३ | ८२ | सन्दाव | १३७ | १११ | सप्ति | १२५ | ४९ |
| सत्र | २३० | १८१ | सन्दित | { १८० | ८६ | सत्रद्व्यचारिन् | १०९ | ११ |
| सत्रा | २४६ | ४ | | { १८१ | ५५ | सभर्तृका | ८६ | १२ |
| सत्रिन् | १२० | १५ | सन्देशवाच् | २८ | १७ | | { ४९ | ६ |
| सत्वर | १० | ६८ | सन्देशहर | १२० | १६ | सभा | { ११० | १५ |
| सदन | ४९ | ५ | सन्देश | २३ | ३ | | { २२१ | १३७ |
| सदस् | ११० | १५ | सन्देशि | ८४ | ३९ | सभाजन | १८६ | ७ |
| सदस्य | ११० | १६ | सन्देशाव | १३७ | १११ | सभासद | ११० | १६ |
| सदा | २४९ | २२ | सन्धा | २१४ | १०२ | सभास्तार | ११० | १६ |
| सदागति | १० | ६४ | सन्धान | १६५ | ४२ | सभिक | १६६ | ४४ |
| सदातन | १७८ | ७२ | सन्धि | { १२१ | १८ | सभ्य | { १०८ | ३ |
| सदानीरा | ४३ | ३३ | | { १८७ | ११ | | { ११० | १६ |
| सदृक् | १६४ | ३७ | सन्धिनी | १५१ | ६९ | सम | { १६४ | ३७ |
| सदृश | १६४ | ३७ | सन्ध्या | १७ | ३ | | { १७७ | ६४ |
| सदृक्ष | १६४ | ३७ | सन्नकद्रु | ५९ | ३५ | समय | १७७ | ६५ |
| सदेश | १७८ | ६७ | सन्नद्ध | १२९ | ६५ | समज्ञा | { ६६ | ९० |
| सन्नन् | ४९ | ४ | सन्नय | २२४ | १५० | | { ७३ | १४१ |
| सद्यस् | २४७ | ९ | सन्निधि | १८९ | २३ | समज | ८४ | ४२ |
| सध्यच् | १७२ | ३४ | सन्निकर्षण | १८९ | २३ | समज्ञा | २७ | ११ |
| सनत्कुमार | ९ | ५४ | सन्निकृष्ट | १७८ | ६६ | समज्या | ११० | १५ |
| सना | २४८ | १७ | सन्निवेश | ५२ | १९ | समञ्जस | १२२ | २४ |
| सनातन | १७८ | ७२ | सपत्न | ११९ | १० | समाधिक | १७९ | ७५ |
| | | | | | | समन्ततस् | २४७ | १३ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-------------|---------|-------|-------------|---------|-------|-------------|---------|-------|
| समन्तदुग्धा | ६८ | १०६ | समाहति | २६ | ६ | सम्पत्ति | १३२ | ८२ |
| समन्तभद्र | ४ | १३ | समाह्वय | १६६ | ४६ | सम्पद् | १३२ | ८१ |
| समन्वितलय | ३० | ३ | समिद् | १३६ | १०६ | साम्प्रदाय | २२४ | १५० |
| समम् | २४६ | ४ | | ११० | १५ | सम्प्रधान | २१८ | १२५ |
| समय | { १७ | ४ | समिति | { १३६ | १०६ | सम्पुटक | १०७ | १३९ |
| | { २२४ | १४९ | | { २०७ | ७० | सम्प्रति | २४९ | २३ |
| समया | { २४४ | २५१ | समिध | ५५ | १३ | सम्प्रदाय | १८६ | ७ |
| | { २४६ | ७ | समीक | १३६ | १०४ | सम्प्रधारण | २२५ | १५६ |
| समर | १३६ | १०४ | समीप | १७८ | ६६ | सम्प्रधारणा | १२२ | २५ |
| समर्थ | २११ | ८७ | समीर | १० | ६५ | सम्प्रहार | १३६ | १०५ |
| समर्थन | १२२ | २५ | समीरण | { १० | ६५ | सम्फुल्ल | ५४ | ७ |
| समर्थक | १६८ | ७ | | { ६५ | ७९ | सम्बाध | १८० | ८५ |
| समर्थोद | १७८ | ६७ | समुच्चय | १८७ | १६ | सम्भेद | ४३ | ३५ |
| समर्थितम् | १० | ६१ | समुच्चय | २२४ | १५२ | सम्भ्रम | { ३५ | ३४ |
| समवाय | ८४ | ४० | समुज्झित | १८३ | १०७ | | { १८९ | २६ |
| समष्टिला | ७५ | १५७ | समुदक्त | १८१ | ९० | सम्भद | २२ | २४ |
| समसन | १८८ | २१ | समुदय | ८४ | ४० | सम्मार्जनी | ५१ | १८ |
| समस्त | १७७ | ६५ | समुदाय | { ८४ | ४० | सम्पूर्जन | १८६ | ६ |
| समस्या | २७ | ७ | | { १३६ | १०६ | सम्यच् | २९ | २२ |
| सना | २१ | २० | समुद्र | २५५ | १७ | सम्राज् | ११८ | ३ |
| समासमीना | १५२ | ७२ | समुद्रक | १०७ | १३९ | सरक | १६५ | ४३ |
| समाकार्पन् | २५ | ११ | समुद्रिरण | २०४ | ५५ | सरघा | ८२ | २६ |
| समाघात | १३६ | १०५ | समुद्रत | १७१ | २३ | सरट | ७९ | १२ |
| समाज | ८४ | ४२ | समुद्र | ३८ | १ | सरणा | ७५ | १५२ |
| समाधि | { २४ | ५ | | { ६६ | ९२ | सरणि | ४८ | १५ |
| | { २१३ | ९८ | समुद्रान्ता | { ६९ | ११६ | सरत्ति | ९९ | ८६ |
| समान | { १० | ६७ | | { ७२ | १३३ | सरमा | १६२ | २२ |
| | { १६४ | ३७ | समुन्दन | १९० | २९ | सरल | { ६२ | ६० |
| | { २१८ | १२७ | समुन्न | १८३ | १०५ | | { १६८ | ८ |
| समानोद्वर्प | ९० | ३४ | समुन्नद | २१४ | १०३ | सरलद्रव | १०६ | १२९ |
| समालम्भ | १८९ | २७ | समुपजोषम् | २४७ | १० | सरला | ६८ | १०८ |
| समावृत्त | १०९ | १० | समूह | ७९ | ९ | सरस् | ४२ | १२८ |
| समासाद्य | १८१ | ९२ | समूह | १११ | २० | सरसी | ४२ | १२८ |
| समासार्था | २७ | ७ | समृद्ध | १६९ | ११ | सरसीरुह | १४ | ४० |
| समाहार | १८७ | १६ | समृद्धि | १८६ | १० | सरस्व | { ३८ | १ |
| समाहित | १८३ | १०९ | सम्पुट | १४७ | ४६ | | { २०५ | ८७ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|----------------|---------|--------|---------------|---------|--------|------------|---------|--------|
| सरस्वती | २६ | १ | सर्वार्थसिद्ध | ४ | १५ | सहस्रांशु | १६ | ३१ |
| | ४३ | ३४ | सर्वौघ | १३४ | ९४ | सहस्राक्ष | ८ | ४७ |
| सरित् | ४३ | ३४ | सर्पप | १४२ | १७ | सहस्रिन् | १२९ | ६२ |
| सरित्पति | ३८ | १ | सलिल | ३८ | ३ | सहा | ६४ | ७३ |
| सरीसृप | ३७ | ७ | सल्लकी | ७० | १२४ | सहाय | ६९ | ११३ |
| सर्ग | १९७ | २२ | सव | ११० | १३ | सहायता | १३० | ७१ |
| सर्ज | ६० | ४४ | सवन | ११६ | ४७ | सहिष्णु | १९२ | ४१ |
| सर्जक | ६० | ४४ | सवयस | १२० | १२ | सांयात्रिक | १७२ | ३१ |
| सर्जरस | १०५ | १२७ | सवितृ | १६ | ३१ | सांयुगीन | ४० | १२ |
| सर्जिकाक्षार | १५८ | १०९ | सविध | १७८ | ६७ | सांवत्सर | १३१ | ७७ |
| सर्प | ३६ | ६ | सवेश | १७८ | ६७ | सांशयिक | १२० | १४ |
| सर्पराज | ३६ | ४ | सव्य | १८० | ८४ | साकम् | १६८ | ५ |
| सर्पिस् | १४८ | ५२ | सव्येष्ट | १२९ | ६० | साकल्य | २४६ | ४ |
| सर्व | १७७ | ६४ | सस्य | ५६ | १५ | साक्षात् | १८५ | २ |
| सर्वसहा | ४५ | ३ | सस्यमञ्जरी | १४२ | २१ | सागर | २४३ | २४३ |
| सर्वज्ञ | ४ | १३ | सस्यश्रुक | १४२ | २१ | साचि | ३८ | १ |
| | ३ | ३५ | सस्यसंवर | ६० | ४४ | सातला | २४६ | ६ |
| सर्वतस् | २४७ | १३ | सह | २४६ | ४ | सातला | ७३ | १४३ |
| सर्वतोभद्र | ५० | १० | सहकार | ५८ | ३३ | साति | १९१ | ३९ |
| | ६२ | ६२ | सहचरी | ६४ | ७५ | | २०७ | ६७ |
| सर्वतोभद्रा | ५९ | ३५ | सहज | ९० | ३४ | सातिसार | ९४ | ५९ |
| सर्वतोमुख | ३८ | ४ | सहधर्मिणी | ८५ | ५ | सात्त्विक | ३२ | १६ |
| सर्वदा | २४९ | २२ | सहन | १७२ | ३१ | सादिन् | १२९ | ६० |
| सर्वधुरावह | १५० | ६६ | सहभोजन | १४९ | ५५ | | २१५ | १०७ |
| सर्वधुरीण | १५० | ६६ | | २० | १४ | साधन | २१७ | ११९ |
| सर्वमङ्गला | ७ | ३९ | सहस्र | १३६ | १०२ | साधारण | १६४ | ३७ |
| सर्वरस | १०५ | १२७ | | २४० | २३२ | | १८० | ८२ |
| सर्वला | १३४ | ९३ | सहसा | २४६ | ७ | साधित | १७३ | ४० |
| सर्वलिङ्गिन् | ११५ | ४५ | सहस्य | २० | १५ | साधिष्ठ | १८४ | ११३ |
| सर्ववेदस् | १०९ | ९ | सहस्र | १५४ | ८४ | साधीयस् | २४१ | २३५ |
| सर्वसन्नहन | १३४ | ९४ | सहस्रदंष्ट्र | ४१ | १८ | | १०८ | ३ |
| सर्वानुभूति | ६८ | १०८ | सहस्रपुत्र | ४४ | ४० | साधु | १७५ | ५२ |
| सर्वान्नभोजिन् | १७० | २२ | सहस्रवीर्या | ७६ | १५८ | | २१४ | १०१ |
| सर्वान्नीन | १७० | २२ | सहस्रवेधि | १४६ | ४० | साधुवाहिन् | १२५ | ४४ |
| सर्वान्निसार | १३४ | ९४ | सहस्रवेधिन | ७३ | १४१ | साध्य | ३ | १० |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|----------------|---------|-------|----------|---------|-------|-----------|---------|-------|
| साध्वस | ३३ | २१ | सारसन | १०२ | १०२ | सिताम्भोज | ४४ | ४१ |
| साध्वी | ८५ | ६ | सारिका | १२९ | ६३ | सिद्ध | ३ | ११ |
| सानु | ५२ | ५ | सार्य | २५३ | ८ | सिद्धान्त | १८२ | १०० |
| सान्तपन | ११७ | ५२ | सार्यवाह | ८४ | ४१ | सिद्धार्थ | २३ | ४ |
| सात्व | २९ | १८ | सार्य | १५३ | ७८ | सिद्धि | १४२ | १८ |
| सान्वटिक | १२२ | २१ | सार्यम् | १८३ | १०५ | सिद्धि | ६९ | ११२ |
| सान्द्र | १२३ | २९ | सार्वभौम | २४६ | ४ | सिद्धि | ९३ | ५३ |
| सान्द्रक्षिग्ध | १७८ | ६६ | सार्वभौम | १३ | ४ | सिद्धि | ९४ | ६१ |
| सान्नाय | १७२ | ३० | सार | ११८ | २ | सिद्धि | २५३ | १० |
| सामपदीन | ११२ | २७ | सार | ४९ | ३ | सिद्धि | १५ | २२ |
| सामय | १२० | १२ | सार | ६० | ४४ | सिद्धिका | २५३ | ८ |
| सामय | २३ | ३ | सार | ६९ | ११५ | सिद्धिका | १९ | ९ |
| सामय | १२२ | २१ | सार | १५० | ६३ | सिद्धिका | ६३ | ६८ |
| सामाजिक | ११० | १८ | सार | १२२ | २१ | सिद्धिका | ६३ | ६८ |
| सामान्य | २२ | ३१ | सार | १२९ | ६२ | सिद्धिका | १५७ | १०५ |
| सामि | १८० | ८२ | सार | १२२ | ४३ | सिद्धिका | २६० | ३१ |
| सामि | २४४ | २४९ | सार | ७८ | १ | सिद्धिका | ३७ | २ |
| सामिधेनी | १११ | २२ | सार | १७७ | ५९ | सिद्धिका | ३८ | १ |
| सामुद्र | १४६ | ४१ | सार | ९९ | ८५ | सिद्धिका | २१४ | १०१ |
| साम्परायिक | १३६ | १०४ | सार | १३६ | १०७ | सिद्धिका | १४६ | ४२ |
| साम्परायिक | १३६ | १०४ | सार | १६९ | १२ | सिद्धिका | ४३ | ३५ |
| साम्परायिक | १३६ | १०४ | सार | १२३ | ३१ | सिद्धिका | १०५ | १२८ |
| साम्परायिक | १३६ | १०४ | सार | ६८ | १०३ | सिद्धिका | १४१ | १४ |
| साय | १७ | ३ | सार | ६८ | १०३ | सिद्धिका | १४० | ८ |
| सायम् | २४८ | १९ | सार | ६९ | ११४ | सिद्धिका | १६५ | ४२ |
| सायक | १९२ | २ | सार | २०८ | ७३ | सिद्धिका | ५२ | २० |
| सार | ५५ | १२ | सार | ३९ | ९ | सिद्धिका | २५६ | १९ |
| सार | २२८ | १७१ | सार | ४७ | ११ | सिद्धिका | ८५ | २ |
| सार | ८० | १७ | सार | १५८ | १०७ | सिद्धिका | ५२ | २० |
| सार | १९७ | २३ | सार | २५ | १३ | सिद्धिका | १४१ | १४ |
| सार | २३९ | २२६ | सार | १८१ | ९५ | सिद्धिका | ५ | २५ |
| सारथि | १२९ | ५९ | सार | १८२ | ९८ | सिद्धिका | १८६ | ५ |
| सारमेय | १६२ | २१ | सार | २०९ | ८० | सिद्धिका | १५७ | १०५ |
| सारव | ४४ | ३६ | सार | ७५ | १५२ | सिद्धिका | ६८ | १०५ |
| सारस | ४४ | ४० | सार | १४६ | ४३ | सिद्धिका | २४६ | २ |
| सारस | ८१ | २२ | सार | १०६ | १३० | सिद्धिका | २४६ | ५ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|------------|---------|--------|---------------|---------|--------|-----------|---------|--------|
| सुकन्दक | ७४ | १४७ | सुपर्वन् | ३ | ७ | सुवर्णक | ५७ | २४ |
| सुकरा | १५१ | ७० | सुपार्थक | ६० | ४३ | सुवह्नि | ६७ | ९५ |
| सुकल | १६८ | ८ | सुप्रतीक | १३ | ४ | | ६३ | ७० |
| सुकुमार | १७९ | ७८ | सुप्रयोगविशिख | १३० | ६८ | | ६९ | ११५ |
| सुकृत | २२ | २४ | सुप्रलाप | २८ | १७ | सुवहा | ७० | ११९ |
| सुकृतिन् | १६७ | ३ | सुभगासुत | ८९ | २४ | | ७० | १२३ |
| सुख | २२ | २५ | सुभिक्षा | ७० | १२४ | सुवासिनी | ७३ | १४० |
| सुखवर्चक | २५७ | २३ | सुमन | १४२ | १८ | | ८६ | ९ |
| सुखसन्दोहा | १५८ | १०९ | सुमनस् | ३ | ७ | सुव्रता | १५१ | ७१ |
| सुगत | ४ | १३ | सुमनसः | ५६ | १७ | सुपम | १७५ | ५२ |
| सुगन्धा | ६९ | ११४ | सुमना | ६३ | ७२ | सुपमा | १४ | १७ |
| सुगन्धि | २५ | ११ | सुमनोरजस् | ५६ | १७ | सुषवी | ७५ | १५५ |
| | ७० | १२१ | सुमेरु | ८ | ५२ | | १४५ | ३७ |
| सुचरित्रा | ८५ | ६ | सुर | ३ | ७ | सुषि | ३६ | २ |
| सुचेलक | १०४ | ११६ | सुरङ्गा | २५३ | ८ | सुषिर | ३० | ४ |
| सुत | ८९ | २७ | सुरज्येष्ठ | ४ | १६ | | ३६ | १ |
| सुतश्रेणी | २०६ | ६० | सुरदीर्घिका | ८ | ५२ | | ३६ | २ |
| सुतात्मजा | ६६ | ८८ | सुरद्विष् | ४ | १२ | सुषिरा | ७१ | १२९ |
| सुत्या | ८९ | २९ | सुरनिम्नगा | ४३ | ३१ | सुषीम | १५ | १९ |
| सुत्वन् | ११६ | ४७ | सुरपति | ७ | ४६ | सुषेण | ६३ | ६७ |
| सुदर्शन | १०९ | १० | | २० | १८ | सुषेणिका | ६८ | १०८ |
| सुदाय | ५ | २९ | सुरभि | २५ | ११ | | २४६ | २ |
| सुदूर | १२३ | २८ | | २२१ | १३७ | सुष्टु | २४८ | १९ |
| सुधर्मा | १७८ | ६९ | सुरभी | ७० | १२३ | सुसंस्कृत | १४७ | ४५ |
| सुधा | ८ | ५१ | सुरर्षि | ८ | ५१ | सुहृद् | १२० | १३ |
| | ८ | ५१ | सुरलोक | ३ | ६ | सुहृदय | १६७ | ३ |
| सुधा | २१४ | १०२ | सुरकर्मन् | १२ | १ | सुकर | ७८ | २ |
| सुप्रांशु | १४ | १४ | सुरसा | ६९ | ११४ | सुक्ष्म | १७७ | ६१ |
| सुधी | १०८ | ५ | सुरा | १६५ | ३९ | | २२२ | १४४ |
| सुनासीर | ७ | ४४ | सुराचार्य | १५ | २४ | सूचक | १७५ | ४७ |
| सुनिषण्णक | ७४ | १४९ | सुरामण्ड | १६५ | ४३ | सूचि | २५३ | ८ |
| सुन्दर | १७२ | ५२ | सुरालय | ८ | ५२ | | १२९ | ५९ |
| सुन्दरी | ८५ | ४ | सुराष्ट्रज | ७१ | १३१ | | १५७ | ९९ |
| सुपथिन् | ४८ | १६ | सुवचन | २८ | १७ | सूत | १५९ | ३ |
| सुपर्ण | ६ | ३१ | सुवर्ण | १५४ | ८६ | | २०६ | ६३ |
| | | | | १५६ | ९४ | सूतिकागृह | ५० | ८ |

| शब्द. | पृष्ठम् | श्लोक. | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-----------------|---------|--------|-----------|---------|-------|-------------|---------|-------|
| सूतिमास | ९१ | ३९ | सेनामुख | १३२ | ८१ | सौगन्धिका | ४४ | ३६ |
| सूत्यान | १६२ | १९ | सेनारक्ष | १२९ | ६१ | | ७७ | १६६ |
| सूत्र | १६३ | २८ | सेवक | ११९ | ९ | | १५७ | १०२ |
| सूत्रवेष्टन | १८९ | २४ | सेवन | १८६ | ५ | सौचिक | १५० | ६ |
| सूद | १४४ | २८ | सेवा | १३८ | २ | सौदामिनी | १३ | ९ |
| | २१२ | ९१ | सेव्य | ७६ | १६४ | सौध | ५० | १० |
| सूना | २१६ | ११३ | सैहिकेय | १६ | २६ | सौभागिन्य | ८२ | २४ |
| सूनु | ८९ | २७ | सैकत | ३९ | ९ | सौम्य | १६ | २६ |
| सूनुत | २९ | १९ | सैतवाहिनी | ४३ | ३३ | | २२६ | १६१ |
| सूपकार | १४४ | २७ | सैनिक | १२९ | ६१ | सौभेय | १४९ | ६० |
| सूर | १६ | २८ | सैन्धव | १२५ | ४४ | सौभेयी | १५० | ६६ |
| सूरण | ७५ | १५७ | | १४६ | ४२ | सौषट्क | ३७ | १० |
| सूरत | १६९ | १५ | सैन्य | १२९ | ६१ | सौरि | १६ | २६ |
| सूरि | १०८ | ६ | | १३१ | ७८ | सौवर्चल | १४६ | ४३ |
| सूर्मी | १६४ | ३५ | सैरन्धी | ८८ | १८ | | १५८ | १०९ |
| सूर्य | १६ | २८ | सैरिक् | १६० | ६४ | सौविद | ११९ | ८ |
| सूर्यतनया | ४३ | ३२ | सैरिभ | ७८ | ४ | सौनिदल | ११९ | ८ |
| सूर्यप्रिया | २२५ | १५७ | सैर्यक | ६४ | ७५ | सौवीर | ५९ | ३७ |
| सूर्येन्दुसन्तम | १८ | ८ | सोढ | १८२ | ९७ | | १४६ | ३९ |
| सूर्क्षणी | १०० | ९१ | सोदर्य | ९० | ३४ | सौहित्य | १४९ | ५६ |
| सृग | १३४ | ९१ | सोन्माद | १७१ | २३ | स्कन्द | ७ | ४२ |
| सृणि | १२५ | ४१ | सोपग्नव | १९ | १० | | ५५ | १० |
| सृणिका | ९६ | ६७ | सोपान | ५१ | १८ | स्कध | ९७ | ७८ |
| सृति | ४८ | १५ | सोभावृजन | ५८ | ३१ | | २१४ | १०० |
| सृपाटी | २६२ | ३८ | सोम | १४ | १४ | स्कन्धशाला | ५८ | ११ |
| सृमर | ७९ | ११ | सोमपा | १०९ | ९ | स्कन्न | १८३ | १०४ |
| सृष्ट | २०१ | ३८ | सोमपीथिन् | १०९ | ९ | स्खलन | ३५ | ३६ |
| सेकपात्र | ४० | १३ | सोमराजी | ६७ | ९५ | स्खलित | १३६ | १०८ |
| सेचन | ४० | १३ | सोमवल्क | ६० | ५० | स्तन | ९७ | ७७ |
| सेतु | ४७ | १४ | | १९३ | ९ | स्तनन्धयो | ९१ | ४१ |
| | ५७ | २५ | सोमवल्ली | ७३ | १३७ | स्तनपा | ९१ | ४१ |
| सेना | १३१ | ७८ | सोमवदिका | ६७ | ९५ | स्तनयितु | १३ | ६ |
| सेनाप्र | १२४ | ३३ | सोमवल्ली | ६५ | ८३ | स्तनित | १३ | ८ |
| सेगानी | ७ | ४२ | सोमोद्वया | ४३ | ३२ | स्तवरु | ५६ | १६ |
| | १२२ | ६२ | | | | स्तम्भरोमन् | ७८ | २ |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|----------------|---------|--------|-------------|---------|--------|-----------|---------|--------|
| स्तम्ब | ५४ | ९ | स्थाण्डिल | १११ | ४५ | स्त्रायु | ९५ | ६६ |
| स्तम्बकार | १४२ | २१ | स्थान | १२१ | १९ | स्त्रिगु | १२० | १२ |
| स्तम्बघन | १४२ | २१ | स्थानीय | २१७ | ११७ | स्त्रिगु | १४७ | ४६ |
| स्तम्बघ्न | १९१ | ३५ | स्थाने | ४८ | १ | स्त्रिगु | १६९ | १४ |
| स्तम्बेरम | १९१ | ३५ | स्थापत्य | २४७ | ११ | स्तु | ५२ | ५ |
| स्तम्भ | २२१ | १३६ | स्थापनी | ११९ | ८ | स्तुत | १८१ | ९२ |
| स्तव | २७ | ११ | स्थामन् | ६५ | ८४ | स्तुपा | ८६ | ९ |
| स्तिमित | १८३ | १०५ | स्थायुक | १३६ | ११० | स्तुह | ६८ | १०५ |
| स्तुत | १८४ | ११० | स्थाल | ११९ | ७ | स्तुही | ६८ | १०५ |
| स्तुति | २७ | ११ | स्थाली | २६० | ३ | स्नेह | ३४ | २७ |
| स्तुतिपाठक | १३५ | ९७ | स्थावर | १४४ | ३१ | स्पर्श | २४ | ७ |
| स्तूप | २५६ | १९ | स्थाविर | १७८ | ७३ | स्पर्श | १८७ | १४ |
| स्तोन | १६२ | २४ | स्थासक | ९१ | ४० | स्पर्शन | १० | ६४ |
| स्तेम | १९० | २९ | स्थास्तु | १०५ | १२२ | स्पर्श | ११३ | २९ |
| स्तेय | १६२ | २५ | स्थिति | १७८ | ७३ | स्पर्श | १२० | १३ |
| स्तैन्य | १६२ | २५ | स्थिति | १२२ | २६ | स्पर्श | २३६ | २१४ |
| स्तोक | १७७ | ६१ | स्थिरतर | १८८ | २१ | स्पष्ट | १७९ | ८१ |
| स्तोत्र | २७ | ११ | स्थिरा | १७८ | ७३ | स्पृका | ७२ | १३३ |
| स्तोम | ८४ | ३९ | स्थिरा | ४५ | २ | स्पृशी | ६६ | ९३ |
| स्त्री | २२२ | १४१ | स्थिरायु | ६९ | ११५ | स्पृष्टि | १८६ | ९ |
| स्त्रीधर्मिणी | ८५ | २ | स्थूणा | १६० | ४६ | स्पृष्टा | ३४ | २७ |
| स्त्रीपुंस | ८८ | २० | स्थूणा | १६४ | ३५ | स्पृष्ट | १८७ | १४ |
| स्थण्डिल | ८३ | ३८ | स्थूल | २०४ | ५१ | स्फय | ३७ | ९ |
| स्थण्डिलशायिन् | ११० | १८ | स्थूल | १७७ | ६१ | स्फाति | १८६ | ९ |
| स्थपति | ११५ | ४४ | स्थूल | २३४ | २०४ | स्फार | १७७ | ६३ |
| स्थपति | १०९ | ९ | स्थूललक्ष्य | १६८ | ६ | स्फिच् | ९७ | ७५ |
| स्थपति | २०६ | ६१ | स्थूलशाटक | १०४ | ११६ | स्फुट | ५४ | ७ |
| स्थल | ४६ | ५ | स्थूलोच्चय | २२३ | १४८ | स्फुट | १७९ | ८१ |
| स्थली | ४६ | ५ | स्थूयस् | १७८ | ७३ | स्फुटन | १८६ | ५ |
| स्थविर | ९१ | ४२ | स्थौण्य | ७१ | १३२ | स्फुरण | १८६ | १० |
| स्थविष्ठ | १८४ | १११ | स्थौरिन् | १२६ | ४६ | स्फुरणा | १८६ | १० |
| स्थाणु | ६ | ३६ | स्थौल्य | २३३ | १९५ | स्फुलिङ्ग | ९ | ६० |
| स्थाणु | ५४ | ८ | स्त्रव | १८६ | ९ | स्फूर्जक | ५९ | ३८ |
| स्थाणु | २०३ | ४२ | स्त्रातक | ११५ | ४३ | स्फूर्जथु | १३ | १० |
| | | | स्त्रान | १०५ | १२२ | स्फेष्ट | १८४ | ११२ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्द | पृष्ठम् | श्लोकः |
|-------------|---------|--------|--------------|---------|--------|----------------|---------|--------|
| स्म | २४६ | ५ | स्वच्छन्द | १६९ | १५ | स्माति | २६२ | ३८ |
| स्म | २४८ | १७ | स्वजन | ९० | ३४ | स्मादु | २१२ | ९४ |
| स्मर | ५ | २६ | स्वतन्त्र | १६९ | १५ | स्मादुकण्टक | ५९ | ३७ |
| स्मरहर | ६ | ३५ | स्वधा | २४७ | ८ | स्मादुरसा | ६७ | ९८ |
| स्मित | ३५ | ३४ | स्वधिति | १३४ | ९२ | स्मान् | ७३ | १४४ |
| स्पृति | २६ | ६ | स्वन | २९ | २२ | स्माही | ६८ | १०७ |
| स्पृति | ३४ | २९ | स्वनित | ८१ | ९४ | स्वाध्याय | ११६ | ४७ |
| स्यद | १० | ६७ | स्वम | ३५ | ३६ | स्वान | २९ | २३ |
| स्यन्दन | ५७ | २६ | स्वमज् | १७६ | ३३ | स्वान्त | २२ | ३१ |
| स्यन्दनारोह | १२७ | ५१ | स्वभाव | ३६ | ३८ | स्वाप | ३५ | ३६ |
| स्यन्दिनी | २२९ | ६० | स्वभू | ४ | १८ | स्वापतेय | १५५ | ९० |
| स्यन्दिनी | ९६ | ६७ | स्वयवरा | ८६ | ७ | स्वामिन् | १२० | १७ |
| स्यन्न | १८१ | ९२ | स्वयम् | २४८ | १६ | स्वामिन् | १६९ | १० |
| स्युत | १४३ | २६ | स्वयम्भू | ४ | १६ | स्वाराज् (इ) | ८ | ४६ |
| स्युत | १८२ | १०१ | स्व | ३ | ६ | स्वाहा | १११ | २१ |
| स्युति | १८६ | ५ | स्व | २४५ | २५ | स्वाहा | २४७ | ८ |
| स्यानाक | ६१ | ५७ | स्व | २६ | ४ | स्विन् | २४२ | २४२ |
| स्यसिन् | ५७ | २८ | स्व | ३० | १ | स्वेद | ३५ | ३३ |
| स्यज् | १०७ | १३५ | स्व | ८ | ५० | स्वेदज | १७५ | ५१ |
| स्यज | १८६ | ९ | स्व | २२७ | १६७ | स्वेदनी | १४४ | ३० |
| स्यजभा | १५१ | ६९ | स्व | ३६ | ३८ | स्वैर | २३२ | १९२ |
| स्यजन्तो | ८३ | ३० | स्वरूप | २२० | १३१ | स्वेरिणी | १८६ | ११ |
| स्यज | ६५ | ८३ | स्वर्ग | ३ | ६ | स्वेरिता | १८५ | २ |
| स्यज् | ४ | १७ | स्वर्ग | १५६ | ९४ | स्वेरिन् | १६९ | १५ |
| स्यस्त | १८३ | १०४ | स्वर्णकार | १६० | ८ | ह | | |
| स्यक् | २४६ | २ | स्वर्णक्षीरी | ७३ | १३८ | ह | | |
| स्युत | १८१ | ९२ | स्वर्णदी | ८ | ५२ | ह | २४६ | ५ |
| स्युत | ११२ | २५ | स्वर्णानु | १६ | २६ | ह | १६ | ३१ |
| स्युतापृक्ष | ५९ | ३७ | स्वर्णव्या | ९ | ५५ | हस्त | ८१ | २३ |
| स्योग् | ३९ | ११ | स्वर्णय | ९ | ५४ | हस्त | २३९ | २५६ |
| स्योग् | २४० | २३३ | स्वस् | ८९ | २९ | हस्त | १०२ | ११० |
| स्योनस्यी | ४३ | ३० | स्वस्ति | २४२ | २४० | हस्त्रिका | ६६ | ८९ |
| स्योनोञ्ज | १५७ | १०० | स्वस्तिक | ५० | १० | हस्त्रे | ३२ | १५ |
| स्य | ९० | ३४ | स्वस्तीय | ९० | ३२ | हस्त्र | २५६ | १८ |
| स्य | २३६ | २११ | | | | | | |

| शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः | शब्दः | पृष्ठम् | श्लोकः |
|--------------|---------|--------|-----------|---------|--------|---------------|---------|--------|
| हड्डविलासिनी | ७१ | १३० | हरिवालुक | ७० | १२८ | हस्त्यारोह | १२९ | ५९ |
| हड | १३६ | १०८ | हरिहय | ८ | ४६ | हा | २४५ | २५६ |
| हण्डे | ३२ | १५ | हरीतकी | ६२ | ५९ | हाटक | १५६ | ९४ |
| हत | १७४ | ४१ | हेरेणु | ७० | १२० | हायन | २१ | २० |
| हनु | ७१ | १३० | हैर्य | १४२ | १६ | हार | २१५ | १०८ |
| | ९९ | ९० | हैर्यक्ष | ५० | ९ | हारीत | १०२ | १०५ |
| हन्त | २४३ | २४४ | हैर्यक्ष | ७८ | १ | हार्द | ८३ | ३४ |
| हन्न | १८२ | ९६ | हर्ष | २२ | २४ | हाद | ३४ | २७ |
| हय | १२५ | ४४ | हर्षमाण | १६८ | ७ | हाला | १६५ | ३९ |
| हयपुच्छी | ७३ | १३८ | हल | १४१ | १३ | हालिका | १५० | ६४ |
| हयमारक | ६४ | ७६ | हला | ३२ | १५ | हाव | ३५ | ३२ |
| हर | ६ | ३५ | हलायुध | ५ | २४ | हास | ३३ | १९ |
| हरण | १२३ | २८ | हलाहल | ३७ | १० | हास्तिक | १२४ | ३६ |
| हरि | ७८ | १ | हलिन | ५ | २५ | हास्य | ३३ | १७ |
| | २२८ | १७५ | हलिप्रिया | १६५ | ३९ | | ३३ | १९ |
| हरिचन्दन | ८ | ५३ | हल्य | १४० | ८ | हाहा | ९ | ५५ |
| | १०६ | १३१ | हल्या | १९२ | ४१ | हि | २४५ | २५७ |
| | २५ | १३ | हल्यक | ४४ | ३६ | | १४६ | ५ |
| हरिण | ७८ | ८ | हव | १८६ | ८ | हिंसा | २४० | २२९ |
| | २०४ | ५१ | | २३५ | २०७ | हिंसाकर्मन् | १८८ | १९ |
| हरिणी | २०४ | ५० | हविस् | ११२ | २७ | हिंस्र | १७१ | २८ |
| | १२ | १ | | १४८ | ५२ | हिका | २५३ | ८ |
| हरित | २५ | १४ | हव्य | ११२ | २४ | हिङ्गु | १४६ | ४० |
| | २५६ | १९ | हव्यपाक | १११ | २२ | हिङ्गुनिर्यास | ६२ | ६२ |
| हरित | २५ | १४ | हव्यवाहन | ९ | ५८ | हिङ्गुली | ६९ | ११४ |
| हरितक | १४५ | ३४ | हस | ३३ | १८ | हिङ्गुल | २५७ | २० |
| हरितालक | १५७ | १०३ | हसनी | १४४ | ३० | हिज्जल | ६२ | ६१ |
| हरिद्व | १६ | २९ | हसन्ती | १४४ | २९ | हिन्ताल | ७७ | १६९ |
| हरिद्रा | १४६ | ४१ | | ९९ | ८६ | | १५ | १८ |
| हरिद्राम | २५ | १४ | हस्त | १०१ | ९८ | हिम | १५ | १९ |
| हरिद्रु | ६७ | १०१ | | २०५ | ५९ | | २५७ | २२ |
| हरिन्मणि | १५६ | ९२ | हस्तवारण | १८६ | ५ | हिमवत् | ५२ | ३ |
| हरिप्रिय | ५९ | ४२ | हस्तिन् | १२४ | ३४ | हिमवालुका | १०६ | १३० |
| हरिप्रिया | ५ | २८ | हस्तिनख | ५१ | १७ | हिमसंहति | १५ | १८ |
| हरिमन्यक | १४२ | १८ | हस्तिपक | १२९ | ५९ | हिमांशु | १४ | १३ |

| शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक | शब्द | पृष्ठम् | श्लोक |
|-------------|---------|-------|-------------|---------|-------|-------------|---------|-------|
| हिमानी | १५ | १८ | हृदयगम | २९ | १८ | | ७ | ३८ |
| हिमावती | ७३ | १३८ | हृदयालु | १६७ | ३ | हैमवती | ६२ | ५९ |
| | १५५ | ९० | हृद्य | १७६ | ५३ | | ६८ | १०३ |
| हिरण्य | १५५ | ९१ | हृषीक | २४ | ८ | हैयन्नवीन | ७३ | १३८ |
| | १५६ | ९४ | हृषीकेश | ४ | १८ | होतृ | १४८ | ५२ |
| हिरण्यगर्भ | ४ | १६ | हट | १८३ | १०३ | होम | ११० | १७ |
| हिरण्यवाह | ४३ | ३४ | हटमानस | १६८ | ७ | होम | ११० | १४ |
| हिरण्यरेतस् | ९ | ५८ | हे | २४६ | ७ | होरा | २५३ | १० |
| हिक्क | २४६ | ३ | हेति | २०८ | ७१ | हस् | २४९ | २२ |
| | २४६ | ७ | हेतु | २२ | २८ | हृद | ४२ | २५ |
| हिलमोचिका | ७५ | १५७ | हेमकूट | ५२ | ३ | हसित | १८४ | ११२ |
| ही | २४७ | ९ | हेमदुग्ध | ५७ | २२ | हस्य | ९२ | ४६ |
| हीन | १८३ | १०७ | हेमन् | १५६ | २४ | हस्वगवेधुका | १७८ | ७० |
| | २१८ | १२८ | हेमन्ता | २० | १८ | हस्वाङ्ग | ६९ | ११७ |
| हुतभूकमिया | १११ | २१ | हेमपुष्पक | ६२ | ६३ | | ७३ | १४२ |
| हुतभूज् | ९ | ५८ | हेमपुष्पिका | ६३ | ७१ | हादिनी | ८ | ५० |
| हुम् | २४ | २५२ | हेमाद्रि | ८ | ५२ | | १३ | ९ |
| | २४८ | ८ | हेमन् | ७ | ४१ | २१६ | ११२ | |
| हति | २७ | ८ | हेला | ३१ | ३१ | ही | ३३ | २३ |
| | १८६ | ८ | हेला | ३१ | ३१ | हीण | १८१ | ९१ |
| हृद् | ९ | ५५ | हेया | १२६ | ८७ | हीन | १८१ | ९१ |
| हणीया | १९० | ३२ | है | २४६ | ७ | हीवेर | ७० | ११२ |
| हृ | २२ | ३१ | | | | हेषा | १२६ | ४७ |
| | ९५ | ६४ | | | | ह्लादिनी | ७१ | १२४ |
| हृय | २२ | ३१ | | | | | | |
| | ९५ | ६४ | | | | | | |

इत्यनुक्रमणिका ।

पुस्तकमिलनेका ठिकाना

हरिप्रसाद भगीरथजी

कालिकोदेवीरोड-रामवाड़ी-मुंबई.

लघुसिद्धान्तकौमुदी-भाषाटीका.

यह ग्रंथ श्रीयुक् वरदराजका बनाया हुआ अति उत्तम है. कि ऐसी सरल शैलीसे इसकी प्रक्रिया कही है, जिसके पढ़नेसे अतिशीघ्र बालकभी व्याकरणके पूर्ण ज्ञात हो, व्याकरणशून्य उलूकोंको सूर्यसे अन्धे करते हुये सभावोंमें गर्जते हैं. परंतु संस्कृत होनेसे जल्दी नादान बालकोंके जेहनमें नहीं चढ़ताथा. इसलिये उनके विद्यार्थिप्रतिपालकपुरुषोंकी प्रेरणासे इसकी भाषाटीका बेरीनिवासी श्रीयुक्तराजवैद्य रविदत्तशास्त्रीके द्वारा स्पष्टरीतसे करवायके तथा सुमेरपुरनिवासिविद्वद्वररामभद्रशास्त्रीसे शुद्ध करवायके छपकर तय्यार है. इसकी ऐसी सरल सुबोध भाषाटीका है, कि जिसके बांचनेहीसे विद्यार्थी लोग अर्थके ज्ञाता होंगे. विशेष प्रशंसा तब कहाँतक करें. ? व्याकरणकी इच्छावाले सुजनजनोंके दृष्टिगोचर होनेसे मालुम होगा.

व्याकरणग्रन्थाः

| नाम | किं० | डा०म० | नाम | किं० | डा०म० |
|---|------|-------|---|------|-------|
| सिद्धान्तकौमुदी अष्टाध्यायी सूत्र- पाठ, गणपाठ, धातुपाठ, लिङ्गानु- शासन और सूत्रोंकी सूचीसहित- अतिउत्तम जिल्द | २-४ | ०-६ | सारस्वत तीनों आवृत्ति अकारा- दिसूत्रानुक्रम तथा अष्टाध्यायी- | | |
| लघुसिद्धान्तकौमुदी सटिप्पण तथा अकारादिसूत्रानुक्रमसहित | ०-४ | ०-२ | सूत्रपाठसहीत | ०-१४ | ०-२ |
| सिद्धान्तचन्द्रिका सुबोधिनी और तत्त्वदीपिका टीकासह संपूर्ण सु- न्दर जिल्दबंद | ४-० | ०-८ | सारस्वतपूर्वार्द्ध गुटका सटिप्पण | ०-६ | ०-१ |
| सिद्धान्तचन्द्रिका सुबोधिनी और तत्त्वदीपिका टीका उत्तरार्ध | २-० | ०-४ | धातुरूपावलि | ०-३ | ०-१ |
| परिभाषेदुशेखर अम्बाकर्तृक टीकासह | १-८ | ०-२ | शब्दरूपावलि एका क्षरीकोशसहित | ०-२ | ०-१ |
| अष्टाध्यायी पाणिनिकी | ०-४ | ०-१ | कातन्त्ररूपमालाव्याकरणम् | १-० | ०-१ |
| सारस्वतप्रसादटीका पूर्वार्ध | ०-१४ | ०-२ | समासेचक्र | ०-१ | ०-१ |
| सारस्वत मूल पूर्वार्धखुला | ०-६ | ०-२ | रामचन्द्रिकानामदाब्दरूपावलिः | ०-४ | ०-१ |
| | | | सूत्रपाठ, गणपाठ, धातुपाठ, लि- ङ्गानुशासनपाठ (पाठचतुष्टय) | १-० | ०-१ |
| | | | सारस्वतचन्द्रकीर्तिटीकासहितपू० | | |
| | | | रूप कागद | १-० | ०-२ |
| | | | " " ग्लेज कागद | १-४ | ०-२ |
| | | | मध्यसिद्धान्तकौमुदी टिप्पणीसहिता | १-० | ०-२ |
| | | | संस्कृतशिक्षामंजरीप्रथमभागः | ०-१॥ | ०-१ |
| | | | संस्कृतप्रवेशिनी | ०-२ | ०-१ |
| | | | संस्कृतशिक्षामंजरी द्वितीयभागः | ०-३ | ०-१ |

